श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी ग्रन्थमाळा-ग्रन्थाङ्क ५३

ॐ अर्हं महावीरदेवायनम.

श्रीमद् देवचन्द्र भाग २ बीजो

संशोधक,

योगनिष्ठ शास्त्रविशारद जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि

प्रगटकर्त्ता,

श्रीअध्यात्मज्ञानप्रसारकमंडळ

हा वकील मोहनलाल हिमचन्द, पादरा.

प्रति—५००

वीर संवत् २४४५ विक्रम संवत् १९७५

किम्मत ३—८—०

आ ग्रथ मळवानु ठेकाणु :—

वकील मोहनलाल हिमचंद—पादरा (गुजरात)

बडोदरा—शियापुरामा, लुहाणामित्र स्टीम प्रेसमा, विठ्ठलभाइ आशाराम
ता १—१०—१९१९ ना रोज प्रगटकर्त्ता माटे छापी प्रसिद्ध कर्यु

निवेदन

श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी ग्रंथमाळाना ओगणपचाशमा
[illegible]का तरीके श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भाग छपाया पछी दोढ वर्षे
[illegible] श्रीमद् देवचन्द्र बीजो भाग बहार पडे छे श्रीमद् देवचन्द्रजी
[illegible]हाराजना तमाम ग्रंथो एकत्र करी छपाववानी योजना जैनाचार्य
[illegible]मद् बुद्धिसागर सूरिजीनी प्रेरणाथी अने उपदेशथी क्यारे
[illegible]ने केवी रीते थई, तेमज क्या ग्रंथो क्याथी केवी रीते मळ्या
सर्वे हकीकत श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भागनी प्रस्तावनामा
[illegible]गतवार जणावेली होवाथी ते फरीथी अत्रे जणावेल नथी
[illegible]थम भागनी ५०० नकलो छपावी हती तेमाथी जैन पुस्तक
[illegible]ो तथा साहाय्य करनार विगेरेने भेट आपवामा १५०
[illegible] तेमज वेचाणमा २०० नकलो मळी एकदर ३५०
[illegible] खपी छे जो के मागणीओ घणीज आवे छे छता
[illegible] थोडी होवाथी उपयोग प्रमाणे आपवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्र बीजा भागना एकदर पृष्ठ १२०० ना
[illegible]रे छे अने तेनी पण ५०० नकलो छपावी छे, ग्रंथनु
भारे थवाथी त्रणसो नकलो बे कटके बाधवामा आवी छे
[illegible]की पहेला कडकामा विचारसार ग्रंथ अने बाकीना ग्रंथो
[illegible] कटकामा आव्या छे बाकीनी २०० नकलो आखी
[illegible]ामा [illegible] जे पुस्तकालयो वगेरेने आपवामा उपयो-
[illegible]शे

[illegible]मद् देवचन्द्र बीजा भागमा जे जे ग्रंथो छपाया छे

तेनी वीगतवार यादी अनुक्रमणिका उपरथी वाचको जोई शकशे श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भागनी पेठे आ बीजो भाग पण जैनो तेमज जैनेतरोने अत्यन्त उपयोगी थई पडे तेम छे युरोपीय विग्रहना समयमा आ ग्रंथ छपाववामा आवेलो होवाथी सख्त मोंघवारीना लीधे कागळो–छपामणी–बंधाई वगेरेनो एटलो बधो खर्च थयो छे के एक नकलनी पडतर कीं रु ६–०–० ना आशरे थाय छे तेमज कद वधी जवाथी बे कटके बांधेल छे छता तेनी कीमत मात्र रु ३–८–० राखी छे बे कटका साथेज आपवामा आवशे.

श्रीमद् देवचन्द्र प्रथम भाग तथा बीजा भागमा मदद करनार जैन गृहस्थोना नाम नीचे प्रमाणे —

रु ५०१ शा म्होलाल नाथाभाई–पादरा
२०० शा म्होलाल नरोतमदास–रणु (पादरा)
२०० शा झवेरभाई भगवानदास–कावीठा (बोरसद)
१०१ श्रीयुत श्रेष्ठी अमरचंदजी बोथरा बालुचर (मुर्शिदाबाद)
२१ श्रीयुत श्रेष्ठी बुधसिंहजी बोथरा ” ”
६१ ” ” जगतपतिसिंहजी दुगड ” ”
५१ ” ” हरखचंदजी नाहटा ” ”
२५ ” ” गुलाबचंदजी भूरा ” ”
१८६ शा हीरालाल छोटालाल–पादरा
२५० बाइ रतन शा चुनीलाल कहानदासनी विधवा इटोला (वडोदरा)
१०१ वकील मोहनलाल हीमचंद–पादरा
२५ सो बाइ जमना वकील मोहनलाल हीमचंदनी पत्नी ”

१०० शा लक्ष्मीचद लालचद–वड (पादरा)
१०० बाइ चचल शा दामोदर कल्याणदासनी विधवा „
८९ बेन मणी शा प्रेमचद दलसुखभाइनी भाणेज पादरा
८० शा केशवलाल लालचद वडोदरा–मामानी पोळ
७५ शा केशवलाल नरोतमदास वड (पादरा)
७५ बाइ आधार शा गोरधनभाइ हीराचदनी विधवा अणु-
टण (डभोइ)
५० शा रतनचद लालाजी कार्वीटा (नोरसद)
४१ शा भाइलाल चुनीलाल पादरा
२५ वकील नदलाल लल्लुभाइ पादरा
२५ बाइ साकळी ते शा मणीलाल चुनीलालनी विधवा पादरा
२० एक गृहस्थ तरफथी पादरा
१० शा नीकमलाल नजलाल राजळी (डभोइ)
३५ शा मुलजी पीताम्बरदास मुजपुर (पादरा)
५ बाइ रुक्मणी शा दलसुखभाइ प्राणजीवनदासनी दीकरी
पादरा
५ बाइ डाही ते शा छोटालाल छगनलालनी विधवा पादरा
२०० बाइ आदीत शा मथुरभाइ ईश्वरदासना विधवा मुजपुर
१६ शा माणेकलाल वरजीवनदास पादरा
१५० गाम वेजलपुरना जैनशाळाना ज्ञान खातेथी हा शा
छगनलाल लक्ष्मीदास
७५ दाहोदना शा हेमचद हरजीवनदास
५० शेठ वीरचदभाइ कृष्णाजी माणसावाळा
१२५ गाम गभीराना ज्ञानखातेथी
७५ शा रवचद आशाराम गंभीरा

५१ शा हीराचद केशवजी गभीरा
२५ शा अबालाल आशाराम ,,
२५ शा माणेकलाल केशवजी ,,
१० शा जेचद केशवजी ,,
११ शा प्रेमचद दलसुखभाइ पादरा
१० शा नगीनलाल मोतीलाल ,,
१० शा हीरालाल ल्लुभाइ ,,
१० बाइ परसन ते वकील दलपतभाइ ल्लुभाइनी विधवा पत
१० बाइ समरत ते शा कस्तुर दीपचदना सो पत्नी
३३२०

उपर प्रमाणे बन्ने भाग छपाववामा मदद आपनाराओनं.. उपकार मानवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रथोथी जैन कोमने अत्यत लाभ थयो छे, थाय छे अने भविष्यमा थशे

श्रीमद् जैनाचार्य बुद्धिसागर सूरिजीए श्रीमद्‌ना पुस्तको सुधारवामा-प्रस्तावना लखवामा-तेमज बन्ने भागनु काम पुरु थता सुधी दरेक प्रसगे उपयोगी सूचनाओ आपवामा जे आत्मभोग आपेलो छे ते उपकारनो बदलो कोई रीते वळी शके तेम नथी एटलुज नही पण आ कार्य तेओश्रीना खास उपदेश अने प्रेरणाथीज उपस्थित थयु होवाथी आ कार्यथी जैन समाजने तथा मने पोताने जे लाभ थयो छे ते सर्वेना निमितभूत तेओश्रीज छे तेथी तेओश्रीनो जेटलो उपकार मानीए तेटलो ओछो छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना पुस्तको मेळवी आपवामा जे जे मुनि महाराजाओए तथा अन्य ग्रहस्थोए मदद करेली छे तेमज जे जे ग्रहस्थोए द्रव्य सहाय करी छे तेमनो अने मारा सहाध्यायी बंधु माणेकलाल नरजीवनदास, मगलभाइ लक्ष्मीचद (वड्ड) प्रेमचद दलसुखभाइ तथा भाइलाल चुनीलाल वगेरे जेमणे आ कार्यमा घणी मदद करी छे ते सर्वनो प्रथम भागमा उपकार मानवामा आवेलो छे तेमज आ बीजो भाग छपावी पूर्ण करती वखते पण फरीथी उपकार मानवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रथो बहार पाडनार अमो तेमज आ कार्यना मुख्य उत्पादक श्रीमद् बुद्धिसागर सूरिजी महाराज ए सर्वे मोटा भागे तपगच्छना छीए छता श्रीमद्ना गुणानुरागथी तेमना ग्रथो छपाववामा अहोभाग्य मानीए छीए तेज प्रमाणे खरतर गच्छना मुनिराजो तथा श्रावको श्री तपागच्छना मुनिओ उपर गुणानुरागी बनी तेमना बनावेला उत्तम ग्रथो बहार पाडी बन्ने गच्छवाळा परस्पर सहकार्यथी प्रयत्न करशे तो जैन कोमने घणो लाभ थशे

स १९७५ ना वैशाख सुदि ६ ना दीवसे पादरामा श्री शातिनाथजी महाराजना देराशरना ध्वजा दडारोपण महोत्सवना वरघोडामा जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिजी महाराजना उपदेशथी श्री कल्पसूत्र, महोपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराजना ग्रथो तथा श्रीमद् देवचद्र भाग पहेलो तथा श्री आनदघनपद भावार्थ सग्रह ए ग्रथोने लेइ बहुमान पुर्वक खास

एक हाथी उपर बेसवानो चढावो बोल्ना वडुना शा मणी-लाल लक्ष्मीचदे भारे रकमनो चढावो बोली श्रीमद् देवचन्द्र पहेलो भाग लेइ हाथीपर बेठेला आ उपरथी श्रीमद्‌ना ग्रथो प्रत्येनो अपूर्व भक्तिभाव जणाइ आवे छे जैन कोममा प्रथा चार्योना ग्रथो खरखर आगमोनी पेठे मनाय छे श्रीमद्‌ना बन्ने भागो छपावीने बहार पडवाथी अमोने घणोज आनद थयो छे. आ ग्रथोमा शुद्धि कर्या छता जे भुलो रही गएली जणाशे ते बीजी आवृतिमा सुधारी लेवामा आवशे

श्रीअध्यात्म ज्ञान प्रसारक मडळ तरफथी घणा पुस्तको पडतर किंमते अने केटलाक पडतरथी पण ओछी किंमते बहार पाडवामा आवे छे माटे आ सस्थानी कदर करनार सखी गृहस्थो मडळ तरफथी पुस्तको छपाववामा सहाय करशे तो मडळ वधार उत्साहथी एथी पण वधारे उपयोगी कार्य बजावशे

बीजी आवृत्ति छपावता पहेला आ ग्रथो सबधी जे जे महाशयो योग्य सूचनाओ करशे तो बीजा प्रसगे ते उपर पूरतु ध्यान आपवामा आवशे

इत्येव ॐ अर्हं शान्ति ३

मु० पादरा—आश्विन शुक्ल २ स १९७५ } वकील मोहनलाल हीमचद

श्रीमद् देवचंद्र भाग २.

(विभाग पहेलो.)

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ट
विचारसार ग्रथ	
पीठिका	१
गुणस्थानोमा मूळ प्रकृतिबंध स्थान	१६
,, उत्तर प्रकृतिबंध	१८
कइ प्रकृतिनो केटला गुणस्थान सुधी बंध (अथवा भिनभिन्न प्रकृतियोमा गुणस्थानावतार)	२५
गुणस्थानोमा मूळ प्रकृत्युदय	३३
,, उत्तर प्रकृति उदय	३४
,, मूळ प्रकृति उदीरणा स्थान	४९
,, मूळ प्रकृति सत्ता स्थान	५२
,, उत्तर प्रकृति सत्ता	५३
,, १४ जीवभेद	६३
,, गुणस्थान	६५
,, १५ योग	६७
,, १२ उपयोग	७१
,, ६ लेश्या	७३
,, ४ मूळबंध हेतु.	७५
,, ५७ उत्तरबंध हेतु	७६

" २५ कषाय ७९
" अल्प बहुत्त्व ८१
" ५ मूळ भाव ८६
" ५६ उत्तर भाव ८८
" २६ सान्निपातिक भावना भागा ९९
" ५६३ जीवभेद १०१
" ७ समुद्घात १०७
" १६ ध्यान १०९
" २४ दंडक ११५
" ३ वेद ११५
" ५ चारित्र ११६
" ८४ लाख जीवयोनि १२०
" कुल कोडि १२२
" ४७ ध्रुवबंधि प्रकृति १२२
" ७३ अध्रुवबंधि प्रकृति १२४
" ध्रुवोदयिने अध्रुवोदयि प्रकृति १२५
" ध्रुवसत्ताक ने अध्रुवसत्ताक प्रकृतियो १२८
" सर्वघाति-देशघातिने अघातिप्रकृतियो १३०
" पुण्य-पाप-परावर्त्तमान-अने अपरा-
व० प्रकृतियो १३५
" क्षेत्रविपाकादि प्रकृतियो १४१
" आठ कर्मना बंधादि स्थान अने भागा १४९
" ४२ आस्रव भेद १८३
" ५७ संवर भेद १९०
" १२ निर्जरा भेद १९८

" ४ बंध भेद १९९
" ग्रंथकर्त्तानी प्रशस्ति २००

२ विचारसार प्रकरण

बासठ मार्गणाना नाम तथा स्वरुप २०४
६२ मार्गणामा गुण स्थान २०७
" मूळ प्रकृति बंध २१३
" उत्तर प्रकृति बंध (ओघत) २१५
" कया मूळ कर्मनी केटली प्रकृति-योनो बंध ? २२२
" मूळ प्रकृति उदय स्थान २३१
" उत्तर प्रकृति उदय (ओघत) २३२
" मूळ प्रकृत्युदीरणा २६१
" उत्तर प्रकृत्युदीरणा (ओघत) २६२
" ८४ लाख जीवयोनि २६३
" कुल कोडीनी सख्या २६४
" जीवयोनि विभजना कुलकोडि विभजना २६५
" मूळ प्रकृति सत्ता स्थान २६७
" उत्तर प्रकृति सत्ता (ओघत) २६८
" १४ जीव भेद / १४ गुण स्थान २७५
— १५ योगनु स्वरुप, २८२
६२ मार्गणामा १५ योग २८७
" १२ उपयोग २९२
" ६ लेश्या २९८

" ४ मूळबंध हेतु } बंध तत्त्व २९९
" ५७ उत्तरबंध हेतु } ३००
" ४२ आश्रव तत्त्वना भेद ३०७
" ५७ संवर तत्त्वना भेद ३१४
" १२ निर्ज्जरा तत्त्वना भेद ३१८
" अल्प बहुत्व ३१९
" ५ मूळ भाव ३३०
" ५३ उत्तर भाव ३३१
" २६ सान्निपातिक भागा (भावना) ३४३
" ५६३ जीव भेद ३४५
" ७ समुद्घात ३४८
" १६ चार ध्यानना पाया ३४९
" २४ दंडक ३५३
" ३ वेद ३५७
" ४७ ध्रुवबंधि प्रकृतियो ३५८
" ७३ अध्रुवबंधि प्रकृतियो ३६०
" २७ ध्रुवोदयि प्रकृतियो ३६१
" ९५ अध्रुवोदयि प्रकृतियो ३६२
" १३० ध्रुव सत्ताक प्रकृतियो ३६३
" २८ अध्रुव सत्ताक प्रकृतियो ३६३
" ५ चारित्र ३६५
" २० सर्वघाति प्रकृतिबंध ३६६
" २५ देशघाति प्रकृतिबंध ३६७
" ७५ अघाति प्रकृतिबंध ३६८
" ४२ पुण्य प्रकृतिबंध ३६९

,, ८२ पाप प्रकृतिबंध ३७४

,, } २९ अपरावर्तमान प्रकृतिबंध
} ९१ परावर्तमान प्रकृतिबंध ३७५

,, क्षेत्र विपाकादि (४) प्रकृतियोनो उदय ३७६

कर्मप्रकृतियोना बंधादि भागानी विधि ३८०

६२ मार्गणामां कर्मप्रकृतियोना बंधादि भागा ३८७

विचारसार प्रकरणनो उपसंहार ४२४

विचारसार ग्रन्थमां गुणस्थान उपर अवतारेल ९६ द्वारनी विगत

१० बंधद्वार (मूळ प्र० बं०–उत्तर प्र०बं०–८ भिन्न कर्माष्टकबंध)
१० उदयद्वार (१० संख्या बंधवत्)
२ उदीरणाद्वार (मूळ–उत्तर)
१० सत्ताद्वार (१० संख्या बंधवत्)
१ जीवभेद (१४)
१ गुणस्थान (१४)
१ योग (१५)
१ उपयोग (१२)
१ लेश्या (६)
२ मूळबंध हेतु–उत्तरबंध हेतु
४ भिन्नबंध हेतु चतुष्क (४)
१ अल्प बहुत्व
८ मूळभाव–उत्तरभाव–भिन्नभाव ५–सान्निपातिक भाव
२ ५६३ जीवभेद (मूळभेद–उत्तरभेद)
४ उत्तरभिलने
१ समुद्घात (८)
४ ध्यान (४)
१ दंडक (२४)
१ वेद (३)
१ योनि (८४)
१ कुल कोटि
६ ध्रुवबंधि-अध्रुवबंधि-ध्रुवोदयि-अध्रुवोदयि–ध्रुवसत्ताक–अने अध्रुव सत्ताक प्रकृतियो
३ सर्वघाति–देशघाति–अघाति प्रकृतियो

४ पुण्य०पाप-परावर्त्तमान-ने अपरावर्त्तमान प्रकृतियो	४ आस्रव-संवर- निर्जरा-बंधतत्वना भेद
४ क्षेत्रविपाकादि प्रकृतिभेद ४	९६ द्वार
८ आठकर्मना भागा	

ॐ अर्हनमः

प्रस्तावना.

महोपाध्याय श्रीमद् देवचन्द्रमहाराज अने तत्कृत पुस्तको.

ज्ञानदर्शनचारित्र–व्यक्तरूपाय योगिने
श्रीमते देवचन्द्राय, सयताय नमोनम ॥ १ ॥

द्रव्यानुयोगगीतार्थो, व्रताचारप्रपालक
देवचन्द्रसम साधु, र्वाचीनो न दृश्यते ॥ २ ॥

वाचकग्य महारागी, सर्वजैनोपकारक
सम्प्रति यस्य सद्ग्रन्थै, स्तत्त्वबोध प्रजायते ॥३॥

आत्मोद्धारामृत यस्य, स्तवनेषु प्रदृश्यते
निविवतापतप्ताना, पूर्णशान्तिप्रदायकम् ॥ ४ ॥

आनन्दघनगीतार्थ–पदस्तवनपूजक
गच्छेखरतरेतस्य, सम कोऽपिनयोगिराट् ॥ ५ ॥

आत्मशमामृतस्वादी, शास्त्रोद्यानविहारवान्
यत्कृतशास्त्रपाथोधा, स्नानकुर्वन्ति सज्जना ॥६॥

सिद्धान्तपारदृश्वा यो, गुणानुरागिशेखर
माध्यस्थ्ययस्यसच्चित्ते,तस्मै नित्य नमोनम ॥७॥

गुर्जरोर्व्याच सोराष्ट्रे, मेदपाटेच मालवे
लाटदेशेच पञ्चाबे, मरुदेशे स्वपादत ॥ ८ ॥

विहाराश्चकृतानेके, लोकाना बोधदेतवे
ज्ञानिने देवचन्द्राय, पूर्णप्रेम्णा नमोनम ॥ ९ ॥

समत अन्तरात्मा य, आत्मानुभववेदक
अप्रमत्तदशायोगी, जिनेन्द्राणाप्रसेवक ॥ १० ॥

श्रुतागमप्रलीनाय, भक्तायप्रभुरागिणे
चिदानन्दस्वरूपाय, सर्वसत्त्वसरागिणे ॥ ११ ॥

ध्यानसमाधिरक्ताय, विश्ववन्द्यायसाधवे
श्रीमते देवचन्द्राय, पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ १२ ॥

जैनसघस्यसेवायै, सर्वस्वार्पणकारिणे
श्रीमते देवचन्द्राय, शुद्धात्मने नमोनम ॥ १३ ॥

भारत जैनसघे य, प्रादुर्भूतो महामुनि
मोहतमोविनाशेन, देवचन्द्रोहिभास्कर ॥ १४ ॥

शीतल सर्वलोकाना–मान्तरशान्तिकारक
क्षमापृथ्वीसमा यस्य, गाम्भीर्य सागरोपमम् ॥ १५ ॥

धैर्य मेरुसम यस्य, गगावन्निर्मल मन
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ १६ ॥

कायोधर्ममयोयस्य, वचश्वविश्वपावकम्
मनआत्मनिसंलग्न मात्मालीन प्रभोसदा ॥ १७ ॥

तस्मै श्रीदेवचन्द्राय, त्यागिने धर्मरागिणे
नम श्रीविश्वपूज्याय, विश्वकल्याणकारिणे ॥ १८ ॥

भावमेघस्वरूपाय विश्वोपग्रहकारिणे
नम श्रीदेवचन्द्राय सिद्धान्तपारगामिने ॥ १९ ॥

सर्वगच्छेषु मान्यस्य, यस्य हृदय प्रतिष्ठितम्
तस्मै श्रीदेवचन्द्राय, पूर्णप्रीत्या नमोनम ॥ २० ॥

स्वपरगच्छ माध्यस्थ्य, यस्य ज्ञानेन शोभते ।
सर्व गच्छसम । श्रीमद् । देवचन्द्र नमोऽस्तुते ॥२१॥
तपागच्छीय साधुभि सार्व मत्री प्रवर्तक
आदर्शो देवचन्द्रोऽभूत् सर्व साधु शिरोमणि ॥२२॥
देवचन्द्रकृत ग्रन्थान्, स्तुवेऽह भक्तिभावत
अमृतसागरा यत्र, विद्यन्ते सुखकारका ॥ २३ ॥
गुणानुरागयोगेन, देवचन्द्रमहामुने
स्तुति कृता तपागच्छे, बुद्धिसागरसूरिणा ॥ २४ ॥
गुणिनां गुणरागेण, व्यक्ताभवन्ति सद्गुणा
दोषास्त्याज्या गुणाग्राह्या भाषते बुद्धिसागर ॥२५॥

श्रीमद् देवचन्द्र मुनिराज.

श्रीमद् देवचद्र मुनिराने खरतरगच्छना श्री दीपचन्द्रजी साधु पासे दीक्षा लीधी हती तेओ श्री जैनश्वेताम्बर कोममा अतिप्रसिद्ध महात्मा तरीके गणाय छे. तपागच्छीय विश्ववद्य सर्वगीतार्थ शिरोमणि श्री यशोविजयजी उपाध्याय (वाचक) ना तेओ पूर्ण रागी हता, अने तेथी तेमणे श्री ज्ञानसार ग्रन्थपर ज्ञानमजरी नामनी टीका करी छे श्वेताम्बर जैनधर्ममा पूर्वे चोराशी गच्छो हता हाल तो पाच छ गच्छो विद्यमान जणाय छे जे गच्छमा जे दीक्षा ले ते गच्छना ते मुनि कहेवाय छे अने पछी ते मुनि ते गच्छना आचारोने पाळे छे अने ते समाचारीने तथा पोताना पूर्वजोने प्रसशे छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराने खरतरगच्छने खरतर गच्छ

जिनआणारगी वगेरे शब्दोथी वखाण्यो छे तेनी साथे कहेवु पडे छे के तेमणे तपागच्छ वगेरे गच्छोनी कोइ पण ग्रन्थमा निन्दा करी नथी उपोद्घात कर्ता लेखकने श्रीमद्ना पुस्तको पैकी आगमसारनो परिचय थयो मेहसाणामा स. १९५४ नी सालमा श्रीमद् रविसागर गुरुमहाराज साहेबनी सेवामा रहेवानु थयु हतु ते वखते आगमसारनु प्रथम वाचन थयु अने त्यारथी द्रव्यानुयोगनी रुचि वधी तथा आत्मज्ञाननी रुचि वधी. लगभग सोवार आगमसार ग्रन्थ वाच्यो, तथा नयचक्रसार वाच्यो, तेमज चोवीशी वाची तेथी जैनतत्त्वज्ञाननी पूर्ण श्रद्धा थइ अध्यात्मज्ञाननी श्रद्धामा आनदघनजी चोवीशी तथा श्रीमद् आनदघनना पदो उपयोगी थया, तेवी रीते द्रव्यानुयोगना ज्ञानमा श्रीमद् देवचद्रजीना पुस्तको उपयोगी थया तेथी तेमना पुस्तको वाचवानी जिज्ञासा वधी अने तेथी साधु जीवनमा शोधखोळ करी घणाखरा पुस्तको वाच्या बाळ जीवोने जैन तत्त्वज्ञान थवामा श्रीमद्ना पुस्तको अत्यत उपयोगी छे एम जणायु, तेमज तेमनां पुस्तकोने वाचवानी जिज्ञासा धारण करनारा जैनकोममा घणा जैनो मालुम पड्या तेथी छेवटे स १९६८ नी सालमा पादरामा वैशाख मासमा वकील मोहनलाल हिमचद वगेरेनी समक्ष तेमना सर्व पुस्तको छपाववानो निश्चय कर्यो अने ते निश्चयने वकील मोहनलाल हिमचद वगेरेए झीली लीधो— सुश्रावक वकील मोहनलाल हिमचदे उपाडी लीधो तेमणे देश परदेशमा अनेक साधुओ, साध्वीओ, श्रावक अने श्राविकाओपर अनेक पत्रो लखी तथा जाते जइ पुस्तकोनी शोध करीने छपाववा प्रयत्न कर्यो छे श्रीमद् देवचद्रनो प्रथम भाग बहार पड्यो तेना पर जैनोए तूटातूट करी मूकी अने -

ते लगभग खलास थवा आव्यो छे, आ उपरथी श्रीमद् देवचद्रजीना द्रव्यानुयोगना पुस्तकोनी महत्ता सर्वे लोको जाणी शकशे. श्रीमद् देवचद्रजीना द्रव्यानुयोगना पुस्तकोथी सकळ जैनकोमने एक सरखो लाभ मळे छे तेमज जैनेतर प्रजाओने पण एक सरखो लाभ मळे छे अतएव श्रीमद् देवचद्रजी विश्वमा पोताना सद्विचारो वडे व्यापक छे श्रीमद् देवचद्रजीए खास खरतर गच्छनी भिन्न मान्यनाओने स्थापन करवा कोइ ठेकाणे उल्लेख कर्यो नथी तेनु कारण ए छे के तेमने आत्मज्ञान थयु हतु अध्यात्मज्ञानी महात्माओ अमुक गच्छनी अमुक क्रियाचारनी भेदताने वळगी रहेता नथी अने तेथीज खास मुक्ति छे, एम मानता नथी तेथी तेओ मुख्य आत्मानी मुक्तिना उद्देश माटे लखे छे अने बोले छे. ए प्रमाणे श्रीमद्नी आत्मदृष्टि होवाथी तेओ खरतर गच्छना छता निश्चयनयनी अपेक्षाए सर्व गच्छोमा रहेनार समभावीओनी मुक्ति माननार हता तेथी आखी जैनकोमने ते प्रिय थइ पडे एमा कइ आश्चर्य नथी खरतर गच्छमा आज सुधीमा जे जे आचार्यो मुनियो थया छे तेओए घणा ग्रन्थो रच्या छे छता श्रीमद् देवचद्रजीनी पेठे द्रव्यानुयोगना ज्ञान माटे तथा अध्यात्मज्ञान माटे आटला पुस्तको रच्या होय एवी व्यक्ति जणाती नथी तेथी खरतर गच्छमा सर्वथी प्रथम नबरे श्रीमद् देवचद्रजी आवे छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराजनी पेठे कोइए आत्म सबधी उद्गारो निकाळ्या नथी तेथी देवचद्रजीए जे काम कर्यु छे अने जैनकोमनी आगळ जे वारसो मूक्यो छे तेथी जैनकोम तेमनी अनृणी छे एम कह्या विना चालतु नथी आवा महापुरुषना आत्मानी केटली बधी उन्नति

थई छे तेनो ख्याल ते दशाने प्राप्त करनारने आवी शके तेम छे तेमना जेवी जेओनी दशा न होय तेओ भले पिस्तालीश आगमना ज्ञाता होय तोपण तेओ तेमने पिछाणी शके नहीं. आवा महान् महात्मानु जीवनचरित्र जाणवानी जरुर छे

श्रीमद् देवचन्द्रना बाह्यजीवन चरित माटे देशपरदेशमां अनेक पत्रो लखावी घणी शोधो करावी परंतु हजु सुधी तेमनु जीवनचरित्र प्राप्त थयु नथी एटले हवे तेमना सबंधी किंवदन्तीओ वगेरेथी तेमना जीवन पर अजवाळु पाडवा नीचे प्रमाणे प्रयत्न करवामा आवे छे

श्रीमद् देवचन्द्रमहाराजनी जन्मभूमि, गृहस्थावास

केटलाक वृद्ध पुरुषोना कहेवा प्रमाणे श्रीमद् देवचन्द्रजीनी जन्मभूमि गुर्जरत्रा (गुजरात) छे एम जणाय छे श्रीमद् देवचन्द्रजीनी प्रथममा प्रथम कृति स १७४३ नी सालमा बनेली अष्टप्रकारी पूजा अने एकवीश प्रकारी पूजा ए बे छे ए बे कृतियो ते वखतनी गळगयु गुजराती भाषामा छे गुर्जर भाषाना साक्षरो जो बराबर लक्ष्य राखीने वाचशे तो तेमने गळगयु शब्दवाळी गुजराती भाषा समजाया विना रहेशे नहीं श्रीमद् महात्मा देवचन्द्रजीनो ब्राह्मणना कुळमा अगर वणिकमा उच्च कुळमा जन्म थएलो होवो जोइए अष्टप्रकारी अने एकवीश प्रकारी पूजा गुजरातमा रचेली जणाय छे अतएव श्रीमद्नो जन्म गुजरातमा छे तेमणे गुजरातमा श्रीमद् ज्ञानसागरजी उपाध्याय पासे अभ्यास करेलो हतो श्री ज्ञानसागरजी प्राय अचलगच्छमा थया होय एम जणाय छे तेमणे स १७४३ नी सालमां प्रथम अष्टप्रकारी पूजा

रही ते वखते तेमनी ओछामा ओछी वीश बावीश वर्षनी उमर होवी जोइए, एटले तेमनो जन्म स १७२० नी साल लगभग होवो जोइए, अने दीक्षा स १७३२ लगभगमा होवी जोइए, ए प्रमाणे होय तो ते जमानामा ते दीक्षा लीधा बाद अगियार वर्षे अने जन्मथी त्रेवीश वर्षे ग्रन्थ रचवाने समर्थ थएला होवा जोइए, तेमनो गृहस्थावास लगभग बार वर्षनो होवो जोइए

श्रीमद् देवचद्रजीमहाराजनी दीक्षा.

श्रीमद् देवचद्रजीने दीक्षा आपनार खरतर गच्छीय श्री दीपचद्रजी उपाध्याय हता खरतर गच्छमा जिनचद्रसूरि थया तेमना पुण्यप्रधानोपाध्याय थया तेमना श्री सुमतिसागरोपाध्याय थया तेमना राजसागर उपाध्याय थया तेमना ज्ञान धर्मपाठक थया तेमना शिष्य राजहस अने दीपचद्र बने शिष्य पाठक थया तेमा श्रीमद् दीपचद्रना शिष्य श्रीमद् देवचद्र पाठक थया दीक्षा लीधा बाद तेओ लगभग गुजरातमा, काठियावाडमा अने छेवटे मारवाडमा विचर्या होय एम जणाय छे तेथी तेमनो गुजराती भाषा पर सारो काबु जाम्यो हतो स १७६६ नी सालमा तेओए पजाबमा मुलतानमा ध्यान चतुष्पदी बनावी, तोपण तेने गुजराती भाषामा बनावी, तेज तेमनी गुजरातनी जन्मभूमिने माटे अने गुजरातमा २० वर्ष लगभग रह्या ए पुरवार करी आपे छे

विहार-गुजरात, मारवाड, पजाब

गुजरातथी विहार करी मारवाडमा तेओए चोमासा कर्या अने त्यार्थी जेसलमेर थइ पजाबदेश तरफ विहार करेलो जणाय छे पजाबदेशमा ते वखते जैनवणिकोनी घणी सख्या होवी जोइए, पाछळथी त्या जैन ढुढक साधुओनो प्रवेश थयेलो

होवो जोइए तेमणे स १७६६ ना वैशाखमां ध्यानदीपिका चतुष्पदी (मुल्तानमा) अने १७६७ ना पोष मासमा हिन्दी भाषामा द्रव्यप्रकाश सवैया छदमा (विकानेरमा) बनाव्यो ते उपरथी तेमनो विहार पजाब अने सरहद सुधी थएलो होवो जोइए पजाब तरफथी विहार करी सिंध वगेरे थइ मोटाकोट मरोटमा तेओए चातुर्मास करेलु जणाय छे मोटाकोटमा तेमणे स १७७६ माना फागण मासमा तेमना सहायक मित्र दुर्गादासने माटे आगमसारनी रचना करेली छे श्रीमद् देवचद्रना मोटाकोटमा दुर्गादास केवी रीते मित्र हता तेपर अनेक कल्पनाओ थाय छे जे श्रावको साधुओने मित्र तरीके मानी वर्ते छे ते अपेक्षाए कदापि मित्र लख्या होय वा अन्य कारणथी, तेनो निर्णय हाल थइ शके तेम नथी. मारवाडमाथी तेओ विहार करीने अनुक्रमे गुजरात तरफ आवेला जणाय छे स १७९६ मा जामनगरमा (नवानगरमा) कार्तिक सुदि एकमे विचारसार अने कार्तिक सुदि पचमीए ज्ञानमजरी पूर्ण करी छे एटले स १७७६ थी पछी १७९६ मा गुजरात तरफ आवेला अने गुजरातमा रहेला सिद्ध थाय छे स. १७७० पछीथी तेओश्री प जिनविजयजीनेभणाववा पाटण आव्या बाद स १७७५ पश्चात् मोटाकोट मरोटमा गया हता

श्रीदेवचंद्रजीए तपागच्छना प जिनविजयजीने तथा उत्तमविजयजीने अभ्यास कराव्यो

श्रीमद् देवचद्रजी महाराज सिद्धातना ज्ञाता हता. श्रीसीमाविजयजीए पोताना शिष्य जिनविजयजीने विशेषावश्यक भणाववा माटे पाटणमा बोलाव्या हता (स. १७७० थी १७७५ सुधीमा) तेनी साक्षी नीचे प्रमाणे–

श्रीज्ञानविमलसूरिजी कन्हे वाची भगवती खास,
महाभाष्य अमृत लह्यो देवचन्द्रगणि पास ॥

॥ जिनविजयजीना शिष्य उत्तमविजयजीए दीक्षा लीधा बाद गुरुनी साथे सं १७९९ मा पादरामा चोमासु कर्युं हतुं सं १७९९ ना श्रावण सुदि १० दशमे पादरामा तेमना गुरु जिनविजयजी, देवगत थया, त्यार बाद ग्रामानुग्राम विहार करता तेमणे भावनगरमा चोमासु कर्युं त्या श्रीमद् देवचन्द्रजीने अभ्यास करवा माटे बोलाव्या हता ते सबंधी प उत्तमविजयजीना निर्वाणरासमा नीचे प्रमाणे लखेल छे—

इम अनुक्रमे वधता थका रे लोल, हुवा अष्टादश वर्ष रे
खरतर गच्छमाहि थया रे नामे श्री देवचंद रे ॥
जैनसिद्धांत शिरोमणि रे लोल, धैर्यादिक गुणवृन्द रे ॥ ८ ॥

देशना जास स्वरूपनी रे लोल, ते गुरुना पदपद्म रे
वदे अमदावादमा रे लोल, पूजाशा नि छद्म रे ॥ ९ ॥

ते गुरुनी वाणी सुणी, हरख्यो चित्त कुमार
ज्ञानाभ्यास करु हवे, तुम्ह पासे निर्धार ॥ १ ॥

इंगित आकारे करी, जाणी तेह सुपात्र
ज्ञानाभ्यास कराववा, कीधो तेहने छात्र ॥ २ ॥

श्राविका रामकुंवर तिहा, धर्मी अति गुणवंत
गुरुवचने ते कुंवरने, अतिशय सहाय करत ॥ ३ ॥

हवे कुंवर नित्य २ भणे, प्रकरण जैनना सार, ललना,
दंडक ने नवतत्त्वजी, जाण्या जीवविचार, ललना ॥१॥

त्रणलोकनी दीपिका, सग्रहणी सुविचार, ललना
भाष्य चैय गुरु वदना, वळी पच्चखाण प्रकार, ललना ॥२॥
क्षेत्रसमास सोहामणो, सिद्ध पचाशिका नाम, ललना
सिद्धदंडिका तिम वळी, चउसरण अति अभिराम, ललना ॥३॥
कर्मग्रन्थ अर्थे कर्या, कम्मपयडी मुखपाठ, ललना
पंचसग्रह मुख ग्रन्थमा, विवर्यो कर्म जे आठ, ललना ॥४॥
कालविचार अगुल वळी, वनस्पति तिम जाण, ललना
दर्शनपारसी सित्तरी, कर्त्ता एहनु नाण, ललना ॥५॥
खड पद्गल तिम वळी, निगोद छत्रीशी जेह, ललना
वळिय विचार पचाशिका, निज अभिप्रापरे तेह, ललना ॥६॥
वृत्ति सहित वाचे सवे, ते गुरुने उपकार, ललना
भगजाल मुख बहु भणे, रहस्य ते आगम अपार, ललना ॥७॥
सप्तभगी नय सात जे, वळिय निखेपनी वात, ललना
तिनभगीपणे ग्रहे, केना कहु अवदात, ललना ॥ ८ ॥
इम करता हवे अन्यदा, गुरुजी करे विहार, ललना
सुरतनदर आविया, साथे तेह कुमार, ललना ॥ ९ ॥
शब्दशास्त्र ते शहेरमा, भणिया यत्न अपार, ललना ॥

पाटण शहेरना वाणिया, कचरा कीका नाम
आवी सुरतमा रह्या, सुदर जेहनु धाम ॥ १ ॥
पुण्य प्राक्रम जोरो थयो, त्हीं क्षेत्रान्तर योग
मनचिंते सफलो करु, लक्ष्मीनो सयोग ॥ २ ॥
आवी गुरुने विनवे, करशु तीरथ जात
पठिन पुस्प जो कोइ दियो, तो होय सफली वात ॥३॥
गुरु पण तेह कृपालवे, जाणी चतुर सुजाण
तस आग्रहथी आवियो, लक्षणरूप निधान ॥ ४ ॥

श्री उत्तमविजयीजीए भावनगरमा चोमासु कर्युं ते वखते तेमणे श्रीमद् देवचन्द्रजीने बोलावीने अभ्यास कर्यो तेनी साक्षी रासमा नीचे प्रमाणे छे—

भावनगर आदेशे रह्या भविहित करे मारा लाल
तेडाव्या देवचंद्रजीने हवे आदर मारा लाल
वाचे श्री देवचन्द्रजी पासे भगवती मारा लाल
पन्नवणा अनुयोगद्वार, वळी शुभमति मारा लाल
सर्व आगमनी आज्ञा दीधी देवचन्द्रजी मारा लाल
जाणी योग्य तथा गुणगणना वृन्दजी मारा लाल
तिहा कुंवरजी लाधा भक्ति घणी करे मारा लाल
कचराकीका सघ लेइ इण अवसर मारा लाल
श्री सिद्धाचल यात्रा करवा आविया मारा लाल
गुरुजी पण सिद्धाचल साथे सिद्धाविया मारा लाल ॥

श्रीमद् श्रीदेवचद्रजी पाटणमा १७७५ सुधी हता पश्चात् ते मोटाकोट मरोट (मारवाड) मा चोमासु रह्या पश्चात् ते स १७७८ मा पाछा गुजरातमा अमदावादमा आव्या हता ते वखते उत्तमविजयजी निर्वाणरासना आधारे—श्री उत्तमविजयजीए ससारीपणामा अढार वर्षनी उमरे एटले जन्म १७६० अने १७७८ नी सालमा अमदावादमा उपर प्रमाणे—रासमा गणाव्या प्रमाणे ग्रन्थोनो अभ्यास कर्यो हतो अमदावादमा १७७८–७९–८० लगभग चोमासा थया होय एम समजे छे श्री देवचद्रजी पासे पुजाशाने भणावता रामकुवर श्राविकाए सारी सहाय करी हती श्रीमद् देवचद्रजीए अमदावादथी विहार करी खभात, वडोदरा, पादरा, भरुच थइ सुरत

विहार कर्यो अने ते साथे कुवर पुजाशा हता सुरतमा श्रीमद् देवचद्रजीनी पासे पुजाशाए व्याकरणादि अभ्यास कर्यो अने ते वखते पाटणथी व्यापार करवा आवेला सघवी कचरा कीकाए सुरतथी सघ काढ्यो त्यारे श्रीमद् देवचद्रजीनी आज्ञाथी पुजाशाने साथे लीधा श्रीमद् देवचद्रजीए सुरतमा चार पाच चोमासा कर्या होय एम जणाय छे पुजाशाहे स १७९८ मा श्री जिनविजयजीनी पासे अमदावादमा दीक्षा लीधी अने तेमनु नाम उत्तमविजयजी पाड्यु त्याथी गुरु शिष्ये प्रेमापुरमा चोमासु कर्यु त्याथी सुरत जइ स १७९९ मा पादरामा चोमासु कर्यु स १७९९ नी सालमा पादरामा भगवतीसूत्र वाचना प जिनविजयजीए श्रावण सुदि दशमे देहोत्सर्ग कर्यो ज्या तेमना शरीरने अग्निदाह देवामा आव्यो छे त्या तळावना काठे देरी करावाभा आवी छे श्री उत्तमविजयजीए स १८०२ मा भावनगरमा चोमासु कर्यु त्या श्रीमद् देवचद्रजी पासे भगवती पन्नवणा अनुयोगद्वार वगेरे सूत्रो धार्या अने श्री देवचद्रजीए सकलागमो वाचवानी तेमने आज्ञा करी स. १८०३ मा श्रीमद् देवचद्रजी भावनगरमा हता, पश्चात् सुरत गया अने कचरा कीकाना सघनी साथे शत्रुजयनी यात्रा करवा माटे आव्या, ते वखते भावनगरथी उत्तमविजयजी पण सिद्धाचलनी यात्राए एक सघमा भेळा गया स १८०४ मा श्री देवचद्रजीए सिद्धाचलनी यात्रा करी ते सबधीना स्तवनमा नीचे प्रमाणे लखाण छे

सवत अढार चिडोतर वरसे, सित मृगसिर तेरसिये
श्री सुरतथी भक्ति हरखथी, सघ सहित उल्लसिये ॥

कचरा कीका जिनवर भक्ति, रुपचंद गुणवंतजीए
श्री सरने प्रभुजी भेटाया, जगपति प्रथम जिणंद ॥
ज्ञानानन्दित त्रिभुवन वंदित, परमेश्वर गुणभीना
देवचंद्र पद पामे अद्भुत, परम मंगल लयलीना ॥

उपर प्रमाणे श्रीमद् कये कये स्थानके विहार कर्या अने क्या क्या चोमासा कर्या ते जणाय छे श्रीमद्‌नो विहार गुजरात, काठियावाड, लाट, मारवाड, सिन्ध, पंजाब वगेरे देशोमां थएलो छे तेमणे तपागच्छना साधुओने अभ्यास कराव्यो एम श्री जिनविजयजी अने श्री उत्तमविजयजी पन्यासना निर्वाणथी सिद्ध थाय छे

यात्राओ

श्रीमद् देवचंद्रजीए अनेक तीर्थोनी यात्राओ करी छे एम तेमना ग्रन्थो अने स्तवनो परथी जणाय छे द्रव्यानुयोगी आत्मज्ञानी श्रीमद् देवचंद्रजी व्यवहार अने निश्चयनी श्रद्धा वाळा अने ते प्रमाणे वर्तवावाळा हता तेमणे सिद्धाचल तीर्थ के जे सर्व तीर्थ शिरोमणि कहेवाय छे ते तीर्थनी घणीवार यात्रा करी हती तेओ सं १८०४ मां सुरतना संघवी कचरा कीकाना संघमां गया हता त्यार बाद तेमणे विहार वा यात्रा करी एवा उल्लेखो मळी आवता नथी तेमणे गिरनार पर्वत पर रहेल श्री नेमिनाथनी यात्रा करी हती एम गिरनारनी स्तुतिपरथी जणाय छे गुजरातथी मारवाड तरफ जतां तारंगाजी, कुंभारीया, आबुजी, देलवाडा वगेरे तीर्थोनी यात्रा करेली होवी जोइए तेओ सिंधुनी सरहद पर मोटाकोट मरोट सुधी गया हता तेथी मारवाड, कच्छ अने सिन्धनी आजुबाजुना जिन-

मंदिरोनी यात्रा करेली होवी जोइए तेओश्रीए मुलतानमा चोमासु कर्युं हतु तेथी त्याना तीर्थोनी यात्रा करेली होवी जोइए स १७६६ नु चोमासु बिकानेरमा कर्यु हतु गुजरातमा पाटण, अमदावाद, खभात, सुरत, भावनगर, लींबडी, पालीताणा वगेरे स्थळे चोमासा कर्या हता ते ते स्थळोनी प्रतिमाओनी अने आजुबाजुना गामो शहेरोनो जिनप्रतिमाओना दर्शन करेला होवा जोइए

उपदेश-प्रतिष्ठा

श्रीमद् देवचद्रजीनो दीक्षा पर्याय लगभग ७५ पोणोसो वर्षनो होवो जोइए १७३२ लगभगमा दीक्षा अने स १८१० लगभगमा निर्वाण अने बार वर्षनो गृहवास, एम आशरे गणता उमर लगभग नेवु वर्षनी होय तेम अनुमान थाय छे, तेथी तेमनो दीक्षा पर्याय पोणोसो वर्ष लगभगनो गणता तेटला वर्षमा तेमणे अनेक गाम शहेरोमा उपदेश आपेलो जणाय छे तेओ उपदेश देवामा एक्का होवा जोइए, एम तेमना ग्रन्थो उपरथी अवबोधाय छे मारवाड, पजाव वगेरे देशोमा उग्र विहार करीने तेमणे ते समयमा जे बोध आपीने आत्मभोग आप्यो छे तेथी जैनकोमनी जे सरक्षा थइ छे तेनो हाल ख्याल आवयो मुश्केल छे तेमणे स १७९४ मा शत्रुजय पर्वत पर प्रतिष्ठा करी छे एम शिलालेखथी जणाय छे एम श्रीयुत मोहनलाल दलिचद जणावे छे तेमज तेमना गुरुनी साथे स १७८८ मा शत्रुजय पर कुथुनाथजीनी प्रतिष्ठा वखते तेओ हाजर हता तथा सिद्धाचल पर समवसरणनी प्रतिष्ठा वखते हाजर हता तथा अमदावादमा सह-

स्रफणानी प्रतिष्ठा वखते हाजर हता तथा लींबडीमा देरासरना मूळ नायकनी बे बाजुए बे देरीओनी पोते प्रतिष्ठा करावी हती

श्रीमद् देवचद्रजीनी महत्ता–विद्वत्ता

श्रीमद् देवचद्रजी महाराज जैनागमोना पारगामी हता तेमणे अनेक गामना श्रावकोए पुछेला प्रश्नोना उत्तरो आप्या हता प्रश्नोत्तर नामनो ग्रन्थ ते बाबतनी साक्षी पूरे छे ते समयना विद्वानोमा तेमनी प्रतिष्ठा अने विद्वत्ता सारी रीते 'वृद्धि पामी हती खरतर गच्छमा ते वखते तेमना समान कोइ विद्वान् होय एम ते समयना ग्रन्थोथी अवलोकना अवबोधातु नथी' तपागच्छना सवेगी साधुओमा तेमनी महत्ता हती पोतानी महत्ता नवे एवा गुणो तेमनामा हता तपागच्छना सवेगी मुनिओ पैकी महान् श्री जिनविजयजी अने प श्री उत्तमविजयजी जेवाना तेओ धर्मशास्त्र पाठक गुरु हता सवेगी पक्ष ते समयमा चारित्रमार्ग सुधारक हतो तेमना हृदयमा श्रीमद् देवचद्रजीना गुणो स्फुर्या अने तेमना गुणो श्रीमद् देवचद्रजीना हृदयमा स्फुर्या अने तेथी सवेगी क्रियोद्धारक साधुओनी पुष्टि थइ तेथी श्रीमद् देवचद्रजी महाराजनी घणी प्रतीष्टा वधी तेमना समयमाज तेमनी महत्ता–प्रतिष्ठानी आखा भारतमा ख्याति प्रसरी तेमनी सर्व गच्छोमा महत्ता वधवा लागी श्रीमान् पन्यास पद्मविजयजी के जेओ पिस्तालीश हजार गाथाओना रचनार पद्मद्रह तरीके प्रसिद्ध थया छे तेमणे श्री उत्तमविजयजीना निर्वाण रासमा तेमना समानकालमा

खरतर गच्छ माहे थया रे नामे श्री देवचद्र रे

जैनसिद्धांत शिरोमणि रे लोल
धैर्यादिक गुणवृन्द रे, देशना जास स्वरूपनी रे लोल ॥

इत्यादि शब्दोथी श्रीमद् देवचन्द्रनी विद्वत्तानी अने साधु तरी-केनी महत्तानी स्तुति करी छे तपागच्छमा संवेगी पक्षमा श्री पद्मविजयजी पन्यासनी घणी प्रतिष्ठा छे श्रीमद् देवचन्द्र महाराजनो श्री पद्मविजयजीए संसारीपणामा तथा साधुपणामा समागम करेलो हतो अने ते समयमा ते महा विद्वान् गणाता हता तेनो जाति अनुभव कर्यो हतो तेथी तेमणे श्रीमद् देवचन्द्रने जैनसिद्धान्त शिरोमणि एवा पदथी नवाज्या छे, तथा धैर्यादिक गुणना वृन्द तरीके प्रशस्या छे, तथा जेनो देशनास्वरूपनी अर्थात् आत्मस्वरूपने प्रकाशनारी छे, एम प्रतिपादन कर्युं छे ते खरेखर अनुभव करीने कथ्यु छे संवेग पक्षी मुनिशेखर श्रीमद् प पद्मविजयजी जेवा महा विद्वान् अने गुणानुरागीए श्रीमद् देवचन्द्रजीनी प्रतिष्ठा, महत्ता अने विद्वत्ता-नी रयाति करी छे उपाध्याय श्री देवचन्द्रजीने एक पूर्वनु ज्ञान हतु, एम श्री ज्ञानसारजीए आ ग्रन्थना पा १०४३ मा जणाव्यु छे, तथा ते आत्मज्ञानी वक्ता हता एम स्पष्ट जणाय छे इत्यादि अनेक रीत्या श्रीमद् देवचन्द्रजीनी मह-त्तानी सिद्धि थाय छे तेथी हवे तत्संबंधी विशेष लखवानी जरुर जणाती नथी

समकालीन जैन साधुओनु अने श्रीमद् देवचंद्रनु परस्पर मिलन

अढारमा सैकाना मध्यभागमा आखी जैन कोममा अने भारतदेशमा महाप्रखर विद्वान् तरीके श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायजी तपागच्छीय प्रसिद्ध छे अर्वाचीन कालमा तेमना

जेवा कवि, भक्त, ज्ञानी, कर्मयोगी महात्मा अल्प थया हशे वा नहि तेओ जैनकोममा सर्वमान्य धर्मधुरधर गीतार्थ हता सर्व अनुयोगोना वे गीतार्थ हता तेमना समागममा श्रीमद् देवचन्द्रजी आव्या होय एम जणाय छे उपाध्यायजी स १७४५ लगभग सुधी जीवता हता उपाध्यायना समागममा आव्याथी तेमनु आत्मज्ञान तरफ लक्ष्य गयु होय एम अनुमान थाय छे अने तेथी तेमणे ज्ञानसारपर ज्ञानमजरी टीका लखी श्रीमद् यशोविजयजीनी विचारमाळानी पुष्टि करी जणाय छे पाटणमा श्रीमद् ज्ञानविमलसूरि साथे श्रीमद् देवचन्द्रनो समागम थएलो प्रतीत थाय छे प जिनविजयजीने श्रीज्ञानविमलसूरिए भगवती वचाव्यु हतु अने वे साल लगभग श्रीजिनविजयजीने श्रीमद् देवचन्द्रजीए विशेषावश्यक वचाव्यु हतु तेथी पाटणमा बन्ने विद्वानोनो समागम थएलो होवो जोइए श्रीमद् देवचन्द्रजी अने श्री ज्ञानविमलसूरि बनेए मळी आनन्दघन चोवीशीना छेल्ला वे स्तवनो रच्या हता श्रीमान् आनन्दघनजीना समयमा तेओश्री विद्यमान हता परतु आनन्दघनजीनी साथे समागम थयो होय एम मानवाने सबल कारणो मळ्या नथी श्रीमद् यशोविजयजीने श्रीआनदघनजीनो समागम थयो हतो अने तेथी उपाध्यायजीनी दृष्टि पश्चात् अध्यात्मज्ञान तरफ वळी हती श्री उदयरत्नजी वगेरे मुनिराजो श्रीमान्ना समानकालीन हता

भिन्न भिन्न गच्छना साधुओनु परस्पर मिलन तथा तेओनुं पठनपाठन

ते कालमां तपागच्छना मुनियो अने खरतरगच्छना मुनियो तथा अचलगच्छना मुनियो परस्पर एक बीजा गच्छना विद्वान्

साधुओ पासे अभ्यास करता हता सोळमा सैका सुधीमां अढारमा सैकाना मध्यकाळमा परस्पर भिन्न गच्छीय साधुओमा गुणानुराग वृद्धि पामेलो हतो अढारमा सैकाना मध्यकाळमा खरतर गच्छ अने तपागच्छना सूरिओ सम्मतिने ज्यारे सिद्धान्त वांचता करता जता हता त्यारे तेओ पाटणमां (श्रीमद् कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्रनी जन्मभूमिमा) मळ्या त्यारे बे गच्छना आचार्योमा घणो राग थयो अने बे गच्छना आचार्योनां श्रावकोए हळीमळी कर्यां तेमा बे लाख रुपैयानो उपज थई बे गच्छमा ते वखते पठनपाठन अरसपरस चालु हतु

श्री देवचन्द्रजीए अनेक पुस्तको रच्या छे तेनी नीचे प्रमाणे यादी आपवामा आवे छे—

श्रीमद् देवचन्द्रजीकृत कृतियो

	पुस्तकनु नाम.	रच्यानो संवत्	क्या गाममा
१	अष्टप्रकारी पूजा	१७४३	,,
२	एकवीशप्रकारी पूजा	,,	
३	ध्यानदीपिका चतुष्पदी	१७६६ वै व १३	मुलतान पजाब
४	द्रव्यप्रकाश	१७६७ पो व १३	बिकानेर, चोमासु स १७६६ नु कर्या बाद
५	आगमसार	१७७६ फा सु ३	मोटाकोट मरोट
६	नयचक्र		
७	विचारसार	१७९६ का सु १	नवानगर (जामनगर)
८	ज्ञानमजरी टीका	,, ,, ५	,,
९	विशविहरमानवीशी		पालीताणा
१०	सिद्धाचल स्तवन,	१८०४ मा सु १३	,,

११ गुरुगुणपट्त्रिंशिनो टबो
१२ पाच कर्मग्रंथनो टबो
१३ विचाररत्नसार- ' ,तरूप)
१४ प्रश्नोत्तर
१५ कर्मसंवेध
१६ प्रतिमा पुष्पपूजासिद्धि
१७ गुणस्थानक अधिकार
१८ अध्यात्मगीता (प्राय १७४३)मा लींबडी वृद्धोना कहेवा प्रमाणे
१९ वर्तमान चोवीशी
२० अतीत चोवीशी पैकी एकवीशी
२१ स्नानपूजा
२२ नवपदपूजा उल्लाळा
२३ वीरनिर्वाणना स्तवननी ढाळो भावनगरमा
२४ ग्रादुजिनस्तवन अने तेनो टबो
२५ भावीचोवीशी पैकी पद्मनाभनु स्तवन
२६ सीमंधरजिन स्तवन
२७ दीवालीनु स्तवन लघु
२८ नगानगर आदि जिनस्तवन
२९ द्रु० पद स्तवन
३० समवसरण स्तवन
३१ कुंभस्थापना
३२ सहस्रकूट स्तवन
३३ अजितनाथजिन होरी.
३४ प्रभु स्तुति
३५ सिद्धाचल स्तुति.

३६ गिरनार स्तुति
३७ वीशस्थानक स्तुति
३८ ज्ञानबहुमान स्तुति
३९ }
४० } सिद्धाचल स्तवन
४१ }
४२ वडी साधु वन्दना
४३ अष्टप्रवचन मातानी सज्झाय — जामनगर
४४ प्रभजनानी सज्झाय — रींनडीमा
४५ ढढणऋषिनी सज्झाय
४६ समकितनी सज्झाय
४७ गजसुकुमालनी सज्झाय
४८ पचेन्द्रियविषय त्याग पद
४९ }
५० } त्रण कागल—लखेल पत्रो
५१ }
५२ साधुस्वाध्याय तेनापर ज्ञानसारनो टबो
५३ सज्झाय
५४ साधुनी पचभावना — जेसलमेरमा
५५ (आनदघनजीनी चोवीशीमा ज्ञानविमलजी अने देवचदजी बन्ने भेगा थइ बनावेला २३–२४ वे स्तवनो)
५६ आजको लाहो लीजीए रे काल कोने दीठी छे (प्राय देवचन्द्रजीकृत जणाय छे)

परस्परना ग्रन्थोमा साक्षीओ

श्रीमद् देवचद्रजीकृत जे जे ग्रन्थो-कृतियो उपलब्ध थइ छे ते उपर प्रमाणे जणावी छे भविष्यमा जे जे उपलब्ध थशे ते ते जणाववामा आवशे श्रीमद् देवचद्रजीए पोताना ग्रन्थोमा वाचक यशोविजयजीना ग्रन्थनी साक्षी आपी छे तेथी तेओ गुणानुरागी हता एम सहेजे सिद्ध थाय छे तेमज तेमणे श्रीमद् आनन्दघनजी के जे अर्वाचीनकालना अध्यात्मज्ञानोद्धारक हता, तेमना वचनोनी पण पोताना ग्रन्थमा साक्षी आपी छे तेथी ते कालमा तपागच्छीय श्रीमद् आनदघनजीना विचारो आखी जैनकोममा जलदी प्रसरी गया हता एम सिद्ध थाय छे श्रीमद् देवचद्रजीना ग्रन्थोना पूर्णरागी श्री अमीविजयजी (अमीकुवरजी) हता तेमणे नवतत्त्व प्रश्नोत्तरमा श्रीमद् देवचद्रजीकृत ग्रन्थनी साक्षी आपी छे परस्पर गच्छना आचार्यो अने साधुओ पोतपोताना ग्रन्थोमा एक बीजाना सद्विचारोनी साक्षीओ आप्या विना रहेता नहोता

त्रण मुनिओनी एक पूजा

आ वखते तपागच्छ अने खरतरगच्छना आचार्योमा सप हतो स्थानकवासीओ सामे बने गच्छवाळा कुसपने मूळी क्षुल्लक मान्यताओना भेदोने उपशमावी एक थया हता प्रतिमाना उत्थापको सामे प्रतिमा सिद्धिना विचारो आपवामा एक सरखी रीते गुरुओ जिनराज्योनी पेठे सर्पाने वर्त्या हता श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायकृत नवपद स्तुति तथा ज्ञानविमलसूरिकृत नवपद स्तुति अने श्रीमद् देवचद्रकृत नवपदनी

तेमा अहमत्व बुद्धि नष्ट थाय छे अने अप्रमत्त दशामा प्रवेश थाय छे श्रीमद् देवचद्रजीने एवी उत्तम आत्मज्ञान दशा प्रगट थइ हती, अने एवी दशामा अवधूत बनेला हता तेथी ते प्रसगे जे उद्गार बहार पडेला छे तेमा आत्मदशानी खुमारी नीतरी छे ते तेमना उद्गारवाळा स्तवनोथी वाचको सहेजे समजी शके तेम छे नामरूपनो अहभाव टळ्यो हतो देह छता तेमणे विदेह दशानो अनुभव कर्यो हतो लींबडीना उपाश्रय पासे देरासरमा एक भोंयरामा तेओश्री ध्यान धरता हता एम त्याना वृद्ध श्रावको जणावे छे मोटाकोट मरोटमा तेओश्री बने त्रण त्रण वा कलाकोना कलाको पर्यंत आत्माना शुद्धोपयोगमा तल्लीन थइ आत्मसमाधिमा मग्न रहेता हता तेमणे सविकल्पध्यान समाधि उपरात निर्विकल्पक समाधिनो रस लीधो हतो अने तेओ देह छता देहातीत दशामा अखड उपयोग पणे रह्या हता तेथी तेओए शुद्धोपयोगना तानमा स्तवनोमा आत्मदशानो रस रेड्यो छे जेटला प्रमाणमा आत्म-दशा प्रगटी होय छे तेटला प्रमाणमा उद्गारो प्रकटे छे जेटलु आत्मामा प्रगट्यु छे तेटली झाखी शब्दोद्वारा बहार प्रकाशे छे दरेकना पोताना शब्दोमा तेना विचारो होय छे श्रीमद् देवचद्रजीना पुस्तको एज तेमनु आन्तरजीवन छे बाह्यजीवननी चेष्टामा तो प्रारब्ध योगे विचित्रता होय छे छता आन्तरजीवननो तेथी जुदा प्रकारनु होय छे बाह्यजीवन ते शरीर, वाणी अने कर्मना भोगथी मिश्रित होय
आध्यात्मिक जीवनतो उपयोग रूप होय छे
शुष्क नाळियेरना जेवु बाह्यमा राग द्वेषथी
हतु एम तेमना स्तवनोथी जणाय

श्रीमद्‌ना प्रभुना स्तवनोमा आत्मदशाना उद्गारो छे तेमाथी संक्षेपथी केटलाक नीचे प्रमाणे जणाववामा आवे छे—

आरोपित सुख भ्रम टल्यो रे, भास्यो अव्याबाध
समर्यो अभिलाषीपणो रे, कर्ता साधन साध्य ॥अ०॥
ग्राहकता स्वामित्वता रे, व्यापक भोक्ता भाव
कारणता कारजदशा रे, सकल ग्रह्यु निज भाव ॥अ०॥

प्रभु दरिसण महामेहतणे प्रवेशमें रे
परमानंद सुभिक्ष थयो मुज देशमें रे ॥ १ ॥
तिन भुवन नायक शुद्धातम तत्त्वामृतरस वूठ्ठ रे
सकल भविक लीलाणी मारु मन पण तूठ्ठ रे ॥आ० २॥
मनमोहन जिनवरजी मुजने, अनुभव प्याले दीधो रे
पूर्णानन्द अक्षय अविचलरस, भक्ति पवित्र थइ पी लीधोरे॥आ० ३॥
ज्ञानसुधा लालीनी ल्हेरे, अनादि विभाव विसार्यो रे
सम्यग्ज्ञान सहज अनुभवरस, शुचि निजबोध समार्यारे॥आ ४॥

जिनगुण रागपरागथी रे, वासित मुज परिणाम रे
तजशे दुष्ट विभावता रे, सरशे आतम काम रे ॥
जिन भक्तिरत चित्तने रे, वेधकरस गुण प्रेम रे
सेवक जिनपद पामशे रे, रसवेधित अय जेम रे ॥
नाथ भक्तिरस भावथी रे, तृण जाणुं पर देव रे
चिन्तामणि सुरतरुथकी रे, अधिकी अरिहंत सेव रे ॥
परमातम गुण स्मृतियकी रे, फरस्यो आतमराम रे
नियमा कंचनता लहे रे, लोह ज्यु पारस पाम रे ॥

सहेजे प्रगट्यो निज परभाव विवेकजो,
अन्तर आतम ठहर्यो साधन साधवे रे लोल,
साध्यालंबी थइ ज्ञायकता छेकजो,
निज परिणति थिर निज धर्मरसे ठवे रे लोल ॥
त्यागीने सवि परपरिणतिरस रीजजो,
जागी छे निज आतम अनुभव इष्टता रे लोल ॥
सहजे छुटी आस्रवभावनी चाल जो,
जालम ए प्रगटी संवर शिष्टता रे लोल ॥
बंधना हेतु जे छे पापस्थान जो,
ते तुज भक्ते पाम्या पुष्ट प्रशस्तता रे लोल ॥
ध्येयगुणे वलग्यो पूरण उपयोग जो,
तेहथी पामे ध्याता ध्येय समस्तता रे लोल ॥
जे अति दुस्तर जलधि समो संसार जो,
ते गोपद सम कीधो प्रभु अवलंबने रे लोल ॥
जाण्यो पूर्णानंद ते आतमपास जो,
अवलंब्यो निर्विकल्प परमातम तत्त्वने रे लोल ॥

भास्यो आतमस्वरूप अनादिनो विसर्यो हो लाल
सकल विभाव उपाधियकी मन ओसर्यो हो लाल
सत्ता साधन मार्गभणी ए संचर्यो हो लाल ,
दानादिक निज भाव हता जे परवशा हो लाल
ते निज सन्मुख भाव ग्रही लही तुज दशा हो लाल
क्षायोपशमिक गुण सर्व थया तुज गुणरसी हो लाल
सत्ता साधन शक्ति व्यक्तता उल्लसी हो लाल
हवे संपूरण सिद्धतणी शी वार छे हो लाल
देवचन्द्र जिनराज जगत आधार छे हो लाल

श्रीमद्नी भक्त दशा.

श्रीमान् देवचन्द्रजी परमात्माना ज्ञानी भक्त हता तेमणे चोवीश तीर्थंकरोनी पूर्ण प्रेममयी स्तवना करी छे तेमणे हृदयना पूर्ण भावथी वास्तविक परमात्माना गुणोनु वर्णन कर्यु छे तेमनी भक्तिमा लघुता अने परमात्मानी प्रभुतानु दृश्य छे. परमात्मानी भक्ति-प्रार्थना करती वखते पोते हृदयने जरा मान छद्मस्थ राखता नथी प्रभुनी भक्तिमा नामरुपनी अहता विसरी जाय छे तेमज प्रभुने मळवा माटे अनेक आशामय सुरम्य भावनाओने हृदय आगळ खडी करे छे पोतानी मोहदशा न होवा छता तेने मोटी करीने दास भावे प्रभुने पोताने दोषी तरीके जणावे छे पोताना बनावेला स्तुति पदो-मायी सक्षेपथी नीचे प्रमाणे आपवामा आवे छे —

तार हो तार प्रभु मुज सेवक गणी
जगत्मा एटलु सुजस लीजे
दास अवगुण भर्यो जाणी पोतातणो
दयानिधि दिनपर दया कीजे तार० ॥ १ ॥
रागद्वेषे भर्यो मोह वैरी नड्यो,
मोहनी रीतिमा घणुए रातो
क्रोधवश धमधम्यो शुद्धगुण नवीरम्यो
भम्यो भवमाहि हु विषय मातो तार० ॥ २ ॥
आदर्यु आचरण लोक उपचारथी
शास्त्र अभ्यास पण काइ कीधो
शुद्ध श्रद्धानवण आतम अवलब विण
तेह्वो कार्य तेणे को न सिद्धयो तार० ॥ ३ ॥

स्वामी गुण ओलखी स्वामीने जे भजे
दर्शन शुद्धता तेह पामे
ज्ञानचारित्र तप वीर्य उल्लासथी
कर्म जीती वशे मक्ति धामे तार० ॥ ५ ॥
जगत् वत्सल महावीर जिनवर सुणी
चित्त प्रभु चरणने शरण वास्यो
तारजो बापजी बिरुद निज राखवा
दासनी सेवना रखे जोशो तार० ॥ ६ ॥

होवत जो तनु पांखडी, आवत नाथ हजूर लालरे
जो होती चित्त आंखडी, देखत नित्य प्रभुनूर लालरे
देव जशा दर्शन करो ॥
शासन भक्त जे सुरवरा, विनवु शीष नमाय लालरे
कृपा करो मुज उपर, तो जिन वन्दन थाय लालरे (देव)
पूछ पूर्व विराधना, शी कीधी एणे जीव लालरे
अविरति मोह टळे नहीं, दीठे आगम दीव लालरे (देव)
इत्यादि

ते समयनी स्थिति अने सुधारणानो बोध

श्रीमद् देवचन्द्रना समयमा पण गाडरीया प्रवाह प्रमाणे जैनो वर्तता हता तळावमा पाणी होय छे तो लील होय छे तेम कोइ जमानो एवो नथी होतो के जेमा सर्व लोको ज्ञानीओ होय वा सर्व लोको अज्ञानीओज होय ज्ञानीओनी साथे अज्ञानीओ होय छे अने अज्ञानीओनी साथे

ज्ञानीओ होय छे भक्तो होय छे त्या अभक्तो पण होय छे दुनियाना जीवो रजोगुण, तमोगुण अने सत्त्वगुण युक्त होय छे जीवोने कर्मप्रकृति नचावे छे केटलाक जीवो एकात क्रियावादी होय छे केटलाक शुष्क ज्ञानवादी होय छे, **ज्ञान क्रियाभ्यामोक्ष** ज्ञान अने क्रिया ए बेथी मुक्ति छे एम माननारा दुनियामा रत्ननी पेठे अल्प मनुष्यो होय छे श्रीमद् देवचद्रजी महाराज उपदेशक हता तेमज जैनोनी धर्म दशाना निरीक्षक हता जैनोने बोध पमाडीने धर्मना स्थिर करनार हता ते वखतना जैनोमा ते वखते बाहुल्य क्रियाजडदशानु हतु तेथी क्रियाजडमनुष्यो गाडरिया प्रवाहे समज्या विना प्रतिक्रमणादि क्रियाओने माने पश्चात् आत्मज्ञान तरफ रुचि धरावता नहोता अने आत्मज्ञानी मुनिराजोनी महत्ता अवबोधवा शक्तिमान् थया नहोता सर्व काळमा ए प्रमाणे बने छे श्रीमद् देवचद्रजी जैनशासन प्रवर्तक हता आखी दुनियाना मनुष्यो जैनतत्त्वज्ञान प्राप्त करी ले तो बहु सारु एवी भावनावाळा हता ते वखतमा अज्ञानी व्यवहारवादीओनी बाहुल्यता हती आत्मज्ञान रसिक अल्प मनुष्यो ते वखतमा हता तेथी तेओ चद्रबाहु जिनना स्तवनमा नीचे प्रमाणे उद्गारो काढे छे

द्रव्य क्रिया रुचि जीवडा रे, भाव धर्म रुचि हीन,
उपदेशक पण तेहवा रे, शु करे जीव नवीन रे
चद्राननजिन, ३

तत्त्वागम जाणग तजी रे, बहु जन सम्मत जेह,
मूढ हठीजन आदर्यो रे, सुगुरु कहावे तेह रे चन्द्रानन० ४

आणा साध्य विना क्रिया रे, लोके मान्यो रे धर्म,
दंशणनाण चरीत्तनो रे, मूल न जाण्यो मर्म रे चन्द्रानन० ५
गच्छकदाग्रह साचवे रे, माने धर्म प्रसिद्ध,
आतमगुण अकषायता रे, धर्म न जाणे शुद्ध रे चन्द्रानन० ४
तत्त्व रसिकजन थोटला रे, बहुलो जन सवाद,
जाणो छो जिनराजजी रे, सवळो एह विवाद रे चन्द्रानन० ७
इत्यादि

ए प्रमाणे तत्कालीन धर्मीओनी दशानु वर्णन कर्यु छे लोकोने श्रीयशोविजयजी उपाध्याये ते वखतमा शिखामण रूप सख्त चाबखा लगाव्या छे ते प्रमाणे श्रीमद् वाचक देवचंद्रजीए सख्त चाबखा लगाव्या नथी तेमणे तो जे कह्यु छे ते पण मर्यादामा शिखामणरुपे कह्यु छे परतु लोको पर तेनी घणी सारी असर थइ छे अने भविष्यमा थशे

श्रीमद् कर्मयोगी महात्मा

आजकाल जे आत्मज्ञानीओ देखाय छे तेमानो मोटो भाग शुष्क ज्ञानीओनो बनेलो होय छे आत्मानु सम्यग्-ज्ञान प्राप्त कर्या विना शुष्कज्ञानीपणु प्राप्त थाय छे अने तेथी वाचकज्ञानी तरीके उपहासने पात्र थाय छे कोटाधु-दीना भावना भाववावाळा शेठनी पेठे बनीने जेओ कहेवा प्रमाणे वर्तता नथी तेओ पोते तरी शकता नथी अने अन्योने तारी शकता नथी क्रिया विनानु शुष्कज्ञान कइ करी शकतु नथी. लौकिक शास्त्रो पैकी भगवद्गीतामा श्रीकृष्णे अर्जुनने कर्मयोगी थवा माटे सारी रीते उपदेश आप्यो हतो

कद करवु नहीं अने बेसी रहेवु लागी लागी वातो कर्या करवी स्वपरनुं श्रेय थाय एवां कार्यो करवां नहीं एथी स्वपरनुं कल्याण थतुं नथी व्यवहारमा रहीने स्वाधिकारे योग्य धर्मप्रवृत्ति कर्या विना आत्मज्ञान, इडानी पेठे काचु रहे छे वा काचा पाराना जेवुं रहे छे शुभ प्रवृति, सेवा, परमार्थ कार्यो वगेरे कार्यो कर्या विना कोइने आत्मज्ञाननी पक्वना थइ नथी अने थशे नथी वातो कर्याथी वटा थता नथी तेम शास्त्रोमाथी आत्मज्ञाननुं स्वरूप वाच्युं एटला मात्रथी आत्मज्ञानी थवातु नथी देव, गुरु, धर्मनी भक्ति करवाथी अने स्वाधिकार प्रवृत्तियी प्रवृत्त थता आत्मज्ञान परिणाम पाम्यु के नहीं तेनो अनुभव आवे छे सेवा कर्या विना आत्मज्ञान जे छे ते आत्मामा परिणमतु नथी देश सेवा, कुटुम्ब सेवा, गुरुजन सेवा, प्रभु गुरु भक्ति, समाज सेवा, जाहेर उपदेश प्रवृति, अनेक ग्रन्थोनी रचना, वगेरे शुभ कर्मो करवाथी अध्यात्मशास्त्रोद्वारा वाचेलु आत्मज्ञान खरेखर आत्मज्ञानरूपे परिणाम पामे छे श्रीमद् देवचन्द्रजीए दीक्षित थया बाद पोताना गुरु श्रीदीपचद महाराजनी मन वाणी कायाथी सेवा उठावी हती धर्मविद्या गुरु श्री ज्ञानसागरजीनी पूर्ण प्रेमथी सेवा करी हती तेओ गुरुकुळमाथी छुटा पड्या नहोता, गुरुकुळवासमा रहीने तेमणे परपरा सहित ज्ञान प्राप्त कर्यु हतु शास्त्रज्ञाता थता पोतानी मानता पूजा वधारवा माटे गुरुथी जूदा पड्या नहोता धर्मव्यवहारनी शुभाचरणाओनो तिरस्कार कर्यो नहोतो निश्चयज्ञानमा परिपूर्ण थया उना शुष्कज्ञानी बन्या नहोता प्रतिमा स्तवनरूपभावपूजा, तीर्थयात्रा, विहार, प्रतिक्रमणादि शुभ

धर्म क्रियाओनो त्याग कर्यो नहोतो गामोगाम फरीने तथा देशोदेश फरीने धर्मोपदेश आपीने तथा ग्रन्थो लखीने कर्मयोगीनी पदवीने तेमणे शोभावी छे साधुओ, साध्वीओ, श्रावको अने श्राविकाओने धर्मशास्त्रोनो अभ्यास करावी धर्म प्रवृत्तिमा जीवन गाळी आदर्श कर्मयोगीनु जीवन पाछळनी दुनिया माटे मूकी गया छे लगभग ७०-७५ वर्ष सुधी ज्ञानी कर्मयोगीनु साधु जीवन गाळी तेओए जैन धर्मनी पूर्ण सेवा करीने जैन कोमनी अपूर्व सेवा बजावी छे ते तेमना ग्रन्थो रहेशे त्यासुधी जैनोने उपकार कर्या करशे श्रीमद् जेवा कर्मयोगीओथी जगत्मा धर्मनी जाहोजलाली वर्ते छे श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय, श्रीमद् विनयविजयजी उपाध्याय अने श्री देवचद्रजी महाराज जेवा ज्ञानी कर्मयोगीओए अढारमा सैकानी जाहोजलाली दीपावी छे अने हाल पण तेमना शास्त्ररूप अक्षर देहोथी जैन कोममा जाहोजलाली वर्ती रही छे अने भविष्यमा वर्तो

श्रीमद्नो शिष्य समुदाय

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना शिष्यभूत साधुओ अने साध्वीओ हती के नहीं तेनो हजु सुधी चोक्कस निश्चय जणायो नथी महा मरयात पुरुपोनी पाछळनी सतति तेवा प्रकारनी होती नथी कातो देवतानी पाछळ कोयलो जेवु थाय छे श्रीमद् हेमचद्र महाराजनी पाछळ तेमनी सतति परपरा वही नथी श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्यायना शिष्य साधुओ हता पण तेमनी परपरा वही नथी श्रीमद् आनन्दघनजीनी पाछळ साधु शिष्यो नहोता तेओनी पासे उपदेश

श्रवण करनारा श्रावक शिष्यो तो थया होय छे श्रीमद् देवचन्द्रजी प्रति बोधित श्रावक समुदाय अनेक देशोमा हतो तेमना श्रावकोए तेमनी बनावेली अध्यात्मगीताने सुवर्णना अक्षरे लखावी हती तेमना रागी श्रावकोए तेमना ग्रन्थोनो सर्व देशमा प्रचार करी दीधो हतो ए तेमनी गुरुभक्तिनी उत्तमता हती श्रीमद्ना श्रावको सिद्धांतोना श्रोताओ हता अने तेथी तेओ अनुभवी बन्या हता श्रीमद् देवचन्द्रना साधु शिष्य थया होत तो तेओ कोइ ठेकाणे कइ पण लख्या विना रह्या न होत कदापि तथा प्रकारना थया नहीं होय अथवा तेमनी दशाए कोइ शिष्य करवो तेमने लायक देखायो नहीं होय इत्यादि अनेक कल्पनाओथी चोक्कस निश्चय करी शकाय नहीं

श्रीमद्नु निर्वाण अने निर्वाणस्थान पालीताणा

सवत् १८०४ सुधी तो तओ हयात हता एवु तेमना बनावेला सिद्धाचलना स्तवन परथी मालूम पडे छे ते वखते तेओ लगभग ८४ वर्षनी उमर लगभगना होवा जोइए पछीथी स्थिरवासनी आवश्यकता जणाइ होय एम अनुमान थाय छे स १८०४ बाद सिद्धाचल पालीताणामा स्थिरवास करेलो होवो जोइए पालीताणामा स्थिरवास करीने तीर्थस्थानमा समाधिमरण करवाने एवा महापुरुष इच्छे तेमा कइ आश्चर्य नथी सिद्धाचल पर्वत पर अनेक मुनियोए अनशण कर्या छे, वृद्धावस्थामा जरा बलक्षीण थाय छे पाचे इन्द्रियोनु ज्ञान बळ घटे छे, मननी विचारशक्ति क्षीण थती जाय छे अने विहार थइ शकतो नथी, युवा-

वस्थानी पेठे उपदेश आपी शकानो नथी अने ग्रन्थ रचना वगेरेनी प्रवृत्ति मन्द पडी जाय छे श्रीमद्‌नी ब्रह्मचर्यस्थामां पूर्वोक्त स्थिति थाय ए सभवित छे वृद्धावस्थामां छेवटे परमात्मानु स्मरण अने आत्माना शुद्धोपयोगनु स्मरणज थइ शके छे श्रीमदे सिद्धक्षेत्रमा परमात्मानु ध्यान राखामा लक्ष्य राख्यु हतु तेओ शरीर, नाम, जाति, आदि सर्व बाह्य पदार्थोमा आसक्ति विनाना थया हता आत्माना शुद्धोपयोगना तारोतारमा लयलीन रहेता हता अने समाहि मरण अभव्वजीवा न पावति ॥ अभव्यजीवोने मरणकाले समाधिमरण प्राप्त थतु नथी जेमणे पोणोसो वर्ष लगभग आत्म ज्ञानोपयोग, आत्मध्यान, आत्मानु चिन्तन, मनन, अने आत्म समाधिमा गाल्या होय तेने मरण वखते निवृत्तिदशामा समाधिमरण (पडित मरण) थाय एमा कइ आश्चर्य नथी श्रीमदे अनादि अनन्त ज्ञानरूप आत्मजीवनमा मनने लीन कर्यु हतु अने बाह्य दृश्य पदार्थोमा रागद्वेषपरिणामथी मुक्त थया हता आत्मा अने परमात्माना उपयोग विना तेओ हृदयमा अन्य कशो विचार प्रगटावता नहोता कर्मयोगी हता तेथी मरण वखते शारीरिक दु ख सहेवामा जरामात्र कायर बनता नहोता तेओ गुरुकुळ वासमेवी हता अने तेओए अनेक मुनियोनो आशीर्वाद लीधो हतो तेथी तेओने आत्मभान भूलावे एवी पीडा थती नहोती श्रीमद् बाळ ब्रह्मचारी हता तेथी तेमने आत्म शुद्धोपयोगनी रमणतामा शून्यता आवती नहोती शुभ परिणाम अने अशुभ परिणाम पण औदयिकभावज निन छे एम जाणी तेओ फक्त आत्माना शुद्धोपयोगमा रहेता हता तेओए मरणकालनी पहेला धार्मिक प्रवृत्तियोनी

घणी मन्दता करी हती आत्माना शुद्ध परिणाममा रहेता अने आत्माने भावता उता तथा अरिहंतशरण, सिद्धशरण, साधुशरण अने केवलि प्रज्ञप्त धर्मशरण ए शरणने अंतरमां परिणमावी परमेष्ठि महामंत्रनुं ध्यान करता छता बाह्य प्राणोनो त्याग करी तेओ शुभगति भजनारा थया आत्माना अनुभवमां रहीने शरीरनो संयोग दूर कर्यो धन्य छे एवा आत्मज्ञानी महापुरुषने धन्य छे, तेमना जीवनने धन्य छे, तेमना शरीरने श्रावकोए विधिपूर्वक अग्नि संस्कार कर्यो तेमना मरणना समाचारथी आखा भारतमां जैनकोममां घणो खेद प्रगट्यो पण भाविभाव आगळ कोइनुं कइ चालतुं नथी एम जाणी अंते जैनो तेमना गुणोनुं स्मरण करवा लाग्या अने तेमनी पाछळ तेमना चिरंजीव अक्षर देहरुप ग्रन्थोनुं अवलंबन लेवा लाग्या संसारमां धर्मज शरणभूत छे पोतानी साथे दुनियानी कोइ वस्तु आवती नथी मोहथी जीवो आत्मभान भूलीने अंते जन्म हारी जाय छे श्रीमद् श्वेत ब्रह्मचारी हता ज्ञान वैराग्य भावना भाववामां एक्का हता खंडन, मंडन, वादविवाद, विकथा वगेरे जेथी आत्म कल्याण वा सर्व कल्याण न थाय तेनाथी दूर रहेता हता तपश्चर्या आदिथी श्रीमदे आत्मज्ञाननी परिपक्वता करी हती तेथी तेमनुं समाधिमरण थयुं हतुं तेओ कोइनी कदापि निन्दा करता नहोता कोइना अवर्णवाद बोलता नहोता तेमने स्वगच्छ वा परगच्छ संबंधी मध्यस्थ दशा हती तेमणे साधु दशानुं अनुभव गम्य वर्णन कर्युं छे तेमांथी केटलाक उद्गारो नीचे प्रमाणे आपवामां आवे छे—

जगतमें सदा सुखी मुनिराज परविभाव परिणति के त्यागी,

जागे आत्म स्वभाव निजगुण अनुभव के उपयोगी
जोगी ध्यान जहाज ॥

निर्भय निर्मल चित्त निराकुल, विलगे ध्यान अभ्यास
देहादिक ममता सवि वारी, विचरे सदा उदास ॥ अ ॥

भावे साधन जे एक चित्तथी रे, भाव साधन निजभाव
भावसिद्ध सामग्री हेतु ते रे, निस्संगी मुनिभाव ॥ साधक ॥

हेय त्यागथी ग्रहण स्वधर्मनो रे, करे भोगवे साध्य
स्वस्वभावरसिया ते अनुभवे रे, निजगुण अव्याबाध ॥ साधक ॥

निःस्पृह निर्भय निर्मम निर्मला रे, करता निज साम्राज
देवचन्द्र आणाये विचरता रे, नमिये ते मुनिराज ॥ साधक ॥

हवे वाचको श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना शरीरने देखी शके तेम नथी परंतु हाल तो तेमना आत्माना प्रतिबिंबरूप तेमना सद्विचारोना दर्शन स्पर्शन करी शके तेम छे तेमनी सगनमा रहेला मनुष्योने धन्य छे तेवा अध्यात्मज्ञानी वैरागी गीतार्थनो एक घडीनो वा अर्ध घडीनो समागम खरेखर कोटि अपराधोनो नाश करी शके छे पुस्तको करता सन्त महात्मानो प्रत्यक्ष समागम खरेखर अनन्तगुण लाभकारी छे एवा ज्ञानी साधुओने तेमना जीवनकालमा प्रवर्तनना संस्कारी अल्प मनुष्यो ओळखी शके छे कारण के ते समयना केटलाक दुर्जनो तेमना समागममा आवनाराओने दोष दृष्टियी विपर्यय दशावाळा करी मूके छे हवे तो तेमना अभावे तेमना पुस्तको तेमना आत्मानी ज्ञान वैराग्य सुगंधियी वाचकोने लाभ आपे छे

श्रीमद् देवचद्रजीना महाविदेह क्षेत्रमा केवली तरीके अवतार

श्रीमद् अ यात्मज्ञानी, आत्मशुद्धोपयोगी देवचद्रजी महाराज हाल्मा महाविदेह क्षेत्रमा केवली तरीके विचरे छे एम अनेक मनुष्योना मुखे किंवदन्ती तरीके श्रवण कर्यु छे साभळवा प्रमाणे श्रीमद्ना रागी अ यात्मज्ञानी श्रावके पाटणमा महान् तप कर्यु हतु ते तपना प्रभावे भुवनपति देवे तेमने साक्षात् दर्शन आप्यु ते वखते ते श्रावके भुवनपति देवने श्रीमद् कइ गतिमा गया एवु प्रश्न कर्यु तेना उत्तरमा देवे कह्यु के श्रीदेवचद्रजी महाविदेह क्षेत्रमा जन्म्या छे अने हाल केवलज्ञानी तरीके विचरे छे अने अनेक भ य जीवोने देशना देइ तारे छे अमदावादमा सारगपुर तळीयानी पोळमा आत्मज्ञानी ध्यानी परम वैरागी श्री मणिचद्रजी नामना यति–साधु हता तेमणे **आनमरामेरे मुनिरमे** वगेरे अपूव वैराग्यमय सज्झाओ, पद रच्या छे तेओ महातपस्वी ध्यानी हता तेमना तप प्रभावे तेमनी पासे धरणेन्द्रे साक्षात् दर्शन दीधु अने मणिचद्रजीने शाता पुच्छी मणिचद्रजीने कोढ, रक्तपीतनो महाभयकर रोग हतो, ते दरथी पीडाता हता देवे मणिचद्रजिने वरदान मागवानु कह्यु परतु श्रीमणिचद्रजीए कइ माग्यु नहीं तेमनो रोग टाळवा विनति करी पण तेमणे ना कह्यु अने कह्यु के ते रोग भोगव्या विना छुटको नथी, कर्या कर्म उदयमा आवे छे, तेनु देणु रोग भोगवीने आपवु जोइए प्रारब्धकर्म तो तीर्थंकर भगवानने पण भोगववु पडे छे तो मारे पण भोगववु जोइए के जेथी परभवमा कर्मनु लेणदेण रहे नहीं श्रीमणि

चद्रजीए धरणेन्द्रदेवने श्रीमद् देवचद्रजीनी गति विषे पुछ्यु त्यारे धरणेन्द्रे कथु के श्रीमान् देवचद्रजी हाल्मा विदेहक्षेत्रमा केवली तरीके विचरे छे श्रीमद् आनन्दघननी गति विषे पुच्छ्यु त्यारे कथु के तेओ एकावतारी छे एम श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय सबधी पुछ्यु हतु, तेनो उत्तर एकावतारी तरीके आप्यो हतो एक वृद्ध श्रोता श्रावके अमने ए प्रमाणे किंवदती परपराथी चालती आवेली कही हती आ प्रमाणे किंवदन्तीओ अत्र जणावी छे कलकत्तामा रहनार अध्यात्मज्ञानी सुश्रावक हीरजीभाइए पण उपरना भाव वाळी एक किंवदन्ती कही हती पण तेनो विस्तार थाय तेथी अत्र लखी नथी

श्रीमद्ना चमत्कारो

श्रीमद् देवचद्रजीना चमत्कार सबधी अनेक किंवदन्तीओ साभळवामा आवे छे काशीवाळा मडलाचार्य श्रीबालचन्द्रसूरि महाविद्वान थइ गया छे तेमना समयमा तेमनी साथे विचरनार ऐंशी वर्षना एक वृद्ध यतिजी अमने ससारीपणामा विजापुर ताळुके आजोल गाममा मळ्या हता तेमणे अनेक वातो करी हती ते कहेता के मारा गुरु नेवु वर्षना हता ते वखते में बाल्यावस्थामा श्रीमद् देवचद्र सबधी वातो साभळी हती स १९५२ नी सालमा अमारु ने वर्ष सुधी आजोलमा धार्मिक अभ्यास करावबा माटे सघना आग्रहथी रहेवानु थयु हतु ते प्रसगे श्रीमद्नी चोवीशी वगेरे कठाग्र करी हती वृद्ध यतिजी वगेरेए आजसुधी कहेली किंवदन्तीओ नीचे प्रमाणे लखवामा आवे छे श्रीमदे ज्यारे दीक्षा

लीधी हती त्यारे ते बाल्यावस्थामा हता ते एक वखते काउसग्गमा हता त्यारे एक भयकर सर्प आव्यो अने श्रीमद्‌ना शरीरपर चढवा लाग्यो शरीर पर चढीने ते श्रीमद्‌ना खोळामा बेठो ते वखते आजुबाजुना साधुओ गभरावा लाग्या तो पण श्रीमद् जरामात्र चलायमान थया नहीं, श्रीमदे काउसग्ग पार्यो त्यारे ते सर्प फुत्कार करतो खोळामाथी उतर्यो अने सामो बेठो श्रीमदे तेने समता भावना वचनो कह्या ते तेणे मस्तक डोलवीने साभल्या आवी स्थितिने देखीने बीजा साधुओ खरा हृदयथी श्रीमद्‌ना धैर्यनी प्रसशा करवा लाग्या अने कहेवा लाग्या के श्रीमद्‌मा आत्मानी निर्भयदशा प्रगट थइ छे तेओ बाल्यावस्थामा एक दिवसमा बसे श्लोको मुखे करता हता अने ते विसरी जता नहोता

धरणेन्द्रनु व्याख्यान साभळवा माटे ब्राह्मणना रूपे आवागमन

श्रीमद् मारवाडमा मोटाकोट मरोटमा चोमासु रहेला हता तेमनी देशना आत्मस्वरूपनी हती दररोज व्याख्यानमा सर्व दर्शनना लोको आवता हता अने आत्मज्ञान प्राप्त करता हता तेमना व्याख्यानमा एक वृद्ध ब्राह्मण जेवो मनुष्य आवतो हतो तेनी कोइने खबर पडती नहोती श्रीमद् महोपाध्याय यशोविजयजी कृत ज्ञानसारनु दररोज व्याख्यान करवामा आवतु हतु श्रीदेवचद्रजी महाराज तेनु अनुभव पूर्वक उडा उडा नवीन व्याख्यान करता हता तेथी श्रोताओना आत्माओमा ज्ञानरस उल्कइ जतो हतो पेलो वृद्ध ब्राह्मण पण आनदथी उल्लसित थइ जतो हतो ते बोलतो नहोतो

तमज व्याख्यान पूर्ण थया बाद त्या जतो हतो तेनी कोटने समजण पडती नहोती, एक वखते रात्रीए ते ब्राह्मण उपाश्रयमा आव्यो अने श्रीमद्ने वन्दना करी बेठो ते वखते अन्य साधुओ पण जागता हता वृद्ध ब्राह्मणे जणाव्यु के हु धरणेन्द्र छु तमारी आत्मस्वरूपनी देशना में चार मास सुधी साभळी आ वखते भरतक्षत्रमा तीर्थंकरनी पेठे आत्मस्वरुव्याख्या करो छो तेथी हु घणो प्रसन्न थयो छु धरणेन्द्रे श्रीमद्ने कइ मागवानु कह्यु त्यारे श्रीमदे कह्यु के अनत दु खनो नाश करनार अने अनत सुखने प्रगटावनार आत्माना शुद्धोपयोग विना मारे अन्य कोइ वस्तुनी चाहना रही नथी धरणेन्द्रे आवु साभळीने तेमने धन्यवाद आप्यो धरणेन्द्रे सर्व साधुओने पोतानी प्रतीत थवा माटे एकदम उत्तर वैक्रिय शरीर प्रगट करी देखाडयु तेथी सर्वेनी आखो अजाइ गइ अने उपाश्रयमा अजवाळु अजवाळु थइ गयु आथी साधुओने श्रीमद् देवचद्र महापुरुष छे अने तेमना वचन आराध्य छे एवो निश्चय थयो महात्माओ देवताओने आराधता नथी तो पण देवताओ तेमनी पासे आवे छे अध्यात्म ज्ञानी महात्माओमा अनेक प्रकारनी लब्धिओ प्रकटे छे तेमा कइ आश्चर्य नथी

सिंह शात थइ पगे लाग्या

श्रीमद् एक वखत पजाब तरफ विहार करता हता पर्वतनी पासे थइ जवानो रस्तो हतो, पर्वतनी नीचे एक सिंह बेठेलो हतो घणी वखत त्या थइ जनार मनुष्योने ते खाइ जतो हतो, श्रीमद् त्या विहार करवा लाग्या तेमने केटलाक लोकोए वार्या तो पण तेओ पाछा वळ्या नहीं,

अने कहेवा लाग्या के मारे सर्व जीवोनी साथे मैत्री भाव थयो छे माटे भय नथी, तेओ ज्यां सिंह बेठो त्यां थइ जवा लाग्या आ वखते साथे आवो प्रसंग देखी गृहस्थो पण आव्या हता पेला सिंह पासे श्रीमान् आवी पहोंच्या श्रीमद्ने देखी सिंह बराडा पाडी उठ्यो अने श्रीमद्नी पासे आव्यो अने तेमना पगे पडी सामो उभो रह्यो श्रीमदे तेने शांत कर्यो पछी ते चाल्यो गयो पाछळ आवनारा गृहस्थो तो आ देखी आश्चर्य पाम्या **अहिंसाया प्रतिष्ठाया वैरत्याग** आ महान् सूत्र वचन खरु पड्यु

जामनगरमां जैन देरासरना ताळा तोड्या.

एक वखत जामनगरमां मुसल्मानोनु साम्राज्य वधी गयु हतु एक जैन देरासर हतु तेनी मूर्तियोने भोंयरामां संताडवामां आवी हती, मुसल्मानोए जबराइथी तेनो कबजो लेइ मस्जीद तरीके तेनो उपयोग कर्यो हतो केटलाक वर्ष सुधी जैनोए आ बाबत सहन करी लीधी पण पाछु तेमनु जोर ओछु थतां अने हिन्दु राज्यनु जोर वधतां जैनोए राजा आगळ फरियाद करी, पण जैनोनु कइ वळ्यु नहीं बाह्यथी अने अंतरथी ते जैन देरासर हतु एम त्यांनी अढार वर्ण कबुल करती हती पण चमत्कार विना नमस्कार थाय नहीं एवी स्थिति थइ पडी एवामां श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज विहार करतां करतां त्यां आवी पहोंच्या तेमणे राजानी समक्ष जैन देरासर सिद्ध करवा प्रयत्न कर्यो अने मुसल्मानोए मस्जीद सिद्ध करवा प्रयत्न कर्यो छेवटे राजाए एवो ठराव कर्यो के देरासरने ताळा लगाववामां आवे अने जे पोताना

प्रभुना नामे प्रार्थना करी उघाडे अने उघडे तेने-तेनो क-बजो सोंपवामा आवशे, आ प्रमाणे ठराव करीने फकीरोने पहेली तक आपी, फकीरोए खुदाना नामे कुरान वाची प्रार्थना करी पण मूळ जैन देरासर हतु तेथी ताळा तूट्या नहीं पछीथी श्रीमद् देवचद्रजीनो वारो आव्यो तेमणे जिनेन्द्र परमात्मानी स्तुति करीके तटाक देइने ताळा तूटीने हेटा पड्या पश्चात् वृद्ध श्रावकोए राजाने भोंयरु जे गुप्त हतु ते देखाड्यु अने तेना द्वारना ताळा पण जिनेन्द्र परमात्मानी स्तुतिथी तूटी गया अने तेमाथी घणी मूर्तियो नीकळी ते पाछी विधिपूर्वक देरासरमा स्थापन करवामा आवी श्रीमद्‌ना चमत्कारो देखीने जामनगरनो राजा अने प्रजा खुश थइ गइ अने जैन धर्मनी प्रसशा सर्वत्र प्रसरी श्री कृपाचद्रसूरिजी वगेरे साधुओ अने वृद्ध श्रावकोना मुखथी आवी वात साभळी हती ते अत्र लखी छे ज्ञानीध्यानी महात्माओ स्वय चमत्कार रूप छे आत्मानी अनत शक्ति छे आत्मानी जेओ उपासना करे छे तेओ परमात्मानी पेठे शक्तिओ फोरवी बतावे छे ॥ अहो अनन्त-वीर्योऽयमात्माविश्वप्रकाशक' त्रैलोक्यचालयत्येव ध्यान-शक्तिप्रभावत. ॥ (ज्ञानार्णव) अनत वीर्यरूप आत्मा छे अने विश्वनो प्रकाशक छे ते ध्यानशक्ति प्रभावे त्रण लोकने चलाववा शक्तिमान् छे

सिद्धाचलपर कागडा आवता बध कर्या

श्रीमद् देवचन्द्रजी घणी वखत सर्व तीर्थ शिरोमणि सि-द्धाचल तीर्थनी यात्रा करवा जता हता सिद्धाचलमा तेमणे विहरमान विशी रची हती तेमणे सिद्धाचलनी अनेक यात्राओ

करी हती ऋषभजिणदसु प्रीतडी ए स्तवन तेमणे किंवदन्ती प्रमाणे सिद्धाचल आदीश्वर भगवान् आगळ रच्यु हतु श्री दीपचदजी महाराजनी साथे घणी यात्राओ करी हती दुषमकालना योगे सिद्धाचलतीर्थपर कागडाओ आववा लाग्या जेओ महाप्रभावक हता तेओ वारवार शातिस्नात्र भणावीने कागडाओनु आवागमन वध करता हता सके सके कोइ प्रभावक महात्मा जैन कोममा प्रगटी नीकळे छे अने जैन धर्मनी प्रभावना करे छे श्रीमद् देवचद्रजीना कालमा सिद्धाचलपर कागडाओ आववा लाग्या हता तेथी जैन कोममा अने अन्य कोममा अनीष्टनो भय लाग्यो राज्य बदलवानो प्रसग आववानो होय छे, वा दुष्काल पडवानो होय छे त्यारे तथा महारोग फाटी नीकळवानो होय छे त्यारे तथा धर्मराज्यनी पडती थवानो प्रसग आवे छे त्यारे सिद्धाचलतीर्थपर कागडाओ आवे छे जे भावीभाव बनवानो होय तेना निमित्त चिन्हो प्रगट्या करे छे जे काले जे बनवानु होय छे ते बन्या करे छे अनिष्ट निमित्तोथी अनिष्ट थाय छे स १९७५ ना माह मासमा विजापुर पासे वरसोडा गामना जैन देरासर पर विजळी पडी अने प्रतिमा पर पण विजळी पडी तेथी एक मासमा त्याना ठाकोर राओळश्री सुरजमलजी मृत्यु पाम्या आवा अनिष्टसूचक चिन्होथी लोको भय पामे छे निमित्तशास्त्र सत्य पडे छे जैन कोममा सिद्धाचलपर कागडाओना आवागमनना उत्पातथी सघमा क्लेश, भेद, जैनोनी हानि, आगेवानोनी पडती वगेरे शकाओ थवा लागी श्रीमद् देवचद्रजी महाराज सुरतना कचरा कीकाकाना सघमा स १८०४ मा सिद्धाचल आव्या प्रसग पामीने जैन सघनी

विनतियी तेमणे सिद्धाचल पर्वतपर आदीश्वर भगवाननी हुकमा शांतिस्नात्र भणाव्युं अने पर्वतनी चारे तरफ शांति जळनी धारा देवरावी तेथी कागडाओ आवता बंध थया तेथी जैन कोममा आनंद शांति प्रसरी अने अनीष्ट उपद्रवनो नाश थयो श्रीमद् यशोविजयजीए तथा ज्ञानविमलसूरिए प्रसंगो-पात्त अनेक चमत्कारो बताव्या छे प्रसंग विना अमुक महा-त्मामा अमुक शक्ति छे ते मालूम पडती नथी महात्माओ कइ जादुगरनी पेठे वादीनी पेठे खेल करी बतावता नथी *तेमना आत्मामा जे कइ सिद्धियो उत्पन्न थाय छे तेनी ते-*ओने पण मालुम पडती नथी परंतु प्रसंग प्राप्त थाय छे त्यारे तेओ पण जाणी शके छे

तेमणे मारवाडमा सात जमण प्रसंगे गौतम स्वामिना ध्या-नथी एक हजार श्रावको जमे तेटला जमणमा आठ हजार श्रावकोने जमाडवानी मंत्रशक्ति वापरी हती तेमने सिद्धांतोनो तीक्ष्ण उपयोग हतो अनेक प्रकारनी अवधान शक्तिओ तेमनामा खीली हती परंतु तेओ ते कोइनी आ-गळ प्रसंग विना जणावता नहोता हालनी पेठे ते प्रसंगे महात्माओ अवधानोना खेलो करता नहोता जैनोमा वा हिन्दुओमा जेटली अवधान शक्ति खीले छे तेटली पाश्चात्य लोकोमा खीलती नथी तेओ ज्या चोमासु करता अगर पधारता त्या लोकोमा शांति प्रसरती हती तेमनामा वचन-सिद्धि प्रगटी हती तेओ वरी मनुष्योना वैरनो, सहजमा उपदेश आपी नाश करता हता गच्छोना खडनमडनमा तेओ पडता नहोता तेथी सर्व गच्छवाळाओने तेओ प्रिय 'अइ

पड्या हता श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय अने श्रीमद् आनदघनजी महाराजनी आध्यात्मिक विचार श्रेणितु तेमणे अनुकरण करी तेओ वस्तुत बन्नेना आत्मिक अनुयायी बन्या हता तेथी जैन कोममा तेओ तत्त्वज्ञाननो प्रचार करवाने शक्तिमान् थया हता तेमना पूर्वभवना धार्मिक सस्कारो घणा तीव्र होवा जोइए पूर्वभवना सस्कार विना श्रुतधर्म अने चारित्र धर्मपर रग लागतो नथी, तेमज अध्यात्मज्ञान पर रग लागवो एतो अत्यन्त दुर्लभ वात छे तेओने सर्वनी प्राप्ति थइ माटे तेमना आत्माने नमस्कार थाओ

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना रचित ग्रन्थोमो सार

श्रीमद् देवचन्द्रजी उपाध्याये आगमोमार्थी सारमासार तत्त्व के जे द्रव्यानुयोग कहेवाय छे तेनो सार भाग खेंचीने ग्रन्थोनी रचना करी छे द्रव्यानुयोगज्ञान, अध्यात्मज्ञान, शान्त रस अने वैराग्यरस तो तेओना ग्रन्थोमाथी ज्या त्या नीतर्या करे छे तेमना ग्रन्थोरूपी सरोवरो खरेखर तत्त्वज्ञानथी छलकाइ जाय छे तेमना बनावेला ग्रन्थो पैकी आगमसार, नयचक्र अने विचारसार ए त्रण ग्रन्थो तो खास तत्त्वज्ञानथी भरेला छे ए त्रण ग्रन्थोनो गुरुगम पूर्वक अभ्यास करवाथी सर्व आगमोमा प्रवेश थाय छे अने सर्व आगमोनो सार पामी शकाय छे अनतज्ञानसागरनो पार नथी परतु तेमा प्रवेश थवा माटे ए त्रण ग्रन्थो घणा उपयोगी छे प्रश्नोत्तर नामनो तेमनो ग्रन्थ, खरेखर अनुभवज्ञानथी भरपूर छे तेथी मननीय छे अनेक जैनशास्त्रो वाच्या बाद प्रश्नोत्तर ग्रन्थमा करेला प्रश्नोना उत्तरार्थनो अनुभव थइ शके तेम छे श्रीमद्ना गच्छोनी

क्रिया वाचनती तकगरो सनवी प्रश्न के उत्तर नयी तेयी सर्वे गच्छना जैनो माटे प्रश्नोत्तर ग्रन्थनी उपयोगिता एक-सरखी रीते सिद्ध टरे छे वाचको जो स्थिर चित्तयी प्रश्नोत्तर ग्रन्थनो अभ्यास करशे तो तेओ तत्त्वज्ञानमा उडा उतरी शकशे अध्यात्मज्ञानमा उडा उतरवा माटे श्री ज्ञानसार ग्रन्थ पर टरेली ज्ञानमजरी टीका अपूर्व छे आत्मज्ञान सबवी जैनोमा भगवद्गीतायी पण कोइ महान् सत्ययी भरेलो ग्रन्थ होय तो ज्ञानसार ग्रन्थ छे तेना पर श्रीमदे टीका रचीने पोताना अध्यात्मज्ञान सबवी विचारोने जीवना मूकी गया छे अर्वाचीनकालमा ज्ञानसारनी महत्ता, उपयोगिता सर्वत्र प्रचार पामी छे जैनोना सर्व फीरकाओमा ज्ञानसार ग्रन्थ वचाय छे अध्यात्मज्ञानीओनु ज्ञानसारग्रन्थ खरेखर आनदमय हृदय छे तेना पर टीका रचीने श्रीमदे ज्ञानसारनी महत्तामा वृद्धिनो प्रकाश पाड्यो छे श्रीमद् उपाध्याय शिरोमणि यशोविजयजी उपाध्यायना छेल्लामा छेल्लो अध्यात्म जीवनरसनो झरो जेमा वह्यो छे ते ग्रन्थ खरेखर ज्ञानसार छे अने श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजनी छेल्ली जादगीनो अध्यात्म ज्ञानरसनो जीवनो झरो जेमा वह्यो छे ते टीका खरेखर ज्ञानसार परनी ज्ञानमजरी टीका छे पछी तेमा अध्यात्मानन्दरस मीठाश सबवी शु पुच्छवु सर्व फीरकाना जैनो एकी अवाजे ज्ञानसार अने ज्ञानमजरीनी सुगघी माटे माथु धुणावी प्रशसा करी नाचे कुदे छे सस्कृत भाषामा ज्ञानमजरी टीका छे तेमा शब्द पाडित्य करता भाव घणो भरेलो छे ते वाचकोने सहेजे समजाशे श्रीमद्नी रचित चोवीशीमा ज्ञान अने भक्तिनो रस उल्काइ जाय छे

तेमना स्तवनोने दरेक गच्छवाळा मुखे करे छे अने प्रभुनी प्रतिमा आगळ गाय छे वीशमी सदीमा गच्छकदाग्रहोनु ममत्व धीमे धीमे विलय थतु जाय छे अने जे कोई गच्छनी मारामारी करे छे तेना तरफ जैनो दयानी लागणीथी देखे छे देवचन्द्र चोवीशीनो जैनो अभ्यास करे छे तेमना सर्व ग्रन्थोनो अभ्यास करनार कोई पण मनुष्य पक्को जैन बनी शके छे अने ते गाडरीया प्रवाहमाथी मुक्त थई ज्ञानप्रवाह तरफ वळे छे तेमना ग्रन्थोमा पद्द्रव्य, नवतत्त्व, कर्मव्याख्या, सातनय, सप्तभगी, अनेकपक्ष, आगम व्याख्यान, आत्मतत्त्व-स्वरूप, वगेरे सर्व बाबतोनु विवेचन करवामा आव्यु छे एकदर रीते कहीए तो तेमना ग्रन्थोमा ज्ञानयोग, कर्मयोग, भक्तियोग, उपासनायोग, वगेरे सर्व योगोनु स्वरुप आव्यु छे अने तेथी तेमना ग्रन्थो खरेखर वाचकोपर सारी असर कर्या विना रहेता नथी तेओ सनातन जैन मार्गोपासक हता तेमना ग्रन्थो एकदर रीतिए आगमो, प्रकरणो अने पूर्वाचार्योना ग्रन्थोने अनुसरीने रचायला छे तेथी तेओ पूर्व परपराना मार्गे गति करीने जैनधर्म प्रवर्तक हता तेमणे जिनेश्वर प्रतिमाने पुष्प चढाववाना पाठोने आगमना आधारे दर्शाव्या छे तेमा खूबी ए छे के तेमणे मगजनी समतोलता खोइ नथी तेमना शब्दोमा मधुरता, स्नेहता अने आकर्षता छे तेमणे पोताना ग्रन्थोमा असभ्य शब्दो वगेरेथी कठोरता आववा दीधी नथी तेमना हृदयमा शु चारित्र हतु ते तेमना ग्रन्थो बतावी आपे छे तेमणे ग्रन्थो रचवामा पाडित्यनु अभिमान देखाय एवो एके शब्द वापर्यो नथी - लोकोने जैनधर्मना तत्त्वोने केम सरल रीते बोध थाय एज दृष्टि, ध्यानमा

रासीने ग्रन्थो रच्या छे तेथी तेमा तेमणे शब्दलालित्य पाण्डित्य के प्रौढता तरफ लक्ष ज दीधु नथी जैनधर्मनु तत्वज्ञान शु छे तेनी दिशा देखवी होय वा तेनी झांखी करवी होय तो तेमना ग्रन्थोनो गुरुगम पूर्वक अभ्यास करवानी जरूर छे तेमना बनावेला विचारसार ग्रन्थमा आगमोमा आवेली सर्व बाबतोने अनुक्रमे गोठवी वर्णवी छे तेथी ते धर्मग्रन्थ वगेरेमा आवेला विषयो उपरांत घणा विषयोथी भरपूर छे पाकेली केरीनो कोई रस काढी ले तेवी रीते तेमणे जैन-शास्त्रोमाथी रस काढीने आगमसार, नयचक्र, विचारसार वगेरे ग्रन्थो रच्या छे पहेला भागमा अने द्वितीय भागमा आवेला ग्रन्थोने वाचको जो साद्यंत वाची जशे तो पछी अमारु लखवु यथार्थ छे एम गुणानुरागी सज्जनोने बराबर समजाशे जैनधर्म तत्वज्ञानथी भरेला तेमना ग्रन्थोनी जेटली प्रशंसा करीए तेटली न्यून छे तेमा एकदर रीते जैनशास्त्रोनो प्राय घणो सार आवी गयो छे

श्रीमद् देवचन्द्रजीनी संस्कृत भाषा तथा गुर्जर भाषानी विद्वत्ता

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजे संस्कृत भाषामा अने गुर्जर भाषामा जे जे ग्रन्थो लख्या छे तेथी तेमनी भाषा विद्वत्ता केवा प्रकारनी हती तेनो वाचकोने-विद्वानोने सहेजे ख्याल आवी शके तेम छे बाळ जीवोने समजाववा माटे तेमणे संस्कृत भाषामा बहु सरलताए लखाण कर्युं छे जेम बने तेम भाषानी क्लिष्टता, प्रौढता दुरवगाहता थवा दीधी नथी द्रव्यानुयोगना विषयमा सामान्य संस्कृत भाषा जाणनाराओ

पण रस लेइ शके तेवो प्रयत्न करेलो देखाय छे द्रव्यानु योगना ग्रन्थो रचवामा पूर्वाचार्योए पण क्लिष्टता वापरी नथी तेथी तेओना ग्रन्थोमा बाळ जीवोने पण सहेजे प्रवेश थइ शके छे तेथी तेमणे द्रव्यानुयोगना ग्रन्थोमा तेओनी शैलीनु अनुकरण कर्यु छे ज्ञानमजरी टीका विचारसार टीकादिथी तेमणे सस्कृत भाषामा ग्रन्थो रचवा माटे शुभे यथा शक्ति प्रयत्नीयनी प्रवृत्ति करी जैनकोमनी भारे सेवा उठावी छे, अने सस्कृत साहित्यनी वृद्धि करी छे अढारमा सैकामा थएल वाचक शिरोमणि गीतार्थ यशोविजयजी उपाध्याय तथा श्रीमान् विनय विजयजी उपाध्याय, श्रीमान् मानविजयजी उपाध्याय, वगेरे सस्कृत भाषाना महान् पडितोनु अनुकरण करीने तेमणे यथाशक्ति प्रवृत्ति करी छे केटलाक आधुनिक सस्कृत भाषाज्ञमुनिवरोनो एवो मत छे के श्रीमद् देवचन्द्रजी सस्कृत भाषाना प्रौढ विद्वान नहोता अमो तेमना विचारोमा सुधारो एटलो मूकीए छीए के–श्रीमदे द्रव्यानुयोगना गहन विषयोने सादी सस्कृत भाषामा बाल्जीवोने समजाववा पर खास लक्ष्य दीधु छे तेथी तेओए प्रौढ सस्कृत भाषा वापरी नथी, तेमज भाषाद्वारा विद्वत्ता देखाडवा तरफ तेमनु बिल्कुल लक्ष्य नहोतु आत्मज्ञानिमहात्माओ भाषाने शणगार सजाववा तरफ लक्ष्य देता नथी, तेओ तो भाषा द्वारा हृदयनो आत्मिक भाव जणावे छे कविमा अने ज्ञानीभक्तमा भाषाना शणगार परत्वे तफावत रह्या करे छे कवि भाषाने शणगार सजाववानी उपासना करे छे अने ज्ञानी भावरसनो भोगी होवाथी ते पोतानु वक्तव्य सादी भाषामा जणावी शके छे पोताना विचारोने बाळको पण समजे

एवी सादी भाषामा अवतारवा तरफ भक्तोनु स्वाभाविक लक्ष्य रहे छे श्रीमद् देवचद्र महाराज ज्ञानी भक्त हता, तेथी तेमनी पासेथी सस्कृत प्रौढ भाषामा केटलाक आधुनिक विद्वानोनी दृष्टि प्रमाणे बनेला ग्रन्थोनी आशा राखी शकाय नहीं ते बनवा योग्य छे तेमना ग्रन्थोने पाछळथी शोधवामा नहीं आवेला होवाथी तथा अशुद्धिमा वृद्धि करनार लहिया ओ पासे लखावेला होवाथी तेनी शुद्धि करवामा प्रयास पडे ते स्वाभाविक छे अने तेवो प्रयास थता पण जे जे अशुद्धिओ रही होय ते बीजी वखते सुधारीने उपाडवानी जरुर छे सस्कृत भाषाना ग्रन्थोनी पेठे तेमणे प्राकृत भाषामा पण विचारसारादि ग्रन्थो रच्या छे तेमनी प्राकृत भाषा पण सरळ अने सुगम अवबोधाय पठी वाचको अनुभव करता सहेजे समजी शकशे सस्कृत अने प्राकृतनी पेठे गुर्जर भाषामा तेमणे ग्रन्थो रच्या छे गुर्जर भाषापर तेमनो सारो काबु हतो द्रव्यानुयोगना गहन विषयोने तेमणे चोवीशी, वीशी वगेरे पद्य ग्रन्थोमा सारी रीते गुथ्या छे के जे विषयो पहेला गुर्जर भाषामा कोइए गुथ्या नहोता श्रीमदे चोवीशीपर बाले टबो भर्यो छे अने तेथी तेमणे जेनकोम पर द्रव्यानुयोगना ज्ञाननो सरलताथी लाभ आपवा माटे घणो उपकार कर्यो छे गति करता स्खलन थाय ए स्वाभाविक नियम छे ते न्याये श्रीमद्ना सस्कृत ग्रन्थोमा भाषा दोष रही गयो होय तो तेमना आशयो अने उपकारोने ध्यानमा लेइ विद्वानो क्षतव्य गणे एमा कइ आश्चर्य नथी दोष दृष्टिथी जोता ज्या त्या दोषो देखाय छे अने गुणदृष्टिथी देखता ज्या त्या गुणो नजरे आवे छे सज्जनो गुणोने देखे

छे ज्ञानियोनी प्रवृत्ति खरेखर सज्जनोना लाभार्थे होय छे ते प्रमाणे श्रीमद्नी ग्रन्थ रचनानी प्रवृत्तिपर लक्ष्य राखीने तेमनी भाषा विद्वत्ता सबन्धी लक्ष्य धारवु जोइए आत्मार्थीओ स्वाभाविक धर्म पर लक्ष्य राखे छे श्रीमदे गुर्जर भाषामा गद्यपद्य ग्रन्थो रचीने भाषा ज्ञाननी विद्वत्तानी पण महत्ता खरेखर जनसमाज आगळ जणावी आपी छे वाचको भाषानी दृष्टिए पण तेओना ग्रन्थोमाथी घणो लाभ उठावी शकशे सस्कृत, प्राकृत अने गुर्जरभाषामा रचायला तेओना ग्रन्थोमाथी सज्जनो घणो लाभ उठावी शकशे सस्कृत प्राकृत अने गुर्जरभाषामा ग्रन्थो रचीने विश्वनी भाषा साहित्यनी वृद्धि करवामा पोतानी तरफथी तेमणे सारो फाळो आप्यो छे, तेथी तेमनी सेवा प्रवृत्ति तरफ माननी लागणीथी जैनेतर कोम पण देखे एमा कइ आश्चर्य नथी अने जेनो तेमने पूज्य उपकार दृष्टिथी देखे अने मध्यस्थ मनुष्यो तथा जिज्ञासुओ तेमना ग्रन्थोमाथी घणो सार खेंची शके ए बनवा योग्य छे

श्रीमद् देवचन्द्रजीनी कवित्वशक्ति

श्रीमदे कवित्वशक्तिनो भक्तिमा व्यय कर्यो छे भक्त लोको कवित्वशक्तिने भक्तिना रूपमा परिणमावे छे तेओ अनेक रुपकोथी प्रभुनु वर्णन करे छे श्रीमदे उपमालकारोने प्रभुभक्तिना रुपकोमा परिणमाव्या छे तेमणे आध्यात्मिक दृष्टिए मेघने प्रभुनी रुपकभक्तिमा परिणमाव्यो छे ते नीचे मुजब—

श्रीनमिजिनवर सेव, घनाघन उनम्यो रे ॥ घ० ॥
दीठा मिथ्या रौरव, भविक चित्तथी गम्यो रे ॥ भ० ॥

शुचि आचरणा रीति ते, अभ्र वधे वडा रे ॥ अ० ॥
आतम परिणति शुद्ध, ते वीज झबूकडा रे ॥ वी० ॥१॥

वाजे वायु, सुवायु, ते पावन भावना रे ॥ पा० ॥
इन्द्र धनुष्य त्रिकयोग, ते भक्ति एकमना रे ॥ भ० ॥
निर्मल प्रभुस्तव घोष, ज्यु ध्वनि घन गर्जना रे ॥ ध्व० ॥
तृष्णा ग्रीष्मकाल, ते तापनी तर्जना रे ॥ ता० ॥२॥

शुभ लेश्यानी आलि, ते बग पक्ति बनी रे ॥ ब० ॥
श्रेणि सरोवर हस, वसे शुचि गुणमुनि रे ॥ व० ॥
चउगति मारग बन्ध, भविक निजघर रह्या रे ॥ भ० ॥
चेतन समता संग, रगमें उमह्या रे ॥ र० ॥३॥

सम्यग्दृष्टि मोर, तिहा हरखे घणु रे ॥ ति० ॥
देखी अद्भुत रूप, परम जिनवरतणु रे ॥ प० ॥
प्रभु गुणनो उपदेश, ते जलधारा वही रे ॥ ज० ॥
धर्मरुचि चित्त भूमि, माहे निश्चल रही रे ॥ मा० ॥४॥

चातक श्रमण समूह, करे तब पारणो रे ॥ क० ॥
अनुभव रस आस्वाद, सकल दुःख वारणो रे ॥ स० ॥
अशुभाचार निवारण, तृण अकूरता रे ॥ तृण० ॥
विरतितणा परिणाम, ते बीजनी पूरता रे ॥ बी० ॥५॥

पञ्च महाव्रत धान्य-तणा कर्षण वध्या रे ॥ त० ॥
साध्यभाव निज थापी, साधनताए सध्या रे ॥ सा० ॥
क्षायिक दर्शन ज्ञान, चरण गुण उपन्या रे ॥ च० ॥
आदिक बहुगुण शस्य, आतम घर नीपना रे ॥ आ० ॥६॥

प्रभु दर्शन महामेह-तणे प्रवेशमें रे ॥ ता० ॥
परमानन्द सुभिक्ष, थयो मुज देशमें रे ॥ थ० ॥

देवचन्द्र जिनचन्द्र-तणो अनुभव करो रे ॥ त० ॥
सादि अनन्तोकाल, आतम सुख अनुसरो रे ॥ आ० ॥७॥

श्रीमद्नी उपमा आपवानी आध्यात्मिक काव्यशक्ति बहु सरस छे बाह्य भावोने आध्यात्मिक रुपमा गोठवीने जन समाजने ते तरफ वाळवा तेमणे काव्यशक्तिनो धर्ममार्गमा सदुपयोग कर्यो छे श्रीमद् यशोविजयजी उपाध्याय, श्रीमद् विनयविजयजी उपाध्याय वगेरेनी काव्यशक्ति अत्यन्त प्रशस्य छे श्रीमदे पण आलङ्कारिक काव्यशक्तिनो आध्यात्मिक भाव प्रगट करी दर्शाव्यो छे तेमनो द्रव्यानुयोगनो विषय होवाथी आलङ्कारिक काव्यशक्तिनो घणो उपयोग थएलो जणातो नथी, तोपण जैन समाज आगळ भक्ति स्तवनरूपे जेटली प्रसादी मळी छे तेथी पूर्ण सन्तोष मळी शके तेम छे तेमणे आ स्तवनमा हार्दिक विषयने सारी रीते घटावीने अध्यात्मज्ञाननो प्रकाश कर्यो छे माटे तेमनी जेटली स्तवना करीए तेटली न्यून छे श्रीमद् देवचन्द्रजीना आत्मामा गुणोनो सुमिश्र-पाठ थयो हतो ते तेमणे सहजोद्गारथी आ स्तवनमा जणावी दीधु छे श्रीमद् द्रव्यानुयोगना सर्व विषयोमा कुशल हता आत्मा अने परमात्माना गुणोमा आध्यात्मिक रूपकोथी अन्तरमा परिणाम पामता हता अने तेथी आन्तर शुद्धजीवन अप्रमत्त दशारूप हतु ते तेमना आध्यात्मिक भावथी स्पष्ट जणाय छे

ते समयनी अने हालना समयनी परिस्थितिनो विवेक

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना समयमा जैनतत्त्वज्ञान प्रचा-रनी न्यूनता हती यतियोमा वैराग्य त्यागमा शैथिल्य प्रचार

पामतु हतु सवेगी साधुओ पण श्रीपूज्य आचार्योनी आज्ञा प्रमाणे चोमासु करवु वगेरे प्रवृत्ति करीने तेमनी आज्ञामा रहेता हता ते समयमा ज्ञान मार्ग करता क्रिया मार्गमा गाडरीया प्रवाहनु ज्या त्या जैनोमा प्राधान्य प्रवर्ततु हतु अध्यात्मज्ञान, तत्त्वज्ञान जेवा विषयोमा साधुओ पण विशेष ज्ञानी नहोता तथा बहु जन सम्मत केटलाक आचार्यो वगेरने जैनो जेटला प्रमाणमा मानता हता तेटला प्रमाणमा श्रीमद् देवचद्रजीने ओळखवा माटे जैनो लायक नहोता खरतर गच्छना आचार्यो, यतियो वगेरेनी साथे श्रीमद् देवचद्रजीनी विचार मान्यता मळती आवती होय तेम सर्वांशे जणातु नथी, छता तेओ उदार विचाराचारथी स्वपरगच्छीय साधुओनी साथे वर्तता हता तेओ श्वेत वस्त्रधारी हता ते जमानाना ते सुधारक सवेगी पक्षी साधुओने उत्तेजन आपनारा हता सर्व जैनोमा ऐक्यनु वातावरण फेलाववा तेमणे यथाशक्ति प्रयत्न कर्यो हतो परस्पर गच्छोनी क्रियामत भेदोथी उत्पन्न थती क्लेशनी उदीरणाने शमावनार हता जैनोमा अनेक मतभेदथी थता क्लेशोथी जैनोनी पडती थाय छे, एवी दीर्घ दृष्टिथी तेमणे पोताना उद्गारो प्रगट कर्या छे श्रीमद् देवचद्र महाराजना समय करता हालना समय कइ विशेष सारो नथी ते वखतना तेमणे काढेला उद्गारो हालनी सदीने पण लागु पडे छे, छता हाल आजुबाजुना शुभ प्रगतिमद सयोगो घणा अनुकुल छे, फक्त ते प्रमाणे वर्तनारा मुनियो विशेष प्रमाणमा प्रगटवानी जरुर छे श्रीमद् देवचद्र महाराजे पोताना ग्रन्थोमा अमुक खरतर गच्छना आचार्यना साम्राज्यमा ग्रन्थो लख्या एवु लख्यु नथी तेथी

तेओ ते वखतना खरतर गच्छीय पट्टधर आचार्य साथे पूर्ण सम्बंधी हता के नहीं ते विचारवा योग्य छे तेमणे आत्मानो शान्त रस अनुभव्यो हतो, धर्मप्रवृत्ति वाळा अने संसारप्रवृत्तियी विरुद्ध होवायी तेओ निवृत्ति मार्गना योगी हता तेमना पण विरोधीओ हता छता पण तेमना उत्तम विचारो जैनसमाजमा जल्दी प्रसर्या हता

श्रीमान् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रन्थो परथी अने तेमना जीवनपरथी ग्रहवा योग्य शिक्षण

श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना ग्रन्थो अने तेमना चरित्र परथी प्रत्येक मनुष्ये शिक्षण ग्रहण करवु जोइए, एज आ लेखनो मूळ उद्देश छे तेमना ग्रन्थो अने चरित्र परथी आध्यात्मिक शक्तियो खीलववानी जरुर छे समानभाव अने तत्त्वज्ञाननी प्राप्ति करवा माटे तेमनु जीवन घणु उपयोगी छे जैन कोमे आत्मज्ञान तरफ वळवु जोइए अने व्यक्ति स्वातंत्र्य तथा सत्स्वातन्त्र्य प्रगट करवु जोइए अध्यात्म ज्ञाननी प्राप्ति विना विशाल विचारो अने मतसहिष्णुता प्रगटवानी नथी तेमनी पेठे व्यवहारनयनु अवलम्बन ग्रही प्रवृत्तिधर्म याने सेवाधर्म स्वीकारी कर्मयोगी बनवु जोइए श्राविकाओनी प्रगति करनार धार्मिक केळवणीनो प्रचार करवो जोइए जड क्रियावादी अने शुष्कज्ञानी न बनवु जोइए तेमनी पेठे पूर्व पुरुषोना विचाराचारोने मान आपी वर्तवु जोइए अने जे असत्य लागे तेनो त्याग करवो जोइए पण कदाग्रही न बनवु जोइए कर्मयोग अने ज्ञानयोग ए बनेने स्वीकारी स्याद्वादी बनवु जोइए साधुओए अने साध्वीओए वीशमी

सदीमा तेमनी पेठे प्रगति करवी जोइए गच्छना नामे नकामा क्लेशनी उदीरणा करनारा विवादो अने झघडाओ करीने जैन कोमनी शक्तियोनो नाश न करवो जोइए तेमनी पेठे उग्रविहारी बनवु जोइए अन्य गच्छीयोनी साथे मैत्री, प्रमोद, माध्यस्थ वगेरे भावनाओने आचारमा मूकी वर्तवु जोइए ज्ञानरुचि धारण करीने गाडरिया प्रवाहमा तणाता नव थवु जोइए भिन्न भिन्न गच्छीय साधुओमा परस्पर गच्छक्रियादि मतभेद छता जैन कोमना सार्वजनिक प्रगतिकर कार्योमा ऐक्य धारण करवु जोइए समदृष्टिनी साथे परस्पर समवर्ती बनवु जोइए गमे ते गच्छना साधु पासेथी ज्ञान ग्रहण करवु अने सत्य ते ते मारु एवो निश्चय करी प्रवर्तवु जोइए सर्व गच्छना साधुओनो सव एक स्थाने मेळो करीने जैन कोमनी अस्तिता रहे एवा उपायो हस्तमा ग्रहवा जोइए आतरजीवन विकासवामा आत्मभोग आपवानु शिक्षण ग्रहवु जोइए तेमनी पेठे वक्ता, लेखक अने ज्ञानी बनवु जोइए जैन कोमना कोइ पण फिरकानी निन्दा न करवी जोइए अने सर्व फिरकाओनी साथे मैत्रीभाव धारण करी मळती बाबतोमा ऐक्य धारी कर्तव्य कार्यो करवा जोइए हवे तो गृहस्थ जैनोए दृष्टिरागनो त्याग करीने जैनोनी संख्या वधे अने जैन धर्मनो फेलावो थाय तेवा उपायोमा भोग आपवो जोइए जैन तत्त्वज्ञाननो फेलावो थाय एवा उपायो लेवानो समय जो चूकवामा आवशे तो जैन कोमनी अस्तितामा हरकत आववानो संभव छे माटे सकल संघे समयनी किंमत आकी संयोगोने अनुकूल करी लेवा जोइए

उपसहार

प्रमाणे श्रीमद् देवचन्द्रजी उपाध्यायना ग्रन्थो अने
रेत सबधी यत्किंचित् प्रस्तावना यथाशक्ति जैन
गळ रज्ञु करीने जैन सघनी सेवा करता छद्मस्थ
कइ दोष वगेरे थया होय तेनी जैन सघ आगळ
। छु मिथ्या दुष्कृत दउ छु जैन सघनी सेवा
कइ स्खलन थाय ते जैन सघे क्षमवु जोइए
गगच्छीय होवा छता आत्मभावे–जैनधर्मे समान
द् देवचन्द्रजीना ग्रन्थोनी प्रस्तावना लखी छे गमे
मनुष्य पोते जैन होवाथी जैनधर्मनी समान
रना करीने मुक्तिपद पामे छे डाळा, पाखडा,
ग्रवाना जुदा जुदा मतभेदोमा मध्यस्थ बनी वृक्षमा
वहता सज्ञावनरस भणी लक्ष्य आपवानी जरुर छे सर्व जैनोना
हृदयमा जैनदेव एक छे तो पछी भेदभावथी क्लेश करवानी
कइ जरुर नथी लेखकने (म्हने बुद्धिसागरने) व्यवहारथी
तपागच्छीयमान्यतानी श्रद्धा छे अने तपागच्छनी समाचारी
मान्य छे परतु तेथी अन्य गच्छोनी समाचारी पर द्वेष नथी
हु मारी तपागच्छनी साधु क्रियादिनी समाचारीमा व्यवहारे वर्ती
अने निश्चयनयथी समभावे शुद्धात्ममा रमी एकाग्रताथी लीनता
पामी मोक्ष पामु तेम अन्य गच्छीय जैनो पण तेमना गच्छनी
समाचारीने मननी एकाग्रता, लीनता करवा साथे निश्चयनयथी
समभावे रमे तो मोक्ष पामे एवी मारी सापेक्षनययुक्त मान्यता
छे जैनागमो, प्रकरणो, पूर्वाचार्योना ग्रन्थो, परपरा अने
समाचारी वगेरेमा सापेक्षपणे म्हने पूर्ण श्रद्धा छे अस-

रुपयोगो खरखर मुक्ति पामवाने माटे हेतुओ छे सापेक्षपणे गमे ते योगनी आराधना करवा मुक्ति छे एवी मारी श्रद्धा छे अने ए प्रमाणे उपदेश छे, लेखकने सम्यग्दृष्टिथी जैनागमो अने मिथ्याशास्त्रो, सम्यक्त्वरूपे परिणमे छे एवी नन्दिसूत्रनी मान्यता प्रमाणे विचारप्रवृत्ति छे जैनागमोनु ज्ञान प्राप्त करीने व्यवहारनयथी वर्तवामा आवे अने निश्चयने हृदयमा धारवामा आवे तोज मुक्तिनी प्राप्ति थाय छे एवो उपदेश सत्य छे व्यवहारनयनो उच्छेद करता जैन शासन अने धर्मनो उच्छेद थशे माटे कोइए धर्म व्यवहारनी उत्थापना न करवी जोइए साध्यबिंदु लक्ष्यमा राखीने सापेक्षपणे साधनोपाटे धर्मनी आराधना करवी जोइए श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना ग्रन्थो सुधारता घणी शुद्ध प्रतियो मळी नथी विचारसार माटे तो बीजी प्रतियो मळो नथी, तेथी हजी तेमा घणी अशुद्धिओ रही गइ छे ते साधन सामग्री मळता बीजी आवृत्तिमा सुधारो करी शकाशे, यथा शक्ति मलेने सुधारवा प्रयत्न कर्यो छे, छता जे कइ स्खलना रही गइ होय तेने अन्य पडितो प्रसगोपात्त सुधारशे एवी प्रार्थना छे जैन ग्रन्थो खरेखर जैन सघनी मील्कत छे तेमा सुधारवा यथाशक्ति मे भाग लीधो छे अने अन्य सज्जनो पण सुधारवा भाग लेशे एवी प्रार्थना छे श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराजना पुस्तको छपाववामा पादरावासी सुश्रावक वकील मोहनलाल हिमचद्रे तनमनधनथी प्रयत्न कर्यो छे, तेमणे सर्व ग्रन्थो भेगा करवामा अनेक पत्रो लख्या, तथा अनेक स्थळे गमन करी अनेक महाशयो पासेथी ग्रन्थो मेळव्या, भडारोना मालीको पासे जाते जइ ग्रन्थो मेळव्या, अनेक मुनियो अने श्रावको साथे पत्र व्यवहार कर्यो, श्रीमद्नु

जीवनचरित शोधवा तेमणे साधुओ साध्वीओ पर अनेक पत्रो लख्या श्रीमद्‌ना ग्रन्थो छपाववामा ठ सात वर्ष सुधी अखड अथाग प्रयत्न सेव्यो तेथी तेमने धर्मलाभपूर्वक अनेकश धन्यवाद आपवामा आवे छे श्रीमद्‌ना ग्रन्थो उपार्जीने तेमणे जैनशासननी अने जैनोनी सारी सेवा बजावी छे श्रीमद् देवचन्द्र महाराजना ग्रन्थो छपाववामा मुख्यनाए तेमनो भाग छे एम जैन कोमने जणाववा माटे ये शब्दो अत्र लखवामा आव्या छे डहेलाना उपाश्रयमाथी श्रीमद् देवचन्द्रजीना पुस्तकोने काढी आपनार झवेरी भोगीलाल ताराचदने धन्यवाद घटे छे बालुचर (मुर्शिदाबाद निवासी) झवेरी उमरचन्द्रजी बोथराए श्रीमद्‌ना पुस्तकोनी यादी आपवामा तथा अन्य पुस्तको मोकली आपवामा घणी साहाय्य करी छे पादरा निवासी सुश्रावक माणेकलाल, तथा प्रेमचदभाइ तथा मगलभाइ लक्ष्मीचद वगेरेए पुस्तको छपाववामा साहाय्य करी छे माटे तेओने धन्यवाद घटे छे प्रवर्तक कान्तिविजयजी प लाभविजयजी प दानविजयजी वगेरेने पुस्तको आपवा माटे धन्यवाद घटे छे श्रीमद्‌ना ग्रन्थो जैन सघना कल्याण माटे थाओ, एम इच्छी प्रस्तावना समाप्त करवामा आवे छे अर्हं ॐ शान्ति मु पादरा—नवपुरी जैन उपाश्रय ज्ञानमदिर सवत् १९७५ आश्विन शुक्ल द्वितीया

तपागच्छीय सागरशाखीय जैनाचार्य बुद्धिसागरसूरिणा प्रस्तावना लिखिता

जैनाचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरि ग्रन्थमाळामां प्रकट थयेला ग्रन्थो तथा तेमना अन्यत्र प्रकट थयेला

ग्रन्थोनी यादी.

	पृष्ठ संख्या	किंमत
१ भजन संग्रह भाग १ लो	२००	०– ८
१ क अध्यात्म व्याख्यानमाला	२०६	०– ४
२ भजन संग्रह भाग २ जो	३३६	०– ८
३ भजन संग्रह भाग ३ जो	२१९	०– ८
४ समाधिशतक (अमदावादवाळा शेठ जगाभाई दलपतभाई)	३४०	०– ८
५ अनुभव पचिशी	२४८	०– ८
६ आत्मप्रदीप	३१५	०– ८
७ भजन संग्रह भाग ४ थो	३०४	०– ८
८ परमात्म दर्शन	४३२	०–१२
९ परमात्म ज्योति	५००	०–१२
१० तत्त्वबिन्दु	२३०	०– ४
११ गुणानुरागकुलक विवेचन (आ २)	२४	०– १
१२ भजन संग्रह भाग ५ मो	१९०	०– ६
१३ तीर्थयात्रानु विमान (आ २)	६४	०– १
१४ अध्यात्म भजन संग्रह	१९०	०– ६
१५ गुरु बोध	१७२	०– ४
१६ तत्त्वज्ञानदीपिका	१२४	०– ६
१७ गहुंलीसंग्रह	११२	०– ३
१८ श्रावक धर्मस्वरूप भाग १ लो (आ ३)	४०	०– १
१९ श्रावक धर्मस्वरूप भाग २ जो (आ ३)	४०	०– १
२० भजनपदसंग्रह भाग ६ ठ्ठो	२०८	०–१२

२१ वचनामृत (लघु) वकील मोहनलाल हिमचद तरफथी भेट

२२ वचनामृत (मोटु)	३०८	०–१४
२३ योगदीपक	२६८	०–१४
२४ जैन ऐतिहासिक रासमाळा	४०८	१–०
२५ आनन्दघनपद भावार्थसग्रह	८०८	२–०
२६ अध्यात्मशान्ति (आ २)	१३२	०– ३
२७ भजनपद काव्यसग्रह भाग ७ मो	१५६	०– ८
२८ जैनधर्मनी प्राचीन अने अर्वाचीन स्थिति	९६	०– २
२९ कुमारपाल चरित्र (हिन्दी)	२८७	०– ६
३०–३४ सुखसागर गुरु गीता श्री मयासागरजी चरित्र श्री नेमिसागरजी चरित रवि-सागरजी च० सुखसागरजी च०	३००	०– ४
३५ षड्द्रव्यविचार (द्वितीयावृत्ति) [वकील मो हि पादरा]	२४०	०– ४
३६ विजापुर वृत्तात	९०	०– ४
३७ साबरमती काव्य (गुजराती)	१९६	०– ६
३८ प्रतिज्ञापालन	११०	०– ५
३९–४०–४१ जैनगच्छमतप्रबध सघप्रगति जैनगीता	६१५	१– ०
४२ जैन धातुप्रतिमा लेखसग्रह	३२४	१– ०
४३ मित्रमैत्री	१६४	०– ८
४४ शिष्योपनिषद्	५७	०– २
४५ जैनोपनिषद्	४८	०– ८
४६–४७ धार्मिक गद्यसग्रह तथा पत्रसदुपदेश भाग १ लो	९७६	३–०
४८ भजन सग्रह भाग ८ मो पद्यसग्रह	९०४	३–०

४९ देवचन्द्र प्रथम भाग	१०२८	२-०
५० कर्मयोग	१०१२	३-०
५१ आत्मतत्त्वदर्शन	११२	०- ८
५२ भारतसहकारशिक्षण	१६८	०-१०
५३ श्रीमद् देवचन्द्र भाग बीजो	१२००	३- ८

५४ कर्मप्रकृति (भाषानर छपाय छे)

५५ एकदर

श्रीमद् बुद्धिसागरसूरिकृत अन्यत्र छपायला पुस्तको

१ श्री रविसागरजी चरित्र अने शोकविनाशक ग्रन्थ (वडोदरा केशवलाल लालचद, मामानीपोळ)

२ आत्मशक्तिप्रकाश (गुजराती) समाधिशतकना भेगो छपायो छे

३ आत्मदर्शन गीता (संस्कृत मूळ श्लोक १८२) आत्मप्रदीप भेगो छपायो छे

४ ज्ञानदीपिका (गुजराती) भजनसंग्रह पाचमा भाग भेगो छपायो छे-छपायो छे

५ पूजासंग्रह (अष्टप्रकारी अने वास्तुक पूजा) साणद-बुद्धिसागर समाज ०-२-०

६ श्री यशोविजय निबन्ध (साहित्य परिषद्-वडोदरा) ०-४-०

७ ध्यानविचार (भावनगर-आत्मानन्द सभा)

८ जैन धर्म अने ख्रीस्ति धर्मनो मुकाबलो (धी जैन फ्रेन्डली सोसाइटी मुंबाइ)

९ चिंतामणि (साणद)

१० कन्याविक्रय निषेध (साणद)

११ तत्त्वविचार } ज्ञानप्रसारक मंडळ मुंबाई-झवेरी बजार
१२ सत्यस्वरूप }

१३ आत्मप्रकाश (माणसावाळा शेठ वीरचदभाइ कृष्णाजी) भेट मळे छे

१४ चेतनशक्ति (भजन भाग त्रीजामा छपायो छे)

१५ वर्तमानकाल सुधारो (भजन भाग त्रीजामा छपायो छे)
१६ परमब्रह्म निराकरण (भजनसंग्रह भाग ४ मा)
१७ बुद्धिप्रकाश गायनसंग्रह भाग १ लो (मणिलाल वाडीलाल साणद)
१८ बुद्धिप्रकाश गायन संग्रह भाग २ जो (अमदावाद सभंत्र जिन मंडळ)
१९ श्रीमंत सरकार सयाजीराव गायकवाडनी आगळ आपेलु भाषण
२० आनन्दमौक्तिक प्रस्तावना (शत्रुंजय रासनी प्रस्तावना) [शु दे ला फ पु उ]
२१ षोडशक प्रकरणनी प्रस्तावना (देवचंद ला पुस्तोद्धार फंड)
२२ गुरुगीता (संस्कृत) [छपाइ गइ छे]
२३ श्रीमद् देवचन्द्र प्रस्तावना (श्रीमद् देवचन्द्र बीजा भागमां)
२४ चोवीशी (साणद बुद्धिसागर समाज)
२५ अध्यात्मगीता
२६ आत्मस्वरुप (विजापुर भ)
२७ तत्त्वपरीक्षा विचार
२८ गुरु माहात्म्य (अमदावाद आंबलीपोळ ज्ञानभंडारमां)

(२५–२८) नहीं छपायला

उपरना ग्रन्थो मळवाना ठेकाणा :—

पादरा–वकील मोहनलाल हिमचंदभाइ
मुंबाइ–अध्यात्मज्ञानप्रसारक मंडळ चंपागली हा शेठ ल्लुभाइ करमचंद दलाल
" मेघजी हीरजी बुकसेलर–पायधुनी
पुना–शेठ वीरचंदभाइ कृष्णाजी
विजापुर (गुजरात)–जैन मित्रमंडळ हा शा मोहनभाइ जेशींगभाइ
साणद (गुजरात)–शा आत्माराम खेमचंद

श्रीदेवचन्द्रकृत विचारसारग्रन्थस्य ॥

। टीका स्तवकश्च ।

नमियजिण गुणठाणे, मूलुत्तरबधुदयदीरणया।
सता जियगुणजोगो–, नओगलेसादुविहहेउ ॥१॥

टीका—श्रीनाभेयजिन नत्वा, शुद्धसिद्धाद्रिमडनम् ।
कल्याणमगलानाच, मूल सद्भावदेशकम् ॥ १ ॥
वर्द्धमान जिनाधीश, शुद्धस्याद्वादवादकम् ।
निर्विकल्पमहानद–रसानुभवपूरकम् ॥ २ ॥
वाचस्त्वशसमुद्भव, मुक्ताफलसनिभान् ।
गुरुन् स्मृत्वा गुणस्थानशतकाख्यस्य, वृत्तिरेषा वितन्यते ३॥

अथ शिष्टाचारपरिपालनाय प्रथममगलाभिधेयप्रतिपादनरूपा ॥गाथामाह॥ नमिअजिणइति, नत्वायोगोपयोगबहुमानपरिणत्या जिन वीतराग गुणस्थाने द्वारशतक वक्ष्ये, गुणा चेतनक्षयोपशमादिरूपास्तेषा स्थानानि गुणस्थानानि। तेषु एकवचन प्रत्येकत्वस्थापनार्थं मिथ्यात्वस्य दोषरूपत्वेपिगुणस्थानत्वतुविपर्यस्तचेतनागुणाशस्यसर्वजन्याशन प्रारम्य शेष गुणस्थानकाभिधायिका गाथामाह ॥ १ मिच्छे, २ सासण, ३ मीसे, ४ अविरय, ५ देसे, ६ पमत्त, ७ अपमत्ते, ८ नियट्टि, ९ अनियट्टि, १० सुहुम, ११ वसम, १२ खीण, १३ सजोगि, १४ अजोगि, १६

गुणा । ११ गुणस्थानानि तत्र सूचनात्सूत्रमिति न्यायात्पदैकदेशे पदसमुदायोपचाराद्वा इहैव गुणस्थानकनिर्देशो द्रष्टव्य १ तथाद्यमिथ्यादृष्टिगुणस्थान, २ सास्वादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान, ३ सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थान, ४ अविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थान, ५ देशविरतिगुणस्थान, ६ प्रमत्तसंयतगुणस्थान, ७ अप्रमत्तसंयतगुणस्थान, ८ अपूर्वकरणगुणस्थान, ९ अनिवृत्तिबादरसंपरायगुणस्थान, १० सूक्ष्मसंपरायगुणस्थान, ११ उपशान्तकषायवीतरागछद्मस्थगुणस्थान, १२ क्षीणकषायवीतरागछद्मस्थगुणस्थान, १३ सयोगिकेवलिगुणस्थान १४ अयोगिकेवलिगुणस्थान, तत्रगुणा ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा जीवस्वभावविशेषा स्थानपुनरत्रतेषां शुद्ध्यशुद्धिप्रकर्षापकर्षकृत स्वरूपभेद तिष्ठत्यस्मिन् गुणाइतिकृत्वागुणानांस्थानगुणस्थान, मिथ्या विपर्यस्तादृष्टिरर्हत्प्रणीतजीवाजीवादिवस्तुप्रतिपत्तिर्यस्य भक्षितहृत्पूरपुरुषस्य सितेपीतप्रतिपत्तिवत्, स मिथ्यादृष्टिस्तस्य गुणस्थान ज्ञानादिगुणानामविशुद्धिप्रकर्षविशुद्ध्यपकर्षकृत स्वरूपविशेष मिथ्यादृष्टिगुणस्थान, ननुमिथ्यादृष्टिस्तत्कथगुणस्थान तत्रनिगोदावस्थायामपितथाभूताव्यक्तस्पर्शमात्रप्रतिपत्तिसद्भावात् अन्यथाजीवत्वप्रसंगात्, यदागम सव्वजीवाणंपि अणं अक्खरस्सअणंतभागो निच्चुग्घाडिओचिट्ठइ जइपुण सेसोवि आवरिज्जा तोणजीवोअजीवत्तणपाविज्जत्ति" तथाहि समुन्नताघनघनपटलेन दिनकररजनीकरतिरस्कारेऽपिनैकान्तेन तत्प्रभानाश संपद्यते, प्राणिप्रसिद्धदिनरजनीविभागाभावप्रसंगात्, उक्तंच सुट्ठुविमेहसमुदये होइपहाचंदसूराणमिति एवमिहापिप्रबलमिथ्यात्वोदयेपि काचिदविपर्यस्तादृष्टिर्भवतीतितदपेक्षयामिथ्यादृष्टेरपिगुणस्थानसंभव । यद्येवंकथमसौमिथ्यादृष्टिरेवाशस्याविपर्यस्तत्वात्, नैवयतोभगवदर्हत्प्रणीत सकलमपिद्वादशाङ्गार्थमभिरोचयमानो यदि तदुदितमेकमप्यक्षरं न रोचयति तदा-

नीमप्येपमिथ्यादृष्टिरेवोन्यते नस्य भगवति सर्वज्ञम पयनाशात्॥यदुक्त॥ पयमरकापिइक्क, जो न रोएइ सुत्तनिद्दिठ, सेसरोयनोविइ्ठ, मिच्छ दिट्ठीजमालिव्वेति॥ किंपुनर्भगवदर्हदभिहितसकलजाजीवादिवस्तु-तत्त्वनिकल्दाति, अयमुपशमसम्यक्त्वलाभलक्षणसादयति अपनयतीत्यासादन, अनन्तानुबन्धिकषायवेदन, अत्रपृषोदरादित्वाद्यशब्दलोप "कृद्बहुल" मितिकर्त्तर्यनट् सतिह्यस्मिन् परमानन्दरूपानन्तसुखफलदोनिःश्रेयसतरुबीजभूत औपशमिकसम्यक्त्वलाभो जघन्यत समयमात्रेणोत्कर्षत पड्भिरावलिकाभिरपगच्छतीतिनिन्नमहस्वादनेनवर्तनइतिसास्वादन सम्यगजिनपयम्नादृष्टिर्जिनप्रणीतवस्तुप्रतिपत्तिर्यस्य स सम्यग्दृष्टि सासादनश्चासौसम्यग्दृष्टिश्चसासादनसम्यग्दृष्टिस्तस्यगुणस्थान सासादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान। तत्रसम्यक्त्वलक्षणरसास्वादनेनवर्तनइतिसास्वादन यथाहि भुक्तक्षीरान्नविषयव्यलीकचित्त पुरुपस्तद्वमनकाले क्षीरान्नरसमास्वादयति तथैषोपिमिथ्यात्वाभिमुखतयासम्यक्त्वस्योपरिव्यलीकचित्त सम्यक्त्वमुद्वमन् तद्रसमास्वादयति तत स चासौसम्यग्दृष्टिश्च तस्यगुणस्थानन सास्वादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थान। एतदुक्त भवति इहगभीरापारससारमध्यमध्यासीनोजन्तुर्मिथ्यात्वप्रत्ययमनन्तान् पुद्गलपरावर्त्तान् अनन्तदु खलक्षणाननुभूयकथमपि तथा भव्यत्वपरिपाकवशात् गिरिसरिदुपलघोलनाकल्पेनानाभोगनिर्वर्त्तितयथाप्रवृत्तिकरणेन करणपरिणामोऽनेतिरचनाध्यवसायविशेपरूपेणायुर्वर्जानिज्ञानावरणीयादिकर्माणि सर्वाण्यपिपल्योपमासख्येयभाग न्यूनैकसागरकोटिकोटिस्थितिकानि करोति अत्रातरे जीवस्यकर्मजनितो घनरागद्वेषपरिणाम कर्कशनिविडचिरप्ररूढगुपिलवक्रग्रन्थिवद्दुर्भेद्योऽभिनपूर्वोग्रथिर्भवति, तदुक्त, तीणिवि थोवमित्तो, खवीयेइत्यतर मिजीवस्स, हवइहुअभिन्नपुव्वो, गठीएवजिणाबिंति॥१॥ गठित्तिसुदुब्भेओ, कक्कडघणरूढगूढगंठिव्व, जीवस्सकम्मजणिओ, घणरागदोस-

र्थयास्दम या अपियथाप्रवृत्तकरणेन क्र-
ञ्जन्ति, उक्तञ्चावश्यकटीकाया ॥ अभ
करणनोग्रथिमासाद्य अर्हदादिविभनिदर्श-
र्नमानस्य द्रव्यश्रुतसामायिकलाभोभव-
निरकश्चिदेवमहात्मासन्नपरमनिवृत्तिसुख
मसरोनिशितकुठारधारयेवपरमविशुद्ध्या
ाय मिथ्यात्वस्थितेरन्तर्मुहूर्त्तमुदयक्षणा-
त्तिकरणलक्षणविशुद्धिजनितसामर्थ्यात्
देशवेद्यदलिकाभावरूपमन्तरकरणकरोति ।
ानिवृत्तिकरणानामयक्रम । जागडीताप-
य । अनियट्टिकरणपुण । सम्मत्तपुरस्कडे-
ोचि ॥ ग्रथिसमतिक्रामतोभिदानस्येति,
ुरस्कृतयेननस्मिन्नासन्नसम्यक्त्वेजीवेऽनि-
श्चान्तरकरणेकृतेसति तस्यमिथ्यात्वकर्मण
ादयस्तनीप्रथमास्थितिरन्तर्मुहूर्त्तप्रमाणा।
ीशेषाद्वितीयास्थापना । । तत्रप्रथमस्थि-
ामिथ्यादृष्टिरेव, अन्तर्मुहूर्त्तेन पुनस्तस्याम-
यएवौपशमिकसम्यक्त्वमाप्नोति । मिथ्या-
ाहि वनदवानल पूर्वदग्धेंधनमूषरवादेश-
मिथ्यात्ववेदनवनदवोप्यन्तरकरणमवाप्य-
यौपशमिकसम्यक्त्वलाभ ॥ उक्तञ्च ॥
ाइयणदवोपप्प इयमिच्छस्सअणुदये, उव-
भवसिद्धान्ताशये अनिवृत्तिकरणातेकृतत्रि-
मसम्यक्त्वलाभोभवति तथापिप्रायोबहु-
ात् कार्मग्रथिकानाउपशमसम्यक्त्वस्यप्र-

यमलाभ यारया कर्मग्रथेपि न क्षयोपशमनिषेधइति औपशमिकस्यच अन्तर्मुहूर्तस्याशुपशाताद्धायापरमनिधिलाभकल्पाया जघन्यन समयशेषायामुत्कृष्टत पटावलिकाशेषायासत्याकस्यचि महाविभिपेकोत्यानन्तपोऽनन्तानुबन्ध्युदयोभवति तदुदयेचासौसास्वादनसम्यग्दृष्टिगुणस्थानेवर्त्तते उपशमश्रेणिप्रतिपतितोवाकश्चित्सासादनत्व याति नद्धुत्तरकालच्चावश्यमिथ्यात्वोदयादसौमिथ्यादृष्टिर्भवति तथा सम्यक्त्वमिथ्यादृष्टिर्यस्यासौसम्यग मिथ्यादृष्टिस्तस्यगुणस्थानसम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थान, इहानतरामिहितविधिनाल्ब्धौपशमिकत्वेनमदनकोद्रवस्थानीयमिथ्यात्वमोहनीयकर्मशो धयित्वात्रिधाकरोति ॥ तद्यथा ॥ शुद्धमर्द्धविशुद्धमशुद्धचेतिस्थापना ० ० ० तनत्रयाणापुजानामव्येयदार्थनिशुद्ध पुजउदेति तदातद्धुदयान्यावज्जीवस्यार्द्धनिशुद्धजिनप्रणीततत्त्वश्रद्धान मिश्रत्वेमध्यस्थेनानिर्द्धारस्पभवति तेनतदासौसम्यगमिथ्यादृष्टिगुणस्थानमतर्मुहूर्त्तकाल स्पृशति ततऊर्द्धअवश्यसम्यक्त्वमिथ्यात्वनावगच्छति ३ तथा विरतिविरतस्त्रीवेक्तप्रत्ययस्तत्पुन सावद्ययोगप्रत्यार यानतत्रजानातिनाभ्युपगच्छति न तत्पालनाय यतवे

इतिनयाणापदानाअष्टौभगा	ऽऽऽ	एतेषुचतुर्षुभगेषुमिथ्यादृष्टिर-
ज्ञानित्वात्शेषेषु ॥ ऽऽ।	ऽऽ। ऽ।ऽ	सम्यग्दृष्टिज्ञानित्वात्सप्तस्य-
सुभगेषु नास्य विरतसमरती-	ऽ॥	विरताऽप्रादित्यप्रत्यय चर-

मभगेतुविरतिरस्तीतिपद्धविरमतिस्मसावद्ययोगेभ्योनिवर्त्ततेस्मेतिनिरत कर्त्तरिक्तप्रत्ययेनविरतोऽविरत सचासोसम्यगदृष्टिश्चअविरतसम्यगदृष्टिरिदमुक्तभवतिय पूर्ववर्णितोपशमिकसम्यगदृष्टि शुद्धदर्शनमोहपुजोदयवर्तीक्षयोपशमिकसम्यगदृष्टिर्वाक्षीणदर्शनसप्तकक्षायिकसम्यगदृष्टिर्वापरमसुनिप्रणीतासावद्ययोगविरतिसिद्धिसौधाव्यारोहणनिश्रेणिरूपाजानन्प्रत्यारयानकषायोदयविघ्नतस्तानाभ्युपगच्छति नचनतपाल्नायपनतइत्यासावविरतिसम्यग्दृष्टिरुच्यते तस्यगुणस्थान

अविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थान ॥ उक्तच ॥ बधअविरइहेउ, जाणनो-
रागदोसदुरकच विरइसुह इछतो, विरइकाउन असमत्थो ॥ १ ॥

एसअसजपसम्मो, निंदितोपावकम्मकरणच ॥
अहिगयजीवाजीवो, अचलियदिठीचलियमोहो ॥

तथासर्वसावद्ययोगस्यदेशेएकव्रतविषयेस्थूलसावद्ययोगादौ
सर्वविषयानुमतिवर्जसावद्ययोगाद्वेविरतविरतिर्यस्यासौदेशविरत सर्व-
सावद्यविरति पुनरस्यनास्ति प्रत्याख्यानावरणकषायोदयात् सर्वविर-
तिरूपमत्याख्यानआवृण्वतीतिप्रत्याख्यानावरणा ॥ उक्तच ॥

सम्मद्दसणसहिओ, गिण्हतोविरइमप्पसत्तीए ॥
एगवयाइचरमो, अणुवयमित्तत्तिदेसजई ॥ १ ॥

देशविरतस्यगुणस्थान देशविरतगुणस्थान ५ तथासच्छ्यतिस्म
सम्यग्उपरमतिस्म सयत 'गत्यर्थाकर्मेति' क्त प्रमाद्यतिस्म सयमयो-
गेषुसीदतिस्म क्तप्रत्ययेप्रमत्त यद्वाप्रमदन—प्रमत्त ॥ प्रमाद सचमदि-
राविषयकषायनिद्राविकथानामन्यतम सर्वेत्राप्रमत्तमस्यास्तीतिप्रमाद-
वान् अभ्रादिभ्यइत्यअप्रत्यय प्रमत्तश्चासौसयतश्चप्रमत्तसयतस्तस्यगुण-
स्थानप्रमत्तसयतगुणस्थान विशुद्ध्यविशुद्धिप्रकर्षापकर्षकृत स्वरूप-
भेद ॥तथाहि॥ देशविरतिगुणापेक्षया एतद्गुणानाविशुद्धिप्रकर्षोऽ-
विशुद्धप्रकर्षश्चअप्रमत्तसयतापेक्षयातुविपर्यय एवमन्येष्वपिगुणस्था-
नेषुपूर्वोत्तरापेक्षया विशुद्धविशुद्धिप्रकर्षापकर्षयोजना द्रष्टव्या ६ न प्रम-
त्तोऽप्रमत्त यद्वानास्तिप्रमत्तमस्यासावप्रमत्त सचासौसयतश्चतस्यगुण-
स्थान अप्रमत्तसयतगुणस्थान ७ अपूर्वमपूर्वमिनवप्रथममित्यर्थ कर-
ण, स्थितिघात १ रसघात २ गुणश्रेणि ३ गुणसक्रम ४ स्थि-
तिबधानां ५ पचानामर्थानानिवर्त्तनयस्यासौऽपूर्वकरण तथाहि

बृहत्प्रमाणा या ज्ञानावरणीयादिकर्मस्थितिस्तस्याअपवर्त्तनाकरणेन-
खण्डनमल्पीकरणं स्थितिघातउच्यते, रसस्यापिप्रचुरीभूतस्यसतोऽपवर्त्त-
नाकरणेनखण्डनमल्पीकरणंरसघातउच्यते, एतौद्वावपिपूर्वगुणस्थानेषु-
विशुद्धेरल्पत्वादल्पावेवकृतवान्, अत्रपुनर्विशुद्धेः प्रकृष्टत्वात् बृहत्प्र-
माणतया अपूर्वाविमौकरोति, तथाउपरितनस्थितेर्विशुद्धिवशादपवर्त-
नाकरणेनावतारितस्यदलिकस्यान्तर्मुहूर्त्तप्रमाणमुदयक्षणादुपरिक्षिप्रतरक्ष
पणाय प्रतिक्षणमसंख्येयगुणवृद्ध्याविरचनंगुणश्रेणि स्थापना एनां च
पूर्वगुणस्थानेषु अविशुद्धत्वात्कालतोद्राघीयसींदलिकरचनामाश्रित्य-
ह्रस्वीयसीं च दलिकस्यापवर्त्तनाद्विरचितवान् ॥ इहतुनाम च विशु-
द्धत्वादपूर्वांकालतोह्रस्वतरांदलिकस्यविरचनामाश्रित्यपुनः पृथुतरांबहु-
तरदलिकस्यापवर्त्तनाद्विरचयतीति तथाबध्यमानशुभप्रकृतिष्वबध्य-
मानाशुभप्रकृतिदलिकस्यप्रतिक्षणमसंख्येयगुणवृद्ध्याविशुद्धिवशान्नयन
गुणसंक्रमस्तमप्यसाविहापूर्वंकरोति, तथास्थितिकर्मणामशुद्धत्वात्प्रा-
ग्द्राघीयसींबद्धवान् इहतुनामपूर्वोविशुद्धत्वादेवह्रस्वीयसींबध्नाति, अ
यचापूर्वकरणोद्विधा क्षपकउपशमकश्चक्षपणोपशमतार्हत्वाच्चैवमुच्यते-
राज्यार्हकुमारराजवत्क्षपकरसौक्षपयति, उपशमयतिवातस्यगुणस्थान
अपूर्वकरणगुणस्थानं एतच्चगुणस्थानंप्रपन्नानंतरवर्तिनोनानाजीवान-
पेक्ष्यसामान्यतोऽसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा अध्यवसायस्थाना-
निभवन्ति, कथंपुनस्तानिभवन्ति ? इतिविनेयजनानुग्रहार्थंविशेष-
तोपिप्ररूप्यते, इहतावदिदंगुणस्थानकमन्तर्मुहूर्तकालप्रमाणंभवति
तत्रचप्रथमसमयेप्रपन्ना प्रपद्यते, प्रपत्स्यते च तदपेक्षयाजघन्यादी-
न्युत्कृष्टान्यसंख्येयलोकाकाशप्रदेशप्रमाणा अध्यवसायस्थानानिल-
भ्यते प्रतिपत्तृणांबहुत्वादध्यवसायानांचविचित्रत्वादितिभावनीयं
ननुयदिकालत्रयापेक्षाक्रियते तदेवगुणस्थानकं प्रतिपन्नानामनंता-
ध्यवसायस्थानानिकस्मान्नभवंति ? अनंतजीवैरस्यप्रतिपन्नत्वादन-

तैरेवप्रतिपन्नमनन्तत्वादिति, सत्य स्यादेव यन्नित्यप्रतिपन्नगणासौ-
पापृथगपृथग्भिन्नान्येवाध्यवसायस्थानानिस्युस्तन्नास्ति, यद्नापि
चाध्यवसायस्थानानन्तत्वादपीनि ततोद्वितीयसमयेतदपायधि-
कतराण्यध्यवसायस्थानानिलभ्यते, तृतीयेसमयेतदन्यान्यधिकत-
राणि चतुर्थेसमयेतदन्यान्यधिकतराणीयेव तावद्नेयावच्चरमस-
मय एतानिएतानिचस्थाप्यमानानिविषमचतुरस्रक्षेत्रमभिव्या-
प्नुवन्ति तद्यथा . अत्रप्रथमसमयजघन्यात्तदुत्कृष्टमनन्त-
गुणविशुद्ध, तस्माच्चतृतीयसमयजघन्यमनन्तगुणविशुद्ध, ततोपित-
दुत्कृष्टमनन्तगुणविशुद्धमिति पूर्वसमयगतानिचामून्यध्यवसायस्थाना-
निपरस्परमनन्तभागवृद्धसंख्यातभागवृद्धसंख्यातभागवृद्धसंख्येयगुण-
वृद्धाऽसंख्येयगुणवृद्धानन्तगुणवृद्धरूपषट्स्थानपतितानियुगपदेतद्
गुणस्थानप्रतिपन्नानांचपरस्परमध्यवसायस्थानव्यावृत्तिलक्षणानि, वृत्ति-
रस्यास्तीतिनिवृत्तिगुणस्थानकमप्येतदुच्यते अतएवोक्तसूत्रेनियट्टी-
अनियट्टीत्यादि८ तथा युगपदेतद्गुणस्थानकप्रतिपन्नाना बहूनामपि
जीवानाम यो ऽन्यमध्यवसायस्थानस्य व्यावृत्तिर्निवृत्तिर्नास्त्यस्येति
अनिवृत्ति समकालमेतद्गुणस्थानकमारूढस्यापरस्याध्यवसाय-
स्थान विवक्षितोऽन्योपिकश्चित्तद्वर्त्तीनेत्यर्थं संपरैतिपर्यटतिसंसारम-
नेनेतिसंपराय कषायोदय बादर सूक्ष्मकिट्टीकृत संपरायापेक्ष-
यास्थूर संपरायोयस्य स बादरसंपराय अनिवृत्तिश्चासौबादरसंपरायश्च-
तस्यगुणस्थानमनिवृत्तिबादरसंपरायगुणस्थान इदमप्यन्तर्मुहूर्त्तप्रमा-
णमेव तत्रचान्तर्मुहूर्त्तेयावन्त समयास्तत्प्रविष्टानातावन्त्येवाध्यवसाय-
स्थानानि भवन्त्येकसमयप्रविष्टाना एकस्यैवाध्यवसायस्थानस्यानु-
वर्त्तनादिति स्थापना प्रथमसमयादारभ्यप्रतिसमयानन्तगुणविशु-
द्धयथोत्तरमध्यवसायस्थानभवतीतिवेदितव्य, सचानिवृत्तिबादरोद्वि-
धाक्षपकउपशमकश्च ॥९॥ तथा संपराय किट्टीकृतलोभकषायो-

दयरूपो यस्य सोऽयसूक्ष्मसपराय । सोपि द्विधाक्षपकउपशमकश्च क्ष-
पयति उपशमयति वा लोभमेकमपीतिक्षपकस्य गुणस्थान सूक्ष्मस-
परायगुणस्थान ॥ १० ॥ तथाऽऽच्छादयतेकेवलज्ञान केवलदर्शन-
चात्मनोऽनेनेतिछद्मज्ञानावरणदर्शनावरणमोहनीयान्तरायकर्मोदय ।
सतितस्मिन्केवलस्यानुत्पादात् । तदपगमानतरचोत्पादात् छद्मनि-
तिष्ठतीतिछद्मस्थ । सचसरागोपिभवतीत्यतस्तद्व्यवच्छेदार्थवीतरा-
गग्रहण वीतो विगतो रागोमायालोभकषायोदयरूपोयस्यसवीतराग
सचासौछद्मस्थश्चवीतरागछद्मस्थ सचक्षीणकषायोपिभवति । त-
स्यापियथोत्तररागोपरमात् । अनन्तद्व्यवच्छेदार्थउपशातकषायग्रहण
कषशिष्येत्यादिदण्डकधातुर्हिंसार्थ । कषति कष्यति च परस्परमस्मिन्
प्राणिनइतिकष ससार कषमयतेगच्छन्त्येभिर्जतवइतिकषाया क्रो-
धादय उपशाता उपशमिता विद्यमानाएवसक्रमणोद्वर्तनादिकरणो-
दयायोग्यत्वेन व्यवस्थापिता कषाया येन सउपशातकषाय सचासो-
वीतरागछद्मस्थश्चेतिउपशातकषायवीतरागछद्मस्थ तस्यगुणस्थान-
मितिप्राग्वत् । तत्राविरतसम्यग्दृष्टे प्रमत्यनन्तानुबधिन कषाया
उपशाता सभवति उपशमश्रेण्यारभेश्चनतानुबधिकषायानऽविरतो-
देशविरत प्रमत्तोऽप्रमत्तोवासन्नुपशमय्य दर्शनमोहत्रितयमुपश-
मयति । तदुपशामानतरप्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानकपरिवर्तिशतानिकृ-
त्वा ततोऽपूर्वकरणगुणस्थानोत्तरकालमनिवृत्तिबादरसपरायगुणस्थाने
चारित्रमोहनीयस्य प्रथमनपुसकवेदमुपशमयति तत स्त्रीवेद ततो-
हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्साषट्कयुगपद्दृष्ट्रूक तत पुरुषवेद-
ततोयुगपदप्रत्याख्यानावरणप्रत्याख्यानावरणौक्रोधौतत सज्वलन-
क्रोध । ततोयुगपद्द्वितीयतृतीयमानौतत सज्वलनमानततोयुग-
पद्द्वितीयतृतीयमायेतत [illegible] या ततोयुगपद्द्वितीयतृतीयौलो-

भांतत सूक्ष्मसपरायगुणस्थानेसज्वलनलोभमुपशमयति इत्युपशमश्रेणि ॥ तदेवमन्येष्वपिगुणस्थानकेषुक्वापिकियतामपिकषायाणामुपशातत्वसभवात् उपशातकषाय यपदेश सभवत्यनस्तद्व्यवच्छेदार्थवीतरागग्रहणवीतरागइत्येतावतापीष्टसिद्धौछद्मस्थग्रहणस्वरूपकथनार्थव्यवच्छेद्याभावात्नछद्मस्थउपशातकषायवीतराग सभवति यस्यछद्मस्थग्रहणेन यवच्छेद स्यादिति । अस्मिन्गुणस्थानकेअष्टाविंशतिरपिमोहनीयप्रकृतय उपशाता ज्ञातव्या ॥ उपशातकषायश्चजघन्येनैकसमय भवति । उत्कर्षेणतुअतर्मुहूर्त्तकालतन ऊर्ध्वनियमादसौप्रतिपतति । प्रतिपातश्चद्वेधा भवक्षयेण अद्धाक्षयेणच । तत्रभवक्षयोम्रियमाणस्य अद्धाक्षय उपशाताद्धायासमाप्तायाप्रतीतायां अद्धाक्षयेणचप्रतिपतन् यथैवारूढस्तथैवप्रतिपतति। यत्रयत्रबधोदयोदीरणाव्यवच्छिन्नास्तत्रप्रतिपतता सता तेआरभ्यते। इतियावत् प्रतिपातश्चतावत्प्रतिपतति यावत् प्रमत्तगुणस्थान कश्चित्तुततोप्यधस्तनगुणस्थानद्विकयाति । कोपिमासादनभावमवाप्यमिथ्यात्वगच्छति य पुनर्भवक्षयेणप्रतिपतति। स प्रथमसमयएवसर्वाण्यपिबधादीनिकरणानिप्रवर्त्तयतीतिविशेष । उत्कर्षतश्चैकस्मिन्भवेद्वौ(वारान्)वारौउपशमश्रेणिंप्रतिपद्यते तस्यक्षपकश्रेणिर्नभवेदपीति॥उक्तच॥ सप्ततिकाचूर्णौ "जोदुवारेउवसमसेढिंपडिवज्जइ तस्सनियमातम्मिभवेखवगसेढीनत्थि जोइक्कसिंउवसमसेढिंपडिवज्जइ तस्सकरसविखवगसेढीविहुजत्ति " एप कार्मग्रथिकाभिप्रायेण, आगमाभिप्रायेणत्वेकस्मिन्भवेएकामेवश्रेणिंप्रतिपद्यते ॥ यदुक्त कल्पभाष्ये " एवअपरिवडीए सम्मत्ते देवमणूआइजम्मेसु अन्नयरसेढिवज्ज " अन्यत्राप्युक्त, मोहोपशमएकस्मिन्भवे द्विस्यात्सतत यस्मिन्भवेत्पशम क्षयो मोहस्यतत्रनेति अत्राशय उपशमश्रेणिक प्रतिपतितो बाहुल्येनाशुद्धपरिणामत्वात्पुनर्विशुद्धा-

ध्यवसायधारा नारोहति तेन वाहुल्येन एकामेवश्रेणिं करोतिकश्चिन् प्रतिपतितोऽपि तीव्रवीर्यविशुद्धोपयोगान् पुन श्रेणिमारोहतितेन अल्पत्वात्कल्पभाष्येनाधिकृतमिति ॥ ११ ॥ तयाक्षीणा अभावमापन्ना कषाया यस्य स क्षीणकषाय तत्रानतानुबधिकषायान् प्रथममविरतिसम्यग्दृष्ट्याद्यप्रमत्तांतगुणस्थानेषुक्षपयितुमारभते ततोमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्व ततोऽप्रत्याख्यानावरणानुकषायानष्टौक्षपयितुमारभते तेषुचार्द्धक्षपितेष्वेवानिविशुद्धिवशादतराल एवस्त्यानर्द्धित्रिक, नरकद्विक, तिर्यग्द्विक, जातिचतुष्क, आतप, उद्योत, स्थावर, साधारणमितिप्रकृतिषोडशकक्षपयति । तस्मिश्चक्षीणेकषायाष्टकस्यक्षपितशेषक्षपयति । ततोनपुसकवेद, स्त्रीवेद, हास्यादिषट्क, पुवेद, ततोसज्वलनक्रोधमानमाया क्षपयति एताश्चप्रकृतीरनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायगुणस्थानेक्षपयति । सज्वलनलोभसूक्ष्मसपरायगुणस्थाने इतिक्षपकश्रेणि । तदेवमन्येष्वपिगुणस्थानेषुक्षीणकषायव्यपदेश सभवति । क्वापिकियनामपिकषायाणाक्षीणत्वात्तस्तद्व्यवच्छेदार्थवीतरागग्रहण। क्षीणकषायवीतरागत्वचकेवलिनोप्यस्ति। तद्व्यवच्छेदार्थछद्मस्थग्रहणं छद्मस्थे च ग्रहणेकृतेसराग य वच्छेदार्थवीतरागग्रहण सचोपशातकषायोप्यस्तितद्व्यवच्छेदार्थक्षीणकषायग्रहण । इत्यनेनक्षीणकषायवीतरागछद्मस्थगुणस्थानमिति ॥ १२ ॥ तयायोगोवीर्यशक्तिरुत्साह पराक्रमइतिपर्याया सचमनोवाक्कायलक्षणकरणभेदात्त्रिस्र सज्ञा लभते । मनोयोगोवचनयोग काययोगश्चेति तथाचोक्त कर्मप्रकृतो" परिणामालबणगहणसाहणतेणलद्धनामतिग । कज्जाभ्मासमन्नुनप्प वेसविसमाकयपएस ॥१॥ तत्रभगवतोमनोयोगोमन पर्यायज्ञानिभिरनुत्तरसुरादिभिर्वामनसापृष्टस्यसतोमनसैवदेशनाते हि भगवत्प्रयुक्तानि मनोद्रव्याणिमन पर्यायज्ञानेनावधिज्ञानेनत्वापश्यति दृष्ट्वा च ते विवक्षितवस्त्वाका-

रान्यथानुपपत्त्यालोकस्वरूपादिना प्रमर्यमसिगच्छति। वाग्योगोवर्मदेशनादौ काययोगोनिमेषोन्मेषचङ्क्रमणादौ। तनोऽनेनयोगनयेणसहवर्त्तते इतिसयोगी रागादेरिन्यत्यय केवलज्ञानकेवलदर्शनचवित्र्तेयस्य स केवली सयोगी चासौकेवलीचसयोगीकेवलीतस्यगुणस्थानसयोगिकेवलीगुणस्थान ॥१३॥ न विद्यते योगा प्रोक्ता यस्यासावयोगी। कथमयोगित्वमसावुपगच्छतीतिचेदुच्यते, स भगवान्सयोगीकेवलजघन्येनान्तर्मुहूर्तमुत्कृष्णोदेशोनापूर्वकोटिंविहृत्यकश्चित्कर्मणा समीकरणार्थसमुद्‌घातनकरोति यस्यवेदनीयादिकमायुषसकासादधिकभवति सकरोतिसमुद्‌घात अपस्तुनकरोति यदाहश्रीमदार्यश्यामपादा पन्नवणाया। सव्वेविणभंतेकेवलीसमुग्घायगच्छइ गोयमा नो तिणठेसमठ्ठे जस्साआऊणणतुल्लाइ बन्धणेहिंठिईइयमवोवगाहिकम्माइ से न समुग्घायगच्छई ॥ १ ॥

अगतूणसमुग्घाय, मणनाकेवलीजिणा।
जरमरणविप्पमुक्का, सिद्धिवरगइगया॥ २ ॥

समुद्‌घाताधिकारेवक्ष्याम भवोपग्राहिकर्मक्षपणायलेश्यातीनमत्युक्तमत्यन्तापकंपपरमनिर्जराकारणध्यानमतिपित्सुर्योगनिरोधायमुपक्रमते। तत्रपूर्वबादरकाययोगेन बादरमनोयोग निरुणद्धि तनोवाग्योग तत सूक्ष्मकाययोगेन बादरकाययोगतेनैवसूक्ष्ममनोयोग सूक्ष्मवाग्योग च सूक्ष्मकाययोगतु सूक्ष्मक्रियमनिवृत्तिशुक्लध्यान ध्यायन्स्वात्मनैवनिरुणद्धि अन्यस्यावष्टभनीयस्य योगातरस्यतदासत्वात् तद्ध्यानसामर्थ्याच्चवदनोदरादिविवरपूरणेनसकुचितदेहत्रिभागवर्त्तिप्रदेशोभवति।तदनतरसमुच्छिन्नक्रियमप्रतिपातिशुक्लध्यानध्यायन् मध्यमप्रतिपत्त्याह्रस्वपचाक्षरोद्गिरणमानकालशैलेशीकरण मविशति। तत्रशैलेशोमेरुस्तस्येयस्थिरता साम्यावस्थाशैलेशी

यद्वासर्वसंवर शीलन्सयेश शैलेश तस्येययोगनिरोधात्स्थागैलेशी-तस्या करणपूर्वविरचितशैलेशीसमयसमानगुणश्रेणिकस्य वेदनीयना-मगोत्रार याघातिकर्मनितयस्यासंख्येयगुण्याश्रेण्याआयु शेषस्यतुयथा-स्वरूपस्थितयाश्रेण्यानिर्जरणशैलेशीकरण तच्चासौप्रविष्टोऽयोगी सचा-सौकेवलीच अयोगीकेवली शैलेशीकरणचरमसमयानतरमुच्छि त्रचतु-निरकर्मत्वनत्वादण्मृत्तिकालेपलिप्तातोनिमग्नन्मापनीनमृत्तिकालेप-जलतलमयादोर्ध्वगामी तयाविशालाबुवदूर्ध्वलोकातगच्छति न पर-तोपिम स्यजलक्रूपगत्युपष्टभ प्रमाम्निकायाभावात् । सचोर्ध्वगच्छद् ऋजुश्रेण्यायावत् स्वाकाशप्रदेशेष्विहावगाढस्तावत् एतप्रदेशान्ूर्ध्वम-प्यवगाहमानेविवक्षितसमयाद्यसमयातरमसस्पर्शनगच्छति ॥ तदुक्त मावश्यकचूर्णौ । जत्तीएजीवोअवगाढोभवइ । आएओगाहणाए-उट्टेउज्झगगच्छइ। नवक्नीयचसमयनफुसइत्ति। दु खमावकारनिम-ग्नजिनवचनप्रदीपमनिमा श्रीजिनभद्रगणिपूज्याअप्याहु ॥ पज्झ-त्तमित्तसन्निस्स। जित्तियाइजहन्नयोगिस्स हुतिमणोदवाइ तेयोवयरो-यजम्मित्तो।१। तदसखगुणटाण, समए समए निरुभमाणोसो मणसो-सवनिरोह। कुणइ असखिज्झसमएहिं ॥२॥ पज्झत्तमित्तबिंदीय । जहन्नवइयोगपज्झयाजेउ, तदसखगुणविहीणो, समए समए निरु-भतो ॥ ३ ॥ सव्ववइ योगरोह, सखाइएहिंकुणइसमएहिं । तत्तोयसुहुमपणयस्स, पढमसमयोववन्नस्स ॥ ४ ॥ जोकिर जहन्न जोगो, तदसखिज्झगुणहीणमिक्कि, समएनिरुभमाणो देहतिभा-गचमुचतो ॥ ५ ॥ रुभइसकाययोग, सखाइएहिं चेव समएहिं, तोकायजोगोरोहो, सेलेसीभावणामेइ ॥ ६ ॥ हस्सखराइमझेण, जेणकालेणपचभन्नंति । अच्छइमेलेसिगओ, तित्तीयमेत्तओकाल ॥ ७ ॥ तणरोहारभाओ, ज्झायइसुहुमकिरियानियट्टिसो, विछि-न्नकिरीय मप्पडि–वाईसेलेसिकालमि ॥ ८ ॥ तदसखेज्झगुणाए,

गुणसेढीए रइयपुराकम्म । समएसमएखविउ । कमेणसव्वतिहिंकम्म ॥ ९ ॥ उज्जुसेढीपडिवन्नो, समइपएसतरअफुसमाणो । एगसमएणसिज्झइ। अट्टसागारोवउत्तोसो ॥१०॥ इतिनस्य गुणस्थानमयोगिकेवलिगुणस्थानमिति याख्या ॥ तानि समाप्तानि चतुर्दशगुणस्थानानि । एतेषुगुणस्थानेपुवधादीनिकर्मभगातानिद्वाराणि आगमानुसारत लिख्यते । तत्रप्रथमबधद्वार तस्यातरद्वाराणिमूलनधोत्तरबधगुणस्थानेषुभिन्नभिन्नकर्मप्रकृतिबधलक्षणानि दश एवमुदयस्यापि दश उदीरणाया निर्विशेषत्वात्द्वयएवद्वारेएवसत्ताया दश एवद्वात्रिंशद्वाराणितयागुणस्थानेषुजीवभेदानि १ तयागुणस्थानानि २ तयागुणस्थानेयोगद्वार ३ उपयोगद्वार ४ लेश्याद्वार ५ एवसप्तत्रिंशद्द्वाराणि तत द्विविधहेतुरूपमूलहेतुद्वारमुत्तरहेतुद्वार भिन्नहेतुद्वारकचतुष्क एवपद्वाराणिमिलनेनिचत्वारिंशद्वाराणि ॥ १ ॥

टबार्थ —प्रणम्यशासनाधीश, वीर स्याद्वाददेशक
विचारसारग्रथस्य, टबार्थं समतन्यते ॥ १ ॥

नमस्कार करीने जिन क० वीतराग प्रत्ये गुणठाणा १४ ने विषे इतला द्वार कहीस । मूलबध ८।७।६।१ ए च्यार स्थानक छे। उत्तरबध १२० एकसोवीस तेहनी आठ कर्मनी जूदी जूदी ८ द्वार एनले दशद्वारबधना । इम मूलउदय १ उत्तरउदय २ वली आठ कर्मनो उदय । एव १० इम मूलउदीरणा १ उत्तरउदीरणा २ इम सत्ताना दश द्वार । मूलसत्ता १ उत्तरसत्ता १ आठ कर्मनी सत्ताएव ३४ द्वार पछे गुणठाणे जीवभेद ३५ पछे गुणठाणे गुणठाणा ३६ पछे गुणठाणे योग १५ द्वार ३७ पछे गुणठाणे उपयोग १२ कहेवा ३८ द्वार पछे गुणठाणे लेश्या ६ कहेवा, ३९ पछे गुणठाणे मूलहेतु ४ कहेवा पछे

उत्तरहेतुसमुच्चय पछे च्यार हेतु तेहनामि ६ द्वार एव ८५ द्वार ॥ १ ॥

अप्पबहुभावजीयभेय, समुग्घायाझाणदडगा
वेआजोणीकुलकोडीओ, वधुदयसतधुवअधुवा ॥२॥

टीका—ततोऽल्पबहुत्वगुणस्थानेषु एव चतुश्चत्वारिंशन्नन मूलभावोत्तरभावमनिभिन्नभावसान्निपातिकभावलक्षणानि द्वाराणि अष्टौमिलनेद्विपचाशद्वाराणि तन पचशनत्रिपष्ठिर्जीवभेदद्वाराणिमूलतोउत्तररूपेद्वेद्वारेमिलनेचतु पचाशत्चत्वारिउत्तरमिलने ५८ द्वाराणि तन गुणस्थानेसमुद्घातलक्षणएकोनषष्ठितमद्वार । ततोध्यानद्वार । मूलोत्तरत एव निषष्ठितम, गुणस्थानेषुदडकाभिधायकद्वारचतुःषष्ठितम ततोवेदद्वारपचषष्ठितम । ततोयोनिद्वारपदषष्ठितम तत कुलकोटिरूपसप्तषष्ठितम तत ध्रुवबन्धोऽध्रुवबन्धो ध्रुवोदयोऽध्रुवोदयो ध्रुवसत्ता अध्रुवसत्तालक्षणानिषड्द्वाराणि एवगाथाद्वयेनत्रिसप्ततिद्वाराणि ॥२॥

स्पार्थ —पछे गुणठाणानो अल्पबहुत्व ४६ पछे गुणठाणे मूलभाव १ उत्तरभाव ५ भावभिन्नपणे पछे सानिपातिकभावना भागा एव ८ द्वार ५४ पछे जीवभेद पाचसोत्रेसठ तेहना द्वार ६ एव साठ ६० द्वार पछे समुद्घात ७ एव द्वार ६१ पछे ध्यान ४ मूल तेहना पाया १६ कहीसू एव द्वार ६३ पछे गुणठाणे दडक २४ द्वार ६४ पछे गुणठाणे वेद एव द्वार ६५ पछे गुणठाणे योनि लाख ८४ एव द्वार ६६ पछे गुणठाणे कुलकोडी एक कोडी साडासत्ताणुलाख एव द्वार ६७ पछे ध्रुवबधी १ अध्रुवबधी १ ध्रुवउदयी १ अध्रुवउदयी १ ध्रुवसत्ता १ अध्रुवसत्ता १ एव द्वार ६ द्वार ७३ ॥ २ ॥

सव्वदेसघाईअघाई, पुन्नपरावत्तइयरसियाइ
चउरोविवागभगा, कम्माण चेव दाराइ ॥ ३ ॥

टीका—सर्वेति सर्ववाति १ देशघाति २ अघाति लक्षणानि द्वाराणि त्रीणितत पुण्यप्रकृति १ पापप्रकृति २ परावर्त्तमान ३ इतर शब्देन अपरावर्त्तमानलक्षणानि सप्तद्वाराणि मिलनेअशीतिद्वाराणि तत क्षेत्रादिविपाकचतुष्टयरूपाणि चत्वारिद्वाराणितत कर्माष्टकस्यगुणस्थानेभगप्रतिपादकानि अष्टौद्वाराणि एवंमिलनेद्विनवतिद्वाराणि ॥ ३ ॥

टबार्थ—पछे सर्ववाति एद्वार ७४ पछे देशघाति एद्वार ७५ पछे अघाति एद्वार ७६ पछे पुण्यप्रकृति ७७ इतरशब्दे पापप्रकृति ७८ पछे परावर्त ७९ पछे अपरावर्त्त एद्वार ८० पछे क्षेत्रविपाक ८१ भवविपाक ८२ जीवविपाक ८३ पुद्गलविपाक एद्वार ८४ पछे गुणठाणे कर्मनाभागा एद्वार ८ एद्वार ९० चेवशब्दे गुणठाणे आस्रवभेद ९१ सवरभेद ९२ निर्जरभेद ९३ बधनरचना भेद ९४ एव चोराणद्वार गुणठाणे कहीसू ॥ ३ ॥

अपमत्तत्तासत्तठ, मीस अपुव्ववायरे सत्त,
वधइछस्सुहुमोइग, मुवरिमाअवधगअयोगी ॥ ४ ॥

टीका—चवेत्ति चकारेणगुणस्थानेआस्रवभेदा सवरभेदा निर्जराभेदा बधभेदाभिधानलक्षणानिचत्वारिद्वाराणि। एवसर्वमिलनेषण्णवतिद्वाराणि गुणस्थानवक्तव्यानि। तत्प्रतिपादकगुणस्थानशतकाख्यप्रथमाधिकारमुच्यते । द्वारशब्दार्थ प्रतिद्वारमेववक्तव्य तततएवज्ञेया तत्रप्रथमव प्रतिपादकद्वारमुच्यते। तत्रात्मनअभिमुख्येन सन् मुखत्वेनमिथ्यात्वादिभिर्हेतुभिर्नवस्य नूतनस्य कर्मणोज्ञानावा-

रणादेर्ग्रहणमुपादानलोलीभावकरण न्यरत्युन्यते । तत्रमूलतो नय-स्थानानिचत्वारि तानि गुणस्थानकेषु निवेद्यते। तत्रमूलत कर्मण-अष्टका तत्रायुर्बंधकोजीवअष्टविधवंधक आयुषस्त्वेकस्मिन्भवे एक-वारमेवान्तर्मुहूर्त्तप्रमाणकालबंधनात्, शेषकालतुसमविधबंधकएवजीव तथासूक्ष्म सपरायगुणस्थानकेष्यानविशुद्ध्यामोहनीयायपीनबध्नाति, तेनषड्विधबंधकएवसच अकषायीजीवउपशानादिगुणस्थानके वेदनीयस्यएकस्यैवबंधक । अतोबंधस्थानानिमूलतश्चत्वारि । तत्रच मिथ्यादृष्टिप्रमत्तयोऽप्रमत्तान्ता । सप्ताष्टौवाकर्माणिबध्नाति आयुर्बंध-कालेऽष्टौशेषकालतुसप्त । मीसअपुव्वबायरेइति, मिश्रापूर्वकरणा-निवृत्तिबादरा सप्तबन्धनिवेषामायुर्बंधाभावात्, तत्रमिश्रस्यतथास्वा-भावात् इतरयो पुनरतिविशुद्धिवादायुर्बंधस्यच घोलनापरिणाम निबंधनत्वात् बंधको बध्नाति। उसुहुमति सूक्ष्मसपरायोमोहनीयायुर्व-र्जानिषट्कर्माणिबध्नाति । मोहनीयबंधस्यबादरकषायोदयनिमित्त-त्वात् । तत्रचतदभावात् आयुर्बंधाभावस्त्वतिविशुद्धित्वादवसेय । एगमुवरिमत्ति । एकसातवेदनीयकर्मोपरितना सूक्ष्मसपरायादुपरि-वर्त्तिनउपशातमोहक्षीणमोहसयोगीकेवलिनोबध्नाति। न शेषकर्मा-णितद्बंधहेतुत्वाभावात् । अबंधग सर्वकर्मप्रपंचबंधरहितोऽयोगी-चरमगुणस्थानवर्त्तीसर्वबंधहेतुत्वाभावादिति ॥ ४ ॥

टबार्थ —कर्म आठ छे ते एक समे एक जीव आठ कर्म बांधे अथवा आउखो न बांधे तो सात कर्म बांधे ते वली आउखो मोहनीय बे न बांधे तो ६ बंधाइ पछे एकसाता बांधे इम च्यार बंधना थानक छे ते मिथ्यात्व १ सास्वादन २ अविरतिसमकित १ देशविरति १ प्रमत्त १ अप्रमत्त १ ए ७ गुणठाणे सीम सात बांधे अने आऊखो बांधे तेवारे आठ बांधे तथा त्रीजे मिश्रगु-

णठाणे तथा आटमु अपूर्वकरणगुणठाणे तथा नवमु अनिवृत्तिगुणठाणे आऊखो न बांधे। तिणे सातकर्म बांधे तथा दशमा सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे आऊखो १ मोहनीय विना शेष छ कर्म बांधे बे न बांधे उपरलो इग्यारमो बारमो तेरमो ए तिन गुणठाणे एक वेदनी कर्म बांधे तथा अयोगी गुणठाणे कोई कर्म बांधे नहीं अबंधक छे सही ॥ ४ ॥

वीसहियसयबंधे, ओहेमिच्छेसत्तरससयं तु ।
सासाणेइगहियसय, मीसे चउसत्तरीबंधो ॥ ५ ॥

टीका– उक्तागुणस्थानेषमूलबन्धस्थानयोजना । साम्प्रतगुणस्थानेषु उत्तरप्रकृतिबन्धनिरूपणद्वारमुच्यते । वीसहियत्ति ५ बंधेओघेन सामान्येन विंशत्यधिकशतबंध्यते, तत्रज्ञानावरणीयपंचकं दर्शनावरणीयनवकं । वेदनीयद्विविधं । मोहनीयषड्विंशतिभेदं । मिश्रमोहनीसम्यक्त्वमोहनीयस्यबंधाभावात् । बंधे तुमिथ्यात्वमोहनीयस्यैवबंधात् । मिथ्यात्वदलिकानामेवविशुद्धाशोधितानामिश्रमोहसम्यक्त्वमोहरूपपुञ्जभवनात् । तथाचोदयात् तेनोदयेणवभवनात् न बंधे, तेन । षड्विंशतिरेवबध्यते। आयुश्चतुर्भेदनामकर्मण अधिकशतप्रकृतिप्रमाणस्यबंधनपंचदशकसंघातनपंचकस्यबंधाभावात् । शरीरनामकर्मबंधेणवग्रहणात् । वर्णादिविंशते वर्णगंधरसस्पर्शस्य एकैकग्रहणेचत्वार्येवबध्यंते । तेनषोडशकाग्रहणेशेषानाम्न सप्तषष्टिरेवबध्यते । एकजीवस्यैकसमयेएकमेवेदवास्य । कालांतरेजीवांतरवर्णादिविंशतिरेव तत्संभवात् ओघेचवर्णादीनाचतुर्णांग्रहणत्व यामोहार्थमिनिगोनस्पष्टौ। अन्तरायस्यपंचएवसर्वमिलनेओघतोविंशत्यधिकमेकशत च बंधेभवति। तदेवतीर्थंकराहारकद्विकवर्जं मिच्छे मिथ्यात्वे, सत्तरससयत्ति, सप्तदशाधिकशत सप्तदशशतबंधे-

भवतीति। अयमत्राभिप्राय तीर्थकरनामतावत्सम्यक्त्वगुणानुगयोग-कषायप्रवृत्तिनिमित्तमेवबध्यते । आहारकशरीरांगोपांगलक्षणद्विक-अप्रमत्तयतिसवधिसयमानुयायियोगकषायप्रवृत्त्या बध्यते ॥यदुक्तं॥ शिवशर्मसूरिपाद शतके। समत्तगुणनिमित्त तित्थयरसनमेणआहार-मितिमिथ्यादृष्टिगुणस्थानेउभयाभावात् । एतत्प्रकृतिद्वयवर्जनकृ-तशेषपुन सप्तदशशतमिथ्यात्वादिभिर्हेतुभिर्बध्यते। तत्रहेतुचतुष्ट-यसद्भावात् मिथ्यात्वेनद्र य नन्वेना सप्तदशशतसख्यासर्वाअपिमि-थ्यादृष्टिप्रायोग्या किंतुमिथ्यात्वप्रायोग्या षोडशनाश्चमिथ्यात्ववि-गमेगच्छतिताश्चेमा १ नरकगति, २ नरकानुपूर्वी, ३ इति नरक-त्रिक १ एकेंद्रिय, २ द्वींद्रिय, त्रींद्रिय चतुरिन्द्रियजातिचतुष्कल-क्षणजातिचतुष्क। १ स्थावर, २ सूक्ष्म, ३ अपर्याप्त, ४ साधारण, लक्षणस्थावरचतुष्क । आतपहुंडछेदपृष्ठ नपुसकवेद मिथ्यात्वमिति-एता षोडशप्रकृतय मिथ्यादृष्टिगुणस्थाने एवनरमायानि मिथ्याव-प्रत्ययत्वादेतासानोत्तरत्र। सास्वादनादिषुमिथ्यात्वहेत्वभावात्। प्रा-योनरकाद्य यताशुभत्वाद्यमिथ्यादृष्टिरेवबध्नाति । तेनसप्तदशशतात् पूर्वोक्तषोडशापगमेशेषमेकोत्तरप्रकृतिशतमेतसास्वादनेनरमायानि। सासाणे,सास्वादने,एगहियसय एकाधिकशतनरप्रकृतीनाअस्ति,मी-लेत्ति। मिश्राभिधानेगुणस्थानके चतुर्विंकासप्रतिनरोबधत्वेनअस्ति १ तिर्यग्गति, २ तिर्यगानुपूर्वी, ३ तिर्यगायु, लक्षणतिर्यक्त्रिक १ निद्रानिद्रा, २ प्रचलाप्रचला, ३ स्त्यानर्द्धिलक्षणस्त्यानर्द्धि-त्रिक। १ दुर्भग, २ दु स्वर, अनादेयलक्षणदौभाग्यत्रिक ३ अनतानु-बंधिक्रोध १ मान, २ माया, ३ लोभ, ४ लक्षणअनतानुबंधिच-तुष्टय। १ न्यग्रोध, २ सादि, ३ वामन, ४ कुब्ज, ५ लक्षण-मध्यसस्थानचतुष्क १ ऋषभनाराच, २ नाराच, ३ अर्धनाराच, ४ कीलिका, लक्षणमध्यमसहननचतुष्क, नीचैर्गोत्र। १ उद्योत,२

अप्रशस्तविहायोगति ३ स्त्रीवेद, ४ इत्येता पचविंशति सास्वादनाताबध्यते नोत्तरत्र, यतोऽनतानुबंधिमित्ययोर्ध्वसोनत्र । तथोत्तरत्रनास्ति तेननंतासाबध सम्मामिच्छदिठी आउअबंधपिनकरेइत्ति वचनात् शेषनरायुदेवायुर्द्वयमपिनबध्नाति अत एकोत्तरशनात् सप्तविंशनिरपगमेमिश्रगुणस्थानकेचतु सप्ततिर्बध्नाति ॥५॥

टबार्थ —हवे उत्तरप्रकृतिबंध कहे छे ओघेएकसोवीसनो बंध छे, ते कहे छे ज्ञानावरणी ५, दर्शनावरणी ९, वेदनी२, मोहनी २६, समकित मोहनी तथा मिश्रमोहनी ए बे बंधमे नही तिणे २६ छे तथा आउखो ४ नामकर्मनी १०३ प्रकृति छे ते मध्ये १५ बंधन ५ सघातन ए शरीर मध्ये गण्या छे अने वर्णादिक २० छे तेमायी वर्ण १ गंध १ रस १ फरस १ ए च्यार बांधे बीजा १६ बाधे नहीं, एटले नामकर्मनी सडसठ बाधे गोत्रनी २ अनराय ५ एव एकसोवीस बाधे एकसोवीसमायी १ आहारक २ जिननाम काढीये तेवारे मिथ्यात्वगुणठाणे एकसोसत्तर बाधे तेमायी नरक ३ जाति ३ थावर ४ हुडक १ छेवठो १ आतप १ नपुसकवेद १ मिथ्यात्व १ ए सोल काढीइ तेवारे सास्वादन गुणठाणे एकसोएक बधाय ए सोल प्रकृति मिथ्यात्व छताज बाधे मिथ्यात्व गयेज जाय तेवारे एकसोएक बधाय तथा तेमायी तिर्यंच ३ थीणद्धी ३ दुर्भग ३ अनतानुबंधी ४ मध्यसंघयण ४ मध्यसस्थान ४ अशुभविहायोगति १ नीचैर्गोत्र १ उद्योत १ स्त्रीवेद १ देवायु १ मनुष्यायु १ ए २७ काढीये तेवारे मिश्र गुणठाणे चमोत्तरनो बंध छे ॥ ५ ॥

सम्मे सगसयरिदेसे, सगट्ठितेवट्ठिपमत्ति अपमत्ते। नवअडवन्नापुवे, अडछप्पन्नाछवीसाय ॥ ६ ॥

टीका—सम्मेत्ति ६ सम्यक्त्वामिवानेतुर्येगुणस्थानेआयुर्वंगात् मनुष्यायु १ देवायु २ एतद्द्विकसम्यक्त्वानुगप्रवृत्याच तीर्थंकरनाम बध्नाति, इत्यनेनपूर्वोक्तचतु सप्ततितीर्थंकरनामआयुर्द्वयमेलनात् सम्यग्दृष्टिगुणस्थानेसप्तसप्ततिप्रकृतीना बन्धोभवति तत्रतिर्यग्मनुष्या सम्यग्दृष्टय देवायुरेवबध्नन्ति। नारकादेवाश्चसम्यग्दृष्टय मनुष्यायुरेवबध्नन्ति। देसेत्ति, देशविरतिलक्षणेपचमेगुणस्थानके वज्रर्षभनाराचसहनन १ नरगति १ नरानुपूर्वी २ नरायु ३ लक्षणनरत्रिक द्वितीयेकषाये अप्रत्याख्यानक्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ चतुष्क ४ औदारिकशरीरागोपागलक्षणऔदारिकद्विक एतासादशप्रकृतीनामविरतिसम्यग्दृष्टौअनोभवति। अनबध्यतेनोत्तरनेत्यर्थ अयमत्राभिप्राय द्वितीयकषायास्तावत्तदुदयाभावान्नबध्नाति। कषायाद्यननानुबधिवजावेद्यमानाएवबध्यते। जेवेएइत्तेनबइ इतिवचनात्। अनतानुबधिनस्तुचतुर्विंशतिसत्कर्मानतवियोजकोमिथ्यात्वगनोनद्यावलिकामात्रकालअनुदितान्नबध्नाति॥यदाह॥ सप्ततिटीकाया श्रीमलयगिरिपादा इहसम्यग्दृष्टिनासताकेनचित्प्रथमतोऽनतानुबधिनोविसयोजिता एतावतैवसविश्रातो न मिथ्यात्वादिक्षपायसउद्युक्तवान् तथाविधसामग्र्यभावात्। तत कालातरेणमिथ्यात्वगत सन्मिथ्यात्वप्रत्ययतोभूयोप्यनतानुबधिनोबध्नाति। ततोबधावलिकाया यावत्नाद्याप्यतिक्रामति तावत्तेषामुदयविनाबध्नाति। नरत्रिकमनुष्यवेद्य प्रथमसहनन ओदारिकद्विक मनुष्यतिर्यग्वेद्यदेशविरतात्मादिषुदेवगतिनेद्यमेवबध्नाति ना यत्तेनासादशप्रकृतीनामविरतसम्यग्दृष्टिगुणस्थाने अन। ततएतत्प्रकृतिदशकपूर्वोक्तसप्तसप्ततेरपनीयते। ततोदेशविरतेअनोदेशेसप्तषष्टिर्बध्यते। ततस्तृतीयकषायाणाप्रत्याख्यानावरणक्रोध १ मान २ माया ३ ४ लोभाना देशविरतेअनस्त्वदुत्तरेतेषामुदयाभावात्। अनुदिताना-

चाबध्नात् एतच्चप्रकृतिचतुष्कपूर्वोक्तसप्तषष्ठेरपनीयते । तत वे- बंठिपमत्ते, इतिप्रमत्तेप्रमत्तसाधुलक्षणेषष्ठेगुणस्थानकेनिपष्टिर्बध्यते । इनित शोक अरति अस्थिरअशुभअयश असातमित्येता पट्प्रकृतय प्रमत्तान्तेउच्छिद्यते तत कश्चिज्जीव पूर्वंबद्धायु अथायुषोऽनवरोदेवा- युरपिनबध्नाति । तेनसप्तापगमे आहारकद्विकस्यअन्तव्रगोभवति । अप्रमत्तपरिणामेनैवाहारकस्यबन्धात् तेन य प्रमत्तेदेवायुर्नप्रारभते सअप्रमत्तेगतोपिदेवायुर्बध्नाति आयुष्कस्यतुघोलनापरिणामेनैवबन्ध- नात्।सबद्धमानायु अप्रमत्तेप्यागच्छेत् सदेवायुर्बन्धनप्रकृतिपदकमेवो- च्छेदयति।तस्यशेषा सप्तपचाशत्भवति। योदेवायुर्नबध्नातिससप्तक- मुच्छेदयति । तस्यषट्कपञ्चाशत्भवति । अस्याहारकद्विकबधे- भवति अयमत्राशय अप्रमत्तयतिमत्रबंधिनासयमविशेषेणाहारकद्विक- बध्यते । तयेदृलभ्यते । इतिपूर्वापनीतमप्यत्रक्षिप्यते । तत्र सप्तपचाशत् पुनराहारकद्विक क्षेपेएकोनषष्ठि पट्पचाशत् आहा- रकक्षेपे अष्टपचाशद्भवति । सप्तमेऽप्रमत्ताख्येगुणस्थानकेइति । अपुव्वे, अपूर्वकरणाभिधानेऽष्टमेगुणस्थानकेभागसप्तक तत्रप्रथमभा- गेअष्टपचाशत् बध्नाति । तत निद्राद्विकस्यनिद्राप्रचलालक्षणस्या- तोभवत्यत्रनोबध्यते नोत्तरत्रापिउत्तरत्रबन्धाध्यवसायस्थानाभावात् । उत्तरेष्वप्ययमेवहेतुरनुसरणीय । तत्र परषट्पचाशत्भवति । पच- सुभागेष्वित्यर्थ । तत्रपचमभागाना समत्वेनानेकभागोविवक्षित । तत त्रिंशत्प्रकृतीनामतोभवतिइत्याह । देवद्विकदेवगतिदेवानुपूर्वी- लक्षण । पंचेंद्रियजाति ३ प्रशस्तविहायोगति ४ त्रसनवकत्रस १ बादर २ पर्याप्त ३ प्रत्येक ४ स्थिर ५ शुभ ६ सुभग ७ सुस्वर ८ आदेयलक्षण ९ वैक्रियाहारकतेजसकार्मणलक्षणशरीरचतुष्टय ४ वैक्रियाहारकांगोपागलक्षणउपागद्वयसमचतुरस्रसंस्थान १ निर्माण १ जिननाम २ अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ श्वासोच्छ्वास १

लक्षण वर्ण १ गंध १ रस १ स्पर्श १ लक्षणमित्येनासात्रिंशत्प्रकृतीनायपगमेअपूर्वकरणस्यचरमेभागेशेषा षड्विंशतिप्रकृतयोबध्येलभ्यते ॥ ६ ॥

टबार्थ —तथा देवायु १ नरायु १ जिननाम १ ए तिन मेळिइ तेवारे सत्योतेर बांधे । तेमायी मनुष्य ३ बीजी चोकडी कषायनी ४ वज्ररुषभनाराचसंघेण १ औदारिक २ काढीए तेवारे देशविरति गुणठाणे सडसठ बांधे, तेमायी त्रीजी चोकडी कषायनी काढीए तेवारे प्रमत्तगुणठाणे तेसठ बांधे तेमायी सोगमोहनी १ अविरति १ असाता १ अथिर १ अशुभ १ अजस १ ए छ काढीइ अने आहारक मेळीइ तेवार अप्रमत्त गुणठाणे ए गुणठाणे एगुणसठि बांधे अने देवताना आऊखानो बंध न बांधे इहा आहारक २ मेळीये त्यारे अठावन बांधे ॥ तथा अपूर्वकरणगुणठाणाना भाग सात छे ॥ ते पहेले भागे अठावन बांधे पछे निद्रा १ प्रचला १ एव बे काढीये तेवारे बीजे तीजे चोथे पाचमे छठे भागे छप्पन छप्पन बांधे ॥ तेमायी देवद्दुग १ पचेंद्रीजात १ शुभविहायोगति १ समचउरस १ त्रसनाम १ वैक्रिय १ आहारक तेजस १ कार्मण १ वक्रिय उपांग १ आहारक उपांग १ वर्णादि ४ अगुरुलघु १ उपघात १ उसास १ पराघात १ जिननाम निर्माण १ ए तीस बांधे नही तेवार आठमा गुणठाणाने सातमे भागे वीस बांधे ॥ ६ ॥

अनियट्टीबावीस, इगेगहीण च सतरसुहमम्मि ।
तिसुसायमयोगम्मि, बधाभावो अणतो य ॥ ७ ॥

टीका—अपूर्वकरणस्यचरमसमयेहास्य १ रति २ भय १ जुगुप्सा ४ एतत्प्रकृतिचतुष्टयपूर्वोक्तषड्विंशतेरपनीयते । शेषा

द्वाविंशति सचानिवृत्तिबादरप्रथमभागेभवति। अनियट्टीति । अनिवृत्तिकरणाख्यनवमगुणस्थानकस्य प्रथमभागे पूर्वोक्तद्वाविंशतिबंध एकैकहीनोबान्य तत्रप्रथमभागांतेपुरुषवेदस्यछेदः ततोद्वितीयभागे एकविंशतेर्बंध द्वितीयभागांतेसंज्वलनक्रोधस्यछेद ततस्तृतीयभागे-विंशतेर्बंध चतुर्थभागांतेसंज्वलनमायाया छेद तत पंचमभागे-ऽष्टादशानाबंध तदंतेचअनिवृत्तिबादरस्याप्यत ॥ अनिवृत्तिबादर-चरमसमयेसंज्वलनलोभस्याप्यत । तत दशमेसूक्ष्मसंपरायकेगुण-स्थानके सप्तदशप्रकृतीनाबंधोभवति। सूक्ष्मसंपरायस्यांतेज्ञानावरण-पंचकं । दर्शनावरणचतुष्कं । यशोनामउच्चैर्गोत्रण्ता षोडशप्रकृ-तय छिद्यते । तत । तिसु । त्रिषु, उपशांतमोह १ क्षीणमोह २ सयोगिकेवलीलक्षणेषुत्रिषुगुणस्थानेषुएकमात्रवेदनीयप्रकृतिंबध्नाति। प्रकृतिप्रदेशरूपाण्यकषायहेतत्वभावात् । नस्थितिरसयोर्बंध । इति-सातस्यकेवलयोगप्रत्ययस्यद्विसामायिकस्यतृतीयेऽनवस्थानाभावात् । इतिभाव । आह्चभाष्यसुधाभोनिधि । उवसतखीणमोहा । के-वलिणोएगविहबंधवते। पुणदुसमठियस्स। बंधगा न उणसंपरायस्सत्ति, अजोगम्मि, अयोगि केवलिगुणस्थानेयोगाभावात् । ततोऽबंधका-अयोगिकेवलिन ॥ उक्तच ॥ सेलेसीपडिवन्ना । अबंधगा हुतिना-यव्वा। अयोगिगुणस्थानेबंधस्याभाव " अणतोयत्ति। अनंतस्यबंधा-भावस्यनअनोनक्षयइतिबंधाभाव । अंतरहितइतिउत्तरप्रकृतिबंध-उक्तोगुणस्थानेषु ॥ ७ ॥

टबार्थ —वेमायी हास्य १ रति १ भय १ दुगछा १ ए च्यार काढीइ तेवारे अनिवृत्तिबादर नवमु गुणठाणु तेहने पेहले भागे बावीस बाधे पछे पुरुषवेद काढीए तेवारे बीजे भागे २१ बांधे पछे सज्वलनोक्रोध काढीए तेवारे त्रीजे भागे २० बांधे.

पठे सज्वलनोमान काटीइ तेवारे चोथे भागे १९ बाधे पठे सज्वलनीमाया काटीइ तेवारे पाचमे भागे १८ बाधे तेमायी सज्वलनोलोभ काढीइ तेवार दशमा सूक्ष्मसपरायगुणठाणे सत्तरम-कृतिनोबध छे तेमायी ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ उच्चैर्गोत्र १ जसनामकर्म १ ए सोल काढीए तेवारे इग्यारमे उप-शातमोह गुणठाणे एकमातावेदनीज बाधे बारमे खीणमोहे एक-सातावेदनी बाधे तेरमे सयोगीकेवलीगुणठाणे एकसातावेदनी बाधे ए तीन गुणठाणे साता एकज बाधे चउदमे अयोगी केवलीगुणठाणे बधनो अभाव छे ते अनत छे ए अवधपणानो अत छेहडो नथी, ए जीव सदा अबध होवे हेतुने अभावे बधनो अभाव छे ॥७॥

नाणतरायदसग, उच्चागोयचसायजसनाम । दसणचउसुहुम जा, बधइतिव्वायमदाय ॥ ८ ॥

टीका—अथ ज्ञानावरणादीना कर्मणा भिन्नभिन्नगुणस्थानेषु बध सद्भावदर्शयन्नाह । नाणनरायेत्ति । ८ ज्ञानावरणीयपचक अतराय-पचकमिलनेदशक । उच्चैगोत्र च पुन यशोनाम । दसणचउत्ति । दर्शनावरणीयचतुष्क। एता प्रकृतय । सुहुमजात्ति। सूक्ष्मसपराय-गुणस्थानकयावद्बध्नाति । तत्किंमर्वत्रतुल्यएवबध इतिशकापनो-दार्थमाह॥ तिव्वायमदायत्ति तद्बधकाध्यवसायाना तीव्रत्वे एतासाती-व्रएवबध । पुनस्तद्बधकाध्यवसायानामदत्वे मदएवबध । तत्रभावना प्रथमेमिथ्यात्वेगुणस्थानअशुभाध्यवसायानातीव्रत्वात्ज्ञानावरणीया-द्यशुभप्रकृतीनातीव्रोबध । सम्यग्दर्शनादिगुणेषुमदमदतरमदतमा • शुभाध्यवसायान् मदमदतरमदतमएवबध । सातादीनातुशुभाना-प्रकृतीनामिथ्यात्वेशुभाध्यवसायस्यमदत्वान्मदमदरसबध । ततस्ती-

व्रतीव्रतरतीव्रतमदुभाव्यरसायान् शुभप्रकृतीनातीव्रतीव्रतरतीव्रतम एवबन्धोभवति। एवसर्वत्रसर्वप्रकृतीनाम्यन्यरसाध्यवसायानातीव्रत्वे तीत्रोबन्ध मदेमदोभवतितिद्रष्टव्यम । प्रकृतित्रयाभावश्चतदुपरकाध्यवसायाभावतो ज्ञेय ॥ ८ ॥

टवार्थ — हवे कर्म सर्वनो बन्ध गुणठाणे कहे छे ॥ ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ एमिल्या दश १० उच्च गोत्र १ सातावेदनी १ इहा सकषायनेन्नी बार मुहूर्त स्थितिवाली बांधी छे । अकषायी सातावेन्नीनो तेरमा सधी बन्ध छे । तथा यशनाम १ दर्शनावरणी ४ ए प्रकृति सूक्ष्मसंपराय गुणठाणा सुधी बन्धाय छे ए १७ मध्ये १४ अशुभ छे । ते प्रथमगुणठाणे तीव्ररसे बाधे छे पछे दशमा सीम मन्दतर मन्दतम बाधे छे अने तीन शुभ छे । तेह पछे गुणठाणे मदरसे बाधे । पछे तीव्र तीव्र रसे बाधे इम सर्वत्र तिव्रताये मदताये बध कहेवो ॥ ८ ॥

थीणतिग आइदुगे, निद्दुग जा अपुव्वपढमसे ।
नीय सासाण जा, असायवधो पमत्त जा ॥ ९ ॥

टीका—थीणत्ति । दर्शनावरणीयस्य नवप्रकृतयस्तत्रस्त्यानर्द्धित्रिक निद्रा निद्रा १ प्रचला प्रचला १ स्त्यानर्द्धिलक्षण १ आईदुगेत्ति आदिप्रथमतो द्विके मिथ्यात्वसास्वादनप्रथमगुणस्थानद्वयेबन्ध नोत्तरत्र अत्यन्तसक्लेशपरिणामप्रत्ययात् अत्यन्तसक्लेशश्चानतानुबध्युदयतोभवति तदुदयश्चगुणस्थानद्वये एवभवति तेनसास्वादनयावदेवस्त्यानर्द्धित्रिकबन्ध निद्दुगति–निद्राद्विकनिद्राप्रचलालक्षण तस्यबन्ध अपूर्वकरणप्रथमाशयावत् नोत्तरत्र घोलनापरिणामस्यतावदेव सद्भावात् । दर्शनावरणचतुष्टयस्य बन्ध सूक्ष्म

सपरायपावत् पूर्वमुक्तएवक्षयायनमित्तकत्वात् । गोत्रकर्मणिनीचै-र्गोत्रसास्वादनयावद्देवबन्नाति नोत्तरत्र, अनन्तानुबन्ध्युदयाशुद्रसक्लेश-जन्यत्वात् । उच्चैर्गोत्रतुसूक्ष्मसपरायपावत् पूर्वमुक्तमेववेदनीयद्वये असातवेदनीयमिथ्यात्वत प्रमत्तयावद्बध्नाति । प्रमादप्रत्ययत्वात् तत परप्रमादाभावात् सातवेदनीयतुकषाय सूक्ष्मसपरायपावद्बन्नाति। अकषायवेदनीयतु सयोगिकेवलिचरमसमयातबन्नाति योगास्त्रवत्वात् इति ॥ ९ ॥

टबार्थ —दर्शनावरणी कर्मनी नव प्रकृति छे ते मध्ये थीणद्धी तीन (निक) पहिल बीजे ए आदिगुण कहेता बे गुणठाणे बाधे। निद्रा १ प्रचला १ ए वे प्रकृति पहिलाथी आठमा पर्यत। आठमाना पहिला भाग सूधी बाधे । शेष दर्शनावरणी च्यार दशमाना अत सूधी बाधे । ते पहिली गाथा मध्ये कह्यो छे गोत्रकर्मनी प्रकृति २ ते मध्ये नीचगोत्रसास्वादन जा कहेता मिथ्यात्वसास्वादन ए वे गुणठाणे बाधे पछी न बाधे उचगोत्र दशमा सूधी बाधे, तथा वेदनीनी २ प्रकृति ते मध्ये असातावेदनी पहिलाथी भाडी छट्ठा प्रमत्तगुणठाणा सूधी बाधे पछे न बाधे, सातावेदनीकसकषायदशमा सूधी बाधे, अकषायीसाता तेरमा सूधी बाधे ॥ ९ ॥

मिच्छेआउचउग, सासाणे निरयहीणतिगबधो ।
मीसे न आऊबधो, समत्ते देवनरबधो ॥ १० ॥

टीका—आयु कर्मणिचतुष्प्रकारे तत्र मिथ्यात्वआयुषश्चतु-ष्कबन्नाति एव, जीवएकस्मिन्समयेएकमेवायुर्बन्नाति। तथापि बहु-जीवापेक्षयातुआयुश्चतुष्टयबन्धसद्भावएवनरदेवायुष शुभत्वेपिमिथ्या-त्वेद्रव्यतियाप्रशस्तव्ययानशाद्वद्य मिथ्यात्वानन्तानुबधिविपाकान् ब-

व्यक्रियाअत्यतसमग्राएवकरोति। तस्यग्रहीतेअभिग्रहीतत्वात् सास्वादने नरकायु नैवबध्नाति। मिथ्यात्वप्रत्ययत्वात्। तदभावेचनद्बधाभावात्। मिश्रेमिश्राख्येगुणस्थानेआयुष बधएवनभवति, मिश्रेमरणाभावात्। सम्यक्त्वेदेवायुषोमनुष्यायुषश्चबध प्रशस्तपरिणतेर्मुख्यत्वात् उत्सूत्र स्यतिर्यगादिगतिहेतुत्वात् सम्यक्त्वेप्राप्तेच आस्रवानामाबत्वान्नाशु-भायुर्नबध्यइति ॥ उक्तच ॥ सम्मदिट्टीजीवो जइविहुपावसमायरेकिंचि, अप्पोसिहोइबधो जेणनर्निद्धसं कुणई ॥ १० ॥

टबार्थ —मिथ्यात्वगुणठाणे च्यार आऊखानो बध छे जेवा परिणाम होय तेवा बधाये, अने सास्वादनगुणठाणाने विषे एक नरकनो आऊखो न बधाइ, अने वीजा तिन आऊखा ते किहा तिर्यचनो मनुष्यनो अने देवनानो ए बधाये मिश्रगुणठाणे कोइ आऊखो न बाधे मिश्रमध्येमरवो नथी मध्यस्थपरिणाममाटे अथवा मिश्रनो स्थितिकाल अतर्मुहूर्त्तनो छे तेहथी आऊखानो बधकालनोमुहूर्त मोटो छे ते माटे हवे समकितगुणठाणे देवतानो तथा मनुष्यनो आऊखो बाधे वीजा २ आयु न बाधे ते मध्ये देवना तथा नारकी समकिती मनुष्यायु बाधे। तिर्यच तथा मनुष्य समकिती देवतानो आऊखो बाधे ॥ १० ॥

देसाइतिग देवाउ, बधई सेसया न बधति।
मोहे छवीस मिच्छे, नपुमिच्छविहीणसासाणे ॥११॥

टीका—देशविरतित समारम्यअप्रमत्तयावत् देवायुषएवबध प्रशस्तपरिणामस्यप्राधान्यात् । अपूर्वकरणादिषु शुद्धपरिणामप्राब-ल्येननायुष बध्यइति तेनशेषका अपूर्वकरणनोऽयोगिकेवलिपर्यता आयुकर्मबधका न भवन्ति । मोहनीयकर्मणिप्रकृत्यष्टाविंशतिलक्षणे मिश्रमोहनीय सम्यक्त्वमोहनीय बधेनास्ति । यत मिथ्यात्वदलि-

काएवत्रिपुंजीकरणपरिणामेन विभक्ता शुद्धपुंजमिश्रपुंजरूपा सम्यक्त्वमोहमिश्रमोहलक्षणप्रकृतिद्वयविपाककालेभवति तेनषड्विंशतेरेवबन्ध तत्रमिथ्यात्वेपङ्क्तिरधिक विंश षड्विंशएवबन्ध नपुंसकवेदमिथ्यात्वमोहनीयविनासास्वादनेमोहनीयस्यचतुर्विंशतिप्रकृतयोबध्यते। कर्मस्तवे सोलतोइगहियगयसासणि । इतिवचनात् ॥ ११ ॥

टबार्थ —देशविरतिआदि देई तिन गुणठाणे एक देवतानो आऊखो बांधे शेषअपूर्वकरण गुणठाणेथी माटी ऊपरला सर्व गुणठाणे आऊखो कोइ बांधे नहीं, स्वरूपालखनी माटे, परालवने आयुबंध छे मोहनीकर्मनी २८ प्रकृति छे ते मध्ये समकितमोहनी मिश्रमोहनी न बांधे एटले छवीसनोबंध मिथ्यात्व गुणठाणे छे सास्वादनगुणठाणे नपुंसकवेद १ तथा मिथ्यात्वमोहनी न बांधे एटले सास्वादनगुणठाणे मोहिनीना चोवीस प्रकृति बांधे छे ॥ ११ ॥

अणचउत्थीनेय विणा, मीसदुगे देसवीयकसायविणा,
अतीयकसायपमत्ते, अपमत्ते दुगे दुसोगविणा ॥१२॥

टीका—अणत्ति मिसदुगे मिश्राविरतसम्यग्दर्शनलक्षणेगुणस्थानद्वयेअनन्तानुबंधिचतुष्कस्त्रीवेद विना अभावेनमोहनीयकर्मण एकोनविंशतेरेवबन्ध तत्रकस्यजीवस्यैकसमये सप्तदशानामेवबन्ध मूलत सप्त न बध्यते देशविरतौद्वितीयकषायस्य अप्रत्याख्यानवरणस्यक्रोधमानमायालोभलक्षणस्य देशविरतावबंधो न भवति। बयतनरनियवियकसाया उदलदुगनोदेस इतिवचनात्, मूलत एकादश न बध्यते। शेषा कषायाष्टकहास्यषट्कपुरुषवेदरूपा पचदश बध्यते। एकजीवस्यनयोदश बध्यते, प्रमत्ते अतीयकसायत्ति। तृतीयकषायस्यप्रत्याख्यानावरणक्रोधमानमायालोभरूपस्याभाव शे-

षाण्कादशबध्यते पचदश न बध्यते अपमत्तदुगत्ति–अप्रमत्तेअपूर्वकरणे दुसोगत्ति–अरतिशोकद्विकतेनविनानवप्रकृतीनाबधोभवति। शेषानवप्रकृतय बध्यते। सज्वलनचतुष्क ४ हास्यचतुष्क ४ पुरुषवेदएवनव ॥ १२ ॥

टबार्थ—तथा मीसदुगे कहेता मिश्रगुणठाणे समकित गुणठाणे अनतानुबधी ४ स्त्रीवेद न बाधे एटले चार कषाय, हास्यादि ६ पुरुषवेद ए ओगणीस बाधे मोहनीकर्मनी सात नबाधे देशविरतिगुणठाणे बीजी चोकडी अप्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ए न बाधे एटले ने चोकडीनी आठ हास्यादि ६ पुरुषवेद १ ए पनर बाधे मोहनीनी प्रमत्त गुणठाणे तीजी चोकडी प्रत्याख्यानी क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ ए न बाधे मोहनीकर्मनी तथा अपमत्तदुगे कहेता अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण ए बे गुणठाणे शोक १ अरति १ एबे विना सज्वलना ४ हास्य १ रति २ भय ३ दुगछा ४ पुरुषवेद १ ए नव बाधे बे गुणठाणे ॥ १२ ॥

हासचउहीणनवमे, सुहुमाओ अबधगा उ मोहस्स।
नामेमिच्छेचउसट्ठि, सासाणे एगपन्नासा ॥ १३ ॥

टीका—हासत्ति हास्यचतुष्क ४ हास्यरति २ भयजुगुप्सा २ लक्षणा प्रकृतय हीयते इतिहास्यचतुष्कहीनेनवमेअनिवृत्तिबादरगुणस्थानेशेषा सज्वलनचतुष्कपुरुषवेदश्चएते पच बध्यते। अनिवृत्तिबादरस्यअतोसज्वलनचतुष्कपुरुषवेदाभावेसूक्ष्मसपरायस्यपरत मोहनीयस्यबधो न भवति। न बइ उ सुहुमो एग इति षटसितिवचनात्। नामेत्ति नामकर्मण मिथ्यात्वेचतु षष्टिप्रकृतयोबध्यते। ती–

र्थंकरनामाहारकशरीराहारकांगोपागनयवर्जंएतत्प्रकृतित्रयसम्यग्दृ-र्शनचारित्रानुगचेतनावीर्यस्यप्रशम्नकपाययोगपरिणामेन बन्धात् । तदभावेचात्र न बन्ध सासाणे–सास्वादनेद्वितीयगुणस्थानेनरकगति १ नरकानुपूर्वी २ एकेंद्रियजाति १ द्वीद्रिय २ त्रीद्रिय ३ चतुरींद्रियजातिचतुष्टय ४ स्थावर १ सूक्ष्म १ साधारण १ अपर्याप्तरूप १ स्थावरचतुष्क ४ सेवार्त्त १ हुडक १ आतप १ एतत्रयोदशमकृतीनामास्वादनेबन्धो न भवति । शेषाण्कपचाशत्नामप्रकृतयो बध्यते ॥ १३ ॥

टबार्थ —हास्यादि च्यार विना नवमे गुणठाणे पाच प्रकृति सञ्ज्वलना च्यार ४ पुरुपवेद १ ए पाच बाधे सूक्ष्मसपरायथी माडी उपरला सर्व गुणठाणा मोहनीकर्मना अबधक छे दशमाथी उपरान मोहनीकर्म न बावे हवे गुणठाणे नामकर्मनी प्रकृति कहेछे मिथ्यात्वगुणठाणे आहारकद्विक २ जिननामविना चोसठनो बध छे सास्वादनगुणठाणे तेर नामकर्मनी निकली एटले एकावन रही गति ३ जाति पचेन्द्रिय १ शरीर ४ उपाग २ सघयण ५ छेवट्ठविना सस्थान ५ हुडकविना, वर्णादि ४ आनुपूर्वी ३ नरकविना, विहायोगति २ परावातादिक ६ त्रसादिक १० अस्थिर ६ ए एकावन बावे ॥ १३ ॥

छसगदुगदुगइगइग, अहीयातीसाअपुव्वकरणज्झा । इगइगनवमेदसमे, सेसा नाम न वधति ॥ १६ ॥

टीका—छ सगत्ति १४ मिश्रनाम्न पट्त्रिंशत्प्रकृतयो बध्यते । तिर्यग्द्विक २ दुभगत्रिक ३ मध्यसहननचतुष्टय ४ मध्यसस्थान चतुष्टय ४ अशुभविहायोगति १ उद्योत १ एता पचदशप्रकृतय सास्वादनातेअतनीता तेनशेषा पट्त्रिंशत्प्रकृतयोबध्यते ।

ता पट्त्रिंशत् जिननामसयुक्ता सप्तत्रिंशत् नध्यते । तथा देशविरतौमनुष्यद्विक औदारिकद्विकवज्रऋषभनाराचसहननवर्जा-नाम्न द्वात्रिंशत्प्रकृतयोबध्यते । प्रमत्तेऽमिताएवद्वात्रिंशद्वध्यते । अप्रमत्तेचअस्थिरद्विकअयश एतेत्रय प्रसज्यते आहारकद्विकमि-ल्नेएकत्रिंशद्वध्यते । अपूर्वकरणेपिएकत्रिंशत्वध्यते । छट्टत्ति पट्ट सगइत्ति सप्तदुगइतिद्विकपुनर्द्विक इगत्ति एक पुन इगत्ति एक । एभि अधिकात्रिंशत् अपूर्वकरणयावत्बध्यते । तद्यथा मिश्रेपट्त्रिंशत् सम्यक्त्वेसप्तत्रिंशत् । देशविरताद्वात्रिंशत्, प्रमत्तेद्वात्रिंशत्, अप्रमत्तेएकत्रिंशत्, अपूर्वकरणेएकत्रिंशत् प्रकृतयोबध्यते । अपूर्वकरणावेत्रिंशत् यपगमे नवमे अनिवृत्तिवादरायेगुणस्थाने एका यशोनामकर्मरूपाप्रकृतिर्नबध्यते । दशमे सूक्ष्मसपरायेप्येकाएवबध्यते । शेषाउपशातमोहाद्या नामकर्म न बध्यते । एकस्यसातवेदनीयस्यबधनसभवात् ॥ १४ ॥

टबार्थ —मिश्रगुणठाणे नामकर्मनी छत्तीस बाधे पन्नर नीकली ते केही तिरिदुग २ दुर्भग ३ मध्यसवयण ४ मध्यसस्थान ४ अशुभविहायोगति १ उद्योत १ ए पन्नर न बाधे । तथा समकितगुणठाणे जिननाम बाधे सटतीस बाधे देशविरति गुणटाणे बत्तीस बाधे मनुष्यदुग २ ओदारिकद्विक २ वज्रऋषभनाराच १ ए पाच नीकली तथा प्रमत्तगुणठाणे पण बत्तीस नामकर्मनी बाधे तथा सातमे गुणटाणे अस्थिर १ अशुभ २ अजस ३ ए तीन काढीइ आहारकद्विक २ मेलीइ एटले एकतीस प्रकृति बाधे आठमे गुणठाणे इकतीस नामकमनी बाधे पछे तीस नीकली तेवारे नवमे दशमे गुणठाणे एक जसनाम बाधे । शेष इग्यारमे, बारमे, तेरमे, चउदमे गुणटाणे नामकर्मनी प्रकृति बाधे नही हेतु अभाव माटे ॥ १४ ॥

आसुहुम अठण्ह, उवसमखीणम्मि सत्तमोहविणा।
चउचरिमदुगवेइई, अघाइकम्माइ नियआइ ॥१५॥

टीका—इति देवचन्द्रगणि विरचितायास्वोपज्ञविचारसारटीकायामबाधिकार यथाविकारमेनविवरणता यन्मयानिंतिपुण्यद्वहकर्मबंधमुक्तोलोक सर्वोपिनिनास्तु । साम्प्रतमुदयाधिकारस्तत्रमूलत उदयस्थानानि त्रीणि अष्टौ सप्त चत्वारि तानिगुणस्थानेसभाव्यन्ते । आसुहुमति । सूक्ष्मसपरायगुणस्थानकमभिव्याप्यउदयेअष्टावेवकर्मप्रकृतयोभवन्ति । अयमर्थ मिथ्यादृष्टिगुणस्थानकमारभ्य सूक्ष्मसपराययावदुदयेअष्टावपिकर्माणिप्राप्यन्ते, उवसम उपशान्तमोहलक्षणे । खीणति क्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानद्वयेमोहविनामोहनीयवर्जयित्वा सप्तकर्माणि उदयेभवन्ति मोहनीयस्योपशान्तत्वात्क्षीणत्वाद्वा, चरमद्विकेसयोगिकेवलयोगिकेवलिरूपे गुणस्थानद्वये उदयेचत्वारोऽघातिकर्मप्रकृतय प्राप्यन्ते घातिकर्मचतुष्टयस्यक्षीणत्वात्, नियआइत्ति, निजकानिस्वकृतानिनान्यकृतकर्म अन्येनभुज्यते ॥ उक्तञ्च ॥ पचमागे से नूणभंते अत्तकडाइकम्माइवेयति ? । परकडाइकम्माइवेयति ? गो, अत्तकडाइवेयति नोपरकडाइवेयति ॥ १५ ॥

टवार्थ—सूक्ष्मसपराय दशमा गुणठाणा सुधी आठकर्मनो उदय छे उपशानमोहगुणठाणे क्षीणमोहगुणठाणे सातकर्मनो उदय छे मोहनीकर्मनो उदय नथी चरीम छेहडे तेरमे चउदमे गुणठाणे च्यार कर्म अघाती वेदनी १, आउखो २, नाम ३, गोत्र ४, ए च्यार वदे घातिनेस्युकहिइ जे आत्माना ज्ञानादिक गुण ते कारणरूप वे धर्म छे ते माटे ते गुणने घात करे ते घाती कर्म कहीइ अने अव्याबाधादिक च्यार गुण ते कार्यरूप छे तेहने आवरे ते अघाती कहीइ ॥ १५ ॥

ओहेमिच्छेवीए, दुवीससत्तरइगारअहीयसय ।
मीसेसयचसम्मे, चउसयसगसीइ देसम्मि ॥१६॥

टीका—अथोत्तरोदयप्रकृनयोगुणस्थानेषुचिं यते,(उच्यन्ते)ओहेमिच्छेइत्यादित नकर्मपुद्गलानां यथास्वस्थितिबद्धानाउदयसमयप्राप्ताना यद्विपाकेनानुभवनेनवेदन स उदय उच्यते । ओघे सामान्येमिथ्यात्वे बीजेद्वितीयेसास्वादनेद्विविंश यधिक शत मिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशतसास्वादने एकादिकशतउदयेप्राप्यते तत्रत ओक्तमेकशतविंशत्यधिकप्रकृतीनासम्यक्त्वमोहमिश्रमोहमिलनेद्वाविंश त्यधिकशतमुदयेप्राप्यते । सम्यक्त्वमोहविपाकस्तुसम्यक्त्वशुद्धतत्त्वश्रद्धानलक्षणमोहयनिशङ्कायतिचारेण मोहयति ईषन्मलिनकरोतीति सम्यक्त्वमोह मिश्रमोह मिश्रमिथ्यात्वसम्यक्त्वोभयरहित च मोह मिश्रमोहइतिमिथ्यात्वेसप्तदशशतउदयेभवति । मिश्रमोहनीय १ सम्यक्त्वमोहनीय १ जिननाम १ आहारकद्विक २ एतासापचानाउदयोमिथ्यात्वेनास्ति । इदमत्रहृदयमिश्रोदयस्तावत्सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानेएवभवति । सम्यक्त्वोदयस्तुअविरतसम्यग्दृष्ट्यादौउदयोभवति । आहारकद्विकोदय प्रमत्तादौ, जिननामोदय सयोगिकेवल्यादौभवति । तदिदप्रकृतिपचकद्वाविंशतिशतादपनीयते ततोमिथ्यादृष्टिगुणस्थानेसप्तदशशतभवतीतिसूक्ष्मत्रिकसूक्ष्मअपर्याप्तसाधारणरूपअत पचमिथ्यात्व च एतत्प्रकृतिपचकस्यमिथ्यात्वेअतोभवति । अयमत्राशय सूक्ष्मनाम्नउदय सूक्ष्मैकेंद्रियेषु अपर्याप्तनाम्न सर्वेष्वपिअपर्याप्तेषु साधारणनाम्नोऽनतवनस्पतिषु आतपनामोदयस्तु बादरपृथिवीकायिकेषुएवपर्याप्तेषुएवनचैतेषुस्थितोजीव सास्वादनत्वलभते। नापिपूर्वप्रतिपन्नस्तेषूत्पद्यते । तथापितत्स्यातपनामोदयस्तत्रोत्पन्नमात्रस्यासमाप्तशरीरस्यैतसास्वादनत्वत्वमनात् समाप्ते च शरीरे तत्रा-

तपनामोदयोभवति । मिथ्यात्वोदय पुन मिथ्यादृष्टावेवतेनैतासाप- चप्रकृतीना मिथ्यादृष्टावुदयस्यानस्तनङ्ग्रकृतिपञ्चकंपूर्वोक्तसप्तदश शतादपनीयते। नरकानुपूर्व्यपनयने च एकादशशतभवतीत्येतदेवाह " सासाणेइगारसय नरयाणुपुव्विणुदयत्ति " नरकानुपूर्व्युदयोहि नर- के वक्रेणगच्छतोजावस्यभवति न च सास्वादनोनरकंगच्छतीति ॥ यदुक्त ॥ बृहत्कर्मस्तवभाष्ये, नरयाणुपुव्विआए, सासणसम्म- मि होइनहुउदयो । नरयम्मि जनगच्छइ । अवणिज्जइ तेनसातस्स ॥ १ ॥ ततोनरकानुपूर्वीमन्त्यमनिकानपमिथ्यात्वलक्षणप्रकृतिप- ट्क सप्तदशशतादपनीयतेशेषसास्वादनेएकादशशतभवतीति । मी- सत्ति मिश्रलक्षणेतृतीयगुणस्थानेशतमेकशतप्रकृतीनामुदय अन- तानुबंधिनश्चत्वार क्रोधमानमायालोभा स्थावरनामएकेंद्रियविक- ला पचेंद्रियजात्यपेक्षयाअसपूर्णा द्वीन्द्रियजातित्रीन्द्रियजातिचतुरिंद्रि- यजातयएतासानवानाप्रकृतीनासास्वादनात्वेउदयात मिश्रेउदयोना- स्ति । इयमत्रभावना । अनतानुबंधिनामुदयेहिसम्यक्त्वलाभएवन- भवति ॥ यदाह ॥ श्रीभद्रबाहुस्वामिपादा पढमिल्लुयाणउदये, नियमासजोयणाकसायाण । सम्मदसणलाभ, भवसिद्धियावि न ल- हति ॥ १ ॥ नापिसम्यग्मिथ्यात्वकोप्यनन्तानुबंध्युदयेगच्छतियो- पिपूर्वप्रतिपन्नसम्यक्त्वोऽनन्तानुबंधिनामुदयकरोति सोपिसास्वादनए- वभवतीत्युत्तरघ्वासामुदयाभावात्। स्थावरैकेंद्रियजातिविकलेंद्रियजा- तयस्तुयथास्वमेकेंद्रियविकलेंद्रियेष्वेवाण्व उत्तरगुणस्थानानितुसंज्ञि- पचेंद्रियएवप्रतिपद्यते। पूर्वप्रतिपन्नोपिपचेंद्रियेष्वेवगच्छतिउत्तरेष्वासा- मुदयाभाव । तिर्यगानुपूर्वीमनुष्यानुपूर्वीदेवानुपूर्वीणनदानुपूर्व्युदय मिश्रे न भवति मिश्रेमरणाभावात् । न सम्ममीसो कुणइ कालमितिव- चनात् । सास्वादनेचैकादशाधिकशतात् द्वादशप्रकृतयोऽपनीयते। मिश्रमोहोदयश्चात्रभवति । तेन शतमिश्रेउदये अस्ति । सम्मेत्ति ।

सम्यक्त्वेअविरतिसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानेमिश्रमोहोदयोनभवति।तेनशेषा नवनवति तत्र सम्यक्त्वमोहनीयचानुपूर्वीचतुष्टय अनउदयेप्राप्यन्ते तत सर्वजीवापेक्षयासम्यक्त्वेचतुरधिकशतउदयेप्राप्यते। तत्रउपशमक्षायिकसम्यक्त्वेसम्यक्त्वमोहनीयस्योदयोनभवति।सम्यक्त्वमोहस्यानिचारहेतुत्वात् एतयोश्चनिरतिचारत्वात् न सम्यक्त्वेमोहोदय ।क्षयोपशमसम्यक्त्वेननासम्यक्त्वमोहनीयोदयोभवति प्रतिपन्नसम्यक्त्व प्रवद्धायु अभिनव वा अध्याकार कृत्वाचतुर्गतिषुगच्छति तस्यानुपूर्वीउदयोअनरालेभवति। तेनचतुरधिकशनचतुर्थेगुणस्थानेउदयेप्राप्यते । सगसीइति अप्रत्याख्यानावरणाश्चत्वार क्रोधमानमायालोभा मनुजानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी वैक्रियशरीरवैक्रियागोपागदेवगतिदेवानुपूर्वीदेवायु नरकगतिनरकानुपूर्वीनरकायु दुर्भगअनादेयअयशट्त्येतासासप्तदशप्रकृतीनाअविरतिसम्यग्दृष्टयातात्उदयप्रतीत्यछेदोभवति । तत्र इमा सप्तदशप्रकृतय पूर्वोक्तचतु शतादपनीयते शेषासप्ताशीतिर्देशविरतेउदयेभवति इदमत्रतात्पर्यं द्वितीयकषायोदयेहिदेशविरतिलाभएवनिषिद्ध यदागम । बीयकसायाणुदये, अपच्चक्खाणनामधेज्जाण। सम्मदसणलाभ, विरयाविरयनहुलहति॥ १ ॥ नामिपूर्वप्रतिपन्नस्यापिआनुपूर्वीउदयस्तुपरभवादिसमयेषुनिष्वपातरालगनानुदयसभव सचयथायोगमनुजतिरश्चापर्याप्तकाद्युपरिष्टात्सभवतिपुदेशविरत्यादिगुणस्थानेषुनसभवति । देवद्विकनरकद्विकचदेवनारकनेयसेवनचतेपुदेशविरत्यादे सभव । वैक्रियशरीरवैक्रियागोपागनाम्नस्तुदेवनारकेषूदयरितय एमनुष्येतुप्राचुर्येणाविरतिसम्यग्दृष्टयतेपु यस्तुउत्तरगुणस्थानेष्वपिकेषाचिदागमेविष्णुकुमारस्थूलभद्रादीना वक्रियद्विकस्योदय श्रूयते। सचोत्तरवैक्रियत्वादत्रनविवक्षित गुणस्थानेयोगगणनाया हेतुगणनायातुविवक्षित-

एवदुर्भगमनादेयद्विकमित्येतस्तुनिस्त्र मकृतयोदेशविरत्यादौगुणप्र-
त्ययानोदयनइत्येताअविरतेव्यवच्छिद्यवेइतिइगसिति ॥ १६ ॥

टबार्थ —हवे उत्तरप्रकृतिनो उदय चउदमे गुणठाणे कहे छे ते मध्ये ओघे एकसोबावीस छे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहनी २८ आऊखा ४ नामकर्मनीसडसट्ठी ६७ गोत्र २ अनराय ५ ए एकसोबावीसनो उदय छे मिथ्यात्वगु-णठाणे मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ जिननामकर्म १ आ-हारक २ ए पाच काढीइ तेवार मिथ्यात्वे एकसो सत्तरनो उदय छे अने सास्वादनगुणठाणे सुषम तीन आतप १ मिथ्यात्व १ नरकानुपूर्वि १ ए ६ काढीइ तेवारे एकसो इग्यारनो उदय छे मिश्रगुणठाणेअनतानुबधी ४ स्थावर १ जाति ४ आनुपूर्वि ३ ए बार काढीइ मिश्रमोहनीमेळीइ तेवारे एकसोनोउदय छे, तथा समकितगुणठाणेमिश्रमोहनी १ काढिये अने समकितमोहनी १ आनुपूर्वि ४ ते मेळीइ तेवारे एकसो च्यारनो उदय छे ते मध्येथी देवत्रिक ३ नरकत्रीक ३ वैक्रियद्युग २ मनुष्यानुपूर्वि तिर्यंचानुपूर्वि १ बीजी चोकडि ४ दुर्भग १ अनादेय १ अजस १ ए सत्तर काढीइ तेवारे देशविरति गुणठाणे सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे ॥ १६ ॥

इगसीछगदुगसयरी, छसठिसठीयइगुणसठीअ उवसततखीणे, सगपणपन्नाउ वेयति ॥ १७ ॥

टीका—प्रमत्तात् उपशातमोहयावत् एकाशीति प्रमत्ते छगसयरिति षट्सप्तति अपमत्तेदुगसयरित्ति द्वासप्तति अपूर्वकरणेछ-सठित्तिषट्षष्टि । अनिवृत्तौसठियत्तिषष्टि । सूक्ष्मसपरायेएकोन-

षष्टि । उपशातमोहेएत्रयोजनीय । इयमत्रभावना । निर्यग्गति निपगायु नीचैर्गोत्रउद्योतच तृतीया कषाया प्रत्याख्यानावरणाश्चत्वार क्रोधमानमायालोभा एवं अष्टौमप्तासीतिर्मध्यादपनीयते । तदाप्रमत्ते आहारकशरीरआहारकआंगोपांगलक्षणयुगलमक्षेपात् एकाशीतिरुदयेभवंति । इदमत्रहृदय । तिर्यग्गतितिर्यगायुर्यातिर्यग्वेद्येएवतेषुचदेशविरतानायेत्रगुणस्थानानिवर्त्तते नोत्तराणीत्युत्तरेषु तदुदयाभाव । नीचैर्गोत्रतुतिर्यगतिस्वाभाव्यात् । प्रवादयिस्नपरावर्त्तते । ततश्चदेशविरतस्यापिनिरश्चोनीचैर्गोत्रोदयोऽस्त्येवमनुजेषुपुन सर्वस्यदेशविरतादेर्गुणिनोगुणप्रत्ययादुच्चैर्गोत्रमेवोदेति । उत्तरत्रनीचैर्गोत्रोदयाभाव उद्योतनामस्वभावास्तिर्यग्वेद्यवेषुचदेशविरतान्येवगुणस्थानानिनोत्तराणि । उत्तरेषुतदुदयाभाव यद्यपियतिवैक्रियेषूद्योतनामोदेति । उत्तरदेहेचदेवजइनिवचनात् तथापिस्वल्पत्वादिना केनापिकारणेनपूर्वाचार्यैर्नविवक्षित इत्यस्माभिरपिनविवक्षितभगाधिकारेविवक्षितमपितृतीयकषायोदयेहिचारित्रलाभएवनभवति । उक्तच ॥ श्रीपूज्यै । तइयकसायाणुदए । पच्चक्खाणावरणनामधेज्जाण । देसिक्कदेसविरइ । चरित्तलभनउल्हति ॥१॥ इत्येताअष्टौप्रकृतय पूर्वोक्तसप्ताशीतेरपनीयतेशेषाएकोनाशीति । तत्र आहारकयुगलक्षिप्यते यतप्रमत्तयतेराहारकयुगलस्योदयोभवति इति एकाशीति । तत निद्रानिद्रा १ प्रचलाप्रचला २ स्त्यानर्द्धिरूपत्रिक आहारकयुगल एकाशीतिरिदपचकमपनीयते शेषा षट्सप्ततिरप्रमत्तेउदयेभवति । अयमाशयश्चस्त्यानर्द्धित्रिकोदय प्रमादयत्वात् अप्रमत्तेनसभवति । आहारकद्विकचविकुर्वणामाश्रित्यप्रमत्तेएवविकुर्वअप्रमत्तेपिआहारकोदयीएवमजानि तथापिकेनापिकारणेनऔदारिकोदयमुख्यत्वेननांगीकृतमिति आहारकापचयौदारिकोपचयीचाप्रमत्तइतिवचनात् । क्रियमाणकृतमितिसूत्रोक्तत्वा-

नाधिकृतयोगाधिकारेत्वधिकृतमेव । सम्यक्त्वमोहनीय अर्द्धनाराच-कीलिकासेवार्त्तल्क्षणसहननत्रिक पूर्वोक्तायाः पट्सप्ततेरपनीयते-शेषाद्वासप्तति अपूर्वकरणेउदयेभवति । भावार्थस्तुसम्यक्त्वमोहे-क्षपिनएवश्रेणिद्वयमारुह्यते इति अपूर्वकरणादौ तदुदयाभाव । अतिमसहननत्रयोदयेतुश्रेणिमारोढुमेवनशक्यते । तथाविधविशुद्धे-रभावात् परिणामविशुद्धिश्चवीर्यबाहुल्याद्भवतिवीर्यबाहुल्यचसहनन-नकारणेनतस्मात् अतिमसहनननामाद्यानूननाद्वीर्योल्लासइति । हास्यादिषट्कोदयमाश्रित्यापूर्वकरणेएवभवति । तेनापूर्वकरणात एवात तेनानिवृत्तिकरणेहास्यादिषट्कहीनभवति । तेनपट्षष्टि-रनिवृत्तिबादरेउदयेभवति । वेदत्रिकस्त्रीवेदनपुसकवेदपुरुषवेद-लक्षणसज्वलनत्रिक क्रोध १ मान २ मायालक्षण ३ एतासा-षण्णामनिवृत्तिबादरेछेदोभवति । तत्रस्त्रिया श्रेणिमारोहत्या स्त्री-वेदस्यप्रथममुच्छेद तत्र क्रमेणपुवेदस्यनपुसकस्यसज्वलनत्रय-स्यच, पसस्तुश्रेणिमारोहत प्रथमपुवेदस्योच्छेद तत्र क्रमेणस्त्रीवेद षढवेद य सज्वलनत्रयस्योच्छेद षढस्यतुश्रेणिमारोहत प्रथम षढ-वेदोच्छेद तत्र स्त्रीवेदपुवेदस्यसज्वलनत्रयस्योच्छेद एतत्प्रकृति-षट्कपूर्वोक्तषट्षष्टेरपनीयतेशेषा षष्टि सूक्ष्मसपराये उदयेभवति अत्र-चतुर्यलोभात इत्यमेकामवत्रिषष्टेरपनीयतेशेषाउपशातमोहेएकोन-षष्टिरुदयेभवति। तत्र ऋषभनाराच १ नाराच २ सहननद्वयउपशात-मोहेभवति । प्रथमसहननेनैवक्षपकश्रेण्यारोहात् तेनमूलतएवस-हननद्वयाभावेक्षीणमोहस्यसप्तपचाशनुदयेभवति तत्र निद्रा १ प्रचलालक्षणनिद्राद्वयाभावे २ क्षीणमोहस्यचरमसमयेपचपचाशत् उदयेभवति । अपरेपुनराहु उपशातमोहेनिद्राप्रचलयोरच्छेद । पचानामपिनिद्राणाघोलनापरिणामेभवत्युदय क्षपकाणात्वतिविशुद्ध-त्वान्निद्रोदयसभव उपशमकानापुनरनतिविशुद्धत्वात्स्यादपीति १७

टवार्थ—प्रमत्तगुणठाणे तिर्यंग्गति १ तिर्यंगायु १ नीचैर्गोत्र १ उद्योत १ तीजी चोकडी इए आठ काढीइ अने आहारकद्विगमेळिये तेवारे प्रमत्ते ईक्यासीनो उदय छे अप्रमत्तगुणठाणेयी एहवी ३ आहारक २ नो उदय काढीइ तेवारे ऊहुत्तरनो उदय छे तिहा सातमे गुणठाणे हेतु अधिकारे योगाधिकारे आहारक शरीर कह्यो छे, अने उदयमे ना कह्यो छे ते नवो आहारक लब्धि प्रमत्ते करे अप्रमत्ते न करे, तिणे व्यवहारनये करवाने अभावना छे परऋजुसूत्रनये आहारक शरीर उदय छे अपूर्वकरणे समकितमोहीनी तीन सवयण काढीये तेवारे बहुत्तरनो उदय छे नवमे गुणठाणे हास्यादिक ७ काढिये तेवारे छासठीनो उदय छे तेमायी सज्वल ३ वेद ३ ए ६ काढीये तेवारे सूक्ष्मसपराये साठनो उदय छे तेमायी सज्वलनो लोभ काढीइ तेवारे उपशातमोहगुणठाणेइगुणसाठनो उदय छे नारमे गुणठाणे ऋषभनाराच १ नाराच २ ए काढीये तेवारे पहिले भागे सत्तावननो उदय छे पछे नीद्रा २ काढीइ तेवारे बीजे भागे पचावननो उदय छे ॥ १७ ॥

बायालसयोगम्मि, बारसपयडी अयोगीचरमंते।
वेयईउईरणाय, अयोगोविणुसवगुणठाणे ॥ १८ ॥

टीका—तयाक्षीणमोहातेज्ञानावरण ५ दर्शनावरणचतुष्टय ४ अतरायपचक ५ मपनीयतेनदाशेपकच त्वारिंशत्तीर्थंकरनामोदयाच्च तत्प्रक्षेपेद्विचत्वारिंशत् सयोगिकेवलिनिभवति तत सयोगिकेवल्यतेऔदारिकद्विक २ अस्थिरद्विक २ खगतिद्विक २ प्रत्येकत्रिक ३ पदसस्थानानि अगुरुलघुचतुष्क अगुरुलघु १ उपघात २ परा-

घात २ उच्छ्वास ४ लक्षण वर्णचतुष्क वर्ण १ गंध २ रस ३ स्पर्श ४ लक्षण निर्म्माण १ तैजसशरीर १ कार्मणशरीर १ वज्रऋषभनाराचसंहनन १ दुःस्वर १ सुस्वर १ सातासातयोरेकतरत् कस्यचित्सातोच्छेदेऽसातातिष्ठति कस्यचित्असातोच्छेदेसात च तिष्ठति इति त्रिंशत्प्रकृतीना छेदे तत अयोगिकेवलिनि द्वादशप्रकृतय उदयेभवति, त्रसत्रिक ३ मनुष्यद्विक २ पंचेन्द्रियजाति १ जिननाम १ उच्चैर्गोत्र १ सुभगत्रिक ३ एकावेदनीयप्रकृति १ एव द्वादश अयोगिचरमाते व्यवच्छिद्यते । इत्युदयाभावे निष्कर्मतेति प्रसगागतमुदीरणास्वरूप लिख्यते । उदयावस्थाऽप्राप्ताना सत्तागनाना चलीभूतानां वीर्यकरणेनाकृष्य उदयत्वेन नीयते सा उदीरणा ॥ उक्तच कर्मप्रकृतौ "जकरणेणक्कुट्टीय। उदये दिज्जई उईरणाएसा" इतिवचनात्, सा च ओघतोद्वाविंशत्यधिकशतभवति । तत्रमिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशत सास्वादने एकादशाधिकशत। मिश्रे शत सम्यक्त्वे चतुरधिकशत देशे सप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीति तत्राप्रमत्ते उदये(स्त्यानर्द्धि)थीणद्धित्रिक ३ आहारकद्विक २ छिद्यते, उदीरणायातु एतत्पचक वेदनीयद्विक मनुजायु, उदीरणा तु सक्लेशे न भवति तत पर सक्लेशाभावात् प्रकृतित्रय नोदीरयति तेन त्रिसप्ततत्युदीरणाभवति। तत सहननत्रिक सम्यक्त्वमोहनीय एतच्चतुष्कापगमे एकोनसप्ततिरेवप्रकृत्यपहार सयोगिकेवलिनि एकोनचत्वारिंशदुदीरणाभवति। सयोगिचरमाते सर्वग्रासोदीरितत्वात् । अयोगिगुणे उदयएव नोदीरणा एव अयोगिनविनासर्वगुणस्थाने उदीरणाज्ञातव्या । अनपचशीतिसत्कर्मापि स्तिबुक्तसक्रमेण सक्रमय्यक्षपयति इतिशेष ॥ १८ ॥

टबार्थ—ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ ए चउद काढीये तीर्थंकरनामभेलिये तेवारे सयोगीकेवलीगुणठाणे

बेनाडीसनो उदय छे ते बेनाम्गिम मनदेवी औदारिक २ अस्थिर २ विहायोगति २ प्रत्येक २ संस्थान ६ वर्ण ४ अगुरुलघु ४ निर्माण १ तजस १ कार्मण १ प्रथम संघयण १ दुस्वर १ सुस्वर १ एक वेदनी ये तीस काढीये तेवारे अयोगीगुणठाणे बार प्रकृतिनो उदय छे अयोगीयरमसमये तेहनो अन्त थाय ए उदय, तीमहीज उदीरणा पणलो विशेष जे अप्रमत्तगुणठाणे वेदनी २ आउखो १ मनुष्यनो ए तीणनी उदीरणा सातमेगुणठाणे नीकले पछे उदये ५ तीनने उदीरणाए आठमीथी एटलो भेद छे तेमे गुणठाणे ओगुणत्यासीसनो उदय छे तेरमाने त्रणे उदीरणा छे अयोगीगुणठाणे उदीरणा नथी सर्वथा उदय थको छे बार प्रकृतिना दल सत्त विद्यमान छे पण योगसत्तागन नथी अने सत्तागनने आकर्षीने उदय करवो ते हृद्धा नथी ते माटे अयोगी ॥ १८ ॥

जा खीणता पणपण, उदओ नाणतरायकम्माण ।
थीए नवयपमत्ते, छ चउ खीणमि वेयति ॥१९॥

टीका—आखीणति १९ अयमतिर्कर्मप्रकृतिगुणस्थानकविभजनाह। यावत्क्षीणस्य पदैकदेशे पदसमुदायोपचारात् क्षीणमोहान्ता पचज्ञानावरणप्रकृत्य पचांतरायप्रकृत्य तासामुदयोभवति अनेन ज्ञानावरणपचकान्तरायपचकानां क्षीणमोहयावत् उदयोऽस्ति अत्र यथाक्रमप्रमत्तादिगुणस्थानेषु ज्ञानावरणीयान्तरायप्रकृतीनां दलिका सतत प्रतिसमय परिणामविशुद्ध्यानिर्जीर्यमाणा अपिसर्वथाप्रक्षयभावोक्षीणमोहांतविना न भवति। तेनसर्वप्रकृतिपचकपचकउदयेसत्तायाभवत्येव। ज्ञानावरणीयांतराययो क्षयोपशम माग्दृष्ट। क्षयस्तुक्षी-

णमोहावे एव क्षायिकचारित्रविशुद्ध्याएवानयो क्षयोदृष्ट । बीयेत्ति द्वितीये दर्शनावरणीयाख्ये कर्मणि प्रकृतिनवक प्रमत्ते प्रमत्तगुणस्थान-कयावत्उदयेभवति। अनेकजीवापेक्ष सूत्र तुएकजीवमाश्रित्यदर्शना-वरणीयेचक्षुप्पचएवमुदयस्थानद्वय एव प्रमत्तातयावत्स्त्यानर्द्धित्रिक उदयेसभवति । यद्यपिस्त्यानद्वयुदयेपरिणामाशुद्धत्वतथापिनगुणस्था-नाभाव पारतभ्यात्करिदष्टोत्पाटकशिष्यस्यसत्रानिष्कासन । ननु-गुणस्थानकाभावे किंतु स्त्यानर्द्ध्युदयेकदाचित्पूर्वधरादिश्रुतवता'पा-धानायभवति तदर्थमपनयइति । अप्रमत्तप्रथमसमयत क्षीणमोह-स्य द्विचरमसमययावत् स्त्यानर्द्धित्रिकहीन निद्रा १ प्रचला २ द्वय-दर्शनचतुष्क च एवपट्प्रक्र ुदयोभवति । चउत्ति, दर्शनावरणचतुष्क क्षीणमोहस्यचरमसमयेउदयोभवति । भावनाचपूर्वभावितैव ॥१९॥

टबार्थ—गुणठाणे उदीरणा नथी, सत्ता पच्चासी छे तेस्ति-बुकसक्रमे बार मध्ये सक्रमी खपे छे, हवे आठकर्मनो भिन्न उदय विहचे छे खीणमोहगुणठाणा सुधी पाच पाचनो उदय छे ज्ञानावरणी तथा अतरायनो बारमागुणठाणा सुधी उदय छे बीजा दर्शनावरणी कर्मनो प्रमत्तगुणठाणा सुधी नवप्रकृतिनो उदय छे अप्रमत्तथी माडी बारमागुणठाणाना प्रथमभाग सुधी दर्शनावरणी छ प्रकृतिनो उदय छे, थीणद्धीत्रीन नथी बारमाने छेहले भागे दर्शनावरणी च्यारनो उदय छे तेरमे चउदमे दर्शनावरणीनो उदय नथी ॥ १९ ॥

छपणदुगदुगअहिया, चौसाअठारचउदस दुगम्मि ।
तेरससगइगउदयो, सुहमजा मोहणीजस्स ॥ २० ॥

अथमोहनीयप्रकृतीना उदयो गुणस्थानेदिशन्नाह, छपणत्ति

छइति,षडअधिकाविंशतिमिथ्यात्वेमोहनीयस्योदयस्तत्रसम्यक्त्वमोह-मिश्रमोहोदय स्वस्वस्थानेएवभवतितेन मिथ्यात्वेकषायषोडशकनो-कषायनवक मिथ्यात्वमोहश्चएवषड्विंशतिप्रकृत्युदयोऽनेकजीवापेक्ष-याभवति । एकजीवापेक्षयाउत्कर्षेण प्रकृतिदशकमेवोदेति । पणत्ति, पचाधिकाविंशति पचविंशति सास्वादनेउदयेभवति । मिथ्यात्वो-दयश्चमिथ्यात्वेएव नोत्तरत्र, दुगदुगत्ति-द्विकद्विकअधिकाविंशति । इत्यनेनद्वाविंशतिर्मिश्रेद्वाविंशतिरेवअविरतसम्यक्त्वेउदयेभवति । तत्रअनंतानुबन्धिचतुष्टय सम्यक्त्वमोह मिथ्यामोहविनाद्वाविंशतिरुद-येमिश्रेभवति । अनंतानुबन्धिचतुष्कमिथ्यात्वमोहमिश्रमोहोत्पत्ति-नाशेपाद्वाविंशति सम्यक्त्वेउदयेभवति । अट्ठारसि-देशविरतौ अ-प्रत्याख्यानचतुष्टयमन्तरेण शेषाअष्टादशमोहनीयप्रकृतय उदयेभवति। प्रत्याख्यानसज्वलनाष्टक नोकषायनवक सम्यक्त्वमोहनीय च एता उदयेभवति। प्रमत्ते प्रत्याख्यानावरणचतुष्टयहीन प्रकृतिचतुर्दशकमु-दयेभवति ।अपूर्वकरणाख्ये गुणस्थाने सम्यक्त्वमोहविना त्रयोदशप्र-कृतयउदयेभवति । अनिवृत्तिबादरे हास्यषट्कोदयाभावे शेषा सप्तउ-दयेभवति । अपूर्वकरणातेहास्योदयसभवस्तुनिमित्तात्प्रत्यानुरू-निमित्तिकाग्रतायाहर्षोदय प्रशस्तोपिहास्यसद्भावेएवभवति । एव षट्कमपिभावनीय अनिवृत्तिबादरेतुशुक्लध्यानव्यापकत्वात्स्वरू-पावलम्बनसुखत्वेनैकाग्रतायामहानदएव नतु हर्ष । आनंदहर्ष-यो क प्रतिविशेषस्तत्राह, आत्मोपयोगयोगोल्लासरूप हर्ष । आ-त्मोपयोगस्वभावविश्रान्तिसुखानुभवलक्षणआनदइति, हर्ष हास्य-रत्युदयसहाय्यात्, पश्चात्तापश्चअरतिशोकोदयसहायात् । दोषातस-कोच भयोदयसहायात्भयोद्वेग । प्रशस्तजुगुप्सासाहायात् अनप्र-शस्तेप्रशस्त अप्रशस्तेऽप्रशस्त एवसर्वत्रभावनीय, दुगत्ति-सू-क्ष्मसपरायाख्येदशमेगुणस्थाने, दुगेत्ति-सज्वलनलोभाख्यमेकत्र-

पिर्ह्यमुदयेभवति । इयमत्रभावना सूक्ष्मसपराये किट्टीकृतानत-भागसूक्ष्मलोभदलिकानामुदयोऽस्तिनद्विपाकाध्यवसायानामत्यतसूक्ष्मत्वात् नत्र च नगोचरीभवति । अनुभवगम्याएवश्रुतज्ञानाधारध्यानावलनकत्वात् श्रुतज्ञानस्यद्रव्यश्रुताधीनत्वात्द्र यश्रुताभिमुखत्वचऔदयिकाधीनइतिमोहनीयस्योदय सूक्ष्मसपराययावदेवनपरत उपशातमोहादिषुमोहोदयाभावात् ॥ २० ॥

टवार्थ —मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो, मिथ्यात्वगुणठाणे वीसनो उदय छे मिश्रमोहनी १ समकितमोहनीनो उदय नथी सास्वादनगुणठाणे मिथ्यात्वमोहनी विना पचवीसनो उदय छे मिश्रगुणठाणे अनतानुबन्धी ४ समकितमोहिनी १ मिथ्यात्वमोहिनी ६ ए छ विना बावीसनो उदय छे समकितगुणठाणे बावीसनो उदय छे देशविरतिगुणठाणे अप्रत्याख्यानी च्यार विना अढारनो उदय छे प्रमत्तगुणठाणे प्रत्याख्यानी चोकडी विना १४ नो उदय छे सातमे अप्रमत्तगुणठाणे पण १४ नो उदय छे आठमे गुणठाणे समकितमोहिनी विना तेरनो उदय छे अने नवमे अनिवृत्तिबादरगुणठाणे हास्य छ विना सातनो उदय छे सूक्ष्मसपरायगुणठाणे एक लोभसज्वलननो उदय छे इग्यारमे बारमे तेरमे मोहनीकर्मनी प्रकृतिनो काइ उदय नथी अमोहीछे ॥२०॥

चउ उदओआइचउगे, देसेदुगसेसयम्मि (सेसएसु) इगउदओ ॥

आउस्सवेयणीस्स उदओ दुणतुसवत्थ ॥ २१ ॥

टीका—तिर्यगा उओत्ति—आयुष्कर्मणि आदिचतुष्के मिथ्यात्वसास्वादनमिश्र नैवा सम्यक्त्वलक्षणे प्रथमगुणस्थानचतुष्के चउ-

उदओ चतुर्णांआयुष्कर्मणा उदयोभवति चतुर्ष्वपिगतिषुगुणस्थान-कचतुष्कसभवात्। देशे देशविरताख्ये पचमे गुणस्थाने दुग्गत्ति ता-युस्तिर्यगायुर्लक्षणद्वयउदयेभवति । सेसएसुत्ति–शेषकेषु प्रमत्ताद् अयोगिकेवलिपर्यंतेषु गुणस्थानेषु एकोदय एकमेवनरायुरुदयेभवति। सद्विवेकवत सयम सभवति तेन सयमवद्गुणस्थानानिमनुष्यस्यैवभ-वति । आउस्सत्ति इतिआयुष उदयोनिवेदित वेदनीयस्योदय द्वयोरपिसर्वेनसर्वगुणस्थानेषुभवति । यद्यपिअयोगिकेवलिनि एक-वेदनीयोदयस्तथापिभिन्नजीवापेक्षयाकस्यचित्सातस्यकस्यचिदसात-स्य एवसर्वजीवापेक्षयाअयोगिचरमातयावदुभयवेदनीयोदय ॥२१॥

टबार्थ —देशविरतिगुणठाणेतिर्यंचनोआउखो तथा मनुष्यनो आउखो उदय छे शेष उद्वागुणठाणाथी माडी चउदमागुणठाणा सुधी आउखाकर्म आश्रीमिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ समकितएच्यारगुणठाणेच्यारआउखानो उदय छे, वेदनीकर्मनी बे प्रकृतिनो उदय सर्वचउदगुणठाणे उदय छे, एक जीवने एक समय एक वेदनी उदय होय, परअनेक जीव आश्री इम छे ॥ २१ ॥

चउसठी गुणसठी, इगपणपन्नाचोयालदुगठाणे ॥
बायाला अपमाये, नवहीयतीसचउगुणेसु ॥ २२ ॥

टीका—अथनामकर्मप्रकृ[illegible]णस्थानेषुविभजन्नाह चउसठीत्ति तनमिथ्यात्वेआहारकद्विकजिननामविना[illegible] षष्टिर्नामप्रकृत्यउदये भवति जिननामोदय सयोगिकेवलिनिआ[illegible]प्रमत्ताप्र-मत्तेषु तेन न मिथ्यात्वेउदय एकोनषष्टि सास्वादने[illegible] भवति सूक्ष्म-त्रिकातापनरकानुपूर्व्वीलक्षणप्रकृतिपचकमिथ्यात्वे[illegible]दय नसास्वा-

दनादिषु इगपणपन्ना इति इगपन्ना एकपचाशत् मिश्रे नामकर्मप्रकृतय उदयेसति,स्थावरनामकर्म जातिचतुष्कशेषानुपूर्वीत्रिक च मिश्रेनोदय कारणभावनाचपूर्ववत् ,सम्यक्त्वेआनुपूर्वीचतुष्कोदयस्तेनपचपचाशदुदय सभाव्यते,दुगठाणेत्ति द्विकगुणस्थानकेदेशविरतिप्रमत्तारव्ये गुणस्थानद्वयेचतुश्चत्वारिंशनामकर्मप्रकृतीनामुदयोभवति तनदेवद्विकनरकद्विकमनुजानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी एतासाचअविरतौसत्यामुदयात् वैक्रियस्यसहजस्याविरतौएवोदयात्,उत्तरवैक्रियस्य कारणेनाग्रहीतत्वात् दुर्भगनिकगुणप्रत्ययात्नोदयइति प्रमत्तेचनिर्यग्गतिउद्योतरूपप्रकृतिद्वयतिर्यग्मुख्यवेद्यवचनापनीत तथापि आहारकद्विकोदयात् चतु चत्वारिंशदेवप्रकृतीनामुदयोज्ञेय ।अपमायेत्ति-अप्रमादलक्षणेसप्तमेगुणस्थानेआहारकद्विकहीनानाद्विचत्वारिंशत्प्रकृतीनामुदयोभवति आहारकोदयश्चाप्रमत्तपर्यंत हेत्वधिकारेऽग्रेऽपिलब्ध्युदयोत्कर्षोभावात्नाधिकृत तत्कारणचक्रेवलिनोविदन्ति, अतिमसहननत्रिकाभावेऽपूर्वकरणाद्युपशातमोहान्तेषुचतुर्षुगुणस्थानकेषुनवमिरधिकात्रिंशत्नवाधिकात्रिंशदुदयेभवति ॥ २२ ॥

टबार्थ —हवे नामकर्मनी प्रकृतिगुणठाणे कहे छे मिथ्यात्वगुणठाणे आहारक जिननाम विना चोसठिनो उदय छे, तथा सास्वादनगुणठाणे सूक्ष्मत्रिकआतप १ नरकानुपूर्वि १ ए पाच विना ओगणसाठनो उदय छे मिश्रगुणठाणे स्थावर १ जाति ४ आनुपूर्वी ३ वलि काढीइ तेवारे एकावन्ननो उदय छे एकावन्नमा आनुपूर्वी ४ मेलीये तेवारे समकितगुणठाणे पचावन्न प्रकृति नामकर्मनी उदये छे ते मध्येथी वेद २ नरक २ वैक्रिय २ मनुष्यानुपूर्वी १ तिर्यगानुपूर्वी १ दुर्भग १ अनादेय १ अजस १ इग्यार विना चैवालीसनो उदय छे पाचमे देशविरति गुणठाणे

छे छठे प्रमत्तगुणठाणे तिर्यचगतिनि १ उद्योत १ ए बे नीकले अने आहारक मेले, इहा पण चामालीस नामकर्मनी प्रकृतिनो उदय छे सातमे अप्रमत्तगुणठाणे आहारक २ दुगविना बेतालीस प्रकृतिनो उदय छे, छेहला संघयण ३ काढिये थके ओगुणचालीस प्रकृतिनो नामकर्मनी आठमे तथा नवमे दुग्यारमे ए च्यार गुणठाणे उदय छे ॥ २२ ॥

सगतीसखीणमोहे, अडतीससयोगि नवअयोगमि । नामुदयो गोयम्मि, जादेसिदुगम्मिगमियरे ॥ २३ ॥

टीका—सगतीसत्ति-सप्तअधिकात्रिंशत्सप्तत्रिंशत् क्षीणेक्षीण मोहेउदयत्वेनभवति। क्षपकश्रेणिप्रारभश्चप्रथमसहननवन एवतेन-सहननद्विकाभावात् । सप्तत्रिंशदुदय क्षीणमोहेभवति । तीर्थकरनामोदयेक्षिप्तेअष्टात्रिंशदुदयेनामप्रकृतय सयोगिगुणस्थानकेउदयेभवति। अयोगिकेवलिनि चतुर्दशगुणस्थानके न व नामकर्मप्रकृतयोवेद्यते। अत्रशैलेशीकरणे घनीभूतत्वात्शरीराद्युदयाभावएवतेननावनवनामप्रकृतीनाचजीवविपाकित्वात् आत्मप्रदेशेपुनत्तद्दलानांसन्निकर्षात् तद्विपाकश्चामूर्त्तादिगुणरोधलक्षणसद्भावादनगत यइति नामोदयो एव प्रकारेणनाम्नउदयोज्ञातव्य । गोयमित्ति गोत्रेकर्मणि जादेसतियानन्देशविरतिगुणस्थानकंनावाद्विकउच्चै नीचैर्लक्षणगोत्रद्विकउदयेसाभवति । इतरप्रमत्तादारभ्यअयोगिकेवलिपर्यंतेपुगुणस्थानकेपु इगत्ति एकउच्चैर्गोत्रएवोदय गुणस्तानीचत्वनास्त्येव हरिकेशीमुनेपुउच्चैर्गोत्रोदयएवदेवादीनापूज्यत्वात्। स्वयचासकोचात् नीचैर्गोत्रोदयीस्वयमेवसकुचनेधर्मद्वेषेदुगञ्छाचद्वेषप्रत्यया न तेषानीचैर्गोत्रोदय एवज्ञेयम्॥इति देवचन्द्रगणिविरचितायास्वोपज्ञविचारसारटीका-

इयमुदयाधिकार उदयाधिकारस्यार्याकरणेविज्ञापिनचश्रीपूज्ये निष्ठुदयेभवत्वर्थापप्रयोजन ॥ २३ ॥

टवार्थ —ते मध्ये ऋषभनाराच १, नाराच २, ए वे संघयण विना सातवीस प्रकृतिनो उदय षीणमोह गुणठाणे छे तेरमे सयोगी गुणठाणे तीर्थंकरनाम मेलीइ तेवारे आडत्रीसनो उदय छे चउदमे अयोगी गुणठाणे त्रस ३ शुभग ३ मनुष्यगति १, पचेंद्रीजाति १, जिननाम कर्म ए नवनो उदय छे ए नाम कर्मनो उदय गुणठाणाने विषे कह्यो गोत्रकर्मनो देश विरति गुणठाणा सूधी वे गोत्रनो उदय छे उठायी पछे एक उच गोत्रनो उदय छे एटले उदयनो अधिकार कह्यो ॥२३॥

उइरतिपमत्तता, सगट्ठमी(समी)सट्ठआउवेयविणा॥ छगअपमत्ताइ तओ, छपचसुहुमोपणुवसंतो ॥२४॥

टीका—अथमूलोदीरणागुणस्थानेविभजयन्नाह। तत्रउदीरणास्थानानिमूलत पचअष्टौसप्तषट्पचद्वय तत्रोच्यते उइरति इत्यादि २४ उदीरणालक्षणचक्रमप्रकृतौ जकरणेणुत्ताक्रिया उदए दिज्जेए उइरणा एसा पगइट्ठिइअणुभागप्पएसमुक्तरविभागा १ यत्कर्मनापन्नपरमाण्वात्मकदलिककरणेनयोगसंज्ञिकेनवीर्यविशेषेणकषायसहितेन असहितेनचउदयावलिकाबहिर्वर्तिनीभ्य स्थितिभ्योऽपकृष्य उदयेदीयते उदयावलिकायामक्षिप्यतेएषाउदीरणा उक्तच उदयावलियबाहिरिल्लठिईहिंतो कसायसहिएण असहीएणं वा योगसन्नेणकरणेण दलीयमाकढियउदयावलियापवेसणउदीरणत्ति साचचतुर्विधा तद्यथा प्रकृत्युदीरणास्थित्युदीरणाअणुभागोदीरणाप्रदेशोदीरणाच एकैकापिद्विधामूलप्रकृतिविषयाउत्तरप्रकृतिविषयाच अत्रप्रकृत्युदीरणावसर

मिथ्यादृष्टिप्रमृतय प्रमत्तातायावदयाप्यनुभूयमानभवायुरावलिका-वशेषनभवतितावन् सर्वेप्यमीनिरन्तरमष्टावपिकर्माण्युदीरयन्ति आ-वलिकावशेषेषुअनुभूयमानेभवायुषिसतितआवलिकावशेषस्यकर्मण अनुदितदलिकाभावान्नोदीरणा उदीरणादिआवलिकामात्रमेवदलि-कमुदीरयति तस्यचोदीरितत्वा नेति मीसट्ठत्ति सम्यग्मिथ्यादृष्टि पुन-रष्टावेवकर्माण्युदीरयति नतुकदाचनापिसतसम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्था-नकेवर्तमानस्यसनआयुषआवलिकावशेषत्वाभावात् सद्यन्तर्मुहूर्त्तावि-शेषायुस्कएवनद्भावपरित्यज्यसम्यक्त्वमिथ्यात्वचानियमात्प्रतिपद्यते इति अप्रमत्तादयस्त्रयोऽप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्तिबादरलक्षणावेद्यायु-र्विनावेदनीआयुषीअन्तरणषट्कर्माण्युदीरयन्ति तेषामतिविशुद्धत्तयावे-दनीयायुषोरुदीरणायोग्याध्यवसायस्थानाभावात् वेयणीआणपमत्तो इतिकर्मप्रकृतिवाक्यात् ततपरंअनन्तरोक्तानितानिचतावदुदीरयन्ति यावन्मोहनीयमावलिकावशेषनभवति आवलिकावशेषेचमोहनीयेत-स्याप्युदीरणायाअभावान्शेषाणिपचकर्माणिउदीरयन्ति "छपचसुहमो" सूक्ष्म सूक्ष्मसपरायाख्य गुणस्थानक प्रथमपदआवलिकाशेषे-चलोभोदय पचोदीरयन्ति सूक्ष्मइतिसूक्ष्मसपरायगुणस्थानस्थोजीव लक्षणयाज्ञेय एवसर्वत्र पणुवसतोत्ति उपशान्तमोहवेदनीयायुर्मोहनी-यवर्जाणिपचकर्माण्युदीरयति ॥२४॥

टबार्थ —हवे उदीरणा गुणठाणे मूल कहे छे मिथ्यात्वसास्वादन १, अविरतिसमकित १, देशविरति १, प्रमत्त १, एतछे गुण-ठाणे सातनी पण उदीरणा छे आठनी पण उदीरणा छे तिहा भवने अवे एक आवलि आउखो शेष थास्ता आउखानो उदय पामीये पर उदीरणा न पामीइ तेणे सातनी उदीरणा पामीइ बीजू आठनी उदीरणा छे अने मिश्र गुणठाणे मरण

नथी ते माटे आठनी उदीरणा छे अने अप्रमत्तादिकनीन गुणठाणे वेदनी कर्म तथा आउखानी उदीरणा नथी जे ए कर्मने उदीरणा सङ्क्लेश परिणामे छे ते माटे सातमाथी आगले वेदनी कर्मनी उदीरणा न करे उदयावली काई आणी मुख्या छे ते उदय आवे छे सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे पहिले भागे छनी उदीरणा छे, पछे मोहनी कर्मनो उदय एक आवलि शेष रहि तेवारे पाचनी उदीरणा छे इग्यारमे गुणठाणे पांचनी उदीरणा ॥२४॥

पणदोखीणदुजोगी, णुदीरगअयोगीसतमोह जा॥ अडसगखीणअमोहा, चउचरिमदुगेयसतसा॥२५॥

टीका—पणदोखीणत्ति २५ क्षीणमोहोअनतरोक्तानि पचकर्माण्युदीरयतितानिचनावदुदीरयतियावत्ज्ञानावरणदर्शनावरणान्तरायाण्यावलिकाशेषाणिभवति आवलिकाशेषेतुद्वेएव नामगोत्रलक्षणेकर्मणीउदीरयति दुजोगित्ति द्वेकर्मणीनामगोत्रारये योगामनोवाक्कायलक्षणाविद्यते यस्ययोगीइत्यनेनसयोगीकेवल्युदीरयति घात्युदयाभावान्नमूलन अघातिषुवेदनीयायुषोस्त्वदीरणापूर्वोक्तकारणादेवनभवति अतोद्वेएव "णुदीरगअयोगित्ति" अयोगीकेवलीनकस्याप्युदीरकः योगवीर्याकरणवीर्याभावात् इत्युक्तामूलोदीरणा उत्तरोदीरणा तु ओघतद्वाविंशत्युत्तरशतमिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशतसास्वादने एकादशाधिकशत सम्यक्त्वे चतुरधिकशतदेशे सप्ताशीति प्रमत्ते एकाशीति अप्रमत्तेथीणद्धित्रिकाहारद्विवेदनायद्विकमनुजायुर्वर्जगेपतिसप्तति उदीरयतिअपूर्वेत्वेकोनसप्तति रतिनवतिचादरेनिपष्टि सूक्ष्मेसप्तपचाशत् उपशातेषट्पचाशत् क्षीणमोहप्रथमभागेचतुष्पंचाशत् द्विचरमसमयेद्विपंचाशत् सयोगिकेवलिनिचतुर्दशापग-

मेतीर्थंकरोपेतेचएकोनचत्वारिंशत् उदीरणायाभवति सयोगम-तेसर्वेषामपिउदीरणाभाव सचग्रासोदीरितत्वेनाकरणवीर्यत्वेनच स्वामित्वतूदयवदेवभाननीय वेदनीयमनुजायुष स्वामित्वप्रम-त्तपर्यंतमेवेति इति श्रीदेवचद्रगणिविरचितायास्वोपज्ञ विचारसार टीकायाउदीरणाधिकार ॥ कर्मोदीरणाख्यार याकरणे याथार्थ्यभाव विज्ञानेपरभावानुगवीर्यं स्वभावससारकभवतात् ॥ अथसत्ताक्रम कर्मणाज्ञानावरणादीनायोग्यपरमाणूनाबधनसक्रमणादिकरणेनआत्म-प्रदेशावस्थितानालोलीभावमापन्नानायास्थितिरवस्थानसद्भाव स-त्ताचतुर्विधाप्रकृत्यादिभेदे तत्रमूलत सत्तास्थानानिअष्टौसप्तचतु-र्लक्षणानिर्त्रीणितत्र सतमोहजा इतिशात उपशात अतुरया-पन्नमोहोयस्स शातमोह एकादशगुणस्थानकयावत् अष्टानाम-पिकर्मणासत्ताअस्त्येव "सतेअटयाल्सय" आवुसमुविजिणुविइअनइए इतिकर्मस्तववाक्यात् "सगखीणत्ति" क्षीणमोहेगुणस्थानकेमोहकर्म-तापन्नदलिकानासर्वथात्मप्रदेशावस्थितेरभावात् अमोहामोहकर्मरहि-तसप्तकर्मसत्तायाप्राप्यते "चउचरिमदुगेत्ति" चरिमद्विकेसयोगिअ-योगिलक्षणेगुणस्थानेचउइतिचत्वारिवेदनीयायु नामगोत्रलक्षणानि-सत्तायासति घातिनातुसर्वथाक्षयात् तत्रसयोगिगुणेउदीतानिअ-नुदितान्यपिसत्तास्थानानिलभ्यते अयोगिगुणेतुउदितान्येव अ-त्रपचाशीतिसत्कर्मण सर्वप्रकृत्युदयस्तुस्तिबुकसक्रमेणज्ञेय स्तिबु-कसरूपश्चयथाभिन्नशरावकेबिंदुमात्रजलद्विबिंदुमात्रजलशनै शनै परिक्षिप्यते तत्तुजलशरावकेभिन्नदृष्टिगोचरीभवति शरावकास्था-मेवलभते तथाएता पचाशीतिप्रकृतय यथायोगद्विचत्वारिंशत्प्रकृ-तिषुसक्रमतितद्रूपतालभते भिन्नाइतिचेत्तुनसक्रम्यते तर्हि पएसक-म्म नीयमा वेएइ इतिभगवतीवाक्यात् अनुदितानाक्षयाभावस्तेनस-क्रम्यक्षपयतिइतिज्ञेय गुणाधिरूढोजीवोद्विविध उपशमश्रेणिगतो-

क्षपकश्रेणिगनश्चनरचारित्रमोहगतैकविंशति प्रकृतिउपशमनानउपशमश्रेणिगन तेषामेवक्षपणात् क्षपकश्रेणिगन द्वयोरपिजीवयो र्वैवेतुतीनमदस्थितिरसभ्रमरूपोभेदोनतुपकृनिभ्रमेद उदयोदीरणायानभेद सत्तायामप्कृनिभेदात्मिन्नाधिकारस्तनस्वल्पत्वात्प्रथममुपशामिकानामेवोच्यते ॥ २५ ॥

टबार्थ—बारमे खीण मोहगुणठाणे पहिले भागे पाच मल कर्मनी उदीरणा छे पछीं ज्ञानावरणी १ दर्शनावरणी १ अतराय १ ए तीन कर्मनी आवलिका शेष उदय थका उदीरणा नथी ते माटे नाम १ तथा गोत्र १ ना उदीरणा छे । ए तेरमे सयोगी गुणठाणे नाम १ तथा गोत्र १ नी उदीरणा छे । अयोगी गुणठाणे उदीरणा नथी, ते कारणे अजोगी गुणठाणे करण वीर्यनो अभाव छे अने उदीरणा ते करण वीर्यथी थाये ते माटे उदीरणा नथी । हवे सत्तानो अधिकार कहे छे ॥ इग्यारमा गुण ठाणा पर्यंत मूल आठ कर्मनी सत्ता छे । सत्ता आठ कर्मनी छे, क्षीण मोह गुणठाणे मोहनी कर्म्मनी सत्ता नथी, तेणे सात कर्मनी सत्ता छे तेरमे चउदमे गुणठाणे वेदनी १ तथा नाम १ गोत्र १ आऊषो १ ए च्यार कर्म्मनी सत्ता छे ॥ २५ ॥

अडचत्तसयसता, उवसत ताविजिणुवीयतइए
उवसमसमत्तीण, उवसमसेढी पवन्नाण ॥ २६ ॥

टीका—अडचत्तेति २६ मिथ्यादृष्टिगुणस्थानात्प्रभृतिउपशातमोहगुणस्थानयावदष्टचत्वारिंशदधिकशतसत्तायाभवति विजिणुत्ति विगनजिननामयस्मात्तद्विजिनजिननाम विरहितनदेवाष्टचत्वारिं-

शशनभवति केत्याह द्वितीयेसास्वादने तृतीयेमिश्रदृष्टौ सासाणमिस्स रहिसुसाति यमिनिरचनात् सासादनामिश्रयो समचत्वारिंशशतभवति इरमतहृदय इहमिथ्यादृष्टेरष्टचत्वारिंशमपिशतसत्तापा ॥ यत्राह । प्राग्बद्धनरकायु क्षयोपशमिकसम्यक्त्वमवाप्यतीर्थंकरनामारब्धवते तदासौनरकेषूत्पद्यमान सम्यक्त्वमवश्यवमति तेनमिथ्यादृष्टेस्तीर्थंकरनामोऽपिसत्तागमभवति पुन पूर्वअप्रमत्तादिपुगतस्याहारकद्विकबद्धस्येति । अत्रायुश्चतुष्टयतुबहुजीवापेक्षया सासान्नामिश्रयोस्तुतस्मिरेरजिननामरहितेसमचत्वारिंशशतसत्तायाभवति जिननामसत्कर्मणोजीवस्यतद्भावानवामे स्तद्भावभस्यच गुन्द्रसम्यक्त्वन श्र हत्कर्मस्तवभाष्येप्युक्त नित्यपरेणविहीण सीपालसयतुसनण्डोइ सासायणम्मिउगुणे सम्मामीसेयपयडीण १ अविरतसम्यग्दृष्ट्यादीनाअष्टिमदर्शनसप्तकानाअष्ट चत्वारिंशशतसत्तापाभवति केषामि याह उवसमेत्तिउपशमसम्यक्त्वअनाउपशमश्रेणिचारित्रमोहोपशमरूपाश्रेणि यथानुक्रमोत्तरोत्तरगुणारोहरूपामपनानामेवभवति पूर्वमप्रमत्तादिष्वोहारकादिक्तसत्ताक्षयोपशमश्रेणिवनोभवति ॥ २६ ॥

टबार्थ—हवे उत्तर कर्मनी सत्ता कहे छे पूरुनो अने अटतालीस उत्तर प्रकृतिनी सत्ता ठे इग्यारमा गुणठाणा सुधी बीजे सास्वादन गुणठाणे अने त्रीजे मिश्र गुणठाणे जिन नामनी सत्ता नथी तेणे एकसोसडतालीसनी सत्ता छे ए उपसम समकितवत जे जीव छे, पहीला सातमा पर्यंत चढता होये तेहने एकसो सडतालीसनी सत्ता थाये अनादि मिथ्यात्व जीव प्रथमथी समकित पामे । तेहने जिन नामनी १ आहारक १नी सत्ता वंध करे पछी होये पर प्रथम तीन होये । ए उपसम श्रेणि चडतो जीवनी सत्ता जांणवी ॥ २६ ॥

इगचत्तससयसता, खायगसमत्तसतसेढीण ॥
अडतीससयनरमे, खवगसेढीपवन्नाण ॥ २७ ॥

टीका—अथवात्रकश्चिद्विसयोजिनानुबंधिचतुष्कस्ततमत्यय-जन्यनरकतिर्यगायुयोग्यस्तत्र बद्धदेवायुर्मनुजायुषिवर्त्तमान क्षयोपशमसम्यक्त्वचारित्रशाद्धाद्धाहारकादिरुपशमश्रेणिमारोहति तस्य-तिर्यगायुर्नरकायुरनतानुबंधिचतुष्टयलक्षणप्रकृतिपट्करहितशेषद्विचत्वारिंशशतसत्तायामाप्यते ॥ यदुक्तं बृहत्कर्मस्तवभाष्ये ॥ अणतिरिनारयरहीअ नायाल्सयवयाणसनम्मि उवसामगसमपु व्वा तिपट्ठिसुहुमोवसतम्मि । १ । य कश्चिज्जीव क्षयोपशमसम्यग्दृष्टि विशुद्धा यवसायवलेनकारणापत्रादमार्गसापेक्षोपियथार्थगुरूतत्त्वभावर्मकार्यात्सर्गश्रद्धानुभवलीन तेनैकाग्रनाप्रात्पवीर्येणक्षयीकृतानुबंधिचतुष्कमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वमोहलक्षणसप्तकस्तस्योपशमश्रेणिगतस्यापि एकचत्वारिंशशतसत्तायाभवति यावदुपशातमोहगुणस्थानकतावत्क्षायिकसम्यक्त्वोपशमश्रेणिस्थानाजीवानामेवभवति अथवा पूर्वबद्धायुः पश्चात्क्षयोपशमीभूयक्षायिकसम्यग्दृष्टिर्भवति तस्यसप्तकक्षयेणैकचत्वारिंशशतमेवसत्ताया य पुन मनुष्य क्षपकश्रेण्यारोहायुक्तस्तस्यनरकतिर्यग्देवायुप सत्ताभावात् वेद्यमानरायुस्तत्सत्ताकत्वतेनअविरतिगुणस्थानात्दर्शनसप्तकायुस्त्त् (स्तूद) याभावात् अनिवृत्तिबादरप्रथमभागयावत् अष्टत्रिंशत्शतसत्तायाभवति ॥ २७ ॥

टबार्थ—जे जीव पहेला क्षयोपसमकित होइ ते जीवने परिणामनि विशुद्धता थाये । अननानुबंधी ४ मिथ्यात्व मोहिनी १ समकित मोहिनी १ मिश्र मोहिनी १ एवं सात प्रकृति क्षय करे । तेहने एकसो एकतालीसनी सत्ता थाये

ते चोथाथी माडी इग्यारमा पर्यंत १४ नी सत्ता होये, ए जीव क्षायिक समकिनी उपसमश्रेणि छे तेहने इम होये इम क्षपक श्रेणि पडिवज्या जीवने प्रथमथी नारकी १ तिर्यंच १ देवता १ नी गतिना आऊषा टाले, तेवार पछी अनतानुबंधी ४ दर्शन मोहिनी ३ एव दश खपावे तेवारे चोथाथी माडी नवमा गुण ठाणाना नव भाग छे। तेहने पहिले भागे एकसो अडतीसनी सत्ता छे। इहा कोइ पूछे जे तीन सत्ता तो कोड जीवने न होइ तो खपावे किहाथी? तेहनो उत्तर जे परिणामे आऊपानो बंध थाये एहवा परिणामनी योग्यता टाले तेहनी क्षेपणा गवेषी छे, बीजे भागे एकसो बावीसनी सत्ता छे, तीजे भागे एकसो चउदनी सत्ता छे, चोथे भागे एकसो तेरनी सत्ता छे, पाचमे भागे एएकसोबारनी सत्ता छे, छठे भागे एकसोछनी सत्ता छे, सातमे भागे एकसोपाचनी सत्ता छे आठमे भागे एकसोचारनी सत्ता छे नवमे भागे एकसोतीननी सत्ता छे ॥२४॥

दुसयसुहुमेखीणे, इगसयननवईसत्तपयडीउ ॥
पणसी(ह)सयोगीअयोगी, तेरसखवीउणसिज्झति२८

टीका—द्वितीयभागेतुस्थावर १ सूक्ष्मद्विक २, तिर्यग्गति १, तिर्यगानुपूर्वीलक्षणद्विक नरकगतिनरकानुपूर्वीलक्षण २, आतपोद्योतद्विक २, स्त्यानर्द्धित्रिक ३, एकेंद्रियजातिचतुष्क ४, साधारणनामलक्षणप्रकृतिषोडशकतिर्यग्नरकग तिनैमित्तिकसचायाक्षीयते सदाद्वाविंशशतसत्तायाभवति तृतीयभागेअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानकषायाष्टकक्षीयते तदाचतुर्दशशतसत्तायाभवति नपुंसकवेदे

क्षीणेनयोदशशतसत्तायात्र्येभागेभवति तत स्त्रीवेदेक्षयेपचमेभागेद्वादशशतसत्तायाभवति ततोहास्यषट्कक्षयेषष्ठे भागेषटधिकशतसत्तायाभवति तत पुरुषवेदक्षयेसप्तमेभागेपञ्चाधिकशतभवति सत्ताया तत सज्वलनक्रोधेक्षीणेअष्टमेभागेचतुरधिकशतभवति सत्ताया तत सज्वलमानाभावेनवमेभागेत्र्यधिकशतसत्तायाभवति पुरुषप्रतिपत्तेरयक्रम अथस्त्रीप्रारभिकातत्प्रथमनपुसकवेदनत पुरुषवेदततोहास्यषट्कतत स्त्रीवेदअथनपुसक प्रारभकस्ततोऽसो अनुदीर्णमपिप्रथमस्त्रीवेदक्षपयति तत पुरुषवेदतत षट्कततोनपुसकवेद तत सज्वलनत्रिक इत्येवक्रमतोनेय अनिवृत्यतसमये सज्वलनमायाक्षयेदशमेसूक्ष्मसपरायाख्येगुणस्थाने द्व्यधिकशतसत्तायाभवति क्षपकस्येकादशेअगमनात् क्षीणेक्षीणमोहाख्येगुणस्थानेसज्वलनलोभस्यसूक्ष्मसपरायातेक्षपणादेकाधिकशत प्रथमेभागे क्षीणमोहेभवति ततोनिद्राद्वयक्षयगतेक्षीणमोहस्यद्वितीयेभागेनवनवति सत्तायाभवति क्षीणमोहेचरमसमयेज्ञानावरणीयपचकमतरायपचकदर्शनावरणचतुष्टयक्षपयित्वासयोगिकेवलीगुणस्थानेपचासीतिसत्कर्माभवति अयोगिद्विचरमसमययावत पचासीतिसत्तायाभवति अयोगिचरमसमयात्पूर्वसमयेद्वासप्तति क्षपयतिताएवदर्शयति देवद्विकदेवगतिदेवानुपूर्वीलक्षणस्वगतिद्विक शुभाशुभविहायोगतिरूपगतिद्विकस्पर्शाष्टकवर्णपचक रसपचकतनुपचक बधनपचक सघातनपचक सहननषट्क सस्थानषट्क अस्थिरषट्क अगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ उच्छ्वास १ निर्माण १ पचक अपर्याप्तनामप्रत्येकत्रिक पाउगत्रिक सातासातरूप एकतरवेदनीय सुस्वरनीचैर्गोत्रमितिद्वासप्ततिर्क्षीयते ततोऽयोगिचरमसमयेत्रयोदशसत्तायाभवति मनानरेमनुजानुपूर्व्यमिअत्रैवक्षीयते अत्रमनुजानुपूर्वी कर्मण भिन्नोदयोनास्ति स्तिबुकसक्रमस्यापिअत्राभावात् प्रदेशप्रद-

नाभानेचाक्षयात् अत ततोपूर्वमेवमनुजगतिकयश आदेयसुभग-जिननामउच्चैर्गोत्रपचेन्द्रियजाति सातासातयोरेकतरवेदनीयएताख-योदश मनुष्यानुपूर्व्यीमनरेणत्रादशचरमसमयेक्षपयित्वासिद्धिमाप्नो-तिजीव अप्ययममूर्त्तोखटायानाधारयतिकैकातिकनिर्द्वद्वनिरामपल-क्षणामिति ॥ २८ ॥

टवार्थ —सूक्ष्मसपरायगुणठाणे एकसोवेनी सत्ता छे, खीण-मोहगुणठाणे बारमे पहिले भागे एकसो एकनी सत्ता छे तेहने निद्रा २ गये नवाणुनी सत्ता वीजे भागे छे । ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ ए खपे तेवारे तेरमे तथा चउदमे गुणठाणे पचासीनी सत्ता छे ते चउदमाना छेला वे समय रहे तेवारे बोंतेर प्रकृति खपे तेवार छेहले समये तेर प्रकृ-तीनी सत्ता रहे ते तेर प्रकृति अयोगीचरमसमये खपाविने सिद्ध थाये ॥ २८ ॥

खीणजासत्तसा नाणा, वरणतरायएपच्च ।
वेयणीयगोअकम्मे, दुगदुगसत्ताअयोगिंता ॥२९॥

टीका--अथसत्तास्वामित्वमाह ॥ खीणजाइति २९ क्षीण-मोहगुणस्थानकयावत्ज्ञानावरणातरायपचकसत्तायाभवति वेदनीय-गोत्राख्यद्विकद्विकसत्तायाअयोगिगुणस्थानकयावद्भवति प्रथमभा-गातएकैकस्यसत्ताभवति ॥ २९ ॥

टवार्थ —खीणमोह बारमा गुणठाणासीम ज्ञानावरणीनी पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, अतरायनी पाच प्रकृतिनी सत्ता छे, वेदनी कर्मनी बे प्रकृतिनी सत्ता छे, गोत्रकर्मनी बे प्रकृतिनी सत्ता

छे अयोगीना प्रथम भाग पर्यंन छे छेहले भागे तेर रहे ते-
वारे एक वेदनी तथा एक गोत्रनी सत्ता रहे छे ॥ २९ ॥

वीएउवसतता, नवखवगाणतुवायराओछग।
खीणेछचउसता, मोहेअडवीसउवसते ॥३०॥

टीका—वीएउवसनताइति द्वितीयेदर्शनावरणीयाख्येकर्मणि-
उपशातमोहातनवानामिमकृतीनासत्ताभवति क्षपकानातुअनिवृत्ति-
प्रथमभागपर्यंननवानामपिदर्शनावरणप्रकृतीनासत्ताभवति प्रथम-
भागातषोटशापगमात्परेस्त्यानर्द्धिनिकाभावेनन परक्षीणमोहप्रथम-
भागयावनूदर्शनावरणीयस्यषट्प्रकृतीनासत्ताभवति क्षीणमोहस्यच-
रमसमयेदर्शनावरणीयचतुष्टयंभवसत्तायाभवति "खीणदुचरिमेगसय-
दुनिदृक्खओ" इतिवचनात् तन पञ्चदर्शनावरणीयमतानभवति अथ
मोहनीयकर्मण सत्तास्वामित्वमुच्यतेमोहनीयेकर्मणिउपशमसम्यक्त्वो-
पगमचारिनवन उपशमश्रेणिगनस्यउपशातमोहगुणस्थानकयावत्
अष्टाविंशतिप्रकृतय सत्तायासभवति कृतनिपुजएवानग्राग्र अकृ-
तनिपुजस्यानपेक्षैवग्रथिभेदकालेप्रथमकृतनिपुजीक्षयोपशमसम्यक्त्व-
लभते अकृतनिपुजीतुउपशमसम्यक्त्वलभते इतिसिद्धाताशय कर्म-
ग्रथिकास्तुकृतनिपुजीअकृतनिपुजीर्जावोपिप्रथमउपशमसम्यक्त्वमे-
वलभतेइतिवदति ॥ ३० ॥

टवार्थ—वीजे दर्शनावरणा कर्म्मे उपशमश्रेणिने उपसात-
मोहगुर्णटाणासीम नवनी सत्ता छे। क्षपकश्रेणिने नवमा गुण-
ठाणाना वीजे भागे सोल प्रकृति खपे तेवारे थीणद्धी तीन
खपे छे तेहने छ प्रकृतिनी सत्ता रहे छे दर्शन ४ निद्रा २
ने खीणमोहगुणटाणे पहिले भागे दर्शनावरणी छनी सत्ता छे

बीजे भागे निद्रा २ क्षय करे तेवारे दर्शनावरणी च्यारनी सत्ता छे बारमाने अंते दर्शनावरणी ४ सत्ता खपे छे मोहनीकर्मनी उपसमसमकित उपसमचारित्रीयाने इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत अठावीशनी सत्ता छे ॥ ३० ॥

अविरईसमत्ताओ, इगवीसउवसमम्मिसतसा ॥ खवगम्मियइगवीस, तेरसबारसइगारच ॥३१॥

टीका—अविरयेत्यादि वाइतिपक्षांतरेइत्यनेनक्षायिकसम्यक्त्वे उपसमश्रेणिस्थस्यअविरतसम्यगगुणस्थानकात् आरभ्यएकादशयावत्दर्शनसप्तकविनाएकविंशतिमोहप्रकृतिनासत्ताभवति खवगम्मि क्षायिकसम्यक्त्वक्षपकश्रेणिस्थस्यप्रथममनंतानुबंधिचतुष्कदर्शनत्रिकेक्षीणेअविरतसम्यक्त्वगुणस्थानतोऽप्रमत्तयावत्मोहनीयस्यकविंशति सत्ताभवति ततोकषायाष्टकेक्षीणेऽनिवृत्तिबादरतृतीयभागेमोहनीयस्यत्रयोदशसत्ताभवति ततोनपुंसकेक्षीणेद्वादश स्त्रीवेदेक्षीणेएकादश ॥ ३१ ॥

टबाथ—तथा क्षायिकसमकिती उपसमश्रेणीने चोथा अविरति गुणठाणाथी मांडीने इग्यारमा उपशांत मोह गुणठाणा पर्यंत च्यार कषाय नवनो कषाय एकवीसनी सत्ता छे उपसमभावे मोहनीनी प्रकृतिनो उदय नथी तेवारे परसत्ताथी काढी नसके ए रीत छे । हवे क्षपकश्रेणिने प्रथमथी अनंतानुबंधी ४ दर्शनमोहिनी तीन खपे तेवारे एकवीसनी सत्ता छे पछी आठ कषाय खपे तेवारे तेरनी सत्ता छे, पछी नपुंसकवेद खपावे तेवारे बारनी सत्ता छे, पछी स्त्रीवेद खपावे तेवारे इग्यार प्रकृति मोहीनानी सत्ता छे ॥ ३१ ॥

पचयचउतिदुइग, सत्तठाणाणिमोहसत्तम्मि ॥
सुहुमज्जआउकम्मे, चउसत्ताअपमत्तज्जा ॥३२॥

टीका—हास्यषट्कक्षयेपच पुरुषवेदक्षयेचतस्र सज्वलनलो-भस्यक्षयेतिस्र सज्वलनमानक्षयेद्वो सज्वलनमायाक्षयेएका स-ज्वलनलोभप्रकृतिक्षयेसत्ताभावोमोहस्यसूक्ष्मसपरायपावत् मोह-नीयसत्ताक्षीणमोहादौतुनेति सत्तास्थानानामोहसत्तायासूक्ष्मस-परायपावद्भतिसमय आयु कर्मणिअप्रमत्तयावत् चतुर्णामपिसत्ताभ-वति प्रसंगद्वापेश्चवति ॥ ३२ ॥

टबार्थ—पछे हास्यादिक खपावे तेवार मोहिनाने पांच प्रकृतिनी सत्ता छे, ते मध्येथी पुरुषवेद खपावे तेवारे मोहि-नीनी च्यार प्रकृतिनी सत्ता छे, पछी सज्वलनो क्रोध खपावे तेवार आठमे भागे तीन प्रकृतिनी सत्ता छे, ते सज्वलनोमा बे प्रकृतिनी सत्ता छे पछी सज्वलनी माया खपावे तेवारे दशमे सूक्ष्म सपराय गुणठाणे एक लोभनी सत्ता छे दशमाने अंते ते पिण खपावे ते अमोही थाये ए दशमा गुणठाणा पर्यंत क्षपकश्रेणिवालाने मोहिनी कर्मनी सत्ता छे, बारमो खीणमोही छे आऊखा कर्मनी अप्रमत्त गुणठाणा पर्यंत च्यार आऊखानी सत्ता छे, पर्व आऊखो बाध्यो होय तेमाटे उपशमश्रेणे जीवने च्यार आऊखानी सत्ता कही ते योग्यतानी छे, उपशमश्रेणिवालो पूर्व आऊखो बांधी पछी श्रेणि चढे ॥ ३२ ॥

चउदुगइगसत्तता, खीणाओग्गसतनाममि ।
तिनवईउवसत्तता, अस्सीइक्खवगेनवअयोगि ॥३३॥

टीका—तत्र परउपशमश्रेण्यावर्तमानानानाजीवविर्ज्जीवानापूर्व-बद्धायुषाएकादशयावत्चतुर्णामपिसत्ताभवति मित्रजीवापेक्षमिद-वाक्य अथवाकश्चिन्मनुष्योदेवायुर्बध्वाउपशमश्रेणिमारोहते तस्यमु-ज्यमानमनुजायुरभिनवबद्धदेवायुरितिद्वयो सत्ताभवति पुनर्य औपश मिकसम्यग्दर्शनीअवद्धायुरेवोपशमश्रेणिमारभते तस्यभुज्यमाननरा-युषनसत्ता(या)भवति क्षीणाओइति,क्षायिकसम्यग्दर्शनीक्षपकश्रेणिमा-रोहतितस्यैकमेवमनुजायु सत्तायाभवति नाम्निति नामकर्मणिउपशम-श्रेणिस्थस्यउपशांतमोहयावत् अनेकजीवापेक्षयानिनवति सत्तायामा-प्यतेक्षपकश्रेणिमारूढस्यनवमगुणद्वितीयभागेत्रयोदशनामप्रकृतिक्षये अशीतिरेवसत्तायायावदयोगिद्विचरमसमयेतावद्भवति अयोगिचरम-समयेनवनामप्रकृतीनासत्ताभवति तत्सत्ताक्षयेजीव सिध्यतिसकल-प्रदेशपुद्गलकर्माशेषरहितश्चभवति इतिश्रीदेवचन्द्रगणिविरचितायां स्वोपज्ञविचारसारटीकायांसत्ताधिकार सत्ताकर्म पार याकरणेजीवस्व-भावविजानेसत्ताकर्मविमुक्ता भवतुर्जीवा सदाजिना ॥३३॥

टवार्थ—चारे आऊखानी सत्ता भिन्न जीव अपेक्षाये होये आऊखा बान्ध्या विना उपशम श्रेणि माडे तेहने एक वर्तमान मनुष्यायु सत्तामा होये ए रीते पण होइ क्षपकश्रेणि जीवने चोथाथी माडी चउदमा पर्यंत एकज मनुष्यायु सत्तामा होय हवे नाम कर्मनी सत्ता गुणठाणे कहे छे उपशमश्रेणिनी अ पेक्षाइ सामान्य अनेक जीवने नाम कर्मनी त्राणु प्रकृति सत्तामा छे अने क्षपकश्रेणिने नवमा गुणठाणाना पहिला भाग पर्यंत त्राणुनी सत्ता छे पछी बीजे भागे सोलरखपावे तेवारे तेर नाम कर्मनी खपे तेवारे तेरमा गुणठाणा पर्यंत ऍसीनी सत्ता छे पछी चउदमाने छेहले भागे तिऊत्तरखपावे तेवारे अयोगी हैने छेहले भागे नवनी सत्ता रहे छे ॥३३॥

सव्वजीयठाणमिच्छे, सगसासाणेपणअपज्जसन्निदुग।
सम्मेसन्निदुविहो, सेसेसुसन्नीपज्जत्तो ॥३४॥

टीका—अथगुणस्थानेषुजीवस्थानानिकथ्यते इहसूक्ष्मबादरे गिंदीबितिचउअसन्निपचेंदि अपजत्तापज्जत्ता कमेणचउदसजीअठाणा १, इहास्मिन्जगतिसंक्षेप यार यायासंग्रहनयेन एगेआया इतिएकएवजीवभेदोमध्य यार यायाविशुद्धनगमआस । यवहारनयेन-चतुर्दशजीवस्थानानिकेनक्रमेणेतिचेदित्याह सूक्ष्मबादरेकेंद्रियद्विचतुरसंज्ञिसंज्ञिपचेंद्रियाइनिसप्तएतेसप्तअपर्याप्तपर्याप्तभेदाच्चतुर्दशएकस्पर्शनलक्षणमिंद्रियंयेषांतेएकेंद्रिया पृथ यपतेजोवायुवनस्पतय तेच प्रत्येकद्वेधासूक्ष्मा बादराश्चतत्रसूक्ष्म नामकर्मोदयात्सूक्ष्मा सकल-लोक यापिन बादरनामकर्मोदयाद्बादरास्तेचलोकप्रतिनियतदेशवर्तिन द्वेस्पर्शनरसनलक्षणेइंद्रियेयेषांतेद्वीन्द्रिया कृमिपूतरकादय त्रीणिस्पर्शनरसघ्राणरूपाणिइंद्रियाणियेषांतेत्रींद्रिया कुथुमत्कूणयूकादय चत्वारिस्पर्शनरसनघ्राणचक्षुलक्षणानिइंद्रियाणियेषांतेचतुरिंद्रिया भ्रमरमक्षिकामशकवृश्चिकादय पचस्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रोत्रलक्षणानिइंद्रियाणियेषां ते पचेन्द्रिया मत्स्यकलभसारसुरनारकमनुष्यादय तत्रतिर्यग्मनुष्यपचेन्द्रियाद्विविधासज्ञिन असज्ञिनश्चतत्रसज्ञानसंज्ञा भूतभवद्भाविभावस्वभावपर्यालोचनदीर्घकालिकीसंज्ञायासासंज्ञाविद्यते येषांतेसंज्ञिन विशिष्टस्मरणादिरूपमनोविज्ञानभाजइतियावत् तद्विपरीता स्त्वसंज्ञिनोमनोविज्ञानविकलाइत्यर्थ एतेचप्रत्येकद्विधापर्याप्तकाअपर्याप्तकाश्च पर्याप्तिनामपुद्गलोपचयज पुद्गलग्रहणपरिणमनहेतुशक्तिविशेष साचविषयभेदात्षोढा आहारपर्याप्ति शरीरपर्याप्ति उच्छ्वासपर्याप्ति भाषापर्याप्ति मन पर्याप्तिरिति-

तनयथालोमादिआहारमादायखलरसरूपतयापरिणामयति साआहारपर्याप्ति यथारसीभूतमाहारशरीरतया परिणामयति साशरीरपर्याप्ति येचपुद्गला शरीरतयापरिणमय्यइन्द्रियाकारसहायत्वयापरिणामयन्तिसा शरीरपर्याप्ति यथाउच्छ्वासानुगशक्तिविशेषयापुनरुच्छ्वासप्रायोग्यवर्गणादलिकमादाय उच्छ्वासरूपतया परिणमय्यालम्ब्य च मुचति साउच्छ्वासपर्याप्ति यथानुभाषायोग्यवर्गणाद्रूपगृहीत्वाभाषात्वेनपरिणामय्यालम्ब्यवचनरूपतयामुचतिसाभाषापर्याप्ति यथापुनर्मनोयोग्यवर्गणादलिकगृहीत्वामनस्त्वेनपरिणमय्यालम्ब्यचिनन यापारकृत्वामुचतिसामन पर्याप्ति एताश्चयथाक्रममेकेन्द्रियाणाविकलासज्ञिनातथासज्ञिनाचतु पचषट्संख्याभवन्ति स्वस्वयोग्यपर्याप्तिपरिसमाप्तापर्याप्तका तदपरिसमाप्तिविकलास्तेऽपर्याप्तका तेऽपर्याप्तकाद्विधालब्ध्याकरणेश्चयेचाहारशरीरेन्द्रियपर्याप्तिनिष्पाद्यम्रियते तेलब्धिऽपर्याप्तका येचाहारशरीरेन्द्रियाणिनिष्पादितानि शेषा स्वयोग्या पर्याप्तय निष्पादयिष्यन्तितेकरणापर्याप्तका इतिसर्वजीवस्थानसिद्धे इत्यादिसर्वाणिजीवस्थानानिचतुर्दशाऽपिमिथ्यादृग्गुणस्थानकेभवन्ति सगत्ति सप्तजीवस्थानानिसास्वादनेभवन्ति पचापर्याप्ता बादरकेन्द्रियाऽपर्याप्ता द्वीन्द्रियाअपर्याप्ता त्रीन्द्रियाअपर्याप्ता ३ चतुरिन्द्रियाअपर्याप्ता असज्ञिपचेन्द्रियाअपर्याप्ता ५ सज्ञिद्विकसज्ञिअपर्याप्तपर्याप्तलक्षण केतत्रापर्याप्तकाश्चेहकरणापर्याप्तकाद्रष्टव्या नतुलब्धिअपर्याप्तकास्तेषुमध्येसास्वादनसहितस्योत्पादाभावात् भावनाचकश्चिदेवादिगतोजीव प्रथमपृथिवीकायादिकआयुर्बध्यातत परग्रन्थिभेदसमयउपशमसम्यक्दर्शनमवाप्यसासादनगतआयु क्षयेएकेन्द्रियोभवति तस्योत्पत्तिकालेसभाव्यते विकलेन्द्रियासज्ञिनातुतिर्यग्मनुष्यतस्तेयत्रमृतस्यसभाव्यते सम्मे अविरतिसम्यग्दृष्टिगुणस्थानेसज्ञीद्विविधोऽपर्याप्तरूपोद्रष्टव्य इहापर्याप्तकरणापेक्षयाज्ञेयो नतुलब्ध्यप-

र्याप्तक सम्यग्दृष्टिर्भवतिशेषेषुमिश्रदेशविरत्याद्ययोगिपर्यंतेषुगुण-स्थानकेषुसज्ञीपर्याप्तलक्षणमेकजीवस्थानप्राप्यते इति याख्यातानि गुणस्थानकेषुजीवस्थानानि ॥ ३४ ॥

टबार्थ —हवे गुणठाणाने विषे जीवना भेद कहे छे मि-थ्यात्व गुणठाणे सर्व चउद भेद जीवना छे सास्वादन गुणठाणे अपर्याप्ता पाच बादर अपर्याप्तो १, बेंद्रीअपर्याप्तो १, तेंद्रीअप-र्याप्तो १, चौरिंद्रीअपर्याप्तो १, असज्ञीपचेंद्रीअपर्याप्तो १, ए पाच अने सज्ञीपचेंद्रीअपर्याप्तो १, तथा सज्ञीपचेंद्री पर्याप्तो ए बे एव सात जीवना भेद छे सास्वादन गुणठाणे ते जा-णवा सहि चोथे समकित गुणठाणे सज्ञी पचेंद्री पर्याप्तो तथा अपर्याप्तो ए बे जाव भेद छे तथा देशविरति प्रमत्ते १ अ-प्रमत्तअपूर्वकरण, अनिवृत्ति बादर सूक्ष्मसपराय उपशातमोह क्षीणमोह सयोगीगुणठाणे अयोगीकेवळी ए अग्यार गुणठाणे १ पचेंद्रियपर्याप्तो जीवभेद छे

सव्वगुणठाणमज्झे, सनामगुणठाणगचनेयव्व ।
अज्झवसायमसखा, सुहुमताइगेगचउचरिमे ॥३५॥

टीका—सप्रतिगुणस्थानकेषुगुणस्थानान्याह ॥ सव्वगुणठा-णंति ॥ ३५ ॥ सर्वेषुगुणस्थानकेषुमध्ये स्वनामेनिस्वस्वकीयनाम-स्वनामएवगुणस्थानक स्वनामगुणस्थानक "नेअव्व" ज्ञातव्यमित्यर्थ यतोमिथ्यात्वेमिथ्यात्व एवगुणस्थानक "सासादन" सासादनमेव-गुणस्थानक मिश्रे मिश्रमेवगुणस्थानक एवमर्वत्रज्ञेयनत्र "सुहुमित्ति" सूक्ष्मसपराययावत् प्रत्येक एकैकस्मिन्गुणस्थानके मिथ्यत्व यवसा-यास्तीव्रतीव्रतरतीव्रतममदमदतरमदतमरूपा, परिणामभेदाअसख्ये

या सख्यातीतातेपा तत्रमिथ्यात्वेपितीव्रमदादिभेदेनअसख्येया परिणामा सति एवसास्वादनेपिसम्यक्त्वप्रतिपानन प्रथमसमयेअ पा सक्लिष्टाद्द्वितीयसमयेविशेषत सक्लिष्टा तृतीयसमयेविशेषतरसक्लिष्टा-श्चेपा नोविशुद्धाभवति शेषेपुगुणेषुराक्लिष्टा अप्पासर येपात्विशुद्धा अप्पसंसर येयाभवति सयमस्थानानामपिअसर येयत्व कषायक्षयोपशमन सयमश्रेणिन ज्ञेय । सयमस्थानेचारित्राविभागानापरस्थानपन्तित्वविज्ञेय, स्थानानाचतु स्थानिकत्वमेवसूक्ष्मसपरायपर्यन्त उपशातमोहक्षीणमोहसयोगिअयोगिगुणेचारित्रस्यैकैकमेवाध्यवसायस्थानमोहोदयाभावात्नाध्यवसायभेद उक्तचभगवत्या "निग्गथाणएगेसजमठाणेसणायाणएगेसजमठाणे" एप्वेरचतुर्पुनिजरास्थानानिअनेकानिप्रतिसमयमसर येयगुणनिर्जराधिकत्वात् प्रतिगुणस्थानकस्य "असखगुणनिज्झराजीवा" इतिवचनात् ॥ ३५ ॥

टवार्थ —सर्व चउद गुणठाणाने विषे पोताना नामनो तेहज एक गुणठाणो पामीये, जे कारणे मिथ्यात्वमा मिथ्यात्व गुणठाणो, सास्वादनमा सास्वादन गुणठाणो, एम सर्वेन जाणवो अने एक एके गुणठाणे तीव्रमदमदतरतीव्रतर परिणामभेदेअध्यवसाय असख्याता जाणवा एक मिथ्यात्व गुणठाणो पिण मिथ्यात्वनी तीव्रमदता अनेक प्रकारनी छे सास्वादनमे पिण तीव्र मदतानो प्रतिसमयीमेले एक समयना अध्यवसाय, असख्याता छे कषायना तीव्रमदता क्षयोपशमथी छे ते जानाइ कषायनो क्षयोपशम छे तासुधी अध्यवसायनो पण भेद छे एतले दशमा गुणठाणापर्यंत अध्यवसाय असख्याता छे तरतमयोग छे ते वली छठाण वर्डीया छे । इग्यारमाथी माडी उपरले च्यार गुणठाणे मोहनो उदय नथी तेमाटे चारित्रनो एक

अध्यवसाय छे । निर्ज्जरा थानकमे अनेक भेद छे, परचारित्रना थानकनो भेद नथी ॥ ३५ ॥

मिच्छिदुगिअजय(यि)योगा, हारदुगुणाअपुव्वपणगेओ। मणवयउरलसविउव्वि, मिसिसविउव्व(व्वि)दुगदेसे।३६।

टीका--अथगुणस्थानकेषुयोगान्निरूपयन्नाह। मिउदुगत्ति ३६॥ योगा पचदशधा तनमनोयोगश्चतुर्द्धा सत्यमनोयोग असत्यमनोयोग सत्यामृपामनोयोग असत्यामृपामनोयोग तत्स्वरूपचेद "सव्वाहीयासनामिह सतोगुणापयठावानि्ववरीपामोसामीसाजातदुभ(य)सहाव्वा १ अणहिगयाजाना सुविसुव्वुष्वियाकेवलिअसघमोसा एववाग्योगोपिचतुर्वाद्रष्ट्य । काययोग सप्तधा औदारिक औदारिकमिश्र, वैक्रियवैक्रियमिश्र, आहारकआहारकमिश्र, कार्मणचननौदारिककाययोगस्तिर्यग्मनुष्ययो तयोरेवापर्याप्तयो रौदारिकमिश्रकाययोग वैक्रियकाययोगोदेवनारकयोस्तिर्यग्मनुष्ययो वैक्रियलब्धिमतो वैक्रियमिश्रकाययोगोऽपर्याप्तयो देवनारकयोस्तिर्यग्मनुष्ययोर्वा वैक्रियस्यारभकालेपरित्यागकालेचआहारकचतुर्दशपूर्वविद आहारकमिश्रकाययोग आहारकस्यप्रारभसमयेपरित्यागकालेचकार्मणकाययोगोऽष्टप्रकारकर्मविकाररूप शरीरचेष्टास्वरूपोंतरालगतानुत्पत्तिमथमसमयेकेवलिसमुग्धातसमयेचयोगस्वरूपवस्तुत तत्त्वार्थटीकानोलिख्यते वीर्यांतरायक्षयोपशमजनितेनपर्यायेणात्मन सचवोयोग ॥ सचवीर्यप्राणोत्साहपराक्रमचेष्टाशक्तिसामर्थ्यादिशब्दवाच्य अथवायुनक्त्येनजीवेवीर्यांतरायक्षयोपशमजनितपयायमितियोग सचकायादिभेदत्रिविध तनकाय शरीरमात्मनोनानिवास पुद्गलद्रव्यचटत स्थविरस्यदुर्बलस्ययष्टयालबनयष्टिकादिवद् विषमेषुपद्याहकस्तद्योगाज्जीवस्यवीर्यपरिणामशक्ति सामर्थ्यंकाययोग यथाग्निसप

कात् घटस्मरक्तत्तापरिणाम तथा म त्र ज्ञापकरणस भ गर्द्धापर्यपरि-
णति न्यत्यात्मयुक्तकायायत्तावाग्वर्गणायोग्यरक्त ग्रशिसृज्यमाना-
वास्त्वेनकरणनामापद्यते तेनवाक्करणेनसंव ग मनोपर्द्धायसमुत्थान-
भापकशक्ति सत्यागयोग सत्यादिभेदयुक्तां तत्र अत्रपुद्गलात्मनो-
नसत्यादिभेदभाज किंतुज्ञानमेवसत्यादिभेदमुपयन तद्व्यवहारो-
तयापिनद्गलाश्रीनसाधकत्वमत्याद्भागपिसत्यादिभेदेनोपचर्यते तथा
आत्मनाशरीरसनारंभदेशेगृहितामनोवर्गणायोग्यस्कंधा मननार्थक-
रणभावमालम्बते तत्सहकृत्वादात्मन पराक्रमविशेषोयोग सत्यादि-
विकल्पाद्युतुच अत्रापिमनोवर्गणायोग्यस्कंधानसत्यादिव्यपदेशा
परमार्थत किंतुनोइन्द्रियावरणक्षयोपशमसमुद्भूतमनोविज्ञानपरिण-
तात्मनोवलाधानकारित्वादात्मसहचरितत्वाद्युपचारत सत्यादि-
व्यपदेश उदारप्रधानसहजावगाहनामहत्वादुदारा तीर्थकरादय-
स्तेषामिदमौदारिकं अथवा उदारम्प्रधानमोक्षसाधनरूपकार्यनिष्प-
द्यतेतस्माच्छरीरात् तद्धेतुमत्शरीरमौदारिकं विविधक्रियादृश्यादृश्य-
रूपकारणो वैक्रिय सूक्ष्मार्थग्रहणार्थतीर्थकरातिशयादिमहिमावलो-
कनार्थवाआह्रियतेइत्याहारक, सर्वकर्मप्ररोहबीज सांसारिकसुखदुःख
भाजनकर्मवर्गणानिष्पन्नकार्मण, अत्रकार्मणशरीरकर्मणोर्नपेक्षयवाह्या-
रतयागृहीतकार्मणवर्गणास्कंधा तेचशरीरत्वेनपरिणमतियेचाकर्मप्र-
कृतितयापरिणमतियेचात्मप्रदेशपरिणत्यायोगवीर्यणगृहीताकार्मणवर्गणा-
स्कंधाकर्मप्रकृतितयापरिणतास्तेकषायावलम्बनसापेक्ष स्थितिरसमा-
जोभवति येचशरीरतयापरिणतास्तेनैवनवास्थितिं भजन्ति पूर्वबद्ध-
स्थितिनिर्माणतिष्ठन्ति तेजसशरीरमाहारपाचनसमर्थनामिनवकर्मगृह-
णकारणतेननवभेदेनोपात्त,नवयोगस्थानपरिणतिनीयाविभागवर्गणा-
दिरूपपुद्गलवर्गणावलम्बिकरणवीर्यभावयोगयेनोत्पन्ने पर्याप्तिना-
मोदयागतमनोवाक्कायपर्याप्तिनिभागत मनोवाक्कायवर्गणा पूहचा-

(र्यायत्तप्रवात्तद्रव्य?)योगत्वेन यपदिश्यते तनपापात्विरत यहत्या-दियथार्थसत्य तद्विपरीतोऽसत्य पापनास्तिपरभवादिनास्तिर्दश्वरकृ-तजगदित्यादिउभयलक्षण स यानतोयथेमागावश्वरतिपुसामपितन-सभवात् उभयलक्षणायोगादसत्यानृतो यथाहेदेवदत्तग्रामगच्छेत्यादि एषनिविधोवियोगश्चलवीर्यवनाद्विविव दयादानपूजादिप्रवृत्त शुभ हिंसाग्तेयमैथुनेच्छादिप्रवृत्तोऽशुभइति "मिउदुगि"इत्यादिमिथ्याहृ-ष्टिद्विकमिथ्यादृष्टिसास्वादनलक्षणनत्रअयतेअविरतसम्यग्दृष्टौचेत्येन-गुणस्थाननयेआहारकद्विकोआहारककाययोगाहारकमिश्रयोगरहि-तास्त्रयोदशयोगा सभवति "आहारकदुगजायइचउदसपुविस्सेति" तेन तए तेषु तया अपूर्वपचकेअपूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायो-पशातमोहक्षीणमोहलक्षणेनवयोगाभवति तद्यथा चतुर्विधोमनोयो-गचतुर्विधोवाग्योग औदारिककाययोगइतिनवशेषाअत्यन्तविशुद्धत-यातेषा वैक्रियाहारकद्विकारभाभावात् तयोश्चौत्सुक्यादिपरिणामपूर्वक-मेवसभवात् सर्वेक्रियादशयोगामिश्रे सम्यग्मिथ्यादृष्टिगुणस्थानके-चतुर्विधोमनोयोग चतुर्विधोवाग्योग औदारिकवैक्रियलक्षणौद्वौ-काययोगौएवदशयोगामिश्रेभवन्तिनशेषा तद्यथाआहारकद्विकस्या-सभव पूर्वाधिगमाभावात् कार्मणौदारिकवैक्रियमिश्राभावस्तुमरणा-भावात् अत्रचवैक्रियलब्धिमताअमिनवैक्रियारभकालेवैक्रियमिश्र-भवति तत्वकृताश्चित्कारणात्पूर्वाचार्यैर्नाभ्युपगम्यते तनसम्यगवग-च्छामस्तथाविधसप्रदायाभावात् देशेदेशविरतिलक्षणेगुणस्थानकेवै-क्रियवैक्रियमिश्रसहिताएकादशयोगाभवति यथाअवटस्येति ॥३६॥

टबार्थ —हवे गुणठाणे योग कहे छे मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन एक तथा अविरति समकित १ ए तीन गुणठाणे तेर योग छे मनना ४ वचनना ४ औदारिकद्विक २ वैक्रिय-

द्विक २ कार्मण १ शेष १३ छे आहारक २ बे नही ते छठे गुणठाणे मुनिने होये, बीजाने न होये, अपूर्वकरणथी माडी ९ गुणठाणे खीणमोह पर्यन नवयोग पामीये मनना ४ वचनना ४ एक ओदारिक ए नवयोग छे पछे मिश्र गुणठाणे ए नव मध्ये वैक्रिय १ मेलीइ तेवारे १० योग छे इहा वैक्रियमिश्रनो अभाव छे, जे अपर्याप्तो अवस्थाए मिश्र गुणठाणो न होये अने वैक्रियलब्धि नवि करे तेहने पण मिश्र गुणठाणे लब्धि करे ते गवेषी नथी, विउव्विआहारगे उरलमिस्से इतिवचनात् ॥३६॥

साहार(ग)दुगपमत्ते, तेविउवाहारमीसविणुइयरे ॥
कम्मुरलदुगंताइम, मयवयणसयोगिनअयोगी॥३७॥

टीका—साहारगदुपमत्तेत्यादि ३७। पूर्वोक्तपंचैकादशयोगाःसाहारकद्विकाआहारकाहारकमिश्रयुक्ता त्रयोदशप्रमत्तेभवति, औदारिकमिश्रकार्मणाभावस्तुपूर्ववदेवतेएववैक्रियमिश्राहारकमिश्रविना एकादश इतरस्मिन्नप्रमत्तगुणस्थानकेभवति, वैक्रियाहारकमिश्रतुप्रारंभकालेलब्ध्युपजीवनतुऔत्सुक्यादिप्रमादेसप्रमेतुप्रमादाभावात् नेति "मायीविउव्वति नोअमायीविउव्वति" इत्यागमवचनात् तथाकार्मणऔदारिकद्विकऔदारिकमिश्रलक्षणअताद्यिमनसीसत्य १ असत्याअमृषारूपौमनोयोगौ एवमेवसत्य १ असत्याअमृषालक्षणौवाग्योगौचेतिसप्तयोगा सयोगिकेवलिनिभवति कार्मणौदारिकमिश्रतुसमुद्घातावस्थायामितिन अयोगित्ति नैवएकोपियोग अयोगिकेवलिनिइतिउक्ताःगुणस्थानेषुयोगा ॥३७॥

टबार्थ—देशविरति गुणठाणे वैक्रिय मिश्र मेलीये तेवारे ११ योग छे, मनना ४ वचनना ४ औदारिक १ वैक्रियद्विक

२ ए इग्यार योग होये प्रमत्त गुणठाणे आहारकद्विक २ भेळीइ तेवारे तेर योग पामीये प्रमत्त गुणठाणे ते मध्येथी वैक्रिय मिश्रआहारक मिश्र ए बे काढीये तेवारे सातमे अप्रमत्त गुणठाणे इग्यार योग होये, जे कारणे अप्रमत्त साधु लब्धी फोरवे नहीं तेम भगवतीसूत्रमा कह्यु छे, मापी त्रिउवत्तिनो अमायीविवत्ति ए वचन छे अने तेरमे सयोगी गुणठाणे कार्मण २ औदारिकमिश्र २ औदारिक २ मनना २ सत्यमनोयोग २ असत्यामृपामनोयोग इम वचनात् २ ए सातयोग पामीये ते मध्ये कार्मण १ औदारिकमिश्र १ ए बे योग समुद्घात करता पामीये अने अयोगी गुणठाणे योग नथी, योगनोरोध कर्यो छे ॥३७॥

तिअन्नाण दुदसाइमेदुगे, अजयदेसिनाणदसतिग ॥
तेमिसिमीससमणा, जायाइकेवलदुगतदुगे ॥३८॥

टीका—अथुनातेष्वेवोपयोगानभिधातुकामआह " तिअन्नाणचि ।३८। त्रयाणामज्ञानानासमाहारस्त्यज्ञानमत्यज्ञानश्रुताज्ञान, विभंगज्ञानरूप द्वयोर्दर्शनयो समाहारोद्विदर्शनचक्षुर्दर्शनाचक्षुर्दर्शनरूपमित्येते पचोपयोगा मिथ्यादृष्टिसास्वादनयोर्भवंति नशेषा "बेंदियस्सदोनाणाइकहलब्भंति भणइसासायणपडुच्चतस्सअपज्जत्तगस्सदोनाणाइ इतिप्रज्ञापनापेक्षया सासादनेज्ञानसूत्रेनेसमतमपिकर्मग्रथाभिप्रायेणसास्वादनस्यमिथ्यात्वाभिमुखत्वादनतानुबधिकषायोदयेयथार्थोपयोगमलीमसत्वेन तन्निबधनस्यज्ञानस्यापिमलीमसत्वादज्ञानरूपताइति । अत्रचिदर्शनाभावश्चविभंगेकातिचित्पर्यायज्ञानात् वपरीत्येनसामान्यावबोधरहितत्वात् । जीवाभिगमे । विभंगि-

नाअवधिदर्शनग्रहणेप्यननिषेधस्तेनपचोपयोगा सम्यक्त्वविरत्य-
गात्राद्यनशेषा तथा अपने अविरतसम्यग्दृष्टौ देशे देशविरतौ नाण-
दसणतिगति" मतिश्रुतावधिरूप ज्ञानत्रिक चक्षुअचक्षुअवधिदर्शन-
रूपदर्शनत्रिक एव षडुपयोगा नशेषा सर्वविरत्यभावात् एतेएवष-
डुपयोगामिश्रे अज्ञानसहितादृष्ट्या तत्रसम्यग्दृष्टित्व पतितानाआ-
सन्नाभ्यासत ज्ञानबाहुल्यपेचमिथ्यात्वतोमिश्रत्वगतानांआसन्नाभ्या-
सतो अज्ञानबाहुल्यइतितेनज्ञानाज्ञानेमिश्रजीवापेक्षयागृहीतेवस्तुत-
स्तुसम्यग्दृष्टेरेवज्ञानप्रमाणानि सशयत्वात्। अनविभगेअवधिदर्शनतत्
जीवाभिगमापेक्षया"समणाजयाद्दृति"इतिय यादीनाइत्यनेनप्रमत्ता-
प्रमपूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशान्तमोहक्षीणमोहलक्षणेषुस-
प्तगुणस्थानकेषुमन पर्यवयुक्ताइतिसप्तउपयोगा ज्ञानचतुष्कदर्शन-
त्रिकरूपाभवतिकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणोपयोगरूपउपयोगद्वयअ-
तिमद्विकेसयोगिकेवलीअयोगिकेवलीलक्षणचरमगुणस्थानकेद्विकेभ-
वति नशेषा अनमत्यादिज्ञानाना वस्तुस्वरूपात् आत्मनिकेवलज्ञान-
कालेपिमत्यावरणादीनाक्षयात् तद्ज्ञानानामपिनिरावरणत्वभवनात्
मत्यादीनामपिसत्वनयापि सवितुरुदयेतारकादीनासत्वेपितत्प्रभावात्
तथैवकेवलज्ञानस्यप्रकटमत्यादिप्रवृत्त्यभावात् "नट्ठम्मिछाउमत्थिए-
नाणेकेवलनाणेउवज्झइ" इत्यागमवाक्यात् यवहारनयेनछाद्मस्थिक-
ज्ञानाभाव तत्प्रवृत्यभावात् ॥ ३८ ॥

द्यार्थ —हवे उपयोग बार गुणठाणे कहे छे आदिम बे
गुणठाणे मिथ्यात्व सास्वादन ए बे गुणठाणे तीन अज्ञान बे
अचक्षुचक्षुदर्शन ए पाच उपयोग छे प्रथम बे गुणठाणे अ
विरति समकित १ तथा देशविरति ए बे गुणठाणे ज्ञानत्रिक
३ दर्शन ३ पहिला ए ७ उपयोग छे मिश्र गुणठाणे मिश्रित

उपयोग छे जे जीव तेह समकितथी पडि मिश्रे आवे तेहने पूर्वाभ्यास माटे ज्ञान होये, जे मिथ्यात्वथी आवे तेहने अज्ञान होये अने यति आदीदेइ छट्ठाथी बारमा गुणठाणा पर्यंत मन पर्यायज्ञान भेळीये एतले च्यार ज्ञान, तीन दर्शन, ए सात उपयोग होये अनद्दुग तेरमे चऊदमे गुणठाणे केवलदुग कहेता केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए बे उपयोग होय ॥३८॥

छसुसव्वातेऊतिगं, इगछसु सुक्काअयोगिअलेसा।
इगचउपणतिगुणेसु, चऊतिदुइगपच्चओवधो ॥३९॥

टीका—उपयोगाउक्ता, अधुनागुणस्थानकेष्वेवलेश्याअभिधित्सुराह ॥ छसुसव्वाते ॥ ३९ ॥ षट्सुमिथ्यादृष्टिसास्वादनमिश्राविरतदेशविरतप्रमत्तलक्षणेषुसर्वा षटपिकृष्ण १ नील २ कापोत ३ तेज ४ पद्म ५ शुक्ल ६ लेश्याभवन्ति, ययप्यामि अविरतसम्यक्त्वपावदेवषड् लेश्याउक्ता साचप्रतिपद्यमानकापेक्षया, तेउतिग तेज पद्मशुक्ललेश्यालक्षणत्रिक इगिति एकस्मिन्प्रमत्तेभवति विशुद्धत्वात्षट्सुअपूर्वकरणादिसयोगिपर्यंतेषुशुक्लाएवभवति अयोगित्ति अयोगिन योगरहितत्वेनसिद्धा अप्ययोगिनएवेतितेअलेश्यालेश्यारहिता लेश्याचयोगप्रभवा तेननयोगरहिताना इहलेश्यानाप्रत्येकमसख्येयानिलोकाकाशप्रदेशप्रमाणान्यध्यवसायस्थानानि ततोमदाध्यवसायापेक्षयाशुक्ललेश्यादीनामपिमिथ्यादृष्टया कृष्णलेश्यादीनामपिप्रमत्तगुणस्थानकेपिसभवोनविरुध्यते इतिनिर्देवमुक्तागुणस्थानकेषुलेश्या साप्रतबधहेतवोवक्तमारभ्यते मूलहेतवोचत्वार मिथ्यात्व अविरति कषाया योगाश्च तत्रमिथ्यात्व अयथार्थावबोधपूर्वकतत्त्वनिर्धाररूपतच्चपचप्रकार अभिगृहेणेद एव दर्शन शोभन-

नान्यदित्येवरूपेणकुदर्शनविषयेणानिर्वृत्तमाभिग्रहिकं यद्वशाद्बोटि-
कादिकुदर्शनानामन्यतमद्धठेनगृण्हाति तद्विपरीतमनभिग्रहिकं य-
द्वशात्सर्वाण्यपिदर्शनानिशोभनानीत्येवमीपन्माध्य स्थ्यमुपजायतेत-
दनभिग्रहिकम्, अभिनिवेशकृज्ज्ञात्वामिथ्याकदाग्रहरूपयथागोष्ठमा-
हिलादीनां सांशयिकंयच्छंशयेननिर्वृत्तयद्वशाद्भगवदर्हदुपदिष्टेष्वपि
जीवादितत्त्वेषुसंशयउपजायते तथानजानेकिमिदंभगवदुक्तं धर्मा-
स्तिकायादिसत्यमुतान्यथेति अनाभोगयदनाभोगेननिर्वृत्तशून्यतारूप
तच्चैकेन्द्रियादीनामितिपंचप्रकारमिथ्यात्वमिति द्वादशप्रकाराअवि-
रतिं कथमित्याह मन स्वात करणानिइन्द्रियाणिपंचतेषांस्वस्वविषये-
प्रवृत्तमानानां अनियमोऽनियंत्रण इत्यनेन रसनेन्द्रियाविरतौमृषावाद-
संग्रह मन स्पर्शनेन्द्रियाविरतौस्तेयोपदान सकलेन्द्रियाविरतौमैथु-
नस्यसंग्रह मनसअविरतौपरिग्रहाश्रव रसनेन्द्रियाविरतौरात्रिभोज-
नाश्रव तथाषण्णांपृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसरूपाणांयाचाहिंसारू-
पाअविरति षड्एवंद्वादशज्ञेया कष संसारस्यायः कषाय कषाय
सहचरितानोकषाया कषायतुल्याइत्यर्थ कषाया षोडशअनंता-
नुबन्ध्यऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनक्रोधमानमायालोभाख्यास्ते-
षांकषायाणांसदृशा कषायवर्तित्वेतीव्रमंदभेदात्वेनोकषाया हास्यर
त्यरतिशोकभयजुगुप्साख्रीपुनपुंसकरूपानवइत्येव पंचविंशतियोगा
पंचदशापूर्वंव्याख्यातस्वरूपाएवंमूलबंधहेतवश्चत्वार उत्तरत सप्त-
पंचाशद्भवति तन्मूलहेतुन्गुणस्थानेषुविभजयन्नाह इगत्ति एक-
स्मिन्मिथ्यात्वेगुणस्थानकेचत्वारोबंधहेतव अयमर्थ मिथ्यादृष्टि-
गुणस्थानकवर्तीजंतु ज्ञानावरणीयादिकर्मचतुर्भिर्मिथ्यात्वाविरति
कषाययोगलक्षणैश्चतुर्भि प्रत्ययैर्बध्नातिचतुर्षुसास्वादनमिश्राविरति-
सम्यग्दृष्टिदेशविरतरूपेषुमिथ्यात्ववर्जिताअविरतिकषाययोगलक्षणा-
स्त्रय प्रत्यया सतिभावनाचसास्वादनादिचतुर्षुगुणेषुवर्तमान ज-

तुरविरतिकषाययोगलक्षणैस्त्रिभिः प्रत्ययै ज्ञानावरणादिकर्मबध्नाति यद्यपिदेशेस्थूलप्राणातिपातविषमाविरतिरास्तिनयापिस्वल्पत्वान्नेहविवक्षिता सर्वविरताविवसर्वथाऽविरत्यभावइति पणत्ति पचसुगुणस्थानकेषुप्रमत्ताप्रूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायलक्षणेषुद्वौप्रत्ययौकषाययोगामिख्यौयस्यसद्विप्रत्ययोबधोभवति इदमुक्तभवतिमिथ्यात्वाविरतिहेतुद्वयस्यैतेष्वभावात् शेषेणकषाययोगप्रत्ययद्वयेनामीप्रमत्तादय कर्मबध्नतिइतियावत् तथानिषुउपशातक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेषुगुणस्थानकेषुएकएवयोगलक्षण प्रत्ययोयस्यसएकप्रत्ययोभवति एषुनिषुगुणस्थानेषुयोगप्रत्ययएवकर्मबध्नाति सातावेदनीयाख्यतदपिद्विसामयिकप्रकृतिप्रदेशलक्षणद्विविधबधकरोति । योगापयडिपएसठिइ अणुभागकसायाओइतिवचनात् अयोगिगुणे हेत्वभावान्नबधाभावइति ॥ ३९ ॥

टबार्थ —हवे गुणठाणे लेश्या कहे छे गुणठाणे मिथ्यात्वथी माडी छठा पर्यंत छ लेश्या छे सातमे अप्रमत्त गुणठाणे तेजो १ पद्म २ शुक्ल ए तीन लेश्या छे आठमाथी तेरमा पर्यंत छ गुणठाणे एक शुक्ल लेश्या छे अयोगी गुणठाणे लेश्या नथी लेश्या ते योगपरिणाम छे ते योग नथी ते माटे अयोगी ने लेश्या नथी ते योग विना होये नहीं हवे बध हेतु कहे छे तिहा मूल बधहेतु च्यार छे। मिथ्यात्व १ अविरत २ कषाय ३ योग ४ ए च्यार हेतु छे । ते हवे गुणठाणे कहे छे एक मिथ्यात्व गुणठाणे च्यार बध हेतु छे पछी सास्वादन १ मिश्र १ अविरति १ देशविरति १ ए च्यार गुणठाणे अविरति १ कषाय २ योग ३ हेतु ए तीन छे। पछी पण कहेता पाच गुणठाणे प्रमत्त १ अप्रमत्त १ अपूर्व-

करण १ अनिवृत्तिबादर १ सूक्ष्मसपराय १ ए पाच गुणठाणे कषाय तथा योग ए बे बन्ध हेतु छे। पछी तीगुणेसु कहेता तीन गुणठाणे उपशांतमोह १ क्षीणमोह १ सयोगीकेवली १ इणे तीने एक योग प्रत्ययीयो बन्ध हेतु छे ॥ ३९ ॥

पणपन्नपन्नति(य)छहीय, चत्तगुणचत्तछचउदुगवीसा।
सोलस(दस)नवनवसत्त, हेउणोनउअयोगम्मि॥४०॥

टीका—अथ गुणस्थानेपुत्तरहेतुनाह ॥ पणपन्नपतेत्यादि- मिथ्यादृष्टौआहारकशरीर आहारकमिश्रलक्षणमिश्रद्विता शेषा पचपचाशद्धेतव सति तेचामीपचमिथ्यात्वअविरतिद्वादश कषाय- पचविंशति योगास्त्रयोदश सास्वादनेपचमिथ्यात्वोना पचाशद्धे- तवोभवति मिश्रेत्रिचत्वारिंशद्धयहेतवोभवति औदारिकमिश्रवैक्रिय- मिश्रलक्षणमिश्रद्विककार्मणशरीर अननानुबधिनस्त्रिविनाइयमनभा- वना "नसम्ममिउोकुणइकालमिति" वचनात् सम्यग्मिथ्यादृष्टौ परलो- कगमनाभावात् औदारिकमिश्रवैक्रियमिश्रकार्मणअननानुबन्धुदया- भावात् अनतानुबधिचतुष्यनास्ति । अतएतेषुसप्तसुपूर्वोक्तापा पचाशतोऽपनीतेपुशेषास्त्रिचत्वारिंशद्धयहेतवोमिश्रेभवति । अविर- तौचपरलोकगमनसभवात् पूर्वोपनीतमौदारिकमिश्रवैक्रियमिश्रकार्म- णचपूर्वोक्तायात्रिचत्वारिंशतपुन प्रक्षिप्यते ततोअविरतेषट्चत्वा- रिंशद्धयहेतवोभवति "गुणचत्तेति" देशे देशविरत एकोनचत्वारिंश- द्धयहेतवोभवति, नसारायम‥पाअविरतिऔदारिकमिश्रकार्मणअप्रत्या- ख्यानचतुष्टयचेति ततनसासयमत्तु बहुच्छतकत्रूणात्वस्यसकपजत्र- साविरतिगमात् गृहि गामशक्यपरिहारत्वेनशक्यपरिहारत्वेनसत्यप्या- रभजत्रमाविरतौ तथापिनविवक्षिता कार्मणौदारिकमिश्रौतु विग्रहग-

त्यपर्याप्तावस्थायाचदेशविरत्यभावान्नसभवत द्वितीयकपायस्याप्य-भानुदयात् उक्तचावश्यकनिर्युक्तौ बीयकसायाणुदए अपच्चक्खाणावरणनामधेज्जाण देसविरइनउलहृति १ तदभावेएवतत्प्रादुर्भाव तत एवेसप्तपूर्वोक्ताया पदचत्वारिंशतोऽपनीयते तनएकोनचत्वारिंशद्वधहेतव शेषा देशविरतेभवति तथापड्विंशतिबधहेतव प्रमत्तेभवति इदमनहृदय प्रमत्तगुणस्थाने एकादशयाअविरति प्रत्याख्यानावरणचतुष्टयचनसभवति आहारकद्विकचलब्धुपयुक्तस्यसभवतिअत पूर्वोक्तापाएकोनचत्वारिंशत पचदशकेऽपनीतेद्विकेचतत्रमक्षिप्तेषड्विंशतिर्बंधहेतव प्रमत्तेभवति, तथाऽप्रमत्तस्यलब्ध्यनुपजीवनेनाहारकमिश्रवैक्रियमिश्रलक्षणद्विकरहिताश्चतुर्विंशतिबधहेतवो अप्रमादेगुणस्थानकेभवति, अपूर्वकरणेपुन सैवचतुर्विंशतिवैक्रियमिश्रलक्षणाद्विकरहिताद्वाविंशति बंधहेतवोभवति एतेपूर्वोक्ताद्वाविंशति हास्यरत्यरतिशोकभयजुगुप्सालक्षणारहिता षोडशअनिवृत्तिवादरेसभवति तेएवषोडशवेदत्रिकस्त्रीपुनपुसकलक्षणसज्वलननिकसज्वलनक्रोधमानमायालक्षणतेनविनादशबधहेतव सूक्ष्मसपरायेभवति तेएवदशलोभरहितानवबधहेतव उपशातमोहेक्षीणमोहेचभवति कपायोदयरहितत्वमेवानयो तथौदारिकद्विककार्मणसत्यमनोयोगअसत्याअमृपामनोयोग सत्यवचनयोग असत्याअमृषावचनयोग एवसप्तहेतव सयोगिनयोदशमेसभवति भावनाचऔदारिकतनुवर्तमानऔदारिकमिश्रतुकेवलिसमुद्घातद्वितीयषष्ठसप्तमसमये कार्मणतुसमुद्घातावसरेतृतीयचतुर्थपचमेमनोयोगावलननतुमन पर्यवज्ञानानाक्षेत्रान्तरस्थितानाकृनमश्नानाउत्तरदानकालेवाग्योगप्रवृत्तिस्तुप्रसिद्धैवन अयोगित्ति अयोगिगुणस्थानकेनसतिबधहेतवइति ॥ ४० ॥

टवार्थ —हवे गुणठाणे उत्तर हेतु छे ते कहे छे, ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे ते मिथ्यात्वना ५ भेद छे, अविरतिना १२ भेद छे, कषायना २५ भेद छे, योगना १५ भेद छे, एवं सर्व सत्तावन भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे आहारक २ आहारकमिश्र नथी तेणे पचावन हेतु छे ॥ ५ मिथ्यात्व । अविरति १२, कषाय २५, योग १३ सास्वादन गुणठाणे पचास हेतु छे, पांच मिथ्यात्व नथी, बार अविरति, पचवीस कषाय, १३ योग पचास हेतु छे मिश्रगुणठाणे अनंतानुबंधी ४ औदारिकमिश्र १ वैक्रियमिश्र १ कार्मण १ ए सात काढीइ तेवारे अविरति १२, कषाय २१, योग १०, ए तेतालीस बंध-हेतु छे चोथे समकित गुणठाणे औदारिकमिश्र १, वैक्रियमिश्र १, कार्मण १ ए तीन मेलीये एतले अविरति १२, कषाय २१, योग १३, ए छेतालीस बंधहेतु छे पांचमे गुणठाणे अप्रत्याख्यानीया ४, त्रसनिअविरति १, औदारिकमिश्र १, कार्मण १, ए सात काढिइ तेवारे ओगणचालीस हेतु छे अविरति ११, कषाय १७, योग ११ छे, छट्ठे प्रमत्तगुणठाणे अविरति ११, प्रत्याख्यानीया ४, ए १५ काढीइ तेवारे आहारक बे मेलीये तेवारे छवीस हेतु छे तेर कषाय १३ योग, सातमे गुणठाणे आहारकमिश्र १ ए बे काढीये तेवारे चोवीस बंधहेतु छे आठमे गुणठाणे वैक्रिय १, आहारक १ ए बे काढीये तेवारे बावीसबंध हेतु छे नवमे गुणठाणे हास्य छ काढीइ तेवारे सोळ हेतु छे पछी दशमे गुणठाणे तीन कषाय तीन वेद काढीये तेवारे दश बंधहेतु छे पछी लोभ काढीये तेवारे इग्यारमे बारमे नव बंधहेतु छे, तेरमे गुणठाणे सात योगना हेतु छे, तथा अजोगीगुणठाणाने विषे हेतुबंध कोइ नथी ॥४०॥

मिच्छेपणमिच्छता, अनिरइसमत्तवारअविरइओ ।
देसेतसवहहीणा, योगापुव्विंविनेयव्वा ॥ ४१ ॥

टीका—अत्रवीर्यस्यशरीरपर्या- भाषापर्याप्ति मन पर्याप्ति उदयेनगृहीततद्वर्गणावलवित्वकायवाग्मनोयोगाइति चेतनावीर्यादीनामिथ्यात्वकषायेन्द्रियविषयोदय यासानातन्मया प्रवृत्ति मिथ्यात्वादिहेतव क्षयोपशमीभूतचेतनावीर्या दीना उदयाश्रितप्रवृत्ताना-हेतुत्व पपदेश मिथ्यात्वादीनाप्रकृतीनास्वोदयावृतसम्यग्दर्शनादिरूपाणाउदयत्व पपदेश यावत्कषायोदयस्तावस्थित्यनुभागबधौ यावद्योगप्रवृत्तिस्तावत्प्रकृतिप्रदेशबधौ ॥ उक्तच ॥ योगापयडिपएसठिई अणुभागकसायाओ इतिमिच्छाति मिथ्यात्वेपचमिथ्यात्वभेदा नोपरितनेष्वगुणेषुद्वादशअविरतय अविरतसम्यक्त्वयावत्लभ्यते देशविरतिगुणेत्रसवधरहिताएकादशअविरतय प्राप्यते नोपरिगुणेष्वयोगा पूर्वगुण २१ केषुउक्तास्तद्वदेवज्ञात या ॥ ४१ ॥

टवार्थ —मिथ्यात्व गुणठाणे पाच मिथ्यात्व छे, पछी मिथ्यात्व नथी अविरतसमकीत गुणठाणेसीम बार अविरति छे देशविरति श्रावकपणो प्रगटे, थूलप्राणातिपात विरमणव्रत लीधो तेहने त्रसनी हिंसा नथी इग्यार छे छ्डायी पछी अविरति नथी, योग ते पूर्वे कह्या छे तिम जाणवा ॥ ४१ ॥

आइदुगेपणवीस, अणुतिणुइगतीसमीससम्मंमि ।
देसेसत्तरवियविणु, तिअविणुतेरसगुणतिममि॥४२॥

टीका—कषायागुणेषुविभजयन्नाह आइदुगेत्ति॥४२॥आदिद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानद्वयेपचविंशतयएवकषाया.—

सति तथा मिश्रेसम्यक्त्वेचअनंतानुबंधिचतुष्टयरहिताएकविंशतिक-षायाभवति देशे देशविरताख्येसप्तदशकषाया द्वितीयाअप्रत्याख्यानक्रोधमानमायालोभरहितास्त्रयोदशकषाया गुणातिगाम्मिति गु-णनिकेप्रमत्ताप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेसति ॥ ४२ ॥

टबार्थ —आदि बे गुणठाणे पचवीस कषाय छे मिश्र गुणठाणे तथा समकित गुणठाणे अनंतानुबंधी च्यार विना एकवीस कषाय छे देशविरति गुणठाणे बीजा अप्रत्याख्यानी चोकडी विना सत्तर कषाय छे तीजी चोकडी विना तेर कषाय छट्ठे सातमे आठमे तीन गुणठाणे छे ॥ ४२ ॥

अछहासानवमेसग, वेयसजलणति(हीण)इगसुहुमे।
थोवुनसताखीणा, सखगुणापत्तपित्रसता ॥४३॥

टीका—अछहासाइति नवमेअनिवृत्तिबादरे सगत्ति सप्तहास्यषट्करहिताहेतव सति, वेदत्रिकसज्वलनत्रिकहीन इगत्ति एकएवसज्वलनलोभाख्यसूक्ष्मेसपरायेदशमेगुणस्थानेहेतु प्राप्यतेतत्र परकषायोदयाभावात् नैवकषायोदयइति ॥ उक्तंच ॥ हेतुस्वामित्व गुणस्थानकेषु सप्रतिगुणस्थानकेषुवर्त्तमानजंतूनामल्पबहुत्वमाह यो-वउवसतत्ति स्तोकाउपशांतमोहगुणस्थानवर्त्तिनोजीवा यतस्तेप्रविशन्त प्रतिपद्यमानकाएकस्मिन्समयेउत्कर्षेन चतु पंचाशत्प्रमाणा-एवप्राप्यते पत्तत्ति प्राप्ता स्तद्गुणस्थानवर्त्तिनस्तूत्कर्षेत शतपृथक्त्वप्रमाणा प्राप्यतेतेभ्य सकाशात्क्षीणमोहा सख्येयगुणापतस्तेप्रतिपद्यमानका एकस्मिन्समयेअष्टोत्तरशतप्रमाणालभ्यते तत्रस्था-स्तुउत्कर्षत सहस्रपृथक्त्वप्रमाणाएवअत्रनतुप्रतिसमयचतु पचाशद्उपशा तेअष्टोत्तरशतक्षीणप्रतिमानकभवतितर्हिअसख्येयसमयप्र-

माणाभ्याप्राप्तास्तयाउत्कर्षत असरयेया कथनभवतितन्नोच्यनेनै- वयत प्रतिपद्यमानकानाजवन्यन एकसमय उत्कृष्टन अष्टौसमया- एवप्रतिपद्यमानका प्राप्यते नापरेतन जघन्यनएक उत्कृष्टत सरयेयाअसरयेया समयाअतरभवति "बत्तीस" इत्यादि गाथा व्या- ख्यानेसिद्धदण्डिकासिद्धप्राभृतविशेषणवत्यादिषुज्ञेय तेनात्रसरयेयाए- वजीवानासरयेयइति । एतच्चोत्कृष्टपदापेक्षयोक्तमन्यथाकदाचिद्वि पर्ययोपिस्यात् कदाचित्स्तोका क्षीणमोहा बहवस्तुउपशान मोहा कदाचित्क्षीणमोहाएवनोपशाता कदाचिदुपशाताएवन- क्षीणा अनयो सानन्त्वादितिज्ञेयनयानेभ्य क्षीणमोहेभ्य सका- शात् ॥ ४३ ॥

टबार्थ —हास्य षटक विना नवमे अनिवृत्ति बादर गुणठाणे सात कषाय छे वेद ३ सज्वलन तीन उदयमायी गया एटले दशमे गुणठाणे एक कषाय छे पछी कषायनो हेतु अभाव छे हवे गुणठाणे अल्प बहुत्व कहे छे, सर्वथी उपशातमोह गुणठाणे वर्तमान जीव थोडा छे, जे ए गुणठाणे एकसमये उत्कृष्टा चोपन जीवनी प्रवेशना छे तेमाटे तेहथी क्षीणमोही जीव सख्यातगुणा छे जे इहा उत्कृष्ट प्रवेशना एकसोआठनी छे तेणे गुणठाणे प्राप्त जीव तथा पेसता जीव ए रीते छे ॥४३॥

सुहमानियदिअपुवा, समअहिया सेणियुगलसुविसुद्धा।
उवसामगाकिलठा, जीवालभ्भंतितिगुणेसु ॥४४॥

टीका—सूक्ष्मसपरायानिवृत्तिबादरापूर्वकरणवर्त्तिनोजीवाविशे- षाद्धि स्वस्थानेपुनश्चिन्त्यमानास्त्रयोपिसमास्तुल्याइतिकथमित्याह- एषुजीवास्त्रिप्रकारालभ्यते तेचश्रेणियुगला श्रेणियुगलस्थानोपशम-

श्रेणिस्था क्षपकश्रेणिस्थाश्चविशुद्धा इतिश्रेणिमारोहमाणा निमलनिर्मलतरपरिणामत्वात् सुविशुद्धाउच्यतेपुन उपशामका क्लिश्य सक्लिश्यमाना प्रतिपतन्तोऽप्यत्रप्राप्यते,उपशान्तमोहत प्रतिपातोद्विविध उपशान्ताद्धाक्षयात् तत्रएकान्तशान्त दशमेदशमात्रवमेनवमादष्टमेएवंयथानक्रमचतुर्थेतत्र साम्यादनेनत प्रथमेव्रजति यस्तुआयु क्षयात्पतनिसएकादशेमृत चतुर्थमेवगच्छति नान्य । इतिप्रतिपातेअपिउपशामकाजीवा लभ्यते एवंपुनिगुणस्थानेषु इति, ननुअविशेषोक्ता निमकारत्वेनकथनसरवेयगुणा यत अष्टोत्तरशतक्षपका विशुद्धा चतु पचाशदुपशामका विशुद्धा, पुन सक्लिश्यमानाउपशामकाअपिभवन्तस्तर्हिद्विगुणत्वेनसरवेयगुणा सभवति तत्कथमधिकाइतिउच्यते उपशामका पतन सर्वे क्रमेणपतन्ति केचिदुपशान्तेआयु क्षयेतत्र्यगुणनजनितेएतेएपुनप्राप्यते अतोद्विगुणत्वाभावात् अधिकायुक्ता ॥ ४४ ॥

टबार्थ —तेहथी सूक्ष्मसपराय तथा अनिवृत्तिबादर तथा अपूर्वकरण ए तीन गुणठाणे वर्तमानजीव तेहथी थोडले खीणमोहथी ए गुणठाणे माहोमाहे सम छे, अधिकार छे ए गुणठाणे उपशमश्रेणि चढता तथा पडता पामीये छे, माहोमाहे सम छे बराबर छे उपसमश्रेणि चढता क्षपकश्रेणि चढता ए बे ते शु विशुद्धजीव कहीये जे निर्मलपरिणाम छे, उपशमश्रेणिथी पडता ए गुणठाणे वर्तमानजीव पिण सक्लेशी कहीये जे शक्ति पल्टे माटे ए तीन गुणठाणे ए रीते जीव पामीये ॥ ४४ ॥

योगिअपमत्तइयरे, सखगुणादेससासणामीसा ।
अविरइअयोगीमिच्छा, असखचउरोदुवेणता ॥४५॥

टीका—इतितेभ्य सूक्ष्मादिभ्य सयोगिकेवलिन सरयातगुणास्तेषा कोटिपृथक्त्वेनलभ्यमानत्वात् प्रतिपद्यमानकास्तुअष्टोत्तरशत अस्मितेनप्राप्यमाणत्वात्तेभ्योऽप्यरत्तिप्रनियोगिन प्रमत्ता सख्येयगुणा प्रमादवतोनिर्ग्रंथानहव कोटिसहस्रपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात्, प्रमत्तयप्रतसज्ञिकर्मभूमिजमनुष्याणामेवयोग्यत्वात् सरयेयगुणत्वतेभ्य देशविरताजीनाअसख्येयगुणास्तिरश्चामप्यसख्यातानादेशविरतिभावात् तेभ्य सास्वादनाअसरयेयगुणा अनकदाचित्सास्वादना सर्वथनभवति यदाभवति तदाजघन्यत एकोद्वोचउत्कर्पतस्तुदेशविरतेभ्योप्यसरयेयगुणा चनसृषुगतिषुप्राप्यमाणत्वात् अनोपशमश्रेणित प्रतिपतितापेक्षयात्वसरयेय त्रासभवस्तथापिग्रंथिभेदसभवोपशमात्पतनोऽसख्येयाभवति, इदकर्मग्रथरहट्टीकानोज्ञेय तेभ्योपिमिश्राअसख्येयगुणा सास्वादनाद्वायाउत्कर्षत पडावलिकामानतयास्तोकत्वात्मिश्राद्धाया पुनरतर्मुहूर्त्तप्रमाणतयाप्रभुतत्त्वात् तेभ्योप्यसरयेयगुणाअविरतसम्यग्दृष्टय तेषागतिचतुष्टयेपिप्रभुतनयासर्वकालसभवात् तेभ्योप्ययोगिकेवलिन भवस्थाभवस्थभेदभिन्नाअनन्तगुणा सिद्धानामनतत्वात्, भवस्थायोगिनस्तुक्षीणमोहतुल्याएवतेभ्योऽनन्तगुणामिथ्यादृष्टय साधारणवनस्पतीनासिद्धेभ्योप्यनन्तगुणत्वात् तेषाचमिथ्यादृष्टित्वादिति तदेवमभिहितगुणस्थानवर्त्तिजीवानामल्पबहुत्वम् ॥ ४५ ॥

टबार्थ —तेहथी योगी तेरमा गुणठाणानाजीव सख्यातगुणा छे तेहथी इतर कहेता प्रमत्त गुणठाणाना जीव सख्यातगुणा छे ए सर्व गुणठाणे सन्निपर्याप्ता मनुष्य जीव पामीये छे, ते सख्यातगुणा छे तेमाटे तेहथी देशविरति असख्यातगुणा छे, तिर्यंच मनुष्य ए २ गतिना जीव पामीये छे, तेहथी सास्वा-

दन गुणठाणे जीव असख्याता छे, ए च्यार गतिमे पामीये तेहथी मिश्रगुणठाणे वर्नमान असख्यातगुणा छे, जे कारणे सास्वादनथी मिश्रगुणे रहेवानो काल घणो छे, तेहथी अविरति समकित गुणठाणे वर्तमान जीव असख्यात गुणा छे, जे एहनो उत्कृष्टकाल बासठि सागरोपम छे, तेहथी अयोगीजीव अनन्तागुणा छे जे सिद्ध अयोगी छे ते माहे गण्या छे, तेहथी मिथ्यात्वजीव अनतगुणा छे, जे निगोदीया सर्व मिथ्यात्वि ते सर्व गण्या छे, ए छ मध्ये च्यार सख्यातगुणा छे, अने बे बोल अनता छे ॥ ४५ ॥

तिगपणचउतिगभावा, तिअट इग दोगुणेसुमुलिल्ला। अन्नाणस्सयउदओ, तिग धार गुणमिमयभेया ॥४६॥

टीका—इहेदानीभावानास्वरूपकथयन्नाह ॥ भावाइतिभवनलक्षणा जतो परिणतिविशेषास्तेमूलन पच सान्निपातकस्तुमयोगजन्यत्वात् उत्तरोपिच्चार यामेदज्ञापनार्थपष्ठउक्त उपशमक्षायिकक्षायोपशमिकौदयिकपारिणमिकाश्चपच पष्ठ सान्निपातिकइतितनउपशमनउपशम कर्मणोऽनुदयावस्थाभस्मपटलच्छन्नाग्निवत् मोहनीयस्यकर्मण विपाकप्रदेशरूपनयाद्विविधस्यापिउदयस्योपशमनउपशम द्विविध, दर्शनचरणभेदान्तनानतानुबधिचतुष्टयदर्शनमोहनिकस्योपशमनाद्युपशमसम्यक्त्व अनकेचित् अनतानुबन्ध्युदयाभावनोऽशतश्चारित्रप्राकट्यमिच्छति तदसन् अनतानुबधिविगमेतुचारित्ररुचिरेवन चारित्रचारित्रमोहप्रकृतीगृहित तद्यात्मन स्थैर्यत्वव्वसकारित्वात्नगरद्वारपिधानवद्रोधकत्वाच्चचारित्रमोहोपशमनाद्युपशमचारित्रमिति तथानम्यात्यनाऽत्यय क्षय घातिकर्मप्रकृतीनायद्यद्-

गुणरोवकानासत्तानोसर्वथाक्षयेयन्निवृत्त दर्शनादिगुणरूपह स क्षायिक नवविध । यथाज्ञानावरणस्यसर्वथाक्षयेकेवलज्ञानजीवादिवस्तुन विशेषधर्मावबोधक दर्शनसमकक्षयेक्षायिकसम्यक्त्व तत्त्वरुचिरूपनिरतिचाररूपचारित्रमोहनीयक्षयेक्षायिकचारित्र सन्प्रवृत्तिरूपस्वधर्मैकत्वरूपस्थिरतास्वभावानुभवलक्षणमप्रतिपातिचारित्रदानांतरायादिक्षयेक्षायिकदानादिकपचप्रकारदानादिस्वरूपतुनिशेषावश्यकनोज्ञेय उदीर्णानाक्षय अनुदीर्णानामुपशम तेननिर्वृत्त क्षायोपशम भावनाचयतस्तत्राप्युदितक्षीणअनुदितचोपशांतमित्यमोच्यते क्षयोपशमेवुदयोप्यस्तिप्रदेशनपाककर्मणोवेदनानुज्ञानात् नत्वसौगुणविघातायभवतिविपाकवेदनतुनास्येति, उपशमेतुप्रदेशकर्मापिनानुभवति क्षयोपशमेतुप्रदेशवेदनसद्भाव तेनक्षयोपशमेननिर्वृत्त क्षायोपशमिकोभाव तस्यभेदाअष्टादश, ज्ञानचतुष्टयअज्ञानत्रयदर्शनत्रय क्षयोपशमिदानादिपचक क्षयोपशमसम्यक्त्व देशविरति सर्वविरति क्षायोपशमिकाइत्येवमष्टादश क्षयोपशमसम्यक्त्वादयोहितद्विघातकप्रकृतिप्रदेशोदयेनसातिचारनाभवति कर्मणामुदयेननिर्वृत्त औदायिकस्तच्च एकविंशतिप्रकार अन्नाणमसिद्धत्तादसयमलेसाकषायगईवेआ मिछमित्यनोच्यते कर्मणामष्टानाहाविंशशतनप्रकृत्युदयोदय सएवएकविंशतिप्रकारेकथसगृहीतदुच्यते अज्ञानग्रहणात् ज्ञानदर्शनावरणदर्शनमोहनीयानासग्रह गतिग्रहणान्शेषनामगोत्रवेदनीयायुषिवाक्षिप्तानि भवधारणकारणत्वादेपाकर्मणामितिलिंगग्रहणात्हास्यादिग्रह शेषौदयिकस्यासिद्धत्वेसग्रह , ननुचकर्मप्रकृतिभेदानाद्वाविंशत्युत्तरशतप्रकृतिगगनयाप्रसिद्धमाम्नायेनचतनवेछया परिपठितास्तदेतत्कथमुच्यतेउच्यतेनामकर्मणिमन पर्याप्तिनामपर्याप्तिश्चकरणविशेषोयेनमनोयोग्यान्पुद्गलान्आदायचिंतयत्विति चमन्यमाना पुद्गला सहकरणान्मनोयोगउच्यतेमनोयोगपरिणामश्चलेश्या,

अत मन पर्याप्तासगृहीतत्वादितिज्ञेय एकेंद्रियादीनाभावयोगापेक्षयालेश्या जोगप्पभवालेश्याइति पचमागवचनात् पारिणामिकस्त्रिभेद जीवत्वभ यत्वअभ यत्त्वभेदात् जीवभावेजीवत्व जीवत्वग्रहणेनअजीवत्वादीनामग्रह भ यासिद्धिर्यस्यासौ भ य भ य एवभ यत्व अभ य सिद्धिगमनायोग्य कदाचिदपियोनसेत्स्यत्यभव्यएवत्वभ यत्वइतित्रिपचाशद्भेदा उत्तराज्ञेया । भावानामिति तिगपणइति भावाइतिपदसर्वनयोज्य तिगभावा पणभावाचउभावानिगभावाएवतिअडत्तिगुणेसुपदसर्वत्रयोज्य तिगुणेसुइत्यनेनत्रिगुणेषुमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेषु त्रिगभावाइतिसत्रय त्रयोभावा क्षायोपशमौदयिकपारिणामिका तत्रक्षयोपशममत्यज्ञानादिक औदयिकमनुष्यगतिमिथ्यामोहमिश्रमोहलक्षणपारिणामिकजीवत्वादिएवज्ञेयअष्टसुगुणेषु अविरतसम्यक्त्वदेशविरतप्रमत्ताप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशातमोहरूपेषु "पण भवति"पचापिभावा सभवति तेचानेकजीवापेक्षयाकस्यचित् जीवस्यक्षायिकसम्यक्त्वोपशमचारित्रवत् एकस्यापिपचभावा सभवति क्षपकश्रेणौतुचत्वारएवभावा तस्योपशमाभावात् "दुगत्ति" एकस्मिन्क्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानेचउभावाचत्वारोभावाउपशमरहिताभवति "दोगुणेसु" द्वयोर्गुणयोरित्यर्थे द्विवचनेबहुवचनमाकृतत्वात् सयोगिकेवलिअयोगिकेवलिगुणयो त्रिगभावा त्रयोभावा क्षायिकौदयिकपारिणामिकयुक्ता भवति मूलिल्लाइतिदेशीवचन मूलाएवेति अत्राशयभेददर्शयन्नाह अन्नाणरासत्ति अज्ञानत्वक्षयोपशमभावेप्युक्त पुनरौदयिकेभावेअज्ञानस्योपादानअनक मतिविशेष उच्यते मत्यावरणादीनाक्षयोपशमेनअवबोधेजातेपिमिथ्यात्वोदयात्विपर्यासअयथार्थज्ञानअज्ञान तच्चक्षायोपशमिक उपयोगस्यतदावरणकर्मक्षयोपशमोत्पन्नत्वात् विपर्यासश्च मिथ्यात्वसहकारात्यत्पुन अन्नाणतद्यज्ञानावरणोदयेनसर्वथाज्ञान-

स्यआवरणरोव अत्यनावरो रूपअज्ञाण तत्औदयिकभावेज्ञान-भ्यवेनअज्ञाणस्सइतिअज्ञानस्योदय निगगुणम्मि निघुमिथ्यात्वसा-स्वादनमिश्रलक्षणेषुअस्ति केचित् पुन केचित्सूक्ष्म यार याकरणक्त-शला क्षीणमोहपर्यंतेअज्ञानस्योदयमिन्डन्ति ज्ञानावरणादर्शनावर-णकर्मोदयावत यावनुज्ञानदर्शनचेतनाशनावत् अज्ञाणतच्चकेवलज्ञा-नप्राकट्येएवसर्वचेतनाप्रागभावस्ततनावा रूअज्ञानसभवइतिदि-गूपत्राअनसप्रमति तच्चतेषामेवप्रमदति मयमेअस्ति नैगमनयमते-सम्यग्ज्ञानेजातेक्षायोपशमिकज्ञानस्यविपर्यासाभावात् सम्यक्त्वेना-ज्ञानइति एवमूलमतेतुसर्वयाज्ञानावरकपटलाभावेएवअज्ञाणाभाव-इतिस्वयउह्यम ॥ ४६ ॥

टबार्थ —हवे भाव कहे छे तिहा मूल भाव पाच छे उपशम भावना २ भेद छे उपशमसमकित, उपशमचारित्र क्षायिकभावना ९ भेद छे क्षायिकसमकित १ क्षायिकचारित्र १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ क्षायिकदानादि ५ लब्धिक्षयोपशम भावना भेद १८, उपयोग १० दानादिलब्धि ५ क्षयोपशमसमकित १ देशविरति १ सर्वविरति १ एव १८ औदयिकभावना भेद २१ अज्ञाणअसिद्धत्व १ असयम १ लेश्या ६ कषाय ४ गति ४ वेद ३ मिथ्यात्व १ एव २१ पारिणामिक भावना भेद ३ भव्यत्व १ अभव्यत्व १ जीवत्व १ ए तेपन्न उत्तर भावना भेद थया हवे गुणठाणे मूल भाव कहे छे मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ ए तीन गुणठाणे क्षयोपशम १ उदय १ पारिणामिक १ ए ३ भाव छे समकितथी माडी इग्यारमा पर्यंत आठ गुणठाणे पाच भाव छे एक क्षीणमोहे उपशम विना च्यार भाव छे सयोगी केवली अयोगी केवली

गुणठाणे क्षायिक १ औदयिक १ पारिणामिक १ ए त्रीन भाव छे औदयिक भावनो भेद जे अज्ञान केइ आचार्य नो तीन गुणठाणा सीम माने छे केटलाएक आचार्य ज्ञानावरणी दर्शनावरणीनो उदय तेहने अज्ञाण कहे छे ते माटे बारमा गुणठाणासीम एहनो उदय माने छे जे क्षीणमोहने अते ए खपे अज्ञान ३ लीधा ते क्षयोपशमभावना भेद छे, ते विपर्यासयुक्त जाणवा अने औदयिक मध्ये जे अज्ञाण ते जे अजाण्यो भाव कह्यो ते ज्ञानावरणीना उदय तेहनो भेद औदयिक भावमा कह्यो छे ॥ ४६ ॥

चउदुगदुगपणचउतिग, तीसातीसासगठदुगवीसा।
वीसगुणवीसतेरस, बारसभावा गुणठाणे ॥ ४७ ॥

टीका—अथगुणस्थानेषु उत्तरानिप भावभेदान् यथायोगविभजयन्नाह ॥ चउदुगति अवतीसाइनिपदानूसारन चउतीसाइति- प्रथमेमिथ्यात्वेगुणस्थानकेचतुस्त्रिंशद्भेदाभावानाभवनि अवक्षयोपशमस्यअज्ञाननिक चक्षुर्दर्शनद्वय इनिपचक अवधिदर्शन विभंगेअधिकृनमपिकर्मग्रथे नाधिकृत अज्ञाणदुदसाआइमदुगेइतिवचनात् दानादिलब्धिपचक एव १० दशौदयिकस्यैकविंशानि परिणामकस्यत्रयोपिएवचतुस्त्रिंशद्भेदामिथ्यात्वेभवति "दुगतीसत्ति" सास्वादनेद्वात्रिंशद्भेदा भावाना क्षयोपशमस्य ते एव दश १० औदयिकस्यमिथ्यात्वरहिताविंशति २० पारिणामिकस्य अभव्यत्वरहितौ द्वौअभव्यत्वमिथ्यात्वएवसभवात् एवद्वात्रिंशति पुन दुगतिसत्ति मिश्रेद्वात्रिंशत्ताएसास्वादनेनोक्ता अनकेचितृमिथ्यात्वस्यातेमिश्रोदयेन त्रयोस्त्रिंशदिच्छन्ति तदपिसम्मत, तथापिगाथायामिश्रमोहस्य-

सग्रहात् नेह व्यारयात केचित् ते मीसिर्मीसइति वचनमाल्कय सप्त-त्रिंशद्भेदा मिश्रे वन्ति, तदप्यपेक्ष्यमेव यत श्रुतसम्यग्दर्शनाना-नज्ञान नादसणिरसनाणमिति उत्तरा यपनवास्याऽज्ञेय, अनोद्गत्रिंश-द्भेदाएव अविरतसम्यग्दर्शनगुणे "पणतीसत्ति" पचत्रिंशद्भेदा भा-वाना,तत्रोपशमसम्यक्त्व १ क्षायिकसम्यक्त्व १ क्षयोपशमेतुक्षयो-पशमसम्यक्त्व १ ज्ञानत्रयदर्शनत्रय ६ दानादिलब्धिपचकइति-द्वादश १२ अज्ञानमिथ्यात्वरहिताएकोनविंशतिरौदयिकस्य, अभ-व्यत्वरहीनौद्वौपारिणामिकस्य, एवपचत्रिंशद्भेदाभवति अत्रौदयिके-मिथ्यात्वस्यस्थाने केचित्सम्यक्त्वमोहोदयक्षिपति तदपिसम्मतमिति देशविरतिगुणे "चउतीसत्ति" चतुस्त्रिंशद्भेदाभवति,तत्रोपशमसम्यग्-दर्शन १ क्षायोपशमस्य द्वादश ता एवदेशविरतिमिलनेत्रयोदशऔ-दयिकस्य,देवगतिनरकगत्यपगमेसप्तदशपारिणामिकस्य,द्वौइतिप्रमत्ते "तिगतीसत्ति" प्रमत्तेत्रयस्त्रि शद्भेदाभावानाभवति, तत्रपूर्वोक्ताया चतुस्त्रिशत देशविरति रसयमतिर्यग्गतिश्चापनीयते पुन मन पर्यवज्ञानसर्वविरति क्षिप्येते तदात्रयस्त्रिंशद्भेदा प्राप्यते, अप्रमत्तेइति-तथाऽप्रमत्तेसप्तमेगुणस्थानेत्रिंशद्भेदा भावाना, अत्रकृष्णनीलकापोत-इतिलेश्यात्रयाभावात्त्रिंशदिति, सगद्वउगवीसत्ति सप्त तथा अष्टे पदान्विंशतिसप्त इत्यनेनअपूर्वकरणेसप्तविंशति भावभेदाइति, अत्रतेज पद्मलेश्याक्षयोपशमापगमेसप्तविंशति , उपशमचारित्रेक्षिप्ते अष्टाविंशति , कर्मप्रकृतिकारस्तु उपशमचारित्रउपशातमोहेएवइ-च्छति, चारित्रमोहनीयप्रकृतीनावेद्यमानानानोपशम किंतुश्रेणाव-पिउपशमकएवगृहीतद्र", भावत्रिभग्यातुकडेइति यापात्, उपशा-मकस्तुउपशातइतिग्रहणेनगृहीतनदपिदेशमानमिति, दशमेसूक्ष्मस-परायगुणस्थाने " दुगवीसत्ति " द्वाविंशतिर्भेदाभावानाभवति, यतश्चवेदत्रिकसज्वलनत्रिकस्यानुदयेशेषा द्वाविंशति भवति, तत्रो-

पशमद्विविधक्षायिकदर्शन १ क्षयोपशमस्यज्ञानचतुष्टयदर्शननिक सर्वविरति ८ दानादिपंचकइतिनयोदशद्वेपारिणामिकामनुष्यगति-सञ्ज्वलनलोभशुक्लेश्या सिद्धत्वरूपाऔदयिकाद्इतिद्राविंशति, उपशातमोहेतुलोभकषायक्षायोपशमिकसर्वविरत्यभावान्नविंशतिभेदाभवति, क्षीणमोहे " गुणवीसत्ति " एकोनविंशति भावानामेदाभवति, तेचउपशातोक्ता विंशते उपशमभेदद्विकापगमेक्षायिकचारित्रेक्षिप्तेभवति, सयोगिगुणस्थानके " तेरसत्ति " त्रयोदशमेदा भावानाभवति, तेचनत्र क्षायिकोनवत्वा मनुष्यगति १ शुक्लेश्याऽ सिद्धत्वचौदयिक जीवत्वचपारिणामिकमितित्रयो दश यत प्रज्ञापनायाकेवलिन किंभव्या किंवाअभव्याइतिप्रश्ने नोभवानोअभवाइत्युक्तत्वादिति, अयोगिगुणस्थानके बारसत्तिद्वादशभावा भवति शुक्लेश्यापगमात् अलेश्यत्वेनचास्येति, सिद्धानातुक्षायिक भेदा जीवत्वपारिणामिकमितिदशभावाभवति यद्यपिक्षायिकभावभेदनवकेतुघातिकर्मक्षयसमुत्थानामेवगुणानाग्रहण तथाप्यघातिक्षयसमुत्थानातयाशेपसकरादिगुणानातुपारिणामिकेएवसग्रहइतिपचसग्रहटीकाशय इतिव्याख्यातागुणेपूत्तरभावभेदा ॥ ४७ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्व गुणठाणे चोवीस भाव छे क्षयोपशमना १० औदयिकना २१ पारिणामिकना ३ सास्वादन गुणठाणे बत्तीस भाव छे क्षयोपशमना १० औदयिकना मिथ्यात्वना विना २० पारिणामिकना अभव्यपणा विना २ एव ३२ मिश्रगुणठाणे बत्तीस भाव छे, क्षयोपशमना १० औदयिकना २० मिथ्यात्व विना पारिणामिकना २ अभव्य विना, समकित गुणठाणे पात्रीस भाव छे उपशम समकित १ क्षायिक समकित १ क्षयोपशम समकित १ ज्ञान ३ दर्शन ३ दानादि ५ औदयिकना अज्ञान १ मिथ्यात्व १ विना ओगुणीस, पारिणामिक

२ एव पार्नीस भाव छे देशविरति गुणठाणे चोर्त्रीस भाव छे ए पार्नीसमायी औदयिकनी गति २ नीकली क्षयोपशमनो देशविरति १ मेलवीये एव चोर्त्रीस छे छठे प्रमत्त गुणठाणे तेत्रीस भाव छे देशविरति १ असयम १ तिरिगति १ ए तीन निकल्या मन पर्यवज्ञान सर्वविरति ए वे मेल्या तेवारे तेत्रीस, अप्रमत्त गुणठाणे त्रीस भाव छे लेश्या तीन नीकली, तथा अपूर्वकरण गुणठाणे सत्तावीस भाव छे, तेजो १ पद्मलेश्या २ नीकल्या क्षयोपशम समकित १ ए एक नीकली तेवारे सत्तावीस छे तेमध्ये उपसमचारित्र १ मेलीये तेवारे नवमे गुणठाणे अठावीस भाव छे इहा कम्मपयडिमध्ये उपशमचारित्र इग्यारमेज गरोव्यो छे पछे वेद ३ सज्वलन ३ ए छ काढ्या तेवारे दशमे बावीस भाव छे इग्यारमे गुणठाणे वीस भाव छे खीणमोह गुणठाणे उपशमना २ काढीये क्षायिकचारित्र ए एक मेलीये तेवारे ओगणीस भाव छे सयोगि गुणठाणे क्षायिकना नव मनुष्यगति १ शुक्ललेश्या १ असिद्धत्व १ जीवत्व ए तेर भाव छे अयोगि चउदमे गुणठाणे शुक्ललेश्या विना १२ भाव पामीये, सिद्ध जीवने क्षायिकना नव, जीवपणो पारिणामिकनो ए दश भाव छे ए दशमे आत्मधर्म छे ए गुणठाणे भाव कह्या ॥ ४७ ॥

सम्मत्ताओ पचसु, उवसमसमतिगेसुचरणयु(जु)अ।
सम्माइ(यण)सुसतेपुण, खायगसमत्तगा हुति॥४८॥

टीका—अथगुणस्थानेषुभावानामल्पानित्वमुच्यते सम्मत्ताओ-इति सम्यक्त्वात्पचसुअपूर्वकरणपर्यंतेषुगुणस्थानेषु उपशम-

सम्यग्दर्शनप्राप्यते " त्रिगेसु " त्रिकेषु नवमेदशमेएकादशे "चरणयुत" उपशमचारित्रयुत, इत्यनेनउपशमदर्शन उपशमचारित्र एवभेदद्वयप्राप्यते पुन सम्यग्दर्शनादिउपशममोहयावत् क्षायिक सम्यग्दर्शनभवति यश्चैकचत्वारिंशत्सत्ताकस्तस्यक्षायिकसम्यक्त्व-प्राप्यतेइति ॥ ४८ ॥

गुण	भाग	उप	क्षयो	क्षायि	औद	पारि
मि		०	१०	०	२१	३
सा		०	१०	०	२०	२
मि		०	१२	०	१९	२
अ		१	१२	१	१९	२
दे		१	१३	१	१७	२
प्र		१	१४	१	१५	२
ऽप्र		१	१४	१	१२	२
ऽप्र		१	१३	१	१०	२
ऽनि		२	१३	१	१०	२
सू		२	१३	१	४	२
उ		२	१२	१	३	२
क्षी		०	१२	२	३	२
स		०	०	९	३	१
अ		०	०	९	२	१

टवार्थ —सत कहेता उपशमश्रेणिवतने समकितथी मांडी इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत कोइक जीवने क्षायिकसमकितपणे होवे जे एकसो एकतालीस सत्तावालो जीव श्रेणि उपशमचारित्रे

माडे तेहने क्षीणमोहगुणठाणे क्षायिकसमकित, क्षायिकचारित्र ए बे भेद क्षायिकना पामीये एटले क्षायिकसमकित क्षायिकचारित्र छे ॥ ४८ ॥

खीणेसम्मचरण, नवमेदसमेदुगटगभयणा ।
नवनवचरिमदुगम्मि, खायगभेया समुद्दिट्टा ॥४९॥

टीका—"खीणेसम्मचरणइति" क्षीणेक्षीणमोहगुणस्थानेक्षायिकचारित्रप्राप्यते, नवमेअनिवृत्तिनादरे दशमेसूक्ष्मसपराये क्षायिकभावस्यद्विकसम्यक्त्वचारित्रलक्षणवदति केचितूएकक्षायिकसम्यक्त्वमेववदति, एवभवतिभजनाचसाअपेक्षाभेदएवज्ञेय "चरिमदुगम्मि" चरमद्विकेसयोगिकेवलिअयोगिकेवलिगुणस्थानेनवनवक्षायिकभेदाउक्ता वीतरागेणेति ॥ ४९ ॥

टबार्थ—नवमे दशमे गुणठाणे क्षायिकना कोईक आचार्य क्षायिकसमकित १ क्षायिकचारित्र ए बे भेद माने छे। अने कोइक आचार्य क्षायिक समकित १ एक भेद माने छे एहवी भजना छे। चरिमदुग कहेता छेहले बे गुणठाणे तेरमे तथा चउदमे गुणठाणे क्षायिकना नव भेद पामीये ए सर्व क्षायिकना भेद कह्या ॥ ४९ ॥

परिणामगस्सभेया, मिच्छे तिगसेसयंमिदुगचेव ।
अभवत्तविहीणपुण, चरिमदुगेएगजीवत्त ॥ ५० ॥

टीका—परिणामगस्सेति परिणामस्यभेदामिच्छेइति मिथ्यात्वे "तिगत्ति" त्रिकजीवत्वभव्यत्वाभव्यत्वरूपास्त्रयोभेदा प्राप्यतेशेषेषु-सास्वादनमारभ्यक्षीणमोहपर्यंतेषु "दुगत्ति" द्विकमेवजीवत्वभव्यत्व

रूप अभव्यत्वेनहीनरहितद्विकप्राप्यते "चरमदुगत्ति" चरमद्विके त्रयो-
दशगुणस्थानकेचतुर्दशगुणस्थानकेच जीवत्वमस्तिभव्यत्वतुसिद्धि-
गमनयोग्यत्व तच्चारित्रनिष्पात्तेननभव्यत्व अभव्यतुपूर्वमेवनास्ति
अतोजीवत्वमेव,भव्याभव्यत्वस्वरूपतुभगवतीसूत्रेजयतीप्रश्नेचभव्य-
त्वनकर्मजमिति ॥ ५० ॥

टबार्थ —पारिणामिकभावना भेद तीन छे ते मध्ये मिथ्या-
त्वगुणठाणे पारिणामिकना तीन भेद छे सास्वादनथी माडी
क्षीणमोह पर्यंत पारिणामिकनाए बे भेद छे । अभव्यपणो नही ।
अभव्यपणो मिथ्यात्वगुणठाणेज हुवे । चरिम छेहले बे गुण-
ठाणे एकजीवपणो छे भव्यपणो निहा ठत्यो योग्यता नीपन्या
पछी कहेवाये नही ॥ ५० ॥

मीसेपणलद्धीओ, अन्नाणदसणदुगंचपढमदुगे । ओहीदसणजुत्त, मीसे नाणाइभयणाए ॥ ५१ ॥

टीका—मीसेपणलद्धिओइनिमिश्रेनाम क्षायोपशमिकेभावेपण-
लद्धीओपचलब्धय दानलाभभोगोपभोगवीर्यरूपा "अन्नाणत्ति"अ-
ज्ञानत्रय मत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभगलक्षण "दसदुगत्ति" दर्शनद्विक च-
क्षुरचक्षुर्दर्शनद्वयच प्रथमद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनलक्षणेगुणस्थानद्वये-
प्राप्यते "मीसेत्ति" मिश्रगुणस्थानेनाणाइ ज्ञानानिभजनात भजना-
तुमिथ्यात्वात् मिश्रभागस्याज्ञान, सम्यक्त्वात् मिश्रभागस्यज्ञान,
अत्रकेचित्विभगेदर्शनमिच्छति,तदाशयदीपयनाह "ओहीदसणजुत्त"
इति अवधिदर्शनेनयुक्तमिति । अवधिदर्शनभवति एतद्वचनस्व-
मताविष्करणार्थेनोक्तकितुजीवाभिगमादिवृत्तिमनुश्रियेति भावनाच
वस्तुधर्मापलब्धेतुसम्यगदर्शनिनामेवज्ञानभाष्यकारणापिउक्त श्रद्धा-

विरुद्धानामज्ञान शुद्धश्रद्धावतामेवज्ञान, मिश्रोदयस्तुसम्यगदर्शन-गुणरोधकएवअतोमिश्रेऽज्ञानमेवेति ॥ ५१ ॥

टबार्थ —मीसे कहेता क्षयोपशमभावना मेद ते मध्ये पाच लब्धि, अज्ञान त्रण ३ दर्शन २ ए दश मेद मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन ए प्रथम "दुग" बे गुणठाणे पामीये मिश्रगुणठाणे जे समकितथी पडतो मिश्रमें आवे तो अवधिदर्शन लेतो आवे तेहने अवधिदर्शन कहीये, अने मिथ्यात्वथी मिश्रे आवे तेहने अवधिदर्शन नहीं, अने मिश्रगुणठाणे ज्ञाननी भजना छे। चोथाथी त्रीजे आवे तेहने ज्ञान कहीये, पहिलाथी त्रीजे आवे तेहने अज्ञान कहीये, ए अज्ञानमानि परिपाटी छे, पर-श्रद्धाशुद्ध विना भाष्यकार प्रमुख अज्ञानज माने छे। मिश्र-मोहनीयनो उदय दर्शन गुणने सर्वथा रोके छे, तेमाटे ज्ञाननी भजना छे ॥ ५१ ॥

दसणनाणतिगपण, लद्धीओमीसगचसम्मत्त।
वारस्सअविरईसम्मे, देसजुआदेसविरयमि ॥५२॥

टीका—"दसनाणतिगमित्यादि अविरइसम्मे" अविरतिसम्यक्त्वे द्वादशक्षयोपशमभावमेदा प्राप्यते, तेचामीदर्शनत्रिकचक्षुरचक्षुरवधि-दर्शन लक्षण "नाणतिग" ज्ञानत्रिक मतिश्रुतावधिज्ञानलक्षण "पणलद्धीओ" इतिपचदानादयोलब्धय "मीसगच" मिश्रकंमिश्रा-रयक्षयोपशमसम्यक्त्व एवद्वादशक्षयोपशमभावमेदा प्राप्यते, तेएवद्वादशमेदादेशयुक्तादेशविरतियुक्तादेशविरतौपचमेगुणस्थानके त्रयोदशमेदा क्षयोपशमस्यप्राप्यते ॥ ५२ ॥

टबार्थ —चोथे समकितगुणठाणे दर्शन तीन चक्षुदर्शन १

अचक्षुदर्शन १ अवधिदर्शन १ ज्ञान ३ दानादिलब्धि ५ क्षयोपशमसमकित ए अविरति समकित गुणठाणे बार भेद क्षयोपशमना होवे, देशविरति गुणठाण जे बार कह्या तेमा देशविरति भेळीये तेवारे १३ तेर भाव पामीये ॥ ५२ ॥

देसविणुसव्वविरइ, मणनाणजुआपमत्तजुअलम्मि।
सम्मविणा य अपुव्वे, अनियट्टिचउम्मिचरणविणा ५३।

टीका—'देसविणुति' देशविरतिविनासर्वविरतिमन पर्यायज्ञानयुता प्रमत्तेऽप्रमत्तेचतुर्दश क्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, सम्यग्दर्शनइतिक्षयोपशमसम्यग्दर्शन विनाअपूर्वेत्रयोदशक्षयोपशमभावभेदा प्राप्यते, अनिवृत्तिगुणस्थानक "चउम्मि" अनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसंपरायोपशांतमोहक्षीणमोहलक्षणेषुक्षयोपशमचारित्रविनाद्वादशभेदा क्षयोपशमभावस्यप्राप्यते, कर्मप्रकृत्यादुनवभेदक्षमेगुणस्थानेक्षयोपशमचारित्रमिच्छति, तत्र क्षयोपशमभावेनप्राप्यतेइति ॥ ५३ ॥

टबार्थ—देशविरति काढीये सर्वविरति मेलवीये । वली मनपर्यवज्ञान भेलविए तेवारे प्रमत्त गुणठाणे अप्रमत्त गुणठाणे ए बे गुणठाणे क्षयोपशमना चउद भेद छे अपूर्वकरण गुणठाणे क्षयोपशमसमकित विना तेर भेद पामीये, अनिवृत्ति गुणठाणाथी माडी च्यार गुणठाणे क्षयोपशमचारित्र विना बार भेद छे कम्मपयडीमध्ये दशमा गुणठाणापर्यंत क्षयोपशमचारित्र मान्यो छे ॥ ५३ ॥

मिच्छेदुगअजोसपुण, सासाणतिगेअमिच्छउदयस्स।
सत्तरसदेसविरए, सुरनिरयअन्नाणरहिआओ॥५४॥

टीका—अथौदयिक विभजयन्नाह ॥ मिछेइगवीसपुणडति । मिच्छेमिथ्यात्वेएकविंशतिर्भेदा औदयिकस्य प्राप्यते, पुन सास्वादनमिश्रेसास्वादनमिश्राविरतिसम्यक्त्वे ' अमिच्छत्ति ' मिथ्यात्वरहिता "उदयस्सेति" औदयिकस्य भावस्यविंशतिर्भेदाभवति, एवद्वादशगुणस्थानयावत् अज्ञानस्योदय सगृह्यते त मतपुन मुख्यत्वेनअज्ञानस्यापगमे अविरतसम्यग्दर्शने एकोनविंशतिरेवप्राप्य ते देशविरते पचमगुणस्थानकेसप्तदशभेदाऔदयिकस्यप्राप्यते, सुरक्षति देवगतिनिरयेति नरकगतिअज्ञानरहिता ॥ ५४ ॥

टबार्थ—हवे औदयिकभावना भेद कहे छे मिथ्यात्व गुणठाणे एकवीस भेद छे औदयिक भावना २१ छे, सास्वादनथी तीन गुणठाणे मिथ्यात्व विना २० भेद पामीये, समकित गुणठाणे ज्ञान विना ओगणीस छे, इमज भेद जणाववानु वचन छे देशविरति गुणठाणे सत्तर भेद पामीये, देवगति १ नरकगति १ अज्ञान १ ए तीन मिथ्यात्वे ए च्यार नथी, ए वली मतभेद देखाड्यो छे ॥ ५४ ॥

तिरिअविरयाओहीणा, पमत्तिअपमत्तिलेसत्तिगहीणा। अदुलेसापुव्वदुगे, अवेअतिकसायसुहुमच(उ)ओ॥५५॥

टीका—तिरिअविरयाओत्ति तिर्यग्गति १ अविरतिन हीनारहिता पचदशभेदाऔदयिकस्यप्रमत्तेप्राप्यते अप्रमत्ते लेसतिगत्ति लेश्यात्रिकहीना कृष्णनीलकापोतरहिता द्वादशऔदयिकस्यभेदा प्राप्यते, "सुहुमति" सूक्ष्मसपरायलक्षणेगुणस्थानकेवेदत्रिककषायत्रिकरहिता चउत्ति चत्वारऔदयिकभावभेदा प्राप्यते ॥ ५५ ॥

टबार्थ—तिर्यचगति १ असयम १ ए बे कार्डीये तेवारे प्रमत्तगुणठाणे पचार भेद औदयिकना छे, अप्रमत्त गुणठाणे कृष्णनीलकापोत लेश्या तीन कार्डीये तेवारे औदयिकना १२ भेद छे बे लेश्या, तेजो तथा पद्म कार्डीये तेवारे आठमे नवमे दश भेद छे औदयिकना वेद ३ कपाय ३ कार्डीये तेवारे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे औदयिकना च्यार भेद छे लोभकषाय १ असिद्धपणो १ मनुष्यगति १ शुक्ल लेश्या ए च्यार छे ॥ ५५ ॥

उवसततिगेअलोभा, लेसविणादोअयोगीगुणठाणे।
मिच्छतिगेसन्निवाईय, चउइग(इगचउ)वारसउज्ज-
यतिन्नि ॥५६॥

टीका—उवसतत्ति उपशातत्रिके उपशातमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके अलोभत्ति अलोभालोभरहिता षय-औदयिकस्यभावभेदा प्राप्यते लेसविणत्ति लेश्या शुक्ललेश्या विना तद्रहिता द्वौएवभावभेदौ औदयिकस्यायोगिगुणस्थानेप्राप्येते, इत्युक्त्वाऔदयिकभावभेदागुणस्थानेषु, साम्प्रतसानिपातिकभेदानिरूप्यते, तत्रयऔपशमिकादिभावानापचानामेकसयोगिका पचभगाभवति, तेचसयोगाभावात् नसानिपातिकेभावे द्विकादिसयोगजाभगास्तेसानिपातिकभावेसगृह्यन्ते तेचपड्विंशतिर्भवति तत्रद्विकसयोगेअक्षसचारणया दशभगालभ्यते, तेचामी १२।१३।१४।१५।२३ २४।२५।३४।३५।४५ रूपा त्रिकसयोगेपिदश तेचामी । १२३। १२४।१२५।१३४।१३५।१४५।२३४।२३५।२४५।३४५।एव रूपादशभगानि चतुष्कसयोगा पचभगाभवति तेचामी।१२३४।

१२३५।१२४५।१३४५।२३४५। इत्येवपचज्ञेया पचसयोगिकस्त्वेकएक।१२३४५। एवरूप, एत्पइविंशतिभगकेषुषट्वैवभगा जीवेषुमाप्पते नपरे भेयार्वास असभविणोइत्यागमत्रास्यात् तत्रैकोद्विकमयोगोयथाक्षायिकपारिणामिकलक्षण द्वौतिकसयोगिकौतनक्षयोपशमऔदयिकपारिणामिकलक्षण, मिथ्यादृशा चतुर्गतीना क्षायिकौदयिकपारिणामिकलक्षण, केवलिनाभवस्थानाद्वौचतुष्कसयोगौ तत्रउपशमक्षयोपशम औदयिकपारिणामिकलक्षण, प्रथमश्चतुर्गतिषुक्षायिकक्षयोपशम औदयिक पारिणामिकलक्षणोपिचतुर्गतिषु, पचकसयोगिकस्तुक्षायिकसम्यक्त्वोपशमचारित्रलेनोपशमश्रेण्यारूढता तत्रगाथाचतुर्थकर्मस्तवे चउचउगईसुमीसग परिणामुदएर्हि चउसुखएहि उवसमजुएहिंवाचउ केवलिपरिणामुदयखईए १ खय परिणामेसिद्धानराणपणजोगुवसमसेढीए इत्यादिज्ञेय, इतिभगक्रमेणक्षायिकसम्यग्दर्शनस्यचतुर्गतित्वनिवेदित, मिच्छत्तिगत्ति मिथ्यादित्रिके मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रिके मूलोभगएक क्षयोपशमौदयिकपरिणामलक्षण सचचतसृपुगतिषुप्राप्यते तेनउत्तराश्चतुर्भगाज्ञेया बारसत्ति अयते अविरतेसम्यग्दर्शनारयेगुणस्थानकेमूला तिन्नित्तित्रयोभगा क्षयोपशमौदयिकपारिणामिकलक्षण प्रथम उपशमक्षयोपशमौदयिकपरिणामलक्षणोद्वितीय अथचोपशमकदर्शनिनाक्षायिकौदयिकक्षायोपशमपारिणामिकलक्षण तृतीय क्षायिकदर्शनिनाएतेत्रयोमूलोत्तरास्तुचतुर्गतिषु एवेभवति तेनचतुर्गतीनाद्वादशभवति ॥ ९६ ॥

टबार्थ —उपशातमोह गुणठाणे खीणमोह सयोगी गुणठाणे लोभ विना तीन भेद छे औदयिकना अने शुक्लेश्या विना बे भेद छे अयोगी गुणठाणे बे भेद छे, मिथ्यात्व

सास्वादनमिश्र ३ ए तिन गुणठाणे सान्निपातिकना मूल १ उत्तर च्यार भागा पामिये, क्षयोपशम औदयिकपारिणामिक ३ ए तीननो ए भागो ते च्यार गतिमा गणता चार भागा छे, अविरति गुणठाणे चार भागा सान्निपातिकना छे क्षयोपशम १ पारिणामिक २ औदयिक ३ एक भागो अथवा क्षयोपशम १ उपशम १ पारिणामिक । औदयिक ए च्यार भावनो ए बीजो भागो अथवा क्षयोपशम, क्षायिक, पारिणामिक, औदयिक ए च्यार भावनो तीजो भागो ए तीन भागा च्यार गतिमा छे, तेणे च्यार भागा छे ॥५६॥

छगदेसिपमत्तदुगे, तिगअपुव्वचऊदोदो ॥
खीणाइतिगेइग सभवि, (व)भगायविन्नेया ॥५७॥

टीका—देशेदेशविरतिलक्षणेपचमेगुणस्थानेभूलास्तुप्रवोक्ता-एवत्रय उत्तरास्तुतिर्यग्मनुष्यगतिद्वयगुणनेष भवति, प्रमत्ताद्वि-केप्रमत्ताप्रमत्तलक्षणेगुणस्थानद्वयेत्रयस्तएवमनुष्यगतिमायोग्याएव-सति अपूर्वादिचतुष्केअपूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसपरायोपशातमो-हलक्षणेउपशमश्रेणिप्रत्ययेद्वौभगकौ, उपशमक्षयोपशमौदयिकपारि-णामिकलक्षण उपशमदर्शनचारित्रपरिणतानाएवपचकसायोगिकस्तु-क्षायिकसम्यग्दर्शनोपशमचारित्रवताभवति, क्षपकश्रेणिस्थानानाअ-पूर्वानिवृत्तिसूक्ष्मसपरायाणाक्षायिकक्षयोपशमौदयिकलक्षणएकएव ए-वयोज्या क्षीणादित्रिकेक्षीणमोहसयोग्ययोगिलक्षणेगुणस्थानत्रिके-एकएवभगस्तत्रक्षीणमोहेक्षयोपशमक्षायिकऔदयिकपरिणामलक्षण-श्चतुष्कसयोग सयोग्ययोगिलक्षणेगुणस्थानद्वयेक्षायिकौदयिकपरि-णामकलक्षणस्त्रिकसयोगिक. सभवति, सभविइतिपदसभवन्तिजीव-

वर्त्तिनोभगाएवज्ञेया गतिभेदेनविभज्यमानानानाप्रकाराभवति तथ-पिमूल्त पडेवेति ॥५७॥

टवार्थ —देशविरति गुणठाणे सन्निपातना भागा पट् छे । मूलभागा तीन वेहने तिर्यच मनुष्य गति १ ए वे गतिना गणता छ भागा थाय प्रमत्त १ तथा अप्रमत्त गुणठाणे मूल तीन भागा छे, अपूर्वकरणथी माडी इग्यारमा पर्यंत च्यार गुणठाणाने सन्निपातना वे भागा छे, एक उपशम १ क्षयोपशम १ पारिणामिक १ औदयिक ए क्षपकने इहा तीजो भागो पाच सयोगनो छे, तो तीन पण पामीये, क्षीणमोह गुणठाणे क्षायिक औदयिक पारिणामिक क्षयोपशम ए तिम सयोगि गुणठाणे, अयोगी गुणठाणे क्षायिक १ औदयिक १ पारिणामिक ३ ए तीन सयोगि एक भागो छे, ए सर्व भागा मूल छ उत्तर १५ ते माहेला जाणवा वीस भागा असभवी छे पर कोई जीवमा पामीये नही ॥५७॥

वीसमसभवि छगपन्नरभगगइविभेएण ।
पणसयपणतीसही मिच्छे, जीवभेयविन्नेया ॥५८॥

टीका—सान्निपातिकभगसरयामाह वीसविंशतिर्भगा असभवि सर्वजीवेषुक्वाप्यभावान्ननद्भगवर्त्तिनोजीवा सति, तत्रद्विकसयोगे-नवत्रिकसयोगेअष्टौ, चतुष्कसयोगेत्रय , एतेविंशतिर्भगा असभविनोज्ञेया , सभवितिजीवेषुप्राप्यमाणा षट्भगास्तेचगतिविभेदेनविभक्ता "पनरत्ति" पचदशभवति इत्युक्त गुणस्थानेषुभावा अर्थविस्तर या-रयायानिषट्चधिकप चाशनजीवभेद' मज्ञापनोक्तास्तेगुणस्थानेषुप-थाप्राप्यते तत्कथयनाह, तत्रप्रथमजीवभेदान्कथयति, तत्रचतुर्दश-

भेदेनिरपकास्तनगाथा रयणरय १ सक्क २ पहुरचालयपह ३ पकपह ४ घूमपहा ५ तमपहा ६ तमतमपहा ७ अपज्जतपज्जतचउहा १ तिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशत्, तनपृथवीकायिका सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदेनचतुर्द्धा, एवमप्कायिकाश्चतुर्विधा तेजस्कायिकाश्चतुर्विधा वायुकायिकाश्चतुर्विधा वनस्पतिकायिका प्रत्येकबादराएवभवतितेन- पर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्विधा साधारणवनस्पतिभेदा षट्द्विनिचतुरिंद्रिया- अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनषट्प्रकारा पचेंद्रिया स्थलचरजलचरखेचरउर- परिभुजपरिभेदेनपञ्चप्रकारास्तेसज्ञ्यसज्ञिभेदेनदशप्रकारास्तेचापर्याप्त- पर्याप्तभेदेनविंशतिर्भवन्ति, एवतिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशद्भेदास्तन- गाथा पुढवाइचउसुचउविह ठगवणविगलायलजलाखयरा उरपरिभु- जपरिसमणा अमणापज्जाअपज्जाय १ मनुष्यभेदास्त्रिसिरधिकानि- त्रीणिशतानि, तत्रपचभरतपचैरावतपचमहाविदेहरूपा पचदशकर्म- भूमय, पचहैमवतपचेरण्यवतपचहरिवर्षपचरम्यकवर्षपचदेवकुरुपचो- त्तरकुरुरूपास्त्रिंशदकर्मभूमय, षट्पचाशदतरद्वीपा चुल्लहिमवतशिख- रीदाढागताएवएकाधिकशतभेदास्तेसज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदात्द्व्य- धिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदास्तेसज्ञिन पर्याप्तापर्याप्त- भेदेनद्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदाअसज्ञिमनुष्याणा- तेचापर्याप्ताएवइद्रियपर्याप्तिनीत्वा उच्छ्वासपर्याप्त्यारभकाएव म्रियतेमनु- ष्यशरीरोद्भवमलसमुद्भवा, तथाचप्रज्ञापनाया "वतेसु आ पित्तेसुवा इत्यादिसूत्र जावसव्वासुअसुइगणेसु इत्यादिएवसर्वेअधिकत्रिशत- भेदा, गाथाचानपन्नरस १५ कम्मभूमिअअकम्मभूमीयतीसछप्प- न्नाअन्तर्दीवासमणादुविहा अमणाअपज्जाय १ देवगतिभेदा एक शतअष्टनवत्यधिकास्तेपाममीयथापचदशपरमाधर्मिकानरकपाला द- शभुवनपतय असुरकुमाराद्या षोटश व्यतरभेदा पिशाचादय दशजृभका कचनगिरिनिवासिन दशज्योतिष्का चरस्थिरभेदेनत्रय

किल्विषा चडालस्थानीया द्वादशरूपा नवलोकातिका ब्रह्मदेवलोकरिष्टप्रस्तरतटासन्नकृष्णराजिषुनवविमानवासिन नवग्रैवेयका पचानुत्तराएतेनवनवति अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनाद्विगुणिता अष्टानवत्यधिकशतप्रमाणाभवति अपर्याप्तत्वमानोत्पद्यमानकालेअतर्मुहूर्त्तयावदेवतेपर्याप्ता उच्यते, गाथा, पनरसपरमहम्मिअ दसभवणासोलर्विनरादेवा दसजभगजोईसीया बारसकप्पानिकिव्विसिया १ नवलोगतिअभेआ नवगेविज्जाअणुत्तरापच अपज्जत्तापज्जत्ता सुरभे आठाणमेएण १ यद्यपिसामानिकलोकपालादयोऽनेकभेदास्तयापितेनाधिकृता एतेचभिन्नस्थाननिवासित्वेनोक्ताइत्येवजीवभेदा । पचशतत्रिषष्ट्यधिकाज्ञेयाइति तत्रमिच्छेद्विनिमिथ्यात्वे प्रथम गुणस्थानके पचशतपचत्रिंशदधिकाजीवभेदा सभवति, निगतिका सर्वेपिदेवगतिभेदाना मध्ये सप्ताधिकशत जीवभेदाना मिथ्यात्वे ज्ञेयम् ॥ ५८ ॥

वीस भागा असभवी छे छ मूल उत्तर १५ पनर भागा सभवी ते गतिभेदे जाणवा हवे पाचसेनेसठ जीवना भेद छे ते गुणठाणाने विषे कहे छे तिहा मिथ्यात्व गुणठाणे पाचसोपात्रीस भेद जीवना छे नव लोकातिक पाच अनुत्तर ए चउद पर्याप्ता चउद अपर्याप्ता ए अठ्ठावीस समकिती छे, ते मिथ्यात्वमा नथी एटले १४ नरकना ४८ भेद तिर्यचना ३०३ भेद मनुष्यना एकसोअठ्ठाग भेद १९८ देवताना एव ५६३ भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्वना १७० भेद छे ॥५८॥

लोगतिकाअणुत्तर सुर, भेयतिणातदेवसासाणे ।
चउसयसगनेरईया, पज्जत्तातीरिअइगवीस ॥५९॥

भेदेनिरयकास्तत्रगाथा रयणरय १ सक्क२ पहरचालुयपह ३ पकपह ४ धूमपहा ५ तमपहा ६ तमतमपहा ७ अपज्जतपज्जतचउहा १ तिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशत्, तत्रपृथ्वीकायिका सूक्ष्मबादरपर्याप्तापर्याप्तभेदेनचतुर्द्धा, एवमप्कायिकाश्चतुर्विधा तेजस्कायिकाश्चतुर्विधा वायुकायिकाश्चतुर्विधा वनस्पतिकायिका प्रत्येकबादराएवभवंतितेन-पर्याप्तापर्याप्तभेदेनद्विधा साधारणवनस्पतिभेदा षट्द्विवित्रिचतुरिंद्रिया-अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनषट्प्रकारा पचेंद्रिया स्थलचरजलचरखेचरउर-परिभुजपरिभेदेनपञ्चप्रकारास्तेसज्ञ्यसज्ञिभेदेनदशप्रकारास्तेचापर्याप्त-पर्याप्तभेदेनविंशतिर्भवन्ति, एवंतिर्यग्योनिकाअष्टचत्वारिंशद्भेदास्तत्र-गाथा पुढवाइचउसुचउविह ठगवणविगलाथलजलाखयरा उरपरिभु-जपरिसमणा अमणापज्जाअपज्जाय १ मनुष्यभेदास्त्रिभिरधिकानि-त्रीणिशतानि, तत्रपचभरतपंचैरावतपचमहाविदेहरूपा पंचदशकर्म-भूमय, पंचहैमवतपंचैरण्यवतपचहरिवर्षपचरम्यकवर्षपचदेवकुरुपचो-त्तरकुरुरूपास्त्रिंशदकर्मभूमय, षट्पंचाशदंतरद्वीपा चुल्लहिमवतशिख-रीदाढागताएवएकाधिकशतभेदास्तेसज्ञिन पर्याप्तापर्याप्तभेदात्द्व्य-धिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदास्तेसज्ञिन पर्याप्तापर्याप्त-भेदेनद्व्यधिकद्विशतभेदा तेएवएकाधिकशतभेदाअसज्ञिमनुष्याणा-तेचापर्याप्ताएवइंद्रियपर्याप्तिंनीत्वा उच्छ्वासपर्याप्तारभकाएव म्रियंतेमनुष्यशरीरोद्भवमलसमुद्भवा, तथाचप्रज्ञापनाया "वंतेसु आ पित्तेसुवा इत्यादिसूत्र जावसव्वासुअसुइगणेसु इत्यादिएवसर्वेअधिकत्रिंशत-भेदा, गाथाचात्रपन्नरस १५ कम्मभूमिअअकम्मभूमीयतीसछप्प-न्नाअतरदीवासमणादुविहा अमणाअपज्जाय १ देवगतिभेदा एक शतअष्टनवत्यधिकास्तेपामभीयथापचदशपरमाधर्मिकानरकपाला द-शभुवनपतय असुरकुमाराद्या षोडशव्यंतरभेदा पिचाशादय दशजृंभका कंचनगिरिनिवासिन दशज्योतिष्का चरास्थिरभेदेनत्रय

किंविषा चंडालस्थानीया द्वादशकल्पा नवलोकान्तिका ब्रह्मदेवलोकरिष्टप्रस्तरतटवासनकृष्णराजिपुनर्विमानवासिन नवग्रैवेयका पंचानुत्तराएतेनवनवति अपर्याप्तपर्याप्तभेदेनद्विगुणिता अष्टानवत्यधिकशतप्रमाणाभवंति अपर्याप्तत्वचानोत्पद्यमानकालेअन्तर्मुहूर्त्तयावद्देववेपर्याप्ता च यदते, गाथा, पनरसपरमहम्मिअ दसभवणासोलवितरादेवा दसजभगजोईसीया बारसकप्पानिकिवसिया १ नवलोगंतिअमेआ नवगेविज्झाअणुत्तरपंच अपज्झत्तापज्जत्ता सुरभेआठाणमेएण १ यद्यपिसामानिकलोकपालादयोऽनेकभेदास्तथापितेनाधिकृता एतेचभिन्नस्थाननिवासित्वेनोक्ताइत्येवजीवभेदा । पंचशतनिषण्यधिकाजेयाइति तनमिच्छेइतिमिथ्यात्वे प्रथम गुणस्थानके पंचशतपंचविंशन्मिकाजीवभेदा संभवंति, त्रिगतिका सर्वेपिदेवगतिभेदाना मध्ये सप्ताधिकशत जीवभेदाना मिथ्यात्वे जेयम् ॥ ५८ ॥

, वीस भागा असंभवी छे ७ मूल उत्तर १५ पन्नर भागा संभवी ते गतिभेदे जाणवा हवे पाचसेनेसठ जीवना भेद छे ते गुणठाणाने विषे कहे छे तिहा मिथ्यात्व गुणठाणे पाचसोपात्रीस भेद जावना छे नव लोकातिक पाच अनुत्तर ए चउद पर्याप्ता चउद अपर्याप्ता ए अठावीस समकिती छे, ते मिथ्यात्वमा नथी एटले १४ नरकना ४८ भेद तिर्यंचना ३०३ भेद मनुष्यना एकसोअठाणु भेद १९८ देवताना एव ५६३ भेद छे ते मध्ये मिथ्यात्वना १७० भेद छे ॥५८॥

लोगंतिकाअणुत्तर सुर, भेयनिणातदेवसासाणे ।
चउसयसगनेरईया, पज्झत्तातीरिअइगवीस ॥५९॥

टीका—लोगनिकाइनिलोकानिकानव, पचानुत्तरभेदाश्चतुर्दश-तेपर्याप्ताअपर्याप्तभेदेनाष्टाविंशतिभेदास्तेसम्यक्त्वेएवभवनि न नि-थ्यात्वे, लो ।न्तिकाधिकारिणोगृहीत पानशेषा, लोकानिकपरिवार-श्चज्ञानाया ।ऽ्निाधाध्ययने मामानिकात्मरगकादयोऽमिहिता नवे सर्वेसम्यग्दृशनिनदनि तथैवसास्वादनेचतु शनभेदार्जावानामिनि तेचसप्तनैरयिका पर्याप्ता तनापर्याप्तावस्थापानसम्यक्त्व, यन सा-स्वादनेनरकानुपूर्वीअनुदयानिरयाणुपविणदयाइनिकर्मस्तवचारयात् निरियइंगवीस, तिर्यग्योनिजाएकविंशनिभेदा सास्वादनेभवति॥५९

टवार्थ—लोकानिक नव तथा अणुत्तर ५ ए पर्याप्ता अ-पर्याप्ता ए अट्ठावीस भेद नथी। इहा लोकानि नव अधिप-तिना लीधा छे, परिवारनो एहनो घणो छे। ज्ञातासूत्रे कह्यो छे सामानिक आत्मरक्षकादिक छे ते माटे समकितना सर्वने भजना जाणीये छे, निश्चय तो जिनोवेत्ति, तिमहीज सास्वा-दन गुणठाणे न्यारसे जीव भेद छे, नारकीना भेद सात पर्याप्ता भेद छे अपर्याप्तावस्थाये सास्वादनपणो न होये जे माटे नरकानुपूर्वीनो उदय सास्वादन मानयी ते माटे निर्यचना एक-वीस भेद छे ॥५९॥

बायरथावरतियग, अपज्जत्तवियलतिअअपज्जत्त ।
अमणापचअपज्जा, समणापज्जाअपज्जाय ॥६०॥

टीका—बायरइति बादरस्थावरनिकबादरपृथिवी अपर्याप्त १ बादराप्कायापर्याप्त बादरप्रत्येकवनस्पतिकायापर्याप्तइतिभेदत्रयसास्वा-दनेभवति इयमत्रभावना अत्रकश्चित्सञ्ज्ञिपचेंद्रिय तिर्यग्नरामरभेद पूर्वेमिथ्यात्वबलेनोत्सूत्रादिप्ररूपणाकरणेनबद्धैकेंद्रियायु पुन कारण-

वशात्। यथाप्रकृत्यादिकरणकरणेनग्रंथिमेदकृत्वात्प्रथोपशमसम्यक्त्वं शन उपशमाद्धायावत् उपशमीस्यात्ते सास्वादनमधिगम्यसास्वादन स्यात्ते अल्पतरकालावशेषे आयु क्षयेसूचा स्थावरनिकेउत्पद्यते, तस्य- शरीरपर्याप्तिरस्यनोर्द्वागुणत्वसाग्रान्नहित्वामिथ्यात्वलभते, मनुष्य- स्तुपरभवद्वायुस्तदा पश्चात्ग्रंथिमेदसभव श्रेणिमभवराउपशमप्राप्यप- तित सास्वादनेचायुप क्षपकस्यागर्भद्विपेरूत्पद्यतेनस्यापिभवति वि- यत्नतिय अनयत्त विकल्पविक अपर्याप्तगारवादनेसभवति, अपचतिर्य- ग्मनुष्योआपूर्वरद्वायुरुपशमप्राप्यपतनसास्वादनेमृत विकलेषूपद्यते- विकलानातुशरीरपर्याप्तिरनन्तरमिथ्या त्वजति, असमणापत्असंज्ञिप- चेंद्रिया पर्जलचरस्थलचरखेचर भुजपरिउरपरिरूपाअपथा संज्ञिविक- कल्पवत्प्राप्यन्ते समणेत्ति समनसो मन सहिता एतेजलचराद्य पच- अपर्याप्ता पचपर्याप्तारतेषुसास्वादनप्राप्यते अपर्याप्तपुग्रंथिमेदसभ- वोपशमात्पतित सास्वादनप्राप्यमृतस्यसंज्ञिपूत्पद्यमानस्यभवति पर्याप्तेषु ग्रंथिमेदसभवोपशमात्पतितेन सास्वादनप्राप्यते, एवस्था- वरनिक अपर्याप्तविकलत्रिक अपर्याप्तअसंज्ञिपचक अपर्याप्तसंज्ञिदशक मितिएकविंशतिमेदा तिर्यंच सास्वादनेप्राप्यते ॥ ६० ॥

टबार्थ —विगलत्तिनअपर्याप्तापृथ्वी १ अप् १ वनस्पति १ ए तिन थावर अपर्याप्ता ते बादर छे ए तीन मेद छे असंज्ञि ५ अपर्याप्तासंज्ञि ५ पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मिल्या दश ए विश तिर्यंचना मेद पामीये ॥ ६० ॥

मणुएसमणाभेआ, देवेनिक्षुवतइगमीसम्मि ।
सगपणइगहीयम्मय, पणसीईसन्निपज्जत्ता ॥ ६१ ॥

टीका—मणुएसमगा मनुष्याणामव्ये समगत्ति मन सहित

[illegible] देवे देवगति [illegible]

मिथ्यात्वनूसप्ताधिकशतसास्वादनेप्राप्यतेइतिसर्वमिलनेसाम्वादनेप्राप्यते तथाचमिश्रेपर्याप्तभेदा एवप्राप्यते, तत्रसप्तभेदा पर्याप्ता रत्नप्रभाया प्राप्यतेतेतिर्यगभेदा सज्ञिपर्याप्तरा प्राप्यते ॥ ६१ ॥

टबार्थ —मनुष्यना समणा कहेना गर्भज मनुष्य अपर्याप्ता पर्याप्ता २०८ भेद सास्वादन गुणठाणे पामीये देवनाना मिथ्यात्वनि पेरे अट्ठाविश विना ११७ पामीए, सर्वे मील्या च्यारसें थया तथा हवे मिश्रगुणठाणे सात भेद नारकिना पर्याप्ता ७ ते तिर्यच पचेंद्रीसज्ञी पाच पर्याप्ता तथा मनुष्यना एकसोएक भेद गर्भज पर्याप्ता देवना पच्यासी पर्याप्ता एटले एकसो अटाणु भेद मिश्रगुणठाणे पामीये ॥ ६१ ॥

सम्मेसन्नीदुविहा, चउसय तेवीस माघवइपज्जा ।
देसेपणतेरिक्खा, पन्नरसाकम्मभूमिनरा ॥ ६२ ॥

टीका—सम्मेसन्नित्ति सम्यक्त्वेसज्ञिपचेंद्रियोद्विविध पर्याप्तापर्याप्तभेदभिन्न चतु शतचतुर्विंशतिप्रमाणस्तत्रमाघवतीनामतमापृथ्वीपर्याप्तभेदे नैवप्राप्यते। इत्यमुनाप्रकारेण त्रयोविंशत्यधिका चतु शतभेदा प्राप्यते। नैरयिकास्त्रयोदशनरिश्चादश मानुपोद्भवाष्ट्यधिकशतद्वय। अष्टानवत्यधिकमेकशतदेवाना, एवचतु शतत्रयोविंशत्यधिकप्राप्यते। ननुपरमार्थिकेपुकथसम्यक्त्वमुच्यते। अत्रपर्वसगनिक्देवनाशुपदेशेनप्राप्नोति इद्रकृतनदीश्वरोत्सवादिदर्शननिमित्तमपिप्राप्यते। देसेत्ति देशविरतिगुणस्थानकेविंशतिभेदा प्राप्यते, द्विगतिप्रत्यया तिर्यग्मनुष्यगतिप्रत्यया तत्रदेशे विरतारये पचमे गुणस्थानके पचतिरिस्क्वातियग्योनिजा सज्ञिपचेंद्रिया जलचराद्या पचपर्याप्ता मनुष्यगतिसभवा पचदशकर्मभूमिसभवानरामनुष्योद्भवाएव २० विंशतिभेदा प्राप्यते ॥ ६२ ॥

टबार्थ —समकितगुणठाणे मूल भेद २ सज्ञीपर्याप्तो अपर्याप्तो ए बेना उत्तर भेद च्यारसेने चोवीस थाये ते मध्ये सातमी नारकीना अपर्याप्तो १ भेद ए मध्ये समकित नहीं एटले च्यारसे तेवीस भेद छे नारकीना १३ तिर्यचना १० गर्भजमनुष्यना २०२ देवनाना १९८ एव च्यारसे तेवीस पामीये, इहा कोइ पूछे जे परमाधर्मिने समकित केम जडे ? तिहा उत्तर जे कोइ पवसगति देवताने कारणे समकित पामे छे, देशविरति गुणठाणे पाच भेद गर्भजतिर्यचना पर्याप्ता पनर कर्म्मभूमिना मनुष्यना पनर भेद पयाप्ताए वीस भेद पामीये छीए ॥ ६२ ॥

पन्नरसकम्मभूमि(या), नरभेयासेसएसुठाणेसु ।
समुग्घायायपमत्ते, केवलिवज्जाछगहवंति ॥ ६३ ॥

टीका—पन्नरसेत्यादिपचदशकर्म्मभूमिजा नरभेदा पचभरतैरावतमहाविदेहाख्या पचदशनरभेदा शेषेषुप्रमत्तादिषुनवगुणस्थानकेषुप्राप्यते । सज्ञिपचेंद्रिया पर्याप्ता कर्मभूमिजाएवसर्वविरतिलभते, इत्युक्तगुणस्थानकेषुजीवभेदद्वार । अथगुणस्थानेषुसमुद्घातद्वारमतन्यते । तत्रसमुद्घाता सप्त, वियण १ कसाय २ मरणे ३ वेउविये ४ तेजसे ५ आहारे ६ केवली ७ यसमुग्घायाउछउमत्याजिणेएग १ ससम्यक्त्वप्रकारेणउत्प्राबल्येनघात वीर्यप्राबल्येनप्रागतम्यसमुद्घात , सम्यक्त्वप्रकारेणउत्प्राबल्येनवात चैतन्योपयोगादीनावेदनीयायुरुदयेनससमुद्घात सप्तप्रकार , तत्रवेदनासमुद्घात वेदनीयकर्मोदयेनसातासातयोरुभयोरप्युदयेनचेतनाविपर्ययभवति कषायसमुद्घात चारित्रमोहोदयेनमरणसमुद्घातोपिवेद-

नीयकर्मोदयेनदृष्ट, सचाराना विशिष्टविपाकेन, वैक्रियसमुद्घान, वैक्रियशरीरनामोदयेन, तैजससमुद्घान तैजसशरीरनामोदयेन, आहारकसमुद्घान, आहारकनामो.येन, केवलिसमुद्घात वेदनीयनामगोत्रोदयेन, सयोगिप्रातिपुरभवति समुद्घाया समुद्घानाश्चप्रमत्ते केवलिसमुद्घानवर्जा पदभवन्ति ॥ ६३ ॥

टबार्थ—शेष छट्ठाथी उपरले गुणठाणे पचर कर्मभूमिना पर्याप्ता ए पचर भेद पामीये बीजे क्षेत्रना उपन्या ते विरति धर्मनी प्राप्ति नहीं सामग्रीनो अभाव छे ते माटे जाणवु समुद्घात सात छे ते मध्ये प्रमत्त गुणठाणे एक केवली समुद्घात नथी, शेष छ समुद्घात छे वेदना १ कषाय २ मरण ३ वैक्रिय ४ तैजस ५ आहारक ६ ए छ पामीये ॥ ६३ ॥

पढमेबीयचउत्थे, देसेअणहारमिसिदोचेव ।
केवलीयचसयोगे, खीणअयोगम्मि नो हुंति ॥६४॥

टीका—प्रथमेमिथ्यात्वे द्वितीयेसास्वादने चतुर्थेअविरतिसम्यक्त्वे अनाहारत्तिआहारकसमुद्घातवर्जा पंचसमुद्घाताभवति आहारसमुद्घानस्तुचतुर्दशपूर्वधरस्यप्रमत्तगुणस्थानकस्यैवभवतिनशेषेषु। मीसत्ति मिश्रे तृतीयेगुणस्थानकेद्वावेवनेदनीयकषायलक्षणौसमुद्घातौप्राप्येते मिश्रेमरणाभावात्नमारणान्तिक वैक्रियमिश्रयोगाभावान्नवैक्रिय तेजसस्तुतीनसंक्लिष्टपरिणामस्यभवति तीव्रसंक्लेशोनमिश्रस्य शेषपूर्ववदेव । सयोगिकेवलिलक्षणत्रयोदशमेगुणस्थाने, केवलीय केवलिसमुद्घातलक्षणसमयाष्टकपरिमाणभवति । खीणत्तिमोहक्षपैकादशे अयोगित्ति अयोगिकेवलिलक्षणेचतुर्दशगुणे नो-

इतिनिषेधेभवति क्षीणेमरणाभावात्मारणातिक मोहाभावात्कलङ्गुण-जीवन, ध्यानारुढत्वात्तवेदनाकषायौ, उद्मस्थत्वानूनकेवलिसमुद्घात एवमयोगेपि ननुअयोगमरणदृश्यतेतरकथनमारणातिकमिनिअयो-गेचेतनावाताभावात् भवक्षयेपि न मरणसमुद्घात ॥ ६४ ॥

टबार्थ —पहिले मिथ्यात्व गुणठाणे हवे बीजे सास्वादन गुणठाणे, चोथे समकित गुणठाणे पाचमे देशविरति गुण-ठाणे, केवली समुद्घात तथा आहारक समुद्घात विना पाच समुद्घात छे २ नथी आहारक समुद्घात चऊद पूर्विने होये, मिश्रगुणठाणे वेदनी, कषाय ए बे समुद्घात होवे सयोगी गुणठाणे एक केवली समुद्घात छे खीणमोह अयोगी केवली गुणठाणे कोइ समुद्घात नथी ॥ ६४ ॥

सेसेमरण इक, अइरूद्दायपढमपचगुणे ।
अद्दतिगधम्मचउग, पमत्तिअपमत्तिधम्मचउ॥६५॥

टीका—शेषेषु अप्रमत्तादिषुउपशातमोहपर्यतेषुएकमरणमरण समुद्घातलक्षणंप्राप्यत उपशांतस्यआयु क्षयेमरणभवति, तेनतद्र-वेषणात्केचिदप्रमत्तादिषुमरणमन्यतेनमारणातिकसमुद्घात ध्या-नारूढत्वात् ॥ इत्युक्तं समुद्घातद्वारगुणस्थानेषु ॥ साप्रतध्यानद्वा-रगुणस्थानेपूच्यते अदस्तावत्तिनतध्यान चतुर्धाआर्तध्यान १ रुद्र-ध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४ चेति ॥ उक्तंच ॥

जथिरमज्झवसाण, तझाणजचलतयचित्त ।
तहुज्झभावणावा, अणुप्पेहावाअवचिंता ॥ १ ॥

अतर्मुहूर्तप्रमाणकालमेकरवित्तावस्थानेध्यानशेषचलनचित्तअथवा भावना अथवा अनुपेक्षा अथवा चिंतास्मृति ॥ उक्तंच ॥

अनोमुहुत्तमित्त, चिंनावत्थाणमेमवत्युम्मि ।
छउमत्थाणझाण, जोगनिरोहो जिणाणतु ॥ २ ॥

अनमुहूर्तात् परत चिंताभवति अथवा ध्यानातरवाभवति पुन बहुवस्तुसक्रमेसंतानोभवति ॥ उक्तच ॥

अनोमुहूनपरओ, चिंताज्झाणनरवदुज्झाहिसु ।
चिरपिदुज्झवहुरा, धुमसमेझाणसनाणो ॥ ३ ॥
अत्तरुन्धम्म, शुक्लज्झाणाइ्नत्थअनाइ ।
निम्वाणसाहणाइ, भवकारणमट्टरुद्दाइ ॥ ४ ॥

तत्रार्तध्यान चतुर्धा अमनोज्ञानावियोगचिंतनरूपप्रथम अमनोज्ञा अमनोहरा शब्दादयस्तेषावियोगचिंतनकदाएतेमजति अथवा शत्रुप्रमुखाणासयोगेतद्वियोगचिंतनकदाएतेषाक्षय इत्यादि अनिष्टसयोगे आतुरानिसमुद्भवेतद्वियोगचिंतनेउपयोगस्यैकाग्यअमिनवोपयोगनारूपध्यानप्रथममनोज्ञविषयादिसप्रयोगचिंतारूप, द्वितीयकदाकथनाइष्टा शब्दादय मिनादय सदस्यते एतचिंतारूपैकाग्राऽनन्योपयोगनारूपध्यानद्वितीयइष्टवियोगचिंतासमुद्भव, तथा शूलादिरोगप्रकटनेतद्विगमचिंतारूपतृतीय, एतेरोगामेकथजाता कथगच्छति एतचिंतातन्मयत्वरूपरोगचिंतारयतृतीय, रोगस्याप्यनिष्टत्वेनप्रथमभेदेएवातर्भावस्तथापि अनिष्टा शत्रुप्रमुखाभिन्नक्षेत्रत्वेनरोगाणाचस्वशरीरावगाहात् एकक्षेत्रेणैवमितामियान, तथाचक्रवर्त्यादिविषयाणाअभिलाषेणतद्विषयत्वाऽनिदानकरणरूपचतुर्थ । एवमार्त्तध्यानचतुष्टयभेदससारवर्धन निर्यग्गतिमूलज्ञेय, रागोदोसोमोहो जेणससारहेयवोभणिआ अट्टम्मियतेतिन्निवि तोतससारतरुबीया १ लेश्याआद्याअप्रशस्तास्तिस्त्र तस्यक्रदनशोचनपरिवेदनताडनलक्षणानिलिंगानि । पुनरुक्तच सद्दाइविसयगिद्धो सधम्मपरम्मुहो-

पमायपरो, जिणमणमयमणविरत्तो वट्टइअट्टम्मिज्झाणम्मि इत्यार्त्त-स्वरूप तत्रवययवनवहनमारणप्रनि यान (प्रणिधान?) अनिक्रोधग्रहयस्त निर्घृणरुद्रघोरपरिणामरुद्रध्यानचतुर्वि १ हिंसानुबधि १ मृषानुबधि १ चौर्यानुबधि १ परिग्रहरक्षणानुबधिरूप तत्र हिंसाद्र पहिंसासाच हिंसाकरणकारणानुमतिचिंतनैकाग्रनारूपमनन्योपयोगनारूप प्रथम एवमृषाभाषणेत्रिकरणैकत्वोपयोगनारूपद्वितीय चौर्यचिंतनैकत्वरूप तृतीय परिग्रहमिलनरक्षणचिंनातन्मयत्वरूपतूर्यरुद्र आत्रे लेश्यात्रयरूप, अस्यलिंगानिमरणाभिलापमरणेहापरस्य पसनेहर्षनिर्दयत्वपरस्मकष्टकरणे, न अनुतापइत्यादीनिरुद्रध्यानस्वरूप, धर्मध्यानतस्यभावनाज्ञानदर्शनचारित्रवैराग्यलक्षणानि । तत्रगाथा नाणेनिवशासोवृणइमनोधारणविसुद्धिच नाणगुणमुणीमुणियसारोतोज्भाइमुणिचलमईओ ॥ १ ॥

सकाइदोसरहिओ, पसमथिज्जाइगुणगणोवेओ ।
होइअसमूढमणो, दसणसुद्धलाणम्मि ॥ २ ॥
नवकम्मअणायाग, णेराविणिज्जरसुभायाण ।
चारित्तभावणाए, झाणमयत्तेणससमेई ॥ ३ ॥
सुविइयजगसप्भावो, निस्सगोनिब्भओनिरासोओ ।
वैरग्गभावियमणो, झाणम्मिसुनिचलो होइ ॥ ४ ॥

इत्यादिभावनयाविशुद्धपरिणाम मुनिर्धर्मध्यानमवलम्बते धर्मध्यानस्यालम्बनानिवाचनापृच्छनापरिवर्त्तनाऽनुपेक्षालक्षणानि धर्मध्यानभेदा, आज्ञाविचय, अपायविचय, विपाकविचय, सस्थानविचयलक्षणा स्तत्रसुनिपुणअनाद्यनिधनसर्वजनहितयथार्थभाव कथनरूप अजितअमितमहार्थमहानुभावमहाविस्तारनिरवद्यजि-

स्तनैकत्वरूपजिनाज्ञास्तत्रोपयोगैकत्वमयमधर्मध्यानं, कदाप्य-
वबोधेजिनाज्ञासत्याइतिचिंतनं, अणुवकयपराणुगाढ परायणाज-
किणाजुप्पमराजिय रागदोपमोहानहाणा ईगोत्तेण १ इत्येक-
त्वरूप प्रथम, अपाया रागद्वेषकषाया एतेममनयुज्यन्ते, भावनाच
नाहंविभावकर्त्ता नाहंविभावभोक्ता नाहंविभावाधार नाहंविभा-
वरसिक नाहंविभावपरिणामी, नचपुद्गलानास्वामीनचाधार नग्रा-
हक नव्यापकोनोपुद्गलानायोगेममसुख परकर्तृत्वमेवदुःख यच्चा-
नतनिर्विकारस्वभावात् अन्यन्नन्नममम, एतेरागद्वेषमिथ्यात्वादयो-
दोषाअपायाएव तेषायोगेममनस्थात य इत्यादिचिंतनैकाग्रतोपयोग-
रूप द्वितीय । विपाकविचयश्चज्ञानावरणादीनामष्टानां कर्मणाविपा-
काज्ञानरोधादय तेषाविपयश्चिंतनज्ञानावरणादीनानाहंकर्त्तानाहंभो-
क्तानाहं, आदाता नाहं कर्मणासमृद्धइत्युपयोगचिंतनतन्मयत्वतृतीय-
विपाकविचयाख्य, चतुर्थलोकालोकस्वरूपऊर्द्ध्वास्तिर्यग्लोकास्थान-
चिंतन वस्तुन स्वीयासख्येयप्रदेशगुणपर्यायावस्थानपरिणमनचिंत-
नतन्मयत्वसंस्थानविचयाख्यधर्मध्यान किंबहुना सत्त्वविपजी राई पय-
त्थवित्थरोवेय सत्त्वनयसमूहमयखभाइज्झासमयसत्त १ सत्तपमायरि-
रया मुणओखीणोवसनमोहाय। झायारोनाणधरा, धम्मज्झाणस्सनि-
द्दिठ्ठा २ इत्यनेनधर्मध्यानध्यातारस्तेनिर्ग्रन्था एव, अतदिग्पटाश्चतुर्थे-
गुणस्थानके आज्ञाविचयाख्यधर्मध्यानमिच्छंति तदभिप्रायपरिज्ञा-
नात् आज्ञागीकारतद्भावनादयोभवति आज्ञास्वरूपैकत्वोपयोग-
स्थिरत्वमतर्मुहूर्त्तप्रमाण अनतानुबधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानक-
पायोदयाभावेएवभवतिना १ इत्युक्त धर्मध्यानस्वरूप, शुक्लध्यानतु-
निर्मलक्षयोपशमोत्त्वयथार्थ चेतनायागत्स्येनिमित्तालबनप्राप्त
स्वरूपोपयोगीस्वरूपैकत्वपरिणतस्यभवति पूर्वविद् आद्येशुक्ले तत्र
तत्कालकृतज्ञानावरणीयक्षयोपशमरूपभावश्रुतापेक्षवचनद्रव्यश्रुता

पेक्ष नोचेन्मरुदेवीमापतुषादिषु यमिताग, तत्र प्रथमध्यानमतुर्दा- पृथक्त्ववितर्कसप्रविचारं पप्रथम, एकत्ववितर्कअविचारद्वितीय, सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिरूपतृतीय, व्युपरतक्रियानिवृत्तिरूपतुर्य, तत्रावे द्वे उपशातक्षीणकषाययोर्भवत, अनोपशान्तक्षीणकषायशब्देन उपशमश्रेणिक्षपकश्रेणीप्रारम्येवे एवजेय ध्याताशनकाशादिनि, तनात्मन पुद्गलादिम्य भिन्नत्वेनस्वरूपोत्पादव्ययध्रौव्यपृथक्त्वचिंतनेन- स्वरूपगुणपर्यायपृथक्त्वचिंतनेनवितर्कश्रुतज्ञानावलंबिविचारो अर्थ- व्यजनयोगसक्राति, अथ पदार्थे जीव यजनतत्प्रकाशकज्ञानादि- गुण यूह तनयोगोमनसएकत्वेनवाक्कायचापलरोधलक्षण तद्रूप- ध्यानद्रव्यात्पर्यायेपर्यायान्द्रव्ये एवसामान्यधर्मविशेषधर्मेगुणपर्यायपयो- गपरावर्त्तनेन सविकल्पनिर्विकल्पपूर्वक श्रद्धानज्ञानस्वरूपैकत्वात् भेद- रत्नत्रयरूपप्रथमशुक्लध्यान, अर्थपदार्थे यजनेगुणपर्यायेएकत्वोपयो- गरूपवितर्कारुयश्रुतालंबनेनअविचार उपयोगातरासंक्रमणरूपनिर्वि- कल्पचतेनाविचारनिर्विकल्पत्वेनाभेदरत्नत्रयीरूपद्वितीय, एकत्ववि- तर्कअप्रविचारलक्षणशुक्लभवति, सूक्ष्मक्रियासूक्ष्मयोगचलनरूपात- स्यारोधककाळेअप्रतिपातिरूपतृतीय, सर्वयासक्रियत्वक्षेत्रातरगमन- रूपक्रियारूपतुर्यव्युछिन्नक्रियानिवृत्तिरूप चतुर्य शुक्लध्यान, एव ध्यानस्वरूप, तच्चगुणस्थानकेषुविभजनाह ॥ अद्वरुद्दाइतिप्रथमेषु- पचसरूपालक्षणेषुगुणेषु मिथ्यात्वात् देशविरतिपर्यंतेषु आर्त्तरौद्रे- द्वेध्याने, आवश्यकनिर्युक्तौ, तदकिपदेशविरया पमायपरसजयाणु- गज्झाण भवपमायमूलवज्जेयव्वपयत्तेण १ इत्यार्त्तध्याने इयकरणा- कारणाणु मइविसयमणुचिंतणचउब्भेओ अविरयदेशातजयजणमण- मसेविअमदत्त इतिरुद्राधिकारेमुनीना धर्मध्यानमितिवाक्यात्, त- त्त्वार्थेतुअप्रमत्तानाधर्मध्यान, तच्चप्रतिपद्यमानरपेक्षयाअप्रमत्ते- धर्मध्यानमालब्यपश्चात्प्रमत्तेपिकियत्कालयावत्धर्मध्यानीभवति,

तेनआर्त्तनिकधर्मचतुष्कमप्रमत्तेऽप्रमत्तेगुणस्थानकेभवति, निदानार्त्तस्यमुनीनामसंभवात्अप्रमत्तारपेसप्तमेगुणेधर्मध्यानस्यैवचत्वारोभेदाभवति ॥ ६५ ॥

टबार्थ —शेषगुणठाणे पाचने विषे प्रमत्त १ अपूर्वकरण २ अनिवृत्तिबादर ३ सूक्ष्मसपराय ४ उपशान्तमोह ५ ने विषे एक मरण समुद्घात छे ॥ हवे गुणठाणे ध्यान कहे छे । मिथ्यात्वथी मांडी पाच गुणठाणा पर्यंत आर्त्त १ तथा रौद्र १ ए बे ध्यान छे, तेहना ८ पाया छे, आवश्यक निर्युक्ते मुनि विना धर्मध्याननी मना छे निदान आर्त्तविना तीन भेद आर्त्तध्यानना च्यार भेद ए सात भेद प्रमत्तगुणठाणे ध्यानना छे । अप्रमत्त गुणठाणे धर्मध्यानना च्यार भेद छे ॥ ६५ ॥

चउधम्म एकसुक्क अपुव्विसेसमि एगसुक्कच ।
चरिमे दुसुक्कचरिमा, ज्झाणभेया गुणठाणे ॥६६॥

टीका—चउधम्मइत्यादिअपुव्विइत्यादि, अपूर्वकरणेअष्टमेगुणस्थानकेचत्वारोधर्मध्यानस्यभेदा, एकश्चशुक्लध्यानस्यएव पचभेदाभवति "सेसंमि" शेषेअनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिपर्यंतेषुएकशुक्लभवंति, तत्रोपशान्तमोहयावत् पृथक्त्ववितर्कसमविचाररूपक्षीणमोहेएकत्ववितर्कअप्रविचाररूपमाप्यते, सयोगिकेवलिचरमभागेयोगरोधकालेआवर्जीकरणकेवलिसमुद्घातानंतरसूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति माप्यते, चरिमेत्ति चरमेअयोगिकेवलिलक्षणे, दुसुक्कत्ति द्वौशुक्लौचरमौसूक्ष्मक्रियव्युच्छिन्नक्रियलक्षणौ द्वौशुक्लभेदौभवत एवध्यानभेदागुणस्थानकेज्ञेया. ॥ ६६ ॥

टबार्थः—च्यार धर्मध्यानना पाया तथा एक पहेलो पृथ-

क्त्ववितर्कसप्रविचारनाम ए पाच भेद ध्याननां अपूर्वकरण गुणठाणे छे, शेष गुणठाणे एक शुक्लध्यान छे, नवमे दशमे अग्यारमे शुक्लनो प्रथम पायो छे, क्षीणमोहे शुक्लनो बीजो पायो छे, तेरमे शुक्लनो तीजो पायो छे, तेरमाने अंते छे, तेरमानी आदिध्यान तथा ध्यानांतरिका छे, "चरिम" चौदमे शुक्लना छेहला बे भेद छे, ध्यानभेद गुणठाणे इम कह्या ॥ ६६ ॥

दंडकभेया सुगमा, वेयतिगजावबादरकसाओं। चरणे अविरईइक्का, पढमचउठाणगे नेआ ॥६७॥

टीका—अथगुणस्थानकेषुदंडकभेदानाह दंडकभेदा सुगमा सुज्ञेया नेरईया १ असुराइ १० पुढवाई ५ बेन्दिया ३ चेवं गंब्भयतिरि १ नराण १ वनर १ जोइसिअ १ वेमाणी १ इत्येव चतुर्विंशतिदंडकास्तेमिथ्यात्वेचतुर्विंशरपिभवति सास्वादनेतेजोवायूविनाभवतिद्वाविंशति, मिश्रेऽविरतसम्यक्त्वेषोडशपचेंद्रियदंडका, देशविरतिगुणस्थानकेतिर्यग्पचेंद्रियामनुष्यपचेन्द्रिया, एतौद्वौदंडकौभवतः, प्रमत्तादयोगिपर्यंतेषुएकोमनुष्यपचेंद्रियारयोदंडकोलभ्यते, वेदद्वारेवेदनिकपुरुषनपुसकस्त्रीनेदलक्षणयावद्बादरकषायइति अनिवृत्तिबादरगुणयावत् वेदनिकोदय।सूक्ष्मसपरायात् उपरिअवेदीपुत्रजीव वेदाद्विविधाःद्रव्यवेदा भाववेदाश्चतत्रद्रव्यवेदालिंगाकाररूपा, भाववेदा पुरुषाणास्त्र्यभिलापरूप स्त्रीणापुरुषाभिलापरूप पंढानातूभयाभिलापरूप, पुरुषादिषु तिणफुफुमनगरदाहसमानविषयदाह सचनमगुणस्थानकयावद्देव लिंगाकाररूपस्तुसयोगिकेवलिपर्यन्तदृश्यते, तत्पाठश्चकर्मग्रंथेवेदनिके, उपयोगद्वादशकयनेनद्रव्यलिंगग्रहणक्रनमिति, अभिलाषापेक्षयातुनवमयावत्, तत्तुध्यानारूढस्यश्रेणिगतस्य-

कावेदोदयनानाविमिलापरूप ,तत्कथ तत्रोच्यतेअत्रवेदोदय नविषयाभिलापरूप किंतुपुरुषे धैर्यरूप , स्त्रीवेदस्यकिंचिद्दैन्यतारूप , नपुंसकस्यकिंचिदातुरतारूपएवज्ञेय , वेदोदयाभावेतुतीव्रत्वदैन्यत्वातुरत्वादयोनभवंति, उक्ता वेदा सप्रतिचारित्रकथयन्नाह, चरणेत्ति चारित्रसप्रतिपक्षभेदग्रहणेनसप्तविध, तद्यथा सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसपराय, यथाख्यात, देशविरति , अविरतिश्चतत्रसामायिक मिति सर्वसावद्ययोगविरतिलक्षणसामायिक, तद्विशेषाएवछेदोपस्थाप्यादयोविशुद्धतराध्यवसायविशेषा, सावद्ययोगनिरतेरेवतदनुत्पत्ति, रागद्वेषविरहित सम , अयो गमनसकलक्रियोपलक्षणमेतत्सर्वैवक्रिया, साधो अरक्तद्विष्टस्यनिर्जराफला, समस्याय समाय समायमितिस्वार्थिकष्टक, समायेभवसामायिक, सामायेननिर्वृत्तसमस्यवाविकारस्तन्मय समाय सप्रयोजनमस्येतिवासर्वत्रयथाभिप्रेतेथेष्टक्, तच्चसामायिकद्विप्रकार, इत्वरकालयावज्जीविकच तत्राद्यप्रथमात्यतीर्थंकरतीर्थयो , प्रव्रज्याप्रतिपत्त्यारोपित, शस्त्रपरिज्ञाध्ययनादिविदं श्रद्धत छेदोपस्थाप्यसयमारोपणेनिषिप्रतरत्वाद्विरते सामायिकव्यपदेश जहाति, इत्यतदत्वरकालमन्यमतीर्थकृत्तांविदेहक्षेत्रवर्तिनाचयावज्जीविक प्रव्रज्याप्रतिपत्तिकालादारभ्यमाणप्रयाणकादवतिष्ठते, प्रथमातिमतीर्थकरशिष्याणासामान्ययतिपर्यायछेदोविशुद्धतरसर्वसावद्ययोगविरतावस्थानविविक्ततरमहाव्रतारोपणछेदोपस्थाप्यसयम । छेदोपस्थाप्यमेवछेदोपस्थाप्यपूर्वपर्यायछेदेसतिउत्तरपर्यायेउपस्थापनछेदोपस्थापन, तदपिद्विधा, निरतिचारसातिचारभेदेन, तत्रशिष्यस्यनिरतिचारमधीतविशिष्टाध्ययनविद मध्यमतीर्थकरशिष्योवायद्योपसपद्यते, चरमतीर्थकरतीर्थेनशिष्याणाशिष्यत्वेनभवनेभवति, सातिचारतुभग्नमूलगुणस्यपुनर्व्रतारोपणेछेदोपस्थाप्यशुभ यचैनत्, सातिचार-

चस्थितिकल्पएवाद्यतरतीर्थंकरयोरवेत्यर्थ , परिहारस्तपोविशेपस्तेन्-विशुद्धपरिहारविशुद्धमिति, तदपिद्विधा, निर्विश्यमानक, निर्विष्टकायिकच, तत्रनिर्विश्यमानकमासे यमानकपरिभुज्यमानकमित्यर्थ , निर्विष्टकायिकमासेविनमुपमुक्तन्तसहयोगाततदनुशयिनोपिनिर्विशमानका-स्ताछील्येशक्तीवानिर्वेश उपभोगोनिर्विशमानका तनउपभुजाना-निर्विष्टकायिका कायोर्यरितिपरिभुक्तन्ताटगृविधतपस निर्विष्टका-यिकाइत्यर्थ परिहारविशुद्धिश्चनप प्रतिपत्नानानवकोगच्छ , तत्रप-रिहारिणश्चत्वार , अनुपरिहारिणश्चत्वार , कल्पस्थितएक एववाचना-चार्य , सर्वेपिश्रुतावतिसपन्नास्तथापिल्याकल्पस्थितएक कश्चिद्-वस्थाप्यते, तत्रयेकालभेदेननिदिनतपोनुतिष्ठतितेपरिहारिण निय-ताचाम्लभक्ता , स्वनोनुपरिहारिणाग्रीग्मेचतुर्थषष्टाष्टमभक्तलक्षणज-घन्यमध्यमोकृष्ट, क्रमेणैवशिशिरकालेषष्टाष्टमदशमानिजघन्यम यमो-त्कृष्टानि, वर्षास्वष्टमद्वादशभक्तानि जघन्यम यमोत्कृष्टानि, पारणाका-लेप्याचाम्लमेवपारयति, उक्तविधानतप पण्मासकृत्वापरिहारित्वप्र-तिपद्यते, अनुपरिहारिणश्चपरिहारिणोभवति, तेपिपण्मासान्विदधते-तत्तप , पश्चात्कल्पस्थितइति, एवमेपपरिहारविशुद्धसयमोऽष्टादशमि-र्मास परिसमाप्तिमुपयातिपरिसमाप्तेतुनस्मिन्पुनम्तदेवकिंचित्परिहा-रतप प्रतिपद्यते, स्वशक्त्यपेक्षा केचिद्यामिनकल्पमपरेतुगच्छमेव-विशन्ति, परिहारविशुद्धिकाश्चस्थितकल्पाएवप्रथमचरमतीर्थयोरेवनम-ध्यमतीर्थेष्विति, सूक्ष्मसपरायसयमस्तुश्रेणिमारोहत प्रतिपत्तनोनाभ-वति, श्रेणिरपिद्विप्रकारा उपशमिका, क्षायिकाच, तत्रोपशमिकाअनता-नुबधिनोमिथ्यात्वादित्रय नपुसकस्त्रीवेदौहास्यादिषट्कपुनद अप्रत्या-ख्याना प्रत्याख्यानावरण सज्वलनाश्चेति, अस्याश्चारभकोऽप्रमत्त-सयत अपरेतुनुवतेऽविरतदेशप्रमत्ताविरतानामन्यतम प्रारभते, सचा-नतानुबधिनश्चतुरोपिसमकमेवशमयति । अनर्मुहूर्तेनततोदर्शनत्रिक

ततोऽनुदीर्णंपुमानारोहन्नपुसकवेदनत स्त्रीवेदयोपिदारोहति प्राइन-पुसकवेद तत पुरुषवेद तृतीय प्रकृतिरधिरोहत्प्राइस्त्रीवेदतत पुरु-षवेदततोपिहास्यादिषट्कतत पुवेदततोऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यान-रूपौद्वौक्रोधौतन सज्वलनक्रोधशमयति, एवद्वौमानौपश्चात्सज्व-लनमान पुनर्द्वेमायेपश्चात्सज्वलनमायापुनर्द्वौलोभौपश्चात् सज्वल-नकोलोभस्तस्यसख्येयानिखडानिकृत्वाक्रमेणचोपशमपश्चिमखंडम-सख्येयानिखडानिकरोति, तत प्रतिसमयमसख्येयभागमुपशमयन् समस्तमतर्मुहूर्तेनशमयति, ताश्चासख्येयभागानूशमयनूसूक्ष्मसपराय-सयमीभवति, सविशुध्यमानसूक्ष्मसपरायीकथ्यते, अत्यतविशुद्धाध्य-वसायीदशमगुणस्थानवर्त्ती श्रेण्यारोहेचवर्द्धमानविशुद्धाध्यवसायविशु-द्धतर उपशातमोहाख्यउपशातसर्वकषाय एकादशगुणस्थानकलभते, सचोपशान्ताद्धाक्षयेणप्रपतन्पुनर्दशमसूक्ष्मसपरायगुणस्थानलभते, स-चहीयमानपरिणामत्वात् सक्लिश्यमानसूक्ष्मसपरायीकथ्यते इति, क्षा-यिकीतुश्रेणिमारोहन्प्रथममनतानुबधिनोमिथ्यात्वमिश्रसम्यक्त्वानि-अप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणौनपुसकस्त्रीवेदौहास्यादिषट्कपुवेदम्। सज्वलनाश्चअस्यारत्वारोहक अविरतिदेशविरतिप्रमत्ताप्रमत्तविरती-नामन्यतमोविशुद्धमानाध्यवसाय सचानतानुबधिनोयुगपदेवक्षपय-त्यतर्मुहूर्त्तेन तत क्रमेणदर्शनत्रिकततोऽप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावर-णाश्चयुगपदेवक्षपयितुमारभते, तन्मध्यभागेत्वेपामिमा षोडशप्रकृती क्षपयति, नरकतिर्यग्गतीएतदानुपूर्व्यौएकद्वित्रिचतुरिंद्रियजाती आ-तपोद्योतस्थावरसाधारणसूक्ष्मनामानि, ततोनिद्रानिद्रा १ प्रचलाप्र-चला १ स्त्यानर्द्धी १ ततोष्टानाशेपततोनुदीर्णवेदजबन्यपूर्ववत्, ततोहास्यादिषट्क, ततउदितवेदतत सज्वलनानामेकैकक्रमेणक्षप-यति, सावशेषपूर्वसज्वलनकषायेउत्तरक्षपयितुमारभते, सर्वत्रपूर्वशेष-चोत्तरेणैवसहक्षपयति यावत्सज्वलनसख्येयभाग तमपिअसख्ये-

यानिखडानिकृत्वाप्रतिसमयमेकैकखण्डक्षपयति, तदपिसूक्ष्मसपराय-सयमीभवति, सविशुद्धिमानकएवकथ्यते, अपचक्षीणमोहीणभवति, यथोक्तोपशमश्रेणिएकादशगुणस्थानप्राप्त , उपशातकषायोपियथा-ख्यातसयमीभवति, तथापुनरयक्षीणमोहीक्षपिनकषायोपियथाख्या-तसयमीभवति, यथाशब्दार्थेयथाख्यात सयमोभवति, भगवनातथा सर्वैवकथचरयानोप्रसिद्ध यथाख्यात सचैकादशगुणस्थानेउपशात-त्वात् द्वादशेक्षीणत्वाद्यकषायाभाव , एवसयोगिकेवलिअयोगिके-वलिनोपियथाख्यात , एवपचविधचारित्र, अष्टविधकर्मचरित्तीकरणा-चारित्रपुलाकादिभेदा अपिअन्तर्लीनाएवज्ञेया , अनमतिपक्षसा-हचर्यात्हिंसाप्रत्याख्यानरूपादेशविरति सर्वथाअप्रत्याख्यानरू-पाअविरति , एवसप्तभेदा सयममार्गणाद्वयुक्तचारित्रस्वरूप ततगुण-स्थानकेषुविभजनाह, चरणेचारित्रेचारित्रविचारेप्रथमचतुर्षुगुणस्था-नकेषुअविरति असयमएवास्ति ॥ ६७ ॥

अर्थ —टकना भेद सुगम कहेता, तिहा मिथ्यात्व गु-णठाणे चोवीश दडक छे, सास्वादन गुणठाणे तेउवाउ विना बावीस भेद पामीये, मिश्रगुणठाणे सोल पचेंद्रीना भेद पामीये, समकिते पण सोल पामीये, देशविरति तिर्यच पचेंद्रि मनुष्य पचेंद्रि ए बे दडक पामीये, अने छट्ठा गुणठाणाथी एक मनु-ष्यनो दडक पामीये वेद द्वारे बादरसपराय पर्यन तीन वेद पामीये, दशमा गुणठाणाथी माडी उपरला पाच गुणठाणा अ-वेदी छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए उपयोग तीन वेद मध्ये कर्मग्रथे मान्या छे, बाह्यद्रव्यनीलिंगनी अपेक्षाये ए मान्या छे, पर वेद जे अभिलाषरूप ते भाववेदनी अपेक्षाये नव गुण-ठाणेज छे, चारित्रमार्गणाना भेद सात ७ सामायिक १ छेदो-

पस्थापनीय २ परिहारविशुद्ध ३ सूक्ष्मसंपराय ४ यथाख्यात ५ देशविरति ६ अविरति ७ ए सात भेद तिहां पहिले च्यार गुणठाणे अविरति एकज छे ॥ ६७ ॥

दरविरइदेसविरए, पमत्तिअपमत्तिचरणतिअगच । सामाइयछेयपुण, नियट्टिअनियट्टिगे नेय ॥ ६८ ॥

टीका—देशविरतौपचमेगुणस्थानके दरविरति दराईषद्विरति त्रसहिंसारूपादविरतिर्भवति, प्रमत्तेतथाऽप्रमत्तेचरणतियग चरणानात्रिकचरणत्रिक सामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणप्राप्यते, सामायिकपुन छेदइतिछेदोपस्थापनीयचारित्रयुग्मअपूर्वकरणे अनिवट्टी अनिवृत्तिकरणेभवति ॥ ६८ ॥

टबार्थ—अने देशविरति गुणठाणे एकज देशविरतिज छे प्रमत्त १ अप्रमत्त २ गुणठाणे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्ध ३ ए तीन होये, अपूर्वकरण गुणठाणे तथा अनिवृत्तिकरण गुणठाणे सामायिक चारित्र १ अने छेदोपस्थापनीय चारित्र ए बे चारित्र होय ॥ ६८ ॥

सुहमेसुहमचरण, सेसेसु अहक्खायगभवेचरण । योणिलक्खाचुलसी, मिच्छेत्रीये अ गइतसगा ॥६९॥

टीका—सूक्ष्मेसूक्ष्मसंपरायलक्षणे दशमेगुणस्थानके सूक्ष्मचारित्र सूक्ष्मसंपरायलक्षणचारित्रभवति, शेषेषुउपशातमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिअयोगिकेवलिलक्षणेषु चतुर्षुगुणस्थानकेषु अहक्खायग यथाख्यातलक्षणचारित्रप्राप्यते, इत्युक्तचारित्रद्वार, अथयोनिद्वारअभिधित्सुराह तत्रयोनिरुत्पत्तिस्थान तत्रयेजीवा पूर्वभवायुप

क्षयात्अभिनवायुरुदयेन्जुगत्यावक्रगत्यावाआगत्यप्रथमसमये यत्र-उत्पद्यते तत्रयद्वर्णगंधरसस्पर्शसंस्थानपरिणता पुद्गलाआहारत्वेन-गृण्हतितस्यजीवस्यतद्रूपायोनि, वर्णादीनाममपनमपरावृत्तौअपरा-योनि, एवएकवर्णद्विवर्णत्रिवर्णचतुर्वर्णपंचवर्णादिसंयोगेभंगावर्णस्य २१ एकविंशत् गंधस्यत्रय ३, रसस्य एकविंशत् २१, स्पर्शस्य-षट्त्रिंशदुत्तरशत १३६, संस्थानस्यएकत्रिंशत्, तेचपरस्परगणितायो-निभेदा भवति, तेचाहारपुद्गलाविंशतिगुणाम्तयापिस्थूरत्वेनग्राह्या-इतिस्थूरत्वेनवर्णादीनामेकत्वमेवभवति, एवयोनय शीतोष्णादिसं-वृतादिसचित्तादिभेदान्चतुरशीतिप्रमाणा संति ताश्चेमा, पुढविदग-अगणिमारुअ, इक्किक्केसत्तयोणिलक्खाउ, दसपत्तेअ तरूण चउदस-लक्खापइयरेसिं १

> दोदोविगलिंदिय, तिरिदेवेचउरचउरलक्खाइ,
> मणुएचउदसलक्खा, सखाजोणीयाचुलसीओ ॥ २ ॥

तत्रमिथ्यात्वेचतुरशीतिलक्षायोनय प्राप्यते, नीयेत्ति द्वितीयेसास्वाद-नेअगतिनसका -गतिनसकास्तेजोकायावायुकायिकास्तद्विरहिता सा-धारणरहिता शेष ५६ षट्पंचाशल्लक्षायोनीनामप्राप्यन्ते, लक्खाचुल-सीमिच्छे बीएगतसनिगोयविणाइविपाठ ॥ ६९ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे सूक्ष्मसंपरायचारित्र होये, शेष इग्यारमो बारमो तेरमो चउदमो ए च्यारे गुणठाणे यथाख्यात चारित्र छे हवे चोरासी लाख जीवायोनि कहे छे, मिथ्यात्व गुणठाणे चोरासी लाख जीवायोनि छे, सास्वादन गुणठाणे तेउ-कायनी सात लाख वायुकायनीए चउद लाख नथी, चउद लाख साधारणनी नथी ॥ ६९ ॥

मीसदुगेसुरनिरया, तिरिमणुपचेंदिसभवाजोणी।
देसेतिरियनराणा, सेसेसु मणुअयोणीओ ॥ ७० ॥

टीका—मिश्रसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानद्विकेसुरयोनि, निरयत्ति नारकप्रत्ययायोनि, तिर्यग्पचेंद्रियप्रत्ययायोनि, मनुष्यप्रत्यययायोनि षड्विंशतिलक्षायोनीना प्राप्यते, देशे देशविरताख्ये गुणस्थाने तिर्यग्मनुष्यप्रत्ययाअष्टादशलक्षायोनीनासंभवन्ति, शेषेषुप्रमत्तादयोगिकेवलिपर्यंतेषुमनुष्यप्रत्ययाएवचतुर्दशलक्षाएवप्राप्यते, अत्रपर्याप्तापर्याप्तसमूर्छिमादीनायोनिभेदव्याख्यायाअदृष्टत्वान्नइहापिसमुचिताव्याख्यानाएवेति ॥ ७० ॥

टबार्थ—मिश्रगुणठाणे तथा समकित गुणठाणे पर्चेद्रीपणानीच्यार लाख देवतानी च्यार लाख, नारकीनी च्यार लाख, तिर्यंचनी चउद लाख, मनुष्यनी एटली योनि होये, देशविरति गुणठाणे च्यार लाख तिर्यंचनी, चउद लाख मनुष्यनी होये, शेष छठाथी मांडी सर्व गुणठाणे मनुष्यनी योनि होये, योनि ते वर्ण गंध रस फरसमया, जे गत्र प्रथम समये आहार लेवे ते योनि कहीये ॥ ७० ॥

कुलकोडीणएव(सु), धुवबंधीमिच्छमाइठाणेसु।
सगचत्तछचत्तगुणयाल, दुगचपणतीसदुगतीस ॥७१॥

टीका—कुलकोटीनाअपिव्यारयाएवमेवयोनिक्रमेणैवज्ञेया, कुलाश्रमिश्रयोनौअपिएककुलत्वभवति, एकयोनावपिअनेककुलत्वभवति, गतकुलकोटीद्वार, अथध्रुवबंधिनीद्वाराण्याह, ध्रुवबंधीइत्यादितथनिजहेतुसद्भावेसासाप्रकृतीनाध्रुवोअवश्यभावीबंधोभवतिताध्रुवबंधिन्य, यासाचनिजहेतुसद्भावेपिनावश्यभावीबंधस्ताअध्रुवबंधिन्य,

यदन्नादि, "नियहेतुसभवेनिहु, भयणिज्जोजेणहोयपयडीण, वधोता-अणुवाओ धुवाअभयणिज्जबन्नाओ ।१। ध्रुवबन्धिनश्च वन्नचउतेय-कम्मा गुरुलहुनिमिणोवघायभयकुछा मिच्छकसायावरणा विग्घधुव-बंधिसगचत्ता ।१। तत्रवर्णचतुष्कतैजसकार्मणागुरुलघुनिर्माणो-पघातानिइत्येतानवनामप्रकृतय, भयकुत्सामिथ्यात्वकषाया षोडश-इत्येताएकोनविंशतिर्मोहनीयप्रकृतय, आवरणानिज्ञानावरणपञ्चक-दर्शनावरणनवकस्वरूपाणिचतुर्दश विघ्नमन्तरायदानलाभभोगोपभोग-वीर्यान्तरायलक्षणपञ्चविघ्नमित्येवमसप्तचत्वारिंशदप्येतागुणस्थानारोहेव-र्यन्निरोधेऽपिस्वस्वहेतुसद्भावेअवश्यमनादृत्य बघ्नन्ति य इति, मिथ्यात्व-मादिर्येषाते मिथ्यात्वाद्य तेषुमिथ्यात्वादिषुस्थानेषु,मिच्छमाइठाणेसु-इत्यनेनमिथ्यात्वादिषुगुणस्थानेषुयथासभवयोज्य, तत्रमिथ्यात्वे "स-गचत्त" सप्तचत्वारिंशत्ध्रुवबन्धिन्य बध्यते द्वितीयेसास्वादनेमिथ्यात्व-स्याभावेषट्चत्वारिंशत्ध्रुवबन्धि योबध्यते, गुणयाल्लुगचइत्यनेनमि-श्रगुणस्थानकेसम्यक्गुणस्थानकेऽनन्तानुबन्धिस्त्यानर्द्धित्रिकमिथ्यात्वा-नामपगमेएकोनचत्वारिंशद्ध्रुवबन्धिन्योबध्यते देशविरतेअप्रत्या-ख्यानाभावेपचत्रिंशत्प्रकृतयोबध्यन्ते, प्रमत्तेप्रत्याख्यानकषायवगा-पगमेएकत्रिंशद्ध्रुवबन्धियोबध्यते ॥ ७१ ॥

टबार्थ —कुलकोडी पण ए रीते, हवे ध्रुवबंधीनी सडता-लीस प्रकृति छे, वर्णादि ४ तेजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण १ उपघात १ दुगछा १ मिथ्यात्व १ कषाय १६ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ अन्तराय ५ एव सुडतालीस ध्रुवबंधी जाणवी, मिथ्यात्व गुणठाणे सडतालीश ध्रुवबन्धी बाधे, सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्व विना छेतालीश ध्रुवबन्धी छे, मिश्रगुणठाणे तथा समकित गुणठाणे ए बे गुणठाणे अनन्तानुबन्धी ४ थीणद्धी ३ मिथ्यात्व १ [illegible] बाधे,

तेणे उगुणचालीस बांधे, देशविरति गुणठाणे अप्रत्याख्यानी ४ न बांधे ते पांत्रीस, बांधे छठे गुणठाणे प्रत्याख्यानी प्रकृति, ४ न बांधे तिणे इगतीस ध्रुवबंधी प्रकृति बांधे ॥७१॥

इगतीसगुणतीस, अट्ठारसचउदसचसुहुम्मम्मि ॥
अधुवाबंधेसेसा, धुवउदयामिच्छिसगवीस ॥७२॥

टीका—अप्रमत्तेपिएकत्रिंशत्ताएवबध्यन्ते, अपूर्वकरणेनिद्राद्विकापगमेएकोनत्रिंशत् ध्रुवबन्धिन्योबध्यते, नवमेअनिवृत्तिनादराख्येभयजुगुप्सानवनामप्रकृत्यपगमेऽष्टादशध्रुवबन्धिन्योबध्यते । सूक्ष्मसंपरायेसञ्ज्वलनाभावेचतुर्दशध्रुवबन्धिन्योबध्यते, तत परध्रुवबन्धिन्योबध्यते, नवेत्रयप्रकृतीशेषाध्रुवबन्धप्रकृत्यपसरेशेषा या प्रकृतयस्ताअध्रुवा ताअध्रुवबन्धिन्योज्ञेया ताश्चेमा, तणुवंगागिइसंघयण जाइगइखगइपुव्विजिणुसास, उज्जोयायवपरघातसवीसागोयवेयणीय १ हासाइजुअलदुगवेअआउतेवत्तरी, अध्रुवबन्धास्तत्र औदारिकवैक्रियाहारलक्षणास्तिस्र, तैजसकार्मणयोर्ध्रुवबन्धित्वेनाभिहितत्वात्, उपागानित्रीणि, आकृतय षट, सहनानिषट, जातय पंच, गतयश्चतस्र, खगतिद्वय, आनुपूर्व्यश्चतस्र, जिननाम, श्वासोच्छ्वासनाम, उद्योतनाम, आतपनाम, पराघातनाम, त्रसदशक, स्थावरदशकरूप, विंशतिरूप, गोत्रद्विक, वेदनीयद्विक, हास्यादिचतुष्क हास्यरति अरतिशोकलक्षण, वेदत्रिक, आयुश्चतुष्टय एव त्रिसप्तति अध्रुवबन्धिन्योभवति, तत्रमिथ्यात्वेसप्तति अध्रुवबन्धिन्योबध्यते, सास्वादनेपंचपंचाशत्, मिश्रेपंचत्रिंशत्, सम्यक्त्वेअष्टत्रिंशत्, देशविरतौद्वात्रिंशत्, प्रमत्तेऽष्टाविंशति, अपूर्वकरणेप्रथमविंशति, चरमेभागेषट्, अनिवृत्तिकरणेचतस्र, सूक्ष्मसंपरायेतिस्र, उपशान्तेएका, क्षीणेएका,

सयोगिकेवलिलक्षणेएका, एवमष्टचत्वारिंशद्बन्धविच्छेदः, अनादिअनन्तभङ्गः, अभव्यानां अनादिसान्तोभङ्गो, भव्यानां सादिसान्तभङ्गः, उपशान्तपर्यन्तारूढस्य ध्रुवबन्धकाभावेपुनर्मिथ्यात्वगतेसप्तचत्वारिंशद्बन्धकरणेत्रयोभवति, पुनः श्रेण्यारोहेतद्बन्धापगमेचयोगेन, तेन सादिसान्तभङ्गकोभवति, पुनरध्रुवप्रकृतिषुएकः सादिसान्तभङ्ग प्राप्यते, निरन्तरबन्धाभावकालेसादिबन्धाभावेसान्त इतिभाव्य, यासामव्युच्छिन्नस्तुसनन स्वोदयपर्यन्तछेदकालयावदुदयस्ताध्रुवोदया, यासांतुव्यवच्छिन्नोप्युदयोभूयोपिप्रादुर्भवति तथाविधद्रव्यक्षेत्रकालभावस्वरूपपञ्चविधहेतुसमप्राप्यताअध्रुवोदया, यदभाणि, अव्वुछिन्नोउदयो जाणपयडीणनाधुवोदइआवुछिन्नो विहुसभवइ जाणउदयानाओ १ तत्रध्रुवोदयाइमा, निमिणथिरअथिरअगुरुअसुहअसुहतेयकम्मचउवन्ना नाणतरायदसणमिछधुवउदयसगवीसा १ तत्र निर्माणअस्थिरस्थिरअगुरुलघुशुभअशुभतैजसकार्मणवर्णादिचतुष्कएताद्वादशनामकर्मणः १२, ज्ञानावरणपञ्चकमन्तरायपञ्चकमिथ्यात्वइत्येता सप्तविंशति ध्रुवोदयाज्ञेया, मिथ्यात्वस्यसासादनोदयेपिध्रुवोदयस्तासाअनन्तकालमिथ्यात्वोन्येनसहवर्त्तमानात्, ध्रुवोदयोमिच्छि, मिथ्यात्वेसप्तविंशतिरपिअस्ति, सतिमिथ्यात्वेकस्यापिनोदयव्यवच्छेदः ॥ ७२ ॥

टबार्थ —सातमेपणहगतीस बाधे, आठमे गुणठाणे निद्रा २ विना ओगणत्रीस बाधे नवमे गुणठाणे भय १ दुगछा १ नव नामकर्मनी एटले अग्यार ११ बाधे तेवारे अढार ध्रुवबधी बाधे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे सज्वलना ४ च्यार विना चउद ध्रुवबधी बाधे ध्रुवबधीयी काढता शेष रही ते अध्रुवबधी जाणवी ते इहा मिथ्यात्वे सित्तेर अध्रुवबधी छे सास्वादने

५५ छे, मिश्रे ३५ छे, समकिते ३९ छे देशविरते ३२ छे प्रमत्ते ३३ छे अप्रमत्ते २८ अपूर्वकरणे प्रथम ३० पछे आठ ८ अनिवृत्ति ४ तथा सूक्ष्मसंपराये ३ उपशांतमोहे १ क्षीणमोहे १ सयोगि केवलि १ अयोगि केवलिये नथी ॥७२॥

छवीसखीणजा, सयोगीबारसधुवोदयापयडी ।
ओहोदओवसेसा, अधुवदया दुतिपयडीओ ॥७३॥

टीका—सास्वादनादारभ्यक्षीणमोहपर्यन्त मिथ्यात्वरहिता षड्विंशति ध्रुवोदयाल्लभ्यन्ते, क्षीणमोहान्ते ज्ञानावरणदर्शनावरणांतरायक्षयात् सयोगिनयोदशेगुणेद्वादशनामप्रकृतयएवध्रुवोदयाउदयत्वेनप्राप्यन्ते अयोगिगुण सर्वा अपिअध्रुवोदयाउदयेवर्त्तते, तत्रषोडशकषायाणामनंतानुबंध्यादीनांचतुर्णांनैकसमयउदय, क्रोधोदयकालेमानादीनामुदयाभाव, मानोदयकालेक्रोधादीनामुदयाभाव, यद्यपिवर्णपंचकेकृष्णादीनामन्यतरएवउदयवर्णउदयननिरंतरोदय तथापिअन्यतमवर्णोदयेनवर्णइतिसामान्यप्रवृत्तेर्ध्रुवोदय एवग गादीनामिति, पुन अध्रुवोदया पचनवति, तत्रगाथा थिरसुभमिअरविणु अधुवबंधीमिच्छविणमोहधुवबंधी निदोवघायमीसा सम्मपणनवइअधुवुदया १ याअध्रुवबंधिन्य निसप्ततिप्रकृतय तामामध्यान्नुस्थिरमस्थिरशुभमशुभइतिप्रकृतिचतुष्टयध्रुवोदयेग्रहितत्वात्शेषा एकोनसप्ततिप्रकृतय अध्रुवोदयाभवंति, मोहनुवबंधिन्यएकोनविंशतिस्तन्मध्येमिथ्यात्वस्यध्रुवोदयांतर्गतत्वात्शेषा अष्टादश अध्रुवोदयाभवंति, निद्रापंचक उपघातनाममिश्रमोहनीसम्यक्त्वमोहनीयइतिपचनवति अध्रुवोदयाव्यवच्छिन्नस्याप्युदयस्यपुनरुदयसद्भावादिति, यद्येवमिथ्यात्वस्याप्यध्रुवोदयताएवयुज्यते सम्यक्त्वप्राप्तौ व्यवच्छिन्नस्यापितदुदयस्यमिथ्यात्वगमनेपुन सद्भावादिति अत्रोच्यते, यासांप्रकृतीनांयेषुगुणस्थानकेषु

गुणप्रत्ययनोऽप्युदय यवच्छेदोनविद्यते, अथद्र यक्षेनकालाद्यपे-क्षयातेष्वेवगुणस्थानकेषुक्दाचिदसौभवति कदाचिन्नभवतिताएव-अध्रुवोदया, यथानिद्रायामिथ्यात्वदृष्टेरारम्यक्षीणमोहयावदुदयोऽव-श्यमवर्त्तते,अथचनसततमसौभवतीतिमिथ्यात्वस्यनेदंलक्षण, यतस्त-स्यप्रथमगुणस्थानकेनाप्युदय यवच्छेदस्तन्नसततोदय नकदा-चित्क इतिध्रुवोदयेनैवतन्त्रयेति ओघोदयत ध्रुवोदयापट्टारेऽवशेषाअ-ध्रुवोदया प्रकृतयोभवति, तत्रमिथ्यात्वसप्तदशाविकशतन्मोवोदयेतत्र-सप्तविंशतिध्रुवोदयास्तदपगमेशेषाभवति, मिथ्यात्वेअध्रुवोदयाभवति, एवसास्वादनेपचाशीति, मिश्रेचतु सप्तति, सम्यक्त्वेऽष्टसप्तति, देश-विरतौएकषष्टि, प्रमत्तेपचपचाशत्, अप्रमत्तेपचाशत्, अपूर्वकरणेषट्-चत्वारिंशत्, अनिवृत्तिकरणेचत्वारिंशत्, सूक्ष्मसपरायेचतुस्त्रिंशत्, उ-पशातमोहेत्रयस्त्रिंशत्, क्षीणमोहेएकत्रिंशत्, तथाचरमातेएकोनत्रिंशत् सयोगिकेवलिनित्रिंशत्, अयोगिकेवलिनिद्वादश, अध्रुवोदयाउदयत्वे-नज्ञेया, द ध्रुव, अध्रुवो यासुप्रकृतिषुअनाद्यनतअनादिसातल-क्षणौद्वौभगकोभवत, तत्राभ यानाएता सप्तविंशतिरप्यनाद्यनतो-दयाएव, भ यानातुअनादिकालीनाअविच्छिन्नोदय यवच्छेदकालेअध्रु-दयात् साताइति, अध्रुवोदयानाप्रकृतीनातुनिरतरउदयाभावत् सा-दिसातताएवइत्येकभग ॥ ७३ ॥

दयार्थ—हवे ध्रुव उदयी सत्तावीस छे निर्माण १ अथिर १ अशुभ १ शुभ १ अगुरु १ अगुरु लघु १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादि ४ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अतराय ५ मिथ्यात्व १ ए सत्तावीस ध्रुवोदयी मिथ्यात्वे छे सास्वाद-नथी माडि क्षीणमोह पर्यंत मिथ्यात्व विना छवीस ध्रुवोदयी छे सयोगी गुणठाणे नामकर्मनी बार ते ध्रुवोदयी छे अयोगीमे

ध्रुवोदयी नथी पारनो उदय छे अनुदयीनो छे ओवोदयपी ध्रुवोदयी वारना शेष रही ते अध्रुवोदयीनी मरया जाणवी, ते अध्रुवोदयी पचाग छे ९५ ते मध्ये मिथ्यात्वे ९० छे सास्वादने ८५ मिश्रे ७४ समकिते ७८ देशविरते ६१ प्रमत्ते ५५ अप्रमत्ते ५० अपूर्वकरणे ४६ अनिवृत्तिकरणे ४० सूक्ष्मसंपराये ३४ उपशान्तमोहे ३३ क्षीणमोहे ३१ ॥७३॥

तीसहीयसयसना, धुवाउवभतमोहठाणजा ॥
खीणेअसईचरिमे, चउसयरिसेसअधुवाओ ॥७४॥

टीका—अथसत्तामाश्रित्यध्रुवदिशाह तीसहियेत्ति तनससारिणाअप्राप्तसम्यक्त्वाध्युत्तरगुणाना तान येनचतुर्गतिपुसद्भावेनभवतितामुवसत्ताका, यास्तुक्दाचिन्नभवन्तिकदाचिद्भवन्त्यनरेनभवन्तिनाअध्रुवसत्ताकाज्ञेया, तनगाथा तसवननवीससगते अकम्मधुववविसेसवेअतिग, आगइइतिगनेयणीय हुजुअलसगउरलसासचउ १ खगइतिरिदुगतिय-धुवसत्तातसदशकस्थावरदशकचोभयमील्नेनतसविंशति ननवीसत्ति, वर्णपचकगंधद्विकरसपचकस्पर्शाष्टकमील्नेनविंशति, सगतेयकम्मत्ति, तैजसकार्मणसप्तकतैजसशरिर १ कार्मणशरीर २ तैजसतैजसबंधन १ तैजसकार्मणबंधन १ कार्मणकार्मणबंधन १ तैजससंघातन १ कार्मणसंघातन १ इतितैजससप्तक ध्रुवबंधिशेषेतिवर्णचतुष्कतैजसकार्मणशरीरागुशेषाण्व च त्वारिंशद्ध्रुवबंधिन्य, वेदतिक आगइइतिगत्ति आगिइसघयणजाइइति संस्थानसहननजातिसर्वमिल्नेसप्तदश १७ वेदनीय सातासातलक्षण हुजुअलत्ति युगद्विकहास्यरतिअरतिशोकलक्षण, सगउरलत्ति औदारिकसप्तक, तत्रौदारिकशरीर १ औदारिकागोपागलक्षण २ औदारिकसघातन १ औदारिकबंधन १ औदारिकतैजसबंधन १ औदारिककार्मणबंधन १ औ-

दारिकतैजसकार्मणबन्धन ७ इतिऔदारिकसप्तक, उच्छ्वासचतुष्क उच्छ्वास १ उद्योत १ आतप १ पराघातलक्षण १ सुरगति १ अनुपूर्वीद्विक २ तिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीलक्षणतिर्यग्द्विक २ नीचैर्गोत्रलक्षणएताअष्टाविंशत्युत्तरशतसंख्या प्रकृतयोऽध्रुवसत्ताकाअभिधीयते ध्रुवसत्ता तत्रासासम्यक्त्वलाभादर्वाक्सर्वजीवेषुसदसद्भावात्, सम्यक्त्वलाभेविनाकषायाणामुद्वलनसंभवाद्ध्रुवसत्ताकत्वं युज्यते, तत्र कथं अनुसत्ताकमप्रकृतीनामिंशदधिकशतसंख्यासमगच्छते? सत्य-मेव पनोऽवाप्तसम्यक्त्वाप्युत्तरगुणानामेवजीवानामेतादृसंयोगो नसर्वजीवाना अनुसत्ताकता वा नवाप्तोत्तरगुणजीवानाचचिंत्यते, अतोऽनन्तानुबंधिनाध्रुवसत्ताकत्वमपदिवोत्तरगुणप्राप्तापेक्षयाअध्रुवसत्ताकताकक्षीक्रियते तदासर्वासामपिप्रकृतीनाम्यानानोऽवन्धिनामेव यत सर्वाअपिप्रकृतयोयथास्थानमुत्तरगुणेषुसत्ता यस्छेदमनुभवन्त्येवेति, ततोपशमश्रेणिगतस्यएकादशगुणस्थानकयानत्रिंशदधिकशतप्रसत्तायामाप्यते यद्यपिक्षायिकसम्यक्त्वनासप्तकादिक्षयरूपोसत्तामेदोऽस्ति, तदपिगुणस्थानेसामान्यसत्ताविकारेकथितत्वान्नेह तथापिस्वबुध्यावगन्तव्य , क्षीणे असइंति अष्टचत्वारिंशदधिकशतसत्तापेक्षयामोहनीयषड्विंशति निद्रापंचक आयुस्त्रिक त्रयोदशनामप्रकृतय औदारिकतैजसबन्धन औदारिककार्मणबन्धन औदारिकतैजसकार्मणबन्धन तैजसकार्मणबन्धनएवा पंचाशद्व्यवच्छिद्यते, तत अशीतिद्विरभ्रसत्तानुरूपाप्राप्यते, अष्टपंचाशतसत्तापेक्षयाषडशीति सत्तायाप्राप्यते, "चरिमे"त्रयोदशेचतुर्दशेगुणस्थानेषु सप्तति सत्तायाप्राप्यते गणस्थानोक्तओघसत्तापेक्षयाध्रुवसत्तागणनानुयोगा अध्रुवसत्तागुणस्थानकेवक्तव्या , अध्रुवसत्ताअष्टाविंशति यास्तुकदाचित्कस्याप्यगर्तीप्राप्यते कस्यापिनप्राप्यतेतेनाध्रुवसत्ताका , ताश्च सम्यग्मोह १ मिश्रमोह १ मनुष्यद्विक २ देवद्विक २ नरक-

द्विक २ वैक्रियसप्तकलक्षण, वैक्रियएकादशक, जिननाम, आयुश्चतुष्टय, आहारसप्तक, उच्चैर्गोत्रलक्षणाष्टाविंशति प्रकृतिसमूहरूपाअध्रुवसत्तारूपास्तत्रमिथ्यात्वेऽष्टाविंशतिरप्यध्रुवसत्ता प्राप्यन्ते, जीवभेदापेक्षयासास्वादनेमिश्रेचजिननामरहिता सप्तविंशति सम्यग्दर्शनात् उपशातमोहयावत् अष्टाविंशतिरप्यध्रुवसत्ताका प्राप्यन्ते क्षीणमोहेसयोगिकेवल्ययोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके एकविंशतिरध्रुवसत्ताका प्राप्यते, एवंध्रुवसत्ताशेषाअध्रुवसत्ता प्रकृतयइति,इत्युक्तअध्रुवसत्ताद्वार ॥ ७४ ॥

टबार्थ —तथा २९ सयोगिये ३० छे अयोगीये १२ अध्रुवोदयी जाणवी ध्रुवसत्ता एकसोतीस छे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ वेदनी २ मोहिनी २६ नामकर्मनी तिर्यंचगति ४ जाति ५ औदारिक १ तैजसकार्मण ७ संघयण ६ संस्थान ६ वर्णादि २० विहायोगति २ तिरिआनुपूर्वि १ जिननाम कर्मविना प्रत्येक ७ त्रसदश १० थावर १० नीचगोत्र १ अंतराय ५ एकसोतीस १३० ध्रुवसत्ता इग्यारमा गुणठाणा पर्यंत जाणवी, नवमाने बीजे भागे क्षपकश्रेणिने तेर नीकले तेवारे नवमाथी क्षीणमोहपर्यंत ऐंसीनी सत्ता छे क्षीणमोहे ऐंसी, तेरमे चउदमे चहुत्तरी ध्रुवसत्ता छे मिथ्यात्वे २८ सास्वादने २७ समकिते २८ अप्रमत्ते २८ अनिवृत्ति २८ सूक्ष्मसपराये २८ उपशातमोहे २८ क्षीणमोहे २१ सयोगि केवली २१ अयोगि केवली २१ ए अध्रुवसत्ता जाणवी ॥ ७४ ॥

मिच्छेविसममिच्छा, यीएअणथीणत्तिविणुमीसदुगे।
यीयतीअकसायहीणा, देसेपमत्त युअलम्मि ॥७५॥

टीका—साम्प्रतसर्वघातिदेशघातयघातिद्वारमभिधित्सुराह ॥ तत्रप्रथमघातिलक्षणं, यथाआत्मनोज्ञानदर्शनचारित्रवीर्यलक्षणं गुणचतुष्टयं स्वरूपेणस्वकीयज्ञायकत्वद्रष्टृत्वस्थिरत्वसामर्थ्यत्वलक्षणस्वकार्यस्यकारकं, तथाशेषाणांअव्याबाधादीनांआत्मगुणानांनिरावरणत्वकरणेकारणरूपमपितेनएतद्गुणचतुष्टयंप्रधानं शेषाअव्याबाधादयोगुणाः स्वरूपत्वेनैकार्यरूपा नायद्गुणमाकटनेहेतुत्वमिति, अतोज्ञानादीनांकारणकार्यरूपोभयधर्मताघातकानिज्ञानावरणदर्शनावरणमोहांतरायलक्षणानिघातिकर्माण्युच्यते, शेषाणिवेदनीयायुर्नामगोत्ररूपाणिअघातीयमिधीयते, तत्रघातिषु याः प्रकृतयः उदिताः स्वावर्यगुणसर्वआवृण्वतिघातयत्येवशीलाः सर्वघातियोविंशति भवति, याः प्रकृतयः उदिताः स्वावर्यगुणआवृतमपिदेशेन घातयतेदेशतोविरतिगुणप्रत्ययादिनाक्षयोपशमं प्राप्यतद्गुणप्राकट्यलभते इत्येवशीला देशघातिन्यः पचविंशतिर्भवति, तत्रसर्वघातिन्यः केवलज्ञानावरणं केवलदर्शनावरणं पचनिद्राद्वादशादिनाअनंतानुबंधिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानावरणलक्षणाः कषायाः मिथ्यात्वंचेति विंशति, तत्रकेवलज्ञानावरणकेवलदर्शनावरणेक्षपकश्रेण्यादौमक्षीयमाणस्थितिरसप्रदेशक्षययावत्सर्वथाक्षयस्तावत्गुणप्रागभावानिःक्षयस्तावत्गुणप्रागभाव, सर्वथाक्षये सकलविशेषावबोधसकलसामान्यावबोधस्वरूपौकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणौभवत, अतएतेसर्वघातियौ तथानिद्रापचकानामप्युदयअवबोधसर्वथाघातयन्तितेनसर्वघातिन्यः, यद्यपिनिद्रायामपिस्पर्शनादीनांदर्शनंतदपिनिद्रोदयशैथिल्येनैवेतिद्वादशकषायाणांउदयोपिअनंतानुबंध्युदय शुद्धचारित्रधर्मरुचिघातनरूपं, अप्रत्याख्यानकषायोदयस्त्ववर्हिसकपरिणामघातनरूपं, प्रत्याख्यानकषायोदयः सर्वसावद्यविरतिरूपपरिणमनघातकः, एतेपयाक्रमसर्वघातकत्वात्सर्वघातकाः, यत्पुनस्तेषामप्रबलोदयेपिअयोग्याहारवि-

रमणउपलभ्यते, तन्नवारिवाहदृष्टातोवाच्य , सुहविमेहृदए होईपहाचदसूराणमित्यादिशेय, अथवानरकादिविपाकभयाद्यद्विरमणतश्चेंद्रियसुखाभिलापे नैवेतितीव्रलोभोदयएवग्राह्य , तथामिथ्यात्वतुजिनप्रणीनतत्त्वश्रद्धानस्वरूपसम्यक्त्वसर्वमपिहतीतिसर्ववाति, यत्तुतस्यप्रबलोदयेपिमनुष्यपश्वादिवस्तुश्रद्धानतदपिस्याद्दोषोपयोगाभावात् मिथ्यैवेति ॥ उक्तच ॥ विशेषावश्यके, सदसदविसेसणाओ भवहेउजहत्थिओवलभाओ, नाणफलाभाओ मिच्छदिट्ठिस्सअन्नाण १ इतिमिच्छेवीसममिच्छाइति ॥ मिच्छेइतिमिथ्यात्वेवीसविंशतिप्रकृतय सर्वघातिन्योबन्धेसति, अमिच्छामिथ्यात्वरहिताएकोनविंशति वीएत्ति द्वितीयेसास्वादनेबन्धेप्राप्यन्ते, ताएवएकोनविंशति अनतानुबधिचतुष्टयस्त्यानर्द्धित्रिकविनाद्वादशसर्वघातिन्य मीसदुगेत्ति मिश्राविरतिसम्यक्त्वलक्षणेगुणस्थानद्विकेप्राप्यन्ते वीयकसायहीणा देसेइतिसबन्ध द्वितीयकषायहीना देशविरतेऽष्टौसर्ववातिन्य तीयकसायहीणाप्रमत्तयुगलेतृतीयकषायरहिताश्चतस्र प्रकृतय प्रमत्ताप्रमत्तलक्षणेगुणस्थानद्वयेप्राप्यन्ते ॥ ७५ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्वे वीस सर्वघाती छे, सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्वमोहिनी विना १९ सर्वघातिनो बन्ध छे, मिश्र तथा समकित गुणठाणे अनतानुबन्धी ४ थीणद्धि तिन विना बार सर्वघाती प्रकृतिनो बध छे, देशविरति गुणठाणे बीजी चोकडी अप्रत्याख्यानीयानी काढीये एटले आठ सर्वघातिनो बध छे, प्रमत्त तथा अप्रमत्त ए बे गुणठाणे सर्वघाति ४ नो बध छे केवलज्ञानावरणी १ केवलदर्शनावरणी १ निद्रा बे ए च्यार बाधे छे ॥ ७५ ॥

केवलजुअलावरण, अपुव्ववीअभागओअसुहुमजा ।
दरघाइमिच्छिसत्ता, नपुविणातेविसासाणे ॥ ७६ ॥

टीका—केवलजुअलावरणमिति ॥ अपुव्विइतिअपूर्वकरणप्रथमभागातेनिद्राद्वयवन्धाभावेअपूर्वकरणस्यद्वितीयभागेन सूक्ष्मसंपराययावत् केवलयुगलावरण केवलज्ञानावरण केवलदर्शनावरण रूपाप्रकृतिर्बध्यते, तत परमन्धाभाव दरघाइतिदेशघातिन्य पचविंशति मतिज्ञानावरणश्रुतज्ञानावरणमन पर्यवज्ञानावरणरूपज्ञानावरणचतुष्टय चक्षुर्दर्शनावरणाऽचक्षुर्दर्शनावरणावधिदर्शनावरणरूपदर्शनावरणत्रिक सज्वलनाश्चत्वार क्रोधमानमायालोभरूपानोकपायाद्धास्यरतिअरतिशोकभयजुगुप्सास्त्रीवेदपुवेदनपुसकवेदलक्षणा "नोकपायत्ति" कपायसहशात्त्वर्य, अन्तरायपचकएना पचविंशतिप्रकृतयोदेशघातिन्योदेशघातयतीत्येवशीलादेशघातिन्योमतिज्ञानावरणमुदितमपिदेशघातयतिकिंचित्देशक्षयोपशमप्राप्त तथाघातयतिएवसर्वंतथा मलयगिरिपूज्यास्तुआत्मन सर्वस्वकेवलज्ञानकेवलदर्शनरूपघातयन्तिना सर्वघातिन्योमतिज्ञानादिकतु आत्मनोदेशरूपगुणघातयन्तिनादेशघातिन्य तासाम ये, मिच्छि मिथ्यात्वेसवाइति सर्वा प्रकृतय देशघातिन्योबध्यते ताएवसास्वादनेनपुसकवेदरहिताश्चतुर्विंशतिरेवबध्यन्ते, नपुसकवेदस्य मिथ्यात्वप्रायोग्यएवेति ॥ ७६ ॥

टवार्थ—अपूर्वकरण गुणठाणाना बीजा भागथी दशमा गुणठाणासीम केवलज्ञानावरणी केवलदर्शनावरणी ए बे सर्वघातीनो बध छे पछे नथीज, देशघातीप्रकृति २५ ज्ञानावरणी ४ दर्शनावरणी ३ हास्यादि ६ वेद ३ सज्वलना ४ अतराय ५ एव २५ ते म ये मिथ्यात्वगुणठाणे सर्व २५ देशघातीनो बध छे, सास्वादन गुणठाणे नपुसक विना चोवीस देशघातिनो बध छे ॥ ७६ ॥

थीविणुमीसचउके, अपमत्तदुगम्मिसोगदुगहीणा।
हासचउहीणनवमे, अपुरिससजलणदसमम्मि ७७॥

टीका—थीविणुत्ति मीसचउक्केत्ति-मिश्राविरतिसम्यग्देशविरतिप्रमत्ताख्येगुणस्थानचतुष्टयेस्त्रीवेदरहितास्त्रयोविंशतिर्बध्यते, अपमत्तदुगम्मि अप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेगुणस्थानद्वयेशोकारतिहीनाएकविंशतिर्देशघातिन्योबध्यते, तथानवमेअनिवृत्तिबादराख्येगुणस्थानेहास्यरतिभयदुगच्छाहीना सप्तदशदेशघातिन्योबध्यते, दशमम्मि इतिदशमेसूक्ष्मसंपरायेगुणस्थानेपुरुषवेदसञ्ज्वलनचतुष्टयरहिताद्वादशबध्यते, ताद्वादशज्ञानावरणचतुष्टयदर्शनावरणत्रिकांतरायपंचकमंतरेणसूक्ष्मावेतासामबंधकइतिगतदेशघातिद्वार ॥ ७७ ॥

टबार्थ—मिश्र १ अविरतिसमकित १ देशविरति १ प्रमत्त १ ए च्यार गुणठाणे स्त्रीवेद काढीये एटले त्रेवीस देशघाती बधाये, अप्रमत्त तथा अपूर्वकरण गुणठाणे शोकअरति बे न बाधे एकवीस देशघाती बाधे, नवमे अनिवृत्तिकरणे हास्यादिरतिभयदुगछा ए च्यार विना सत्तर देशघाती बाधे, दशमे सूक्ष्मसंपराय गुणठाणे पुरुषवेद १ सज्वलना ४ ए पाच काढीये बार देशघाती बाधे, दशमाने अते ज्ञानावरणी ४ दर्शनावरणी ३ अतराय ५ ए बार जाये न बाधे ॥ ७७ ॥

सव्वदरघाइसेसा, अघाइपयडीओसव्वगुणठाणे।
पुन्नेनव(ग)अडचउसग, इगइगतिगदुगअहीअतीसा
॥ ७८ ॥

टीका—साम्प्रतमघातिस्वरूपकथ्यतेसव्वदरघाइइत्यादि 'स-

बंघातिदेशनातित शेषाअवशिष्टास्ताअत्रानिप्रकृतय सेषेगुण-स्थानेषुमन्तव्याइतिवेदनीयद्विक, आयुश्चतुष्क, नामसप्तषष्टि, गोत्रद्वय, इत्येता पचसप्ततिरनातिन्योज्ञेया, तत्रमिथ्यात्वेद्वि-सप्तति, सास्वादनेऽष्टपचाशद्, मिश्रेएकोनचत्वारिंशत्, सम्यक्त्वे-द्विचत्वारिंशत्, देशविरतौसप्तगयेनय, उपशातमोहक्षीणमोहसयो-गिकेवलिषु एका, सातवेदनीयरूपा, अनत्रुवन्धुवोदयेवात्यघाति-द्वारेउदयाधिकारोपिस्वबुध्याओोदयाधिकारतोज्ञात य, पुन्नेइति-पुण्यप्रकृतयोजीवाल्हादजनकायदुदयभुज्यमानआल्हादजनकभवति, ता पुण्यप्रकृतय द्विचत्वारिंशद्भेदमिता सति, तत्रगाथा सुरनरतिगु-च्चसाय तसदसतणुनगवयरचउरस, परवासगतिरिआऊ वणचउप-णिंदिसुभखगइ १ बायालपुन्नपगई अपढमसठाणखगईसनयणा, तिरिदुगअसायनीओ वधायइगविगलनरयतिग २ थावरदसवणचउक्क घाइपणयालसहिअत्रासीई, पावपयडित्तिदोसुवि वन्नाइगिहासुहाअ-सुहा ३ इत्यादिगाथोक्ता पुण्यपापप्रकृतय मिलित्वाएकशतचतु-र्विंशत्यधिकभवति एतदपिद्यमाश्रित्यैवेतिनोचेत् घातिसप्तचत्वा-रिंशत्युणनेषड्विंशत्यधिकशतभवति, अनत्रगाथिकारेविंशत्यधि-कशतमानेचतुर्विंशत्यधिकत्तु वन्नाइगदासुहा असुहाइतिवर्णादय वर्णगन्धरसस्पर्शरूपा पुण्यप्रकृतौशुभाग्राह्या, पापप्रकृतौतुअशुभा-ग्राह्या इत्युभयत्रग्रहणान्चतुर्विंशत्युत्तरशतज्ञेय, तत्रपुण्यप्रकृतिक्रम गुणस्थानेषुविभजन्नाह, पुन्नेनवअटइति नवमिरधिकाभ्रिशत्मिथ्या-त्वेपुण्यप्रकृतयोबध्यते, इतिजिननामाहारकद्विकरहिता "ताप"आत-परहिता सास्वादनेअष्टाधिकात्रिशद्बध्यते, ताएवेतितिर्यग्नरदेवायु-रुद्योतहीनामिश्रे चतुस्त्रिशत्ताएवजिननामनरदेवायुर्युक्ता सम्य-क्त्वेसप्तत्रिंशत्, ताएववज्रऋषभनाराचसहननमनुष्यत्रिकऔदारिक-रहितादेशविरतौएकत्रिंशत्, प्रमत्तेएकत्रिंशत्, ताएवाहारकद्विकयुक्ता-

स्त्रयस्त्रिंशत्, अप्रमत्तेपुण्यप्रकृत्नयोबध्यते, तापूत्रदेवायुरहिताअपूर्वकरणेद्वात्रिंशद्वध्यते, अनगाथाया अट्ठसुपदअग्रेननगाथायागनमनुवर्त्तनीय अष्टसुगुणस्थानकेषुअयक्नम ॥ ७८ ॥

टबार्थ —सर्वघाती तथा देशघाती टालता शेष रही ते अघाती प्रकृति सर्व गुणठाणे जाणवी अघाती ७५ छे ते मध्ये मिथ्यात्वे ७२ छे सास्वादने २८ छे मिश्रे ३९ छे समकिते ४२ छे देशविरते ३६ छे अप्रमत्त ३४ छे अपूर्वकरणे ३३ छे अनिवृत्तिबादरे ३ छे सूक्ष्मसपराये ३ छे उपशानमोहे १ छे क्षीणमोहे १ छे सयोगिकेवलिये १ बाधे छे इम उदयनो अधिकार जोई कहेवो उदयपिणे पुण्यनरचना भेद ४२ छे सातावेदनी उचगोत्र मनुष्यदुग २ देव २ पचेंद्रि जाति १ पाचशरीर ५ तीनउपाग ३ वज्रऋषभनाराचसघयण १ समचउरससस्थान १ वर्णादि ४ अगुरुलघु १ पराघात १ उसास १ आतप १ उद्योत १ शुभविहायोगति १ निर्माण १ त्रसदश १० देवतादुआयु १ मनुष्यायु १ तिर्यचनुआयु १ तीर्थंकरनाम १ ए बेतालीसमध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे ३९ ओगणचालीस छे जिनआहारक नथी सास्वादन गुणठाणे अडत्रीस छे आतप नथी मिश्र गुणठाणे चोतीस छे तीन आउखा नथी, उद्योत नथी समकित गुणठाणे जिननाम तथा आउखा बे मेलाय तिणे ते सडत्रीस छे देशविरति गुणठाणे इगतीस छे अप्रमत्ते तेतीस छे अपूर्वकरणे बत्तीस छे ॥७८॥

अट्ठसुतिगचदोसु, तिसुसाय बधसेसयापावे ।
चउवीससयओहो, वन्नाइगहासुहाअसुहा ॥ ७९ ॥

टीका—अट्ठसुत्तिगचइत्यादि अष्टसुगुणस्थानकेषुइतिपदपूर्व-

गाथाया सबधित तिगचदोसुत्ति द्वयोर्गुणकयोविपर्यये द्विवचनेबहुवचनमितिप्राकृत्वात्, तिग सातवेदनीय उच्चर्गोत्रयशोनामलक्षणप्रकृतिनिक पुण्यप्रकृतीनावध्यते । तिसुनिपुउपशातमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिके "सायावत्ति" सातस्यैवब य, अयोगिस्थानेबन्धाभावात्, सेसयाइत्तिशेपका पुण्यप्रकृतिगणनातरिता पापप्रकृतय सर्वगुणेपुजेया स्तत्रमिथ्यात्वेद्व्यशीति तासुपचदशापसारे सास्वादनेसप्तपष्टि, मिश्रेचतुश्चत्वारिंशत्, सम्यक्त्वेचतुश्चत्वारिंशत्, देशविरतौचत्वारिंशत्, प्रमत्तेपट्त्रिंशत्, अप्रमत्तेत्रिंशत्, अपूर्वकरणेप्रथमनिद्राद्विकापगमेअष्टाविंशति, अनिवृत्तौएकोनविंशति, सूक्ष्मसपरायेचतुर्दशइतिपापप्रकृतिबधक्रमस्तत्र अनपुण्यपापोभयमीलनेओघेचतुर्विंशतिशतमिथ्यात्वेएकविंशतिशत तथ्रवर्णादयोगृहीता शुभास्तयाऽशुभा शुभलेश्यावानशुभानिवर्णादीनिवध्नाति, अशुभलेश्यावानअशुभवर्णादीनिबध्नाति, तेनोभयग्रहणइतिज्ञेय ७९।

टबार्थ —ए आठ गुणठाणे पुण्यप्रकृति बाधे ते कही, नवमे दशमे गुणठाणे तीन पुण्यप्रकृति बाधे छे साता १ जसनाम १ उचगोत्र १ ए तीन छे, तीन गुणठाणे इग्यारमे बारमे तेरमे सातानो बध छे ए बत्रमा पुण्यप्रकृति गणता शेप रहि ते पाप प्रकृति जाणवी मिथ्यात्वे ८२ सास्वादने ६७ मिश्रगुणठाणे ४४ समकित गुणठाणे ४४, देशविरति गुणठाणे ४०, प्रमत्त गुणठाणे ३६, अप्रमत्त गुणठाणे ३०, अपूर्वकरण गुणठाणे २८ अठ्ठावीस, अनिवृत्तिकरण गुणठाणे २३ सूक्ष्मसपराय गुणठाणे १४ पापप्रकृति बाधे छे, उपरले गुणठाणे पापप्रकृतिनो बध नथी, इहा किने पुन्यप्रकृति अने किने पापप्रकृति ए बे मेलवता एकसोचोवीसनो ओघ थाय छे, जे वर्णादिक

४ च्यार ९ शुभ ते पुन्यप्रकृतिमा गण्या छे अशुभ ते पापप्रकृतिमे गण्या ते माटे एकसो चोवीस प्रकृति थाय छे ॥७९॥

नामधुववधिनवग, दसणपणनाणविग्घ(य)परग्घाय।
भयकुछमिच्छसास, जिणगुणतीसाअपरियत्ता ॥८०॥

टीका—अथापरावर्त्तद्वारव्याख्यानयाह, तनया प्रकृतय अन्यस्या प्रकृतेर्बंध उदयउभयवाविनिवार्यस्वकीयबंधउदयउभयवा-दर्शयनिता परावर्त्तमाना यास्त्वन्यस्या प्रकृतेर्बंधमुदयमुभयवा अनिवार्यस्वकीयबंधमुदयमुभयवादर्शयनिता नपरावर्त्तंनेइति कृत्वाअपराव-र्तमानाउच्यते, यत्प्रत्यपादि विणिवारीयजागच्छई बंधमुदयवअन्नप-गइण, साहुपरियत्तमाणी अणिवारतीअपरियत्ता १ तत्रप्रथमपराव-र्त्तमाना प्रकृतयस्ताभि सहनामधुवबंधिनवगइत्यादि नाम्नो-ध्रुवबंधिनवक वर्णचतुष्कतैजसकार्मणागुरुलघुनिर्माणोपघातलक्षण, दर्शनावरणचतुष्कचक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनावरणरूप, पणत्ति पंच-नाणज्ञानावरणपंचक, विग्घत्तिअंतरायपंचक पराघातनामभयदुगंछा-द्विक मिच्छेत्तिमिथ्यात्वश्वासोच्छ्वासनामकर्मजिननामएता एकोनत्रिंशत्प्रकृतय अपरावर्तमानाभवति। इत्येता एकोनत्रिंशत्प्रकृतय स्वबंधोदयोभयकालेनान्यस्या प्रकृतेर्बंधमुदयमुभयवानिरुध्य-प्रवर्त्ततेऽतोऽपरावर्त्तमानाइति ॥ ८० ॥

स्वार्थ—अथ हवे अपरावर्त्तमान प्रकृति कहे छे नाम ध्रुवबंधी नव वर्णादिक ४ तैजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण १ उपघात १ ए नव, दर्शनावरणी ४ ज्ञानावरणी ५ अंतराय ५ कर्मप्रकृति ५ पराघात १ भय १ दुगंछा १ मिथ्यात्वमोहनी १ सासोसास १ जिननाम ए २९ अपरावर्त्त

छे बंधमा तथा उदयमा कोइके नहि ते बंध तथा उदयपणे आवती नथी पोतापणे बंध तथा उदय आवे छे ते बंध तथा उदय कोईकनी प्रकृतिनो रोकीने पोतानो बंध तथा उदय थाइ ते परावर्त्तमान कहीजे, तेह्थी इतर बीजी ते अपरावर्त्तमान कहीजे ॥ ८० ॥

जिणविणुमिच्छिअमिच्छा, सासणमीससुसजिणसम्माई ।
पंचसुनाणविग्घ, दसणचउनवगदसमम्मि ॥ ८१ ॥

टीका—अथपरावर्त्तमाना गुणस्थानकेषुविभजन्नाह । जिणविणु इत्यादि जिननामनवविनामिथ्यात्वेअष्टाविंशति परावर्त्तमानाबध्यते, अमिच्छा मिथ्यात्वबन्धरहिता सास्वादने तथा मिश्रगुणस्थानेसप्तविंशतिरपरावर्त्तमानाबध्यन्ते, सजिणत्ति जिननामसहितास्ताएवअष्टाविंशति सम्यक्त्वादिपंचसुगुणेषुसम्यक्त्वदेशविरतप्रमत्ताऽप्रमत्तापूर्वकरणलक्षणेषु अपरावर्त्तमानाबध्यते, तत्र पंचज्ञानावरणपंचक निर्मत्तिविन्ननाम अन्तरायपंचक दसणचउत्ति दर्शनावरणीयचतुष्य, एताश्चतुर्दशअपरावर्त्तमाना नवमेऽनिवृत्तिकरणेउपशमेसूक्ष्मसंपरायलक्षणेबध्यतेऽति ॥ ८१ ॥

टवार्थ — मिथ्यात्व गुणठाणे जिन नाम विना २८ अपरावर्त्तमान बांधे छे सास्वादन गुणठाणे मिथ्यात्व विना २७ अपरावर्त्तमान छे, मिश्रगुणठाणे सत्तावीस २७ बांधे छे समकितथी माडी पांच गुणठाणे समकिते, देशविरते, प्रमत्ते, अप्रमत्ते, अपूर्वकरणे ५ एमाए जिननाम मेळीये तेवारे २८ परावर्त्त

प्रकृति बधाये, नवमे गुणठाणे दशमे गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ दर्शनावरणी ४ एव १४ अपरावर्तमान बधाये ॥८१॥

तणुअट्ठवेअदुजूअल, कसायउज्जोअगोअदुगनिद्दा।
तसवीसाउपरित्ता, बधइअपरित्तसेसाउ ॥८२॥

टीका—तणुअट्ठइत्यादि तनुशब्देनोपलक्षितमष्टक तणुवगागिइसघयण जाइगइखगइपुग्विचिगायात्रयवेनमतिपादिततन्वष्टक, तत्रतनु तैजसकार्मणयोरपरावर्तमानासुप्रतिपादितत्वात् शेषाऔदारिकरूपास्तिस्र, उपागानिर्नीणिआकृतय सस्थानानिषट्, सहननानिषट्, जातय पच, चतस्रोगतय, खगतिद्वय, आनुपूर्वीचतुष्क मिति अष्टकशब्देननवत्रिंशत्प्रकृतयोगृह्यते, वेदा स्त्रीपुनपुसकरूपा त्रय दुजुअल द्वि युगलहास्यरत्यरतिशोकरूप, कषाया षोडश, उज्जोयदुगति द्विकशब्दस्यप्रत्येकसबधादुद्योतातपारत्य गोत्रद्विक, गोत्रवेदनीयलक्षणगोत्रउच्चैर्नीचभेदात्, सातासातभेदाद्वेदनीयमपिद्विधा, निद्रापचक, त्रसदशक, स्थावरदशक, आयूंषिचत्वारिइत्येताएकनवति प्रकृतय परावर्तमानाभवति, तत्रपोडशकषायानिद्रापचकचयद्यपिएता एकविंशतिप्रकृतयोध्रुवबधित्वाद्बधप्रतिपरोपरोधनकुर्वति तथापिस्वोदयेस्वजातीयप्रकृत्युदयनिरोधात्परावर्तमानाभवति, स्थिरास्थिरशुभाशुभप्रकृतयश्चतस्रोयद्यपिउदयमतिनिविरुद्धास्तथापिबधप्रतिपरावर्तमाना शेषा पञ्षष्टि प्रकृतयोबधोदयाभ्यामपिपरस्परविरुद्धा अपिअत परावर्तमानागुणस्थानेषुबधक्रमेपूर्वोक्ताऽपरावर्तमानेभ्य शेषा परावर्तमानाबधेभवति, तत्रमिथ्यात्वेनवात्रिंकाअशीति, जिननामतुअपरावर्तमानेषुगणनात्, परावर्तमानतुआहारकद्विकमेनएवतत्त्वयामपगमेशेषानवात्रिकाअशीति बधेमाप्यते, एवसर्वत्रतेनसास्वादनेचतु सप्तति, मिश्रेसप्तच-

त्वारिंशत्, सम्यक्त्वेएकोनपचाशत्, देशएकोनचत्वारिंशत्, प्रमत्ते-पचत्रिंशत्, अप्रमत्तेएकत्रिंशत, अपूर्वकरणेत्रिंशत, अनिवृत्तिकरणेऽष्टौ, सूक्ष्मसपरायेतिस्र, उपशातादिषुत्रिषुएकसातमेवएवपरावर्त्तमानाना-यवक्तमइति ॥८२॥

टबार्थ —तनुआदिक आठआठ पिंड प्रकृति तनु ३ उ-पाग ३ सस्थान ६ सघयण ६ जाति ५ गति ४ विहायो-गति २ आनुपूर्वि ४ वेद ४ हास्यादि ४, कषाय १६ उद्योत १ आतप १ गोत्र १ वेदनी २ निद्रा ५ त्रस १० थावर दस आउखा च्यार एइकाणु परावर्त्तमान जाणवी मिथ्यात्वे नव्यासी ८९ सास्वादने ७४ मिश्रे ४७ समकिते ४९ देशविरते ३९ प्रमत्ते ३५ अप्रमत्ते ३१ अपूर्वकरणे ३० अनिवृत्तिकरणे ८ सूक्ष्मसपराये ३ इग्यारमे १ बारमे १ तेरमे १ अयोगि अन-धक अपरावर्त्ते जे गाथा माहे कही तेह टालता शेष रही ते परावर्त्तमान जाणवी, आवे, हवे विपाक च्यार कहे छे जे मध्ये जे क्षेत्र आकाश तेह फिरता उदय आवे ते क्षेत्र विपाकी ४ आनुपूर्वी छे ते मध्ये मिथ्यात्व गुणठाणे समकित गुणठाणे च्यारे आनुपूर्विनो उदय छे ॥८२॥

मिच्छेसम्मेचउपुव्वि,निरयविणुवीयएआउचउ(चउरो) देसेनरतिरिसेसा, मणुआमणुआउवेयगाभणिया ।८३।

टीका—अथविपाकद्वारंचिंतयन्नाह, तत्रविपाक कर्मफलानुभव, सचतुर्द्धातत्रप्रथमक्षेत्रविपाक आनुपूर्व्यश्चतस्र, क्षेत्रमाकाशतत्रैव-विपाकउदयोयासाता क्षेत्रविपाकाआनुपूर्व्यश्चतस्रोनरकतिर्यग्नराम-रानुपूर्वीलक्षणायतस्तासाचतसृणामपिविग्रहगतावेवोदयोभवतीति ॥

उक्तंच बृहत्कर्मविपाके नरयाउस्सउदए नरएवक्केणगच्छमाणस्स
नरयाणपुव्विपाए, तहिंनहिअन्नहिंनत्थिति ॥१॥

एवंनिरिमणुदेवे, तेसुविवक्केणगच्छमाणस्स
तेसिमणुपुव्वियाण, तहिंउदयोअन्नहिंनत्थित्ति ॥२॥

ननुवियद्गत्यभावेपि आनुपूर्वीणामुदय सङ्क्रमकरणेनविद्यतेऽत्र कथंक्षेत्रविपाकिन्यस्ताश्चतुर्गानिरनो जीवविपाकिन्यइत्यनोच्यते, विद्यमानेपिसङ्क्रमेयथानासागतीनानिपाकरतथाविपाकस्तथापियथा- तासाक्षेत्रविधानेनस्वकीयोविपाकोदयोननयाऽन्यासामत क्षेत्रविपाकि- न्यएवेति, तत्रगुणस्थानेक्रमेणविभजताह, मिच्छेसम्मेइत्यादि तत्र- मिच्छेमिथ्यात्वेसम्मेत्ति सम्यक्त्वदर्शनलक्षणेगुणस्थाने चउचतस्र- पुव्वित्तिआनुपूर्व्य उदयेप्राप्यते, तीणत्तिद्वितीयेसास्वादनारये गुण- स्थानके नरयविणु नरकानुपूर्वींविनास्तिस्रआनुपूर्व्य उदयेप्राप्यते, शेषेषुगुणस्थानेषुस्वप्रकृतिविपाकत्वेनानुपूर्वीउदयएवनास्ति, यत अतरालगतागुणस्थाननिकरस्येनप्राप्यमाणत्वात्, ननुआनुपूर्वीणा- स्थितिबन्धस्तुकथंवेद्यते, तत्राहप्रदेशोदयेनसङ्क्रमतोदयेनवेतिगम्य ॥ उक्तच ॥ कर्मप्रकृतिचूर्णौविवागमुज्जाएतिइएसेसापणससक्क- तादयेणभुजइनिवचनात् अथभवविपाकस्वरूपकथयन्नाह, तत्र- भवनिकर्मवशवर्तिनोअस्मिन्प्राणिनइतिभव नारकादिपर्याय सच- पूर्वायुर्व्यवच्छेदेविग्रहायन्तरालगतिमारभ्यवेदितव्य, यदाहभगवान् सुधर्मास्वामी भगवत्या, नेरइएतेरइएउववज्जइइति,तस्मिन्नेवभवेनार- कतिर्यग्नरामररूपेविपाकउदयोविद्यते यासातांभवविपाकिन्य तथा- दिभयासभवपूर्वभववध्यमानागामिभवेविपच्यतेइतिभाव ननुयथा- युपादेवादिभवेऽवश्यविपाकोभवतिनयागतीनामप्यन्तरालेअपिभवविपाकिन्य प्राप्नुवति, अनोच्यते आयुर्यद्यस्यभवस्ययोग्यनिबद्धतत्त-

सिन्निवभवेवेद्यते नान्यभवे इत्यायुषोभवविपाकदानाद्भवविपाकित्न, गतयस्तुविभिन्नभवयोग्यानिभद्वाअपिएकस्मिनपिभवेसर्वा सक्रमेणसवेद्यन्ते, तथाहिमोक्षगामिन अशेषगतय मनुष्यगतावैवसक्रम्यक्षयाति, अतोविभिन्नस्नोदयभवप्रतिगतीनानियत्यभावान्नभवविपाकिन्य, किंतुजीवविपाकिन्यएवेत्युक्ताआयू पिचत्वारिएवविपाकिन्य, गुणस्थानक्रमेतु आउचउदनिआयुश्चतुष्क नरकायुस्तीर्यगायुर्नरायुर्देवायु चउरोत्ति चतुष्केमिथ्यात्वसास्वादनामिश्राविरतिलक्षणेगुणस्थानचतुष्केउदय ,प्राप्यते,नथादेसेदेशविरतिलक्षणेगुणस्थानकेतिरिमणुत्तितिर्यगायुर्मनुष्यायु प्राप्यते, शेषा ममत्तादारभ्यअयोगिकेवलिचरमसमययावत्मनुष्यायुष वेदकाभणिता सत्तकमप्रकृतीनामगाथास्वस्वस्थित्यतर्वर्तीन्येव ? यथाज्ञानावरणीयस्योकृष्टास्थिति त्रिंशत्कोटाकोटीसागराणाअबाधाचत्रिंशद्वर्षशतानि अबाधायूत कर्मनिषेकभावनाचएतानित्रिंशद्वर्षशतानित्रिंश कोटाकोटिसागरान्तर्गता येवान्यानिसाधि कानिआयुषस्तुदेवनारकायुषोरुत्कृष्टास्थिति त्रयस्त्रिंशत्सागरा तेचदेवनारकभवसंबद्धा, अबाधाचमनुष्यतिर्यगभवत्रिभागप्रमाणानत्रयस्त्रिंशत्सागरोपमेभ्यो त्रि नाएवेतिकथमित्युच्यतेआयुष अबाधायाप्रदेशवेदननास्तितेनभिन्नाएव, शेषकर्मणातुअबाधायाप्रदेशोदयताभवति तेनान्तर्गताएवेतितथाआयुष प्रदेशोदयोपिक्रमादिनातद्भवे एवभवति अतआयुषोभवविपाक एवेति ॥८३॥

टबार्थ —सास्वादन गुणठाणे नरकानुपूर्विनो उदय छे नही, शेष तिन आनुपूर्विनो उदय छे, उपरात सर्व गुणठाणे छे, आनुपूर्विनोव्यक्त विपाकोदय नथी तो कोइ पूछे जे आनुपूर्विनो थितिबंध एटलो किहा भोगवे तेहनो उत्तर कम्मपयडीथी जे प्रदेशोदयपणे भोगवे अथवा गतिनामकर्म म ये संक्रमावी भो-

गवे छे, जे नवमे गयाज उदये आवे बीजा भवमे उदय नावे तेमाटे कम्मपयडी मव्ये कह्यो छे, जे बीजा कर्म्मनी अवाधा ते कर्मनी स्थिति मव्ये गणी छे अने आऊखानी थितिवयीज उदीरणा छे, ते प्रदेशोदय पण थाये नही आऊखा च्यारे ते भव विपाकी छे, अवाधा ते मव्ये च्यार गुणे च्यार आऊखानो उदय छे, देशविरति गुणठाणे नर कहेता मनुष्यनो आऊखो १ तिर्यंचनो आऊखो उदय छे, शेष गुणठाणे एक मनुष्यायुनो उदय छे, आऊखा कर्मने सङ्क्रमणकरण नथी, प्रदेशोदयपणे मुख्यताये विपाकोदय मेलोइज छे, किहाइक प्रदेशोदय अल्पता रीते भिन्नपणे गवेख्यो छे ॥ ८३ ॥

नामधुवोदयचउतणु, वग्घासाहारणियरुज्जोयतिग।
पुग्गलविवागिमिच्छे, चउत्तीसहारदुगहीण ॥८४॥

टीका—अथपुद्गलविपाकिस्वरूपदर्शयन्नाह, यत्पूर्वबद्धसत्तागतकर्मपुद्गलानाउदयेऽभिनवाऔदारिकादिविंशतिगुणाबादरवर्गणासूक्ष्मवर्गणानामपिआहारत्वेनाङ्गयगृहणेनयासाप्रकृतीनाविपाक उदयोभवतिता पुद्गलविपाकिन्य षट्त्रिंशत्, नामध्रुवोदयइत्यादि ८४ नाम्न कर्मग ध्रुवोदयानित्योदयानामध्रुवोदयाद्वादशप्रकृतय, तद्यथा निर्माणस्थिरास्थिरागुरुलघुशुभाशुभतैजसकार्मणवर्णचतुष्कइतिच-उतणुत्ति तनुशब्देनोपलक्षितचतुष्कतणुवगागिव्सपयणइत्ति तत्रतनव तैजसकार्मणयोर्ध्रुवोदयमव्येपतितत्वात् तनवऔदारिकवैक्रियाहारकलक्षणास्तिस्र परिगृह्यते, उपागानित्रीणि, आकृतय षट्, सहननानिषट्, तदेवअष्टादशप्रकृतय, उपघातसाधारण उद्योतआतप पराघातलक्षणेइत्येता षट्त्रिंशत्प्रकृतय पुद्गलविपाकिन्यइतिअ-

त्वेनसकार्मणवर्गणाप्याहारपर्याप्तिपल्येनगृहीतानि नसकार्मणशरीरोद-यरूपाग्राह्या ॥ उक्तंच ॥ भगवं या जीवाणभंतेजे आहारत्ताएपुग्गलागिण्हन्तितेकिं अणुगिण्हंतिवायराअणुगिण्हन्तिगो० अणुविगिण्हन्तिइनायरादपिगिण्हन्ति तत्र कार्मणशरीरोपचयहेतव कार्मणवर्गणापुद्गलाऔदारिकादिशरीरोपचयहेतवोवादरपुद्गलाएवमृह्य अत्र श्वासोच्छ्वासभाषामनोरूपाअपिअस्मिनग्रहणेनैवविपाकेऽपिआहारत्वेनअग्राह्यमाणा नात्रपुद्गलविपाकेगृहीताइति अथगुणस्थानेषुविभजनाह मिच्छे मिथ्यात्व " चउतीस " चतुस्त्रिंश पुद्गलविपाकिन्य प्रकृतय उदयेप्राप्यन्ते आहारकद्विकहीनाइति ॥ ८४ ॥

टवार्थ—हवे पुद्गलविपाकी कहे छे नामकर्मनी ध्रुवोदयी १२ निर्माण १ थिर १ अथिर १ शुभ १ अशुभ १ अगुरुलघु १ तैजस १ कार्मण १ वर्णादिक ४ शरीर ३ उपांग ३ संस्थान ६ संघयण ६ उपघात १ साधारण १ प्रत्येक १ उद्योत १ पराघात ए छत्रीस प्रकृति पुद्गलविपाकी जाणवी बीजे पूर्वबद्ध कर्मपुद्गलसत्तागत तेहने उदयथी नवानवाग्राह्यथी नवा औदारिकादिक वीसगुणा वर्गणा लेईने जे उदय आवे ते पुद्गलविपाकी छे, मिथ्यात्वगुणठाणे आहारक विना चोत्रीस पुद्गलविपाकी उदय छे ॥ ८४ ॥

आयवनिगोयहीण, दुगतीससासणाइतियगिम्मि ।
उरलदुगहीणादेसे, छट्ठेमाहारजोयविणा ॥ ८५ ॥

टीका—आयवनिगोयहीणइत्यादिसास्वादनेदुगतीस द्वात्रिंशत् आपवनिगोयत्ति साधारणहीनाउदयेप्राप्यन्ते, एवमिश्रेऽपिद्वात्रिंशत्, सम्यक्त्वेऽपिद्वात्रिंशत्, उरलदुगऔदारिकद्विकहीना देशे देश-

विरतौ त्रिंशनुउदयेप्राप्यन्ते, उच्छेदविषयेप्रमत्तान्ये साहारत्तिआहार-द्विकसहिताउद्योतनामकर्मरहिताएकत्रिंशन् पुद्गलविपाकेउदयरूपा प्राप्यन्ते ॥ ८५ ॥

टबार्थ —आतपनामकर्म १ निगोद वर्हेना साधारण नाम विना सास्वादन तथा मिश्र तथा समकित एटले गुणठाणे ब-त्रीस पद्गलविपाकनी प्रकृति छे, देशविरति गुणठाणाने विषे औदारिकद्विक विना त्रीस छे, छठे गुणठाण आहारक बे २ मेलीये उद्योतनाम कर्म काटीये तेवार इगतीस पद्गलविपाकी उदयपणे ॥ ८५ ॥

अदुहारगअपमत्ते, अतिमसघयणतिगविणाचउसु ।
सघयणदुगविहीण, चउवीसखीणयोगम्मि ॥८६॥

टीका—अदुहारगअपमत्तेअप्रमत्ते गुणस्थानके अदुहारगत्ति आहारक द्विकरहिता एकोनत्रिंशनुउदयेलभ्यन्ते तथाअतिमत्ति अय-सहननत्रिकविनाअर्द्धनाराचकीलिकासेवार्त्तहीना पड्विंशति अपू-र्वकरणानिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायोपशातमोहलक्षणेषुगुणस्थानेषुचतु-र्षुउदयत्वेनप्राप्यन्ते पुद्गलविपाकिन्यइति सघयणत्ति सहननद्विक-हीनइतिप्रकृतत्वातहीनाश्चतुर्विंशति पुद्गलविपाकिन्य क्षीणमोहे तथा सयोगिमिति सयोगिकेवलिलक्षणे गुणस्थानकद्विकेमाप्यन्ते, अयोगिगुणस्थानेतुशरीरोऽभावात् नपुद्गलविपाकिन्युदयइति ८६

टबार्थ —अप्रमत्तगुणठाणे आहारक २ बे विना २९ पु-द्गलविपाकी उदय छे, छेहला सघयण तीन विना आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे छवीस पद्गल प्रकृतिविपाकी

उदय छे, ऋषभनाराच १ नाराच २ ए बे संघयण विना क्षीण-मोह गुणठाणे तथा सयोगि गुणठाणे पुद्गलविपाकी चोवीस छे, अयोगी गुणठाणे शरीरनो उदय नथी तेमाटे पुद्गलविपाकिनो पण उदय नथी ॥ ८६ ॥

घणघाइदुगोयजिणा, तसीयरतिगसुभगदुभगचउ-सास ।
जाइतिगजीयविवागा, पणदुगसयरीपढमदुगे॥८७॥

टीका—अथजीवविपाकिप्रकृतीराह घणघाइत्ति, घनघातिन्य सप्तचत्वारिंशत् ज्ञानावरणपंचक दर्शनावरणनवक मोहनीयमष्टाविंशति २८ अन्तरायपंचक ५ दुगोयत्तिगोयवेयणीयइतिगोत्रद्विक वेदनीयद्विक दुगोयशब्देनप्रकृतिचतुष्टयगृह्यते जिननाम त्रसत्रिक त्रसबादरपर्याप्तलक्षण इतरत्रिइतरत् स्थावरत्रिक स्थावरसूक्ष्मापर्याप्तलक्षण सुभगदुभगचउत्ति सुभगचतुष्क सुभगसुस्वरादेययशः कीर्तिरूप दुर्भगचतुष्क दुर्भगदुःस्वरनादेयायशो रूप, सासत्ति उच्छ्वास जाइतिगत्ति जातित्रिक जातिपंचक गतिचतुष्क स्वगतिद्विक जातित्रिकशब्देनएकादशप्रकृतयोगृह्यते इत्येता अष्टसप्ततिप्रकृतयोजीवविपाकिन्य जीवविपाकित्वं जीवगुणाज्ञानादयोआवृत्यतिप्रति यथाबद्धास्तथाएव कर्मवर्गणाउदयत्वेनभुज्यते वस्तुतस्तुक्षेत्रभवपुद्गलविपाका अपिजीवस्येनपाकपर्यणानगृहमुपयान्त चतुर्वंनितेनजीवविपाका एतेनिमिथ्यात्वगुणस्थानेजिननाममिश्रमोहसम्यक्त्वमोहरहिता पंचसप्तति जीवविपाकेप्राप्यते,सास्वादनेताएवसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्यात्वोदयरहिताद्वासप्तति जीवविपाकाउदयेप्राप्यते ॥ ८७ ॥

भावार्थ—हवे जीवविपाकी कहे छे घनघाति ४५ ते मध्ये

ए विपाक ते उत्पातस्था छे, तेमाट मिश्रमोहनीसमकितमोहनी २ मेळीये पछे ४७, गोत्र २ वेदनी २ तिनामकर्म १ त्रसतीन ३ त्रस १ बादर १ पर्याप्त ३ दूवा राना इतर आठे स्थावर तीन स्थावर १ सूक्ष्म २ अपर्याप्त ३ सुभग ४ सुभग १ सुस्वर २ आदेय ३ जस ४ दुर्भग ४ दुर्भग १ दुस्वर २ अनादेय ३ अयश ४ तथा साग कदेता नामोच्छ्वास १ नामकर्म १ जातिनिग कहेता जाति ५ गति ४ खगति २ एव ७८ जीवविपाकी छे पहेला जीवे नवकाडे बांध्या तेहज उदयपणे आवे छे, तेमाट तिहा मिथ्यात्व गुणठाणे जिननाम १ मिश्रमोहिनी १ समकित मोहिनी विना पचोतेर जीवविपाकीनो उदय छे सास्वादन गुणठाणे सूक्ष्म १ अपर्याप्त १ मिथ्यात्व १ ए तीन विना बहुत्तर जीव विपाकी छे ॥ ८७ ॥

दुगिचउसट्ठीपणपन्न, गुणचत्तछपचचत्तगुणचत्ता।
तिगदुगदुगजूअतीसा, सत्तरइक्कारजीयभुज्जा(या)८८।

टीका—दुगचि द्विगुणस्थानके मिश्रसम्यक्त्वलक्षणेऽनन्तानुबन्धिचतुष्कस्थावरनामरहितामिश्रमोहयुक्ताश्चतु षष्टि सम्यक्त्वेतु-मिश्राभावेसम्यगमोहनीययुक्ताश्चतु षष्टि जीवविपाकि यउदयेमाप्यन्ते, देशविरतौ द्वितीयकषायचतुष्कदेवगतिदुर्भगानादेयायशइतिनरकायगमेपचपचाशज्जीवविपाकिन्यउदयेमाप्यन्ते, तासुतीर्यग्गतिनीचैर्गोत्रतृतीयकषायचतुष्पापगमेएकोनपचाशत्,देशविरतौउदयेमाप्यन्ते, ताएवस्थानर्द्धित्रिकरहिता पटचत्वारिंशत्प्रमत्ते, ताएवसम्यग्मोहनीयरहिता पचचत्वारिंशत् अपूर्वकरणे,ताएवहास्यादिषट्करहिताएकोनचत्वारिंशत् अनिवृत्तिकरणे, ताएववेदत्रिकसज्वलनत्रिकरहितास्त्र-

यस्त्रिंशत् सूक्ष्मसपराये, ताण्नसज्वलनलोभरहिता द्वात्रिंशतुउपशात मोहे, ताएवद्वात्रिंशत् क्षीणमोऽहेपि, ताएवनिद्राद्वि कज्ञानावरणपचकातरायपचकदर्शनावरणचतुष्कमि येन षोडशापगमेजिननामोदयेचसप्तदशप्रकृतय सयोगिकेवल्गिगुणस्थाने, ततअयोगिकेवलिगुणेएकादशजीवविपाकिन्य उदयेप्राप्यते इति, दृष्युक्तविपाका ॥ ८८ ॥

टबार्थ—मिश्र गुणठाणे बासठ प्रकृति जीव विपाकी छे, समकित गुणठाणे चोसठ प्रकृति जीव विपाकी छे, देशविरति गुणठाणे पचावन प्रकृति जीव विपाकी छे, प्रमत्त गुणठाणे उगुणपचाश प्रकृति जीव विपाकी छे, अप्रमत्त गुणठाणे बेंतालीस प्रकृति जीव विपाकी छे, अपूर्वकरण गुणठाणे पिस्तालीस प्रकृति जीव विपाकी छे, नवमे अनिवृत्तिकरण गुणठाणे उगुणचालीस छे, सूक्ष्मसपराये तेत्रीस छे, उपशातमोहे बत्तीस छे, सयोगिकेवलिने सत्तर प्रकृति जीव विपाकी उदये छे, अयोगिने इग्यार जीव विपाकी उदय छे, बारमी प्रकृति आऊखो ते भव विपाकी प्रकृति छे ॥ ८८ ॥

अट्ठगचउचउरट्ठगाय, चउरोयहुतिचउवीसा।
सोलसभगानवमे, इगभगोसुहमठाणम्मि ॥८९॥

टीका—अथभगाकस्माणमितिविवृणनाह गुणट्ठाणेसुअट्ठसुइक्किकमोहचयट्ठाणतु, पचाअनियट्टिठाणेसु चत्तोपरमोपरततो १ मोहनीयसत्कबधस्थानेषुमव्येएकैकबधस्थानमिथ्यादृष्ट्यादिषुनवसुगुणस्थानकेषुभवति, तत्र मिथ्यादृष्टेद्वाविंशति, सास्वादनस्यैकविंशति, सम्यग्मिथ्यादृष्टे सप्तदश, अविरतसम्यग्दृष्टे सप्तदश, देशविरतस्यत्रयोदश, प्रमत्ताप्रूर्वकरणेषु भगएकतानावनव, एतानिचद्वाविंशत्या-

दीनिनवपर्यंनानिस्थानानि, तत्रद्वाविंशतिपटभगा, एकविंशतौचत्वारो-भगा, सप्तदशत्रयोदशनवसुस्थानेषुद्वौद्वौभगकौ, पचादीनानवस्थाना-नाएकैकएवभगकः नवस्थानिजानीय, ननपचचनस्रस्तिस्रोद्वेएका-प्रकृतिर्यबहति पचस्थानानिअनिवृत्तिगुणस्थानकेप्राप्यन्ते, अथगुण स्थानेपुउदयस्थानान्याह ननोदयस्थानानिनिनरएकद्वेचत्वारि पच-पट्सप्तअष्टौनव दशएवनवस्थानानि तत्रगाथा—

सत्ताइदसओमिच्छे, सासायणमीसएनवुक्कोसा ।
छाइनवअविरये, देसेपचाइअट्ठेव ॥ १ ॥

विरएखओवसमीए, चउराईसत्तछच्चपुव्वम्मि ।
अनियट्टिबायरेपुण, एक्कोवदुवेवउदयसा ॥ २ ॥

एगसुहुमसरागे, वेएइवेयगाभवेसेसा ।
भगाणचपमाण, पुव्वुदिट्ठेणनायव्व ॥ ३ ॥

मिथ्यादृष्टौसप्तादीनिदशपर्यंनानित्रीणिपर्यंनानिचत्वार्युदयस्थानानि-भवति ॥तद्यथा॥ सप्तअष्टौनवदशसास्वादनेसप्तादीनि दशपर्यंतानि-त्रीणिउदयस्थानानिसप्तअष्टौनव, एव मिश्रेपित्रीणिउदयस्थानानि अ-विरतेषडादीनि नवपर्यंनानिचत्वारिउदयस्थानानि षट्सप्तअष्टौनवइ-तिचत्वारि, देसेदेशविरतारयेपचादिअष्टपर्यंनानिचत्वारिउदयस्थानानि पचषट्सप्तअष्टौएतानिचत्वारिउदयस्थानानि, तथा विरतेक्षयोपशमे-प्रमत्ततयाअप्रमत्तेचतुरादिसप्तपर्यंनानिचतु पचष सप्तएतानिचत्वा-रिउदयस्थानानि, उव्वपुव्विम्मि अपूर्वकरणेचतुरादिषट्पर्यंतानि त्री-णिउदयस्थानानि, अनिवृत्तिबादरेगुणस्थानकेद्वौएकद्वेउदयस्थाने, सू-क्ष्मसपरायेएकमुदयस्थान, शेषाउपशातमोहादयोमोहोदयरहिताज्ञेया अतोगुणस्थानकेषुमोहेभगचतुर्विंशतिंविभजन्नाह मिथ्यादृष्ट्यादिष्व-

पूर्वकरणपर्यवसानेषुगुणस्थानकेषुप्रत्येकमष्टौअपूर्वकरणेचतस्त्रइत्या-
दिचतुर्विंशनयोभवन्ति, तत्रमिथ्यात्वेऽष्टौ सास्वादनेचतस्त्र , मिश्रे-
चतस्त्र , चउरङ्गाणिअविरतादिषुअप्रमत्तपर्यवसानेषुगुणस्थानेषुप्रत्ये-
कचतस्त्रएताश्चभावयति ततमिथ्यात्वेसत्ति मोदयेणकाचतुर्विंशति ,
अत्रकश्चिज्जीव अनन्तानुबन्धिचतुष्कसत्तान अप्रवर्त्तनाकरणेनउद्वल-
नया यपनर्यप्रतिपनितोमिथ्यात्वेगत तस्यसमविउदय , अन-
तानुबंधिनासत्तायाभावात्नउदय , तत्रमिथ्यात्वअप्रत्याख्यानावरण-
प्रत्याख्यानसज्वलनक्रोधादीनामन्यतमेत्रय क्रोधादीनात्रयाणावेदा-
नाअन्यतमोएकोवेद हास्यरतियुगलारतिशोकयुगलयोरन्यतरद्युग-
गलइत्येतासासप्तप्रकृतीनाउदयोध्रुव मिथ्यात्वे, अत्रहास्यरतियुगले-
एकोभग , सप्तारातिशोकयुगलेद्वितीयोभग, एवंभगद्वय वेदैस्त्रिगु-
णेनतेनभगा षड्भगा क्रोधसभवा , षड्भगामानसभवा , षड्भ-
गा मायासभवा ,षड्लोभसभवा , एवचतुर्विंशतिभगा सर्वेत्रभगा
चतुर्विंशतिसाक्रमोऽयमेवतस्मिन्नेवसप्तके भयेवाजुगुप्सायावाअनन्ता-
नुबंधिनिराक्षिप्ते अष्टनामुदय अत्रभयादौप्रत्येकमेककाचतुर्विंशति
प्राप्यते, इतितिस्त्रश्चतुर्विंशतय , तथातस्मिन्नेवसप्तकेभयजुगुप्स
योरथवाभयानन्तानुबंधिनोर्यद्वाजुगुप्सानन्तानुबंधिनो प्रक्षिप्तयोर्नवाना-
मुदय ,अत्राप्येकैकस्मिन्विकल्पेभगानाचतुर्विंशति प्राप्यते, इतिति-
स्त्रश्चतुर्विंशतय , तथातस्मिन्नेवसप्तकेभयजुगुप्साऽनन्तानुबंधिषुयुगपत्
प्रक्षिप्तेषुदशानामुदय अत्रैकाभगानाचतुर्विंशति , सर्वसख्ययामिथ्या-
दृष्टौचतुर्विंशतय , सास्वादनेसप्तअष्टौनवत्रीणिउदयस्थानानि, तत्रसा-
स्वादनेऽनन्तानुबंधीउदयेनैवआगच्छति, अनन्तानुबन्धादिकषायचतु-
ष्टयानामन्यतमेचत्वार क्रोधादिका , त्रयाणावेदानामन्यतमोवेद ,द्वयो-
र्युगलयोरन्यतरद्युगलमित्येतासासप्तप्रकृतीनाअत्रध्रुव उदय , अत्र-
प्रागेवैकाभगानाचतुर्विंशतिकाततोभयेजुगुप्सायावाप्रक्षिप्तायाअष्ट-

नामुदय तत्रद्वेचतुर्विंशतीभयजुगुप्सयो प्रक्षिप्तयोर्नवोदय, अत्रैका-
भगानाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययागत्वादेवचत्वस्रश्चतुर्विंशतय, मिश्रेऽ
पिसप्तअष्टानवतीणिउदयस्थानानितत्र अनन्तानुबन्धिवर्जास्त्रयोऽन्यतमे-
क्रोधादिका त्रयाणावेदानामन्यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरत्युगल-
एता सप्तधुवोदया, तत्रैकाचतुर्विंशति, ततोभयजुगुप्सायामन्यतरस्यांप्रक्षि-
प्तायाअष्टोदय, अत्रद्वेचतुर्विंशतीभयजुगुप्सयोस्तुयुगपत्प्रक्षिप्तयोर्नवा-
नाउदय तत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययामिश्रेचतस्रश्चतुर्विंशतय
अविरतसम्यग्दृष्टौ षट्सप्तअष्टानवपर्याप्तानिचत्वारिउदयस्थानानि,
तत्रानन्तानुबन्धिवर्जास्त्रयोऽन्यतमेक्रोधादिका, त्रयाणावेदानामन्यत-
मोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतमत्युगल इतिषण्णाप्रकृतीनाउदयोअवि-
रतस्यक्षायिकसम्यग्दृष्टेर्वाउपशमसम्यग्दृष्टेर्वा तत्र अत्रैकाचतुर्विंशति,
ततोभयेवाजुगुप्सायासम्यक्त्वमोहेप्रक्षिप्तेसप्तानामुदय अत्रतिस्रश्च-
तुर्विंशतय, तथातस्मिन्नेवषट्केभयजुगुप्सयोर्भयसम्यग्मोहयोर्जुगु-
प्सासम्यग्मोहयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयोरष्टानामुदय, अत्रापितिस्रश्चतुर्विं-
शतय तथातस्मिन्नेवषट्केभयजुगुप्सासम्यक्त्वमोहानायुगपत्प्रक्षिप्ता-
नानवानामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययाअविरतसम्यग्दृष्टाव-
ष्टौचतुर्विंशतय, देशविरतौपञ्चषट्सप्तअष्टाइति उदया तत्रप्रत्याख्या-
नावरणसञ्ज्वलनक्रोधादीनाअन्यतमौद्वौक्रोधौत्रयाणावेदानामन्यतमो-
वेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरत्युगलमितिपञ्चानामुदय देशविरतस्यक्षायिक-
सम्यग्दृष्टेरौपशमिकसम्यग्दृष्टेर्वा अत्रैकाचतुर्विंशति ततोभयेवाजुगु-
प्सायावासम्यग्मोहेवाप्रक्षिप्तेषण्णामुदय अत्रतिस्रश्चतुर्विंशतय,
तथातस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सयोर्वाजुगुप्सावेदकसम्यक्त्वयोर्वाभ-
यवेदकसम्यक्त्वयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयो सप्तानामुदय, अत्रापितिस्रश्चतु-
र्विंशतय, तथातस्मिन्नेवपञ्चकेभयजुगुप्सासम्यग्मोहेप्रक्षिप्तेअष्टानामु-
दय अत्रैकाचतुर्विंशति, सर्वसंख्ययादेशविरतौअष्टौचतुर्विंशतय,

तत्रश्चप्रमत्तेऽप्रमत्तेचच त्वारिपचषट्सप्तइत्येतानिचत्वारि उदयस्थानानि, तत्रक्षायिकसम्यग्दृष्टेरौपशमिकसम्यग्दृष्टेर्वाप्रमत्ताप्रमत्तस्यप्रत्येकसज्वलनक्रोधादीनामन्यतमएक क्रोधादि त्रयाणांवेदानामन्यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरद्युगल इतिचतसृणाप्रकृतीनामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति ततोभयेवाजुगुप्सायावासम्यग्मोहेवाक्षिप्तेपचानामुदय अत्रतिस्रश्चतुर्विंशतय भगानातस्मिन्नेवचतुष्केचभयजुगुप्सासम्यग्मोहयो प्रक्षिप्तयो पण्णामुदय अत्रापितिस्रश्चतुर्विंशतय तथातस्मिन्नेवचतुष्केभयजुगुप्सावेदकसम्यक्त्वे क्षिप्तेसप्तानामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति सर्वसख्ययाप्रमत्तस्यअष्टौचतुर्विंशतय, एवमप्रमत्तस्याप्यष्टौचतुर्विंशतय अपूर्वकरणेचतत्र पचषट्इत्येतानित्रीणि उदयस्थानानि, तत्रसज्वलनक्रोधादीनाम यतमएक क्रोधादि त्रयाणावेदानाअ यतमोवेद द्वयोर्युगलयोरन्यतरयुगलइत्येतासाचतसृणाप्रकृतीनामुदयोऽपूर्वकरणेअत्र अत्रैकाचतुर्विंशति, ततोभयेजुगुप्सायावाप्रक्षिप्तायापचानामुदय अत्रद्वेचतुर्विंशती भयजुगुप्सयोर्युगपत्प्रक्षिप्तयो पण्णामुदय अत्रैकाचतुर्विंशति सर्वसख्यया अपूर्वकरणेचतस्रश्चतुर्विंशतय अनिवृत्तिबादरपुन एकोद्वौवाउदयाशौउदयभेदौअत्रचतुर्णासज्वलनानामन्यतमएक क्रोधादि त्रयाणावेदानामन्यतमोवेद इतिद्विकोदय, अत्रत्रिभिर्वेदैश्चतुर्भि सज्वलनैर्द्वादशभेदा ततोवेदोदय यवच्छेदेएकोदय सचतुर्विधोद्विविधबधे एकविधबधेप्राप्यते, तत्रयद्यपिप्राक्चतुर्विधबधेचत्वार त्रिविधबधे त्रयोद्विविधबधेद्वौएकविधवधेएक इतिदशभगा प्रतिपादिता तथाप्यत्रसामा येनचतुष्विद्वचैकबधापेक्षयाचत्वारएवभगाविवक्ष्यते तेनपोटशभगकाअनिवृत्तिबादराख्येगुणस्थाने, इगभगोसुहुमठाणम्मि सूक्ष्मसपरायेयथाभावेएककिट्टीकृतसज्वलनलोभवेदयते, अत्रैकएव-

भग शेषाउपरितना उपशांतमोहादय सर्वेप्यवेदकामोहस्येति व्याख्याताचतुर्विंशति भगकाम् ॥ ८९ ॥

टबार्थ —मोहनीकर्मनी उदयभागानी चोविसी गुणठाणे बेंतालीस छे तेमध्ये मिथ्यात्वे आठ चोवीसी छे, सास्वादनगुणठाणे च्यार चोवीसी छे, मिश्रगुणठाणे च्यार चोवीसी छे, उपरले च्यार गुणठाणे चोथे तथा पाचमे तथा छठे तथा सातमे आठ आठ चोवीसी छे, आठमे गुणठाणे च्यार चोवीसी छे, ईहा चोवीसी सर्वनवेद ३ तेहथी हास्ययुगलना तीन भागा अरतिशोकना तीन भागा एव ६ भागा क्रोधथी ६ भागा मानथी ६ भागा मायाथी ६ भागा लोभथी ६ भागा ए चोवीस भागा जाणवा सर्व चोवीसी ए रीते छे, तथा नवमे गुणठाणे सोल भागा छे तथा दशमे गुणठाणे एक भागो छे मोहनीकर्मनी ए सर्व चोवीसीने चोवीसगुणी करीये ॥ ८९ ॥

चउवीसगुणा एए, सोलसनवमे इगंचदसगम्मि । वारसपणसट्ठिसया, मोहभगाण सव्वग्ग ॥९०॥

टीका—चउवीसगुणाएएइत्यादि एताद्विपचाशच्चतुर्विंशतय द्विपचाशत चतुर्विंशत्यागुणनेद्वादशशतीअष्टचत्वारिंशतभगानाभवति, सास्वादनेषड्विंशति , मिश्रेषड्नवति , सम्यक्त्वेद्विनवत्यधिकशत, देशविरतेद्विनवत्यधिकशत, प्रमत्तेद्विनवत्यधिकशत, अप्रमत्तेद्विनवत्यधिकशत, अपूर्वकरणेषड्विंशति , अनिवृत्तिकरणेषोडशभगा , सूक्ष्मसपरायेएकोभग , इत्येवभगनिरूपण अस्मत्कृतसवेध-प्रकरणतोज्ञेय द्वादशशतपचषष्टिमोहभगानासर्वाग्रभवति ॥९०॥

टबार्थ.—तेवारे २४८ भागा थाय ते मध्ये सत्तर भागा

मेलीये एटला मिल्या १२६९ भागा थाय, ते गुणठाणे तिहा मिथ्यात्वे १९२ भागा छे, सास्वादने ९६ मिश्रगुणठाणे ९६ समकित गुणठाणे १९२ देशविरति गुणठाणे १९२ प्रमत्तगुणठाणे १९२ अप्रमत्त गुणठाणे १९२ भागा, अपूर्वकरण गुणठाणे ९६ अनिवृत्तिकरण गुणठाणे १६ भागा सूक्ष्मसपराय गुणठाणे १ भागो छे, इम भागाना भेद जाणवा ते सर्वेप्रकरण स्वचणियेज किग्रो छे, तेहथी जोई लेवा ए मोहनीकर्मना भागानो सरवालो जाणवो ॥ ९० ॥

अडसट्ठीवत्तीस, वत्तीससट्ठीमेववावन्ना ।
चउयालदोसुवीसा, नवमेअडवीसइगसुहुमे ॥९१॥

टीका—अडसट्ठीवत्तीस अथपदवृन्दचतुर्विंशतिनिरूपणायाह । मिथ्यात्वगुणस्थानकेअष्टपष्टिपदवृदचतुर्विंशतय तत्रसप्तोदयेसप्तचतुर्विंशतय अष्टोदयेचतुर्विंशति चतुर्विंशतय नवोदयेसप्तविंशति चतुर्विंशतय दशोदयेदशचतुर्विंशतय, एवअष्टाधिकापष्टिर्मिथ्यात्वेपदानाचतुर्विंशतयोभवन्ति,सास्वादनेद्वात्रिंशचतुर्विंशतय, तत्रसप्तोदयेसप्त-अष्टोदये षोडश,नवोदयेनव,एवद्वात्रिंशत्,मिश्रे,सप्तोदयेसप्तअष्टोदयेषोडश नवोदयेनव, एवद्वात्रिंशत्,सम्यक्त्वे,षष्टि, तत्रषडुदयेपट् सप्तोदयेएकविंशति अष्टोदयेचतुर्विंशति नवोदयेनव एवषष्टिर्भवति । देशविरतौद्विपचाशत् तत्रपचोदयेपचषडुदयेअष्टदश सप्तोदयेएकविंशति अष्टोदयेअष्टा एवद्विपचाशत्, प्रमत्तेचतुश्चत्वारिंशत् चतुरुदयेचतस्त्र पचोदयेपचदश षडुदयेऽष्टादश सप्तोदयेसप्त एवचतुश्चत्वारिंशत् अपूर्वकरणेविंशति, एवत्रीणिशतानि द्विपचाशदधिकानिचतुर्विंशतयोभवति, तच्चतुर्विंशतिगुणितपदवृन्दसर्वाग्रमाप्यते नवमेऽष्टाविं-

शनि तथा दशमेण्क ण्वज्ञानानिअष्टासहस्त्राणिचतु शतानिसम-राप्तयधिकानिपदवृन्दानासर्वाग्रभवति एतेचभगत्रयोगादिनागुणि-तेअनकभगानासर्वाग्रभवनि ॥ ९१ ॥

टवार्थ —ह्वे पदवृदनी चोवीसी कहीये छे तिहा मिथ्याते अडसठि चोवीसी छे सास्वादन बत्तीस चोवीसी छे मिश्रे बत्तीस चोवीसी छे समकिते साठ चोवीसी छे देशविरते बावन चोवीसी छे प्रमत्त गुणठाणे चउवालीस चोवीसी छे, अप्रमत्त गुणठाणे चउवालीस चोवीसी छे अपूर्वकरण गुणठाणे वीस चोवीसी छे सर्वे मिल्या ५२ चोवीसी छे नवमे गुणठाणे अठावीस भागा छे दशमे सूक्ष्मसपराय गुणठाणे तेने विषे एकज भागो छे ॥ ९१ ॥

उदयपयाओगुणीया, पयवन्नासभवविर्याणिज्जा ।
नाणतरायतिनिह, दससुदोहुतिदुन्निम्मि ॥ ९२ ॥

टीका—अथज्ञानावरणादिकर्मणाभगकानिवितन्यन्ते । तत्र-ज्ञानावरणे तथा अनरायेनिविहतिनिमकारसभव , प्रथमभगेपचविधो बध पचविधउदय पचविधासत्ता एव त्रिकयोगयुक्त प्रथमोभग , दससु, मिथ्यात्वमारम्य दशसुसूक्ष्मसपरायपर्यतेषुप्राप्यते, द्वुति-म्मिंह्रनिउपशानमोहक्षीणमोहलक्षणे गुणस्थानद्वयेद्वेउदयसत्तारूपे-भवत पचविधउदय पचविधासत्ता एतत्त्रिसयोगलक्षणोद्वितीय-भग प्राप्यते ज्ञानावरणातरायर्योभगद्वयमेव ॥ ९२ ॥

टवार्थ —ए चोवीसी सर्व उदय पदनी गणिये तेवारे पद वृदनो सर्वाग्रथाये, दसनी चोवीसी दसगुणी करीये, नवनी चो-

वीसी नवगुणी करीये, इम सर्वेन करता ८४७७ भागा थाये, ज्ञानावरणीना भागा २ छे अनरायना भागा २ छे पाचनो बध पाचनो उदय पाचनी सत्ता ए त्रिविध भागो दशमा गुणटाणा पर्यंत छे इग्यारमे बारमे गुणठाणे पाचनो उदय पाचनी सत्ता ए एक भागो छे ॥ ९२ ॥

मिच्छेपुणसासाणे, नवचउपणनवयवधुदयसता ।
मीसाइनियट्टिओ, छचउपणनवयदुगभगा ॥९३॥

टीका—अथदर्शनावरणीयभगकानगुणस्थानकेषुदर्शयन्नाह । मिच्छेपुणसासाणेइ यादि मिथ्यात्वेपुन सास्वादनेदर्शनावरणीयस्यद्वौभगौ, नवत्ति नवानाप्रकृतीनानव चतुर्णामुदय नवानासत्तालक्षण प्रथमोभग, तेषामेवजीवानानिद्रोदये पचानामव्ये एकस्मिन् समये एकाएवनिद्राउदयेभवति नसर्वास्तेननवानानव पचानामुदय नवानासत्तारूप द्वितीयएवभगद्वयप्रथमगुणस्थानद्वये प्राप्यते, मिश्रादारभ्यनिवट्टित्तिबादरप्रथमभागयावन्तूत्स्यानर्द्धिनिकस्याभावेषण्णामेवबध चतुर्णामुदय नवानासत्ता अयवापण्णानध पचानामुदय नवानासत्ताएनद्भगद्वयपलभ्यते ॥ ९३ ॥

टवार्थ —दर्शनावरणीना मिथ्यात्व तथा सास्वादने नव बध च्यार उदय, नव सत्ता ए एक तथा नव बध पाच उदय नव सत्ताए बीजो ए बे भागा छे मिश्र गुणठाणाथी माडी आठमा गुणटाणाना प्रथम भाग सुधी ६ न्यारनो उदय नव नवनी सत्ता ए एक भागो तथा छनो बध पाचनो उदय नवनी सत्ता ए बीजो भागो ए बे भागा छे ॥ ९३ ॥

चउवधतिगेचउपण, नवसदुसुजुअल छ सता।
उवसतेचउ पण नव, खीणेचउदयछचउसता॥९४॥

टीका—चउबधतिगे इत्यादि अपूर्वकरणस्यषट्पचाशद्भग-कभागादारम्य सूक्ष्मसपरायपर्यन्त उपशमश्रेणिबन्ध चउबधति, च तुर्णांबध चतुर्णामुदय नवसत्ति नवसत्तालक्षण एकोभग अथवाचतुर्णांबन्ध पचानाबन्ध नवसत्तालक्षण द्वितीय निद्रो-दयसतुवोलनापरिणामरूप घोल्नाचवीर्यस्यतीक्ष्णवागलक्षणप्रव-र्त्तनेकिंचितूपुन परावर्त्तलक्षणरूपापरिणति दुसुत्ति नवमेदशमेब-धोदयानायुगल चतुर्णाबन्ध चतुर्णामुदय षट्सत्ता एषक्षपक-श्रेण्यारोहवन भग, तथा उवसते उपशातेएकादशेगुणस्थाने-चतुर्णामुदय नवानासत्ता अथवा नवानामुदय नवानासत्ताएन-द्रूपाभगकौप्राप्येते खीणत्ति क्षीणमोहलक्षणेद्वादशेचतुर्णामुदय पण्णासत्ता अथवा चतुर्णामुदय चतुर्णासत्तारूप एवभगद्वय-प्राप्यते, क्षपकाणामत्यतविशुद्धतयानिद्राद्विकस्यउदयाभावात् उद-यभगेषु सकान्तोदयस्यप्रकृत्यतरभवनेनतवगवेषणाप्रदेशोदयस्यापि नमुख्यताक्वचित्ग्रहणमपिकारणिकम् ॥ ९४ ॥

टबार्थ—आठमाना उपरला भागे नवमे दशमे ए तीन गुणठाणे च्यारनो उदय नवनी सत्ता ए भागो उपशमश्रेणिमें छे च्यारनो बंध च्यारनो उदय छनी सत्तानो भागो नवमाना तीजा भागथी जाणवो इग्यारमे गुणठाणे च्यारनो उदय नवनी सत्ता अथवा पाचनो उदय नवनी सत्ता ए बे भागा छे क्षीणमोह गुणठाणे च्यारनो उदय छनी सत्ता अथवा च्यारनो उदय च्यारनी सत्ता ए बे भागा छे ॥ ९४ ॥

चउछसुदुन्निसत्तसु, एगेचउगुणेसुवेयणियभगा ।
गोएपणचउदोतिसु, एगट्ठ(सु)दुन्निइक्कम्मि ॥९५॥

टीका--अथ वेदनीयगोत्रभगकान्गुणस्थानेषुदर्शयन्नाह । चउछसुइत्यादिषुपञ्चसुमिथ्यादृष्ट्यादिषुप्रमत्तसयतपर्यंतेषुगुणस्थानके षुप्रत्येकवेदनीयस्य प्रथमाश्चत्वारोभगा तेचेमेअसातस्यबध अ-सातस्योदय सातासातेसत्ता १ सातस्यबध असातस्योदय सातासातेसत्ता २ असातस्यबध सातस्यउदय सातासातेसत्ता ३ सातस्यबन्ध सातस्योदय सातासातेसत्ता ४ एवभगचतुष्टय-प्राप्यते तथाअप्रमत्तसयतादिषुसयोगिकेवलिपर्यंतेषुद्वौभगकौ सात-स्यबध असातस्योदय सातासातेसत्ता १ पुन सातस्यबध सा-तस्योदय सातासातेसत्ता एवभगकद्वयप्राप्यते, तथाएकस्मिन्नयोगि केवलिनिच त्वारोभगा तेचेमेअसातस्योदय सातासातेसत्ता १ सातस्योदय सातासातसत्ता २ एतौद्वौविकल्पौ अयोगि-केवलिनिद्विचरमसमयपावत् प्राप्येते चरमसमयेतु असातस्योदय असातसत्ता १ अथवा सातस्यउदय सातसत्ता एवभगद्वय प्राप्यते द्विचरमसमयस्यसातक्षीणतस्यअसातप्राप्यते यस्यअ-सातक्षीणतस्यसातप्राप्यते गोएत्तिगोत्रस्यपचभेदामिथ्यादृष्टौ तेचे-मेनीचैर्गोत्रस्यबधोनीचैर्गोत्रोदय नीचैर्गोत्रसत्ताएकोविकल्प तेज-स्कायिकेषुवायुकायिकेषुलभ्यते तद्भवादुद्वृत्तेषुचाशेषजीवेषुमिथ्या-दृष्टौ नीचैर्गोत्रस्यबध नीचैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा नीचैर्गोत्रस्यबध उच्चैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा उच्चैर्गो-त्रस्यबध नीचैर्गोत्रोदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता अथवा उच्चैर्गोत्रस्यबध उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता एवभगपचकभवति तथा सा-

स्वादनेप्रथमभगद्वयंभंगचतुष्यप्राप्यते प्रथमभगक्तेजोवायुकायिक-योरुद्धृतेपुनस्तसास्वादनाभावात्, तथानिपुमिश्राविरतिदेशविरतेपु-उच्चैर्गोत्रबंधकोद्विभंगोभवन मिश्रादयोहि नीचैर्गोत्रनबध्नंति अन्ये-त्वाचार्या देशविरतस्यपचमव्यंगएक उक्तच सामान्नेणवयजाइए उच्चगोयस्सउदओहोइ इतिवचनात् एगट्ठप्रमत्तसयतप्रभृतिषुअष्-सुगुणस्थानेषुप्रत्येकमेकैकोभग ततप्रमत्तात्सूक्ष्मसंपरायपर्यंत उच्चै-र्गोत्रस्यबंध उच्चर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ता उपशांतमोहक्षी-णमोहसयोगिकेवलिनिबंधाभावात् प्रत्येकउच्चगोत्रस्योदय उच्चनी-चैर्गोत्रसत्तारूप विकल्प " दुन्निइक्कम्मि " एकस्मिनूअयोगिके-वलिनिद्विभगोउच्चर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोत्रसत्ताअयविकल्प अ-योगिद्विचरमसमययावत् चरमसमयेतु उच्चैर्गोत्र्स्योदय उच्चैर्गोत्र-सत्ताअयद्वितीयोविकल्प नीचैर्गोत्रस्यसत्ताद्विचरमसमयेप्रकृतिषुक्षीण-त्वात् इत्युक्तोवेदनीयगोत्रे ॥ ९५ ॥

अर्थ —वेदनी कर्मना ७ गुणठाणे च्यार भागा छे असातानो बध १ असातानो उदय १ सातासातानी सत्ता १ असातानो बध १ सातानो उदय १ सातासातानी सत्ता २ तथा सातानो बध सातानो उदय सातासातानी सत्ता ३ सातानो बध असातानो उदय साताअसातानी सत्ता ४ ए च्यार छट्ठा गुणठाणा पर्यंत छे इहा छट्ठाने अंते असातानो बध जाय छे तिणे सातमाथी तेरमा पर्यंत सात गुणठाणे सा-तानो बधे सातानो उदय बेनी सत्ता १ तथा सातानो बध असातानो उदय बेनी सत्ता ए बीजो ए बे भागा पामीये छे एक अयोगी गुणठाणे अबधना च्यार भागा छे असातानो उदय, बेनी सत्ता १ सातानो उदय बेनी सत्ता २ असातानो

उदय सातानी सत्ता २ सातानो उदय सातानी सत्ता १ ए च्यार भागा छे गोत्रकर्मना भागा सात छे तिहा मिथ्यात्वे मात भगा छे नीचनो बंध नीचनो उदय नीचनी सत्ता १ नीचनो बंध नीचनो उदय बेनी सत्ता नीचनो बंध ऊचनो उदय बेनी सत्ता ऊचनो बंध नीचनो उदय बेनी सत्ता ए पाच भागा छे साम्वादन गुणठाणे नीचनो बंध नीचनो उदय नीचनी सत्ता ए भागो नथी तेणे च्यार भागा छे, जे कारणे उपशमसमकित पडतो साम्वादने आवे उचगोत्र बाधी सत्ताकरीज आवे, समकिती ते नावे तो बंध नथी, तिहा तीजे तथा चोथे गुणठाणे ऊच रचना ने भागा छे, जे कारणे सास्वादनने नीचनो बंध टल्यो छे, तेणे नीच रचना तीन भागा टल्या, पाचमे पण एहज वे भागा छे, छठायी माडी दशमा पर्यंत ऊचनो बंध ऊचनो उदय ऊचनी सत्ता ए एक भागो छे, इग्यारमे वारमे तेरमे ऊचनो उदय छे वेनी सत्ता एक भागो छे एक अयोगि गुणठाणे रचना वे भागा छे ॥९५॥

अट्ठाहिगवीसा, सोलसवीसचवारछदोसु ।
दोचउसुतिसुइक्क, मिच्छाइसु आउएभगा ॥९६॥

टीका —साम्प्रतमायु कर्मणोभगकानूगुणस्थानेषुदर्शयन्नाह । अट्ठाहिगवीसाद्रय'दिअनायु कर्मण अष्टाविंशतिभगा स्तत्रनरकायुष पच,प्रथमअनद्धायुष नरके।धुरुदय नरकायु सत्तालक्षण प्रथम बध्यमानायुषाद्रेभगके तिर्यगायुर्नव नरकायुरुदय तिर्यग्नरकायु सत्ताएतद्द्वगकमिथ्यात्वेसास्वादनेप्राप्यते मनुष्यायुर्बंध नरकायुरुदय नरकमनुष्यायु सत्ता, एषतुमिथ्यात्वेसास्वादनेअविरतेचप्राप्यते

आयुर्बंधकरणानंतरनरकायुरुदय तिर्यग्नरकायु सत्ता, नरकायुरुदय मनुष्यमनुष्यायु सत्ता एतौभंगकौनारकस्यचतुर्षुगुणस्थानेषुप्राप्येते एतेपचनैरयिकायुर्भंगका, देवायुषोपिपच, देवायुरुदय देवायु स- त्ताबध्यमानायुपातिर्यगायुर्बंध देवायुरुदय देवतिर्यगायु सत्ता मनुष्यायुर्बंध देवायुरुदय मनुष्यदेवायु सत्ता बधानन्तरदेवायुरुदय तिर्यग्देवायु सत्ता, देवायुरुदय मनुष्यदेवायु सत्ता एव पच, तिर्य- गायुरुदयेनवभगका, स्तिर्यगायुरुदय तिर्यगायु सत्ता अयचपच- सुगुणेषुप्राप्यते, बध्यमानायुषानरकायुर्बंध तिर्यगायुरुदय नरक- तिर्यग्सत्तारूप मिथ्यात्वेएवप्राप्यते, तिर्यगायुर्बंध तिर्यगायुरुदय तिर्यग्तिर्यगायु सत्तारूपस्तुमिथ्यात्वेसास्वादनेप्राप्यते, मनु- ष्यायुर्बंध तिर्यगायुरुदय मनुष्यतिर्यग्सत्ता अयभग मिथ्यात्वेसा- स्वादनेमुरयनयाप्राप्यते, सम्यग्दृष्टेरितरश्चोऽपिदेवायुर्बंध तिर्यगा- युरुदय सत्तालक्षण मिश्रवजमिथ्यात्वादि देशविरतपर्यंतमाप्यते बधानन्तरातिर्यगायुरुदय नरकतिर्यगसत्तातिर्यगायुरुदय तिर्यगति- र्यग्सत्तातिर्यगायुरुदय मनुष्यतिर्यगसत्तातिर्यगायुरुदय देवतिर्य- गायु सत्ताएतेचत्वारोपिपूर्वंबद्धायुषोऽपेक्षयापचस्वपिगुणेषुप्राप्यन्ते एवमनुष्यायुर्भंगानन, मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्तालक्षण चतु- र्दशसुगुणस्थानेषुप्राप्यते, बध्यमानानानरकायुर्बंध मनुष्यायुरुदय नरकायुर्मनुष्यायु सत्तारूप मिथ्यात्वेतिर्यगायुर्बंध मनुष्यायुरुदय तिर्यग्मनुष्यायु सत्तालक्षणभगोमिथ्यात्वेसास्वादनेदेवायुर्बंध मनु- ष्यायुरुदय मनुष्यमनुष्यायु सत्तारूप भगोमिथ्यात्वेसास्वादने, देवायुर्बंध मनुष्यायुरुदय देवमनुष्यायु सत्तालक्षणभग मिश्रव- र्जमिथ्यात्वाद्यप्रमत्तपर्यंतेषुप्राप्यनेइति अष्टाविंशतिभगामिथ्यात्वेप्र- थमेगुणस्थानेप्राप्यते, सास्वादनेषड्विंशतिभगा।स्तिर्यग्मनुष्ययो नरकायुर्बंधलक्षणौद्वौभगौ न नरकायुषोद्विन्योमिथ्यात्वेएवेति छात्ति,

पडधिकाविंशति मिश्रेषोडशभगाबध्यमानभगानाद्वादशानामभावात् वीसच अविरतसम्यग्दर्शने " वीसभगा " विंशतिर्भगा कथमितिचेदुच्यते तिर्यग्मनुष्याणाप्रत्येकमायुर्बंधकालेयेनरकतिर्यग्मनुष्यायुर्विपयास्त्रयोभगा यश्चदेवनैरयिकाणाप्रत्येकमायुर्वंधकालेनियगानिविपय एकैकोभग तेअविरतसम्यग्दृष्टेर्नसभवति नत शेषाविंशतिरेवभवति, देशविरतेद्वादशभगा, यतोदेशविरतिस्तिर्यग्मनुष्याणाएवभवति, तेचतिर्यग्मनुष्यादेशविरताआयुर्बध्नन्तोदेवायुरेवबध्नतिनशेषमायुस्ततस्तिरश्चामनुष्याणाचप्रत्येक परभवायुर्बंधकालात्पूर्वएकैकोभग परभवायुर्बंधकालेपिदेवायुर्बंधरूप एकैकोभग बंधोत्तरकाल तुचत्वारोभगा, चतुर्णामप्यायुषामव्येअ यतमस्योद्वातनोदेशविरतिप्रतिपद्यते, तदपेक्षयाच चारोभगा प्राप्यन्ते, सर्वेसरपया, द्वादश उत्तरोत्तरयो प्रमत्ताप्रमत्तयो प्रत्येकषड्भगा, प्रमत्ताप्रमत्तसपनादि मनुष्याएवभवति बधकालात् पूर्वएक बधकालेतुदेवायुर्बधरूप एक बधोत्तरकालतुचत्वारोपि एवषड्भगा, दोचउमुत्ति चतुर्षुअपूर्वकरणानिवृत्तिकरणसूक्ष्मसपरायोपशान्तमोहेषुगुणस्थानेषूपशमश्रेणिमधिकृत्यप्रत्येकद्वौद्वौभगोतद्यथा मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्ता, अथवा बद्धायुपस्तुमनुष्यायुरुदय देवमनुष्यायु सत्तालक्षणएवद्वौभगकौप्राप्येते एषविकल्प परभवायुर्बंधोत्तरकालएतेष्वायुर्नबध्नाति, अतिविशुद्धत्वात्पूर्वबद्धेचायुषि उपशमश्रेणिप्रतिपद्यते ते, देवायुष्येवतान्यायुषितदुक्तकर्मप्रकृतौ तिसुआउगेसुबद्धेसु जेणसेढिंनारुहइ, तत उपशमश्रेणिमधिकृत्यएतेषुद्वौद्वौएवभगकौपूर्वबद्धायुष्कास्तुनक्षपकश्रेणिप्रतिपद्यते, तत उपशमश्रेणिमधिकृत्येत्युक्त क्षपकश्रेण्यान्वेतेषाएकैकोभग मनुष्यायुरुदय मनुष्यायु सत्तालक्षणएवतिरूपितचायु कर्मस्वरूपम् ९६॥

बवार्थ —हवे आउखाकमना भागा गुणठाणे कहे छे

मिथ्यात्व गुणठाणे नारकीना ५ देवताना ५ तिर्यचना ९ ए अठावीस भागा छे, सास्वादन गुणठाणे छवीस भागा छे मनुष्यना तथा तिर्यचना नारकीयरना २ भागा नथी मिश्र गुणठाणे सोळ भागा छे च्यार गतिमध्ये बध्यमान भागा नथी. बार बध्यमान भागा नथी समकित गुणठाणे वीस .ागा छे च्यार अबधना च्यार बाधी रह्या पछी बध्यमान च्यार छे जे देवता नारकी समकित गुणठाणे मनुष्यायु बाधे तिरि मनुष्य एक देवायु बाधे, समकितीने नरकतिरि आयुबध नथी छट्ठायी माडी तेरमा पर्यंत उच बध, उच उदय, उच नीचनी सत्ता, ए एक भागो छे एक अयोगी केवली गुणठाणे अबधना बे भागा छे सत्ता ए एक भागो पामीये जे कारणे क्षपकश्रेणि अबधायु चढे पर बधायु चढे नहीं देशविरति गुणठाणे तिर्यचना छ मनुष्यना छ ए बार पामीये अबधनो १ बध्यमान एक देवतानो बाधी रह्या पाछल्या च्यार एव ६ तिरिगतिना छ मनुष्यगतिना, छट्ठे तथा सातमे गुणठाणे मनुष्यगतिना छ भागा पामीये तथा आठमे नवमे दशमे इग्यारमे ए च्यार गुणठाणे मनुष्यायुसत्ता मनुष्यायुउदय मनुष्यायुउदयदेव मनुष्यायुसत्ता ए बे भागा पामीये कोईक जीव आउखो बाधे, उपशमश्रेणि चढे तथा क्षीणमोह गुणठाणे मनुष्यायु उदयसत्ता ए एक भागो पामीये जे कारणे क्षपकश्रेणि अबधायु चढे परबधायु चढे नहीं ॥ ९६ ॥

छनवछक्कतिगसत्ता, दुगदुगतिगदुगतिअट्ठचउदुग ।
छचउदुगपणचउ, चउदुगचउपणगएगचउ ॥९७॥

टीका—सांप्रतनामकर्मस्वरूपविभजन्नाह छनवछक्कइत्यादि-

गाथायुग्म तत्रव्याख्या तत्रमिथ्यादृष्टीनाम्न पटत्रस्थानानि तत्र-थात्रयोविंशति पचविंशति पड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिं-शत् त्रिंशत्, तत्रापर्याप्तैकेंद्रियप्रायोग्य बध्नन त्रयोविंशति, तस्या चयध्यमानायां बादरसूक्ष्मप्रत्येकसाधारणैर्भंगाश्चत्वार पर्याप्तकेंद्रिय प्रायोग्यापर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यगपचेंद्रियमानुष्यप्रायोग्यबध्नत प-चविंशति, तत्रपर्याप्तैकेंद्रियप्रायोग्यायापचविंशतौबध्यमानायाभगा-विंशति अपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्मनुष्यपचेंद्रियप्रायोग्यायाचब-ध्यमानायातुप्रत्येकएकैकोभगइतिसर्वसर यथापचविंशति पर्याप्तैकें-द्रियप्रायोग्यबध्नत पड्विंशति तस्याचबध्यमानायाभगा षोडश, देवगतिनरकगतिप्रायोग्यबध्नत अष्टाविंशति देवगत्यष्टाविंशतो अष्टौभगा नरकाष्टाविंशतौएकभग एवनवपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रिय-तिर्यग्मनुष्यपचेंद्रियप्रायोग्यान्बध्नता एकोनत्रिंशत्, तत्रपर्याप्तद्वित्रि-चतुरिंद्रियप्रायोग्यायाएकोनत्रिंशतिबध्यमानायाप्रत्येकअष्टौभगा । तिर्यग्पचेंद्रियप्रायोग्यायाषट्चत्वारिंशत् शतानिअष्टाधिकानिमनुष्य-गतिप्रायोग्यायामप्येतावन्तएवभगा सर्वसर यथाचत्वारिंशदधिकानि-द्विनवतिशतानि ९२४०। यातुदेवगतिप्रायोग्यातीर्थंकरनामसहिता एकोनत्रिंशत् साचमिथ्यादृष्टीनबधमायातितीर्थंकरनामसम्यक्त्वप्रत्य-यात्, मिथ्यादृष्टेश्चतद्भावात्, पर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियतिर्यग्पचेंद्रिय-प्रायोग्यबध्नन त्रिंशत्, तत्रपर्याप्तद्वित्रिचतुरिंद्रियप्रायोग्यायात्रिंश-तिबध्यमानायाप्रत्येकमष्टौभगा, तिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यायात्वष्टा-धिकानिषट्चत्वारिंशच्छतानि।४६०८ सर्वसख्ययाद्वात्रिंशत् उत्तरा-णिषट्चत्वारिंशत यात्वनुमनुष्यगतिप्रायोग्या त्रिंशत् तीर्थंकरनामस-हितायाचदेवगतिप्रायोग्याआहारकद्विकसहितातेउभेअपिमिथ्यादृष्टौ नबधमायात, तीर्थंकरनाम्न सम्यक्त्वप्रत्ययत्वादाहारकनाम्नस्तु-सयमप्रत्ययत्वात्, उक्तच सम्मत्तगुणनिमित्ततित्थयर सयमेणआहा-

रमिति तत्र त्रयोविंशत्यादिषुभंगसंख्यामिथ्यात्वमत्यपनिरूपणार्थ-
माह ॥ गाथा ॥

> चउपणवीसासोलस, नवचत्तालसयायनाणउई ।
> बत्तीगुत्तरछापा, स्सयामिच्छस्सनवविही ॥ १ ॥

तथामिथ्यादृष्टेर्नवउदयस्थानानि तद्यथाएकविंशति चतुर्विंशति सप्तसहस्राणि सप्तशतानि त्रिसप्तत्यधिकानि तथाहिएकविंशत्युदये एकचत्वारिंशत्, तत्रैकेंद्रियाणामेव अन्यत्रचतुर्विंशत्युदयस्याभावात्, पचविंशत्युदयेद्वात्रिंशत् तत्रएकेंद्रियाणासप्तवैक्रियतिर्यगूपचेंद्रियाणामष्टौवैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवानामष्टौ नारकाणामेक एवद्वात्रिंशत्षड्विंशत्युदयेषट्शतानि तत्रैकेंद्रियाणा त्रयोदश १३ विकलेंद्रियाणा नव, तिर्यगूपचेंद्रियाणाद्वेशतेएकोननवत्यधिके २८९ मनुष्याणामपिद्वेशतेएकोननवत्यधिके ॥२८९॥ सप्तविंशत्युदयेएकत्रिंशत् तत्रएकेंद्रियाणाषट् ६ वैक्रियतिर्यगूपचेंद्रियाणामष्टौवैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवानामष्टौ नारकाणामेक, अष्टाविंशत्युदये एकादशशतानिनवनवत्यधिकानि, तत्रविकलेंद्रियाणाषट्, तिर्यगूपचेंद्रियाणापचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियतिर्यग्पचेंद्रियाणाषोडश १६ मनुष्याणापचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि ५७६ वैक्रियमनुष्याणामष्टौ देवाना षोडश, नारकाणाएक, एकोनत्रिंशदुदयेसप्तदशशतानिएकाशीत्यधिकानि ॥१७८१ तत्रविकलेंद्रियाणाद्वादश, तिर्यक्पचेंद्रियाणामेकादशशतानिद्विपचाशदधिकानि ११५२ वैक्रिय, तिर्यक्पचेंद्रियाणाषोडश १६ मनुष्याणापचशतानिषट्सप्ततिअधिकानिवैक्रियमनुष्याणामष्टौ ८ देवानाषोडश, नारकाणाएक, त्रिंशदुदयेएकोनत्रिंशत्शतानिचतुर्दशाधिकानि, तत्रविकलेंद्रियाणामष्टादश-तिर्यक्पचेंद्रियाणासप्तदशशतानिअष्टाविंशत्यधिकानि१७२८ वैक्रिय-

देवनैरयिकसत्कोदयस्थानभगा न प्राप्यन्ते; सत्तास्थानानिपचतद्यथा- द्विनवति अष्टाशीति षडशीति अशीति अष्टसप्ततिश्चतस्रैक- त्रिंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंश घ्नुदयेषुपचापिसत्ता- स्थानानि नवर पचविंशत्युदयेतेजोवायुकायिकानधिकृत्याष्टसप्तति प्राप्यते, षड्विंशत्युदयेतेजोवायुकायिकान् तेजोवायुभवाद्धुत्धृत्यवि- कलेन्द्रियतिर्यक्पचेन्द्रियेषुमध्येसमुत्पन्नानअधिकृत्याष्टाविंशत्येकोन- त्रिंशत्एकत्रिंशद्रूपेषुपचसुअष्टसप्ततिवर्जानिशेषाणिप्रत्येकंचत्वारि- चत्वारिसत्तास्थानानिसर्वसर यथासर्वाण्युदयस्थानानिअधिकृत्यत्रयो- विंशतिबन्धकस्यचत्वारिंशत्सत्तास्थानानि, एवपचविंशति षड्विंशति नवकानामपिवक्तव्य केवलमिह्देवाअप्यात्मीयेषुसर्वेष्वप्युदयस्थाने- षुवर्तमानपर्याप्तैकेन्द्रिययोग्यापचविंशति षड्विंशतिंचबघ्नन्ति इत्य- वसेय, नवरपचविंशतिबन्धेबादरपर्याप्तप्रत्येकास्थिरशुभदुर्भगानादे- ययश कीर्तिअयश कीर्तिपदैरष्टौभगा अवसेया नशेषा सूक्ष्मसाधारणपर्याप्तिषुमध्येदेवस्योत्पादाभावात्, सत्तास्थानभावना पचविंशतिबन्धेषड्विंशतिबन्धेचप्राग्विवक्तव्या सर्वसख्ययाचत्वारिंशत् सत्तास्थानानि, अष्टाविंशतिबन्धकस्यमिथ्यादृष्टेर्द्वेउदयस्थाने तद्यथा- त्रिंशत्एकत्रिंशत्, तिर्यक्पचेंद्रियमनुष्यानधिकृत्यएकत्रिंशत् तिर्यग्प- चेंद्रियानेवअष्टाविंशति बधकस्य चत्वारिसत्तास्थानानिद्विनवति एकोननवति अष्टाशीति षडशीति तत्रत्रिंशदुदयेचत्वार्यपितत्रा- प्येकोननवतिर्योनामवेदकसम्यग्दृष्टिर्बद्धतीर्थकरनामा परिणामपरिव- र्त्तनेनमिथ्यात्वेगतोनारकाभिमुखोनरकगतिप्रायोग्यामष्टाविंशतिंब- ध्नाति, तमधिकृत्यवेदित्या त्रिशेषाणि पुनस्त्रीणिसत्तास्थानान्यविशे- षेणतिर्यग्मनुष्याणाएकत्रिंशदुदयेएकोननवतिवर्जानित्रीणिसत्तास्था- नानिएकोननवतिर्हितीर्थंकरनामसहिता नचनीर्थकरनामतिर्यक्षुसभ- वति सर्वसख्ययाअष्टाविंशति(बधे)सप्तसत्तास्थानानि देवगतिवर्जा-

शेषाणेवभवनिविंशतविकलेन्द्रियनिर्यपंचेन्द्रियप्रायोग्यामनुष्यगतिप्रा-
योग्याचयत्रनोमिथ्यादृष्टेः सामान्येनत्रापिप्राक्तनानिउदयस्था-
नानित्रयाद्विनवतिः एकोननवतिः अष्टाशीतिः षडशीतिः अ-
शीतिः पञ्चैतानि तत्रैकविंशत्युदयेसर्वाण्यपिप्राप्यन्ते, त-
त्राप्येकोननवतिः तद्वीर्थकरनामानमिथ्यात्वगतनैरयिकमधिकृत्यप्रा-
प्तेया द्विनवतिः अष्टाशीतिश्चदेवनैरयिकमनुजविकलेन्द्रियतिर्यग्-
पंचेन्द्रियैकेन्द्रियानधिकृत्यपडशीतिरशीतिश्चविकलेन्द्रियतिर्यक्पञ्चे-
न्द्रियमनुजैकेन्द्रियानधिकृत्यवेदितव्या, अष्टमवतिरेकेन्द्रियतिर्यक्पञ्चे-
न्द्रियानधिकृत्यचतुर्विंशत्युदयेएकोननवतिवर्जानिशेषाणि पचसत्ता-
स्थानानितानिचैकेन्द्रियानधिकृत्यवेदितव्यानि, अन्यत्रचतुर्विंशति-
रुदयस्थानाभावात् । पञ्चविंशत्युदयेपिषटसत्तास्थानानि तानि-
र्ययत्रविंशत्युदयेभावितानितथैवभावनीयानि षड्विंशत्युदय एको-
ननवतिवर्जानिशेषाणि पचसत्तास्थानानितानितथैवभावनीयानि,
एकोननवतिस्तुनलभ्यते यतोमिथ्यादृष्टेः सन् एकोननवतिः
नरकेषूत्पद्यमानस्यनैरयिकस्यप्राप्यते न शेषस्य नच नैरयिकस्य
षड्विंशत्युदय सम्भवति, सप्तविंशत्युदयेअष्टसप्ततिवर्जानिशेषाणि
पचसत्तास्थानानिप्राग्वद्भावनीयानि,एकोननवतिस्तुनलभ्यते यतो
मिथ्यादृष्टिः सन् एकोननवतिनिरकेषूत्पद्यमानस्यनैरयिकस्यप्राप्यते
नशेषस्यनचनैरयिकस्यषड्विंशत्युदय सम्भवति, सप्तविंशत्युदये अ-
ष्टसप्ततिवर्जानि शेषाणिपचसत्तास्थानानि तत्रैकनवतिः प्रागुक्तस्व-
रूपनैरयिकमधिकृत्यद्विनवतिरष्टाशीतिश्चदेवनैरयिकमनुजविकलेन्द्रिय
तिर्यक्पचेन्द्रियैकेन्द्रियानधिकृत्यपडशीतिरशीतिश्चविकलेन्द्रिय
नैरयिकमनुजानधिकृत्यवेदितव्याः,एकेन्द्रियवर्ज्याकायोनायोनामात्रा नार-
कादीनावानचतेषामष्टसप्ततिस्तेषामवश्यमनुष्यद्विकस्यसंभवात् ए-
तान्येवपचसत्तास्थानानि अष्टाविंशत्युदयेनवैकोननवतिर्द्विनवतिर-
ष्टाशीतिश्चप्राग्वद्भावनीया, षडशीतिरष्टाशीतिश्चविकलेन्द्रियतिर्य-

रूपचेन्द्रियमनुष्यानधिकृत्यवेदित याएवमेकोननिंशदुदयेप्येतानिएव-
पचसत्तास्थानानि भावनीयानि, निंशदुदयेचत्वारिनद्यथानिनवति-
रष्टाशीति पडशीतिरशीतिरेतानिविकलेन्द्रियनिर्यगपचेन्द्रियमनु-
ष्यानधिकृत्यवेदित यानि, एकोननवति पदमुमाप्यते, यत सा
मिथ्यादृष्टे सतोबद्धतीर्थकरनाम्नोमिथ्यात्वगतस्यनरयिकस्यप्राप्यते
नचैनरयिकस्यनिंशदुदयोऽस्ति एवंनिंशदुदयेप्येतान्येवचत्वारिनानि-
चविकलेन्द्रियनिर्यगपचेन्द्रियानधिकृत्यद्रष्टयानि, सर्वसरययामिथ्या-
दृष्टेरेकोननिंशन्निंशतोबन्धत पचचत्वारिंशत्सत्तास्थानानि यानुदेवग-
तिप्रायोग्याएकोननिंशत्सामिथ्यादृष्टेर्नबध्यमायानि कारणप्रागेवोक्त
मनुष्यदेवगतिप्रायोग्यवर्जाशेषानिंशत विकलेन्द्रियतिर्यगपचेन्द्रिय-
प्रायोग्यानबध्नत सामान्येनप्रागुक्तानिनवोदयस्थानानि, एकोननवति
वर्जानिपचसत्तास्थानानि, एकोननवनिसत्कर्मणस्तिर्यगगतिप्रायोग्य-
बधारभान्भवान्नानिपचसत्तास्थानानि, एकविंशतिचतुर्विंशतिपच-
विंशति पडविंशत्युदयेपुप्रागिवभावनीयानि, सप्तविंशत्यष्टाविंशति ए-
कोननिंशद्रूपेषुपचसूदयस्थानएषुअष्टसप्ततिवर्जानिप्रत्येकशेषाणिचत्वा-
रि २ भावनीयानि अष्टसप्ततिप्रतिषेधेकारणप्रागुक्तमनुसरणीय सर्व-
सख्ययामिथ्यादृष्टे निंशतबध्नत चत्वारिंशत्सत्तास्थानानि मनुज-
गतिदेवगतिप्रायोग्यानिंशन्मिथ्यादृष्टे नबध्यमायाति मनुजगतिप्रा-
योग्याहितीर्थकरनामसहितादेवगतिप्रायोग्यात्वाहारकतीर्थकरनामस-
हितातन साकथमिथ्यादृष्टे बधोदयसत्तास्थानसवेध, सप्रतिसास्वा-
दनस्यबधोदयसत्तास्थानान्युच्यते, निगसत्तद्वुगति नीणिबघस्थानानि
तद्यथाअष्टाविंशति एकोननिंशत्रिंशत्तत्राष्टाविंशतिर्द्वेधा देवग-
निप्रायोग्यानरकगतिप्रायोग्याचनत्र नरकगतिप्रायोग्या सास्वा-
दनस्यनबधमायाति, देवगतिप्रायोग्यायाश्चनबकास्तिर्यगपचेन्द्रियमनु-
ष्याश्चतस्याचाष्टाविंशतौबध्यमानायाअष्टौभगा तयासास्वादनाएकें-

न्द्रियविकलेन्द्रियनिर्यग्पचेन्द्रियमनुष्या देवानैरयिकाश्चतिर्यग्पचे-
न्द्रियप्रायोग्यामनुष्यप्रायोग्यावाएकोनत्रिंशनवन्नातिनशेषा अत्रभगा
चतु षष्टिशतानि सास्वादनायादितिर्यग्पचेन्द्रियप्रायोग्यामथवा मनु-
ष्यगतिप्रायोग्या एकोनत्रिंशतबन्नाति तथापि न हुडसस्थानसेवार्त्त
सहननच बन्नाति मिथ्यात्वोदयाभावात् ततश्चतिर्यग्पचेन्द्रियप्रायो-
ग्यामेकोनत्रिंशतबन्नाति पचमि सस्थाने पचमि सहनने
प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिभ्यास्थिरास्थिरशुभाशुभसुभगदुर्भगसुस्व-
रदु स्वरादेयानादेययशोअयशोभ्याचभगाद्वात्रिंशत्शतानिसर्वबधस्था-
नसख्ययाअष्टाधिकानिषण्णवतिशतानि ९६०८ अत्रभाष्य गाथा॥

अट्ठसयाचउसट्ठी, बत्तीससयायसासणेभेया ।
अट्ठावीसाइसु, सवाणट्ठहियछन्नुइ ॥ १ ॥

सुगमा, तथासास्वादनस्योदयस्थानानि सप्त तद्यथा, एकविंशति
चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एक-
त्रिंशत् तत्रएकविंशत्युदये एकेन्द्रियविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रिय
मनुष्यदेवानधिकृत्यवेदित या नरकेषुसास्वादनोनोत्पद्यते इतिक्त-
त्वातद्विपयोएकोभग सइहनसभवति किंतुशेषाएवतेचविकलेन्द्रि-
याणाद्वौद्वौइतिपद्रतियग्पचेन्द्रियाणामष्टो मनुष्यणामष्टौ देवानाम-
प्यष्टौ सर्वसख्ययाएकविंशत्युदयेद्वात्रिंशद्भगा चतुर्विंशत्युदयेएके-
न्द्रियेषुउत्पन्नमानस्यअत्रापिबादरपर्याप्तकेनसहयश कीर्त्ययश कीर्त्ति-
भ्याद्वौद्वौभगौतावेवसभवत नशेषा, सूक्ष्मेषुअपर्याप्तेषुसास्वादनस्यो-
त्पादाभावात् अतएवविकलेन्द्रियाणा तिर्यग्पचेन्द्रियाणा मनुष्याणा
च प्रत्येकमपर्याप्तकेनसह प एकैकोभग सइहनसभवति किंतुशेष-
परावर्तेचविकलेन्द्रियाणा द्वौद्वौइतिपद्रतिर्यग्पचेन्द्रियाणामष्टौ मनुष्या-
णामप्यष्टौ देवानामप्यष्टौ सर्वसख्ययाएकविंश युदयेद्वात्रिंशद्भगा
चतुर्विंशत्युदये एकेन्द्रियेषुमध्येउत्पद्यमानस्यअत्रापिबादरपर्याप्तके-

नसहयश कीर्त्ययश कीर्त्तिम्यायाद्वौभगौनानेनसभवत नशेपा सूक्ष्मेषुसाधारणेषुतेजोवायुषुचमध्येसास्वादनस्योत्पादाभावात्, पच- विंशत्युदयो देवेषुमध्येउत्पन्नमानस्यमाप्यतेनशेषम्यनत्रचाष्टौभगा तेचस्थिरास्थिरशुभाशुभयश कीर्त्तिअयश कीर्त्तिपदैरवसेया पट् विंशत्युदयोविकलेन्द्रियतिर्यग्पचेन्द्रियमनुष्येषुमध्येउत्पन्नमानस्यअना- प्यपर्याप्तकेनसहयएकेऽभंग नसभवति, अपर्याप्तकमध्येसास्वादन- स्योत्पादाभावात् शेपास्तुसभवति तेचविकलेन्द्रियाणाप्रत्येकद्वौद्वा- विंशतिपर्तितिर्यग्पचेन्द्रियाणाद्वेशतेअष्टाशीत्यधिकेमनुष्याणामपिद्वि- शते अष्टाशीत्यधिकेसर्वसर यथापट्विंशत्युदयेपचशतानिद्व्यशी- त्यधिकानि ५८२ सप्तविंशत्यष्टाविंश युदयौनसभवत नौहिउप- त्पननरातमुहूर्तमतिभनति सास्वादनभावश्चोत्पत्त्यनतरमुत्कर्षत कि- चिदूनपटावलिकामात्र तत एतौसास्वादनस्यनमाप्यत एकोनविंशदु- दयेदेवनैरयिकाणास्वस्थानपर्याप्तानाप्रथमसम्यक्त्वात् प्रच्यवमानाना- माप्यते तत्रदेवस्यैकोनविंशदुदयेभगाअष्टौनैरयिकस्यैकइति सर्वस- ख्यया नव ९ त्रिंशदुदयस्तिर्यग्मनुष्याणापर्याप्तानाप्रथमसम्यक्त्वात् प्रच्यवमानानादेवानामुत्तरवैक्रियेवर्त्तमानानासास्वादनाना तत्रतिरश्चा मनुष्याणाचत्रिंशदुदयेप्रत्येकद्विपचाशदधिकान्येकादशशतानि ११५२ देवस्याष्टौसर्वसख्ययात्रयोविंशतिशतानिद्वादशाधिकानि २३१२ एकत्रिंशदुदयस्तिर्यग्पचेन्द्रियाणापर्याप्तानाप्रथमसम्यक्त्वात् प्रच्यव- मानानाअत्रभगाएकादशशतानिद्विपचाशदधिकानि देवस्याष्टौसर्वस- ख्ययात्रयोविंशतिशतानिद्वादशशानि २३१२ एकत्रिंशदुदयेप्रत्येक- द्विपचाशदधिकानिएकादशशतानि ॥ गाथा ॥

> वत्तीसदुन्निअट्ठतिमायोइदसागायपचनउदया
> बारहियातेवीस, मानायाअरससपाय ॥ १ ॥

सुगमा, सर्वभगसख्ययासप्तनवत्यधिकानिचत्वारिंशत्शतानि सास्वादनस्यद्वेसत्तास्थाने तद्यथाद्विनवति अष्टाशीतिश्चनत्द्विनवति आहारकचतुष्टयवच्चाउपशमश्रेणित प्रतिपतन्सास्वादनभावमनुगच्छतितस्यलभ्यते नशेषस्य, अष्टाशीति चतुर्गतिकानामपिसास्वादनाना, सप्ततिसवेधउच्यते तत्राष्टाविंशतित्रयत सास्वादनस्यद्वेउदयस्थाने नवत्यानिंशत्एकत्रिंशत् अष्टाविंशतिर्हिसास्वादनस्यबधयोग्याभवति देवगतिविपयानचकरणापर्याप्त सास्वादन देवगतियोग्यवध्नातितत शेषाउदयानसभवति, अत्रमनुष्यानधिकृत्यत्रिंशदुदयेद्वेअपिसत्तास्थानेतिर्यंग्पचेंद्रियान्सास्वादनानधिकृत्याष्टाशीतिरेवयतोद्विनवतिरुपशमश्रेणित प्रतिपततोलभ्यते, नचतिरश्चामुपशमश्रेणिसभव, एकत्रिंशदुदयेप्यष्टाशीतिरेवयतोद्विनवतिरुपशमश्रेणित प्रतिपततोलभ्यते नचतिरश्चामुपशमश्रेणिसभव एकत्रिंशदुदयेप्यष्टाशीतिरेवयतएकत्रिंशदुदयस्तिर्यंग्पचेंद्रियाणानचतिरश्चाद्विनवति सभवति प्रागुक्तयुक्ते एकोनत्रिंशततिर्यंग्पचेंद्रियाणामनुष्यमायोग्यावध्नत सास्वादनेसप्ताप्युदयस्थानानि, तत्रएकेंद्रियविकलेंद्रियतिर्यंग्पचेंद्रियमनुष्यदेवनैरयिकाणासास्वादनानास्वीयस्वीयोदयस्थानेषु वर्त्तमानानामेवसत्तास्थानमष्टाशीति नत्रमनुष्यस्य त्रिंशदुदयेवर्त्तमानस्योपशमश्रेणित प्रतिपतत सास्वादनस्यद्विनवति एवत्रिंशद्धवकस्यापिवक्तव्य सर्वाण्यप्युदयस्थानान्यधिकृत्यसामान्येनसर्वसख्ययासास्वादनस्याष्टौसत्तास्थानानि, सप्ततिसम्यग्मिथ्यादृष्टे बधोदयसत्तास्थानान्यभिधीयते, द्विगतिमद्विगति मिश्रेगुणस्थानकेद्वेवधस्थाने तद्यथा अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् तत्रतिर्यग्मनुष्याणासम्यग्मिथ्यादृष्टीनादेवगतिप्रायोग्यमेवबधमायाति तत्र शेषाअष्टाविंशति तत्रभगाअष्टौएकोनत्रिंशतिमनुष्यगतिप्रायोग्याबध्नतादेवनैरयिकाणा अत्राप्यष्टौभगा तेचउभयत्रापि । स्थिरा-

नि सप्त तद्यथा ॥ एकविंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविं-
शति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् मनुष्याणाएकविंशतभवति
एकैकस्मि नुदयस्थानेद्वेसत्तास्थानेनवयानिनवति एकोननवतिश्च
मनुष्यगतिप्रायोग्याचैकोनत्रिंशतवन्ति देवनैरयिकाणाउदयस्थानानि
पचतद्यथा एकविंशति पचविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्
देवानापचना येनपष्टतुविंशत ? साचउद्योतनेदकानामनगनयाएकैक-
स्मिन्नुदयस्थानेद्वेद्वेसत्तास्थानेतद्यथाद्विनवतिरष्टाशीतिश्चमनुष्यगति-
प्रायोग्यात्रिंशतविरतमगम्यगृद्दष्टदेवानैरयिकाश्चनवति तनदेवानामुद-
यस्थानानिषड् तान्येवतेषुउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थानेत्रिनवति-
रेकोननवतिश्चनैरयिकाणाउदयस्थानानिपचतेषुप्रत्येक सत्तास्थानमे-
कोननवतिरेवतीर्थंकराहारकसत्कर्मणोनरकेपूत्पादाभावात् तदेवसा-
मान्येनएकविंशत्यादिषुत्रिंशतपर्यंतेषुउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थाने-
त्रिनवतिरेकोननवतिश्चनैरयिकाणामुदयस्थानानिपच तेषुप्रत्येकस-
त्तास्थानमेकोननवतिरेवतीर्थंकराहारकसत्कर्मणोनरकेपूत्पादाभावात्
तदेवसामान्येनएकविंशत्यादिषुत्रिंशतपर्यंतेषुउदयस्थानेषुसत्तास्थाना-
निप्रत्येकचत्वारि तद्यथात्रिनवति द्विनवति एकोननवतिरष्टाशी-
तिश्चएकविंशदुदयेद्वेद्वेद्विनवतिरष्टाशीतिश्चसर्वसर ययात्रिंशत्वृति स-
प्तनिदेशविरति तस्यनवादिस्थानान्युच्यते दुगअकचउक्कइति देश-
विरतस्यद्वेबधस्थाने तद्यथा अष्टाविंशतिरेकोनत्रिंशत् तत्राष्टावि-
शतिर्मनुष्यस्यतिर्यरूपचेंद्रियस्यवादेशविरतस्यदेवगतिप्रायोग्याअष्टौ-
भगा तेचतीर्थंकरसहिताएकोनत्रिंशत् साचमनुष्यस्यैव तिरश्चस्ती-
र्थकर्मसत्कर्मत्त्वाभावात् अत्राप्यष्टौभगा षड्दयस्थानानि तद्यथाप-
चविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् तत्राद्या-
निचत्वारि वैक्रियतिर्यग्मनुष्याणाअत्रएकैकोभग तिरश्चामाद्ययोरे-
कैकोअतिमयोस्तुद्वौद्वौसर्वपदानामप्रशस्तत्वात्त्रिंशत्स्वभावस्थानाना-

तिर्यङ्मनुष्याणाअन्नभगानाचतुश्चत्वारिंशत्शत १४४ तथ्रषड्भि स-हनने सुस्वरदु स्वराभ्याप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिभ्याचजायते दुर्भगानादेयायश कीर्त्तीनामुदयोगुणप्रत्ययादेवनभवतिइति तदाश्रिनाविकल्पानमाप्यते, वैक्रियतिर्यग्मनुष्याणाम्प्रत्येकमेकैकोभग एकत्रिंशत्तिरश्चाअत्रापितएवभगा, चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथा त्रिनवति, द्विनवति, एकोननवतिरष्टाशीतिश्च तत्रयोऽप्रमत्तोऽ पूर्वकरणेोवातीयकराहारकमद्ध्यापरिणामहासेनदेशविरतोजात तस्यनवति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्एतेषुचप्रत्येकद्वेद्वेसत्तास्थाने तद्यथा द्विनवतिरष्टाशीतिश्चएवातिश्चोऽपि, नवरनस्यएकत्रिंशदुदयोपिवक्तव्य, तत्रापिचएतेएवद्वेसत्तास्थानेएकोनत्रिंशद्ध वोमनुष्यस्यैवदेशविरतस्योदयस्थानानिअनतरोक्तान्येवपच, तेषुप्रत्येकद्वेद्वेसत्तास्थाने, तद्यथात्रिनवतिरेकोननवतिश्च तदेवदेशविरतस्यपञ्चविंशत्यादिषुत्रिंशत्पर्यतेषु चत्वारिसत्तास्थानानि तथाप्रमत्तेचप्रत्ये नैद्वेतद्यथाअष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्एनेचदेशविरतस्येवभावनीये,पचउदयस्थानानितद्यथापचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनविंशत्त्रिंशदेतानिसर्वाण्यप्याहारकसयतस्यवैक्रियसयतस्यवावेदितव्यानि, त्रिशत्स्वभावस्थसयतस्यापितत्रवैक्रियसयतानामाहारकसयतानाच पृथक्पचविंशति सप्तविंशत्युदययो प्रत्येकमेकोभग अष्टाविंशतावेकोनत्रिंशतिचैकैक सर्वसख्ययाचतुर्दश १४ त्रिंशदुदय स्वभावस्थस्यापिप्राप्यते, तनश्चतुश्चत्वारिंशदधिकशन १४४ तच्चदेशविरतस्यैवभावनीय सर्वसख्ययाअष्टपचाशदधिकशत, चत्वारिसत्तास्थानानि, तद्यथात्रिनवतिरेकोननवति द्विनवतिरष्टाशीतिश्च,तत्राहारकसयतस्यद्विनवतिरेव, आहारकसत्कर्माद्याहारकशरीरमुत्पादयतीतिनतस्तस्यद्विनवतिरेववैक्रियसयतस्यपुनर्द्वेअपितीर्थकरनामसत्कर्माचाष्टाविंशतिनिमग्नातिइतित्रिनवतिरेकोननवतिर्नप्राप्यते, एको-

नर्विंशद्बंधकस्य,पचस्वपिउदयस्थानेषुप्रत्येकद्वेसत्तास्थानेतद्यथात्रिन-वतिरेकोननवतिश्च तत्राहारकसयतस्यत्रिनवतिरेवतस्यैकोनत्रिंशद्बंध-कस्यनियमस्तीर्थकराहारकसद्भावात्, वैक्रियसयतस्यपुनर्द्वेअपितदेव प्रमत्तसयतस्यसर्वेष्वपिउदयस्थानेषुप्रत्येकचत्वारि २ सत्तास्थानानि-प्राप्यन्ते, इतिसर्वसख्ययाविंशति इदानीमप्रमत्तस्यबधादीन्युच्यते चउदुगचवत्ते अप्रमत्तसयतस्यचत्वारि बधस्थानानितद्यथाअष्टाविं-शति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्एकत्रिंशत्तत्राद्येद्वेप्रमत्तस्यैवभावनीये, सै-वाष्टाविंशतिराहारकद्विकसहितात्रिंशत्, आहारकद्विकतीर्थकरसहि-तात्वेकत्रिंशत् एतेषुचतुर्ष्वपिस्थानेषुभग एकैकएववेदितव्य, अ-स्थिराशुभायश कीर्तीनामप्रमत्तेबधाभावात् द्वेउदयस्थाने तद्यथा-एकोनत्रिंशत्त्रिंशत्, तत्रैकोनत्रिंशत्योनामपूर्वंप्रमत्तसयतस्तत्रआ-हारकवैक्रियचनिवर्त्यपश्चादप्रमत्तभावगच्छतितस्यप्राप्यते, अत्रद्वौभ-गौएको वैक्रियस्यापरआहारकस्यएव त्रिंशदुदयेपिद्वौभगौस्वभावस्य-स्याप्यप्रमत्तसयतस्यत्रिंशदुदयोभवति तत्र भगाश्चतुश्चत्वारिंशदधिक-शत १४४ सत्तास्थानानिचत्वारितद्यथात्रिनवति द्विनवति एकोनन-वति अष्टाशीतिश्चसप्रतिसबेधउच्यते, अष्टाविंशतिबधकस्यद्वयोरप्यु-दयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान अष्टाशीति, एकोनत्रिंशद्बधकस्यापिद्व-योरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थानएकोननवति, त्रिंशद्बधकस्यापिद्व-योरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान द्विनवति, एकत्रिंशत्बधकस्या-पिद्वयोरप्युदयस्थानयोरेकैकसत्तास्थान त्रिनवति, यस्यहितीर्थकरमा-हारकचासत्सनियमात्तद्बध्नाति तेनएकैकस्मिन्बधेएकैकमेवसत्तास्था-नसर्वसख्ययाअष्टौ, सप्रत्यपूर्वकरणस्यबधादीन्युच्यते, पणगणाचउइति अपूर्वकरणस्यपचबधस्थानानि, तद्यथाअष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत्एकत्रिंशत्एकश्चतत्राद्यानिचत्वारिअप्रमत्तसयतस्यैवद्रष्टव्यानि एकोयुयश कीर्ति साचदेवगतिप्रायोग्यावधव्यवच्छेदेसतिवेदितव्या

एकक्षुदयस्थानर्निशत् अनवज्रऋषभनाराचसहननपट्सस्थानसुस्वरदु स्वरप्रशस्तविहायोगति भगाश्चतुर्विंशति अ येत्वाचार्याश्रुवते आद्यसहननत्रयान्यतमसहननयुक्ताअप्युशमश्रेणिंप्रतिप त्रते, त म-तेनभगाद्विसप्तानि , एवमनिवृत्तिनादरसूक्ष्मसपरायोपशातमोहेश्वपिद्र-ष्टय, चत्वारिसत्तास्थानानि, ययाद्विनवति त्रिनवति एकोननव-तिरष्टाशीतिश्चसप्ततिसवेवउच्यते, अष्टाविंशत्येकोनत्रिंशत्त्रिंशदेक-त्रिंशत्त्रयकानात्रिशदुदयेसत्तास्थानानियथाक्रमअष्टाशीतिरेकोनन-वति द्विनवतिस्त्रिनवतिश्चएकवि यत्र रकस्यत्रिंशदुदयेचत्वार्यपिसत्ता-स्थानानिकथमितिचेदुच्यतेइहअष्टाविंशेकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एक-त्रिंशद्वयका प्रत्येकदेवगतिप्रायोग्यनत्र यवच्छेदेसत्येकविवयरका-भवति,अष्टाविंशत्यादिनयकानाचस्थानानियथाक्रममष्टाशी यादी-निसत्तास्थानानि, ततएकविरनवेचत्वार्यपिसत्तास्थानानिप्राप्यते स-प्रत्यनिवृत्तिनादरस्यनवस्थानादीन्युच्यते ॥ ९७ ॥

टवार्थ —मिथ्यात्व गुणठाणे नामकर्मना छ बधयानक, नव उदयस्थानक, छ सत्ताना थानक पामीये सास्वादन गुणठाणे तीन बधयानक, सात उदययानक ए वे सत्ताना थानक पामीये मिश्र गुणठाणे वे बधथानक, तीन उदययानक वे सत्ताना थानक छे समकित गुणठाणे तीन बधयानक, आठ उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे देशविरति गुणठाणे वे बधयानक, च्यार उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे प्रमत्ते वे बधयानक, पाच उदयथानक, च्यार सत्ताना थानक छे अप्रमत्ते च्यार बधयानक, वे उदययानक, च्यार सत्ताना थानक अपूर्वकरणे पाच बधयानक, एक उदययानक च्यार सत्ता-थानक नामकर्मनी नवमे गुणठाणे ॥ ९७ ॥

एगेगमट्ठएगेगमठ, छउमत्थकेवलिजिणाण ।
एगंचउएगचउ, अठ्ठचउदुछक्कमुदयंसा ॥ ९८ ॥

टीका—एगेगमट्ठत्ति । अनिवृत्तिनादरस्यएकत्रवस्थानयश कीर्ति एकमुदयस्थानत्रिंशत्, अष्टौसत्तास्थानानि तद्यथा त्रिनवति द्विनवतिरेकोननवतिरष्टाशीतिरशीतिरेकोनाशीति पदसप्तति पचसप्ततिश्चनत्राद्यानिच त्वार्युपशमश्रेण्याक्षपकश्रेण्यांवाया-वन्नामत्रयोदशक नक्षीयते त्रयोदशसुयथाक्रमत्रिनवत्यादे क्षीणेपूपरितनानिचत्वारिसत्तास्थानानित्रयोदयस्थानभेदेनभेदाभावात्ऽन नसवेधोभवति इतिनामिवीयते, सूक्ष्मसपरायस्यएकत्रवस्थान यश कीर्तिं एकमुदयस्थानत्रिंशत्अष्टौसत्तास्थानानिनानिवानिवृत्तिबादरस्यैववेदित यानि तत्राद्यानिचत्वार्युपशमश्रेण्यामेवउपरितनानितुक्षपकश्रेण्या छउमत्थकेवलिजिणाण इत्यादि छद्मस्थजिनाउपशातमोहा क्षीणमोहाश्चकेवलिजिना सयोगिकेवलिनोऽयोगिकेवलिनश्चतेषायथाक्रममुदयसत्तास्थानानि ए गचउ इत्यादि तत्रोपशातमोहस्यएकमुदयस्थान त्रिंशत्, चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथानिनवति द्विनवति एकोननवति अष्टाशीतिश्चक्षीणकपायस्यएकमुदयस्थान त्रिंशत्अनभगाश्चतुर्विंशतिरेववज्रर्षभनाराचसहननयुक्तस्यैवक्षपकश्रेण्यासभवात् तत्रापितीर्थकरसत्कर्मण क्षीणमोहस्यसर्वस्थानादिप्रशस्तमित्येकएवभग चत्वारिसत्तास्थानानि तद्यथाअशीति एकोनाशीति षट्सप्तति पचसप्ततिश्चएकोनाशीति पचसप्तति, अतीर्थकरसत्कर्मणोवेदित ये, अशीति, षट्सप्तति, तीर्थकरसत्कर्मण सयोगिकेवलिनोऽष्टावुदयस्थानानि तद्यथाविंशति, एकविंशति, षड्विंशति, सप्तविंशति, अष्टाविंशति,

एकोनत्रिंशत्, त्रिंशत्, एकत्रिंशत्, एतानिसामान्यतोनाम्नउदयस्थानचिंतायासप्रपचनिरृत्तानिनमूयोविवियते चत्वारिसचास्थानानि तद्यथाअशीति, पदसप्तति, एकोनाशीति, पचसप्तति, सप्रति सत्रैयउच्यते, सचपूर्वगुणस्थानकापेक्षयास्वत ऊह्य अयोगिकेवलिनोद्वेउदयस्थाने तद्यथा नवअष्टौचनवाष्टोदयोअतीर्थंकर अयोगिकेलिनोनवोदय तीर्थंकर अयोगिकेवलिन, षट्सत्तास्थानानि तद्यथाअशीति एकोनाशीति षट्सप्तति पचसप्तति नवअष्टौ तत्राष्टोदयेत्रीणिसत्तास्थानानि तद्यथा एकोनाशीति पचसप्तति अष्टौचनवायेद्वेयावद्द्विचरमसमय तावत्प्राप्यते, चरमसमयेअष्टौनवोदयेत्रीणिसत्तास्थानानि, तद्यथाअशीति षट्सप्तति नवचतत्राद्येद्वेयावद्द्विचरमसमय नव चरमसमये इत्यादि गुणस्थानकेपुनामभगका उक्ताः कर्मग्रथटीकानुक्रमेणभगोत्पत्तिस्तु स्वोपज्ञसवेधप्रकरणगाथातोज्ञेया तदेवगुणस्थानकेपुबधोदयसत्तास्थाना युक्तानि तत्सुगमावनोयायंयनकत्यासतोज्ञेयम् ॥ तच्चेदम् ॥९८॥

टबार्थ —एक बधथानक, एक उदयथानक, आठ सत्तायानक. दशमे गुणठाणे एक बधयानक, एक उदयथानक आठ सत्तायानक छे छद्मस्थजिन इग्यारमो, बारमो केवलिजिन, तेरमो गुणठाणो, चउदमो गुणठाणो इहा बध नथी इग्यारमे गुणठाणे एक उदययानक, च्यार सत्तायानक बारमे गुणठाणे एक उदयथानक, च्यार सत्तायानक तेरमे गुणठाणे आठ उदयथानक, च्यार सत्तायानक. चउदमे गुणठाणे बे उदययानक छे छ सत्तायानक नामकर्मना जाणवा ॥ ९८ ॥

गुणठाणा	बंधस्थान	उदयस्थान	सत्तास्थान
मिथ्यात्व १	२३।२५।२६ २८।२९।३०	२१।२४।२५।२६ २७।२८।२९।३०	९२।८९।८८।८६ ८०।६८
सास्वादन २	२८।२९।३०	२१।२४।२५।२६ २७।२९।३०।३१	८८ ९२
मिश्र ३	२८।२९	२९।३०।३१	९२।८८
अविरत ४	२८।२९।३०	२१।२५।२६।२७ २८।२९।३०।३१	९३।९२।८९।८८
देशविरत ५	२८।२९	२५।२७।२८।२९ ३०।३१	९२।९२।८९।८८
प्रमत्त ६	२८।२९	२५।२७।२८।२९ ३१	९३।९२।८९।८८
अप्रमत्त ७	२८।२९।३० ३१	२९।३०	९३।९२।८९।८८
अपूर्वकरण ८	२८।२९।३० ३१।१	३०	९३।९२।८९।८८
अनिवृत्ति ९	१	३०	९३।९२।८९।८८ ८०।७९।७६ ७५
सूक्ष्मम १०	१	३०	९३।९२।८३।८८ ८०।७९।७६।७५
उपशात ११	०	३०	९३।९२।८९।८८
क्षीणमोह १२	०	३०	८०।७९।७६।७५
सयोगि १३	०	२०।२१।२६।२७ २८।२९।३०।३१	८०।७९।७६।७५
अयोगिकेवलि १४	०	८ ९	८०।७९।८६।७५ ९।८

आसवतिसुइग, चत्ताइरिआवहिणचत्तसम्मत्ते ।
मिच्छविणुदेसेगुण चत्त, अविरइविणुसुजइपणवीस९९

टीका—अथाश्रवादितत्त्वभेदान्गुणस्थानेषुविभजताह ॥ तत्राश्रवभेदाद्विचत्वारिंशत् तत्रगाथा । इंदिअकसायअव्वय जोगापचचउपचतिनिकमा किरियाओपणवीस इमाउनाउअणुक्कमसो- तत्रेंद्रियाणिपच स्पर्शनरसनघ्राणचक्षु श्रवणानितानिचद्रियाण्युपयोगरूपाणिमतिज्ञानक्षयोपशमरूपाणि तानिचपुद्गलस्कंधरसस्पर्शादिस्थूलपर्यायग्राहकाणितानिचइष्टानिष्टविषयेषुप्राप्तेषुरागद्वेषपरिणतानि मनोज्ञेष्वासक्तानि अमनोज्ञेषुजुगुप्सादिपरिणतानि अभिनवकर्मग्राहकाणिभवतितेनकर्मग्रहणत्वात्स्पर्शनादीनि इंद्रियाण्यपिआश्रवाभवंति, तानिचरागद्वेषविमुक्तानियथार्थउपयोगेनवर्णादिगृहतेभावरूपाणीद्रियाणितेमतिज्ञानभेदा आश्रवाइति कषाया क्रोधादयस्तेप्यभिनवकर्महेतुत्त्वादाश्रवा अव्रतानिपंचप्राणातिपातमृषा अदत्तादानमैथुनपरिग्रहलक्षणा अभिनवकर्मग्रहणहेतुत्वादाश्रवा तेचाश्रवाद्विभेदाद्द्रव्याश्रवभावाश्रवभेदात् तत्रद्रव्यत प्राणातिपातलक्षण जीवानाद्रव्यत प्राणाइंद्रियोच्छासनलायुरूपा तेषाअतिपात द्रव्यप्राणातिपात भावत प्राणा आत्मन ज्ञानदर्शनचारित्ररूपा तेषाअतिपातोवात अभिनवकर्मग्रहणेनज्ञानादिगुणानाआवरणलक्षण भावप्राणातिपात सआश्रवइतिआत्मन विशेषस्वभावातर्गतकर्तृत्वपरिणामरूपस्वभावाज्ञानादयस्तेषाकर्तृत्वस्वभावस्पंदकरणेनपुद्गलग्रहणक्रियाकर्तृत्वेन विपर्यस्तपरिणत्यापरभावकर्तृतारूप परिणाम भावप्राणातिपातपरिणाम मृषाअलीकतस्यवाद तद्द्रव्यत सासारिकाणाभावानावितथा भाषणरूप भावत मृषाजीवादीनापदार्थानानित्यानित्यैकानेका-

स्तिनास्तिनाभेदाभेदवक्तव्यावक्तव्यपरिणतानां गुणपर्यायाण्यपरिणि-तानांअयथार्थपरिज्ञान जिनोक्ततत्त्वविरुद्धभाषण भावमृषा-वाद, आत्मन स्वरूपग्रहणताशक्तिमत स्वरूपाप्राप्तौपरभाव-ग्रहणतापरिणति असिमषिवीर्यादिनाभावादत्तादान, तस्यचप्रवृत्ति-बाहुल्येनपरणलोभोदयात्स्वायत्तीकृतानांधन्यधान्यादीनांग्रहणद्रव्या-दत्तादान, स्वरूपानतज्ञानानन्दादिस्तद्धर्मभोक्तु जीवस्यस्वरूपभोग-प्राप्तौपरभावानारागादीनांवर्णादीनांसयोगीकृतानां भोग आस्वादन-भावमैथुन तरयैवअत्यतपरिणतौइन्द्रियायतचेतनायायाविषयिकाप-रिणतिस्तयाइन्द्रियविषयग्रहणद्रव्यमैथुन, स्वभावानांचिदानन्दादीनां गुणानांस्वामीपति ईश्वरआत्मातेषाचाचरणेनवर्णादिगुणपरिणता-नांपुद्गलस्कधानांचिदानन्दादीनांगुणानांस्वामित्वेनाधिपत्यरूपापरि-णति भावपरिग्रह, तत्प्रावल्येनधनधान्यादीनांस्वामित्वरक्षणता-परिणति द्रव्यपरिग्रह, इत्यादि स्वरूपधर्मसंग्रहणीतोज्ञेय योगा. परायत्तबलवीर्यपरिणतिरूपा कर्मग्रहणहेतव भावयोगा परिणामाल-बनादिरूपा द्रव्ययोगास्तदवष्टभकपुद्गलपरिणामामनोवाक्कायरूपाएव सप्तदशक्रिया पचविंशतयस्तनचतुर्विंशति सांपरायिकीक्रिया सांपरायिकीनामसपरायेणकषायेणसहपरिणतानासांपरायिकीक्रिया ए-काइर्यापथिकीनत्रसपरायेणकषायेणसहपरिणतानांजीवानांयथायो-गानांप्रवृत्तिः सासांपरायिकीक्रिया चतुर्विंशतिविधाकायेननिवृत्ता-कायिकाकायव्यापाररूपाक्रियाकायिकीक्रिया १ अधिकरणभावनो-गुणवातनद्रव्यनोमाणवातन कारणअधिकरण तत्प्रवृत्तिरूपाक्रिया-अधिकरणिकीक्रिया २ प्रकृष्टोद्वेष परजीवेदु खदानरूपाम नोयोग-परिणति प्राद्वेषिकीक्रिया ३ परेपातापनरूपापरिणति पारिताप-निकी ४ प्राणानांद्रव्यभावरूपाणांअतिपात प्राणनिपात तद्रूपा-क्रियाप्राणातिपातिकी ५ परमाणत्वेनजीवानांइनस्ततः प्रचालन-

नाअनादृतानाजतुवातादिनिवृत्ताक्रियाप्रातीत्यकीक्रिया, अथवापर-कृतारभादिगृहाणाप्रशसनतत्प्रातीत्यकीक्रिया, सामन्तोपनिपातिकी-क्रिया समतात्अनुप्राप्तौ सामतोपनीपात स्त्रीपुरुषनपुसकपशुस-पातान् उज्झनीयवस्तुत्याग साचगृहस्थानाभवति, तत्त्वार्थवृत्तौतु-प्रमत्तसयताना भक्तपानादिअनावृत्तेअवश्यत्याज्येसमनाद्दत्तपानो-भवति, सपातिमसत्त्वानामिति नेसत्थियत्तिदेशीभाषा यन्त्रस्त-कृतजतुवातादिनाक्रिया नसत्थिकीक्रिया अथवानैसर्गिकक्रियाचि-रकालप्रवृत्तपरदर्शितपापार्थभावानायदनुज्ञानसानिसर्गक्रियाइति त-त्वार्थवृत्तौ आणवणीत्ति क्षेत्रानयनात्स्वेप्सितवस्तुआनयनरूपाक्रिया विदारणकी विदारणजीवाजीवानाद्वैधीकरण तत्प्रायोग्यकीक्रिया अथवाविदारणपराचरित प्रकाशनीयसावद्यप्रकाशीकरण विदारण-तत्प्रत्ययाक्रिया अथवा वितारणक्रियाइत्यपितत्त्वार्थभाष्यपाठात्-भाषाद्वयामिज्ञ पुरुषोयथैकवितारयतिअर्हत्प्रणीताज्ञोल्लघनेनस्व-मनीषिकयाजीवादिपदार्थप्ररूपणस्वयनयनक्रिया अन्यैर्वानयनरच्छ-दतोनयनक्रियास्याद्वादानपेक्षितकायकारणोपयोगमतरेणस्वच्छदोप-देशरूपाइतिस्थानागवृत्तौ अनाभोग अज्ञान तत्प्रत्ययाक्रिया अथवा अनाभोग अप्रत्यवेक्षिताप्रमार्जितेदेशेशरीरोपकरणनिक्षेप अनवकाक्षिकीक्रिया, आज्ञाप्रयोगिकीक्रिया आज्ञाबलात्कारेणआ-देश तत्प्रयुजनारूपानृपामात्यादीनाभवति, समुदाणत्ति समुदाय रूपाचौरादिमारणेझटितितदास्वकायार्थव्रजामइत्यादिसकल्पयोरत्या-सामुदायिकीक्रिया, पेज्जत्तिप्रेमराग अभिष्वगरूप प्रीतिपरिणाम स्तत्प्रत्ययाप्रेमक्रिया, दोसत्ति द्वेष द्विष्टताअनभिष्वगरूपोऽप्रीति-परिणाम तत्प्रत्ययिकीक्रियाइतिएवमेता क्रिया सापरायेणकषा-येणसहवर्त्तमानस्यजीवस्य यापाररूपा क्रिया ताअपिप्रशस्ताप्र-शस्तभेदात् तत्रमिथ्यात्वाप्रत्याख्यानानाभोगरूपा क्रिया अप्रश-

स्नाअवशेषास्तुप्रशस्ना पुण्यप्रकारिण्योऽप्रशस्ता पापप्रकारिण्य उभयत्रापिप्रकारणात् आस्रवरूपाण्येतिनाअपितीव्रमदज्ञाताज्ञातभाववीर्याधिकरणकारणविशेषेस्युस्तद्विशेष उक्त, सांपरायिकीभेदाश्चतुर्विंशति, ईर्यापथिकीच इरणकंपनचलवीर्यत्वेनविषयकषायरहितएकक योग यापारस्त प्रत्ययिकीक्रिया प्रदेशप्रकृतिबंधकारणरूपाईर्यापथिकीक्रिया साअकषायमुनीनामेव, उपशांतमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिचरमसमययावत् भवति, एवमुक्ताआस्रवभेदा तानुचगुणस्थानेषुविभजनाह ॥ आसवत्तिसुदुत्यादि ९९ ॥

आस्रवाअभिनव कर्मग्रहणहेतव तिसु इतित्रिषुमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेषुगुणेषु इगचत्ता एकचत्वारिंशद्भेदा प्राप्यते तत्रमिश्रदृष्टिमिथ्यात्वभावेपिसम्यग्दर्शनाभावान्मिथ्यात्विकीक्रियासद्भाव एवउक्तंचभगवत्या नेरयियाणभंतेसव्वेसमकिरिया गो० नोतिणट्ठे समट्ठेसेकेणट्ठेणगो० नेरईआतिविहापन्नत्तासम्मदिट्ठीमिच्छादिट्ठी सम्मामिच्छादिट्ठी तत्थण जेतेसम्मदिट्ठीतेसिणचत्तारिकिरियाओपन्नत्ताओ तजारंभियापरिग्गहियामायावत्तिआपच्चक्खाणीया तत्थण जे ते मिच्छादिट्ठीतेसिणपचकिरियाओपन्नत्ताओ तआरंभिया परिग्गहिया जावमिच्छादसणवत्तीआ एवंसम्मामिच्छदिट्ठीणपिएवं वैमानिकपर्यन्तमालापकइतितेनमिश्रगुणस्थानकेपिमिथ्यात्विकीक्रिया सद्भाव एव एकचत्वारिंशद्भेदा इरियावहिहीण ईर्यापथिकीक्रिया हीनाचि रहिताउप्यते चत्तइतिचत्वारिंशत्आस्रवभेदा सम्मत्तेइति सम्यग्दर्शनलक्षणेगुणस्थानके पूर्वोक्ताईर्यापथिकीक्रिया मिथ्यात्विकीक्रियाविनाभवन्ति, देसि देशविरतौ गुणचत्त एकोनचत्वारिंशद्भेदा अप्रत्याख्यानिकीक्रियारहिताआस्रवाणामिति अत्रसा विरतिरेवनास्ति शेषाएकादशविरतय स येनतर्हिकथसर्वेअविरतेरभाव अत्रस्थावरादिअविरतिसद्भावेपिसापेक्षत्वेननमलोहपदवृत्ति-

सनिभइन्द्रियविषयरोचत्त्वेननाप्रत्याख्यानक्रीक्रियाइति अथवा परि-
सिताश्रवत्त्वेननाप्रत्याख्यानक्रीयति सुजइति सुइत्ति शोभन यति
सुयति प्रमत्तमुनि गुणस्थाने पचविंशनिरास्रवभेदाभवन्ति ॥९९॥

टवार्थ —आश्रवतत्वना ४२ भेद छे इन्द्रिय ५ कषाय
४ अव्रत ५ योग ३ किरिया २५ एव ४२ छे इनमध्ये
मिथ्यात्व सास्वादन मिश्र ए तीन गुणठाणे इक्तालीस आश्रव
छे, इरियावही क्रिया नथी, ते अकषाय वेह्वे तेणे सकलायी
थानके ए नथी समकित गुणठाणे च्यालीस आश्रव छे एक
ईरियावही किरिया नीकली हती वली मिथ्यात्वकी किरिया
नीकली एतले च्यालीस छे देशविरति गुणठाणे च्यालीस आ-
श्रव छे अपच्चरकाणकी किरिया नथी सुयति–छट्ठे गुणठाणे
पचवीस आश्रव छे ॥ ९९ ॥

पाणाइवायपरिग्गह, मिच्छअपचरकआणपाओगी।
पाडुचोअसामतो, वणीअनेसत्थीसाहत्थी ॥१००॥

टीका—प्राणातिपातिकीक्रिया १ परिग्रहिकीक्रिया २ मि-
थ्यात्विकीक्रिया ३ अप्रत्याख्यानिकीक्रिया आज्ञाप्रयोगिकीक्रिया
प्राडुचीक्रिया प्रातित्यक्रिया सामतोपनिपातिकीक्रिया नेसत्थीक्रिया
साहत्थीक्रिया ॥१००॥

टवार्थ —प्राणातिपातकी क्रिया १ परिग्रहकी क्रिया २
मिथ्यात्वकी क्रिया ३ अपच्चरकाणकी क्रिया ४ अन्नापायोगकी
क्रिया ५ पाडुचिय क्रिया ६ सामतोवणी क्रिया ७ नेसत्थी
क्रिया ८ साहत्थीकी क्रिया ॥१००॥

परायेनवआस्रवा प्राप्यते, इत्यनेनलोभकषाययोगत्रिककायिकीदृष्टिकीस्पृष्टिकीअनाभोगिकीरागप्रत्ययिकीइतिनवास्रवभेदादशमेप्राप्यन्ते दोसविहीणत्ति द्वेषाभावकथनेनअधिकरणप्राद्वेषिकीपारितापनिकीप्रमुखा सर्वाअपिक्रियानिरस्ताभवति, शेषेउपशान्तमोहक्षीणमोहसयोगिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिकेईर्यापथिकीक्रिया १ योगत्रिकचएते- चत्वारआस्रवभेदा प्राप्यते, अयोगीनिराश्रवइतिश्रीप्रज्ञापनायालोभस्यरागांशत्वात् रागिकीक्रियादशमेप्राप्यते, इतिउक्ताआस्रवभेदा ॥ १०२ ॥

टबार्थ—ते मध्येथी आरंभकी क्रिया हीण करीये तेवारे सातमे गुणठाणे ओगणीस आश्रव छे, माया प्रत्ययिकी क्रिया विना आठमे नवमे गुणठाणे अढार आश्रव छे, दशमे गुणठाणे द्वेष प्रत्ययिकी क्रिया नथी, लोभ ते मुख्यवृत्ते रागमा गण्यो छे, पन्नवणानी टीका मध्ये शेष इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे एक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आश्रव योग छे, चऊदमे गुणठाणे आश्रवनवनो भेद नथी ॥१०२॥

अजयदुगिबारभावण, दुपमत्तेपचवन्नअदुचरणा ।
चउपन्नापुव्वदुगे, तेवन्नाखीणमोहजा ॥१०३॥

टीका—अथसवरभेदान्गुणस्थानेषुकथयन्नाह तत्रसंवरभेदा सप्तपंचाशत्,तत्रअयपूर्वोक्त आश्रव पौरुषेयः सचकदाचित् केनचित् अत्यन्तमुच्छिद्यतेऽपिपुंसासमासादितनदुच्छेदसाधनात्यन्तिकक्षयमापद्यते तत्रपूर्वोपार्जितकर्मजालविच्छेदायतपसोनिर्जराचेतिवक्ष्यति, अभिनवकर्मोपचयनिवारणायसंवरमेवतावद्वक्ष्याम आस्रवनिरोध संवर, आस्रूयतेसमादीयतेयै कर्माष्टक(मिति)आस्रवा कर्मणाप्रवेशवीथय इन्द्रियकषायादय तेषानिरोध संवर आत्मन कर्मोपादानहेतुभूत-

परिणामाभाव संवर सचसर्वदेशानद्विधा बादरसूक्ष्मयोगरोधकाले-
सर्वसंवर शेपकालेचरणप्रतिपत्तेरारभ्यदेशसंवर ससंवर केनोपायेन
नकर्तव्य इत्युपायदर्शनार्थनरचार्योक्तसूत्र सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-
परीषहजयचारित्र त्रिपचदशद्वादशद्वाविंशतिभेदैर्यथाक्रमसप्त-
चाशत्भवति, तत्रसम्यग्प्रशस्तमुमुक्षोर्योगनिग्रहोगुप्ति, आत्मस-
रक्षणयोगा मनोवाक्कायलक्षणा स्तेपानिग्रहो निगृह्णीति प्रवचन-
विधिनामार्गव्यवस्थापनउन्मार्गगमननिवारणसम्यगागमोक्तानुसा-
रेणरक्तद्विष्टपरिणनिरहचरिष्णो मनोवाक्कायव्यापारनिव्यापारतागुप्ति
त्रिप्रकारा मन सत्यपरपस्तरयगोपन मनोगुप्ति, वाक्सत्यादि-
भेदातस्यगोपनवाग्गुप्ति, काय चलतारूपयोगस्यऔदारिकादे गो-
पनकायगुप्ति, योगानामप्रवृत्ति अथनससरत चेष्टावनोपिसंवर-
सिध्यर्थमिमा पचईर्याभापणादाननिक्षेपोत्सर्गा समितय तत्रई-
रणईर्यागतिपरिणाम आवश्यककार्यआगमोदिते विहारजिनसद्मआ-
हारोगोचरीविहारे स्थण्डिलग्रामानुगमनचइत्यादिकार्ये आगमो-
क्तविधिनारागद्वेषाकुलत्वादिरहितेनेति सगतासाध्यत्वेनगमनईर्यास-
मिति, आहच उपयोगोद्योतालम्बनमार्गविशुद्धिभिपतेश्वरत सूत्रो-
दितेनविधिनाभवतीर्यासमितिरनवद्या १ आत्मनेपरस्मैहितमायत्या-
मुपकारकमुखवस्त्रनाच्छादितस्यनीतिवद्धप्रयोजनमात्रसाधक मितमसं-
दिग्धसूत्रोक्तमर्थवर्णप्रतिपत्तौनानसदेहकारिनिरवद्यार्थमनुपघातकष-
ण्णाजीवकायानाएवविधनियमितचसर्वदैवभाषण भाषासमिति, आ-
हचस्यक्त्वानृतादिदोषसत्यमसत्यानृतचनिरवद्य सूत्रानुविधिवदतो
भाषासमितिर्भवतिसाधो ॥ १ ॥ अथैषणामाह आहारचतुर्भे-
दउपकरणानिरजोहरणमुखवस्त्रनपट्टीचोलपट्टादिचतुर्दशप्रकाराणिस्थ-
विरकल्पजिनकल्पयोर्योपधि

परायेनवआस्रवा माप्यते, इत्यनेनलोभवगायपयोगनिक्रायिकीदृष्टि-
कीस्पृष्टिकीअनाभोगिकीरागप्रत्ययिक इतिनवास्रवभेदादशमेप्राप्यते
दोसविहीणत्ति द्वेपाभावकथनेन अधिकरणप्राद्वेपिकीपारितापनिकीप्र-
मुखा सर्वाअपिक्रियानिरन्ताभवति, शेपेउपशातमोहक्षीणमोहसयो-
गिकेवलिलक्षणेगुणस्थानत्रिकेईर्यापथिकीक्रिया १ योगत्रिकचएते-
चत्वारआस्रवभेदा माप्यते, अयोगीनिराश्रवइतिश्रीप्रज्ञापनायालो-
भस्यरागांशत्वात् रागिकीक्रियादशमेप्राप्यते, इतिउक्ताआस्रवभेदा
॥ १०२ ॥

टवार्थ—ते मध्येथी आरंभकी क्रिया हीण करीये तेवार सातमे गुणठाणे ओगणीश आश्रव छे, माया प्रत्ययिकी क्रिया विना आठमे नवमे गुणठाणे अढार आश्रव छे, दशमे गुणठाणे द्वेप प्रत्ययिकी क्रिया नथी, लोभ ते सूत्रपरत्ते रागमा गण्यो छे, पन्नवणानी टीका मध्ये शेप इग्यारमे बारमे तेरमे गुणठाणे एक इरियावहीकी क्रिया रूप एक आश्रव योग छे, चऊदमे गुणठाणे आश्रवनवनो भेद नथी ॥१०२॥

अज्जयदुगिबारभावण, दुपमत्तेपचवन्नअदुचरणा ।
चउपन्नापुव्वदुगे, तेवन्नाखीणमोहजा ॥१०३॥

टीका—अथसवरभेदान्गुणस्थानेषुकथयन्नाह तत्रसवरभेदा सप्त-
पञ्चाशत्,तत्रअपपूर्वोक्त आश्रव पौरुपेय सचकदाचित् केनचित् अ-
त्यन्तमुच्छिद्यतेऽपिपुसारामासादितनदुच्छेदसाधनात्पतिक्षयमाप-
द्यते तत्रपूर्वोपार्जितकर्मजालविच्छेदायनपसोनिर्जराचेतिवक्ष्यति, अ-
भिनवकर्मोपचयनिवारणायसवरमेवतावद्वक्ष्याम आस्रवनिरोध सवर
आस्रूयतेसमादीयतेऽष्टकर्माष्टक(मिति)आस्रवा कर्मणांप्रवेशवीथय
इन्द्रियकपायादय तेपानिरोध. सवर आत्मन कर्मोपादानहेतुभूत-

परिणामाभाव सवर सघसर्वदेशान्द्विधा नादरस्क्ष्मपोगरोधकाले-सर्वसवर शेषकालेचरणप्रतिपत्तेराग्म्यदेशसवर ससवर केनोपाये-नकर्तव्य इत्युपायदशनार्थतत्त्वार्थोक्तसूत्र सगुप्तिसमितिधर्मानुप्रेक्षा-परीषहजयचारित्रै त्रिपचदशद्वादशद्वाविंशतिभेदैर्यथाक्रमसप्तप चाशन्भवति, नत्रगप्यगुप्रशस्तमुमुक्षोर्योगनिग्रहोगुप्ति, आत्मस-रक्षणयोगा मनोवाक्कायलक्षणा स्वेषानिग्रहो निगृहीति प्रवचन विधिनामार्गे यवस्थापनउन्मार्गगमननिवारणसम्यगागमोक्तानुसा-रणरक्तद्विष्टपरिणतिगढचरितो मनोवाक्काय यापारनि यापारनागुप्ति त्रिप्रकार मन सकल्पस्यसम्यगोपन मनोगुप्ति, वाक्सत्यादि-भेदानस्यगोपनवाग्गुप्ति, काय चल्ताकृपयोगस्यऔदारिकादे गो-पनकायगुप्ति, योगानामप्रवृत्ति अयचमसरन चेष्टवनोपिसवर सिध्यथमिमा पचर्ईयाभाषणादाननिक्षेपोत्सर्गा समितय तत्रई-रणईर्यागतिपरिणाम आवश्यकार्यआगमोदिते विहारजिनसद्मआ-हारोगोचरीविहारो बहिरचग्रामानुगमगमनचइत्यादिकार्ये आगमो-क्तविधिनागगड्पाकलनादिश्रवणनि सगनासाध्यत्वेनगमनईर्यास-मिति, आहन उपयोगोद्योतालम्बनमार्गविशुद्धिमियतेश्वरन सूनो-द्वितेनविधिनाभवतीर्यामितिरनवद्या १ आमनेपरस्मैहितमायया-मुपकारकमुखवमनावाहितरयनीतिरर्थप्रयोजनमात्रसाधक मितमस-दिग्यसूत्रोक्तमयवर्णप्रतिपत्तावानसदेहकारिनिरवद्यार्थमनुपयातकप-णाजीवकायानाण्वापिपनियमितचसर्वदैवभाषण भाषासमिति, आ-ह्वचरयसत्त्वानृतादिदोषसत्यमसत्त्वानृतचनिरवद्य सूत्रानुविधिवदतो भाषासमितिर्भवतिसाधो ॥ १ ॥ अथैषणामाह आहारचतुर्भे-दउपकरणानिरजोहरणमुखवसनपट्टीचोलपट्टादिचतुर्दशप्रकाराणिस्थ-विरकल्पजिनकल्पयोग्योपधि औपग्रहिकाणाश्रुतधर्मचरणधर्मसाध-नार्थपात्राणिपतनायाहारग्रहणार्थ एकान्तस्वाध्यायादिनिमित्तउद्गमो-

त्पादनैषणादोषरहितआगमोक्तविधिनाधूमागारादिदोषरहिताएषणा-
गवेषणासमिति , यत्रपिनिर्ग्रंथानाहारार्थिनस्तथापिवाचनादिकरणे-
प्युपयोगस्याघातकरचतुरशीतादिमालोरपहितदोषरहितअदान उ-
त्पादक असमान अगत्तनयाआहारादिकरोति तद्गवेषणास-
मिति , तयादाननिक्षेपणासमितिमाह रजोहरणादिचतुर्दशोपकर-
णानापीठफलकशय्यादीनाआदानग्रहणनिक्षेपणमुचन । तत्रजी-
वादिरहितनगन्यम्यादिभ्नपाकरणप्रमार्ज्यआदाननिक्षेप कर्तव्य
इत्यादाननिक्षेपणासमिति , पारिष्ठापनिकासमितिमाह स्थडिल
उज्झित यत्रस्तुपरिष्ठापनक्षेत्र ततस्थावरजगमजतुवर्जितचक्षुषानिरी-
क्ष्यउपयुक्त पुद्गलेषुअक्षेपतो दोषाभावन गात्रकृत्यवारणाय
वस्त्रपात्राहारशिष्यमलादीनाउत्सर्ग परिष्ठापनासमिति इतिपचस-
मितय , सवरार्थमात्मनाधार्यतेइतिधर्म सचदशविधस्तत्र प्राधान्येन-
निर्ग्रंथानातेन मनिधर्मदेशन श्रावकाणामपिक्षमादिरहितापरेति
क्षमणक्षमाक्रोधत्याग इत्यनेनप्रशसानिंदाबदनछेदनादिप्राप्तौसम-
परिणामरूपाक्षमा अत्यनाशुभशुभोदयेस्वकृतविपाकवेदनेऽविक-
त्पइतिक्षमा नहिक्रोधीममस्वभाव नाहक्रोधस्यकर्त्ताइत्यादिभा-
वनायास्तथ्यपरिणति क्षमा १ मार्दवमस्त्नपरिणाम नीचैर्वृ-
त्ति अभ्युत्थानासनदानाजलिप्रग्रहयथार्हविनयकरणरूपानीचैर्वर्त्तन
उत्सेकश्चित्तपरिणामोगर्वरूपस्तद्विपर्ययोऽनुत्सेक अनगतससारस्व-
भाव विशिष्टजातिकुलसपद कदाचिदेवसपद्यते, कदाचिद्धीना-
स्ततोनगर्वपरिणाम मदनिग्रहोमानविघातश्चेत्यर्थ , जात्यादिकसर्व
मपिऔदयिकऐश्वर्यादिक्षणभगुरतेनतप्रकोमद , अहतुनिर्मलानद-
स्वभाव अतोमानकषायोनममकार्य सम्यग्दर्शनादयोममकार्य न-
मदादिममकार्य इत्यादिभावनयामदत्यागीमार्दवमिति, आर्जवस्वरूप-
सुमायात्याग आर्जवमृजुभावइत्यर्थ मायाकापट्य दुष्टतानि-

वृत्ति साचपरकीयवस्तुग्रहणार्थभवति परवस्तुग्रहणमममनसायु-ज्यते नाहंपरभोगविनेमायाकं करोमि अनोमायात्याग आर्जवमम-धर्मइति ३ अलोभ शौचलक्षणलोभस्तुभारत परमार्थेनोऽमिष्वग चेतनाचेतनमिश्रवस्तुविषय लोभस्तेपायभक्तो यमानमायाहिंसानन्तसे यात्मनपरिग्रहानंतमलजालेनोपचीयमान आत्माभवति अशुचि तेनभावविशुद्धि ममत्वाभावो निःसगता अपस्त्रीहरणात्मानुर्यानुग्र नति कर्मपनानिर्मलनाभावसाग्नमाग्रजोहरणादिपुविगतपूर्त मुनि शुचि तेनएवशौच अपरनाममुक्तिइत्यादि ४ विश्वमानेअर्थेभग-सत्यमनोजीवादिपदार्थो तेनहितअनेकानन्तप्रमाणसप्तभंगेनिक्षे पानुगतमत्य श्रुताभ्यासपूर्वकअविसंवादिअर्हच्छासनानुगतज्ञान सत्यतद्युप्रयुक्तवाक्यमपिसत्यमतदा मन धर्म आ माहियथार्थोपयो-गीयथार्थोपयोगिनोममधर्मोयथोपयोगिनाएरसत्य तन्तुगतअपरस्य-असमानरागद्वेषविमुक्तश्रोतु धर्मप्रापकदन्यभावाहिंसामूलवाक्य तदपिधर्म ॥ ५ ॥ अगमनसयोगनिग्रह सयम सचसप्तदशविध स्थावरपचनसचतुष्काचायकरूप योगत्रयगुणसरक्षणमनसेनरानु-यायिप्रवृत्तिवारणरूप योगसयम प्रेक्ष्यचक्षुपाद्वारयडिलादिव्वर-प्रवर्त्तनादिक्रणेप्रेक्षासयम यत्र औदयिकभाववास्यादिग्रहत्यानुग्र-हणनदुपेक्षऔदासीन्यभजन अपेक्षासयमोभवति अपहृत्यपरि-वर्ज्यउपकरणादीनालाववकर्त्तन सयमोभवति तदपहृत्यसयम भक्तपानाद्यर्थपथिगच्छन सचित्तरजोनुरजितचरणस्यरयडिलात् स्थडिल्सक्रामन प्रमार्जनसंयम उपकरणसयम अथवाअ-जीवकायसयम अजीवकायानापुस्तकादीनाअन्यनरेपुरागद्वेषरूप परिणामत्यागअजीवकायसयम इतिसप्तदशविधसयमआत्मन धर्मो भवति यत परमात्मानुपायिप्रवर्त्तनअधर्म तत्परित्यागोधर्म इति-सयम यारयात तपोधर्म तपस्पतिनापयतिइतितप तपतिइति-

स्वयउद्विग्नोभवतिसयोगजसुखात् तापयतिआत्मप्रदेशेस्थितान् कर्मदलिकानितितप शरीरेंद्रियतापात् कर्मदहनाच्चतप भावनअनन्तज्ञानानदादितत्त्वेस्वस्वरूपेभोगतोआनदेनस्वरूपेकाग्र्यसनरतप परभावत्याग परभावानमिलापस्तत्सकोचादिरूपनिर्जरातप तच्चद्वादशविध बाह्याभ्यातरभेदात्तच्चनिर्जराधिकारतोज्ञेयत्यागस्वरूपतुआत्मन शरीरोपध्याहारोपाश्रयादिषुअभिष्वगहेतुभूतआत्मन परभावानुगत्वरूपोभावदोप तस्यत्यागपरिणाम आत्मन धर्मोभवति आर्किचन्यतुस्वात्मन सत्तारूपस्याद्वादपरिणतिपरिपाट्यास्यात् अस्तिपक्षग्रहीतात्मभावस्यआत्मत्वेनोपादेयनयाकृत्वाशेपस्यान्नास्तिना पक्षमतपरयूह नननिर्ममत्वआर्किचयपन्मदीयसत्तानोअन्यन् नाहअहतुस्वस्वभावगुणपर्यायवान्चिदानदस्वरूपस्यकर्त्ताभोक्ताविलसितान्यभावानारागद्वेपादीनाअभोक्ताअतस्तद्वाग्कत्वमवेक्ष्य । तननिर्ममत्वआर्किचन्य ॥ ९ ॥ ब्रह्मचर्यस्वरूपतुब्रहत्वादात्माब्रह्मतनावृत्ति आत्मनिउपयोगरमणभोगतयावर्त्तनब्रह्मचर्यब्रह्मणिआत्मनिचरण एकीभावेनअवस्थान ब्रह्मचर्यतद्रक्षणाय परभावाभोगात्मकभावमैथुन स्त्रीशरीरस्पर्शादिद्रव्यमैथुनत्याज्य आत्मस्वरूपैकत्वरूपब्रह्मचर्यरूपदृढीकरणार्थं गुरुकुलवासेवसितव्य गुरुशुद्धात्मतत्त्वज्ञापकात्मतत्त्वरमणना सरक्षणकोपयोगदाता स्वयमपिस्वतत्त्वविलासी न पुद्गलाशी गुरु स्तस्यातेवासित्व परमात्मतत्त्वप्राग्भावहेतुत्वात् यावज्जीवसेव्य आचार्योपाध्यायादीनाससर्ग तत्त्वोपपदेशकारणमितिब्रह्मचर्यस्थैर्यार्थस्त्रीससक्तवसत्यादित्यागरूपाभावना श्रीउत्तराध्ययनोक्ता श्रयतिनिग्रथा एवविधब्रह्मचर्यआत्मधर्मएवव्याख्यात दशविधोयतिधर्म स्तद्दृढीकरणार्थंभावनाभावनीया ताश्चद्वादशअनित्याअशरणाद्या इतितत्रसर्वसयोगाअनित्या सयोगोवियोगयुक्तएवअनस्तन कोरागइत्यादिअनुपेक्षाअशरणोऽप आत्मा-

ससारेनहिधनस्यजनादयोस्वात्मगुणरक्षका शरणेस्वरूपरुचिपरि-
णते । स्वरूपज्ञातास्वरूपरमणीआ माएवनिमित्तास्तुअर्हतुसिद्धा-
चार्यादिनिर्ग्रंथा यमाल्म्ब्यआत्मास्वरूपविश्रामीभवति अत्यतानद-
भोगीभवति एवजन्मादित समुद्भवेन दु खेनालीढस्यज भवत
शरणनास्ति इत्यालोचयन सर्वदाहमशरण इतिनित्यमेवमीतस्य-
सासारिकेषुभावेषुमनुजसुरसुखेषु हस्त्यश्वादिषुहिरण्यसुवर्णादिषु-
चनामिष्वगोनर्भानिर्भवति किंतुपरमर्पिप्रणीनशासनाभिहितएव-
विधौज्ञानाचरणादिषुप्रवर्त्ततेभावार्थ अहममशरणनान्येआत्मार्थो-
पासनेनममसुखइतिससारेससरत अनतपुद्गलपरावर्त्तपरिवर्त्तनेन-
प्रातस्यममकाकावस्थानप्राप्ता व्यवहारराशिप्राप्तानन्तकालस्य केन-
सहनसबध कृतइति अत्रसमरतोनसुख सुखतुममस्वरूपोपयो-
गेकत्वपरिणमनेनएकतानुप्रेक्षाएकएवाहनाह परसगी वीतराग-
द्वेषस्वभावस्यमम क सगी ॥ ४ ॥ अन्यत्वभावनातुसर्वमपि-
धर्मास्तिकायादिअजीवद्र यसमूहमत्तोअन्यजीवा । सर्वमत्तोभि-
न्नाइतिअशुचिभावनातुसर्वेपिपुद्गला एकैकेनजीवेनअननवारभुक्-
पूर्वास्तेनात्यतशुचय तनरक्तत्वेनाहमपित्वसु ? शुचिअन अशु-
चित्यक्त्वाशुचिरूपोचिद्रूपेरमणमिति ६ आस्रवभावनामिथ्या-
त्वाविरतिकषाययोगा आस्रवास्तेचत्याज्या नाहआस्रवस्यकर्त्ता
नाप्यास्रवोममस्वभावइति ज्ञानदर्शनचारित्ररूपोपरिणाम सवर
सवरश्चममधर्म सवरीचाह इतिनिर्जरापूर्वबद्धकर्मक्षपणरूपानिर्ज-
रास्वरूपमुच्यते नममगृहीताभिनवकर्मण तत्क्षपणायकरणाय
इति लोकस्वभावाश्चसालोकस्पर्शनाअजावाटकन्यायेनाननवारकृता-
अनोलोकपरिभ्रमणेनममधर्मोमदीयलोकश्चासर येयप्रदेशानतज्ञानपरि-
णतिपरिणाम तद्यपर्यायोत्पाद ययत्रौ यसकरसहकारसहजरूपा-
भावनलोक सचममसर्मइति ॥ १० ॥ बोधिसस्यकत्वयथा-

र्थंमतीतिरूपनस्त्वश्रद्धासाचदुर्लभा लम्भइसुरसामित्तलम्भइपडुअत्त-
णनसदेहो इक्कोनवरिनलम्भइ जिणदवरदेसिओधम्मो ।१। धर्म-
आत्मस्वभावरूपस्तत्कारणरूपधर्म श्रुतचारित्ररूपनस्यसाधकानि-
ग्रंथादयोतदहायोग्यादेशविरतादयोभात्रा परिणामादुर्लभा इतिद्वादश-
भावना आत्मधर्मसाधनकारणत्वात् धर्मरूपा सवरभेदाइतिसप्रति-
परीषहान्वक्ष्याम प्रतिजानीतेमार्गेअच्यवनार्थनिर्जरार्थपरिषोढया
परीषहसहनासमर्थमार्गात् च्यवतेमार्गार्थीपरिषहजये एवप्रवर्त्ततेते-
परीषहा कर्मोदयविपाका तेषुअनाकुलत्वेनरागद्वेषरहितरूपोजय
रूपवसवर तेचक्षुत्पिपासाशीतदशमशकारत्यरनिस्त्रीचर्यानिषद्या-
शय्याआक्रोश वध याचनअलाभरोगतृणस्पर्शमलसत्कारप्रज्ञाअ-
ज्ञानदर्शनइतिद्वाविंशति उदयप्राप्ता सहनीया सहनचसमपरि-
णाम अनाकुलत्वेनआत्मनश्वसाधनपरिणामो जय ४ यथाक्षुत्-
परिषहोदयेमुनिश्चिन्तयति असद्वेदनीयोदयेनक्षुदुदय साचक्षत या
तन्क्षमेनिर्जरातर्हितदुपशमनायक स्वाध्यायाध्ययनादिक परित्य-
ज्यआहारार्थप्रयनते शुद्धात्मसाधनक्रियाविमुच्य अनतकालपुन
पुन ग्रहणेनआहारार्थक स्वीयवीर्यप्रवर्त्तयति अतोनाहमकार्य
आहारश्चप्राप्ति कोहिपुद्गलग्रहणायप्रवर्त्तते इत्यादिभावनयापरीषह-
क्षमणाययतिनय इति चारित्रभेदा सामयिकछेदोपस्थापनीयप-
रिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपराययथाख्यातरूपा पूर्वव्याख्याता तेचसवर-
भेदा सप्तपचाशत्गुणस्थानेषुविभजन्नाह तत्र आद्येषुत्रिषुगुणस्था-
नेषुसवरभेदानसभवति मिथ्याश्रद्धावत नस्वरूपग्राहकत्व इति
तथा अजयदुगिइत्यादि ४ अजयदुगिअविरतदेशविरतलक्षणेगु-
णस्थानद्वये द्वादशभावना एवप्राप्यते शेषभेदानातुसर्वविरतौ ए-
वमाप्यमाणत्वात् तेननावसगृहीता दुपमत्ते प्रमत्ताप्रमत्तलक्षणेपच-
पंचाशत्भेदा अडुचरणाइतिसूक्ष्मसपराययथाख्यातरूपचारित्रद्वय-

रहिता तथा पुव्वदुगेत्ति अपूर्वकरणानिवृत्तिकरणलक्षणेगुणस्थान-द्वये परिहारादिचारित्ररहिताश्चतुप्पचाशन्मेदा सवरस्यउपशातमो-हक्षीणमोहलक्षणेगुणस्थानद्वये एकस्ययथाख्यानस्यैवसभवान्त्रिप-चाशद्भेदा सवरस्येति ॥ १०३ ॥

टबार्थ —हवे सवरतत्त्वना भेद गुणठाणे कहे छे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ए गुणठाणे सवरतत्वनो भेद कोई नथी अविरति समकित तथा देशविरति गुणठाणे बार भावना कोइक जीवने कोइक वेलाइ होइ ते माटे १२ भेद छे प्रमत्त तथा अप्रमत्त गुणठाणे सवरना पचावन्न भेद छे सूक्ष्म सपराय १ यथाख्यान २ ए वे चारित्र विना अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण ए बे गुणठाणे परिहार विशुद्ध विना चोपन्न सवरना भेद छे अने सूक्ष्मसपराये शेष चारित्र विना त्रेपन्न सवरना भेद छे इग्यारमे बारमे गुणठाणे एक यथाख्यान चारित्र छे, शेष च्यार चारित्र छे नहीं ॥१०३॥

सेसेसुएकखायग, चरणखवगत्तणेणनोअन्ने ॥
परिसहजयोअसवर, तेणसव्वथ्यतेगहीया ॥१०४॥

टीका—सेसेसुएगखायग ४ शेषेषुसयोगिकेवल्ययोगिकेवलि-लक्षणेएकक्षायिकयथाख्यातचारित्रसवरमेदेषुप्राप्यते शेषाषट्पचा-शद्भेदा क्षयोपशमरूपानप्राप्यते यद्यपिक्षायिकत्वेपरीषहजय सभाव्यते तथापिवीर्यानतजातसहनविकल्पाभावान्नापेक्षते अन्न-चपरिषहोदयस्तुगुणस्थानपुअल्पोनास्ति तथापिपरीषहजयस्तुसर्व-गुणस्थानेषुअस्तितेनसर्वेचतेपरीषहजयरूपाद्वाविंशतिभेदा गृहीता इत्युक्ता सवरभेदागुणस्थानेषु ॥ १०४ ॥

टबार्थ —तेणे नेपन भेद छे शेष कहेता शेष रह्यो जे तेरमो तथा चऊदमो गुणठाणो तेहने विषे एक यथाख्यात चारित्र छे बीजा सवरना भेद सर्व क्षयोपशमी छे ते तेरमे चऊदमे गुणठाणे क्षयोपशमी भाव नथी ते माटे क्षायिक चारित्र छे, अन्यभाव नथी ते माटे सुमति गुपतिक्षायिक चारित्रमाज गवेषी छे बावीस परिसह तेतो उपरले गुणठाणे नथी, पर बावीस परिषहनो जीपनो ते सवर छे परिसह तो कर्मना ऊदयथी छे ते माटे इम कह्यो छे ॥१०४॥

पढमतिगुणेअकामा, सम्मत्ताओसकामछ्ठाओ ।
वारविहनिज्जराओ, ज्झाणदुगचरिमदुगुणुम्मि॥१०५॥

टीका—अथगुणस्थानकेषुनिर्जराभेदाउच्यते तेचतपोभेदाद्वादशपद्बाह्यतपोभेदाअनशनअवमोदर्यवृत्तिसक्षेपरसत्यागकायक्लेशसलीनतालक्षणा बाह्यत्वतुयत्तपोदर्शनेनलोकाअपिप्रमोदते आश्चर्यं लभते नबाह्या अभ्यतराश्चप्रायश्चित्तविनयवैयावृत्यस्वाध्यायध्यानकायोत्सर्गलक्षणास्तेनिर्जराहेतुत्वात् निर्जराभेदा वस्तुतोनिर्जराभेदौद्वौ सकामाकामाभ्यातत्रसकामानिर्जरार्थिना अकामातुनिर्जरामिलापरहिताना तत्रपढमतिगुणेसुइत्यादि प्रथमेषुत्रिषुगुणस्थानेषुअकामाएवनिर्जराप्राप्यते अकामतण्हाएअकामछुहाए अकामसेयमलइत्यादि आगमपाठात्ज्ञेयासम्यक्त्वादिगुणस्थानत अयोगिपर्यतसकामानिर्जराप्राप्यते छठाओत्ति पष्ठात्गुणस्थानानूआरभ्यद्वादशनिर्जराभेदा प्राप्यते चरमगुणस्थानद्वयेध्यानद्वयसूक्ष्मक्रियाअप्रतिपाति उच्छिन्नक्रियालक्षणपूर्ववर्णितस्वरूपभवति ॥१०५॥

टबार्थ—निर्जरातत्व आश्रयी पहिले तीन गुणठाणे अ-

कामनिजरा छे सकाममणाना अभावथी समकित गुणठाणाथी सकाम निर्जरा छे छठा गुणठाणाथी बारमा पर्यंत बार भेद निर्जराना छे ए रीते तेरमे गुणठाणे एक शुक्ल ध्याननो त्रीजो पायो छे अने चऊदमे गुणठाणे शुक्ल ध्यानना बे छेल्ला पाया छे निर्ज्जरा स्वरूप कह्यो ॥१०५॥

आसुहुमचउवधो, उवसमतिसुपगईपएसवधदुग ।
मुक्काजीवाभेया, गुणठाणेसु नसभवई ॥१०६॥

टीका—अथबधनस्वस्वरूपगुणस्थानेषुविभजन्नाह बधश्चतुर्धा प्रकृतिबध स्थितिबध रसबध प्रदेशबधइति तत्रप्रदेशादीनासमुदाय स्वस्वविपाकस्वभाव प्रकृतिबध स्थिति कालावधारणमनन्-समयाबद्धाप्रकृति इयत्कालयावद्भुज्यतेइतिनिधारणात्मिकास्थिति अनुभागोमदतीव्रादिविपाकहेतुभूतोरस आर्द्रनाकषायप्रत्ययोत्पन्नाए-कद्विचितु स्थ नरूपा तस्यबध अनुभागबध प्रदेशा पुद्गल-परमाणुनिचयरूपास्तेषाबध प्रदेशबध कार्मणवर्गणायोग्यपुद्गलद्र-व्यसमूह तस्यबध प्रदेशबध उक्तच ठिईबधोदलस्सठिई पएस-बधोपएसगहण जताणरसोअणुभागो तस्समुदाओपगइबधो १ वि-स्तारस्तुशतकादितोऽवसेयइति आसुहाति ६ आइतियावत्सूक्ष्मस-परायगुणस्थानकतावत्चतुर्विधोपिबध प्रकृतिप्रदेशोयोगहेतुकौस्थि-तिरसौतुकषायप्रत्ययौउभयोरपिसद्भावात्उपशातमोहात्उपरिगुण-स्थानकेषुप्रकृतिबधप्रदेशबधौएवयोगप्रत्ययत्वात् योगानाचतत्र-सत्वात्इत्युक्त सक्षेपेणबध तीव्रमदादिविस्तारस्तुकर्मप्रकृत्यादितो-ज्ञेयइतिकृत्स्नप्रकर्मक्षयोमोक्ष सचसर्वगुणस्थानातीतत्वात्गुणस्था-नेषुनसभवतिअजीवभेदाश्चतुर्दश धर्मास्तिकायस्कधादयस्तेषिगुण-स्थानेषुनसभवति अतोनोक्ता ॥१०६॥

टबार्थ —सूक्ष्म संपराय गुणठाणा पर्यंत च्यार बंध छे १ स्थितिबंध २ रसबंध ३ प्रदेशबंध ४ च्यार बंध छे उपशांत प्रमुख तीन गुणठाणे प्रकृतिबंध प्रदेशबंध ए बे बंध छे मोक्षतत्वना भेद तथा अजीव तत्वना भेद गुणठाणे सभने नहीज ॥ १०६ ॥

भगासवेहाओ, गुणठाणसयंचदेवचदेण ।
रणियविणयावणय, सतिदाससस्सवयणेण ॥१०७॥

टीका—भगासवेहाओ इत्यादि १०० मोहादिकर्मणाभगास्तेपाक्रमस्तुसवेहाओत्ति कर्मसवेधनाम्नास्वकृतएवग्रथस्तस्मादवसेया स्तत्रसविस्तरेकथितत्वेनविचारसारप्रकरणेनोक्ता इतिइदगुणस्थानशतयद्यपि अष्टगाथाधिकमपिशतमेवेतिर याति श्रीमत्सधर्मप्रभृतिवाचकवशावच्छिन्नपरपरायातसवेगशालादिग्रथेनोद्धारितानेकभ यसंघातसरपदप्ररूपणाबलेनप्राप्तखरतरविरुद श्रीमज्जिनेश्वरसूरिवशपूर्वाचलभानुस्वरूपश्रीमदभयदेवसूरि नवागउपपातिक पंचाशकादिवृत्तिप्रकाशकपरपराश्रीमत् खरतरान्वयेश्रीजिनचद्रसूरिशिष्यश्रीमत्पाठकपुण्यप्रधानाच्छिष्या पाठका श्रीसुमतिसागरा चिंतामणिटिप्पनादिग्रथकरणमाप्तन्यायभारतीअवदाता तच्छिष्यावाचका बृहत्कल्पादिछेदग्रथलघुभाष्यादिटिप्पनकरणविमलावदाता श्रीसाधुरंगा तच्छिष्यानेकतीर्थप्रतिष्ठादिकृतशुभाचारा पाठकाराजसारास्तच्छिष्या पाठका श्रीज्ञानधर्मास्तच्छिष्या पाठका श्रीशत्रुजयेसमवसरणमेरुप्रमुखानेकतीर्थराजनगरादिपुसहस्रफणादिप्रतिष्ठाकरणकृतशासनोद्दीपना श्रीमद्दीपचद्रास्तेषाशिष्येनजैनागमाम्भासरसिरुहेनगुणस्थानकेषुद्वाराभिधानपूर्वकविरचितगुणस्थानशतक । श्रीमद्राधनपुरवास्त य विनयेनअवनत नम्र शान्तिदासइति श्राद्ध-

स्तस्यवचनानुग्रहेणगाथारचितास्तन सूक्ष्माम्नायावबोधार्थं पण्डित देवचन्द्रगणिनाएव यार यानावृत्ति श्रुतिरसिकानानभो॰ाय अन- सधिसमासाथकरणतु थल्वुद्धिना यामोहनिवृत्त्यर्थंअनभमादादिदोष- श्रुवुर्वेनभेदय सनोहिगुणज्ञाभवति ॥ इतिश्री विचारसारप्रकरणे श्रीदेवचन्द्रगणिविरचितेस्वोपज्ञगुणस्थानशतकेस्वोपज्ञाटीका लिखि- ता श्रीमति १ वीरनदनात्पावद्वीरजिनयाणीनम श्रीवर्द्धमानायगोत- मायसुधर्मणेवाचवोत्तरमवशायसिद्धायगुगशालिने ॥ १ ॥ तद्वंशे- खरतरगच्छे बुले वादेगुणाकरा श्रीजिनचन्द्रसूरीशा सममूवन्मुनि- नायका ॥ २ ॥ तदन्वयाब्धिसद्वृत्ताराजसाराह्वकवाचका ज्ञान- धर्मादीपचन्द्राश्चद्वोज्ज्वलगुणोज्ज्वाला ॥३॥ जगज्जनिनमोवानाते- पासवेगपक्षिणाविनेया समजायनदेवचन्द्रा शुभालया ॥४॥ स्वा- न्ययोरुपकाराय । देवचन्द्रेणधीमना । गुणस्थानशतेटीका । चके- स्वोपज्ञसज्ञका ॥ ५ ॥ तत्वाचयतुसद्भव्या ज्ञानस्वादपरायणा यथार्थमार्गरसिकाभवतुभाविका सदा ॥६॥ इतिश्रीविचारप्रकरणे- गुणस्थानशतटीकासपूर्णा ॥ शुभभवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

॥ अथ श्री विचारसार प्रकरणसटीक ॥

नमिउ वीरजिणद, मग्गणठाणेसु पुव्वभणीयाइं ।
दाराइचउनवई, भणामि गियपरविबोहत्थ ॥१॥

टीका—श्रीवर्द्धमानमानम्य केवलज्ञानभास्कर जीवाजीवादि-भावाना सर्वधर्मप्रकाशक ॥ १ ॥ नत्वावाचकवश गुरुन् सिद्धा-ततत्त्वकल्पद्रुन् । गत्यादिमार्गणाना करोमिस्वोपज्ञसद्वृत्ति ॥२॥ इहादिपूर्वगुणस्थानेषु पूर्वोक्तद्वारविभजनाकृता । तदनतरमार्गणा-भेदेषुनान्येवद्वाराणिविभजन्प्रथममिष्टदेवनमस्कारपूर्वक अभिधेयादि-प्रकाशनार्थ प्रथमगाथामाह ॥ नमिउवीरजिणद इत्यादि नमिउ-इति नत्वा वीरजिनेद्रमार्गणास्थानेषु पूर्वभणितानि * चतुर्नवति द्वाराणिभणामिकथयामि इतिसबन्ध । नत्वानमस्कृत्यवीरचतुर्विंश-तितमतीर्थनाथ श्रीइद्रभूत्यादिचतुर्दशसहस्र श्रमणचदनादिषट्त्रिंश त्सहस्त्रसयतीशखशतकादिएकलक्षैकोनषष्टिश्रमणोपासकसुलसारेव-त्यापिअष्टादशसहस्राधिकत्रिलक्षश्रमणोपासकारूपसघस्ययथार्थरत्न-त्रयीरूपात्मधर्मदेशनामृतदायक रागद्वेषमोहादिकवाराबैरिवारजेतृ-त्वान्जिना वीतरागा क्षीणमोहादयस्तेषामिद्र परमार्हन्त्यमहिमाल-कृतत्वान् तनत्वाइतिनमस्कृत्यमार्गणास्थानेषुमूलोत्तरभेदादिद्वारकद-

---

* अहिं मूळ गाथाने अनुसार " चतुर्नवतिद्वाराणि " पाठ शुद्ध समज छे अने पूर्वार्धनी तथा उत्तरार्धनी टीकामा " एकशत द्वाराणि " एवो पाठ हस्तलिखित प्रतमा छे ते मूळ गाथाने अनुसार समजतो नथी

बक-अभिधेयमणामिकथयामित्यर्थ प्रयोजनधानियपरविशेहत्य-निज आत्मापरायथार्थभावजिज्ञासारसिकासम्यग्दृष्टिदेशविरत-सर्वविरतादिजीवास्तेषाविशिष्टेबोध ज्ञानविशेषस्तदेवअर्थ प्रयो-जनयस्यस तनिजपरविबोधार्थं आत्मनोज्ञाननिर्मलाय परस्या-पिश्रोतु ज्ञानप्रकाशाय ॥ १ ॥

टबार्थ—नमस्कार करीने वीरवर्द्धमानजिनेंद्र सामान्य के-वलीमा इद्रसमान तेह प्रत्ये मार्गणास्थानकने विषे पूर्वे कह्या जे बधादिकद्वार चोराणु तेभणामि क० कहु छु निज आत्माने तथा परने प्रति बोधवाने ज्ञान जाणवा प्रकाशने हेते अर्थे करीने ॥ १ ॥

गईइंदिएकाए, जोएवेएकसायनाणेसु ।
सयमदसणलेसा, भविसम्मेसन्निआहारे ॥२॥

टीका—मार्गणानामभिधायिका गाथामाह । गइइंदिएकाए इत्यादि ॥ २ ॥ गम्यतेतयाविधकर्मसचिवैर्जीवै प्राप्यतेइति-गति नारकत्वादिपर्यायपरिणति साचतुर्द्धा नारकतिर्यग्नरसुररूपा इद्रनादींद्र आत्माजानैश्वर्ययोगात्तस्यइदइंद्रियतानिविद्यतेयेषाते-तद्मार्गणापचमकारा एकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रियपचेन्द्रियभे-दात्पचधा चीयतेयथायोगवर्गणागणैरितिकाय तद्वता जीवा कायाः पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतित्रसभेदात्षोढा ॥ ६ ॥ युज्य-तेप्रयुज्यतेतेयोगामनोवाक्कायलक्षणास्तद्वन्तोजीवाएवगृहीता वेद्य-तेअनुभूयते इद्रियोद्भवसुखमनेनेतिवेद पुरुषवेदस्त्रीनपुसकभेदात् त्रिविध कषशिषजघादिसाया इतिदडकपातु कष्यतेहिंस्यते अ-स्मिन्परस्परमाणिन इतिकष तस्यआयोलाभ येभ्यस्तेकषाया

क्रोधमानमायालोभारया चत्वार ज्ञप्तिर्ज्ञान यद्वाज्ञायतेपरिच्छिद्य-
तेवस्तुअनेनेतिज्ञानसामा यविशेषात्मकेनम् निर्विशेषधर्मग्रहणात्म-
कोबोध ज्ञानमतिश्रुतावधिमन पर्यायकेवलभेदात् पचप्रकार तदेव-
ज्ञानमिथ्यात्वसहकारेणविपर्यस्तमत्यज्ञानश्रुताज्ञानविभगभेदात् त्रि-
प्रकारमज्ञान विशेषस्यपर्यायाधिकत्वादेकातरूपेणकुग्रहग्रस्तानान-
तादृक् बोधस्तेनअज्ञान ज्ञानाज्ञानयोरुभयोरपिविशेषग्राहकत्वात्
ज्ञानावरणीयक्षयोपशमोद्भूतत्वादात्मन ज्ञानरूपस्यस्वपर्यायस्व-
भावस्यप्रवृत्तिशक्तिरूपत्वात् अष्टानामपिज्ञानमार्गणायांसग्रह ॥८॥
ससम्यग्प्रकारेणयमन उपरमणसावद्ययोगादितिसयम यद्वासयम्यते
नियम्यते आत्मापाप पापारम्भाराद्नेनेतिसयम । अथवा शुभो
भनायमा प्राणातिपातविरमणा अस्मिन्निति सयमश्चारित्रसामायिकछे-
दोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपरायययाख्यातलक्षणपचधा ।
विरतिसाम्यात्देशविरति ग्रहण विरतधर्मस्यप्रतिपक्षभूतत्वादविर
तिस्तस्याऽपिग्रहण एव ससवासयममार्गणा दृश्यते अनेनेतिदृ-
र्शन यद्विवादृष्टिर्दर्शन सामान्यविशेषात्मकेवस्तुनिसामान्यात्मकोबोध
दर्शनइत्यर्थ तच्चतुर्विधचक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनभेदात् अनदर्शन-
स्यसामान्यबोधरूपत्वात् सामान्यबोधस्यपिंडरूपवस्तुग्राहकत्वात् ।
नहिपिंडरूपवस्तुनिविपर्यास तेनदर्शनोपयोगेनविपर्यतापरिणति
इति लिश्यतेश्लिष्यते कर्मणासह आत्माअनयाइतिलेश्या कृष्णनील-
कापोततेज पद्मशुक्लभेदात्षोढा तत्रभावलेश्या परिणतिरूपायोग-
वीर्यसहकारिचेतनायावाअप्रशस्ताप्रशस्तापरिणति । बलवीर्यवत
प्रशस्ताप्रशस्तकार्यपरिणामप्रवर्तनरूपाभावलेश्या द्रव्यलेश्यानुवै
क्रियशरीरधारिणोतत्तद्वर्णादिपुद्गलपरिणमनरूपा नौदारिकाणामि-
तिउत्तराध्ययने शान्तिवादिकृतबृहद्वृत्तौ । भवति परमपदयोग्यता-
माराधयतिइतिभव्य 'सिद्धिगमनयोग्ये भव्य नभव्य नसिद्धिग

मनयोग्य अभव्य इतिसम्मतिसम्यग्प्रशस्तार्थे अविरुद्धार्थो सम्यग्जीवस्तद्भाव सम्यक्त्वमोक्षाभिलापरूपा या आत्मपरिणति तत्त्वेतत्त्वनिर्द्धाररूपपरिणमनसम्यक्त्व तच्चत्रिविध उपशमक्षयोपशमक्षायिकभेदात् सास्वादनस्योपशमातर्भावात् । मिश्रस्यक्षयोपशमसहचारात् मिथ्यात्वस्यनत्प्रतिबंधकत्वात् सम्यक्त्वमार्गणायाअतर्भाव अननानुबंधिचतुष्कस्य दर्शनमोहनीयत्रिकस्यविपाकमाप्तस्य क्षयगतस्य उदययोग्यस्य प्रदेशविपाकतोऽनुदितस्य उपशातस्य यत्दर्शन उपशमदर्शन सप्तकस्यविपाकप्राप्तस्य क्षयगतस्य उदययोग्यस्य विपाकतोउपशातस्य प्रदेशत उदयतयावेद्यमानस्य दर्शनक्षयोपशमसम्यग्दर्शन सम्यक्त्वस्य दीनयस्य ? विपाकोदयेपि मिथ्यात्वप्रदेशत्वात् प्रदेशग्रहण दर्शनसप्तकस्य सत्तात सर्वथा क्षीणम्यनिर्मल निरतिचार अप्रतिपातिदर्शन क्षायिकसम्यग्दर्शन इति मिथ्यात्वादयोगुणस्थानाधिकारेव्याख्यातापुव ॥१२॥ संज्ञिति संज्ञानसंज्ञामूतभवद्भाविभावस्वस्वभावपर्यालोचन सा संज्ञाविद्यतेयेषातेसंज्ञिन मनोविज्ञानयुक्तादीर्घकालिकीसंज्ञायुक्तासंज्ञिन तदितराअसंज्ञिन इति ॥१२॥ ओजोलोमकावलिकादिआहाराणा अन्यतमाहारयुक्ताआहारका तद्रहिताअनाहारका वेविग्रहगतिसमापना केवलिसमुद्घात अयोगीकेवलिन सिद्धाअनाहारका शेषाआहारका एतेचतुर्दशमूलमार्गणाउत्तरद्विषष्टिमार्गणारूपाभेदाउक्ता ॥ २ ॥

टवार्थ—हवे ६२ मार्गणा नाम कहे छे वेद ३ कषाय ४ गति ४ इंद्री ५ काय ६ योग ३ ज्ञान ८ ज्ञान ५ तीन अज्ञानमाहे गण्या माटे मार्गणा ते सर्व जीवनी विचारणा तेमाटे ७ प्रकृति गणी छे. संयम ७ पाच चारित्र ५ देश-

विरति ६ अविरति ७ दर्शन ४ चक्षुआदिक, लेश्या ६ कृष्णादि, भव्य तथाऽभव्य २ समकित ६ उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायक ३ मिथ्यात्व ४ सास्वादन ५ मिश्र ६ सज्ञी तथाऽसज्ञी २ तथा आहारक तथा अनाहारक ए ६२ मार्गणा जाणवी ॥२॥

पणतिरिचउसुरनिरये, नरसन्निपणेंदिभवतसिसव्वे ।
इगविगलभूदगवणे, दुदुएगगईतसिअभव्वे ॥ ३ ॥

टीका—अथनासुमार्गणासुगुणस्थानानिकथयन्नाह ॥ पणतिरि इत्यादि३॥तिरित्ति तिर्यग्गतिविषये पणत्ति मिथ्यात्वा१ देशविरतिपर्यंतपचगुणस्थानानि चउइतिसुरगतौनरकगतौमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रअविरतसम्यक्दर्शनरूपा चत्वारो गुणस्थानकाप्राप्यते नरइतिमनुष्यगतो सज्ञिमार्गणाया पचेंद्रियमार्गणायाभव्यमार्गणाया त्रसकायमार्गणाया ए५पचमार्गणापासर्वेतिसर्वेमिथ्यात्वत अयोगिपर्यनाश्चतुर्दशगुणस्थानका प्राप्यते इगत्ति एकेंद्रियेषुसागान्यन विगलत्ति विकले द्विनिचतु रिंद्रियेषुभुत्ति पृथिवीकायेषु उदव गत्तिअप्कायेषु वणत्ति वनस्पतिकायेषु दुदुद्वेद्वेमिथ्यात्वसास्वादनलक्ष्णेगुणस्थानकेभवत तत्रमिथ्यात्वसर्वत्रसारवादनतुकरणपर्याप्त्या पर्याप्तकेषु पूर्वभवेपूर्वबद्धएकेंद्रियाद्यायु उपशममाप्यएततृप्राप्त सास्वादन मृत्वाएकेंद्रियादिषुउत्पद्यतेतस्यअपर्याप्तावस्थायासास्वादनभवति एवं भावनीय एगगईतसित्ति गत्यानसा गतित्रसतेजोवायुकायलक्षणा तेषुएव मिथ्यात्वगुणस्थानलक्षणमाप्यते ॥ ३ ॥

टबार्थ—तिर्यचगतिमध्ये पाच पहिला गुणठाणा छे देवगति नरकगतिने विषे ४ मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ ए ४ गुणस्थाना छे मनुष्यगति १ संज्ञीमार्गणा २

पचेंद्रीमार्गणा ३ भव्यमार्गणा त्रसकायमार्गणा विषे सवेरु० मिथ्यात्वथी माडी अयोगी पर्यंत चउदे गुणठाणा पामीये एकेंद्री १ विगलत्रिक ३ पृथ्वीकाय १ अप्काय २ वनस्पतिकाय ३ सात मार्गणाने विषे मिथ्यात्व १ तथा सास्वादन गुणठाणा वे छे गतित्रसव्वेरु० तेउकाय १ वाउकाय तथा अभव्य १ ए तीन मार्गणाने विषे १ मिथ्यात्वगुणठाणो पामीये ॥ ३ ॥

वेयतिकसायनवदस, लोभेचउअजयदुतिअणाणतिगे।
बारसअचक्खुचक्खुसु, पढमाअहक्खायचरमचउ ४॥

टीका—वेअतिकसायत्ति ॥ ४ वेदेषु त्रिषुकषायेषु त्रिषुकोधमानमायालक्षणेषु मिथ्यात्वत आरभ्य अनिवृत्तिबादरयावत्नव- गुणस्थानकानिप्राप्यते दसत्ति लोभाख्ये कषायेगुणस्थानकद्दशप्राप्यते चउअभयत्तिअविरतिमार्गणायाचउ चतुर्मिथ्यात्वसास्वादनमिश्र अविरतसम्यग्लक्षणानिचत्वारिगुणस्थानकानिप्राप्यवेइति सम्यक्त्वदर्शनेन प्रतिपनत मिश्रेपूर्वाभ्यासबाहुल्येनज्ञाननन्मतापेक्षयाअज्ञाननिकमार्गणाया मिथ्यात्वसास्वादनलक्षणगुणस्थानद्विकप्राप्यते मिथ्यात्वात्समागच्छन् कश्चित्विभगाख्येरपिमिश्रेभवति तेनमिश्रमपिप्राप्यते तेनअज्ञाननिकप्राप्यते अनेकस्मिन्भवेविभगरत मिश्राभाव उक्त तस्यनत्वतुकेवलिनोजानाति अचक्षुदर्शनेचक्षुदर्शने- बहुवचनप्राकृतत्वात् द्वादशगुणस्थाना प्राप्यते पढमेत्ति पदसर्वे- नयोज्यवेदनिकेनवेपि प्रथमन मिथ्यात्वत आरभ्यअनिवृत्तिबादरयावत्इत्यनेनसर्वत्रएतद्गाथातमार्गणासुएवज्ञेय अचक्षुचक्षुदर्शने द्वादशप्रथमामिथ्यात्वत आरभ्यक्षीणमोहाता प्राप्यते सयोगिकेवल्यादिषुकेवलदर्शनस्यैवप्राप्यमाणत्वात् अहक्खायत्ति यथाख्या-

ाचरमाअन्या चउत्ति न चारगुणस्थानक्रा उपशातमोहक्षीण-
योगिकेवलिअयोगीकेवलिरूपाभवन्ति एषुकषायोदयाभावा
॥ ४ ॥

र्थार्थ —वेद तीन, क्रोध मान माया ए ६ मार्गणाने विषे
त्वथी माडी अनिवृत्तिकरण पर्यंत नव गुणठाणा छे लोभने
मेथ्यात्वथी सूक्ष्मसपराय पर्यंत १० गुणस्थानक छे अविरति-
ा विषे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ अविरति ४ ए
णठाणा छे अज्ञान तीन मार्गणाने विषे ये अथवा तिन
ाणा जे परकोइ जीव समकितगुणठाणाथी पडतो मिश्र
ो तेहने नजिक अभ्यासे तथा मिश्रना अल्पकाल माटे
पल्टे नही तिणे ज्ञान कहीये इत्यर्थ अचक्षुदर्शन १
चक्षुदर्शनविषे मिथ्यात्वथी माडी क्षीणमोह पर्यंत १२
ाणा पामीये छे यथाख्यातचारित्रे चरमक० छेहला ॥११॥
१३।१४। ए ४ गुणठाणा छे ॥४॥

ाणसगजयाइ, सामाइयछेयचउदुन्निपरिहारे ।
ठदुगिदोचरमा, जयाईनवमईसुओहिदुगे ॥५॥

टीका—मणनाणसगजयाई । इत्यादि मन पर्यवज्ञाने सगनि-
निनामनिर्ग्रंथस्नदादीनिदृत्यनेनप्रमत्ताप्रमत्तापूर्वकरणानिवृत्ति-
सूक्ष्मसपरायोपशातमोहक्षीणमोहलक्षणानि सप्तगुणस्थानानि-
सामायिकछेदोपस्थापने न चारियत्यारीनिप्रमत्ताप्रमत्तापूर्व-
निवृत्तिनादराणीत्यर्थ दुन्निति द्वेप्रमत्ताप्रमत्तरूपेपरिहारविशु-
त्तिप्राप्येते नोत्तराणिपरिहारस्ययहीनक्रियानिवाहणविकल्प
श्रेणिमारोह केवलद्विकेकेवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणे मार्ग-

णाद्धिके द्वौचरमोत्रयोदशचतुर्दशमल्क्षणोगुणस्थानकोभवत अजयाइतिअयतादिअविरतसम्यग्गुणस्थानन क्षीणमोहपर्यंतनवगुणस्थानकानिप्राप्यते मतिज्ञानश्रुतज्ञाने ओहिदुगेत्तिअवधिद्विके अवधिज्ञानअवधिदर्शने प्राप्येते । नशेषाणितयाहि मतिज्ञानश्रुतज्ञानावधिज्ञानानि मिथ्यादृष्टिसास्वादनमिश्रेषुनभवन्ति तद्भावेज्ञानत्वस्यैवायोगात् यत्तुअवधिदर्शनत कुतश्चिदभिप्रायाद्विशिष्टश्रुतविदो मिथ्यादृष्टीनानेच्छतित मतमाश्रित्य रमाभिरपितत्तेपानभणित अयचसूत्रेमिथ्यादृष्ट्यादीनामप्यवधिदर्शनप्रतिपाद्यते ॥ यदाह ॥ श्रीसुधर्मास्वामी पचमागे " ओहिदसणअणगारोवउत्ताणभंतेकिंनाणी १ अन्नाणीगोयमा नाणीवि अन्नाणी वि जईनाणीनोअत्थेगइयातिनाणीअत्थेगइयाचउनाणीजेंतिनाणीतेआभिणिवोहीयनाणी सुअनाणी ओहिनाणीजेचउनाणीतेआभिणिबोहिनाणी सुयनाणी ओहीनाणी मणपज्जवनाणी जेअन्नाणीतेनियमाइमअन्नाणी सुअअन्नाणी विभगनाणी" इत्यादिअत्रहियेअज्ञानिनस्तेमिथ्यादृष्टयएवेतिमिथ्यादृष्ट्यादीनामप्यवधिदर्शनसाक्षादत्रसूत्रेप्रतिपादितचएवविभगज्ञानी य सास्वादनमिश्रेवर्त्तते तत्रापितदानीमवधिदर्शनप्राप्यतेइति ॥ ५ ॥

टबार्थ —मन पर्यायज्ञानने विषे यति आदिक सात गुणठाणा छे छट्ठाथी बारमा पर्यंत छे सामायिकचारित्र तथा छेदोपस्थापनीय चारित्रने विषे छठो, सातमो, आठमो, नवमो, ए च्यार गुणठाणा छे परिहारविशुद्धि गुणठाणाने विषे छठो सातमो ए बे गुणठाणा छे केवलज्ञानने विषे ॥ १३ । १४ मो ए बे गुणठाणा पामीये अजनक० अविरतिथी माडी बारमा पर्यंत नव गुणठाणा छे मतिज्ञान १ तथा श्रुतज्ञान २ अवधिदर्शन अवधिज्ञान ए ४ मार्गणामे पामीये छे ॥ ५ ॥

अडउवसमिचउवेयगि, खईएइक्कारमिच्छतिगदेसे।
सुहमिसट्ठाणतेरस, योगआहारसुक्काए ॥ ६ ॥

टीका—अडउवसमित्यादि ॥ काकाक्षिगोलकन्यायादिहायनादितिसर्वत्रयोज्यते अयनादी युपशातमोहानान्यष्टौ गुणस्थानानि उपशमसम्यक्त्वेभवति अयनान्तूर्णानुगुणस्थानकान् अप्रमत्तपावन् चत्वारिवेदके अपरपर्याये क्षयोपशमेसम्यक्त्वेप्राप्यते खइएइक्कारत्ति क्षायिकसम्यक्त्वेअयतादीन्ययोगिकेवलिपर्यवसानान्यकादशगुणस्थानानिभवति, तथामिथ्यात्वत्रिकेमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रिकलक्षणेदेशविरते सुहमि, सूक्ष्मसपरायचारित्रेसट्ठाणस्वस्थान स्वनामस्थानकप्राप्यते इत्यनेनमिथ्यात्वेमिथ्यात्व सास्वादनेसास्वादन मिश्रेमिश्र देशविरतौदेशविरत सूक्ष्मसपरायेसूक्ष्मसपराय इतियावत् । योगत्रिकमार्गणाया आहारकमार्गणाया शुक्लेश्यामार्गणाया तेरसत्तिमिथ्यात्वत सयोगिकेवलिपर्यन्तत्रयोदशगुणस्थानिप्राप्यते ॥ ६ ॥

टबार्थ —उपशमसमकितने विषे आठ गुणठाणा छे चौथाथी मांडी इग्यारमा पर्यंत क्षयोपशमसमकितमध्ये चोथो, पाचमो, छठो, सातमो, ए ४ गुणठाणा, क्षायिकसमकिते चोथाथी चौदमा पर्यंत इग्यार गुणठाणा छे मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र ३ ए तीनने विषे तथा देशविरतिने विषे तथा सूक्ष्मसपरायने विषे सठाणक० पोताना नामनाज गुणठाणा छे मिथ्यात्वने विषे, मिथ्यात्व, सास्वादनने विषे सास्वादन मिश्रने विषे मिश्र, देशविरतिने विषे देशविरति, सूक्ष्मसपरायने विषे सूक्ष्मसपराय छे तीन योगने विषे आहारकमार्गणाने विषे शुक्ले श्याने विषे तेर गुणठाणा छे ॥ ६ ॥

असन्निसु पढमदुग, पढमतिलेसासु छच्चदुसुसत्त ।
पढमतिमदुगअजया, अणहारेमग्गणासुगुणा ॥७॥

टीका—असन्निसुपढमदुग । इत्यादि ॥ असंज्ञिषुसंज्ञि य-निरिक्तेषु प्रथमद्विक मिथ्यात्वसास्वादनलक्षण गुणस्थानद्वयमाप्यते प्रथमलेश्यात्रयेमिथ्यादृष्ट्यादीनिप्रमत्तातानि पड्गुणस्थानानि भवन्ति कृष्णनीलकापोतलेश्यानाहिप्रत्येक सख्येयलोकाकाशप्रदेश प्रमाणान्यध्यवसायस्थानानि तत्रोमदसङ्क्लेशेषु तदध्यवसायस्थानेषु तथाविधसम्यक्त्वदेशविरतिसर्वविरतीनामपि सद्भावोनविरुध्यते ॥ उक्तञ्च ॥ सम्यक्त्वदेशविरतसर्वविरतीनाप्रतिपत्तिकालेशुभलेश्यात्रयमेवभवति उत्तरकालेतुसर्वाअपिलेश्या परावर्तंते इति श्रीमदाराध्यापादाअप्याहु "सम्मत्तसुअसव्वासु लहइसुद्धासु निसुअचरित्त-पुव्वपडिवन्नओपुण अन्नयरीए छ लेसाए" ॥ १ ॥ श्रीभगवत्याच "सामाइयसजणणभतेकइलेसासुहोज्जा गो० । छसुलेसासुहोज्जाए-वछेओवट्ठावणीयेसजयाएवि" इत्यादि तथा तेजोपद्मलेश्ययो सप्तगुणस्थानानिभवन्ति अप्रमत्तातानामिथ्यादृष्ट्यादीनाअप्रमत्ताना तेजोपद्मलेश्यास्तारतम्येनभवति तथाअनाहारकेपचगुणस्थानानिभवति कमित्याह प्रथमातिमद्विकायनानिइतिद्विकायनानिइति द्विकशब्दस्यप्रत्येकयोगात् प्रथमद्विकमिथ्यादृष्टिसास्वादन अतिमद्विक-सयोगिकेवलयोगिकेवलिलक्षण अयतइति अविरतिसम्यग्दृष्टिश्चेति तत्रमिथ्यात्वसास्वादन अविरतसम्यग्दृष्टिलक्षणगुणस्थानत्रय अनाहारकेविग्रहगतौप्राप्यते सयोगिकेवलिगुणस्थानत्वनाहारके समुद्घातावस्थायातृतीयचतुर्थपचमसमयेष्टव्य । अयोगिकेवलयवस्थायातुयोगरहितत्वेनौदारिकादिशरीरपरिपोषकपुद्गलग्रहणाभावादनाहा-

रकत्व औदारिकवैक्रियाहारकशरीरपरिपोषकस्तुपुद्गलोपादानमाहारकइतिमार्गणासु गुणागुणस्थानकाउक्ता ॥ ७ ॥

टबार्थ—असज्ञिमार्गणाने विषे मिथ्यात्वसास्वादन ए बे गुणठाणा छे कृष्ण १ नील १ कापोत १ ए लेश्यामार्गणाने विषे छ गुणठाणा छे तेजो १ पद्म १ ए बे लेश्याने विषे पहिला सात गुणठाणा छे । १ । २ । ३ । ४ । ५ । ७ । पढमदुगमिथ्यात्व १ सास्वादन २ अतिमदुग तेरमो चउदमो अजयाक० अविरतिक० समकित ए पाच गुणठाणा छे अनाहारकमार्गणामे तेमध्ये पहिलो बीजो चोथो ए तीन गुणठाणे विग्रहगति वर्त्तमान जीवने अनाहारकपणो पामीये तेरमे गुणठाणे केवलीसमुद्घातकरताअनाहारक छे चउदमो अशरीरी छे तिणे अनाहारी छे ॥ ७ ॥

नरगईपणिंदितसयोग, नाणचउतिदससुक्कभविसन्नी। खायगदारेचउठाण, अणहारेसत्तइगवध ॥ ८ ॥

टीका—अथमार्गणास्थानेषु मूलबधस्थानानि वेदयन्नाह ॥ नरगइपणदि ॥ नरगति, पचेन्द्रियजाति, त्रसकाय, योगत्रय, मत्यादिज्ञानचतुष्टय, चक्षुरचक्षुरवधिरूपदर्शनत्रिक, शुक्ललेश्या १ भव्य सज्ञा, क्षायिकसम्यग्दर्शनी आहारक एतासु, अष्टदशमार्गणासुमूलत चत्वारिबधस्थानानि सप्तविधबधकाअपि एतेअष्टविधबधकाअपि एतेषड्विधबधकाअपि एकबधकोऽपि एतेएवचत्वारिबधस्थानकानि तत्रसर्वभवआयुर्वर्जसप्तकर्मबधकास्तेएवआयुर्बधकाले अष्टविधबधकाले एकसूक्ष्मसपरायमाप्ता मोहायुर्वर्जा षड्विधबधका तेचसातवेदनीयबधकालेएकविधबधका एवचत्वारिबधस्थानानिप्राप्यते अनाहारकमार्गणायासप्त एकरूपे द्वेबधमूलस्थाने ॥ ८ ॥

टबार्थ —मनुष्यगति १ पचेन्द्रिजाति २ त्रसकाय १ तीनयोगमनवचनकाया ए३ ३ ज्ञान ४ मति १ श्रुत २ अवधि ३ मनपर्यव ४ दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ शुक्लेश्या १ भव्यसज्ञी क्षायिकसमकित १ आहारक १ ए अढार मार्गणाने विषे च्यार बधस्थानक सात । आठ । ७ । एकनो छे

इगविणुलोभेअडतिणु, उवसमिकेवलदुगेअहक्खाए।
***एगापयडीबधे, सेसेसुसगट्ठबधाइ ॥ ९ ॥**

टीका—इगविणुलोभेइत्यादि । लोभकषायमार्गणाया इग-विणु एकविधबधकत्व विनासप्तअष्टौषट्लक्षणानित्रिणिबधस्थानानि अत्रप्रथमगुणस्यदेशकत्वात् उपशमसम्यक्त्वमार्गणाया अष्टविधबध-कत्व विनासप्तषट्एकरूपाणितीणिबधस्थानानि परसुनसमिनहृता-आउनबधेतिइत्यायुष अबधकत्वात् केवलदुगि केवलज्ञान केवल-दर्शनलक्षणे मार्गणाद्वये यथाख्यातचारित्रे एका सातावेदनीया-ख्याप्रकृतिर्बध्यते इत्यनेनएकविधबधक सूक्ष्मसपरायेषड्विधबध मिश्रेसप्तबधेप्राप्यते शेषा उक्तशेषा षड्विंशत्मार्गणा गति-त्रिकइद्रियचतुष्ककायपचकवेदत्रिककषायत्रिक अज्ञानत्रिक स-यमलेश्यापचअभव्यक्षयोपशमसास्वादनपचमिथ्यात्वअसज्ञिलक्षणा सप्तअष्टौएवेद्विबधस्थानेप्राप्यते इत्येवउक्तामार्गणासुमूलप्रतिबध-भेदा ॥ ९ ॥

टबार्थ —लोभकषाये एकनो थानक नथी ८ नो ७ नो ६ नो ए तीन बधथानक छे उपशमसमकितमार्गणाने विषे

* पाठान्तर
" एगासुहमिच्छमीसे, सगसेसासत्तअडबंधा "

आठनो उदयानक्र नथी ७।६।१। नो छे परमुवसमिवहुना-आउनवतिइतिवचनात् केवलज्ञान, केवलदर्शन, यथारव्यातचारित्र ए तीन मार्गणाने विषे एक सातावेदनी प्रकृति बांधे शेष ३९ मार्गणाने विषे सातनो तथा आठनो उदयानक्र छे हवे मार्गणाये बंध स्वामी कहे छे ॥ ९ ॥

इगसत्तरवीसचउअहिय, सयनरगाइगइचउक्केसु
जाइचउतिन्निथावरि, नवसयसयपचतेउदुगे॥१०॥

टीका--इगसत्तरवीसचउअहियाइत्यादि । अथमार्गणासुउ-त्तरबंधस्वामित्वक्रमप्रपन्नाह एकविंशतिनरकेओघबंध सुरद्विक, वैक्रियद्विक, आहारकद्विक, देवायु नरकत्रिक, विकलत्रिक, सूक्ष्म-त्रिक, एकेन्द्रियस्थावर, आतप, एता एकोनविंशतय नैरयिका न बध्नंति यत नैरयिका मृत्वानैरयिकेषुनोत्पद्यते तेननरक-त्रिकस्य देवत्वेपिनोत्पादात् तेनदेवत्रिक वैक्रियद्विकस्य आ-हारकद्विकस्यमुनि बंधक तेनबंध एकेन्द्रियादिचतुर्षुउत्पादा-भावात् ननरकस्तदुदया प्रकृतीरपिनबध्नंति अनएकाधिकशत ज्ञानावरणपंचक, दर्शनावरणनवक, वेदनीयद्विक, मोहनीयस्य षड्-विंशति, आयुष, द्वय नाम्न पचाशत, गोत्रद्वय, अंतरायपंचक, एवं एकाधिक शतरत्नप्रभादिषुत्रिषुबध्यते पंचकादिषुत्रिषुजिननाम-रहित एकशतबध्यते तमतमायाजिननाममनुष्यायूरहितान्नवनवतिं बध्यते तत्ररत्नप्रभादिषुत्रिषुओघन एकाधिकशत मिथ्यात्वेजिन-नामरहित शतबध्यते सास्वादनेनपुंसकवेद, मिथ्यात्वमोहनीय, हुंडकसंस्थान, सेवार्त्त, एव चतुष्टयवर्जयित्वाषण्णवति बध्यते तेषुअनंतानुबंधिचतुष्टय मध्यसंस्थानचतुष्टय मध्यसंहननचतुष्टय कुखगति [illegible] दुभगत्रिक स्त्यानर्द्धित्रिक उद्योतनाम

तिर्यगद्विक तिर्यगायुर्नरायु एनद्रूपद्दविंशतिरहितासप्तति मिश्रेनै-रयिकाणां भवति, अविरत सम्यगदर्शने जिननामनरायुर्युक्ताद्वि सप्त-ति बध्यते एवंसर्वत्रयथायोग्ययोज्य सप्तमपृथि व्यानन्वनवतिओर । जिननाम्न संक्लेशन्वेअभवानमनुष्यायुस्तुसप्तम्याउद्वृत्त तिर्यक्षुसमु-त्पन्नवेइतिनियमात्नबध्न नरद्विकउच्चैर्गोत्रमन्तरेणमिथ्या त्वेपण्णवति सास्वादनेतिर्यगायु नपुंसकचतुष्कवर्जएकनवति मिश्रेअननानुब-न्ध्यादिचतुर्विंशतिरहितानरद्विके उच्चैर्गोत्रयुक्तासप्ततिर्भवति एव सम्यक्त्वेऽपि अत्रमिश्राविरतौनरायु स्तावत्रबध्यते तथापिनरद्विक उच्चैर्गोत्रबध्यते तेनसप्ततिर्बध्यते अयमर्थ नरद्विकस्यनरायुषा सा-स्वादनावश्यप्रतिबन्ध आयुर्बन्धमन्तरेणापिगत्यानुपूर्व्योर्बन्धोभवति । आयुर्बन्धकालेतुअवश्यगत्यानुपूर्व्योर्बन्ध इतिअन्तर्मुहूर्तान्तरउच्यैपुपर्व-बद्धगत्यानुपूर्व्योर्बन्धनभवक्रमणात् भवति । नरगाइतिनरकादिनरक-तिर्यग्मनुष्यदेवगतिचतुष्केषुयथानुक्रमयोज्य तत्रनरकगतौएका-धिकशतओघ तिर्यग्गतौसप्तदशाधिकशतओघ बन्धस्यमनुष्यगतौ-विंशत्याधिकशतबन्ध ओघत देवगतौचतुरधिकशतओघत त्रय तत्रतिर्यग्गतौजिननामाहारकद्विकरहित सप्तदशाधिकओघत बन्धो-भवति तत्राहारकमुनित्वाभावात् जिननामचसत्यपिसम्यक्त्वे तथा विधविवेचकबुद्धिमत्तरेणअर्हद्भक्त्यादिषुप्रवृत्त्यासम्भवात्बन्ध मि-थ्यात्वेऽपिसप्तदशाधिक सास्वादनेएकाधिकशत नरकत्रिकादिषोडश-प्रकृत्यबन्धात् तत अणमझोगइसवपण कुखगइनियइत्थि दुहे-गर्याणतिग उज्जोयतिरिदुगतिरि नराउनरउरलदुगारिसह ॥ इति गाथोक्त ॥ एकत्रिंशत्सुरायु इतिद्वात्रिंशत्वर्जोएकोनसप्तति मिश्रे बन्धोभवति । तत्रायमर्थ आयुर्बन्धस्तुमिश्रेनास्ति अनतानुबन्धि-पचविंशति स्वभावादेवमिश्रेनास्ति तिर्यगमिश्रस्यस्पदेवप्रत्ययिक प्रकृतिबन्धात् नरद्विकौदारिकद्विकवज्रऋषभनाराचबन्धाभाव, साए-

कोनसप्तति सुरायु सहितासम्यक्त्वेसप्ततिर्भवति सा सप्ततिर्द्वितीय-कषायैरप्रत्यार यानक्रोधमानमायालोभैर्विनाषट्षष्ठिर्देशविरतिगुणस्था-नेबध्यते इतितिर्यग्गतिबंधस्वामित्व मनुष्यगतौओघतोविंशो-त्तरशतसास्वादने एकोत्तरशतमिश्रेअनतानुबंधिप्रमुखैकत्रिंशत्सु-रायु एतद्द्वात्रिंशत्बंधाभावेएकोनसप्तति साएवजिननामसुरायु स-हिताएकसप्तति सा वाप्रत्यार यानचतुष्टयवर्जादेशेसप्तषष्टि प्रमत्ते-त्रिषष्टि अप्रमत्तादिकओघवत्नेय देवगतौचतुराधिकशतबंधेव भवति तत्रनरकत्रयायोग्य एकाधिकशतमानेएकेन्द्रियनामस्थावरनाम आतपप्रक्षेपेचतुरधिकशतबंधेभवति यत भवनपति व्यतरज्योतिषू सौधर्मेशानपर्यंतमिथ्यात्वोदयोत्पन्नप्रकृपणादिनाएकेन्द्रियत्वबंधति। तेनैवज्ञेय मिथ्यात्वे जिननामवर्जेष्युत्तरशतसास्वादनेनपुसकचतु-ष्ककेन्द्रियस्थावरातापप्रकृतिसप्तकरहिताषण्णवति मिश्रेअनतानु-बंधिषड्विंशती रहितासप्तति सम्यक्त्वे सा एवनरायुर्जिननाम-सहिताद्वासप्तति बंधेभवति सौधर्मेशानकल्पेएवबाच्य भवनपति-व्यतरज्योतिष्चलयोगित्वात् न तादृक् शासनभक्त्यादिषु परिणम-नात् तीर्थंकरनामकर्मण ˚बधेनभवति तेनओघेमिथ्यात्वेव्युत्तरशत-भवति सास्वादनेषण्णवति मिश्रेसप्तति सम्यक्त्वे जिननामबंधा-भावात् एकसप्तति बंधेभवति सनत्कुमारादीना एकाधिकशत । यत आनतादीनातिर्यग्गतौगमनाभावात् तिर्यक्त्रिकस्यउद्योत-स्यनबंध शेषरत्नप्रभावत् आनतादिषुउद्योतनामतिर्यक्त्रिकस्य-बंधाभावेओघत पण्णवतिर्भवति पचउत्तरेत्र्येगुणस्थानवर्तित्वात् द्वासप्ततिबंध शेषपूर्ववत् देवगतिबंधस्वामित्वज्ञेय जाइचउत्ति जा-तिचतुष्केपृथिवीअप्वनस्पतिलक्षणस्थावरत्रिके एव सप्तमार्गणा-याजिननामसुरद्विक २ वैक्रियद्विक २ आहारकद्विक २ देवायु १ नरकत्रिकादि एकादशप्रकृतिवर्जनबंधाधिक शतओघत भवति

ओघेमिथ्यात्वेच सास्वादनेसूक्ष्मत्रिक विकलत्रिक एकेंद्रियनाम, स्थावरनाम, आतपनाम, नपुंसकवेद मिथ्यात्वहुंडसेवार्त्तइति त्रयोदशनामत्रयाभावेपण्णवति सास्वादनेनरसायानि मतान्तरेतु सास्वादनेचतुर्णवति येनआयुर्नरस्तुरत्रिंयपर्याप्त्यननरभवति सास्वादनस्तुशरीरपर्याप्ति अर्वांगू एवसास्वादनत्वापगम तेननरतिर्यगायु नबध्नाति एतासुमार्गणासु आयुर्बंधोमिथ्यात्वेभवति न सास्वादने तेनचतुर्णवतिर्भवति अपर्याप्तेपुतिर्यक्ष्वपिनवाधिकशतमेव बध्नाति अपर्याप्तेषुमनुष्येष्वपि असंज्ञिमनुष्येष्वप्येनवाधिकशत ओघवत् एवगुणस्थानद्वय अवगन्तव्यइति तेउलुगे तेजस्कायवायुकायलक्षणेमार्गणाद्वयेपृथिवीकाय प्रायोग्येनवाधिकशते मनुष्यत्रिकउच्चैर्गोत्रलक्षणाप्रकृतिंविनापचाधिकशतओघेमिथ्यात्वेभवति सास्वादनादिभावस्तुनैपासभवति इतित्रयोदशमार्गणासुबधस्वामित्व उक्त ॥ १० ॥

टबार्थ —नरकगतिनेविषे सुरवैक्रिय २ आहारक २ देवतानोआयुष १ नरकत्रिक ३ सूक्ष्म ३ विगल ३ एकेन्द्रि १ थावर आतप १९ नारकी न बांधे जे माटे नारकीने एकेन्द्रि तथा विगल तथा देव नारकीमे जातु नथी तिणे १०१ नो बंध छे तिर्यचगतिमे ११७ नो बध छे जिननाम १ आहारक २ न बांधे मनुष्यगति एकसोवीसनो बध छे देवगतिमे एकसोच्यारनो बंध छे एकेन्द्रि ३ बांधे एकेन्द्रिमे जाइ तेमाटे नरकादि च्यार गतिने विषे बंध जाणवो जाति ४ थावर ३ पृथ्वी अपवनस्पत्तिने विषे एकसोनव प्रकृतिनो बंध छे जिननाम सुर २ वैक्रिय २ आहारक २ देवायु १ नरक ३ ए ११ विनातेउवायुकायने १०५ नो बध छे ए ११ पूर्वकमनुष्यत्रिकउचगोत्र ए १५ विना जाणवो ॥ १० ॥

नाणतिगओहिदसण, सम्मदुगे इगुणसीइवधति ।
उवसमगेसगसयरि, केवलहरकायगे एगा ॥ ११ ॥

टीका—नाणतिगइत्यादि ज्ञानत्रिकमार्गणाया अवधिदर्शने-सम्यक्त्वद्विकेक्षयोपशमदर्शनेक्षायिकसम्यक्त्वेएकोनाशीतिं ओघेन-बंधोभवति तत्रसप्तसप्ततिं अविरतसम्यग्दर्शनगुणस्थानतत्प्रमायोग्या-आहारकद्विकचअप्रमत्तेगत्वा प्राप्नोति तेनएकोनाशीतिर्बंधेभवति साएकोनाशीति आहारकद्विकरहितासप्तसप्तति अविरतिसम्यग्दर्शनेभवति देशविरतौसप्तषष्टि प्रमत्तेत्रिषष्टि अप्रमत्तेएकोनषष्टि अपूर्वकरणे-अष्टपंचाशत् अनिवृत्तिकरणेद्वाविंशति सूक्ष्मसपरायेसप्तदश उपशातमोहक्षीणमोहेएकाबध्नाति उपशमदर्शनेसाएकाशीति मनुष्यायुस्तथादेवायुर्वर्जाभवति ओघत उपशमस्यायुर्बंधमेवनभवति तत्र-अविरतेपचसप्तति देशविरतौपट्पष्टि प्रमत्तेद्वाषष्टि अप्रमत्तेअष्टपचाशत् अनिवृत्तौद्वाविंशति सूक्ष्मसपरायेसप्तदश उपशातमोहे एकावंधेभवति केवलद्विकेयथाख्यातचारित्रे एकासातावेदनीयरूपा-बंधेभवतिएवमार्गणादशकेबंध उक्त ॥ ११ ॥

टबार्थ—मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ अवधिदर्शन १ क्षयोपशमसमकित १ क्षायिक समकित ? ए ७ मार्गणाए इगुण्यासी प्रकृति बांधे ते ७७ सत्तहतरि समकित गुणठाणे छे ते अने आहारक २ अप्रमत्तगुणठाणे जईने बांधस्ये ते सर्व मिली ओघेएगुण्यासीनो छे उपशमसमकितने विषे मनुष्यायु तथा देवायुनो बंध नथी तिणे सत्तहत्तरि प्रकृतिनो ओघे बंध छे केवलदुगयथाख्यातचारित्रने विषे एक प्रकृतिनो बंध छे बीजा नथी ॥ ११ ॥

मणनाणचरणतियगे, पणसट्ठीदेससासणेमीसे ।
मिच्छेसुहमेनियआ, अभवअन्नाणअमणेसु ॥१२॥

टीका—मणनाणइत्यादि मन पर्यवज्ञानेसामायिकछेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिरूपे चारित्रत्रयेपचषष्ठिनाओव बवेभवति तत्रत्रिषष्टि प्रमत्तप्रायोग्याआहारकद्विकएवपचषष्टि तत्रप्रमत्तेआहारकद्विकाभावेत्रिषष्टि अप्रमत्तेएकोनषष्टि अपूर्वेअष्टपचाशत् एवयावत्तोगुणस्थानकाभवतिनावज्ञेय देशइतिदेशविरतौमार्गणाया सास्वादनमार्गणाया मिश्रमार्गणाया मिथ्यात्वमार्गणाया सूक्ष्मसपरायमार्गणाया नियमेति निजकास्वनामगुणस्थानप्रायोग्यवन्धप्रकृर्तिबध्नाति तत्रदेशेसप्तषष्टि सास्वादनेएकोत्तरशत मिश्रेचतु सप्तति मिथ्यात्वे सप्तदशाधिकशत सूक्ष्मसपरायेसप्तदशचवेभवति तथा अभव्यमार्गणाया अज्ञानत्रिकमार्गणायाअमणेसुअसज्ञिमार्गणाया॥१२॥

टबार्थ—मन पर्यवज्ञान १ सामायिक १ छेदोपस्थापनीयचारित्र १ परिहारविशुद्धि ए च्यारे मार्गणाये पासठ प्रकृतिनो ओघ छे तेसठीछगगुणठाणेनथ छे ते आहारकदुगसातमे जे बाधस्ये तेमाटे पासठीनो ओघ छे देशविरतिगुणठाणे ते गुणठाणानी सडसठीप्रकृतिनो ओघ छे सास्वादनगुणठाणे १०१ प्रकृतिनो ओघ छे मिश्रगुणठाणे ७४ नो ओघ छे मिथ्यात्वगुणठाणे एकसो सत्तरनो ओघ छे सूक्ष्मसपरायगुणठाणे ते गुणठाणे प्रत्ययी १७ प्रकृतिनो बाघे तथा अभव्य १ अज्ञान ३ असज्ञी मार्गणाने विषे एकसोसत्तर प्रकृतिना बधनो ओघ छे ॥१२॥

सत्तरससयवधे, अजयतिलेसेअठ्ठारसयगतु ।
एगारसयतेउ, अडचउसयपउमसुकम्मि ॥ १३ ॥

टीका—सत्तरससयबवे जिननामाहारकद्विकरहित सप्तदशा-

शतओघ प्राप्यते तत परगुणस्थानोवत्तज्ञेय तथा अजयति अविरतमार्गणायातिलेसेइनिकृष्णनीलकापोतलेश्यापा आहारकद्विक रहित अष्टादशाधिकशतओवेभवति जिननामरहितसप्तदशाधिकशतमिथ्यात्वे सास्वादनेएकोत्तरशत मिश्रेचतु सप्तति एव प्रमतेनिषर्ष्टिपावनुवक्तव्य, तेजोलेश्यायानरकत्रिकसूक्ष्मत्रिकविकलत्रिकरहित एकादशोत्तरशत प्राप्यते तत्रमिथ्यात्वे अष्टोत्तरशत सास्वादनेएकाधिकशतयावत् अप्रमत्तेएकोनषष्ठितावज्ज्ञेय तथापद्मलेश्यामार्गणाया नरकत्रिकसूक्ष्मत्रिक विकलत्रिकेकेन्द्रियातपस्थावरइतिद्वादशाऽनवेअष्टाधिकशतओघ प्राप्यते, मिथ्यात्वेपचोनरशत सास्वादनेएकाधिकशत एवयावत् अप्रमत्तएकोनपष्टि शुक्ललेश्यायानरकत्रिकसूक्ष्मत्रिकविकलत्रिक एकेन्द्रियस्थावरातपोद्योततिर्यग्त्रिकमितिषोडशरहितचतुरधिकशत ओघेप्राप्यतेमिथ्यात्वेजिनाहारकद्विकरहित एकाधिकशतभवतिसास्वादनेनपुसकचतुष्कापगमेसप्तनवति मिश्रेअनतानुबध्याद्येकविंशति नरामरायुश्चएवतयोर्विंशतिर्विगमेचतु सप्तति एवयावत् सयोगिगुणस्थानतावज्ज्ञेय॥ १३ ॥

टवार्थ —अविरतिमार्गणाये कृष्ण १ नील २ कापोत ३ ए मार्गणाये ११८ नो ओघ छे एकसोसत्तर मिथ्यात्व गुणठाणे बावे ते एक जिननाम एव ११८ नो छे तेजोलेश्याये नरकत्रिक ३ सूक्ष्म ३ विगल ३ नव ए बाधे एकसोअगीयारनो ओघ छे पद्मलेश्या ३ सूक्ष्म २ विगल ३ एकेन्द्रि १ थावर १ आतप १ ए बार विना एकसोआठ १०८ नो ओघ छे नरक तथा ए बार उद्योत ४ ए सोल विना शुक्ललेश्या ए १०४ एकसो च्यारनो ओघ छे ॥ १३ ॥

बारसयमणाहारे, सेसासुअजीसअहियसयपयडी ।
बधुत्तरपयडीण, ओहो एसोसमासेण ॥ १४ ॥

टीका—बारसयमणाहारे इत्यादि । अनाहारेअनाहारकमार्गणायाआहारकद्विकदेवायुर्नरकनिकतिर्यगायु मनुष्यायु इत्यष्टौविनाद्वादशाधिकशतओव प्राप्यते मिथ्यात्वेजिननामरहित एकादशाधिकशतप्राप्यते सास्वादनेजातिचतुष्क स्थावरचतुष्कहुडातपसेवार्तनपुसकवेदमिथ्यात्वप्रकृतीनामवाभावेअष्टनवति सम्यक्त्वेपचसप्तति सयोगिकेवलिगुणस्थानेएकाइतिबध शेषासुपचेन्द्रिय १ त्रस १ योगत्रिकवेदत्रिककषायचतुष्क ४ चक्षुरचक्षुदर्शनभव्यसज्ञिआहारकलक्षणासुसप्तदशमार्गणासुविंशोत्तरशतबधप्राप्यते गुणस्थानक्रमश्चओवबधाविकारवत्वक्तव्य प्रजोत्तरप्रकृतीनाएषओव समासेनेतिसक्षेपेणउक्त ॥ १४ ॥

टबार्थ—अनाहारकमार्गणाए एकसो बारनो ओव छे शेष मार्गणा १८ नरगति १ पचेद्रीजाति २ त्रसकाय ३ योग ३ वेद ३ कषाय ४ चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन २ भव्य १ सज्ञीआहारकमार्गणाये एकसोवीस १२० प्रकृतिनो बध छे सर्वमार्गणाए जेटला कह्या तेटले गुणठाणे बधप्रकृति कहेवी बधनी उत्तरप्रकृतिनो ओघ सक्षेपे कह्यो ॥ हवे बधस्वामीपणोकर्मनो कहे छे ॥ १४ ॥

केवलदुगअहक्खायग, रहियाबधतिनाणविग्घाइ ।
तेउससुहमासाय, सेसादुगवेयणीकुणगा ॥ १५ ॥

टीका—अथमार्गणासु ज्ञानावरणादिकर्मप्रकृती विभजनाह ॥ केवलदुगत्यादि केवलद्विकयथाख्यातचारित्रमार्गणारहिताएकोनपष्टि मार्गणा नाणविग्घाइइतिज्ञानावरणपचकअतरायपचकरूपा दशप्रकृती नियमेनबधतिनधकुर्वति वेदनीयेकर्मणिकेवलद्विकयथाख्या-

तल्लक्षणापूर्वोक्तास्तिस्रो मार्गणा सूक्ष्मसपरायमार्गणासहिताश्चनस्र एकसातवेदनीयनवकर्देनिशेषा अष्टपचाशन्मार्गणा वेदनीयद्विकस्य कुणगा वेदनीयद्विकबन्धकर्त्र्यः ॥ इति ॥ १५ ॥

टबार्थ —केवलज्ञान केवलदर्शन यथाख्यातचारित्र ए तीन मार्गणा विना सर्वमार्गणाइ ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ दानलाभ भोगउपभोग वीर्यांतराय एव ५ नो बध छे तथाकेवलदुगयथाख्यातसूक्ष्मसपराय ए च्यार मार्गणाए एकसाता वेदनी बाधे शेष अटावनमार्गणा साता तथा असातावेदनी बाधे छे ॥१५॥

नाणचउओहिदसण, चरणतिगेदेससम्मतिगमीसे।
दसणछगचबधइ, केवलहक्खायगे नत्थि ॥ १६ ॥

टीका—अथदर्शनावरणीयमार्गणासुविभजन्नाह ॥ ज्ञानचतुष्क अवधिदर्शने चरणत्रिके देशविरतिमार्गणाया सम्यक्त्वत्रिकमार्गणाया मिश्रदृष्टि [illegible] त्रयोदशमार्गणाया दर्शनावरणीयषट्कस्त्यानर्द्धित्रिकरहितचर्वेप्राप्यते केवल द्विक यथाख्यानरूपायामार्गणाया दर्शनावरणीयबन्धेनास्ति तेषुगुणस्थानेषुतद्बधाभावात् ॥१६॥

टबार्थ —हवे दर्शनावरणीकर्मनो मार्गणाये बध कहे छे ज्ञान ४ अवधिदर्शन, सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, देशविरति, समकित तीन उपशम १ क्षयोपशम १ क्षायिक १ तथा मिश्रमार्गणा एतली मार्गणाये दर्शनावरणीकर्मनी छ प्रकृति बाधे, थीणद्धींतीन न बाधे, केवल दुग तथा यथाख्यातचारित्रे दर्शनावरणीकर्मनो बध नथी ॥ १६ ॥

सुहमेदसणचउग, सेसानवबधगायगोयम्मि।
तेउवाउनीय, सम्मत्तपराउउच्चच ॥ १७ ॥

टीका—सुहुमेइत्यादि ॥ सूक्ष्मसंपरायमार्गणे दर्शनावरणीय चतुष्कबंधे भवति शेष चत्वारिंशन्मार्गणा दर्शनावरणीयबंधना बंधकानबंधका ज्ञातव्या तेजोवायुकाय-रूपेद्रे मार्गणे एकनीचैर्गोत्रबंधे कुर्वंति सम्यक्त्वपराउच्चचक्रति सम्य-क्त्वन पराः सम्यग्सहिता मार्गणाज्ञानचतुष्कसंयमचतुष्कदेशवि-रतावधिदर्शनसम्यग्दर्शननिज मिश्रलक्षणासु चतुर्दशमार्गणासु उच्चै-र्गोत्रएवबंधेभवति ॥ वेचइकरयारयातेअवर ॥ १७ ॥

टबार्थ—सूक्ष्मसंपरायगुणठाणे दर्शनावरणी ४ बांधे शेष-मार्गणा ४५ ते दर्शनावरणीनी नव प्रकृति बांधे हवे गोत्रनो बंध कहे छे तेउकाय तथा वाउकाय एकनीच गोत्रनो बंध करे सम्यक्त्व उपरली मार्गणाओ ज्ञान ४ अवधिदर्शन ६ संयम-समकित तीन मिश्रमार्गणाए एक उच्चगोत्रने बांधे छे ॥१७॥

सेसादुविहबंधइ, मोहेतिगनाणओहिदंसेसु । सम्मतिगेगुणवीसति, चरणमणनाणइक्कारा ॥१८॥

टीका—सेसादुविहइत्यादि ॥ शेषा मार्गणा त्रिचत्वारिं-शत्मार्गणा द्विविधउच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्ररूपबंधकुर्वंति मोहमोहनी-यारपेकर्मणिज्ञानत्रयनिके अवधिदर्शने सम्यक्त्वत्रिकमोहनीयस्य-एकोनविंशतिर्बंधेभवति अनंतानुबंधिचतुष्टय मिथ्यात्वमोहनीय नपुंसकवेदस्त्रीवेदइतिसप्तनबंधेभवति तिचरणत्ति सामायिकछेदोप-स्थापनीयपरिहारविशुद्धिरूपे चारित्रत्रिके मन पर्यवज्ञानमार्गणाया मोहनीयस्यएकादशप्रकृति बंधेभवति ताश्चेमा सञ्ज्वलनचतुष्टहा-स्यादिषट्क पुरुषवेद एवएकादशबंधेभवति शेषा द्वादशकषाय-स्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वलक्षणा पंचदशबंधेनभवति ॥१८॥

टबार्थ —सेसाक० शेषमार्गणाए उचगोत्र १ नीचगोत्र २ ए बे प्रकृति बावे मोहनीकमनो बंध गुणठाणे कहे छे, ज्ञान ३ अवधिदर्शन सम्यक्त्व ३ उपशमक्षयोपशम २ क्षायिक ३ ए ए मार्गणाए मोहनीकर्मनी १९ प्रकृति बांधे अनंतानुबंधी ४ मिथ्यात्वमोहनी, नपुंसकवेद, स्त्रीवेद ए साननो बंध नथी सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, मन पर्यवज्ञान एटली मार्ग णाए मोहनीनी ११ प्रकृति बांधे चार कषाय, २ वेद मिथ्यात्व १ ए पनर न बांधे ॥ १८ ॥

केवलदुगेहखाए, सुहमेनोव धंडमोहस्स ।
सासणमीसेदेसे, नीअठाणठीआओपयडीओ॥१९॥

केवलदुगेहखाए इत्यादि । केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शनलक्षणे तथा यथाख्यातचारित्रे सूक्ष्मसंपराये मोहरयमोहारयस्यकर्मणः प्रकृतिर्बंधेनभवति, नवमगुणस्थानादेवमोहबंधस्यवच्छेदात् बंधद्रष्टहमङ्गनिवाक्यात् सास्वादने तथा मिश्रे तथा देशेदेशविरतारये मार्गणास्थाने नियठाणठीयाओइति निजस्थानतनामगुणस्थानतनस्थिता प्रकृतय बंधेभवति सास्वादनेमिथ्यात्वमोहनपुंसकवेदविनाचतुर्विंशति बंधेप्राप्यते मिश्रेएकोनविंशति प्राप्यते अनंतानुबंधीस्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वमोहरहिता देशविरतौअनंतानुबंधिचतुष्टयअप्रत्याख्यानचतुष्टयस्त्रीनपुंसकवेदमिथ्यात्वरहिता पंचदशबंधेप्राप्यते ॥ १९ ॥

टबार्थ —केवलदुगयथाख्यातचारित्रे सूक्ष्मसंपरायचारित्रे मोहकम्मनी प्रकृतिनो बंध नथी सास्वादन गुणठाणे २४ बांधे मिश्रे इगुणीस बांधे १९ देशविरते १५ प्रकृति बांधे ए पोताने थानकनी प्रकृति जाणवी ॥ १९ ॥

**सेसासुमग्गणासु, छवीसपयडीओमोहकम्मस्स ।
गुणठाणसभवाओ, आउभेया य नायवा ॥ २० ॥**

टीका—सेसासुइत्यादि । शेषासु चतु चत्वारिंशन्मार्गणासु षड्विंशति प्रकृतय मोहकर्मण बधेप्राप्यते समुदायकृतनएकै-कस्यजीवस्यस्वरवाध्यवसायविशेषात् न्यूनाधिकतीनमदप्रकृतय बधे-भवति गुणठाणसमवाओ गुणस्थानशतके यथागुणस्थानेउक्ता तथामार्गणास्थानेपिआयुष भेदा ज्ञानया तत्रनरकगतैदेवगते तिर्यगमनुष्यरूपेद्वेआयुषाबधेभवत मनुष्यगतातिर्यग्गतौ पचेन्द्रिये त्रसकाये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्टये अज्ञानत्रये अविरतिमा-र्गणाया दर्शनत्रये लेश्याया आत्रिके भयाभयद्विके मिथ्या-त्वेमार्गणाया आहारकमार्गणाया एतएतासुआयु चतुष्टयमपिबधे-प्राप्यते तथा एकेन्द्रियविकलेन्द्रियपृथिव्यपवनस्पतिलक्षणासु ति-र्यग्मनुष्यरूपौद्वौआयुर्भेदौभवत । तेजस्कायवायुकायमार्गणाया एकतिर्यगायुरेवबधेभवति ज्ञानत्रिकशुक्ललेश्याक्षयोपशमक्षायिक-सम्यक्त्वलक्षणासु मार्गणासु मनुष्यदेवरूपौद्वौआयुर्भेदौप्राप्येते । तथा मन पर्यवज्ञानसामायिक छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धि देश-विरतिलक्षणासु एकदेवायुरेवबध्यते केवलज्ञानकेवलदर्शनसूक्ष्मस-पराययथाख्यातोपशमसम्यग्दर्शनमिश्रअनाहाररूपासु आयुर्बधे-नास्ति तेज पद्मलेश्यासास्वादनरूपासुतिर्यग्मनुष्यदेवारूपा । त्रयआयुर्भेदा बधेभवति एवसर्वत्रज्ञेय ॥ अथनामप्रकृतिमार्गणा-स्थानकेषुविभजन्नाह ॥ २० ॥

टबार्थ—शेष जे मार्गणा रही जे चोमालीस तेहने विषे मोहनीनी २६ प्रकृति मोहकर्मनी बाधे आऊखाना बधनी प्रकृति नरकगति २ देवगति २ मनुष्यतिर्यचने ४ एकेन्द्रि,

विक्लेन्द्रि ने पचेन्द्रि ४ पृथिवी अप्वनस्पतीने ३ वेउव्वाउने ४ योग २ वेद ३ कषाय ४ ए च्यार आउखा बाधे तीन ज्ञानदेवना मनुष्यना २ आउखा बाधे मनपर्यव ज्ञानदेवतानो आउखो बाधे केवलज्ञानको आउखो न बाधे तीन अज्ञान ४ आयु बाधे सामायिक छेदोपस्थापनीय, परिहार विशुद्धि एक देवायु बाधे सूक्ष्मसपराय यथाख्यान ए कोई आउखो न बाधे देशविरति देवायु बाधे अविरति तीन दर्शन ४ आयु बाधे केवलदर्शन न बाधे तीन लेश्या ४ आयु बाधे तेजोपद्म ३ आयु बाधे शुक्लेशी २ आयु बाधे भय अभय ४ आयु बाधे उपशमी न बाधे मिश्र न बाधे क्षायिक क्षयोपशमी २ आयु बाधे सास्वादन ३ आयु बाधे मिथ्यात्वी सज्ञीअसज्ञी आहारी ४ आयु बाधे अनाहारी न बाधे एव प्रकारे आयु कर्मनो बध मार्गणाये जाणनो मार्गणाये जे गुणठाणे ते प्रमाण लेवा ॥ २० ॥

पन्नासाचउसट्ठी, सगसट्ठीतिपन्ननिरयमाईसु,
अडवन्नाचउजाईसु, थावरतिसुछपन्नतेउदुगे ॥२१॥

टीका—पन्नासाचउसठी इत्यादि । तत्रनिरयमाइसुत्ति नरकादिषु, चतुर्षु गतिषु यथाक्रमयोज्य नरकगतौपचाशन्नामप्रकृतिर्बध्यते सुरवैक्रियाहारकनरकद्विकसूक्ष्मविकलत्रिकएकेन्द्रियस्थावरातपलक्षणा सप्तदशानबंधेभवति तिर्यग्गतौजिननामाहारकद्विकरहिताचतुःषष्टि बधे लभ्यते मनुष्येसप्तषष्टि देवगतौपचाशन्नरकप्रायोग्याएकेन्द्रियस्थावरातपसहितात्रिपचाशद्देवगतौनबंधेप्राप्यते । तथा जिननामसुरद्विकवैक्रियद्विकआहारकद्विकनरकद्विकलक्षणानवनबध्यते शेषाअष्टपचाशन्नामप्रकृतिएकेन्द्रियादिजातिचतुष्कपृथि-

व्यपूवनस्पतिलक्षणासु सप्तमार्गणासु नवेप्राप्यते तेजरकायवायु-
कायमार्गणाया तासुअष्टपचाशत्रु मनुष्यद्विकाभावेपट्पचाशदवे-
भवति ॥ २१ ॥

टवार्थ —हवे नामकर्मनी प्रकृति मार्गणाये कहे छे नरक-
गते नामकर्मनी ९ प्रकृति बाधे सुर २ वैक्रिय २ आहारक
२ नरक २ सूक्ष्म ३ विकल ३ एकेन्द्रिय थावरातप ए सतर
न बाधे तिर्यंच जिननाम आहारक २ विना चौसठी बाधे
जिननामसुर २ वेक्रीय २ आहारक २ नरक २ ए नव न
बाधे ५८ प्रकृति च्यार जातिना जीव एकेन्द्रिय विगलेन्द्रि ३
ए जीव न बाधे तीन थावर पृथ्वी पाणी वनस्पतिपिण ५८
बाधे ते उकाय १ वाउकाय मनुष्यदुग विना छापन प्रकृति
बाधे ॥ २१ ॥

सम्मत्तमग्गणासु, गुणयालचरणमग्गणाठाणे ।
चउत्तीसचोसठो, मिच्छत्तठिया(उ)सुनामस्स॥२१॥

टीका--सम्मत्तमगाणासुत्तिगाथा २२ सम्यक्त्वेनयुक्तामा-
र्गणासम्यक्त्वमागणा मतिश्रुतावधिज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेवेदकउपश-
मक्षायिकदर्शनेएकोनचत्वारिंशत्प्रबंधेभवति तत्रमिथ्यात्वातेत्रयोदश
सास्वादनातेपचदश एवअष्टाविंशति बन्धेनभवति चरणमार्गणाया-
चारित्रयुक्तमार्गणायामन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रत्रयेचतुस्त्रिं-
शत्प्रकृति षष्ठसप्तमगुणस्थानप्रायोग्याबध्यन्ति मिच्छत्तगियासु मि-
थ्यात्वस्थितामिथ्यात्वगुणस्थानयासु मार्गणासु प्राप्यते ता मार्गणा
मिथ्यात्वाभ्यासञ्ज्ञिलक्षणासुजिननामाहारकद्विकविनाचतु पष्टि ब-
धेप्राप्यते । नामकर्मण ॥२२॥

टवार्थ --समकीत वीज जे मार्गणाये ३ ज्ञान अवधि-

दर्शन क्षयोपशम क्षायिक सम्यक्त्व ए मार्गणाये ३९ ओगणचालीस प्रकृति बांधे तेर प्रकृति सास्वादन आश्रना तथा १९ मिश्र आश्रना ते न बांधे उपशम समकिती आहारक २ न बांधे अने जे चारित्र प्रत्ययी मार्गणा मन पर्यव सामायिक छेदोपस्थाननीय परिहार ए ४ मार्गणाये चौदी प्रकृति छठी सातमी प्रत्ययी छे ते बांधे मिथ्यात्व प्रत्ययी मार्गणा मिथ्यात्व १ अज्ञान त्रिक अभव्य असंज्ञी ए मार्गणाये जिननाम कर्म आहारक विना ६४ नो बंध छे नाम कर्मनी प्रकृतिनो ॥२२॥

सपमत्तसजुआमग्गण, जानयधईपचसठीयो,
अणहारेतेसट्ठी केवलहखायनोजयई ॥ २३ ॥

टीका—सपमत्तसजुआदित्यादि ॥२३॥ मिथ्यात्वन प्रमत्तपर्यंनगुणस्थानायामुमार्गणासुप्राप्यते कृष्णादिलेश्यानयेआहारकद्विकरहितापचषष्टि बंधेप्राप्यने तूयगुणस्थानातजिननामयुक्तापचषष्टि बंधेभवति अनाहारकेआहारकद्विकनरकद्विकानवेनिषष्टिनाम- प्रकृतय बंधेभवति । केवलद्विकयथाख्यात नामप्रकृति न अजयति । नवरतिदित्यय ॥२३॥

टबार्थ—प्रमत्त गुणठाणा पर्यंत जे मार्गणा छे कृष्णनीलकापोतादि ते पासठी प्रकृति पर्यंत बांधे आहारक २ न बांधे अविरति मार्गणा पण आहारक न बांधे ए भावना पद छे प्रमत्तथी अर्वाक् छे पासठि बांधे अनाहारक मार्गणाये आहारक २ नरक बे विना ६३ प्रकृति बंधाय छे केवलज्ञान मार्गणाये तथा यथाख्यात चारित्र मार्गणा नामकर्मनी प्रकृति न उपार्जे न बांधे ॥२३॥

मिच्छतिगदेससुहुम्मे, ठाणभवासेसयासुसगसट्ठी, अविरइतिलेसपणसट्ठी, नवछतिगपन्नतेउतिगे ।२४।

टीका—मिच्छतिगइत्यादि ॥२४॥ मिथ्यात्वत्रिके मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणे देशविरतौसूक्ष्मसंपरायचारित्रे स्थानभवाप्रकृति न्वेभवति मिथ्यात्वेचतु षष्टि सास्वादनेएकपंचाशत् मिश्रेषट्त्रिंशत् देशविरतौद्वात्रिंशत् सूक्ष्मसंपरायेएकानामप्रकृति बंधेप्राप्यते शेषापंचेन्द्रियत्रसयोगत्रिकवेदत्रिककषायचतुष्टयदर्शनद्वयभव्यसंज्ञीआहारकलक्षणासुमार्गणासुसप्तषष्टि नामप्रकृतिर्बंधेप्राप्यते अविरतिकृष्णनीलकापोतलक्षणासुमार्गणासुआहारकद्विकमार्गणाशनकविना पंचषष्टि न्यते तेजोलेश्यायानवाधिकापंचाशत्इत्यनेनएकोनषष्टि पद्मलेश्यायांषडधिकापंचाशत् शुक्ललेश्यायांत्रिपंचाशत्नामप्रकृति बंधेभवति इत्येवनामकर्मप्रकृति मार्गणासुविभक्ता तदेवविभक्ता अष्टकर्मबंधप्रकृतय इत्यनेनमार्गणासुउक्तबंधस्वामित्व अथमार्गणासुउदयस्वामित्वकथयन्प्रथमद्विषष्ठिमार्गणासु मूलउदयस्थानानिकथयितुमाह । मूलकर्माणिनीणि उदयस्थानानितान्याह ॥२४॥

टबार्थ—मिथ्यात्व गुणठाणे चोसठि सास्वादने एकावन ५१ मिश्रे छत्तीस ३६ देशविरते ३२ सूक्ष्म संपराये एक ठाणे जे गुणठाणो तिहा औप-या जे ते प्रकृति बाधे शेष मार्गणा पंचेद्री त्रसकाय १ योग तीनवेद ३ कषाय ४ दर्शन २ भव्य १ संज्ञी १ आहारक १ एटली मार्गणावे सत्तसठि ६७ प्रकृति बाधे अविरति मार्गणा तथा तीन लेश्या मार्गणाने विषे आहारक द्विक विना ६५ बाधे ते जो लेश्याए ५९ गुणसठि

बाधे पद्मलेश्याए ५६ बाधे शुक्लेश्याये नेपन बाधे ए मार्गणाये नाम प्रकृति वेहचीने कही ॥२४॥

अट्ठसगचउरउदया, नरपणतसयोगसुकभवेसु, ग्यवगाहारगसन्निसु, अडचउअणहारगेउदया ॥२५॥

टीका—अट्ठसगचउरउदयाइत्यादि । तनज्ञानावरणादिसर्वकर्मणाउदयनेयरूप अष्टानासमकालविपाकत्वात् अष्टोदयरूपप्रथमस्थान तन सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रप्राप्त परभावारोचकस्वभावानुभव तदेकाग्रतादितत्त्वपरिण यासकलपरभावेष्वानासक्तोपयोग अरक्तद्विष्नपासर्वविभावत्यजनूस्वभावरमणानुभवैकत्वेनप्राप्तशुक्लध्यान उपशमश्रेणिं क्षपकश्रेणिंनागत उपशातमोहरूपएकादशमक्षीणमोहरूपद्वादशमगुणस्थानमधिरूढ आत्मामोहोदयरहितोभवति तदासप्तकर्मरूपद्वितीयस्थानकभवति सएवक्षीणमोहीएकत्ववितर्कअप्रविचाररूपशुक्लध्यान यावनूज्ञानावरणदर्शनावरणान्तरायरूप कर्मनय सर्वथाक्षय कृत्वा प्राप्तमत्रभावावभासरूप केवलज्ञानदर्शना तवीर्यंशेषमवानिकर्मचतुष्टयेवेदयति तस्यचतु कर्मोदयरूपन्नितयस्थानकभवतिनवमार्गणासु मार्ग्यतेनरइतिपचेन्द्रियजातो त्रसकायमार्गणापायोगत्रिकशुक्लेश्याभव्यक्षायिकाहारकसज्ञालक्षणा मार्गणा अडसगचउरुदयाइतिसत्रय इत्यनेनएतासुमार्गणासुअष्टसप्तचतूरूपाणि त्रीणि स्थानानिप्राप्यते अनाहारकमार्गणाउपशातमोहक्षीणमोहगुणस्थानाभावात् सप्तोदयरूपस्थानाभावात् अष्टचतु रूपौद्वौस्थानकौप्राप्येते ॥२५॥

टबार्थ—हवे मार्गणाये उदयस्थानक कहे छे आठनो उदय तथा सातनो उदय मोह विना तथा घनघातीकर्म खपे च्यारनो उदय ए ३ थानक छे मनुष्यगतिपचेन्द्रिय जाति

असत्यामयोग २ शुक्ल लेश्याए विषे क्षायिक समकितीने आहारक मार्गणाये सन्नी मार्गणाये एटली मार्गणाये ८।७।४ नो उदय छे अनाहारक मार्गणाये आठ तथा च्यार ए बे थानक छे ॥ २५ ॥

उवसमदमणातियगे, नाणचउक्केसुअट्ठसगउदयो ।
सगचउरअहग्खाए, केवलिचउअट्ठसेसासु ॥ २६ ॥

टीका—उवसमदराण इत्यादि । नवोपशमसम्यक्त्वे चक्षुरचक्षुरवधिरूपे दर्शनत्रिके मत्यादिमन पर्याये ते ज्ञानचतुष्के अष्टौ-सप्तएतद्वौउदयस्थानौचतुःक्षपक्केवलिन सभवात् यथाख्यातचा-रित्रेसप्तचत्वारएतौद्वौउदयस्थान उपशान मोहादिष्वेव यथाख्यात स्यसभवात् केवलज्ञानकेवलदर्शनमार्गणाया चउत्ति चतुरुदयरूप-उदयस्थान अजात्युदयस्येवसभवात शेषासुमार्गणासुअष्टौएवउदये-भवति ॥ सूक्ष्मात्उपरिनवगुणस्थानाभावात ॥ २६ ॥

टबार्थ —उपशमसमकितदर्शन ३ ज्ञान ४ एह्ने विषे आठ तथा साननो उदय छे यथाख्यातचारित्रमार्गणाये सातनो उदय तथा च्यारनो उदय केवलज्ञान केवलदर्शन ते च्यारनो उदय छे शेषमार्गणा जे रही तेह्ने आठ कर्मनो उदय छे ॥२६॥

निरएगुणसीउदओ, देवेचुलसीअसीईएगिंदि ।
तिरीएनवअहीसेय, मणुएचउअहीअमयउदओ॥२७

टीका—इत्येवउक्तानिमूलोदयस्थानानिमार्गणासुसाम्प्रतमुदयो-त्तरप्रकृतीनाउदयस्वामित्वकथयन्नाह । निरएगुणसीउदओइत्यादि ॥२७॥ नरकगतिमार्गणायाएकोनाशीति कर्मप्रकृति उदयस्वामि-

त्वओघत भवति ताश्चइमा ज्ञानावरणीयपचक दर्शनावरणनवक वेद-
नीयद्विक मोहनीयपड्विंशति स्त्रीपुवेदस्योदयाभावात्नरकायु नीचै
र्गोत्रअनरायपचक एवसप्तकर्मणाएकोनपचाशत् नाम्नस्तुनरकगति
१ नरकानुपूर्व्याद्विक पचेंद्रियजाति १ वैक्रियागोपागद्वय तैजस-
कार्मणशरीरद्वयहुडकसस्थानवर्णादिचतुष्क ४ अशुभविहायोगति १
उच्छ्वास निर्माण अगुरुलघु उपघात त्रसबादरपर्याप्त ३ प्रत्येक १
स्थिर २ शुभरूपा अपर्याप्तस्थिरपट्रूपात्रिंशतइतिसर्वेन एकोना-
शीति ओघोदय तत्वसिद्धातापेक्षया कर्मग्रथामेक्षयातुअपर्या-
प्तनामोदयनारकाणानेच्छन्ति परा्घातनचेच्छन्तिनथापिएकोनाशीति
ओघोदय मिथ्यात्वेचसम्यक्त्वमोहमिश्रमोहविनासप्तसप्ततिरुदयेभवति
सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्व्यीरूपाणाप्रकृतीनाअनुदयेचतु
सप्तति उदयेभवति मिश्रेअननानुबधिचतुष्टयापगमेमिश्रमोहनीउद-
येचएकसप्ततिरुदयेप्राप्यते एवचमिश्रमोहनीयापगमेसम्यग्मोहनीय
नरकानुपूर्व्यीमीलनेद्विसप्तति अविरतसम्यग्गुणस्थानेप्राप्यते इति
नरकगतिउदयस्वामित्व देवेत्तिदेवगतिविषयेपुतुलसीत्तिचतुरविका-
शीतिचतुरशीति उदयेओघ प्राप्यते ज्ञानावरणीयपचकदर्शना-
वरणीयनवक वेदनीयद्वय नपुसकवेदविनासप्तविंशति मोहनीय-
देवायु गोत्रद्वयेउच्चैर्गोत्रयद्यपिकिल्बिषादीनानीचैर्गोत्रतथापिउच्छि-
प्त्वाद्यभावान्नापेक्षित। अनरायपचकएवसप्तकर्मणापचाशत् नाम्न-
स्तुदेवगतिदेवानुपूर्वीद्वयपचेंद्रियजाति १ वैक्रियद्विक तैजसकार्मण
समचतुरस्रसस्थानवर्णादिचतुष्क ४ शुभविहायोगति पराघात-
नाम १ उद्योतनाम १ अगुरुलघुनाम १ निर्माणनाम १ उप-
घातनाम १ त्रसदशक अस्थिर १ अशुभदुर्भग १ अनादेय १
अयश इतिचतुस्त्रिंशत्नाम्न सर्वमीलिनेचतुरशीति प्राप्यते।
केचित्तुइ स्वरापर्याप्तरूपोदयइच्छन्ति तदपिकर्मग्रथेनाधिकृत नीचै-

गोत्रस्यविपाक अप्रज्ञापनोक्तस्यदेवेष्वदर्शनात् तेननाधिकृत उपघातोदय सुशरीरशुक्लोपघातस्य यूनाधिक्येनगणनानुगृहीतमच- तुरशीतिओघ लब्धिपर्याप्तदेवानानास्तितेनापर्याप्तइतिनापेक्षित कार्मग्रथीकेसिद्धांतेतत्रपेक्षित "देवापर्याप्तानिअपप्रतानिरिनिपाटात्" कर्मग्रथेपिदेवगतौजीवस्थानद्वयमितिग्रस्थेनगृहीतमपिअत उत्प- त्तिकालपर्याप्तनामोदयेपचाशीति सम्यग्मोहनीय १ मिश्रमोहनी- यस्योदयाभावेमिथ्यात्वगुणस्थानेऽशीति सास्वादनेमिथ्यात्वमोहनी- यापर्याप्तमतरेणएकाशीति मिश्रअनतानुबधिदेवानुपूर्वीउदयाभावे- पदसप्ततिर्भवति तत्रमिश्रमोहनीयक्षेपेसप्तसप्तति अविरतसम्यग्दर्श- नेमिश्रमोहापगमेसम्यग्मोहनीयदेवानुपूर्वीक्षेपेअष्टसप्ततिरुदयेभवति- इतिदेवगतावुदयस्वामित्व अर्थाइएगिंद्रीएकेंद्रियमार्गणायाअशीतिरु- दयेओघ भवति तत्रज्ञानावरणीयपचक दर्शनावरणीयनवक वेदनी- यद्विक मोहनीयस्यचतुर्विंशति मिश्रमोहनीयसम्यग्मोहनीयस्त्री- वेदपुरुषवेदोदयाभावात् तिर्यगायु १ नीचैर्गोत्रअत्रकल्पवृक्षादीना- उच्चैर्गोत्रोदय कथन ? इत्यत्रोच्यतेयद्यपिशुभगोत्रोदयेनइष्टत्वेपि- प्रज्ञापनोक्तोच्चैर्गोत्रविपाकानामन्येकस्याप्यसभवात् नीचैर्गोत्रमेव- अतरायपचकएवसप्तकर्मणासप्तचत्वारिंशत्नामकर्मण त्रयस्त्रिंशत्ति- र्यग्द्विक एकेंद्रियजाति आहारकरूनेशरीरचतुष्टय हुडकसस्थान वर्णादिचतुष्टय उच्छ्वासनाम १ आतपोद्योतेनिर्माणेअगुरुलघु १ उपघात १ पराघात १ बादर १ पर्याप्तप्रत्येकस्थिरशुभयशोरूपप- दक दुस्वरविनास्थावरानवक एवत्रय त्रिंशत् एवसर्वाग्रेअशीति अत्रसेवार्त्तसहननकश्चित्गृह्यते तथापिकार्मग्रथिकैरगृहीतत्वान्नोपात्त पराघातोदय कार्मग्रथीकैरगृहीतेपिप्रज्ञापनायागृहीतत्वात् एकेंद्रि- याणादुद्धर—त्वतुदेवाभियोगात् तेननोपात्त तयोग्रहणेद्वाशीतिरप्य- न्येइसीइएगेदिइत्यपिपाठातर उपागोदयस्तुनैकेंद्रियाणामिथ्यात्वे-

प्यशीतिरेव सास्वादनेसूक्ष्मनिकमिथ्यात्वातपानुदयेपचसप्ततिरुदये भवति गुणस्थानद्वयस्यरसभवात् तिर्यग्गतिविषयेनत्राधिकशतउदये-भवति ज्ञानावरणपचक दर्शनावरणनवक वेदनीयद्विक मोहनीया-ष्टाविंशति तिर्यगायु नीचैर्गोत्र १ अतरायपचक एवएकपचाशत् सप्तकर्मणानाम्न अष्टपचाशत् तिर्यग्द्विक २ जातिपचक शरीर-माहारकमनरेणचतु औदारिकवैक्रियोपागद्वय सहननषट्क सस्था-नषट्क खगतिद्वय जिननामविनाप्रत्येकसप्तक वर्णादिचतुष्य त्रस-दशक स्थावरदशकमिति अष्टपचाशतउभयमीलनेनत्राधिकशतओघे मिथ्यात्वेसम्यग्मोहमिश्रमोहविनासप्ताधिकशत । सास्वादनेसूक्ष्म त्रिकातापमिथ्यात्वविनाद्व्याधिकशत मि श्रेजातिचतुष्क अननानु-बधिचतुष्कस्थावरनाम १ तिर्यगानुपूर्वीमनरेणमिश्रमोहोदयेननिन-वतिरुदयेभवति अविरतसम्यग्दर्शनेमिश्रमोहापहारेसम्यग्मोहनीय-तिर्यग्गानुपूर्वीउदयेचतुरशीति देशविरतौअप्रत्याख्यानचतुष्टयवै-क्रियद्विकदुर्भगानादेयायश तिर्यगानुपूर्वीलक्षणदशप्रकृत्यपगमेच-तुरशीति उदयेमाप्यते सप्ततिग्रथेअनादेयोदय विवक्षितोपि " आइइज्जासञ्चोगगिऊवउ " वाग्योगप्रत्ययोदयत्वेनयोगरोध-कालेगृहीतत्वात् वाग्योगरहितानभवति सप्ततिवाक्याशयोपूज्यएव जानति मनुष्यगतिमनुष्यगतौचतुराधिकशतउदयेभवति तत्रज्ञानाव-रणादिसप्तकर्मसुतिर्यगनरकदेवायुरतरेणद्विपचाशत् नाम्नस्तुनरग-त्यानुपूर्वीलक्षणद्वयपचेंद्रियजाति शरीरपचकउपागत्रयसहननषट्क वर्णादिचतुष्य खगतिद्विक आतपस्पपृथिवीकायोदयात् उद्योत-स्यतिर्यग्प्रत्ययत्वात् तयोरभावेप्रत्येकषट्क त्रसदशकस्थावरसूक्ष्म-साधारणवर्जप्रकृतिसप्तक एवद्विपचाशतउभयमीलनेचतुरधिकशत उदयेओघ सभाव्यते तत्रमिथ्यात्वे आहारकद्विकजिननाममिश्र-मोहसम्यग्मोहाभावेनत्रनवतिरुदयेभवति सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्त

विनासासनपतिरुदयेभवति मिश्रेअनतानुबधिचतुष्टयमनुष्यानुपूर्वी-मिश्रोदयेनचनिनत्रतिरुदयेभवति सम्यक्त्वेमिश्रभावेसम्यग्मोहमनु-ष्यानुपूर्व्योयुक्तेचतुर्नवतिरुदयेभवति देशविरतेद्वितीयकषायचतुष्क मनुष्यानुपूर्वी १ वैक्रियद्विकदुर्भगानादेयायशलक्षणदुर्भगनिक एव १० दशप्रकृत्यपगमेचतुरशीतिरुदयेभवति प्रमत्तेतृतीयकषायच-तुष्क नीचैर्गोत्रइतिपचकापगमेआहारकद्विकोदयेचएकाशीति उदये-प्राप्यने अप्रमत्तेपदसप्तति अपूर्वेद्वासप्तति अनिवृत्तौषट्षष्टि एव-यावत्अयोगिगुणेद्वादशओघोदयवत्भावनीय ॥ २७ ॥

टबार्थ —नारकीनीमार्गणाए इगुण्याएसीनो उदय छे देव-गतिमार्गणाये चोरासीनो उदय छे, एकद्रीयमार्गणाये ॲसीप्रकृ-तिनो उदय छे, तिर्यचगतिमार्गणाये एकसोसातनो उदय छे, मनुष्यगते एकसोवेनो उदय छे ॥ २७ ॥

विगलेदुसईचउदससय, पचेंढिएसुपुढविवणे । ७
गुणसीईतेउदुगे, सगसयरिजलमिअडसयरी ॥२८॥

टीका—विगलेदुसीइ इत्यादि । विकलेद्रिनिचतुरिन्द्रियल-क्षणेमार्गणात्रयेद्व्यशीतिरुदयेओघ भवति ज्ञानावरणपचकदर्शना-वरणनवक वेदनीयद्विकमोहनीयस्यचतुर्विंशति सम्यग्मोहमिश्र-मोहपुरुषस्त्रीवेदलक्षणप्रकृतिचतुष्टयवर्जातिर्यगायु नीचैर्गोत्रअन-रायपचकनाम्नस्तुतियएद्विकद्वीद्रियजातिऔदारिकतैजसकार्मणलक्ष-णशरीरत्रिकऔदारिकोपाग सेवार्त्तहुडकसस्थानअशुभविहायोगति

* पाठातरे
गणसीदगीसयरिगइतसिसयत्रिसगसयरि

वर्णादिचतुष्टयउच्छ्वासोद्यतागुरुलघुनिर्माणोपघातपराघातपटक सु-
भगोआदेयमतरेणत्रसपदकस्थावरसूक्ष्मसाधारणत्रयविनास्थावरसप्तक
मितिपचत्रिंशत्मील्नेद्वाशीति ओघोदय प्राप्यते अत्रमिथ्यात्वे-
द्व्यशीति सास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्तद्वयविनाअशीति एवत्रींद्रि-
येतुत्रींद्रियजाति चतुरिन्द्रियेतुचतुरिन्द्रियजातिग्रहणेनशेष द्वी-
न्द्रियवत्वाच्य चउदशसयपचेन्द्रियेसुत्तिपचेन्द्रियमार्गणाया चतुर्द-
शाधिकशतउदयेभवति तत्रसप्तकर्मणा पचपचाशत्नाम्नस्तु एकेन्द्रि-
यादिजातिचतुष्टयाभावेस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपाभावेचशेषैकोनषष्टि-
रुदयेप्राप्यते तद्द्वयमील्नेचतुर्दशाधिकशतभवतिओघत मि-
थ्यात्वेआहारकद्विकमिश्रमोहसम्यग्मोह जिननामलक्षणप्रकृतिप-
चकाभविनत्राधिकशतसास्वादने मिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वीलक्षण-
प्रकृतित्रयमतरेणषटधिकशतभवतिमिश्रेतुअनतानुबंधिचतुष्कानुपू-
र्व्यीत्रिकापगमेमिश्रमोहमील्नेचशतमेवोदयेप्राप्यते अविरतिसम्यग्-
दर्शनेचतुरधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति एवसर्वगुणस्थानकेषुओघो-
दयवद्वाच्य पुढविवणेगुणसीई तत्रपृथ्वीकायमार्गणाया एकोना-
शीति ज्ञानावरणीयपचकदर्शनावरणीयनवक वेदनीयद्विकमोहनीय-
चतुर्विंशति तिर्यगायु नीचैर्गोत्रअतरायपचकनामकर्मण तिर्य-
ग्द्विक एकेन्द्रियजाति १ शरीरत्रिकहुडकसस्थानवर्णादिचतुष्टय
प्रत्येकसप्तकत्रसमुस्वादेयविशेषपदक साधारणदुस्वरविनास्थावरसूक्ष्म-
एवद्वात्रिंशत् अत्रपरघातोदयागीरस्तु कर्मग्रंथाशयापेक्षयाज्ञेय ।
वणेत्तिवनस्पतिकायेपिएकोनाशीतिरेवोदयस्तथाप्ययभेद सप्तक-
र्मणासप्तचत्वारिंशत्नामात्तुआतपोदयाभावेसाधारणोदयेचद्वात्रिंशत् ।
आतपोदय पृथिव्यामेवभवति मिथ्यात्वेएकोनाशीति सास्वादने-
सूक्ष्मअपर्याप्तमिथ्यात्वाभावेपचसप्तति प्राप्यते अत्रापर्याप्ताभा-
वस्तुलब्ध्यपर्याप्तापेक्ष्य आतपोदयस्तुपर्याप्तानांतत्रपर्याप्तत्व सास्वा-

दनेनभवति तेननरयागम वनस्पतिकायमरययेएकोनाशीतिमि-
ध्यात्वेएकोनाशीति सास्वादनेसूक्ष्मत्रिकमिश्रयात्राभावेपचसप्तति
एवगुणस्थानद्वयपतुसवेन्नरनरपत्यासाधारणवनस्पत्यातुमिथ्यात्वमे-
घभवति सपरीअपकायेसगासप्तसप्ततिसप्तसप्तनिस्द्वेभवति तत्रसप्त-
कर्मणासप्तच नारिशत्नाम्नस्तुतिर्यग्द्विक एकेन्द्रियजातिशरीरत्रिक
हुडकसस्थानवर्णादिचतुष्टयमत्येक पत्क मसमुस्वरसुभगादेय-
विनाशेषपदक साधारणदुस्वरत्रिकविनाशेषसप्तक एवएकत्रिशतुसर्व-
मील्नैसप्तसप्तति मिथ्यात्वेसप्तसप्तति सास्वादनेसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्या-
त्वविनाचतुसप्तति तेजस्कायलक्षणामार्गणायासप्तकर्मणा सप्तचत्वा-
रिंशत्नाम्नस्तु तिर्यग्द्विक एकेन्द्रियजातिशरीरत्रिक हुडकवर्णादि-
चतुष्टयउच्छ्वासागुरुलघुनिर्माणोपघातपराघातबादरपर्याप्तप्रत्येकस्थि-
रशुभलक्षणपचक साधारणदु स्वरविनाशेष स्थावरपदकएवउभयमील-
नेपदसप्तति मिथ्यात्वेतुषट्सप्तति अनिलतिवायुकायलक्षणामार्गणा-
या वैक्रियशरीरोदयवर्जनकोनात्रिंशत्सप्तसप्तति माप्यते ॥२८॥

टवार्थ —विकलेन्द्रिने छ्यासीनो उदय छे पचेन्द्रिमार्ग-
णाये एकसोचौदनो उदय छे पृथ्वीकाय तथा वनस्पतिकायने
इगुण्यासीनो उदय छे तेउकाय वायुकायने सनहत्तरिमकृतिनो
उदय छे अपकाये अठहत्तरिमकृतिनो उदय छे ॥ २८ ॥

सत्तरससयतसमि, इगलाअभव्वदुअणाणमि ।*
मणयोगकसाएसु, विभंगचखूसुनवगसयं ॥ २९ ॥

* (पाठांतरे)

अभव्वअन्नाणसतरअहिअसय ।

टीका—सत्तरससय इत्यादि । त्रसकायलक्षणमार्गणायांसप्तदशाधिकशतप्रकृतिनाओघेउदयोभवति तत्ररासकर्मणापचाशनुनाम्नस्तु एकेंद्रियजातिआतपस्थावरसूक्ष्मसाधारणलक्षणप्रकृतिपंचकनास्तिशेषाद्वापष्टि उभयमील्नेसप्तदशाधिकशतउदयेओघत प्राप्यते तत्रमिथ्यात्वेजिननामाहारकद्विकमिश्रसम्यग्मोहाख्यप्रकृतिपंचक विनाद्वादशाधिकशतसास्वादनेतुमिथ्यात्वापर्याप्तनरकानुपूर्वीलक्षणत्रयमनरणनत्राधिकशतउदयेभवति मिश्रेअनन्तानुबंधिचतुष्टयानुपूर्वीत्रिकविकलनिकाभावे मिश्रमोहनीयप्रक्षेपेचप्रकृतीनांशतउदयेप्राप्यते अविरतसम्यग्दर्शनेचतुरधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति एव ओघोदयवत्यावद्योगगुणस्थानकतावज्ज्ञेय अभव्यमार्गणायाअज्ञानत्रिकमार्गणायासप्तदशाधिकशतओघेउदयोभवति मिश्रमोहसम्यग्मोहजिननामाहारकद्विकविनासप्तदशाधिकशतउदयेप्राप्यते मण योगतिमनोयोगमार्गणाया एकेन्द्रियादिजातिचतुष्क स्थावरचतुष्क आनुपूर्वी चतुष्कानपलक्षणत्रयोदशविनानवाधिकशतओघोदयेभवति मिथ्यात्वेजिननामाहारकद्विकमिश्रसम्यग्मोहविनाचतुरधिकशतभवति सास्वादनेमिथ्यात्व विनाअधिकशतभवति मिश्रेत्वनन्तानुबंधिचतुष्कविनामिश्रमोहनीयक्षेपेचशतउदयेभवति सम्यग्गुणेतुमिश्रमोहानुदये सम्यग्मोहोदये शतमेवदेशविरतेतुअप्रत्याख्यानचतुष्टयनरकगति नरकायुर्देवगति देवायुर्दुर्भगानेयोयशोलक्षणप्रकृतित्रयोदशकमन्तरेणसप्ताशीतिरुदयोभवति प्रमत्तेत्वेकाशीति अप्रमत्तेपट्सप्तति एवयावत्सयोगिगुणस्थानकेद्विचत्वारिंशदुदयेप्राप्यते । इति । कषायचतुष्टयेतुक्रोधकषायेमानचतुष्क लोभचतुष्क जिननामलक्षणप्रकृतित्रयोदशाभावेनवाधिकशत मिथ्यात्वेआहारद्विकमिश्रसम्यग्मोहविनापचाधिकशतसास्वादनेसूक्ष्मत्रिकातपमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीविनानवनवति प्राप्यते एव गुणस्थानकेषुअनिवृत्ति-

धावरयावत्नत्त्कयमानकपायेष्वेयमायाकपायेष्वेरगुणस्थानदशकपा-
वनूवाच्य रननामकपायनोअन्येनिवार्यातेचक्षुदर्शनमार्गणायाधजा-
तिचतुष्क स्थावरचतुष्कानुपूर्वीचतुष्कातप जिननाममंतरेणचक्षु-
दर्शनेनवाधिकशत मिथ्यात्वेआहारकद्विकसम्यक्त्वमोहनीयमंतरेणप-
ञ्चाधिकशतनसास्वादनेमिथ्यात्वविनाचतुरधिकशत मिश्रेअनंतानुबंधी
चतुष्कचतुरिन्द्रियजातिलक्षणपञ्चकापहारेमिश्रमोहक्षेपेशत सम्यग-
दर्शनेमिश्राभावेसम्यगमोहनीयउदयेशत देशेसप्ताशीति एवं क्षीण-
मोहपर्यन्तरान्य विभगज्ञानेसम्यगमोहनीयजातिचतुष्क स्थावरच-
तुष्काहारकद्विकातपजिननामरूपप्रकृतित्रयोदशविनानवाधिकशत-
ओघेभगवत्यामनुष्यतिर्यगानुपूर्वीउदयकालेविभगप्रतिपेध कर्म-
ग्रंथेतुऔदारिकमिश्रयोगोदयज्ञानेनअनभिलक्षित मिथ्यात्वेमिश्रमोह-
नीयविनाअष्टाधिकशत मिथ्यात्वनरकानुपूर्वीविनाषडधिकशत मि-
श्रेअनंतानुबंधीचतुष्टयानुपूर्वीत्रयाभावे मिश्रमोहनीयक्षेपेशतउदये-
भवति ॥ २९ ॥

स्वार्थ —एकसो सत्तरनो उदय त्रसने विषे एकेंद्रियआतप थावर सूक्ष्म साधारण विना एकसो सत्तरनो उदय छे, त्रसकाय-मिथ्यात्व अभव्यमार्गणाये वे अज्ञानमार्गणाये एकसो सत्तरनो उदय छे, मिश्रमोहनी १ सम्यक्त्वमोहनी २ जिननाम १ आहारक १ आहारकमिश्र २ ए पाच नयी मनोयोगने विषे कपाय ४ ने विषे विभगने विषे चक्षुदर्शनने विषे पद्मलेश्याने विषे एकसो नवनो उदय छे तिहा मनोयोगमे जाति ४ थावर ४ आनुपूर्वी ४ आतप ए तेरनो उदय नयी, कपाय ४ मे अन बार कपाय जिननाम विना विभगने चक्षुदर्शनने पद्मले-श्याने जाति ४ थावर ४ आनुपूर्वी ४ आतप विना ॥२९॥

वयणेनारहीयसय, थीतिनाणेसुओहिदसेअसम्म। दुगिच्छसयउदओ, उवसमगेतिगसयउदओ ॥३०॥

टीका—वयणेनारहीयसय । वचनयोगेसप्तकर्मणापचपचा शत्नामकर्मणस्तुगतिचतुष्टय एकेन्द्रिय विनाजातिचतुष्कशरीरोपागसह सस्थानवर्णादिचतुष्कखगतिद्विकआनपमनरेणप्रत्येकसप्तक त्रसदशक लब्ध्यपर्याप्तापेक्षयास्थावरचतुष्कमनरेण स्थिरादिषट्क एवसप्तपचाशत् एकेन्द्रियजात्यानपानुपूर्व्वीस्थावरचतुष्कमनरेणगवेमीलनेद्वादशाधिकशत ततोमिथ्यात्वेजिनाहारक द्विकमिश्र "सम्यग्मोहपचरहित सप्ताधिकशत तत् मिथ्यात्वरहित षटधिकसास्वादनेतदेवानतानुबन्धिविकलनिकरहित मिश्रमोहयुक्तचमिश्रेनदेवमिश्रमोहरहित सम्यग्मोहयुक्त शत सम्यग्दर्शने तदेवाप्रत्याख्यानचतुष्टयदेवगत्यायु नरकगत्यायु वक्रियशरीरोपागलक्षणषट्क दुर्भगानादेयायशोरूपनिकमिनित्रयोदशापगमेसप्ताशीति साएवतिर्यग्गत्यायुर्नीचैर्गोत्रोनप्रत्याख्यानस्पाष्टकानुदये आहारकद्विकोदयेएकाशीति, एवनयोदशापावज्ञेय तथा थीतिनाणेसुओहिदसे असम्मदुगिच्छसयउदओइतिस्त्रीवेदेज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेक्षयोपशमक्षायिकलक्षणेसम्यग्दर्शनद्वयेएवमार्गणासप्तक, उअहीयत्तिषटअधिकशतउदयेओत्र प्राप्यते तनस्त्रीवेदमार्गणायासप्तकर्मसुपुरुषनपुसकवेदनरकायुर्विविनाद्विपचाशत्, नामकर्मणस्तुनरकगत्यानुपूर्व्वाद्वय एकेन्द्रियादिजातिचतुष्टयस्थावरसूक्ष्मसाधारणत्रिक आनपनामजिननामाहारकद्विकत्रयोदशक विनाचतु पचाशत्उभयमीलनेषटधिकशतउदयेओघ तदेवमिश्रसम्यग्मोहद्वयापगमेमिथ्यात्वचतुर्धिकशतनदेवमिथ्यात्वापर्याप्तद्वयाभावेसास्वादनेद्व्यधिकशतनदेवानतानुबन्धिआनुपूर्व्वीत्रयानदयेमिश्रोदयेचएणनवतिरुदयोमिश्रेप्राप्यते।

साएवमिश्रमोहापगमेसम्यग्मोहानुपूर्व्यामयोदयेचनवनवति सम्य-ग्दर्शनेसाएवामत्याख्यानचतुष्टयदेवगतिकदुर्भगानादेयाकीर्तिद्विकनरति-र्यगानुपूर्वीलक्षणचतुर्दशापगमेपचाशीति देशविरतिगुणस्थान-केउदयोभवति । साएवमत्याख्यानचतुष्कनीचैर्गोत्रोद्योततिर्यग्गति-तिर्यगायुर्लक्षणाष्टकानुदयेसप्तसप्तति प्राप्यते, अप्रमत्तेस्त्यानर्द्धित्रि-काभावात्चतु सप्तति अपूर्वकरणेअतिमसहननत्रिकसम्यग्मोहनीया-पगमेसप्तति, अनिवृत्तिबादरेहास्यपट्काभावात्चतु पष्टिरुदयेभ-वति तत्र परवेदाभावेत्वष्टसप्तति स्तथा ज्ञानत्रिकावधिदर्शनक्षयो-पशमक्षायिकमार्गणासुज्ञानिचतुष्कस्थावरचतुष्कातपजिननामानना-नुबधिमिथ्यात्वमिश्रलक्षणषोडशाभावेपडधिकशतओघोदय अवि-रतसम्यग्दर्शनेआहारकद्विकाभावेचतुरधिकशत, देशेसप्तदशाभा-वात्सप्ताशीति, क्षीणमोहयावत्वाच्य क्षयोपशमेअप्रमत्तया-वत्, क्षायिकेतुजिननामक्षेपेसम्यग्मोहनीयवर्जनेषडधिकशतअयो-गिगुणयावत्वाच्यम् ॥ उपशमेउपशमसम्यग्मार्गणायाक्षयोपशम-प्रायोग्यषडधिकशतेआहारकद्विकसम्यग्मोहनीयाभावेअधिकशतओ-घेप्राप्यते, देशेऽशीति प्रमत्तेतत्रस्त्यानर्द्धित्रिकापगमेपचसप्तति एवउपशातमोहयावत्वाच्यम् ॥ ३० ॥

टबार्थ —वचनयोगे एकसोबावनो उदय जातिएकेन्द्रि १ थावर ४ आनुपूर्वीआतप एहनो उदय नथी स्त्रीवेदने विषे वेद २ जाति ४ आहारक २ आनुपूर्वी ४ थावरसूक्ष्म साधारण ३ आतप एव १६ प्रकृति विना एकसोछनो उदय छे. तीन ज्ञान, अवधिदर्शन, क्षयोपशमसमकित १ एटली मार्गणाये जाति ४ थावरसूक्ष्म अपर्याप्तनाम साधारण ३ आतप १ जिननाम १ अनतानुबधि ४ मिथ्यात्व १ मिश्रए १६ विना १०६ प्रकृ-

निनो उदय छे इहा अपर्याप्तपणो काढीए ते लब्धिअपर्याप्तो-गवेष्यो छे उपशम समकित एकसोछ मध्येथी स्त्रीवेद १ आ-हारकद्विक २ ए तीन काढीये तेवारे एकसोतीननो १०३ नो उदय छे ॥ ३० ॥

मिच्छतिगिदेससुहमे, सठाणदओअपुरिसिअट्टसय*
मणनाणेइगसीई, केवलिजुअलेवयालीस ॥ ३१ ॥

टीका––मिच्छतिग इत्यादि ॥ मिथ्यात्वेसम्यग् मिश्रमोह-जिनाहारकद्विकोदयाभावेसप्तदशाधिकशतउदयेप्राप्यते, सास्वादने-एकादशाधिकशतउदयेप्राप्यते, मिश्रेशतप्राप्यते देशेसप्ताशीति उद-येप्राप्यते, सूक्ष्मसंपरायेषष्टिरुदयेप्राप्यते, सगतिस्वकइतिस्वस्वगुण-स्थानप्रायोग्योदया प्राप्यते, पढेनपुंसकवेदलक्षणेसोल्डइतिषोडशा-धिकशतउदयेओघ प्राप्यते, देवतिक वेदद्विक जिननामोदयरहित भवति, मिथ्यात्वेसम्यगमिश्रमोहाहारकद्विकरहितद्वात्रिंशाधिक शत-प्राप्यते, तदेवसूक्ष्मत्रिकातपमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीविनाषडधिकशत-सास्वादनेप्राप्यते, अनतानुबंधिस्थावरकेंद्रियादिजातिचतुष्कानु-पूर्वीतिर्यगानुपूर्वीत्रिकानुदयेमिश्रमोहोदयेपचनवति साएवमिश्र-मोहानुदये सम्यग्मोहोदये आनुपूर्वीप्रक्षेपेचअष्टनवनवति प्राप्यते द्वितीयकषायमनुष्यानुपूर्वीतिर्यगानुपूर्वी नरकत्रिकवैक्रियद्विकदुर्भ-गत्रिकाभावेचतुरशीति प्राप्यते एवप्रमत्तेएकोनाशीति अप्रमत्ते-सप्तति अपूर्वेएकोनसप्तति अनिवृत्तौतुपष्टि एवंवाच्य पुरिसिति-पुरुषवेदमार्गणाया जातिचतुष्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपनरकत्रिक-

* (पाठांतर)
सगसडेसोलपुरिसेअ ।

जिननामअन्यवेदद्वयाभावेअष्टाधिकशतओघोदय माप्यते, गुणस्थानक्रमश्चमिथ्यात्वे आहारद्विकसम्यग्मोहमिश्रमोहाभावेचतुरत्रिकशतसास्वादनेमिथ्यात्वापर्याप्त त्रिनाख्यत्रिकशतमिश्रअननानुबंधिआनुपूर्वीत्रिकविनामिश्रमोहक्षेपेचपण्णवति सम्यग्दर्शनेमिश्रमोहाभावेसम्यग्मोहानुपूर्वीत्रिकक्षेपेननवति, देशविरतौअप्रत्याख्यानीयवैक्रियद्विकदेवत्रिकमनुष्यतिर्यगानुपूर्वी दुर्भगत्रिकरूपचतुर्दशव्यपगमेपचाशीति प्रमत्तेएकोनाशीति अप्रमत्तेचतु सप्तति अपूर्वेसप्तति अनिवृत्तिबादरेचतु षष्टि इतिनैय मणनाणेत्ति मन पर्यवज्ञाने एकाशीति प्रमत्तगुणस्थानोदययोग्यातन क्षीणमोहयावज्ज्ञेय केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणेमार्गणाद्वयेद्विचत्वारिंशत् त्रयोदशगुणस्थानोदयेचतुर्दशेतुद्वादश ॥ ३१ ॥

टबार्थ —मिथ्यात्व १ सास्वादन २ मिश्र १ देशविरति १ सूक्ष्मसपराय एटली मार्गणाए नामगुणठाणे जे कही ते प्रकृतिनो उदय छे, मिथ्यात्वे ११७ एकसो सत्तरनो सास्वादने एकसो अगीयार १११ उदय छे, मिश्रे १०० नो प्रकृति उदय छे, देशविरतीमें ८७ सत्यासी प्रकृतिनो उदय छे, सूक्ष्मसपराये ६० साठ प्रकृतिनो उदय छे, पुरुषवेद एकसो आठनो १०८ उदय छे, जाति ४ थावर ४ आतप १ जिननाम १ नरक ३ वेद २ ए १५ प्रकृति नथी मन पर्यवज्ञाने एक्यासी प्रकृतिनो उदय छे, जे छठा गुणठाणे छे ते लेवी केवलज्ञान केवलदर्शननी बेतालीस प्रकृतिनो उदय छे, तेरमा सयोगी गुणठाणा मध्ये उदय छे ते लेवी ॥ ३१ ॥

परिहारेअडसयरि, सामईयछेएसु हुतिइगसोइ ।
सट्ठीओअहक्खाए, इगवीससयअचक्खुम्मि ॥३२॥

टीका—परिहारेअडसयरित्यादि परिहारविशुद्धिचारित्रेअष्ट-सप्ततिस्तत्रप्रमत्तयतिप्रायोग्यैकाशीतिन स्त्रीवेदाहारकद्विकापगमे-अष्टसप्तति साएवस्त्यानर्द्धिनिकाभावे त्र्यसप्ततिरप्रमत्तेभवति, सामा-इयछेएसुत्ति सामायिकेछेदोपस्थापनीयचारित्रद्वयेएकाशीति प्रमत्त-यतिप्रायोग्याउदयेभवतिओघ प्रमत्तेचअप्रमत्तादौओघोदयवत् स-ट्ठीओइतिथयाख्यातचारित्रेषष्टिप्रकृतीनामुदयेओघ तत्रएकोनषष्टि-रुपशातमोहप्रायोग्याजिननामयुक्ताषष्टिर्भवतिओघेतत्रोपशातमोहे-एकोनषष्टि क्षीणमोहेसप्तपचाशत् सयोगिकेवलिगुणेद्वाचत्वारिंशत् अयोगिगुणेद्वादशउदयेभवन्ति अचक्षुर्दर्शनेजिननामाभावात् एक-विंशत्यधिकशत ओघ उदयेभवतिमिथ्यात्वादारभ्यक्षीणमोहपर्यन्त-ओघोदयवद्भावनीयम् ॥ ३२ ॥

टबार्थ—छठा गुणठाणाप्रत्ययी ८१ इक्यासी प्रकृतिनो छे ते मध्ये स्त्रीवेद १ आहारक काढीए तेवारे परिहारविशुद्धि-चारित्रमे अठहत्तरि प्रकृतिनो उदय छे, सामायिक १ छेदोप-स्थापनीयचारित्रे छठा गुणठाणावालाने इक्यासीनो उदय छे, यथाख्यातचारित्रे साठ प्रकृतिनो उदय छे, इग्यारमे उदय छे, ते मध्ये एक जिननाम मेळिये तेवारे साठ थाइ, अचक्षुदर्शनमे जिणनामकर्म विना एकसो एकवीसनो उदय छे ॥ ३२ ॥

अजए इगुणीससय, आइतिलेसेगवीसयुअसयग।
एगारनवयदसहिय, सयचतेउतिगेनेय ॥ ३३ ॥

टीका—अजएइगुणीससयइत्यादि अजयेअविरतिमार्गणाया-आहारकद्विकजिननामोदयरहिता एकोनविंशत्यधिकशतप्रकृतय

ओघोदयेभवति, मिथ्यात्वेमिश्रमोहसम्यग्मोहविनासप्तदशाधिक-सास्वादने १११ मिश्रे १०० अविरते १०४ भवति आदिलेश्या-त्रयेकृष्णनीलकापोतलक्षणेजिननामोदयाभावात् एकविंशत्यधिक-शतप्रकृतीनाओघ एवप्रमत्तयावन्नवाच्यएगारेत्यादितेजस्त्रिकेतेजो-लेश्यामार्गणायानरकायु विनाचतु पचाशत्सप्तकर्मप्रकृतय नाम्न-स्तुनरकद्विकविकलत्रिकापर्याप्तसूक्ष्मसाधारणातपजिननामरहिता सप्त-पचाशत्उभयमीलनेएकादशाधिकशतओघोदय मिथ्यात्वेमिश्रमो-हसम्यग्मोहाहारकविनासप्ताधिकशतसास्वादनेमिथ्यात्वविनापडधि-कशतमिश्रे अनतानुबधिचतुष्कानुपूर्वीत्रिकैकेंद्रियजातिस्थावरनामा-भावेमिश्रोदयेचअष्टनवति अयतेमिश्रमोहानुदयेसम्यग्मोहानुपूर्वी-त्रिकमीलनेएकाधिकशत देशविरतौचतुर्दशापगमेसप्ताशीति प्रमत्ते-एकाशीतिरप्रमत्तेपट्सप्ततिरितिज्ञेय पद्मलेश्यायातेजोलेश्याप्रायोग्यै-कादशाधिकशतप्रकृतौएकेंद्रियजातिस्थावरनामाभावेनवाधिकशतओ-घेमिथ्यात्वेपचाधिकसास्वादनेचतुरधिकशतमिश्रेअष्टनवति अवि-रतसम्यग्दर्शनेएकाधिकशतदेशविरतेसप्ताशीति, प्रमत्तेएकाशीति अप्रमत्तेपट्सप्तति इतिवाच्य शुक्ललेश्यायादशाधिकशतओघन उद-योभवति जातिचतुष्कस्थावरचतुष्कातपनरकत्रिकविनादशोत्तरशत-ओघेमिथ्यात्वेसम्यग्मिश्रमोहाहारकद्विकजिननामविनापचोत्तरशत-सास्वादनेमिथ्यात्वविनाचतुरधिकशतमिश्रेअनतानुबधिचतुष्कानुपू-र्वीत्रिकाभावेमिश्रमोहक्षेपेचअष्टनवतिर्भवति सम्यग्दर्शनेमिश्रमोहा-भावेसम्यगमोहानुपूर्वीत्रिकप्रक्षेपेएकाधिकशतदेशविरतौचतुर्दशाभा-वेसप्ताशीति प्रमत्तेएकाशीति एवसयोगिगुणस्थानयावज्ज्ञेय २३॥

टबार्थ —अविरतिमार्गणाये एकसो ओगणीसनो उदय छे, आहारकजिन नाम विना ए तिन विना आदि तीन लेश्याने विषे जिन नाम विना एकसो वीसनो उदय छे, नरक ३ विकल

३ सूक्ष्म ३ आतप १ जिन नाम ए विना तेजोलेश्यामे एकसो इग्यारनो उदय ए इग्यार तथा एकेंद्रीथावर १ ए विना एकसो नवनो उदय छे, शुक्ललेश्याने विषे जाति च्यार थावर ४ आतप १ नर्क ३ ए बार विना एकसो दसनो उदय छे ॥३३॥

चउदससयचसन्निसु, अट्ठारसअहीयसयतुआहारे।
तणुभविदुवीससय, अणहारेअसीईनवअहीया* ३४॥

टीका--चउदससयचसन्निसुइत्यादि सज्ञिमार्गणायाएकेंद्रियादिजातिचतुष्कस्थावरसूक्ष्मसाधारणातपलक्षणाष्टकोदयविनाचतुर्दशाधिकशतओघेभवति मिथ्यात्वेपचकमतरेणनवाधिकशतसास्वादने अपर्याप्तमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीविनापटाधिकशतमिश्रेअनन्तानुबन्ध्यानुपूर्वीनिकाभावेमिश्रक्षेपेचशतउदयेभवतिनिनन अयोगिपर्यंतओघोदयवत्भावनीयसज्ञिमार्गणायाअपर्याप्तोदयग्रहणतु सुक्कासन्नीसुसन्निदुग इत्याशयानुक्त अट्ठारसत्तिआहारकमार्गणाया आनुपूर्वीचतुष्टयोदयाभावात् अष्टदश[illegible] उदयेभवति मिथ्यात्वेपचकाभावात् नयोदशाधिकशतसास्वादनेसूक्ष्मनिकातपमिथ्यात्वाभावात् अष्टाधिकशतमिश्रेअनन्तानुबंधिजातिचतुष्कस्थावराभावेमिश्रक्षेपेचशतसम्यक्त्वे-मिश्रेवानुदयेसम्यग्मोहोदयेचशतमेवेतिनन नयोदशाभावेसप्ताशीतिएवप्रमत्तादिषुसयोगिपर्यंतेषुवाच्य तणुत्ति तनुयोग काययोग भव्वत्ति भवसिद्धिकलक्षणेमार्गणाद्वयेद्वाविंशत्यधिकशत ओघेभवतिमिथ्यात्वादिषुओघोदयवत् अनाहारकमार्गणायाऔदारिकवैक्रियाहारकशरीरोपागसहननसस्थानविहायोगतिपरानानोच्छ्वासातपोद्योतो-

* (पाठांतरे)

नवहिअदुग

पयातसुस्वरदु स्वरप्रत्येकसाधारणमिश्रमोहलक्षणप्रकृतित्रिंशदनुदये- द्विनवति ओघेउदय सभा यतेआदेयानादेयोदयस्तुस्वरोदयेप्रोक्त- वाक्यस्यपरेश्रुतस्यादेयताभवतिवक्त यत्कालेतुआहारकत्वपश्चात्सम- यातरे अनाहारकत्वमप रस्यादेयनानादेयताचोदयेभवति अयोगि- गुणस्थानके च स्वरनामोदयाभावेप्यादेयनामोदयउक्तइतिनिदर्शनात मिथ्यात्वेसम्यग्मोहजिननामानुदयेनवतिर्भवति, सास्वादनेसूक्ष्मापर्याप्तमिथ्यात्वनरकानुपूर्वीसम्यग्मोहोदयेएकोनाशीति सयोगिगुणे- मनुष्यगतिअयोगिगुणेद्वादशपचेंद्रियजाति १ त्रसत्रिकसुभगत्रिक- ध्रुवोदयीद्वादशजिननामवेदनीयद्वयउच्चैर्गोत्रमनुष्यायु एवपचर्विंशति ॥ ३४ ॥

टबार्थ ––सज्ञीमार्गणाए जाति ४ थावर ३ आतप ए आठ विना एकसो चौदनो उदय छे, च्यार आनुपूर्वी विना एकसो अढारनो उदय छे, आहारकमार्गणामे काययोगभ यमार्गणामे एकसो बावीसनो उदय छे, आहारकमार्गणामे काययोग भ य- मार्गणामे एकसोबावीसनो उदय छे अनाहारकमार्गणाए गुणनि- वेनो (बाणुनो) उदय छे शरीर ३ उपाग ३ सघयण ६ सस्थान ६ वर्णादि ४ वययोगनि १ परावात १ उच्छ्वास १ आतप १ उद्योत १ उपघात १ सुस्वर १ दुस्वर १ ए विना ॥३४॥

चउनवईअसन्निसु, उदयसामित्तमग्गणाठाणे।
केवलदुगवज्झाणु, सन्नासुनाणविग्घुदयो ॥३५॥

टीका––चउनवइअसन्निसु इत्यादि । असज्ञिमार्गणायाज्ञा- नावरणीयपचकदर्शनावरणीयनवक्र वेदनीयद्विकसम्यग्मोहमिश्रमोह पुरुषवेदस्त्रीवेदोदयविनाचतुर्विंशति नरकायुर्देवायुर्द्वयविनाआयुर्द्वय

नीचैर्गोनअतरायपचक एएअष्टचत्वारिंशत्नाम्नस्तु निर्यग्मनुष्यगत्यानुपूर्वीचतुष्प जातिपचकवैक्रियाहारकविनाशरीरओदारिकोपाग त्रयमेवार्त्त १ हुडकवर्णादिचतुष्कअशुभविहायोगति सप्तकतीर्थकरविनाप्रत्येकत्रसस्थावरदशकएवपचचत्वारिंशत् वैक्रियशरीरेचगृहीतेचतुर्नवति असज्ञिमार्गणायामिथ्यात्वेपिचतुर्नवति सूक्ष्मत्रिकानपमिथ्यात्वविनाएकोननवति सास्वादनेप्राप्यतेइति प्रोक्तउदयस्वामित्वमार्गणास्थाने,मार्गणासुकर्मोदयविवरणमाहकेवलदुगत्तिकेवलज्ञानकेवलमार्गणावर्जयित्वाशेषासुपष्टिमार्गणासु ज्ञानावरणीयातरायदशकस्योदय प्राप्यते ॥ ३५ ॥

टबार्थ —चउनवई चोराणुनो उदय छे, असज्ञीमार्गणामे उदय छे, समकितमोहनी १ मिश्रमोहनी १ पुरुषवेद १ स्त्रीवेद १ नरकायु १ देवायु १ नरकगति १ देवगति १ आहारक २ सघयण ५ सस्थान ५ देवानुपूर्वि १ नरकानुपूर्वि १ शुभविहायोगति १ परावात १ तिर्थंकरनाम १० तथा ए मार्गणाए स्वामी कह्यो, केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ मार्गणामे ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ नो उदय नथी शेष सर्वे मार्गणाए ज्ञानावरणी ५ अतराय ५ ए दश प्रकृतिनो उदय छे ॥ ३५ ॥

दसणरोहकम्म, सुहुमाइखायगेसुछगुदओ ।
केवलदुगेअभावो, सेसासुनवेवउदयंमि ॥ ३६ ॥

टीका—दसणरोह इत्यादि दर्शनेसामान्योपयोगरूपगुणरोधयतीत्येवशील्दर्शनरोधदर्शनावरणीयकर्म सुहमाइक्खायगे सूक्ष्मसपरायथाख्यातलक्षणमार्गणाद्वये दर्शनावरणीयचतुष्कनिद्राप्रचलाद्वयप्रकृतिषट्क उदयेप्राप्यते केवलदुगेकेवलज्ञानकेवलदर्शनल-

क्षणायामार्गणायादर्शनावरणीयस्योदयाभाव सेषासुअष्टपचाशत्‌मार्गणासुदर्शनावरणीयकर्मणोनवप्रकृतय उदयेमाप्यते ॥ ३६ ॥

टवार्थ —दर्शनावरणीयकर्म सूक्ष्मसपरायगुणठाणे यथाख्यात मार्गणाये दर्शनावरणी ४ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिकेवल ४ ए च्यार आवरण निद्रा १ प्रचला १ ए ६ नो उदय छे, केवल-दुगने विषे दर्शनावरणीकर्मनो अभाव छे, शेष अठावनमार्गणाए नवनो उदय छे, दर्शनावरणीये नवे प्रकृतिनो उदय लाभे ॥ ३६ ॥

सव्वासुवेअणीए, उदयदुगनोअगोअउदयं च।
निरएथावरतिरिए, चउजाईअसन्निठाणेसु ॥ ३७ ॥

टीका—सव्वासुत्ति सर्वासुद्विषष्टिमार्गणासु वेदनीयकर्मप्रत्ययाइतिवेदनीयकर्मण प्रकृतिद्विकउदयेमाप्यते, नीचैर्गोत्रउदयचेनिचपुन नरकगतिमार्गणायापृथिव्यादिपचस्थावरकायमार्गणायातिर्यग्गतिमार्गणायाएकेंद्रियविकलेंद्रियजातिचतुष्कमार्गणाया असज्ञिमार्गणायाएवद्वादशमार्गणास्थानेपुनीचैर्गोत्रस्यउदय माप्यते,नउच्चैर्गोत्रोदय उच्चैर्गोत्रविपाकस्तुअष्टप्रकार प्रज्ञापनोक्तस्तस्यतत्राभावात्नीचैर्गोत्रवि पाकस्यनवप्राप्यमाणत्वात् ॥ ३७ ॥

टवार्थ —सर्वमार्गणाए वेदनीयकर्मनी बे प्रकृतिनो उदय छे, शाता १ अशाता २ ए वे जाणवी, नीचगोत्रनो उदय छे ए मार्गणाए ते कहे छे, नरकगतिथावर पाचमे तिर्यचगति एकेंद्री बेंद्री तेंद्री चोरेंद्री ए कहीये, च्यार जाति असज्ञिमार्गणा विषे एक नीचगोत्रनो उदय छे एव ॥ ३७ ॥

मणनाणकेवलिदुगि, सजमपणगेसुउच्चउदयोत्ति।
सेसासुगोयजुअल, देसअसन्नीसुआउदुग ॥ ३८॥

टीका—मणनाण इत्यादि मन पर्यवज्ञानकेवलद्विकसयमपंचक-लक्षणासुमार्गणासुउच्चैर्गोत्रोदय नीचैर्गोत्रोदयस्यपचमेगुणस्थाने प्राप्यतेसर्वथैवनिवृत्तत्वात् शेषासुद्विचत्वारिंशत्मार्गणासुगोत्रयुगल-उच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रलक्षणप्रकृतिद्वयउदयेप्राप्यतेइति आयु कर्मविषयेतु देशविरतिमार्गणाअसज्ञिमार्गणासुआउदुगतिर्यग्मनुष्यायुरूपआयु-द्विकउदयेप्राप्यते ॥ ३८ ॥

टबार्थ—मन पर्यवज्ञान १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन पाच सयम एटली मार्गणाए एक उच्चगोत्रनो उदय छे एव १९ शेष मार्गणाइ उचगोत्र नीचगोत्र बे कर्मनो उदय छे, देशविरति मार्गणाइ तथा असज्ञिमार्गणाइ आऊखा २ नो उदय छे, एक तिर्यचनो एक मनुष्यनो ए बे आऊखानो उदय छे ॥ ३८ ॥

गईजाईचउसुथावरि, सयममणनाणकेवलदुगमि।
एगतेउतिगेसु, वेयतिगेतिन्निउदयाई ॥ ३९ ॥

टीका—गईजाईचउसु इत्यादि गतिर्नरकादिस्तत्रएकैकआयु उदयेप्राप्यते, तत्रनरकगतौनरकायु तिर्यग्गतौतिर्यगायु मनुष्यगतौ-मनुष्यायु देवगतौदेवायु उदयेप्राप्यते जातिषुएकेंद्रिय द्वींद्रियत्री-द्रिय चतुरिंद्रियलक्षणासुचतसृषुथावरेत्तिपृथ्व्यादिपचस्थावरकायमा-र्गणासुएकतिर्यगायु उदयेप्राप्यते, सयमपचकेसामायिकादिकेमन प-र्यवज्ञानेकेवलज्ञानदर्शनद्विकाष्टमार्गणासुएकमनुष्यायुर्लक्षणउदयेप्रा-प्यते तेउत्तिगेतेजोपद्मलेश्याशुक्ललेश्यालक्षणेलेश्यात्रिकेनरकायुर्वि-

नारीणिनरतिर्यगदेवलक्षणान्यायूपिउदयेमाप्यन्तेनेयतिगेत्तिवेदनिवे-
नीणिनीणिआयूपिउदयेभवन्तिनपुसकवेदेदेवायुर्विनाग्रीणिस्त्रीवेदेपुरु-
षवेदेनरकायु विनात्रीणिआयूपिउदयेमाप्यते ॥ ३९ ॥

टवार्थ —गति च्यार ने पोना २ नो एक आउखानो उदय छे जाति च्यारे एकेन्द्रि, विकलेन्द्रि, एहने विषे एक तिर्यच आउखानो उदय छे थावर पाचमे एक तिर्यचायुनो उदय छे सपम ५ मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, केवलदर्शन एटली मार्गणाये एक मनुष्यायु उदय छे तेजोलेश्या, पद्मलेश्या, शुक्ललेश्याये नारकायु विना तीन आऊखानो उदय छे. वेदनीने तीन आऊखानो उदय नपुसकवेदे देवायु विना २ नो उदय स्त्रीवेदे पुरुषवेदे नरकायु विना तीन आऊखानो उदय छे ॥३९॥

चत्तारियसेसासु, तिरिनिरिपचेंदियोगत्तसअजये ।
चरकुदुहारगलेसे, भवसन्नीसुअडवीस ॥ ४० ॥

टीका—चत्तारिअ इत्यादिशेपासुत्रयस्त्रिंशन्मार्गणासुचत्वारि-
आयूपिउदयेभवति जीवभेदेनएकजीवस्यएकस्मिन्भवेएकस्यैवायुष
उदयोभवतिआयु कर्मण प्रदेशोदय विपाकोदयविनानास्ति-
सक्रमोपिनास्तिएवज्ञेय अथमोहोदयविभजनाह तिरिइत्यादि ति-
र्यग्नरगतिपचेन्द्रियजातियोगत्रिकत्रसकायाविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनाहा-
रकलेश्यापट्कभव्यसज्ञिलक्षणासुएकोनविंशतिमार्गणासुमोहनीयक-
र्मण अष्टाविंशतिप्रकृतय उदयेमाप्यते मार्गणोदयश्चमार्गणागना-
'नेकजीवापेक्ष एकजीवोदयस्तु उदयभगकात्ज्ञेय ॥ ४० ॥

टवार्थ —शेषमार्गणाये च्यार आऊखानो उदय छे. हवे

मोहमार्गणा कहे छे तिरिगति मनुष्यगति पचेन्द्रि मार्गणाये तीन योग त्रसकायमार्गणाने विषे अविरतिमार्गणाइ चक्षु १ अचक्षुदर्शनमार्गणाइ आहारकमार्गणाये लेश्या ६ ने विषे भव्यमार्गणाये पुरुषवेदइ सञ्ज्ञीमार्गणाइ मोहनीकर्मनी अठावीस प्रकृतीनो उदय छे ॥ ४० ॥

नपुविणुदेवगईए, निरएपुरसित्थिहीणइगविगले।
थावरअसन्निएसु, असम्ममीसायचउवीस ॥४१॥

टीका—नपुविणु इत्यादि ॥ देवगतौनपुंसकवेद विनासप्तविंशतिर्मोहप्रकृतय उदयेप्राप्यते निरएत्तिनरकगतौपुरुषवेदस्त्रीवेदविनाषड्विंशति उदयेइगत्तिएकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय स्थावरपंचकासंज्ञिलक्षणासुदशसुमार्गणासुपुरुषस्त्रीवेदविनापड्विंशति असम्मत्तिसम्यग्मोहमिश्रमोहविनाचतुर्विंशति उदयेप्राप्यन्ते ॥ ४१ ॥

टबार्थ—देवगतिमार्गणाये नपुंसकवेदनो उदय नथी नरकमव्ये पुरुषवेद १ स्त्रीवेदविना २६ प्रकृतिनो उदय छे, मोहनिनो एकेन्द्रिय १ विकल ३ थावर ५ असञ्ज्ञीमार्गणाये नपुसकवेदनो उदय छे, स्त्रीवेद पुरुषवेद ए बे वेदनो उदय छे नही, अने समकीतमोहनी १ मिश्रमोहनी १ ए ४ विना चोवीस प्रकृतिमोहनीनो उदय छे ॥ ४१ ॥

वेएदुवेअहीणा, अवारकमायाकसायचउगेसु।
मणनाणदुसामईए, चउदसथीहीणपरिहारे॥४२॥

टीका—वेएदुवेअहीणा इत्यादि ॥ वेदत्रिकेवेदद्वयहीनातत्रपुरुषवेदेस्त्रीनपुंसकवेदविनापड्विंशति स्त्रीवेदेपुरुषस्त्रीवेदविनापड्-

विंशति नपुंसकवेदेपुरुषस्त्रीवेदविनापञ्चविंशति उदयेभवति कसायचउगेत्तिकषायचतुष्केषु क्रोधमानमायालोभलक्षणेषुअनंतानुबंधिकषायद्वादशविनाषोडशउदयेप्राप्यन्ते मन पर्यवज्ञानसामायिकछेदोपस्थापनीयचारित्रेसज्वलनचतुष्कहास्यषट्कवेदत्रिकसम्यग्मोहलक्षणचतुर्दशप्रकृतय उदयेप्राप्यते परिहारविशुद्धौस्त्रीवेदविनाता-एवत्रयोदशभवन्ति ॥ ४२ ॥

टबार्थ —पुरुषवेदमध्ये स्त्रीवेद नपुंसकवेदनी २६ नो उदय छे स्त्रीवेदमध्ये पुरुष नपुंसक विना २६ नो उदय छे नपुंसकवेदमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद विना २६ नो उदय छे क्रोधकषायमध्ये मान ४ माया ४ लोभ ४ ए बार विना १६ नो उदय छे मानमध्ये क्रोध ४ माया ४ लोभ ४ ए बार विना १६ नो उदय छे इम मायामध्ये १६ उदय इम लोभमध्ये १६ उदय छे मन पर्यव ज्ञानमध्ये सामायिकना भेद जाणवा १५ उदय छे परिहार विशुद्धिमध्ये स्त्रीवेद विना १४ उदय छे ॥४२

नाणतिगओहिदसे, वेअगसम्मेअमिच्छअणमीसा।
सम्मविणुदुसम्मत्ते, मीसजुआतेउमीस्सम्मि॥४३॥

टीका—तथाज्ञानत्रिकेवधिदर्शनेवेदगत्तिवेदकेक्षायोपशमसम्यग्दर्शने अमिच्छात्तिनविद्यन्ते मिथ्यात्वानंतानुबंधिमिश्रा इत्यनेनमिथ्यात्वमोहनीयअनंतानुबंधिचतुष्टयमिश्रमोहविनाद्वाविंशति उदयेप्राप्यन्ते,दुसम्मत्तेइतिद्विसम्यक्त्वेक्षायिकोपशमलक्षणेसम्यक्त्वद्विकेसम्मविणुइतिसम्यग्मोहनीयविनाइत्यनेननवेदकसम्यग्प्रायोग्याद्द्वाविंशति । सम्यग्मोहनीयरहिताएकविंशति उदयेप्राप्यते उभयोरपिनिरतिचारित्वात् जातिचारिताचक्षयोपशमगुणवतएवभवति मिसजुआइति-

वेउत्तिताएकविंशतिर्मिश्रमोहोदयेनयुक्ताद्वाविंशतिर्मोहस्यउदय मिश्रेप्राप्यते ॥ ४३ ॥

टवार्थ —मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ अवधिज्ञान अवधिदर्शन वेदक समकित ए मार्गणाए मि॰॥न १ अनन्तानुबंधि ४ मिश्रमोहनी विना बावीस प्रकृतिनो उदय छे, वे समकितमध्ये उपशम तथा क्षायिकमध्ये समकितमोहनी विना २१ प्रकृति मोहकर्मनी उदय छे, मिश्रदृष्टिमार्गणाए मिश्रमोहनी मेलीइ तेवारे बावीसनो उदय छे ॥ ४३ ॥

केवलिदुगहरकाए, उदयाभावोअनाणतिगेसु ।*
छगसगवीसदेसे, अट्ठारसगवीसमणहारे ॥४४॥

टीका—णोकेवलिहस्खाए इत्यादि केवलत्तिकेवलज्ञानकेवलदर्शनयथाख्यातचारित्रिणोनमोहोदय उपशातमोहगुणस्थाने यथाख्यातचारित्रवतो। नमोहोदय सर्वथोपशात बातूमनिपातश्चस्थित्यद्धाक्षयकारणेनसत्ताम्थितत्वेनपुन प्रादुर्भाव क्षीणमोहादिषुमोहस्यबंधोदयोदीरणसत्ताया सर्वथाअभावातनप्रनिपात इति सुहमिगलोभोत्ति, सूक्ष्मसपरायचारित्रेइगतिएकएवसज्वलनलक्षणस्यलोभस्यउदय, अज्ञानत्रिकेछगसगवीसत्तिषड्विंशति सप्तविंशतिर्वाउदयेभवन्ति, तत्रयेषामतेमिश्रेज्ञानमिच्छंतितन्मतेसम्यगमोहमिश्रमोहोदयविनाषड्विंशति, येचमिश्रेअज्ञानमिच्छंतितन्मतेमिश्रेसम्यग्मोहविनासप्तविंशति उदयेभवन्ति, देसेत्तिदेशविरतौअननानु-

* पाठांतरे
सुहमिगलोभोअनाणतिगेसु ।

वन्यमत्याख्यानद्वयकषायाष्टकमिश्रमिथ्यात्वोदयविनाशेषा अष्टादशउदयेभवति, सगवीसत्ति, अनाहारकमार्गणाया मिश्रमोहोदय विनासप्तविंशति उदयेभवति ॥ ४४ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ यथाख्यातचारित्रे मोहनीकर्मना उदयनो अभाव छे, अज्ञानतीनने विषे केटलाएक आचार्यमते समकितमोहनी १ मिश्रमोहनी १ ए बे विना छवीसनो उदय छे, केटलाएक आचार्य मिश्रगुणठाणे अज्ञान तीन माने तेहने समकितमोहनी विना सत्तावीसनो उदय छे, अढारसगदेसविरतिमध्ये अढारनो उदय छे, अनतानुबधि ४ अप्रत्याख्यानी ४ समकितमोहनी १ मिश्रमोहनीए १० उदय नथी तिणे १८ नो उदय छे, अनाहारकमार्गणाये मिश्रमोहनी विना सत्तावीसनो उदय छे ॥ ४४ ॥

सासाणेपणवीस अभवमिच्छेसमिच्छछवीस ।
नामस्सपयडीओ, गुणठाणविहीउनायवा ॥ ६५ ॥

टीका—सासाणे इत्यादि सास्वादने दर्शनमोहनीयत्रयोदयविनापचविंशति उदयेभवन्ति, सास्वादनस्योपशाताद्धाशत्वात्, अनतानुबन्ध्युदयेदर्शनमोहत्रिकानुदयेचसास्वादनप्राप्ति । अभव्यमार्गणायामिथ्यात्वोदयसहिता पड्विंशति मिथ्यादर्शनमार्गणायामिथ्यात्वोदयसहिता पड्विंशति इत्युक्तमार्गणासुउदयस्वामित्वमोहस्य, साम्प्रतनामप्रकृती मार्गणासुउदयत्वेनविभजन्नाह ॥४५॥

टबार्थ—दर्शनमोहनी तीन विना सास्वादनगुणठाणे २५ पचवीसनो उदय छे, दर्शनमोहनी अभव्यमार्गणाये तथा मिथ्या-

त्वमार्गणाये मिथ्यात्वमोहनी मेळीये तेवारे २६ नो उदय छे, हवे नामकर्मनी बासठी मार्गणाये उदयनी प्रकृति कहे छे, गइइंदिय ए गाथाने अनुक्रमे तीस ऊप्पनपन्नास एगाथा जोडीने अर्थ करवो ॥ ४५ ॥

तीसअडदुपन्नासा, दुसुतीत्तीस(चउतिगतीस)तिगे-
सुपणतीस ।
गुणसट्टीदुगतीस, इगतीसदोसुतीसच ॥४६॥

टीका—तिसअडत्ति ॥४७॥

टवार्थ —नरकगतिए तीस प्रकृतिनो उदय छे तिर्यचगतिए अठावन नामकर्मनो उदय छे मनुष्यने पचाश नामप्रकृतिनो उदय छे, देवगतिए तेत्रीस प्रकृतिनो उदय छे नेन्द्री, तेन्द्री, चोरेन्द्रीय ए तीन मार्गणाए ३५ प्रकृतिनो उदय छे पचेन्द्रिने गुणसठिनो उदय छे पृथ्वीकायने बत्तीसनो उदय छे, अपकायने इगतीसनो उदय छे तेउकायने वाउकायने तीस प्रकृतिनो उदय छे ॥ ४६ ॥

बत्तीसा(दुगतीसा)बासट्ठी, चउसगसट्ठी(पन्ना)त-
हेवसगसट्ठी ।
छपन्नाचउपन्ना, चउसट्ठीचउसुछासट्ठी ॥४७॥

टीका—दुगतीसा ॥ ४७ ॥

टवार्थ –वनसपतीकायमध्ये बत्तीस प्रकृतिनो उदय छे, त्रसकायने बासठी प्रकृतिनो उदय छे, मनोयोगमध्ये चउपन्ननो

उदय छे वचनयोगे सत्तावननो उदय छे तिमज काययोगे सडसठीनो उदय छे, पुरुषवेदने छप्पननो उदय छे स्त्रीवेदने चोपन्ननो उदय छे, नपुसकवेदने चोसठीनो उदय छे कषाय ४ ने छासठीनो उदय छे ॥ ४७ ॥

तिसुसगवन्नाचोयाल, अडतीसदोसुदुतिचोसट्ठी ।
पणपन्नदुचउचत्ता, बायालीदोसुगुणचत्ता ॥४८॥

टीका--तिसुसगवन्ना ॥ ४८ ॥

टबार्थ --मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधि ३ ए तीन मार्गणाने विषे सत्तावननो उदय छे मन पर्यवज्ञाने ४४ नो उदय छे केवलज्ञाने ३८ नो उदय छे मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ बे मार्गणाये चोसठीनो उदय छे विभगे पचावननो उदय छे चारित्र बेमध्ये सामाइक छेदोपस्थापनीयमध्ये चौमालीस प्रकृतिनो उदय छे परिहार विशुद्धिमध्ये ४२ प्रकृतिनो उदय छे सूक्ष्मसपराय १ यथारयात ए बेमध्ये ३८ नो उदय छे ॥ ४८ ॥

चोयालाचोसट्ठी, चउपन्नछसट्ठिसत्तपन्नाय ।
अडतीसतिलेसासु, चउसट्ठिछसट्ठिँभियणाए॥४९॥

टीका--चोयालाचो इत्यादि ॥ ४९ ॥

टबार्थ --देशविरते चौमालीसनो उदय छे अविरतिमध्ये चोसठीनो उदय छे चक्षुदर्शने चोपन्ननो उदय छे अचक्षुदर्शने छासठीनो उदय छे अवधिदर्शनमध्ये सत्तावननो उदय छे,

केवलदर्शनमध्ये अडतीसनो उदय छे कृष्णनीलकापोत ए तीन लेश्यामध्ये च्यार गुणठाणा मानिये तो आहारक २ जिन विना चोसठीनो उदय छे अथवा छ गुणठाणा मानिये तो जिननाम विना छासठीनो उदय छे एमजना जाणवी ॥ ४९ ॥

सगपणछपन्नासा, सगचउसट्ठीतहेवपणपन्ना ।
दुसुसग(सगअडवन्ना)वन्नाइगपन्न, गुणवन्ना(सट्ठी) तहयचउसट्ठी ॥ ५० ॥

टीका—सगपणछपन्नासा इत्यादि ॥ ५० ॥

टबार्थ —तेजोलेश्याए सत्तावननो उदय छे, पद्मलेश्याए ५५ नो शुक्ललेश्याए ५६ प्रकृति नामकर्मनो उदय छे भव्यने सडसठीनो उदय छे अभव्यने चोसठीनो उदय छे उपशमने पचावननो उदय छे क्षायिकने क्षयोपशमने सत्तावननो उदय छे सास्वादन गुणे इगुण पचासनो उदय छे तिम वली मिथ्यात्व गुणठाणे चोसठीनो उदय छे ॥ ५० ॥

अडवन्नाछायाला, तिसट्ठीपण(अड)तिसनामकम्मस्स।
उदओमग्गणठाणे, गईआईकमेणणेयव्वो ॥५१॥

टीका—अटवन्ना इत्यादि । एव गाथाधन्कस्यसमुदिताएवव्याख्या तन्नरकगतीनाम्नस्त्रिंशत्, तिर्यग्गतौअष्टपचाशत्, मनुष्यगतौद्विपचाशत्, देवगतौचतुस्त्रिंशत्, एकेन्द्रियेनयस्त्रिंशत्, विकलत्रिकेपचत्रिंशत्, पचेन्द्रियेएकोनषष्टि पृथ्व्याद्यात्रिंशत्, अप्कायेएकत्रिंशत्, अग्निकायेएकोनत्रिंशत्, वायुकायेत्रिंशत्,

वनस्पतिकायेद्वात्रिंशत्, त्रसेद्विषष्टि मनोयोगेचतु पचाशत्, वचनयोगेसप्तपचाशत्, काययोगेसप्तषष्टि पुरुषवेदेषट्पचाशत्, स्त्रीवेदेचतु पचाशत्, नपुसकवेदेचतु षष्टि कषायचतुष्केषट्षष्टि, त्रिषुमत्यादिज्ञानेषुसप्तपचाशत्, मन पर्यवज्ञानेचतुश्चत्वारिंशत्, केवलज्ञानेअष्टत्रिंशत्, दोसुत्ति, द्वयोर्मतिज्ञानश्रुतज्ञानयोश्चतु षष्टि विभगेपचपचाशत्, इईत्तिसामायिकच्छेदोपस्थापनीयेप्रत्येक चतुश्चत्वारिंशत्परिहारेद्विचत्वारिंशत्, सूक्ष्मसपराययथाख्यातयो एकोनचत्वारिंशत्, चत्वारिंशच्चदेशविरताचतुश्चत्वारिंशत्, अविरतौचतु-षष्टि चक्षुर्दर्शनेचतु षष्टि, अचक्षुर्दर्शनेषट्षष्टि अवधिदर्शनेसप्तपचाशत्, केवलदर्शनेअष्टत्रिंशत्, तिलेसासुत्तिकृष्णनीलकापोतलक्षणासुतिसृषुलेश्यासुयदिगुणस्थानचतुष्टयमगीक्रियते तदाजिननामाहारकद्विकोदयविनाचतु षष्टि अथवाप्रमत्तयावत् षड्गुणस्थानकानिमन्यन्तेतदा जिननामविनाषट्षष्टि एवभजनाभवति, अत्रयेचतुष्टयइच्छति तेप्रतिपद्यमानकायलेश्या नयतुगुणस्थानचतुष्टयेभवति, पूर्वप्रतिपनाद्यलेश्यानयतुप्रमत्तयावत्प्राप्यते, यद्यपिविशुद्धिवशताहीयमानाप्रतन्वीतथापिसत्वेनगृहीतत्याइतिपूर्वप्रतिपन्नापेक्षया " छिज्जमाणेछिन्ने " एतद्वचनापेक्षयागत्वरत्वात्नागीकार, यथासास्वादनस्याज्ञानकर्मग्रथिकानामिति भावनयापेक्षया तुसूक्ष्माशस्यापिसत अग्रहणेदोष तेनग्रहणयथासिद्धातेसास्वादने ज्ञानइति तेजोलेश्यायासप्तपचाशत् पद्मलेश्यायापचपचाशत्, शुक्लेश्यायाषट्पचाशत्, भव्येसप्तसप्ति, अभव्येचतु षष्टि उपशमेसम्यग्दर्शनेपचपचाशत्, वेदकेसप्तपचाशत्, क्षायिकेअष्टपचाशत्, मिश्रेएकपचाशत् सास्वादनेएकोनषष्टि मिथ्यात्वेचतु षष्टि, सज्ञिमार्गणायाअष्टपचाशत्, असज्ञिमार्गणायाषट्चत्वारिंशत्, आहारकेत्रिषष्टि अनाहारकेअष्टत्रिंशत्, एवनामकर्मण उदय मार्गणा-

स्थानकेगत्यादिक्रमेणज्ञातव्य इत्युक्तमुदयस्वामित्वमार्गणासु, सा-
म्प्रतमुदीरणास्वरूपनिदर्शयन्नाह ॥ ५१ ॥

टबार्थ —सज्ञीनेजाति ४ आनुपूर्वी ४ आतपविना अठा-
वननो उदय छे, असञ्ज्ञिने छेतालीसनो उदय छे, आहारकने
त्रेसठीनो उदय छे, अनाहारकने पात्रीसनामकर्मनी प्रकृतिनो
उदय छे, उदयनि प्रकृतिमार्गणाने विषे गति आदिकने अनुक्रमे
जाणवी ते समजी लेज्यो ॥ ५१ ॥

मूलोदीरणठाणा, सडअडछपचदुन्निनेयव्वा ।
उत्तरउदीरणाए, उदयसमापयडिसरााय ॥ ५२ ॥

टीका—मूलोदीरण इत्यादि तत्रमूलोदीरणास्थानानिपच, प्र
थमसप्तकर्मोदीरणारूप तत्रयेजीवाभवान्वेएकावलिकाशेषेमातग्रा-
सस्यप्रथममुदीरितस्योदयात् शेषस्याभावात् नउदीरणातेनआयुर्व-
र्जसप्तकर्मोदीरणारूप प्रथमस्थानसर्वससारिणासर्वमपिभवयावत् अ-
ष्टाना उदीरणातत्रअमिनवायुरुदयेतुउदीरणोदयश्चैकमेवसमयनसम-
यातरयदाचअप्रमत्तामिवानेगुणस्थानेप्राप्तस्तदाविशुद्धिमात्रल्येनवेद-
नीयायुष नोदीरणा, तेनपण्णामेवोदीरणा, सूक्ष्मसपरायेतुसज्वल-
नलोभस्यचरमग्रासोदयात् तेनवेदनीयायुर्मोहनीयोदीरणाभावात्,
पचानामेवोदीरक क्षीणमोहस्यप्रथमासरयेयसमयपयावत् पचाना-
मुदीरणाक्षीणमोहस्यावलिकाशेषे सतिज्ञानावरणीयदर्शनावरणीया-
तरायस्योदीरणा व्युच्छिन्ना, तेननामगोत्रयोर्द्वयोरुदीरणाभवति, मा-
र्गणासुउदीरणास्थानानिगुणस्थानकवत्भावनीयानि, तत्रमनुष्यग-
तौपचेंद्रियेत्रसकायेयोगत्रयेमत्यादिज्ञानचतुष्टये दर्शनत्रिकेशुक्ले-
श्यायाभव्यक्षायिकाहारकसज्ञिलक्षणासुअष्टादशसुसर्वाण्यप्युदीरणा-

स्थानानि, नरकादिगतित्रिकइंद्रियचतुष्ककायपंचकअज्ञानत्रिकदेशविरताविरतिलेश्यात्रिकमाद्यमभव्यसास्वादनमिथ्यात्वासंज्ञिलक्षणासुसप्तअष्टौद्वेउदीरणास्थानेवेदत्रिककषायत्रिकसामायिकछेदोपस्थापनीयतेज पद्मवेदकमार्गणासुसप्तअष्टौपदइति त्रीणिउदीरणास्थानानि, सज्वलनलोभेसप्तअष्टौपट्पच, परिहारेअष्टौषट्, सूक्ष्मसपरायेषट्पच, यथाख्यातेपचद्वेउपशमेअष्टौपचषट्, मिश्रेअष्टौ, अनाहारेद्वेकेवलद्विकेद्वयोरेवउदीरणास्थानानिउत्तरोदीरणाया संक्षिपन्नाह ॥ ५२ ॥

टबार्थ ---उदीरणाना मूलथानक ५ छे सातनो आऊखा विना आऊखा सहीत आठनी उदीरणा आऊखावेदनी विना सातमे गुणठाणे आठमे नवमे गुणठाणे ६ नी उदीरणा छे, मोहनी विना दशमे इग्यारमे बारमाने प्रथमभाग पर्यंत पाचनी उदीरणा, ज्ञानावरणीय १ दर्शनावरणीय २ अतराय विना बेनी उदीरणा तेरमे गुणठाणे छे, प्रकृति उत्तर तेहनी सख्या १२२ नी उदयनी रीते जाणवी ॥ ५२ ॥

मणुआउवेयणीय, अपमत्ताओपरतुनोदीरइ ।
वारसअयोगिपयडिनो, दीरइअकरणोविरीओ ॥५३॥

टीका---मणुआऊ इत्यादि मनुष्यायुर्वेदनीयद्वयअप्रमत्तात् परउपरिनउदीरयति, अप्रमत्तादिषुविशुद्धवीर्यत्वात्व्यानाद्यालवकत्वाच्चपूर्वस्वतएवोदयावलिकाक्षिप्तवेदनीय तथा मनुष्यायु उदयैलभ्यतेनोदीरणाकरणेन तथा द्वादशअयोगिगुणस्थानस्या प्रकृतयउदयेसतिनोदीरणामा येनकरणवीर्येणनामचलवीर्येणोदीरणाभवति, अयोगिगुणस्थानकेकरणवीर्यस्याभावात् अकरणवीर्यत्वेनोदीरणाइति तथाचचरमग्रासत्वान्नोदीरणाभवति ॥ ५३ ॥

टवार्थ —मनुष्यआयुवेदनी २ प्रमत्तगुणठाणा सुधी उदीरे, अप्रमत्तथी पछी उदीरे नही, अयोगिगुणठाणे बार प्रकृतिनो उदय छे तेमाटे उदीरणा नथी ॥ ५३ ॥

सेसासवापयडी, आवलियसेसगाओउदयम्मि ।
नोदीरइअपडीगाही, पडिग्गहीउदयतुछाओ ॥५४॥

टीका—सेसासवा इत्यादि । शेषा सर्वा सप्ताधिकशतरूपा प्रकृतय यावत्त क्षपककालात् आवलीभोगयोग्यादलिका अवशेषा-उदयरूपेभवति तदानोदीरणाचरमग्रासत्वाद्वृतिना का अपतद्ग्राहिण्य अपतद्ग्राहित्वतुयासामप्रकृतीनाचरमोंश अ यमकृतिपुनस-क्रामतिनाअपतद्ग्राहिण्य सज्वलनलोभप्रमुखा पुन यासामप्रकृतीनाचरमोंश अन्यासुप्रकृतिपुसक्रम्यक्षपयति, पुरिसोकोहेकोहं-माणेचमाणमायाएमायलोभेएतद्रूपेणता प्रकृतय पतद्ग्राहिण्य-इत्युच्यते, ता ाचरमोग्रास अ यसक्रमणेनअन्यप्रकृतित्वप्राप्यउदयत्वेनावलिका शेषेउ ीरणाऽभाव किंतुउदयोदीरणाया समकालमेवाभाव अन अपतद्ग्राहीचरमावलिकायाउदय भवतिपरनउदीरणाभवतिपा पतद्ग्राहिण्य तासाउदयोदीरणा समकालएवव्युच्छिद्यते, एवउत्तरोदीरणास्वामित्वस्वन उदयस्वामित्वत्वभा य अयमार्गणासुचतुरशीतिलक्षयोनिसख्याविभ नन्नाह ॥ ५४ ॥

टवार्थ —शेष जे प्रकृति रही ते जेवारे उदयमध्ये एक आवली शेष रहे तेवारे उदयपणे छे, परउदीरणा नथी, जे ते काले सत्तामध्ये अनुदितदल रह्या नथी जे उदीरे तेमाटे आवलीका शेषकाले उदीरणा पण नथी, अपडीगाहि (अप्रतिग्राही) प्रकृतिने ए रीते छे ते अपडिगाहीनो छेहलो अश कोई मे न-

सक्रमे तेमाटे इम छे, अने पडिगाहिप्रकृतिने तो उदय तथा उदीरणा भेलीज छे उदयनो अनतमो भाग सवली प्रकृतिमे भेली खपावे छे तेमाटे हवे चोरासीलाख जीवाजोनीनु स्वरूप कहे छे ॥ ५४ ॥

पुढवाईसुपत्तेय, सगवणपत्तेयणतदसचउद ।
विगलेसुदुदुसुरनारय, तिरिचउचउदसनरेसु ॥५५॥

टीका—पुढवाईसुपत्तेय इत्यादिपूर्वंव्याख्याताएव ॥५५॥

टबार्थ—पृथिवीकायनी सातलाख योनि छे, अपकायनी सातलाख योनि छे, तेउकायनी सातलाख योनि छे, वाउकायनी सातलाख योनि छे, वनस्पतिकायमव्ये प्रत्येक वनस्पतिनी १० लाख योनि छे, साधारण वनस्पतिनी १४ लाख जीवायोनि छे, बेन्द्री, तेन्द्री, चौरेन्द्री एहनी प्रत्येके बे बे लाख योनि छे, देवताने च्यार लाख, नारकीने च्यार लाख, तिरियचने ४ लाख तथा मनुष्यने १४ लाख योनि छे ते मिलायथका चोरासी लाख जीवायोनि छे गतिच्यारमाहे २६ लाख जीवायोनि इद्रीमार्गणाये सवली लाभे काय ६ माहे सवली लाभे मनोयोगे २६ लाख, वचनयोगे ३२ लाख, काययोगे सरव लाभे, पुरुषवेदे २२ लाख लाभे, स्त्रीवेदे २२ लाख लाभे, नपुसकवेदे ८ लाख लाभे, कषाय ४ माहे सरव लाभे ॥५५॥

एगिंदिएसुपचसु, वारसगतिसत्तअठवीसाय ।
विगलेसुसत्तअडनव, जलखहचउपयउरगभुयगे ५६॥

टीका—एगिंदिएसुइत्यादि अथकुलकोटिमानमाह, एकेंद्रियेषु

पचसुपृथिव्यादिषुपृथिवीकायेद्वादशलक्षा कुलकोटीना, आप्कयेसप्तलक्षा कुलकोटीना, अग्निकायेत्रयोलक्षावायुकायेसप्तलक्षा वनस्पतिकायेअष्टाविंशतिलक्षा विगलेत्ति, द्वीन्द्रियादिद्वींद्रियेसप्तलक्षा त्रींद्रियेअष्टौलक्षा चतुरिंद्रियेनवलक्षा कुलकोटीना जलचरेसार्द्धद्वादशलक्षा, खचरस्यद्वादशलक्षाश्चतुष्पदस्यदशलक्षा कुलकोटीनाभवति, उर परिसर्पस्यदशलक्षा भुजपरिसर्पस्यनवलक्षा अमरस्यपड्विंशतिलक्षा नारकस्यपचविंशतिलक्षा कुलकोटीनाभवति सर्वत एकाकोटि सप्तनवतिलक्षा पचाशत्सहस्राणिकुलानाभवति, एवगाथाद्वयवाच्यम् ॥ ५६ ॥

टबार्थ—हवे कुल कोडी कहे छे, एकेन्द्रिमे पथविनी बारलाख कुल कोडी, अपकायने सातलाख कुल कोडी, तेउकायनी तीनलाख कुल कोडी, वायुकायने सातलाख कुल कोडी, वनस्पतिने अट्ठावीसलाख कुल कोडी, बेद्रीने सातलाख कुल कोडी, तेद्रीने आठलाख कुल कोडी, चौरेन्द्रीने नवलाख कुल कोडी, जलचरमे साढीबारलाख कुल कोडी, खेचरने बारलाख कुल कोडी जाणवी ॥ ५६ ॥

अड्ढतेरसबारस, दसदसनवगनरामरेनिरए।
बारसछवीसपणवीस, हुतिकुलकोडिलरकाइं ॥५७॥

टीका—अथमार्गणासुयोनिसख्यामाह । नरकगतौचत्वारोलक्षामनुष्यगतौचतुर्दशलक्षा, देवगतौचलक्षास्तिर्यग्गतौद्वाषष्टि योनय, एकेन्द्रियाणाद्विपचाशत्, द्वीन्द्रियेद्वे, त्रीन्द्रियेद्वे, चतुरिन्द्रियेद्वे, पचेन्द्रिये षड्विंशति, पृथिव्यादिषुचतुर्षु सप्तसप्त, वनस्पत्याचतुर्विंशति, त्रसेद्वात्रिंशत्, मनोयोगेषड्विंशति, वचनयोगेद्वात्रिंशत्,

काययोगेचतुरशीति, पुरुषस्त्रीवेदेद्वाविंशति, नपुंसकेअशीति कषायेषुचतुरशीति, रूपनयेषड्विंशति, मन पर्यवकेवलेचतुर्दश, अज्ञानद्वयेचतुरशीति, विभंगेषड्विंशति, संयमपंचकेचतुर्दश, देशविरतौअष्टदश, अविरतौचतुरशीति, चक्षुर्दर्शनेअष्टाविंशति, अचक्षुर्दर्शनेचतुरशीति, अवधिदर्शनेषड्विंशति, केवलदर्शनेच- तुर्दश, आद्यलेश्यात्रयेचतुरशीति, तेजोलेश्यायांषट्चत्वारिंशत्, पद्मशुक्लयोर्द्वाविंशति, भव्येअभव्येचचतुरशीति, दर्शनत्रयेमिश्रेच- षड्विंशति, सास्वादनेपंचपंचाशत्, मिथ्यात्वेचतुरशीति, संज्ञि- मार्गणायांषड्विंशति, असंज्ञिमार्गणायांपंचसप्तति, आहारका- नाहारकयोश्चतुरशीति, एवंकुलकोडीसंख्या अपियथासंभवंवक्तव्या तथाविज्ञेयाइति। सामान्येनयथासंभवं अत्रयथासंख्यमिति अत्र- योनिरुत्पत्तिस्थानंप्रथमाहारपुद्गलानां स्वरूपेणभाविता तेनअपर्याप्त पर्याप्तापेक्षयाभेदोनापेक्षित, मनुष्येषुकर्मभूम्यकर्मभूमिभेदोऽपिनापे- क्षित। प्रथमाहारयोग्यपुद्गलानांवर्णादितुल्यत्वेनयोनिस्तेननभेद- ताऽभवतिकुलकोटीक्वचित्भेदतासंभवेपिआगमेभिन्नत्वेनोक्तत्वात् अत्रापिनोक्त इतिउक्तेयोनिकुलकोटिद्वारे॥ ५७॥

टबार्थ —चौपदने दस लाख कुल कोडि, उरपरिसर्पने दस लाख कुलकोडि, भुजपरिसर्पगोहनोलीयाप्रमुखनी नवलाख कुल कोडी जाणवी, मनुष्यने बार लाख कुल कोडी, देवताने छवीस लाख कुल कोडी, नारकीने पचवीस लाख कुल कोडी, मिल्या सर्वे एक कोडी साडासत्ताणुलाख कुल कोडी छे॥ ५७॥

जोणीकुलकोडीओ, मग्गणठाणेसु जत्थसंभवइ।

विन्ने सामन्नेणजहासंख॥ ५८॥

टीका—अथमार्गणासुसत्ताद्वार मूलोत्तरभेदेनकथयन्नाह, अन- सत्ताद्वारस्यप्रथमवक्त येऽपियोनिकुलकोटिद्वारेपूर्ववर्णिते सूचीकटा- हन्यायेनचपृच्छकृम्पाशयक्रमेणवेति ॥ ५८ ॥

टबार्थ —योनि तथा कुल कोडी मार्गणास्थानके जे जिहा जिम सभवे ते तिहा तिम कहेवा सामान्ये विशेष एहना यत्नकर्यी जोइ लेवा ॥ ५८ ॥

तसनरपणिदियोगे, हरकाएसुक्कभवसन्नीसु ।
आहारेतिगसत्ता, दुगसतानाणदसेसु ॥ ५९ ॥

टीका—"तसनर" इत्यादि त्रसकायमनुष्यगतिपचेन्द्रियजा- तियोगनय यथाख्यानशुक्ललेश्याभ यक्षायिकसज्ञिआहारकलक्षणासु- तिगसत्ता त्रीणिसत्तास्थानानि, अष्टोउपशातमोहयावत् क्षपकश्रे- णौसूक्ष्मसपरायपर्यंतेमोहस्यसत्तैथाक्षयात्, क्षीणमोहेसप्तकर्मणासत्ता सयोगि अयोगिगुणस्थाने अघातिचतुष्टयसत्ता, दुगसत्ताइतिज्ञान- चतुष्केमत्यादिकेदर्शनत्रिकेद्वेसत्तास्थाने, अष्टौनयासप्त नचतूरूपासा- घकेवलिनाआसाचसप्तानामार्गणानाछेद्म(छद्म)स्थत्वात् ॥ ५९ ॥

टबार्थ —त्रसकायमनुष्यगति पचेद्रिजातियोग ३ यथा- ख्यात चारित्रशुक्ललेश्याभ य १ सज्ञीमार्गणाये आहारकमार्ग- णाये तीन सत्तास्थानक छे ८ तथा मोह विना ७ तथा घाति विना ४ नी सत्ता छे ज्ञान ४ दर्शन ३ ने विषे ८ तथा ७ वे सत्तास्थानक छे ॥ ५९ ॥

अट्ठचउअणहारे, केवलदुगिचउरसेसअडसता ।
निरएदेवाउविणा, तिरिएजिणहीणसताओ ॥६०॥

टीका—अट्ठचउ इत्यादि । अनाहारकमार्गणायाद्वेसत्तास्थाने तत्रअष्टानासत्ता अन्तरालगतिकानाचतसृणासत्ता, केवलिसमुद्धातायोगिगुणप्रतीत्य केवलदुगि, केवलज्ञान केवलदर्शनलक्षणासुमार्गणासुअघातिचतसृणासत्ता, शेषासुमार्गणासुअष्टौसत्ता, इत्युक्तामूलसत्ता, अथोत्तरसत्तास्थानान्याह, निरए नरकगतौनैरयिकाणादेवायुरहिता सप्तचत्वारिंशत्शतसत्तापाप्रकृतय भवन्तिइतिसंबन्ध, तिर्यग्गतौ जिनहीनत्ति, जिननामरहिता सप्तचत्वारिंशच्छतसत्ताप्राप्यन्ते, भवस्वभावादेवनहिजिननामसत्ताक तिर्यग्गतावुत्पद्यते ॥ ६० ॥

टबार्थ —अनाहारकिमार्गणाए आठ तथा ४ ए २ सत्तास्थानक छे केवलज्ञान १ केवलदर्शनमार्गणाये ४ सत्ता छे शेषमार्गणाये सर्वने आठनी सत्ता छे नरकगतिमध्ये देवनाना आउखानी सत्ता नथी शेष १४७ नी सत्ता तिरियचगतिमध्ये जिननाम सत्ता नथी शेष १४७ नी सत्ता छे ॥ ६० ॥

निरयाउविणादेवे, थावरतिगिजाईचउसुअजिणाय। देवनिरयाउहीणा, तेउजुयलेनराउविणा ॥ ६१ ॥

टीका—निरयाउविणादेवेइत्यादि ॥ निरयाउविणादेवे नरकायुर्विनासप्तचत्वारिंशत्शतदेवगतौसत्ताप्राप्यते, स्थावरत्रिकेपृथ्वीअपवनस्पतिरूपेजातिचतुष्के एकेंद्रियादिलक्षणेअजिणाय इतिजिननामरहिताचपुन देवनरकायुर्हीनापचचत्वारिंशत्शतसत्तापाभवति, तेउजुअले तेजोवायुकायलक्षणेनरायुविणाइति मनुष्यायुर्विनाचतुश्चत्वारिंशत्शतसत्तायाप्राप्यते, अतदेवद्विकनरकद्विकमनुष्यद्विकवैक्रियचतुष्काहारकचतुष्कजिननामइतिपचदशनामप्रकृतीनाआयु त्रिकसि-

असम्यग्मोहसत्ता तेजोवायुकायेनास्ति तथापिकर्मप्रकृतीसत्रमप्रदे-शसत्ताकस्यचित्अक्षपितकर्मांशस्यसभवति तेनोक्तापिप्रवाहन्या-रयायातुअष्टाविंशत्युत्तरशतसत्तायामाप्यते गइतसिवेउविहारनर-हीणातनवैक्रियोपलक्षिनदेवनिकनरकत्रिकेवैक्रियचतुष्कआहारकच-तुष्कमनुष्यत्रिकउपलक्षणेनउच्चैर्गोत्रमित्यादिग्रहणम् ॥ ६१ ॥

टबार्थ —देवगतिमध्ये नरकायु विना १४७ नी सत्ता छे, थान २३ पृथिवी १ अप २ वनस्पतिमध्ये जिननाम विना देवायु १ नरकायु विना एकसोपिस्ताळीसनी सत्ता छे । तेउ-कायवाउकायमध्ये देवतानो आऊखो १ नरकायु १ मनुष्यायु १ जिननाम एटलानी सत्ता नथी १४४ नी सत्ता छे ॥ ६२ ॥

सासणमीसअसन्निसु, जिणविणुआहारसम्मीसविणा।
अभवेरकायगसम्मे, सत्तविणु हुंति इगचत्ता ॥६२॥

टीका—सास्वादने तथा मिश्रेअसंज्ञिषु जिननामविनासप्त-चत्वारिंशनशतअभ येजिननामाहारकचतुष्कसम्यग्मोहविनाएकच-त्वारिंशत्शतसत्तायामाप्यते खवगेति क्षायिकसम्यग्दर्शनेसत्तविणु-अनन्तानुबंधिचतुष्कदर्शनमोहत्रिकलक्षणसप्तकविनाएकचत्वारिंशत्श-तसत्तायामाप्यतेइति ॥ ६२ ॥

टबार्थ —सास्वादन १ मिश्र १ तथाअसंज्ञीनेविषेजिननाम-विना १४७ नी सत्ता छे । आहारक ४ समकितमोहनी विना अभव्यमार्गणाये एकसो एकताळीसनी सत्ता छे । क्षायिकसमकि-तमध्येअनंतानुबंधी ४ मिथ्यात्वमोहनी १ मिश्रमोहनी १ सम-कितमोहनी १ ए सात विना एकसो एकताळीसनी सत्ता छे॥६२॥

केवलदुगिपणन्नीइ, खवगसुहुमेदुसयहक्खाए।
एगसयसेसासुअ, अट्ठाउसयचसतंसा ॥ ६३ ॥

टीका—केवलदुगिइत्यादि केवलज्ञानकेवलदर्शनेपचाशीति सत्तायाम्प्राप्यते त्रयोदशगुणस्थानप्रायोग्या सूक्ष्मसपरायचारित्रेक्षपकश्रेणिगतसूक्ष्मसपरायस्यद्व्यधिकशत सत्तायाम्प्राप्यतेऔपशमिकसूक्ष्मसंपरायस्यअष्टचत्वारिंशत्शतसत्तायाम्प्राप्यते तथाहक्खाएत्तियथाख्यातचारित्रे क्षपकश्रेणिगतस्यएकाधिकशत औपशमिकयथाख्यातस्यअष्टचत्वारिंशत्शत सेसासुअ शेषासुमार्गणासुअष्टचत्वारिंशत्शत सत्तायाभवति ॥ ६३ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ मध्ये पचाशीनी सत्ता छे, क्षपकश्रेणि सूक्ष्मसपरायने एकसोदोय १०२ नी सत्ता छे, उपशमश्रेणि सूक्ष्मसपरायने एकसो अडतालीसनी सत्ता छे, यथाख्यातचारित्रेक्षपकश्रेणीने एकसो एकनी सत्ता छे, उपशमश्रेणीने एकसो अडतालीसनी सत्ता छे, शेषमार्गणाये एकसो अडतालीसनी सत्ता छे ॥ ६३ ॥

सवासुगोयवेयणीय, केवलदुगिहीणनाणविग्घाण।
वीएकम्मे एउ, नव छ सताअहक्खाए ॥ ६४ ॥

टीका—इत्युक्तासर्वमार्गणासुसत्ता साम्प्रतज्ञानावरणादिकर्मणासत्तामार्गणासुविभज्यदर्शयन्नाह । सवासुगोयइत्यादि सर्वासुद्विषष्टिलक्षणासुमार्गणासुगोत्रवेदनीयस्यद्वयद्वयमसत्तायाम्प्राप्यते तेजोवायुकायेनीचैर्गोत्रएकाएवसत्त्वप्राप्यतेगाथायाअनुक्तमपि समतिकातोवाच्य केवलदुगिहीणत्ति केवलज्ञानदर्शनद्वयरहितासुशेषासुषष्टिमार्गणासुज्ञानान-

रणीय अनरायसत्तायामाप्यते केवलद्विके नमाप्यते ॥ वीएकम्मे- एगनीएत्ति द्वितीयेकर्मणिदर्शनावरणीयेएवज्ञानावरणीयवत्तूनवरयथा- रयाते औपशमिकयथाख्याते दर्शनावरणीदनवकस्यसत्ताक्षपकय- थाख्याते दर्शनावरणीयस्यसम्यानर्द्विनिद्राहिनापदम्हनिसत्ताएवसू- क्ष्मसपरायेऽपि ॥ ६४ ॥

टवार्थ —कर्मनी भिन्नभिन्न सत्ता कहे छे। गोत्रकर्म १, वेदनीकर्मनी सत्ता सर्व मार्गणा विषे छे। केवलज्ञान केवलदर्शन- मध्ये ज्ञानावरणीय २ अनरायनी सत्ता नथी, बीजी सर्व मार्ग- णाये ए बे कर्मनी सत्ता छे बीजो दर्शनावरणीयनी सत्ता, पिण केवलदुगमध्ये तथा यथाख्यातचारित्रमध्ये उपशमश्रेणिने नवनी सत्ता छे ॥ ६४ ॥

केवलदुगिहक्खाए, खीणेनोसत्तमोहकम्मस्स। सुहुमेअठवीसया, दुगंचअभवेअठवीस ॥ ६५ ॥

टीका—अथ मोहसत्तायाह ॥ केवलदुगिइत्यादि केवल- ज्ञानकेवलदर्शने तथा यथाख्यातेक्षीणेतिक्षपकेमोहस्यसत्तानभवति, औपशमिकेयथाख्यातेअष्टाविंशति, सत्कर्मा "सुहुमे" सूक्ष्मसपरायेवा- इतिपक्षान्तरेअष्टाविंशतिसत्कर्माउपशमश्रेणिमपेक्ष्यक्षपकसूक्ष्मसपरा- येएकः सज्वलनलोभ सत्तायामाप्यते अभवेय अभव्येसम्यग्मोहमि- श्रमोहविनाषड्विंशतिसत्तायन निपुजकरणेकृतेअष्टाविंशति सत्कर्मा- भवति तच्चभव्यानामेवभवति अभव्यस्यानादिनंमिथ्यात्वंभवनि- यथाप्रवृत्तिकरणयावत् नअपूर्वकरणादिनाग्रंथिभेद अभिन्नग्रंथिका- एवअभव्या अत षड्विंशतिरेवसत्ताभवति ॥ ६५ ॥

टवार्थ —केवलदुगने विषे केवलज्ञान १ केवलदर्शन२ए

केवलद्विक तथा क्षपकश्रेणि यथाख्यातमे मोहनीकर्मनी सत्ता नथी, सूक्ष्मसपराय उपशमश्रेणिने मोहनीकर्मनी अटावीसनी सत्ता छे, क्षपकसूक्ष्मसपरायने एक लोभसज्वलननी सत्ता छे, अभव्यने छवीसनी सत्ता छे, जे कारणे ग्रंथिभेदी थई त्रिपुंजीकरण कर्या पछी मिश्रमोहनी १ समकितमोहनी १ ए बेनी सत्ता थाये तेतो ग्रंथीभेद तो भव्यनेज थाये, अभव्यने अनादिअनत मिथ्यात्व छे तिणे छवीसनी सत्ता छे समकितमोहनी मिश्रमोहनीनी सत्ता नथी ॥ ६५ ॥

सेसासुअट्ठवीस, इगवीसतिसतनिरयदेवेसु । पणिंदियविगलेसु, थावरतिगितिरियनरसत्ता ॥६६॥

टीका—सेसासुइत्यादि शेषासुमार्गणासुअष्टाविंशति मोहस्यसत्ताभवति, क्षायिकेसम्यक्त्वेएकविंशतिर्मोहसत्ताभवति, आयुत्रिकनरकगतौनरकतिर्यग्मनुष्यायुर्लक्षणसत्तायाभवति, देवगतौदेवायुस्तिर्यगायुर्मनुष्यायुस्त्रयसत्तायालभ्यते, एकेंद्रियमार्गणायाविकलत्रिकमार्गणायापृथिवीअपूवनस्पतिरूपेस्थावरानिकेतिर्यगायु नरायुर्लक्षणआयुर्द्वयसत्तायाप्राप्यते ॥ ६६ ॥

टबार्थ—शेषमार्गणा जे रही तेहने विषे अटावीसनी सत्ता छे आयुखाकर्मनी नरकगति तथा देवगतिमध्ये तीन आऊखानी सत्ता छे नरकने देवायु सत्ता नथी देवताने नरकायु सत्ता नथी किम जो नरकथी नीसर्यो देवता न थाये अने देवताथी नीसर्यो नारकी न थाय तिणे नरकगतिमध्ये ने देवगतिमध्ये तीन आऊखानी सत्ता छे, एक जे देवगतिमा देवायु, नरायु, तिर्यंचायु ए ३ लाभे नरकगतिमध्ये नरकायु, नरायु, तिर्यंचायु ए ३ लाभे

इत्यर्थ एकेन्द्रियमार्गणाये विकल तीनमध्ये पृथिवी, अप् वनस्पति ए तीनमध्ये तिर्यच १ मनुष्यायु सत्ता छे २ नी देवताना आऊखानी नरकना आऊखानी सत्ता नथी जे ए मार्गणावाला मरी देवता नारकी न थाये ते माटे ॥ ६६ ॥

गइतसितितिरियकेवल, दुगिमणुआउसुहुमअहक्खाए।
खीणेमणुअसते, चउसेसासुचउगति ॥ ६७ ॥

टीका—गइतसितितिरिय इत्यादि । गतित्रसेतेजोवायुकायलक्षणेएकतिर्यगायु प्राप्यते, केवलद्वगि केवलज्ञानदर्शनलक्षणेमनुष्यायु प्राप्यते, सूक्ष्मसपरायेयथाख्याते क्षपकेएकमनुष्यायु , उपशमेसूक्ष्मसपरायेयथाख्यातेदेवायुमनुष्यायु सत्तायाभवति, अत्र कर्मग्रथासिप्रायेतुदेवायु सत्ताक एवमनुष्य उपशमश्रेणिअधिरोहतिनतिर्यग्नरकायु सत्ताक उपशमश्रेणिअधिरोहति, शेषासुमार्गणासुचउगतिआयुष चतुष्कप्राप्यते इत्युक्तमायुष स्वरूपम् ॥ ६७ ॥

टबार्थ —गतित्रस तेउकाय वायुकायने एकतिर्यचायुसत्ता छे केवलज्ञान, केवलदर्शनमध्ये एक मनुष्यायु सत्ता छे सूक्ष्मसपराय १ यथाख्यात १ क्षपकने १ एक मनुष्यायु सत्ता छे उपशमश्रेणी सूक्ष्मसपराय १ तथा यथाख्यातने च्यार आऊखानी सत्ता छे शेषमार्गणा जे रही तेहमध्ये चार आऊखानी सत्ता छे ॥ ६७ ॥

नामेतिरिचउजाईसु, थावरि(सासाण)मीसे(मीस)
तहेवसासाण(अमणेसु) ।
असन्निसुदुगनवई(दुनवइयसेसासु), जिणविणुसेसासुतिगनवई ॥ ६८ ॥

टीका—अथनामकर्मण सत्तामार्गणासुविभजनाह ॥ नामे-तिरि इत्यादि नामेइतिनामकर्मण तिर्यग्गतीजातिषु पंचसुपुम्यावरेषु पृथ्वीअपतेजोवायुवनस्पतिलक्षणासु । असंज्ञिमार्गणायांद्वि-नवति जिननामरहितासत्तायाप्राप्यते, आहारगसतगंवा सासणे-इतिवचनात् जिननाममत्ताचतिर्यग्गतौनभवत्येव सास्वादनमिश्र-योरपिजिननामसत्ताभवति सेसासुशेषासुमार्गणासुत्रिनवति नाम-कर्मण सत्ताभवति ॥ ६८ ॥

टबार्थ—नामकर्मनी सत्ता विचारता तिर्यंचगतिजाति ४ तेमध्ये थावर ५ मिश्रदृष्टिमध्ये तथा सास्वादनमध्ये तिम अ-सञ्ज्ञी मार्गणामध्ये बाणुनी सत्ता छे जिननामविना शेषमार्गणाये त्राणुनी सत्ता छे ॥ ६८ ॥

अडसीई अभवेसु, हारगजिणहीणकेवलदुगमि ।
सुहुमदुगेखवगाण, असीइतिरिनिरयजोगम्मि(?)णा॥६९॥

टीका—अडसीईअभव्वेसु-इत्यादि अभव्यमार्गणासुअष्टा-शीति सत्तायाप्राप्यते, आहारकचतुष्कजिननामरहिताअष्टाशीति प्राप्यते, केवलदुगम्मि इत्यादि केवलज्ञानकेवलदर्शनमार्गणाया-सुहुमदुगे सूक्ष्मसंपरायपथाख्यानचारित्रलक्षणमार्गणासु क्षपकश्रेणि-गतासु अशीति सत्तायाप्राप्यते, तिर्यग्गतिनरकगतिप्रायोग्यान-योदशनवमगुणस्थानेद्वितीयभागेक्षीणत्वात् अशीति सत्तायाप्रा-प्यते, उपशान्तसूक्ष्मसंपराये तथा यथाख्यातेत्रिनवतिरेवसत्ताया-प्राप्यते ॥ ६९ ॥

टबार्थ—अभव्यने आहारक ४ जिननाम विना अठ्यासी प्रकृतीनी सत्ता छे आहारक १ आहारकांगोपांग २ आहारक-

वचन ३ आहारकसघात ४ केवलज्ञान १ केवलदर्शनमध्ये तथा क्षपकश्रेणि सूक्ष्मसपराय यथाख्यातचारित्रमध्ये ऐसीनी सत्ता छे तेरनी नथी तिर्यच तथा नारकीयोगे प्रकृति नीकळी थावर १ सूक्ष्म १ साधारणजाति ४ तिरि २ नरक २ आतप १ उद्योत ए तेर नथी, ए सत्ताऽधिकार सपूर्ण ॥ ६९ ॥

चउदसजिआण भेया, सुरनरविभगमईसुओहिदुगे। सम्मत्ततिगेपम्हा, सुकासन्निसुसन्निदुग ॥७०॥

टीका—इत्युक्त सत्तास्वरूप, अथमार्गणासुजीवभेदान्दर्शय-न्नाह ॥ चउदसजिआणमेआइत्यादि ॥ तत्रजीवभेदा चतुर्दशएकेंद्रियसूक्ष्मएकेंद्रियबादरद्वींद्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रिय असज्ञिपचें-द्रियसज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तापर्याप्तभेदात् चतुर्दश तत्रसुरनरत्ति ॥ सुरगतौनरकगतौचसज्ञिद्विक पर्याप्तापर्याप्तलक्षणभवति अपर्याप्त-श्चेहकरणापर्याप्तोगृह्यतेनलब्ध्यपर्याप्तस्तस्यदेवनरकगतौउत्पादाभावात् विभगेविभगज्ञानेवोमतिज्ञानेश्रुतज्ञानेओहिदुगत्ति अवधिद्विके अवधिज्ञानदर्शनलक्षणे सम्यक्त्वत्रिकेक्षयोपशमिक क्षायिकउपशम लक्षणेपद्मलेश्याया शुक्ललेश्याया सज्ञिनिचसज्ञिद्विकमपर्याप्त पर्या-प्तलक्षणभवति नशेषाणिजीवस्थानानितेषुमिथ्यात्वादिकारणेनोमति-ज्ञानादीनामसभवात्, अतएवचइहेनोरिहापर्याप्तक करणापर्याप्तको-गृह्यतेनलब्ध्यपर्याप्तस्तस्य मिथ्यादृष्टेरशुभलेश्याकत्वादसज्ञित्वाच्चेति आह क्षायिकक्षायोपशमोपशमिकेषु कथसज्ञिअपर्याप्तकोल-भ्यते उच्यतेइहय कश्चित्पूर्वबद्धायुष्क क्षपकश्रेणिमारभ्यानतानु-बधिदर्शनत्रिकरूप सप्तकक्षयकृत्वाक्षायिकसम्यक्त्वमुत्पाद्ययदिगति-चतुष्टयस्यान्यतरस्यागत्यानुत्पद्यते तदासोऽपर्याप्तक क्षायिकसम्य-

क्त्वे प्राप्यते, क्षायोपशमिकयुक्तश्च देवादिभवेभ्योअनंतरमिहोत्पद्यमानस्तीर्थंकरादिरपर्याप्तक इत्यप्रतीत एव औपशमिकसम्यक्त्वं पुनरपर्याप्तावस्थायामनुत्तरसुरस्यप्युच्यते, इहौपशमिकस्य सम्यक्त्वमपर्याप्तस्य केचिन्नेच्छंति तथा चैतमाहु नतावद्यामेवापर्याप्तावस्थायामिदं सम्यक्त्वमुपजायते तदानस्यतथाविधविशुद्धयभावात् अथैतत्रिदानीमोहोदयत्पारभविकं तद्भवत्केननतन्निवार्यते इतिमन्येथा तदपिनयुक्तियुक्तमुत्पश्याम यतोयोमिथ्यादृष्टि स्तत्प्रथमतयासम्यक्त्वमौपशमिकमवाप्नोतिसनावक्तव्यारमापन्न सन्कालनकरोत्येवयदुक्तमागमे अणच गोदयमाउगच एकालचसासणकुणइउवसम्मसम्मदिट्ठिचउह्रमि ? काल्नोकुणइ ? उपशमश्रेणेर्मृत्वाऽनुत्तरसुरेषूत्पन्नस्यापर्याप्तकस्यैतन्नुभ्यतेइति चेन्नत्वेनदपिनयहुम यामहेतस्यप्रथमसमये एवसम्यक्त्वमोहपुद्गलोदयात् क्षायिकौपशमिकसम्यक्त्वंभवति नत्वौपशमिकम् ॥ उक्तंच ॥ शतकबृहच्चूर्णौ जोउवसमसम्मदिट्ठी उपसमसेटीएकालंकरेइ सोपढमसमएचेवसम्मत्तपुंजउदयावलिकाए पक्खिणमम्मत्तपुग्गले वेअइ तेणनउवसम्मदिट्ठी अपज्जत्तगोलम्भइ इत्यादि तस्मात्पर्याप्तसंज्ञिलक्षणमेकमेवजीवस्थानमत्रप्राप्यते इतिस्थितअपरपुनरगहुभवंत्येवापर्याप्तावस्थायामप्यौपशमिकसम्यक्त्वसप्ततिचूर्ण्यादिषु तथाभिधानात् सप्ततिचूर्णौहि गुणस्थानकेषुनामकर्मणोबन्धोदयादिमार्गणावसरेऽविरतसम्यग्दृष्टेरुदयस्थानचिंतायां पचविंशत्युदयश्च देवनारकानधिकृत्योक्ततत्रनारका क्षायिकवेदकसम्यग्दृष्टय । देवेषुत्रिविधसम्यग्दृष्टयोपितथाच तद्ग्रंथ पणवीससत्तवीसोदयोदेवनेरइए पड्डुचनेरइगोखवगसम्मदिट्ठीवेयगसम्मदिट्ठी देवोतिविहसम्मदिट्ठी तथापंचसंग्रहेऽभिमार्गणास्थानेषु जीवस्थानचिंतायामौपशमिकस्यजीवभेदद्विक उवसम्मसिसम्मिसन्नी इत्यनेनग्रंथेनसंज्ञिद्विकमुक्तंतत सप्ततिचूर्णिअभिप्रायेणपंचसंग्रहकर्त्रभिप्रायेणचा-

स्माभिरपिउपशमसम्यक्त्वेसज्ञिद्धिकमुक्तनत्वतुकेवलिनोविशिष्टबहु-श्रुतागानिदिति ॥ ७० ॥

टबाथ —हवे चौद भेदे जीव मार्गणा कहे छे सूक्ष्म एकेंद्री १ बादरएकेंद्री २ बेंद्री ३ तेंद्री ४ चोरंद्री ५ सज्ञीपचेंद्री ६ असज्ञीपचेंद्री ७ अपर्याप्ता ए सात पर्याप्ता ७ हवे ६२ मार्गणाइ भेद कहे छे देवगति १ नरकगति २ विभगअज्ञान ३ मतिज्ञान ४ श्रुतज्ञान ५ अवधिज्ञान ६ अवधिदर्शन ७ उपशम ८ क्षायिक ९ क्षयोपशम १० ए तीन समकित पद्मलेश्या शुक्कलेश्या १२ सज्ञी १३ ए तेर मार्गणाने विषे सज्ञीपचेंद्री पर्याप्तो अने सज्ञीपचेंद्री अपर्याप्ता ए बे जीव स्थानक लाभे बीजा नहीं ॥ ७० ॥

तमसन्निअपज्जअ, नरेसबायरअपज्जतेऊए ।
थावरइगिदिपढमा, चउवारअसन्निदुदुविगले ॥७१॥

टीका—तमसन्निइत्यादि ॥ तत्पूर्वोक्तसज्ञिद्विकअपर्याप्तासज्ञि-युतनरमनुष्यगति मार्गणायालभ्यते,इहयेमनुष्यागर्भजास्तेषुसज्ञिद्विक-लभ्यतेयेतुवानपित्तादिषुसमूर्छंतितेऽन्तर्मुहूर्त्तायुष असज्ञिनोलब्ध्यप-र्याप्तकाश्चद्रष्टव्या यदाहु श्रीमदार्यपादा प्रज्ञापनाया कहिणभंते-सम्मुच्छिममणुस्सासम्मुच्छंति गोयमा, अतोमणुस्सखित्तस्सपणयालीसा-एजोयणसयसहस्सेअड्ढाइजेसुदीवसमुद्देसु पनरससुकम्मभूमिसु ती-साए अकम्मभूमीसुछप्पनाए अतरदीवेसुगम्भवक्कंतियमणुस्साणचे-वउच्चारेसु पासवणेसुवा खेलेसुवा सिंघाणेसुवावंतेसुवापित्तेसुवासुक्केसु-वासोणीएसुवासुक्कपुग्गलेसुवासुक्कपुग्गलेपरिसाडेसुवाविगयकलेवरेसु-वाथीपुरुससयोगेसुवा नगरनिद्धमणेसुवासव्वेसुचेवअसुइट्ठाणेसु इत्थ

णरामुरि ठामगुरमातम् ' अगुलस्स अ.नरवभागमित्ताए ओगाह-
णाए अतनिमि उदिट्ठी अ ॥गीसन्वाहिंपज्जत्तीहिं अपज्जत्ताअन-
मुहूत्ताउया चेव क रस्तितित्ति तान् सम्मूर्छिममनुष्यानाश्रित्यतृतीयमप्य-
सज्ञयपर्याप्तरूपमप्रसंज्ञिस्थानमवाप्यते, इतिसम्प्रदायरूक्तं तदेवपर्यवसिज्ञि-
द्विकमहृबादरापर्याप्तेनवर्तत इतिसबादरपर्याप्तते जोलेश्यायालभ्यतेए-
तदुक्तभवनितेजोलेश्यायामेणिजीवस्थानानिभवति, सज्ञयपर्याप्तापर्-
याप्त बादरैकेंद्रियापर्याप्तश्चबादरोऽपर्याप्त कथमवाप्यते इतिचेतुउ-
च्यते इहभवनपति व्यन्तरज्योतिष्कसौधर्मैशानदेवा पृथिवीजलवन-
स्पतिषुमध्येउत्पद्यने, यदाह तु समावकारनिमप्रजिनप्रवचनम-
दीपोभगवानजिनभद्रगणिक्षमाश्रमण पुढवीआउवणस्सइज्झेपज्जत्त
सखजीवेसुसग्गचुआणं मोमेसायटिसेहीयाठाणा १ तेचतेजोलेश्या-
वन्त यदभाणि किण्हानील काउतेउलेस्साभवणवन्तरीयाजोइससोह-
म्मीसाणाणितेउलेस्साम्पे यत्रा यल्लेश्यो म्रियतेतल्लेश्यएवअग्रेऽपिस-
मुत्पद्यते जल्लेसेमरइ तल्लेसे उववज्जइइतिवचनात्, अनन्तेजोलेश्याना-
बादरपर्याप्तावस्थायाकियत्कालमवाप्यते, स्थावरपञ्चकमार्गणासुमप्य-
मानिचत्वारि जीवस्थानानिसूक्ष्मैकेंद्रियापर्याप्तसूक्ष्मैकेंद्रियपर्याप्तबाद-
रैकेंद्रियापर्याप्तपर्याप्तलक्षणानिभवन्ति । संज्ञिनिसंज्ञि व्यतिरिक्तेकौ-
लिकनलिकन्यायेनाथ असंज्ञिमार्गणायां प्रथमानिआदिमानिद्वादश-
जीवस्थानानिसर्वेषामपिविशिष्टमनोविकलत्वयासंज्ञिप्रतिपक्षत्वादस-
ज्ञिइतिव्यपदिश्यते, पुढुविगलत्तिविकलेषु द्वीन्द्रियत्रींद्रियचतुरिंद्रि-
येषुद्वेद्वेजीवस्थानेभवत तत्रद्वींद्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त इतिद्वींद्रियेषु
एवत्रींद्रियेषु त्रीन्द्रियोऽपर्याप्त पर्याप्त चतुरिंद्रियेषुचतुरिंद्रियोऽप-
र्याप्त पर्याप्तश्च ॥ ७१ ॥

टबार्थ —अने मनुष्यगतिमार्गणामे होय तेहज असज्ञी-

पचेंद्री मेळीने तेवारे सज्ञीपंचेंद्रीपर्याप्तो १ अपर्याप्तो २ असज्ञी-पचेंद्रीअपर्याप्तो ए ३ जीवना भेद लाभे छे, मनुष्य असज्ञीपर्याप्तो नथाइ १४ थानके उपजे पण अपर्याप्तोईज मरे तिणे ३ जीवमेद कह्या। तेजाले [illegible] अपर्याप्तो २ ए दोय अने बादरए[illegible] [illegible] तिणे अपेक्षाये तेजोलेश्यामे [illegible] ५ म पृथ्वी-अप,तेऊ,वाउ,वनस्पतिमे [illegible] पर्याप्तो २ बादरएकेंद्रीपर्याप्तोअपर्याप्तो ४ ए च्यार जीवस्थानकलाभे अ-सज्ञीमार्गणामे पहेला बार जीवस्थानक लाभे बेंद्रीमार्गणा २ बेंद्रिना जीवस्थान छे, तेंद्रीमे तेंद्रीना जीवस्थान छे, चोरेंद्रीमे चोरेंद्रीना जीवस्थान छे ॥ ७१ ॥

दसचरमतसेअजया, हारगतिरितणुकसायदुअनाणे पढमतिलेसामविअर, अचक्खुनपुमिच्छसव्वेवि ७२।

टीका—दसचरमतस इत्यादि ॥ त्रसेत्रसकायेचरमाण्यतिमानि-पर्याप्तापर्याप्तद्वित्रिचतुरसज्ञिसज्ञिपंचेंद्रियलक्षणानिदशजीवस्थानानि भवंति, द्वींद्रियादीनामेवत्रसत्वात्। तथा अयते, अविरतेसर्वाण्यपि जीवस्थानानिभवंति, त[illegible] तथेति आयोगे-कषायचतुष्टयेद्वयो[illegible] प्रथमत्रिलेश्यासु भव्येइतरस्मिन् [illegible] वेदेप्यर्थात्सर्वाण्यपि जीवस्थानानिभवंतिसकलजीवस्थानस्यापक्त्वादयनादीनामिति ७२

टबार्थ—बेंद्री तेंद्री २ चोरेंद्री ३ असज्ञी ४ सज्ञी ५ ए पाच अपर्याप्ताने ५ पर्याप्ता ए दस जीवस्थानक त्रसकायमे लाभे, अव्रतमार्गणामे १४ जीवस्थानक छे आहारकमार्गणामे २

तिर्यंचगति ३ काययोग ४ कषाय ४ मार्गणामे ८ मतिअज्ञान ९ श्रुतअज्ञानमे १० कृष्णलेश्या ११ नीललेश्या ११ कापोत लेश्या १३ भव्यमार्गणामे १४ अभव्यमार्गणा १५ अचक्षुदर्शन-मार्गणा १६ नपुसकवेदमार्गणा १७ मिथ्यात्वमार्गणा १८ ए अढारमार्गणामे सर्व १४ जीवस्थानक छे ॥ ७२ ॥

पज्जसन्निकेवलदुग, सजममणनाणदेसमणमीसे ।
पणचरमपज्जवयणे, निअछचपज्जीयरचक्खुम्मि॥७३॥

टीका—पज्जसन्नी इत्यादि । पर्याप्तसंज्ञिलक्षणमेकमेवजीवस्थानभवति ॥ कइत्याह ॥ केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शने सयमपचके मन पर्यवज्ञानेदेशविरते च एकजीवस्थानसज्ञिपर्याप्तलक्षणजीवस्थानभवतिनान्यत्, तथापचजीवस्थानानि चरमाणि-अतिमानिपर्याप्त्यपर्याप्तानि द्वीद्रियपर्याप्तत्रीद्रियपर्याप्तचतुरिंद्रियपर्याप्तासज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तसज्ञिपचेंद्रियपर्याप्तलक्षणानि पचस्थानानिप्राप्यते, वयणत्ति वचनयोगेकुनचित् एएअपर्याप्तेऽपिवचनयोगसभव भाविनिभूतोपचारात् इति पायात् तेषामतेदशजीवभेदा प्राप्यते ॥ तीयछचपज्जायरतिचक्खुम्मि चक्षुदर्शनेऽन्यत्रयद्वयादिनपक्रमेणत्रीणि चतुरिंद्रियपर्याप्तअसज्ञिपर्याप्तसज्ञिपर्याप्तलक्षणानित्रयो जीवभेदामनातरेनैगमनयापेक्षयाछचपदजीवस्थानानितान्येवचतुरिंद्रियादीनि त्रीणिपर्याप्तापर्याप्तलक्षणानिचक्षुर्दर्शनेभवति ॥७३॥

स्वार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ मार्गणामे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्धि ३ सूक्ष्मसपराय यथाख्यातचारित्र एव ५ सयममे मन पर्यवज्ञानमे देशविरतिमे १ मनोयोगमे १ मिश्रदृष्टिमे ए ११ मार्गणामे १ पर्याप्तासज्ञी जीव-

स्थानलाभे, वचनयोग छेहला पाच पर्याप्ता जीवस्थानलाभे, वेन्द्री १ तेन्द्री २ चौरेन्द्री ३ असज्ञीपचेन्द्री ४ सज्ञीपचेन्द्री ५ पर्याप्तो ए पाचमे भाषा छे भाषापर्याप्त कीवा पछी चक्षुदर्शनमे तीन अथवा ७ जीवस्थान छे चोरेन्द्री १ असज्ञीपचेन्द्री २ सज्ञीपचेन्द्री ३ ए तीन पर्याप्ता छे अथवा एहिज तीन अपर्याप्ता अने पर्याप्ता ए ६ पण जीवस्थानलाभे चक्षुदर्शनमे ॥ ७३ ॥

थीनरपणिदिचरमा, चउअणहारेदुसन्निछअपज्जा।
तेसुहुमअपज्जविणा, सासणगुणठाणपुविन ॥७४॥

टीका--थीनरपणि इत्यादि। स्त्रीवेदे तथा पुरुषवेदे पचेन्द्रियप्रायोग्यानिचरमाणिचत्वारिजीवस्थानानि भवति, यद्यपिचसिद्धातेअसज्ञिपर्याप्तोऽपर्याप्तश्चएकातेनपुसकएवउक्त तयोचोक्तभगवत्यातेणभतेअसन्निपचेंदियतिरक्खयोणीयाकिं इत्थिवेयगा पुरिसवेयगा नपुसगवेयगा? नोइत्थिवेयगानोपुरिसवेयगा नपुसगवेयगाइति तथापिइहस्त्रीपुसलिंगाकारमानमगीकृत्यस्त्रीवेदेपुरुषवेदेनिर्दिष्ट लिंगाकारग्रहणद्रव्यनिक्षेपन अभिलापरूपतुभावनिक्षेपापेक्षयाभावनीयम् , अनाहारके दुसनिछअपज्जत्ति अनाहारकेद्विविध सज्ञिपर्याप्तापर्याप्तलक्षण षट्अपर्याप्ता अपर्याप्तसूक्ष्मएकेंद्रिय अपर्याप्तबादरएकेंद्रिय अपर्याप्त द्वीन्द्रिय अपर्याप्तत्रीन्द्रिय अपर्याप्तचतुरिंद्रिय अपर्याप्तासज्ञिपचेंद्रिय एता अष्टौप्राप्यते तत्रसप्तपर्याप्तकानि अन्तरालगनावेवसज्ञिपर्याप्तलक्षण केवलिसमुद्घातकालेतृतीयचतुर्थपचमसमयेएवकार्मणयोगिन उपलभ्यतेसुहुमअपज्जविणासासण,ना येवपूर्वोक्तानियानिअपर्याप्तपर्याप्तसज्ञिद्विकलक्षणान्यष्टौजीवस्थानानिसूक्ष्मापर्याप्त विनासप्तभवति ।

एनदुक्तभवतिपन्नसूक्ष्मैकेंद्रियापर्याप्तस्वरूपजीवस्थानसास्वादनेगम्य स्त्वेनभवति, सास्वादनम्यशुभपरिणामत्वात् सम्मस्यमहासंक्लिष्टस्य परिणामस्यसूक्ष्मैकेंद्रियमध्येउपादान् । अत बादरपर्याप्तद्वींद्रिया- पर्याप्तत्रींद्रियापर्याप्तचतुरिंद्रियापर्याप्तअसंज्ञिपचेंद्रियापर्याप्त संज्ञिपचें- द्रियापर्याप्तभेदान् सप्तजीवस्थानानिप्राप्यन्ते इत्युक्तानिमार्गणास्था- नेषुजीवस्थानानिगुणस्थानानितुपूर्वमेवोक्तत्वात् नात्रएवज्ञानयानि गुणस्थानानिमार्गणासुपूर्ववत् ज्ञानयानि ॥ ७४ ॥

इसार्थ —स्त्रीवेदमे १ पुरुषवेदमे १ पचेंद्रिमे १ छेहल्पा ४ जीवस्थान छे, असज्ञीपचेंद्री अपर्याप्तोपर्याप्तो २ सज्ञीअपर्याप्तो- पर्याप्तो ए ४ छे स्त्रीवेदमे, पुरुषवेदमे, असज्ञीमे नजाइ, असज्ञिमे नपुसकवेद छे, पर इहा मान्यो छे, ते अभिप्राय आचार्य जाणे अनाहारकमार्गणाये सज्ञीअपर्याप्तो १ पर्याप्तो २ सूक्ष्मअपर्याप्तो ३ बेंद्रीअपर्याप्तो ४ तेंद्रीअप० ५ चौरद्रीअप० ६ असज्ञीअप० ७ बादरअप० ८ ए आठ जीवस्थानक छे । ए आठमे सूक्ष्म- अपर्याप्तो काढीए जेवारे सास्वादने सात जीवस्थानक छे। बादरअपर्याप्तो १ बेद्रीअप० २ तेंद्रीअप० ३ चौरेंद्रीअप० ४ असज्ञीअप० ५ सज्ञीपर्याप्तो ६ सज्ञीअप० ७ ए सात प्रकारे जीवस्थानक पामीये गुणठाणामार्गणाए पूर्वे कह्या ते रिते गुण- ठाणा कहिवा ॥ ७४ ॥

सच्चेयरमीसअसच्चमोस, मणवयविउविआहारा।
उरलमीसाकम्मण, इययोगाकम्मअणहारे ॥७५॥

टीका—सच्चेयरत्ति पचदशयोगाभिधायिकागाथा॥ इहयोग शब्दस्यसर्वत्रसबध युज्यतेकर्मणाअनेनेतियोग अलब्धस्यलभन-

योग चत्वीर्यस्यऔदयिकानुयायिप्रवर्त्तनयोग अभिनवकर्मग्रहण-हेतु इतितत्रमनोयोगश्चतुर्द्धातत्रयासत्यमनोयोग असत्यमनोयोग सत्यासत्यमनोयोग असत्यामृषामनोयोग तत्रसन्तोमुनय पदार्था-वातेषुयथासर यमुक्तिपदप्रापकत्वेनयथावस्थित तत्त्वचिंननेनचहित सत्य यथाअस्तिजीव अस्तिनास्तिपरिणाम कायप्रमाण लोकप्रमा-णासर येयप्रदेशात्मक यथावस्थितवस्तुविकल्पनपर सत्यमनोयोग तथाअसत्य विपरीत अयथार्थ नास्तिजीव इत्याद्युत्सूत्रचिन-नरूप असत्यमनोयोग तथामिश्र सत्यासत्यमनोयोग यथाइह-धवखदिरपलाशादिमिश्रेपुनहुत्त्वशोकवृक्षेषुअशोकवनमेवेदइतियदा-वित्र पयतितत्राशोकवृक्षाणासद्भाव सत्य अ येषामपित्रखदिरप-लाशादीना तत्रसद्भावादस य इतिसत्यासत्यविकल्परूप , मिश्रम-नोयोग इति यहारनयमनापेक्षया परमार्थतस्तुपुनरयमसत्य-एवयथाविकल्पितार्थायोगात् नविद्यतेसत्ययत्रसअसत्य नविद्यते-मृषायत्रसअमृष असत्यश्चासौअमृष अनादिमि न्नैरिनिकर्म धारय असत्यामृषश्चासौमनोयोगश्च असत्यामृषामनोयोग अत्रस्याद्वादा-नेकातनयनिक्षेपविनायद्लोक यापाररूपघटपटादिचिंनन तन् यव-हारतोमृषापिनपरमार्थन आगमोपयोगरहितत्वात् सत्यमपिनइदृग्-विकल्परूप असत्यमृषामनोयोग मुनीनाचआहारादियाचनेआहा-रयाचनरूप यवहारतोनमृषापरमार्थत आहारमकाष(?)मितिविकल्प-रहित वान्नसत्य अत्रसमिश्रमनोयोग असत्यामृषामनोयोगयो क्र मनिविशेष तत्रोच्यतेमिश्रमनोयोगवनोअशोकवनेअशोकस्यएका-नग्रह धवखदिराणाग्रहणेच्छापिनतेनमिश्रत्व अन्यतुअपिनानर्पित-तयासापेक्षनयापिकारणाभावात् अगृहीतत्वात् तेनसर्वथानअसत्य इतिनसत्य नमृषाइति यपदिश्यते एववाग्योगोपिचतुर्विध अत्र-तुनीयचतुर्थातुपरिस्फुर यवहारनयमतेनदृष्ट योनिश्चयनयेनस्याद्वाद-

सापेक्षमेवसत्य अन्यन्तुसर्वमसत्यमितिकर्मग्रंथटीकाकार विकलेन्द्रि-
याणामसत्यत्वेनअसत्यअमृषावचनयोग नतुअपिमृषावादेएवम-
न्तर्भवति ॥ काययोग सप्तधा वैक्रियककाययोग औदारिककाय-
योग आहारककाययोग मिसत्तिएतेएवमिश्रवैक्रियमिश्र औ-
दारिकमिश्र आहारकमिश्र कम्माणत्तिकार्मण एव सप्तकाययोगा
भावार्थस्तुविविधाक्रिया विक्रियातस्याभववैक्रिय तथाहिएकभूत्वा-
अनेकभवति अणुभूत्वामहद्भवति महद्भूत्वाअणभवति दृश्य-
भूत्वाअदृश्यभवति इत्यादिविक्रियारूपवैक्रिय रूपवैक्रिय वैक्रिय-
मिश्र यत्रकार्मणेन औदारिकेणसहवैक्रियमिश्र तत्रकार्मणेनामिश्र
देवनारकाणाअपर्याप्तावस्थाया प्रथमसमयानन्तर पचेन्द्रियतिर्यग्-
मनुष्याणाचवैक्रियलब्धिमतावैक्रियारंभकालेवैक्रियपरित्यागकालेवाऔ-
दारिकेणमिश्रभवति तत्वैक्रियमिश्रकाययोग २ चतुर्दशपूर्वविद
तथाविधकार्योत्पत्तौविशिष्टलब्धिवशादाह्रियते निर्वर्त्यतेइत्याहा-
रक अथवाआह्रियतेगृह्यतेतीर्थकरादिसमीपेसूक्ष्माजीवादिपदार्था
अनेनेत्याहारकयदुक्तादिपूज्य कज्जम्मिसमुपज्जतेसुअकेवलिणा-
विसिट्ठलद्धीएजइक्तं आहरिज्जइभणति आहारगंतत्तु ॥ १ ॥
पाणिदयरिद्धिदसणत्थमत्थोवगहणहेउवासंसयवुछेयत्थगमणजिणपा-
यमूलम्मि तदेवकाययोग आहारककाययोग आहारकमिश्र आ-
हारकप्रारंभकालेत्यागकालेऔदारिकेणसहभवति आहारकमिश्रकाय-
योग तथा औदारिककाययोग इहप्रसिद्धसिद्धान्तसंदोहविवरण-
प्रकरणकरणप्रमाणग्रथनानासु नाह्यवामधवलयश प्रसरधवलितस-
कलवसुधरावलयप्रभुश्रीहरिभद्रसूरिदर्शितान्युत्पत्तिर्लिख्यतेतत्यतात-
ट्ठारउरालउरालचातित्थकरगण ररसरीराइपडुच्चउदारवुच्चइनतओउदी-
रनरम नमछित्तिकाउउदारनामप्रधानउरालनामाविस्तरालविशालनाजभ-
णीयहोट कदसातिरेग जोयणसहस्स वनस्पत्यादीनामितिउरालना-

मरवत्पप्रदेशोपचितत्वाद्विभवनरश्लवर्गणानिष्पन्नत्वात् श्रीपूज्या-अप्याहु नयोदारमुरालउरालमहृयामहृल्लगत्तेणउगलायत्तिपढमपइच-निव्वेसरसरीर ॥ १ ॥

भणदृयनहोराल, वित्यरवतरणसस्इ पण्प ।
पयट्ठंइनत्थिअन्न, इहमित्तरिसालत्ति ॥ २ ॥
उग्लथेवपएसो, वचियपिमहल्लगजहामिट्ट ।
मसाट्टिण्हारनद्ध, उरालसमयपरिभासा ॥ ३ ॥

उदारेणभवऔदारिक औदारिककाययोग तथा औदारिकमिश्र यन-कार्मणोनेति गम्यवेसऔदारिकमिश्र उत्पत्तिदेशेहिपूर्वभवादनन्तर-मागतोजीव प्रथमसमये कार्मणेनैवकेवलेनाहारयतितत परऔदा-रिकस्याप्यारब्धत्वादौदारिकेणकार्मणमिश्रेणयावच्छरीरस्यनिष्पत्ति यदाहसकलश्रुताभोनिधिपारदृश्वानिश्रान्तुग्रहकाम्ययानिर्मितानेक-शास्त्रसदर्भ श्रीभद्रबाहुस्वामी जोएणकम्मएण आहारेईअणतर जीवोतेणपरमीसेणजावसरीरस्सनिप्पत्ती ॥ १ ॥ तथा केवलिस-मुद्घातावस्थायाद्वितीयषष्टसप्तमसमयेषु कार्मणेनमिश्रमौदारिक मतीतमेवऔदारिकमिश्रकाययोग तथा कर्मणोविकार कार्मण-कर्मैवकार्मण कर्मपरमाणव एवात्मप्रदेशै सहक्षीरनीरवदन्योन्या-नुगना सत कार्मणशरीर उक्तच कम्मविगारोकम्म कम्मणमट्ठ-विहविचित्तकम्मनिप्पन्नसव्वेसिंसरीराणकारणमूयमुणेयव्व अनसव्वे-सिमितिसर्वेषा औदारिकादीनाशरीराणा कारणभूतबीजभूतकार्मण-शरीरनखलु आमूलमुच्छिन्नेभवप्रपचप्ररोहबीजभूतेकार्मणेवपुषिशे-षशरीरप्रादुर्भावसभवइदचकार्मणशरीरजतोर्गत्यन्तरसक्रातौसाधकतम करण तथाहिकार्मणेनैववपुषापरिकरितोजतुर्मरणदेशमपहायोत्पत्ति-देशमुपसर्पतिनन्वपिदिकार्मणवपु परिकरितोगत्यतरसक्रामति तर्हि-

[illegible] ॥ ७५ ॥

अर्थ—ये १५ योग हैं [illegible] मनोयोग १ अन- [illegible] मनोयोग ४ [illegible] योग ५ [illegible] वचनयोग ६ मिश्र [illegible] योग ७ [illegible] योग ८ [illegible] योग ९ आहारक [illegible] योग १० [illegible] योग ११ वैक्रियक [illegible] योग १२ आहारक [illegible] १३ [illegible] १४ कार्माण काययोग १५ [illegible] १५ योग [illegible] योग हैं ॥ ७६ ॥

नरगइपणदितसतणू, अचक्खुनरनपुकसायसम्मदुगं।
सन्निछलेसाहारग, भवमइसुओहिदुगिसवे ॥७६॥

टीका—नरगइपणदि इत्यादि ॥ नरगतौपचेंद्रियेत्रसकाये-तनुयोगेअचक्षुर्दर्शनेनरेपुरुषवेदेनपुंसकवेदेकपायेषु क्रोधमानमाया-लोभेषुसम्यक्त्वद्विकेक्षायोपशमेक्षायिकेसंज्ञिनिषट्स्वपिलेश्यासुआ-हारकेमतिज्ञानेश्रुतज्ञानेअवधिद्विकेअवधिज्ञानावधिदर्शनेसर्वेपचद-शापियोगाभवन्ति एतेषुसर्वेष्वपिमार्गणास्थानेषुयथासभवसर्वयोगा पचदशभवन्ति ॥ ७६ ॥

टवार्थ—मनुष्यगति १ पचेंद्री २ त्रसकाय ३ अचक्षुदर्शन पुरुषवेद नपुंसकवेद कषाय ४ क्रोध मान माया लोभ। क्षायिकस-मकित १ क्षयोपशमसमकित १ सज्ञीमार्गणामे १ लेश्या ६ कृ-ष्णनीलकापोत तेजोपद्मशुक्ल ६ लेश्या आहारक १ भव्य १ मति-ज्ञान १ श्रुतज्ञा २ अवधिज्ञान ३ अवधिदर्शन एटली मार्ग-णामे सर्वे पनर योग [illegible] छे ॥ ७६ ॥

तिरिइत्थिअजयसासणि, अनाणउवसमअभवमिच्छेसु
तेराहारदुगुणा, तेउरलादुगुणसुरनिरए ॥ ७७ ॥

टीका—तिरिइत्थि इत्यादि ॥ तिरितितिर्यग्गतौस्त्रीयास्त्रीवेदे-अयतेविरतिहीनेसास्वादनसम्यक्त्वेअज्ञानत्रिकेउपशमसम्यक्त्वेअभ-व्येमिथ्यादृष्टौत्रयोदशयोगा भवतिआहारकद्विकहीनादित्यर्थ आ-हारकद्विकसर्वविरतौचतुर्दशपूर्वधरस्यापिकस्यचितुलब्धिमनोभवति। यद्यपिस्त्रीवेदेसर्वविरतिसद्भावेऽपिस्त्रीपूर्वगतत्वाभावात्।यदाह।भाष्य-सुधानिधि तुच्छागारवबहुलाचलेंद्रीयाढुबलाधिइएएइयअट्सेसज्ज-

यणामृआरादोनइत्यीण ॥ १ ॥ तेननाहारक प्रभावनीय तथा-तेएकनयोदशपर्योक्तायोगाऔदारिकद्विकोना औदारिककाययोगऔ-दारिकमिश्रकाययोगरहिताएकादशयोगा सुरतिदेवगनौनिरातिनर-कगनौप्राप्यते मनस चत्वारोवचनस्यचत्वारोवक्रियद्वयकार्मणचएव-एकादशननकार्मणमपानरालगनौ तथा प्रथमसमये प्रथमानस्यवैक्रि-यमिश्रअपर्याप्तावस्थाया वैक्रियमनोवागयोगापर्याप्तावस्थायासर्वासु यावत् ॥ ७७ ॥

स्तार्थ —निर्यंचगति १ स्त्रीवेद १ अविरति १ सास्वादन १ अज्ञान ३ कुमतिकुश्रुतिभगरूप एहनी मार्गणामे उपशम-सम्यक्त्वमार्गणामे १ अभव्यमार्गणामे १ मिथ्यात्वमार्गणामे १ एटली मार्गणामे १३ योग पामीये। आहारकशरीर १ आहा-रकमिश्र २ ए काढीए तेवार इण तेरमाहे औदारिकद्विक, औदा-रिकशरीर, ओदारिकमिश्र ए दोय काढीए तेवारे देवगति १ नर-कगति १ ए मार्गणामे ११ योग छे ॥ ७७ ॥

कम्मुरलदुगथावरि, तेसनिउव्वदुगपचइगपवणे ।
छअसन्निचरमवयजुअ, तेविउविदुगुणचउविगले७८॥

टीका—कम्मुरलदुगइत्यादि ॥ स्थावरचतुष्टयेपृथिव्यपतेजो-वनस्पतिलक्षणेषु कार्मणऔदारिकद्विकऔदारिककाययोग औदारिक-मिश्रकाययोगलक्षणयोगत्रयप्राप्यते, तत्रभावना॥ थावरेत्ति स्थावर-पृथ्वीकायाप्कायतेजोवनस्पतिकायरूपपूर्वोक्तयोगत्रयभवतिकार्मण-मन्तरालगतौ औदारिकमिश्रअपर्याप्तकालेपर्याप्तकालेऔदारिकतेपूर्वो-क्तास्त्रय योगा सवैक्रियद्विका सहवैक्रियद्विकेनवैक्रियवैक्रियमिश्र-लक्षणेनवर्तन्तेइतिसवैक्रियद्विका सत पचभवतिकेइत्याह इगत्ति

सामा यनएकेंद्रियेपवनेवायुकायेचन नकार्मणौदारिकद्विकलक्षणयोग-
त्रयभावनाप्राग्वत्वैक्रियद्विकभावनात्वेव इहकिलचतुर्विधावायवो-
वातितद्यथासूक्ष्माबादरा पर्याप्ता अपर्याप्तकाश्चनत्रबादरवायुकाय-
पर्याप्तानाकेषाचिद्वैक्रियलब्धिसभवोऽस्तिनानधिकृत्यवैक्रियमिश्रल-
लभ्यते ननुकथमुच्यतेकेषाचिद्वैक्रियलब्धिसभवोऽस्तियावतासर्वेऽपि
बादरपर्याप्तावायव सवैक्रियाएवअवैक्रियाणाचेष्टाएवाप्रवृत्त उक्तच
कइणभतेसव्वेवेउव्वियावायावायनि १ अविउव्वियाणचिट्ठाचेवनपवत्त-
इतिनैतद्युक्तसम्यग्सिद्धान्तापरिज्ञानात्अवैक्रियाणामपितेषास्वभाव-
तएवचेष्टोपपत्ते यदाहभगवान्श्रीहरिभद्रसूरिपूज्योऽनुयोगद्वारटी-
काया वाउकाइयाचउव्विहासुहमापज्जत्ता अपज्जत्ताबादरापज्जत्ताअप-
ज्जत्तातत्थतिन्निरासीपत्तेय असखिज्जलोगप्पमाणप्पएसरासिपमाण-
मित्ताजेपुणबादरापज्जत्ता तेपयरासखेज्जइभागमित्ता तत्थताव तिण्हरा-
सीणवेउव्वियलद्धिचेवनत्थिबायरपज्जत्ताणपिअसखेज्जइभागमित्ताण-
अत्थिसेसिपिलद्धिअत्थिनउविपलिओवमासखिज्जभागसमयमित्तास-
पयपुच्छासमएवेउव्वियवत्तिणो तथाजेणसव्वेसुचेवउहलोगाइसुच-
लावायवोविज्जति तम्हाअविउव्विआविवायावायतित्ति । चित्त वस-
भावेणतेसिवाय वनिवानाद्वायुरितिकृत्वातिण्हरासीणत्रयाणाराशीना-
पर्याप्तापर्याप्तसूक्ष्मानादरापर्याप्तवायुकायिकानातथावेएवपूर्वोक्ता प-
चकार्मणौदारिकद्विकवैक्रियद्विकलक्षणयोगाश्चरमाचतुर्थी असत्या-
मृषारूपावाग्वचनयोगाश्चरमवाक्तयायुक्ता षड्योगा भवतिक्र-
इत्याह । असज्ञिनिसज्ञि यतिरिक्तेजीवेतनकार्मणमपानरालगतावु-
त्पत्तिप्रथमसमयेचऔदारिकमिश्रमपर्याप्तावस्थायापर्याप्तावस्थायाऔ-
दारिकवादरपर्याप्तवायुकायिकानावैक्रियद्विकचरमभवोचरम वाग्योग
असत्यामृषालक्षण तेनयुक्तावैक्रियद्विकेनऊनाहीना त्वारोभवति-
धेर [illegible] तनकार्मणौदारिक-

द्विकभावनामागवत् असत्यामृषाभाषाशरादीनाभवति । शेषाणा-विगलेअसत्रमोसवयइति ॥ ७८ ॥

टबार्थ ---पृथ्वीकाय, अपकाय, तेउकाय ३ वनस्पतिकाय ४ ए ४ थावरमार्गणामे कार्मण १ औदारिक २ औदारिकमिश्र ३ वैक्रिय ४ वैक्रियमिश्र ५ ए पाच योग छे । असज्ञीमार्गणामे चरमवचन योग १ असत्याअमृषा मेलीजे तेवारे पाच योग वेहीज एव ६ योग छे । ए ६ योगमाहे वैक्रिय १ वैक्रियमिश्र २ ए द्विक काढीए तेवार कार्मण १ औदारिक २ औदारिकमिश्र ३ असत्याअमृषाभाषा ए ४ योग छे, विकलत्रयी १ तेंद्री २ चौ-रेंद्री ३ ॥ ७८ ॥

कम्मुरलमीसविणुमण, वयसमईछेयचक्खुमणनाणे
उरलदुगकम्मपढम, तिमम्मणवयकेवलदुगमि ॥७९॥

टीका---कम्मुरलमीसइत्यादि ॥ कार्मणमौदारिकमिश्रविना-शेषास्त्रयोदशयोगाभवति क्वइत्याहमनोयोगेसामायिकच्छेदोपस्थाप-नीयसयमेचक्षुर्दर्शनेमन पर्यवज्ञानेत्रयोदशयोगा भावनासुकरयौतु-कार्मणौदारिकमिश्रौतातेषुसर्वथानसभवनएवनयोरपर्याप्तावस्थायाभा-वात् मनोयोगादिमार्गणायातु तस्यामवस्थायामसभवात् तथा उरल-दुगत्ति औदारिकद्विककार्मण प्रथम तथा अतिम मनोयोगद्वय एव वचनयोगद्वय एवयोगसप्तक केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणमार्गणाया-माप्यते तत्रभावनाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगौसयोगिकेवलिसमुद्घात गतस्यभवति मनोयोगौतुअविकल्पसकलविमलकेवलज्ञानकेवलदर्शन-विलोकितनिखिललोकालोकस्यभगवत मन पर्यवविज्ञानिनोऽनुत्तरसु-रादिभिर्वाभनसापृष्टस्यसतोमनसैवदेशनातुतेहिभगवत्प्रयुक्तानिमनो-द्रव्याणिमन पर्यवज्ञानेनपश्यतिवाग्योगस्तुदेशनावसरेभवति॥७९॥

टवार्थ —कार्मण १ औदारिकमिश्र २ ए दोय विना बाकी १३ योग छे, मनयोगमाहे १३ वचनयोगमाहे १३ सामायिकमे १३ छेदोपस्थापनीयमा १३ चक्षुदर्शनीयमे १३ मन पर्याप्तज्ञानमे १३ ए छ मार्गणामे १३ योग लाभे छे, उरलदुग औदारिक २ कार्मण १ पहिलो अतिममनोयोग १ असत्यमनोयोग २ पेहलो अतिमवचन १ सत्यवचनयोग १ असत्यवचनयोग १ ए ७ योग छे, केवलज्ञान केवलदर्शनमे सात योग छे ॥ ७९ ॥

मणनयउरलापरिहार, सुहुमेनवतेउमीसिसविउवा। देसेसविउविदुगा, सकम्मुरलमीसअहक्खाए ॥८०॥

टीका—मणनयइत्यादि ॥ परिहारविशुद्धिकेसूक्ष्मसपरायेच नवयोगा केवेइत्याहमनोयोगश्चतुर्द्धावाग्योगश्चतुर्द्धाऔदारिकचेति आहारकद्विकचतुर्दशपूर्वविद लब्धिप्रारभकालेभवतिनचात्रनभवति वैक्रियद्विकमपिलब्धिमत तदप्यत्रनभवतिऔदारिकमिश्रकार्मणचगृहगतिमतरेणासभवात् तेनतावपिनभवत असत्यवाग्योगमनोयोगत्वतुउन्मार्गापेक्षयापरालबनचेतनापरिणामेनैवज्ञेय तेपुन पूर्वोक्तानवयोगा सवैक्रिया सहवैक्रियेणवर्त्तनइतिसवैक्रियावैक्रियसहिता सनोदशयोगामिश्रेसम्यग्मिथ्यादृष्टौभवति,तनवैक्रिय देवनारकापेक्षयायतुतनवानाप्यवेतस्यापर्याप्तावस्थायाभावित्वात् मिश्रभावस्यचनसम्ममिच्छोकुणइकालमितिवचनप्रामाण्यादपर्याप्तावस्थायामसभवात् स्यादेनवैक्रियलब्धिमतामनुष्यतिरश्चासम्यग्मिथ्यादृशासतावैक्रियारभसभवेन कथवैक्रियमिश्रनावाप्यते इतिउच्यते तेपावैक्रियारभासभवात्अ यनोत्राकुनश्चित्कारणात्पूर्वाचार्यस्त नाभ्युपगम्यतेइतिनसम्यग्अवगच्छामस्तथाविधसप्रदायाभावादतोऽस्माभिरपितनेष्टमितिदेशे-

देशविरतेसवैक्रियद्विका वैक्रियवैक्रियमिश्रसहिता सत एकादशयोगा भवंतिदेशविरतानामंबडादीनां वैक्रियलब्धिमतांवैक्रियद्विकसंभवात् । तथातेएवनवपूर्वोक्ता सकार्मणौदारिकमिश्रा सहकार्मणौदारिकमिश्राभ्यांवर्त्तते इतिसकर्मणौदारिकमिश्रा सत एकादशयोगायथाख्यातसयमेभवंति अयमर्थ मनोयोगचतुष्टयवाग्योगचतुष्टयकार्मणौदारिकद्विकलक्षणाएकादशयोगायथाख्यातसंयमेभवंति तत्रमनोवाग्चतुष्कौदारिकयोगास्तुज्ञानेएवकार्मणमौदारिकमिश्रतुयथाख्यातसंयमआकुलस्यगृहस्यभगवत केवलिन संभवति तस्यहिसमुद्घातस्यतृतीयचतुर्थपंचमसमयेषु कार्मणकार्मणशरीरयोगीचतुर्थेपचमेतृतीयेचेतिवचनात् द्वितीयषष्ठसप्तमसमयेषु औदारिकमिश्रमिश्रौदारिकयोक्तासप्तमषष्ठद्वितीयेष्वितिवचनादवाप्यते इतियथाख्यातसयमेद्वयोरपिसंभवात् इतिप्रोक्तामार्गणास्थानेयोगा साम्प्रतमार्गणासुउपयोगस्वरूपनिरूपणपूर्वकमुपयोगानभिधित्सुराह ॥८०॥

टबार्थ —मनोयोगना भेद ४ वचनयोगना ४ भेद औदारिककाययोग ए नव योग परिहारविशुद्धिसयममे ९ सूक्ष्मसंपरायसयममे नव योग छे, तेहिजमनना ४ वचनना ४ औदारिक १ अने एक वैक्रियकाययोग मेलीइएने ए १० योग छे मिश्रदृष्टिमे देशविरतिमे नव योग छे तेहीजवैक्रिय २ मेली जे ए ११ योग छे यथाख्यातचारित्रमे ९ योग छे नव ते तेहीजकार्मण ३ औदारिकमिश्र २ ए २ मेलीजे तेवारे ११ योग छे यथाख्यातमे ए नासठीमार्गणामे योग कह्या ॥ ८० ॥

तियनाणनाणपणचउ, दसणवारजिअलखणुवओगा।
विणुमणनाणदुकेवल, नवसुरतिरिनिरयअजएसु८१॥

टीका—तिअनाणनाण इत्यादि ॥ त्रण्यज्ञानानिमित्यज्ञानश्रुताज्ञानविभङ्गरूपाणिज्ञानानिमति श्रुतावधिमन पर्यवकेवललक्षणानि पचएतत्स्वरूपविशेषाश्चावश्यकभाष्यविवरणतोज्ञेय चत्वारिदर्शनानिचक्षुरचक्षुरवधिकेवलदर्शनलक्षणानित्येव द्वादशोपयोगा जियलक्खणत्ति जीवस्यात्मनोलक्षणलक्ष्यतेज्ञायतेतदन्यनावच्छेदेनेतिलक्षणमसाधारणस्वरूप अतएवोक्तम यनापिउपयोगलक्षणोजीव इतितेचद्विधासाकाराअनाकाराश्चतत्रपचज्ञानानित्रीण्यज्ञानानीत्यष्टाउपयोगा साकारा चत्वारिदर्शना यनाकाराउपयोगा यदाह्मनचनार्थसार्थसरससरोरुहसमूहप्रकाशनसहस्रभानुश्रीमदार्यश्याम प्रज्ञापनायाउपयोगपदेकतिविहेणभतेउवओगेपनत्ते ॥नचहा॥ आभिणिबोहियनाणेसागारोवओगे सुअनाणेसागारोवओगे ओहिनाणेसागारोवओगे मणपज्जवनाणेसागारोवओगे केवलनाणेसागारोवओगे मइअन्नाणेसागारोवओगे सुअअन्नाणेसागारोवओगे विभगनाणेसागारोवओगे अणागारोवओगेणभतेकतिविहपनत्तेगोयमाचउव्विहेपनत्तेतजहा चक्खुदसणअणागारोवओगे अचक्खुदसणअणागारोवओगे ओहिदसण अणागारोवओगे केवलदसणअणागारोवओगे ॥ इत्यादि अत्रज्ञानस्यमिथ्यात्वोपहतचेतनाविपर्यासेनअज्ञानत्वभवति नदर्शनस्यपन दर्शनस्यसामान्यग्राहकत्वेनपदार्थमामा यावबोधस्त्वात्रविपर्यासतावेनक्षुदर्शनत्वभेदा नभवति । मणनाणेत्ति विनामन पर्यवज्ञानकेवलद्विकच केवलज्ञान केवलदर्शन लक्षणशेपानवोपयोगाभवति, सुरेसुरगतौ निरित्ति, तिर्यग्गतौनिरयात्ति नरकगतौ अनयत्तिअविरतिमार्गणायाभवति । एतेषुहिसर्वविरत्यसभवेनमन पर्यवज्ञानकेवलद्विकचेति ॥ ८१ ॥

टबार्थ —हवे बार उपयोग कहे छे ३ अज्ञानमतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभगअज्ञान ३ पाचज्ञानमतिज्ञान

१ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ मन पर्यवज्ञान ४ केवलज्ञान ५ च्यार दर्शन ४ चक्षुर्दर्शन १ अचक्षुर्दर्शन २ अवधिदर्शन ३ केवलदर्शन ४ ए बारे जीव लक्षणउपयोग छे मन पर्यवज्ञान १ केवलज्ञान २ केवलदर्शन ३ ए तीन विना बाकी तीन ज्ञान तीन अज्ञान तीन दर्शन ए ९ उपयोग छे देवगति १ तिरिगति २ नरकगति ३ निक कहीजे अविरति ४ ए च्यार मार्गणामे नव उपयोग छे ९ ॥ ८१ ॥

तसयोअवेअसुका, हारनरपणिदिसन्निभविसवे।
नयणेयरपणलेसा, कसायदसकेवलदुगूणा ॥८२॥

टीका—तसयोअ इत्यादि ॥ त्रसेषुयोगेषुमनोवाक्कायरूपेषुवेदेषुद्र्याकारलक्षणस्त्रीपुनपुंसकलक्षणेषु शुक्ललेश्यायाआहारकेषुनरगतौपंचेन्द्रियेषुसंज्ञिषुभव्येषुसर्वेद्वादशाप्युपयोगा संभवंति । वेदेष्वभिलापरूपेषुकेवलद्विकहीनादशैवोपयोगा लिंगाकारमानेषुद्रव्यवेदेषुद्वादशोपयोगा कथ्यते नयणेत्ति नयनेचक्षुर्दर्शनेइयरत्ति इतरे अचक्षुर्दर्शनेपंचसुलेश्यासुचतुर्षुकषायेषु क्रोधमानमायालोभेषु केवलद्विकेनऊनादशउपयोगा भवंति नतुकेवलद्विकचक्षुर्दर्शनादिसद्भावेअनुत्पादात्तस्य ॥ ८२ ॥

टबार्थ—त्रसकाय १ तीनयोग ३ मनोयोग १ वचनयोग २ काययोग ३ वेद ३ पुरुषवेद १ स्त्रीवेद २ नपुंसकवेद ३ शुक्ललेश्या आहारक १ मनुष्यगति २ पचेन्द्रि १ सज्ञी १ भव्य १ ए १३ मार्गणामे सर्वे १२ उपयोग छे चक्षुर्दर्शनमे १ अचक्षुर्दर्शनमे १ पाच लेश्यामे कृष्ण १ नील २ कापोत ३ तेजो ४ पद्म ५ कषायमे १० उपयोग छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ए दोनु ओछाकीजे इत्यर्थ ॥ ८२ ॥

चउरिंदिअसन्निदुअन्नाण, दसइगबितिथावरिअचक्खु
तिअनाणदसणदुग, अन्नाणतिगभवमिच्छदुगे ॥८३॥

टीका—चउरिंदिअसन्निइत्यादि चतुरिंद्रियेअसज्ञिनिचत्वार-उपयोगाभवतिकेनइत्याहृद्यज्ञानदर्शनद्वेअज्ञानेमत्यज्ञानश्रुताज्ञान-रूपेद्वेदर्शनेचक्षुर्दर्शनाचक्षुर्दर्शनलक्षणइत्यर्थ तथानएवपूर्वोक्ताश्च-त्वारउपयोगाअचक्षुत्तिचक्षुर्दर्शनरहिता सन्त त्रयोभवन्तिके-ष्वित्याह ॥ इगत्तिसामान्यत एकेंद्रियेषुद्वींद्रियेषु त्रींद्रियेषुस्थाव-रेषुमत्यज्ञानश्रुताज्ञानेअचक्षुर्दर्शनेचेतित्रयउपयोगा भवन्तिशेषा विभंगतुनभवप्रत्ययत शेषास्तुसम्यक्त्वादिअभावात् नप्राप्यतेअज्ञा-नत्रिकचक्षुरचक्षुरूपदर्शनद्वय एवपंचोपयोगाभवन्तिअज्ञानत्रिकेअ-भव्यमार्गणायांमिथ्यात्वद्विकेमिथ्यात्वसास्वादनेपंचोपयोगा अज्ञान-त्रिकदर्शनाद्विकरूपानशेषा ज्ञानादिनमम्यक्त्व विरत्यभावादितियद्या-ज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेपूर्वाचार्यै कैश्चित्कारणान्नेष्यतेतन्नसम्यगवग-च्छाम इतिदेवेन्द्रसूरिनाम्ना ॥ ८३ ॥

टबार्थ—चौरेंद्रीमे १ असज्ञिमे १ मतिअज्ञान १ श्रुतअ-ज्ञान १ ए २ अज्ञान चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ ए दोय दर्शनमे ४ उपयोग छे । एकेंद्रीमे बेंद्रीमे तेंद्रीमे पाच थावरमे ए ८ मार्गणामे २ अज्ञान १ अचक्षुदर्शन ए ३ उपयोग छे, चक्षुदर्शन विना तीन अज्ञान मतिअज्ञान १ श्रुतअज्ञान २ विभंगअज्ञान ३ दोय दर्शन चक्षुदर्शन १ अचक्षुदर्शन २ ए ५ उपयोग छे । ए मार्गणामे तीन अज्ञानमे ३ अभव्यमेमिच्छ-द्विकमे मिथ्यात्व १ सास्वादन [illegible]
छे ॥ ८३ ॥

केवलदुगेनियदुग, नवतिअन्नाणविणुखइअअहखाए।
दसणनाणतिगदेसि, मिसिअन्नाणमीसत ॥ ८४ ॥

टीका—केवलदुगेनियदुग इत्यादि ॥ केवलद्विके केवलज्ञानदर्शनलक्षणेनिजद्विककेवलज्ञानकेवलदर्शनरूपभवतिनशेषादशअत्रलब्ध्युपयोग यच्छेदेनव केवलज्ञानदर्शनोत्पाद नट्ठम्मिछाउमत्थिएनाणे केवलनाणोउवरज्जइइनिवचनात् इति यवहारनयमतनिश्चयनयेनआवरणक्षयेआवार्य्यप्राकट्यनियमात् तथापिकेवलज्ञानप्रकाशेमत्यादीनामुपयोगानातत्रानर्भावात् यथासवितु प्रकाशेतारादीनासद्भावेऽपितन्नप्रत्यक्षदर्शनात् एवतेनशेषाइतिनवतिअन्नाणविणुअज्ञानत्रिकविनाशेषानवोपयोगा क्षायिकसम्यक्त्वेयथाख्यातचारित्रेप्राप्यते अज्ञानत्रिकस्यमिथ्यात्वसद्भावेभावात् नअनयोरिति ॥ तथादेसिइतिदेशविरतौ ज्ञानत्रिकमतिश्रुतअवधिलक्षणदर्शनत्रिकचक्षुरचक्षुरवधिदर्शनरूपप्राप्यते । नशेषास्तत्राज्ञानत्रिकस्यमिथ्यात्वप्रत्ययात्नात्रमन पर्यवकेवलद्विक सर्वविरत्यभावात्तत्रमिश्रेतदेवषट्कअज्ञानमिश्रितभवति तत्रसम्यक्त्वात् पतितस्यामिश्रभावगतस्यज्ञानत्रिकदर्शनत्रिकरूपउपयोगषट्कप्राप्यते मिथ्यात्वात् मिश्रमार्गगतस्यअज्ञानत्रिकदर्शनत्रिकरूपउपयोगषट्कप्राप्यते अत्रावधिदर्शनमार्गणाऽभिप्रायेणोच्यते इति ॥ ८४ ॥

टबार्थ—केवलदुगे केवलज्ञान १ केवलदर्शनमे आपआपणाएहीज केवलज्ञान केवलदर्शन ए बे उपयोग छे तीन अज्ञान विना बाकी नव उपयोग पाच ज्ञान च्यार दर्शन ए समीलने नव उपयोग छे क्षायिकसमकितमे यथाख्यातचारित्रमे दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ तीन ज्ञान

मतिज्ञान श्रुतज्ञान अवधिज्ञान ए ६ उपयोग छे, देशविरतिमे अने एहीज ६ उपयोगज्ञानसुमिश्र न कीजे ज्ञान काढीजे एटले २ अने दर्शन ३ अज्ञान ए ६ उपयोग मिश्रमे छे ॥८४॥

मणनाणचक्खुवज्जा, अणहारेतिन्निदसचउनाणा ।
चउनाणसजमोवसम, वेअगेओहिदसेअ ॥८५॥

टीका—मणनाणचक्खुवज्जा इत्यादि ॥ मन पर्यवज्ञानचक्षुर्दर्शनवर्जा शेषान्शोपयोगाअनाहारकेभवति, यत्तुमन पर्यवज्ञानेचक्षुर्दर्शनेनद्वानाहारकेनसभवति अनाहारकोविग्रहगतिकेवलिसमुद्घानायोगिसिद्धावस्थायानचनरानयो सभव तथा नीणिदर्शनानि चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनरूपाणिचच्चारिज्ञानानि मतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणानीत्येवसमोपयोगाभवति, चतुर्षज्ञानेषु मतिश्रुतावधिमन -पर्यायलक्षणेषु तथा चतुर्षुसयमेषु सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिकसूक्ष्मसपरायेषु औपशमिकेसम्यक्त्वे तथा वेदकेक्षायोपशमिके अवधिदर्शनेचसमुच्चयेनगेपाइहाप्यवधिदर्शनेमत्यज्ञानाद्युपयोगमतिपेधोवद्धश्रुताचार्याभिप्रायापेक्षयाद्रष्टय इतिमार्गणासुप्रोक्ताउपयोगा मनातरेआपेक्षिकमतिपादिकागाथामाह॥

दोवेरतेरबारसमणेकमा, अट्ठदुचउचउवयणे ।
चउदुपणतिन्निकाए, जीअगुणयोगोवओगन्ने ॥१॥

अत्रमुख्यस्वरयमनापेक्षयाभिन्नयोगमुर यत्व याख्यारूपागाथास्वनोव्यार येयाइतिसाप्रतमार्गणासुलेश्या निरूपयन्नाह ॥ ८५ ॥

टबार्थ —मन पर्यायज्ञान, चक्षुदर्शन ए दोय काढीजे अनाहारकमे १० उपयोग छे तीन दर्शन ३ चक्षु १ अचक्षु २ अवधि च्यार ज्ञान ४ मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान मन पर्यायज्ञान,

ए ४ उपयोग छे च्यार ज्ञानमे सजममे उपशमसमकितमे क्षयोपशम समकितमे अवधिदर्शनमे ए इग्यार मार्गणामे सात उपयोग छे ॥ ८५ ॥

छसुलेसासुसट्ठाण, एगिंदिअसन्निभूदगवणेसु ।
पढमाचउरोतिन्निउ, नारयविगलग्गिपवणेसु ॥८६॥

टीका—छसुलेसासुसट्ठाण इत्यादि ॥ षट्सुलेश्यासुस्वस्थान स्वा स्वा लेश्याभवति यथाकृष्णलेश्याया कृष्णलेश्यानीललेश्यायानीललेश्या इत्यादि सामान्यत एकेन्द्रियेषुअसंज्ञिभूदकवनेषुपृथिव्यबुवनस्पतिषुप्रथमा कृष्णनीलकापोततेजोलेश्याश्चतस्र भवति भवनपति व्यतरज्योतिष्कसौधर्मेशानदेवाहिस्वस्वभवच्युताएतेषुमध्ये समुत्पद्यते तेचतेजोलेश्यावन्त समुत्पद्यते नारकेषु विकलेन्द्रियेषु (द्वीन्द्रियेषु त्रीन्द्रियेषु चतुरिन्द्रियेषु) अग्निषु वायुकायिकेषु प्रथमास्तिस्र कृष्णनीलकापोतलेश्याभवति नान्याप्रायोऽमीषामप्रशस्ताध्यवसायस्थानोपेतत्वात् ॥ ८६ ॥

भावार्थ—हिवेबासठ मार्गणामे लेश्या कहे छे, तिहा छ लेश्यामे आपआपणी लेश्या छे कृष्णलेश्यामे कृष्ण छे नीललेश्यामे नील छे, तेजोमे तेजो कापोतमे कापोत एकेन्द्रीमे असज्ञीमे २ पृथिवीकाय अपकाय वनस्पतिकाय ए पाच मार्गणामे पहिली कृष्ण नील कापोत तेजो ए च्यार लेश्या छे नारकीगतिमे बेन्द्रीमे तेन्द्रीमे चौरेन्द्रीमे अग्निकायमे वायुकायमे ए छ मार्गणामे पहिली तीन लेश्या छे ॥ ८६ ॥

अहरकायसुहुम्मिकेवल, दुगिसुकाछाविसेसठाणेसु।
बधाचउसवत्थवि, अकसायएगइदलवधो ॥८७॥

टीका—अहकारएसुहुम्मि इत्यादि ॥ यथार यानसयमेसू-क्ष्मसपरायसयमे केवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शनरूपेशुक्लेश्या-एवनशेषा एतासुअत्यन्तविशुद्धपरिणामत्वात्, शेषासुमार्गणासु एकचत्वारिंशत् सर यासुपडपिलेश्या प्राप्यते ॥ उक्तामार्गणासुलेश्या सम्प्रतिबधनचविभजन्नाह॥ बधाचउसव्वत्थवि इत्यादि मिथ्यात्वादि-हेतुभि आत्मप्रदेशैकर्मपुद्गलानालोलीकरणबध सचतुर्द्धाप्रकृतिबध स्थितिबध रसबध प्रदेशबध तत्रयोगापयडिपएसठिइअणुभाग-कसायाओइतिवचनात् प्रकृतिप्रदेशबधौयोगात्भवन स्थितिबध-रसबधौकषायात्भवन, तत्रनत्त्वार्थतोज्ञेय ज्ञानेषु त्रिषुअज्ञानेषु षट्सुसयमेषु त्रिषुदर्शनेषु षट्सुलेश्यासुभव्याभव्येषु षट्सुसम्यक्त्वेषु सज्ञि असज्ञि मार्गणासु आहारकानाहारकमार्गणासु चतुर्विधोपिऽबध तेनसर्वत्रापिसर्वास्वपिमार्गणासु बधभेदाश्चत्वारोपिप्राप्यते अकसाए कषायरहितासुकेवलद्विकयथाख्यातलक्षणासुत्रिषुमार्गणासु पगइ इतिप्रकृतिबध तथा दलत्ति प्रदेशसमुदयोदल प्रदेशबंध इति-बधद्वयप्राप्यते योगरूपस्यहेतो सद्भावात् द्वारायानवन्चकमसक्षे-पार्थ ॥ ८७ ॥

टबार्थ—यथाख्यातचारित्रमे सूक्ष्मसपरायचारित्रमे केवल-ज्ञानमे केवलदर्शनमे एक शुक्लेश्या छे। बीजी मार्गणा १३ गतिर्तेंद्री १ त्रस १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ ज्ञान ७ सजम ५ दर्शन ३ भव्यसमकित ६ सज्ञी १ आहारक २ इकतालीस मार्गणामे ६ लेश्या छे। बधना ४ भेद छे, सर्वमार्गणाये च्यार प्रकारनो बध छे, जिहा कषायोदय नही तिहा प्रकृतिबध तथा प्रदेशबध छे ॥ ८७ ॥

पणतसनरयोएसु, कसायलेसाअचक्खुभवेसु ।
चउमूलउत्तरापुण, सगवन्नाहेयवोभणिया ॥ ८८ ॥

टीका—अथवन्धहेतवोमूलोत्तरामार्गणासुनिरूपयन्नाह ॥ तत्र मूलहेतवोमिथ्यात्वाविरतिकषाययोगलक्षणाश्चत्वारउत्तरहेतवः मिथ्यात्वपञ्चकअविरतिद्वादशककषायपञ्चविंशतय योगा पञ्चदशसर्वमीलनेसप्तपञ्चाशत्, तत्रपर्याप्तिपञ्चेंद्रियमार्गणाया त्रसकायमार्गणाया नरगति मनुष्यगतिमार्गणाया काययोगमार्गणाया कृष्णादिलेश्यासु षट्सुअचक्षुर्दर्शनेभव्यमार्गणाया सञ्ज्ञिमार्गणाया आहारकमार्गणाया एव चतुर्दशमार्गणाया मूलहेतवश्चत्वार उत्तरहेतव सप्तपञ्चाशत्भणिता प्ररूपितास्तीर्थकरै इतिमनोयोगेवाग्योगेचक्षुर्दर्शनमार्गणाया औदारिकमिश्रकार्मणयोगविनापञ्चपञ्चाशद्धेतव प्राप्यते । ॥ ८८ ॥

टबार्थ —पंचेंद्रीमार्गणाये त्रसकायमार्गणाये मनुष्यगतिमार्गणाये योग तीनने विषे कषाय ४ लेश्या ६ अचक्षुदर्शन १ भव्य एटली मार्गणाये १८ मूल च्यार बंधहेतु छे, मिथ्यात्व १ अविरति १ कषाय १ योग १ ए च्यार छे, उत्तर सत्तावन छे, मिथ्यात्व ५ अविरति १२ कषाय २५ योग १५ ए सत्तावन छे ॥ ८८ ॥

तिरिगईअन्नाणतिगे, अजयअभवेमिच्छिअणहारा ।
थीएदुवेयहीणा, साहारापुरिससढंमि ॥ ८९ ॥

टीका—तिरिगईअन्नाणइत्यादि ॥ तिरिगईति तिर्यग्गतौअज्ञानत्रिकमार्गणासु अजयत्ति अविरतिमार्गणाया अभव्यमार्गणाया मिथ्यात्वमार्गणाया अणहारात्ति आहारकशरीरआहारकमिश्ररहिता पञ्चपञ्चाशत्हेतव प्राप्यते थीएत्त्रीवेदेतेपूर्वोक्ता पञ्चपञ्चाशत्पुरुषवेदनपुंसकवेदहीनात्रिपञ्चाशत्हेतव सम्भवन्ति ॥ तेएवत्रिपञ्चाशत्-

साहाराआहारकद्विकसहिता पचपचाशत्हेतव पुरुषवेदेनपुसकवेदेचप्राप्यते अन्यतरवेदद्वयहीनाभवतिपुरुषवेदेस्त्रीनपुसकेनस्त्रीपुरुपेनइतिहेतवोहि उदयरूपाज्ञेया उदयरूपा परिणामविशोधिसक्लेशहेतवोज्ञेया ॥ ८९ ॥

टवार्थ —तिरिगति १ अज्ञानतीन अविरति १ अभव्य १ मिथ्यात्व ए सात मार्गणाने विषे आहारक २ विना ५५ बंध हेतु छे मूल ४ छे, स्त्रीवेदमार्गणाये पुरुषवेद तथा नपुसकवेद ए विना ५३ हेतु छे, ते वेपनमध्ये पुरुषवेद तथा नपुसकवेदमध्ये आहारक बे मेळीये तेवारे ५५ हेतु छे ॥ ८८ ॥

देवेउरलाहारग, सढविणानारगेअथीपुरिसा । सढयुआएगिंदिसु, चउछत्तीसचमूलियरा ॥ ९० ॥

टीका—देवेउरलाइत्यादि ॥ देवगतिविषये औदारिकद्विकाहारकसढइतिनपुसकवेदविनाद्विपचाशत्बंधहेतवोभवति । भवप्रत्ययादेवनसभव नारकेनारकगतौस्त्रीवेदपुरुषवेदविनातेएवदेवप्रत्यया एकपचाशत्बधहेतवोभवति षढयुआइतिषढनपुसकवेदयुक्ताइत्यनेन नरकगतौनपुसकवेदएवउदयेप्राप्यते एकेंद्रियेषुमूलहेतव चउत्तीचत्वारइतरेउत्तरभेदा छत्तीस इतिषट्त्रिंशत्भेदा तेचअग्रेतनगाथोक्ता ज्ञेया ॥ ९० ॥

टवार्थ —देवगतिमध्ये औदारिक २ आहारक २ नपुसकवेद १ ए पाच विना ५२ बंधहेतु छे । नरकगतिमध्ये आहारक २ औदारिक २ स्त्रीवेद १ पुरुषवेद ए ६ विना ५१ हेतु छे । एक नपुसकवेद मेळीये एकेंद्रीयमध्ये मूल च्यार उत्तर छत्तीस बंधहेतु छे, ते सर्वे आगळी गाथाये कह्या छे ॥ ९० ॥

इगमिच्छसत्तअविरय, कसायतेवीसपचयोगाय ।
पवणेवचउथावरि, अविउवाहेउचउत्तीस ॥ ९१ ॥

टीका—तेचउच्यते ॥ इगमिच्छइत्यादि ॥ तत्रएकेंद्रियेषुमिथ्यात्वअनाभोगएकअविरतय सप्त तत्रषट्कायवधस्पर्शनेंद्रियविषयरूपा सप्तअविरतय कषाया त्रयोविंशति स्त्रीपुरुषवेदहीनायोगा औदारिकद्विकवैक्रियद्विककार्मणयोगलक्षणा पचपवनेवायुकायेष्वेव षट्त्रिंशत्भेदा प्राप्यतेचउथावरिस्थावरचतुष्केपृथिव्यप्वनस्पति तेजोलक्षणासुचतसृषु अविउव्वित्तिवैक्रियद्विकहीनाश्चतु त्रिंशत्हेतव प्राप्यते पृथिव्यादिषुवैक्रियद्विकनसभवति ॥ ९१ ॥

टबार्थ —एक अनाभोगमिथ्यात्व १ छकाय ६ फरसनेंद्रियनी अविरति ए सात अविरतिकषाय बे वेद विना तेवीस योगा पाच योग औदारिक २ वैक्रिय २ कार्मण १ ए पाच बधहेतु छे । वायुकायमध्ये ३६ बधहेतु छे । पृथिवी १ अप २ तेउ ३ वनस्पतिए ४ थावरमध्ये वैक्रिय २ विना ३४ बधहेतु छे ॥ ९१ ॥

विगलेइन्दिअवुड्ढी, वयणयुआछसत्तअट्ठतीसाय ।
नाणतिगओहिदसे, वेअगखवगेसुअडचत्ता ॥९२॥

टीका—विगलेइन्दिअवुड्ढी इत्यादि॥ विगले द्वींद्रिय त्रींद्रिय चतुरिंद्रियलक्षणमार्गणात्रिकेइद्रियाणा द्वीन्द्रिये रसनेन्द्रियवृद्धि त्रीन्द्रिये घ्राणेन्द्रियवृद्धि चतुरिन्द्रिये चक्षुरिन्द्रियवृद्धि वयणत्तिवचन असत्यामृषारूप तेनयुनाइत्यनेन येपूर्वोक्ता पृथ यादिषुचतुस्त्रिंशद्धेतवस्तेअसत्यामृषावाग्योगारसनेन्द्रियाविरतियुक्ता छड्तिपद्-

युक्ताख्रिंशत् पट्त्रिंशत् त्रीन्द्रियेषु तेएव घ्राणेन्द्रिययुक्ता सप्त-त्रिंशत् हेतव भवति ते एव त्रीन्द्रियप्रत्यया चक्षुरिन्द्रियाऽविरति-युक्ताअष्टत्रिंशत् चतुरेन्द्रियेषुप्राप्यते तथा ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणेअवधिदर्शनेवेदकेक्षयोपशमसम्यक्त्वेस्वरगेक्षायिकसम्यक्त्वे अष्टचत्वारिंशत्हेतवस्तत्रमिथ्यात्वपचकाननानुबंधिचतुष्टयरहिता पट्-चत्वारिंशत्, अविरतिसम्यग्गुणस्थानमायोग्या,आहारकद्विकचप्रम-त्तानुदयप्रायोग्यमेव अष्टचत्वारिंशत् हेतवोज्ञानत्रिकादिमार्गणासु-प्राप्यते ॥ ९२ ॥

अर्थ—विकल्ने विषे इंद्रियवृद्धि करवी अने वचनयोग असत्याअमृषाए भेळीये तेवारे बेन्द्रियने मिथ्यात्व १ अविरति ८ कषाय २३ योग ४ ए उत्तीस हेतु छे तेन्द्रि ने घ्राणेन्द्रिनी अविरति भेळीये तेवारे सडतीस बन्धहेतु छे चउरेन्द्रि ने चक्षुइन्द्रिनी अविरति भेळीये तेवारे अडतीस बन्धहेतु छे ज्ञान ३ तीन अवधिदर्शन क्षयोपशमसमकित क्षायिकसमकित एटली मार्गणाये अडतालीस बन्धहेतु छे ॥ ९२ ॥

मिच्छअणहीणउवसमि, हारगहीणाछचत्तसासाणे। मिच्छाहारगहीणा, मीसेदेसेगुणप्पभवा ॥ ९३ ॥

टीका—मिच्छअणहीण इत्यादि ॥ उवसमिउपशमसम्यक्त्वे मिथ्यात्वपचकअनतानुबंधिचतुष्टयरहिता आहारकद्विकहीना छचत्त-इति पट्अधिकाश्चत्वारिंशत् पट्चत्वारिंशत्हेतव प्राप्यते तथा सास्वादनेमिथ्यात्वपचकाहारकद्विकहीना पचाशत्हेतव प्राप्यते मिथ्यात्विना मिथ्यात्वएवोदयात् आहारकस्यप्रमत्तादौउदयात् तथा मीसेदेसेत्तिमिश्रे तथा देशेदेशविरतौ गुणप्रभवामिश्रेमिश्रगुणस्था-

नप्राप्यते निचत्वारिंशित् देशविरतोदेशविरतिगुणस्थानप्रायोग्या एकोनचत्वारिंशत्हेतव प्राप्यते ॥ ९३ ॥

टबार्थ.—मिथ्यात्व ५ अनन्तानुबंधि ४ ए नव विना उपशमसमकितमध्ये आहारक २ ते अडतालीसमां काढीये तेवारे छेताळीस बंधहेतु छे सास्वादनगुणठाणे मिथ्यात्व ५ आहारक २ ए ७ विना पचास बंधहेतु छे मिश्रे तेताळीस तथा देशविरते इगुणच्पाळीस बंधहेतु छे जे गुणठाणे कही ते ॥९३॥

केवलदुगिसगयोगा, जोगाइक्कारशुद्धचरणमि ।
नवयोगिककसाओ, सुहुमेदसहेयवोभणिया ॥९४॥

टीका—केवलदुगिसगयोगाइत्यादि ॥ केवलद्विकेकेवलज्ञानदर्शनलक्षणेसप्तयोगा प्रथमान्तिममनोवाग्योगरूपा औदारिकद्विककार्मणकाययोगरूपा प्राप्यतेमोहोदयाभावात् मिथ्यात्वाविरतिकषायभेदानामनुदय शुद्धचारित्रत्वात्असत्यमिश्रमनोवाग्योगाभाव निर्मोहत्वात्तसंशयवाक्यादिकरणाभावात् नैवक्रियाहारकोइति मनोयोगवाग्योगाष्टकऔदारिककाययोगएतेनवयोगाउपशांतयथाख्यातस्य तथाक्षीणमोहस्यभवतिऔदारिकमिश्रकाययोगकार्मणयोगौतुकेवलिसमुद्घातावस्थायांयथाख्यातचारित्रिनोभवत एवएकादशयोगा भवति सुहुमेसूक्ष्मसंपरायचारित्रेनवयोगा चत्वारोमनोयोगा चत्वारोवाग्योगा औदारिककाययोगलक्षणा एकसूक्ष्मसंज्वलनलोभरूप कषाय । एवंदशहेतव भवंतिशेषकषायाणाउदयाभावात्तद्भावेवाविरतेरप्यभाव मिथ्यात्वोदयस्तुप्रथम एवगुणस्थानकंयावत्तन्नपरतेननप्राप्यते ॥ ९६ ॥

टबार्थ.—केवलज्ञान १ केवलदर्शन एने विषे सात योग

छे । मनना ४ वचनना ४ औदारिक २ कार्मण ए ११ योग-बंधहेतु, यथाख्यातचारित्रने विषे मनना ४ वचनना ४ औदारिक १ नव योग तथा एक सज्वलन लोभ ए दश बंधहेतु छे ॥ ९४ ॥

सजलणनोकसाया, कम्मणओरालमीसविणुयोगा। सामाइयछेएअण, हारथ्थीविउविपरिहारे ॥९५॥

टीका—सजलणनोकसाया इत्यादि ॥ तत्रसामायिकचारित्रे-छेदोपस्थापनीयचारित्रेषड्विंशति हेतव प्राप्यते तत्रद्वादशकषाया-नुदयेसर्वविरतिप्रादुर्भाव सर्वविरतिप्राकत्त्वेचमिथ्यात्वाविरतिन्वस-एवअन सज्वलनचतुष्यनवनोकषाया एवत्रयोदशकषायमेदा कार्मणौदारिकमिश्रयोगाभावेशेषास्त्रयोदशयोगा एवषड्विंशतिबंध-हेतव प्राप्यते, सामायिकच्छेदोपस्थापनीयेप्राप्यन्ते तथापरिहारविशु-द्धिचारित्रेस्त्रीवेदरहिताद्वादशकषाया मनोयोगवाग्योगाष्कऔदारिक-चेतिनवयोगा एतेनवयोगाएवएकविंशतिहेतव प्राप्यते वैक्रिया-हारकलब्धीच वनवासित्वात् अभिगृहीततपोविशेषयुक्तत्वान्नभवत ॥ ९५ ॥

टवार्थ—सज्वलनना ४ नोकषाय नव कार्मण २ औदारिकमिश्र ए बे विना १३ योग छवीस बंधहेतु छे सामायिक छेदोपस्थापनीय चारित्रने विषे आहारक २ स्त्रीवेद २३ बंध हेतु छे ॥ ९५ ॥

तेरसकसायजोगा, मणनाणेविंतिकेइमणवयणे । योगातेरसतोहिं, उज्जुसुअनयविहीगहिआ ॥९६॥

टीका—तेरसकसायजोगा इत्यादि ॥ मणनाणेमन पर्यवज्ञाने तेरसत्तिनयोदशकषाया सज्वलनचतुष्टयनवनोकषायलक्षणा त्रयोदशयोगाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगद्वयरहिता षड्विंशतिहेतवः प्राप्यते, अत्रमतांतरेकेचित्तुवदंति मनोयोगे वचनयोगे पूर्वपचदशयोगा उक्तास्तेचनैगमनयेअतीतनैगमापेक्षयाएपाजीवानामनोयोग वचनयोगस्तस्यपचदशयोगा प्राप्यते, केचित्मनोयोगेपर्याप्तावस्थापेक्षयाओदारिकमिश्रकार्मणयोगरहितास्त्रयोदशयोगा भवति, नेच ऋजुसूत्रनयापेक्षयाऔदारिकमिश्रकार्मणयोगद्वयअपर्याप्तावस्थायापर्याप्तावस्थायातुर्णानेनेनत्रयोदशैवयोगागृहीता कषाय चतुष्टयेद्वादशकषायहीना पचचत्वारिंशद्धेतवः प्राप्यते ॥९६॥

टबार्थ—तेर योग औदारिकमिश्र १ कार्मण ए २ विना सज्वलनना ४ नवनोकषाय ए छवीस बन्धहेतु छे तथा पूर्वे मनोयोगने तथा वचनयोगने सत्तावन्न बंधहेतु ग्रही तेमध्ये योग पनरगवेख्या तेसज्ञी अपर्याप्तो १ पर्याप्तो २ जीवभेदनी अपेक्षाये नैगमनयगवेख्यु छे तथा केइक आचार्य पर्याप्ति कर्या पछी मनवचन थाय तेमाटे ते ३ योग गवेषे छे औदारिकमिश्र १ कार्मण २ ए बे नथी गवेषता ते ऋजुसूत्रनय गवेषे छे ऋजुसूत्रनय वर्त्तमानकालग्राही छे तेमाटे ते ग्रह्यु छे एव बन्धहेतु अधिकार कह्यो छे ॥ ९६ ॥

चउदसयोगाविहीणा, अणहारेअसन्निएसुइगचत्ता। वयतिवणमिच्छेचउ, पुरिमथ्थीहारदुगहीणा॥९७॥

टीका—चउदसयोगविहीणा इत्यादि ॥ तथा अनाहारकमार्गणायाचतुर्दशयोगान भवति कम्मअणहारेइतिवचनात् शेषामि-

ध्यात्वादपोढ्विचत्वारिंशत्कार्मणयुक्ताश्रिचत्वारिंशत् हेतव प्राप्यते असन्नीएसुत्ति असज्ञिमार्गणाया एगचत्ति एकचत्वारिंशत्हेतवोभवति, तत्रसप्तपचाशत्लक्षणेषु वचनयोगत्रयमनोयोगचतुष्टयसिध्यात्वचतुष्टय अभिग्रहादिक मनोयुक्तस्यैवामनस्कस्यानाभोगमिध्यात्वमेवतेनाभिग्रहादयश्चत्वारिमिथ्यात्वानि, पुरुषस्त्रीवेदोआहारकद्विकमनस अविरति एवपोटशहेतवोनभवति शेषाएकचत्वारिंशत्भवति थीनरपणिदि चरमाचउइतिग्राम्यलिंगाकारमाननवस्तुगत्याइति ।। इत्युक्ता मूलोत्तरचहेतव मार्गणासु यत्अपेक्षाभेदेनोक्त तत्सर्वमपिसापेक्षमेयनोत्प्रत्रबुद्धिकार्यादक्षैरिति ।। साप्रतमाश्रवभेदान्मार्गणासुनिरूपयन्नाह ।। ९७ ।।

- टबार्थ —

नरपंचिदियतसभव, योएआहारसुकसन्निसु । वायालीसआसव, केवलदुक्खायगेचउग ।।९८।।

टीका—नरपचिदियतसभव इत्यादि ।। तत्राश्रवभेदाद्विचत्वारिंशत् इदिअकसाप अव्रययोगापचचउपचतितिकिम्माकिरीयाओपणवीसकाइअमाइयाभेया ।। तत्रनरमनुष्यगतौपचेन्द्रियेत्रसकायेभव्येयोगत्रिकेआहारकेशुक्ललेश्याया सज्ञिमार्गणाया द्वाचत्वारिंशत् आश्रवभेदा प्राप्यते एतासुमार्गणासु जीवभेदेन कालभेदेन सर्वे आश्रवभेदा प्राप्यते तथा केवलज्ञानकेवलदर्शने उपयोगद्वये यथाख्यातचारित्रेचउगत्तिचतुष्क योगत्रिकेयापथिकाक्रियारूपआश्रवचतुष्कप्राप्यते *निर्मोहस्यइन्द्रियकषायअव्रतादीनाअभावात* । कायिक्यादिसपरायिकिक्रियायाअभावात् आश्रवचतुष्कमेवभवति एव त्रयोदशमार्गणा उक्ता ।। ९७ ।।

टबार्थ —हवे मार्गणाये आश्रवना भेद कहे छे मनुष्य पचेंद्रिय त्रसकायभव्य १ योग ३ आहारक शुक्ललेश्या सन्नी एटली मार्गणाये इन्द्रिय ५ कषाय ४ अव्रत ५ योग ३ क्रिया २५ ए ४२ बेतालीस आश्रव छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ यथाख्यातचारित्र ए तीने मार्गणाये इरियावही क्रियारूप एक आस्रवनो भेद पामीये तीन योग एव ४ पामीये ॥ ९७ ॥

एगिंदिथावरेसु, तीसरसणाइइंदियानथ्थी ।
मणवयणयोगवययोग, पचइयानत्थिकिरियाओ९८॥

टीका—एगिंदियावरेसु इत्यादि ॥ एकेन्द्रियमार्गणायास्थावरपचकमार्गणायात्रिंशतआस्रवभेदा प्राप्यते रसनादीन्द्रियाणिनसति आसुस्पर्शनेन्द्रियस्यसद्भावात कषायचतुष्क अव्रतपचक एक काययोग चक्षुरिंद्रियाभावात्दृष्टिकी क्रियाभवति पाडोच्ची १ सामतोवणी १ आनयनी क्रिया १ आज्ञाप्रत्ययिकी क्रिया एता चतस्र क्रिया वचनयोगवनएवभवति स्थावरेषु वचनयोगाभावात् न एता क्रियाइरियावहीविहिणा इतिपदअनयोज्यतेनइर्यापथिकी क्रियाक्षीणकषायाणाभवति एकेन्द्रियादिपदमार्गणासु कषायोदय अस्त्येवतेननेर्यापथिकी क्रिया ॥ शेषा कायिक्यादय एकोनविंशतिभेदा प्राप्यते इत्येवत्रिंशत् ॥ ९८ ॥

टबार्थ —एकेन्द्रिमार्गणाये थावर ५ मार्गणाये त्रीस आस्रव छे रसनादिक इन्द्रिय नथी एटले एक फरसन इन्द्रिय छे कषाय ४ अव्रत ५ मनोयोग वचनयोग नथी एक काययोग छे वचनयोगथी उपनी जे क्रिया ते नथी दृष्टिकी १ पाडोच्ची

१ सामनोवणी १ आणवणी १ आज्ञाप्रत्ययकी १ ए वचनयोगनी क्रिया नथी ॥ ९८ ॥

इरियावहीअभावो, वेइदिसुरसणवयणसजुत्तं ।
तेइदिएसुनासा, चउरिदिसुचक्खुदिट्ठीअ ॥९९॥

टीका—इरियावहीअभावो इत्यादि ॥ द्वींद्रियेषुतेएवत्रिंशत्भेदा रसनेन्द्रियवचनयोगसयुक्ता द्वात्रिंशत्योगा भवति, ननुवचनयोगोदयेपाडोच्ची इत्यादिकाक्रियाकथन तनोन्यते पाडोघाप्रमुखाक्रियापूर्वापरकालयावत्वाक्यस्मरणवत् भवतिस्मरणचदीर्घकालिकसज्ञाधारकस्यदीर्घकालिकीसज्ञा तु समनस्कस्यैवतेनद्वींद्रियादीनानभवति ॥ त्रींद्रियेपुरसनेंद्रियघ्राणेंद्रियपोगात्त्रयस्त्रिंशत्आस्रवभेदा सभवति। चतुरिंद्रियेषुचक्षुरिंद्रियेतथादिठ्ठि इतिदृष्टिकीक्रियाएवद्वयोर्मीलनेपचत्रिंशत्आस्रवाभवति।अत्रएकेंद्रियविकलेंद्रियेषुमृषावादादिअनता वचनयोगादिअभावेकथप्राप्य ते तनोच्यते द्र यास्रवत्वतुकारणरूपभावास्रवोह्यास्रवत्वनचात्मज्ञानाभावात् सर्वेषाभावास्रवास्सत्येव अशुद्धविभावपरिणतिपरिणमनेनात्मन परकर्तृत्वपरिणत्याभावप्राणातिपात १ जीवाजीवादिपदार्थानास्याद्वादयथार्थोऽनवबोधपरिणामोमृषावाद सारबुद्धयापुद्गलग्राहकतापरिणतिरदत्तादान, पौद्गलिकवर्णादीनाअनुभूति भावमैथुन, पुद्गलसुखेषुसरक्षणापरिणाम परिग्रह इत्यनेनपरभावकर्तृताहिंसाविपर्यस्तज्ञान मृषापरभावग्राहकतादत्तादान परभावास्वादनमैथुन परभावरक्षणापरिग्रह एतेभावास्रवा सर्वजीवेष्वविरतेषुसदाप्राप्यते एवएवसर्वत्रयोज्यम् ॥९९॥

टबार्थ—इरियावहीक्रिया एटलानो अभाव शेष इगुणीस क्रिया छे मीलया तीस आश्रव छे, बेंद्रिय ने रसनइंद्रिय तथा

वचनयोग ए बे मेळीये तेवारे ३२ आश्रव छे, तेंद्रियने एक नासिका इन्द्री मेळीये तेवारे तेतीस आश्रव छे, चौरिंद्रिय ते चक्षुदर्शन एकमे इन्द्रि मेळीये तेवारे ३५ आश्रव भेद छे ९९॥

पाणाइवायपरिग्गहम्मि, च्छअपच्चक्खतहरिआवहिया, इंदियअव्वयहीणा, मणनाणेचरणतिअगेअ ॥१००॥

टीका—पाणाइवायपरिग्गहम्मि इत्यादि ॥ तत्र मनःपर्यव-ज्ञानेचारित्रत्रिकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिलक्षणेप्राणा-तिपातिकीक्रिया १ परिग्रहिकीक्रिया, मिथ्यात्विकीक्रिया, अप्रत्या-ख्यानिकी, तथाईर्यापथिकीक्रियाहीना, शेषाविंशति क्रिया का-यिक्यादिका प्रशस्ता, अर्हत्भक्त्यादौशासन पावातनारणेविष्णु-कुमारादीनामिवविंशति क्रिया सामायिकचारित्रेप्राप्यते, प्रश-स्तप्रवृत्तिरिवप्रशस्तापिप्रवर्त्तवेएवनतुयदिप्रशस्ताप्राद्वेषिक्यादिनि-यामुनीनाग्रहत्वेनयाप्रशस्ताप्राणातिपातिक्यपिकथनसगृह्यते, त-त्राह ॥ प्राणातिपाताश्रवस्यसर्वथाप्रत्याख्यानत्वात्तद्धेतुभूतद्वा-दशकषायोदयाभावात्नभवति, योगचापल्यादिद्वेषरागादिपरिणाम-स्यसत्त्वात्, अप्रशस्तनावारणेनप्रशस्ततात्प्रवृत्तिरुपालभ्यते, ननुक्रि-याया आस्रवभेदत्वात् प्रशस्तादिक्रिया प्रशस्तपुण्याद्यास्रव-कारणत्वेनकथनिर्ग्रंथ नत्यजति, नि कर्मेतासाम्यरुचिपरिणतस्य-कर्महेतुक्रियाप्रवृत्तौकिंप्रयोजन तत्राह ॥ निकाचितबद्धसज्वलन-कषाययोगानामवश्योदितत्वात् ययोदयभोग्येचाशुभभयप्राप्तगुणवि-नाशकत्वेनपराद्वृत्तादोपक्षय ज्ञानादीनाचवृद्धि शुभकत्वय वचन-शुभतिवत् अवश्योदयत्वेनाभापणेचनिर्जरानभवतितेनयथार्थोपदे-शादित्वात्पापकरणेनिर्जराउक्ता एवप्रशस्तक्रियापिज्ञेया । इन्द्रिय-

पचकाऽननपचकहीना सप्तविंशतिरास्रवभेदा प्राप्यते, इंद्रियोपयोगेसत्यपिमिथुनास्रवस्याभावात् ाद्रियविषयतातेनेंद्रियास्रवाभाव ॥
॥ १०० ॥

टबार्थ —प्राणातिपातिकी क्रिया १ परिग्रहिकी क्रिया १ मिथ्यात्विकी क्रिया १ अपचरकाणी क्रिया १ तथा इरियावही क्रिया १ ए पाच क्रिया विना २० क्रिया इंद्रिय ५ विना अव्रत ५ विना एटले कषाय ४ योग ३ क्रिया २० ए सत्तावीस आश्रव भेद छे, मन पर्याय ज्ञान १ तथा सामायिक १ छेदोपस्थापनीय १ परिहार विशुद्धि १ ए तीन चारित्रने विषे सत्तावीस आश्रव भेद छे ॥१००॥

नाणतिगओहिदसे, अमिच्छदेसिमिच्छइरिअहीणाय, मणइरिअविणाअमणे, अणहारेहुतितित्तीस ॥१००॥

टीका—ना०तिगओहिदसे इत्यादि ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणेअवधिदर्शनेमार्गणाचतुष्ये अमिच्छत्ति मिथ्यात्विकीक्रियारहिताएकचत्वारिंशत आस्रवभेदा प्राप्यतेअविरतिसद्भावात्, देसित्ति देशविरतिमार्गणायाअमिच्छइरियत्ति मिथ्यात्विकीतयाईर्यापथिकीक्रियारहिताश्चत्वारिंशत् आस्रवभेदा प्राप्यते, मिथ्यात्वोदयस्यचतुर्थगुणस्थानेएवगतत्वात्ईर्यापथिकीतुअकषायस्यभवति देशविरतस्यकषायाष्टकोदयेवर्तमानत्वात्, तयानुदेशविरतस्यत्रसहिंसानिवृत्तावपिस्थावरहिंसासद्भावेप्राणातिपातिकीसद्भाव इच्छापरिमाणादिकृतेत्रैलोक्यप्रमाणाविरतिनिवृत्तिरितिसिद्धातापेक्षयैकदेशविरतिर्नाल्पडितवीर्यसद्भावात्, अप्रत्याख्यानिकीक्रियासद्भावस्तेनचत्वारिंशदास्रवा मणइरिअविणा अमणेत्ति असंज्ञिषुमनोयोगीर्यापथिकीक्रियाविना-

१०९

अमणेअसज्ञिमार्गणायाचत्वारिंशद्भेदा प्राप्यंतेतत्मत्ययस्यतत्रसद्भा-
वात , अणहारेत्ति अनाहारकमार्गणायानपत्रिंशत्आस्रवा तत्रेंद्रिय-
पचकतुभावेंद्रियसद्भावेप्राप्तनयाचभगवत्याजीवेणभतेगम्भवक्कवेकिं-
सइंदीयेआणिंदीयेवकमति १गो० सइंदीयेवक्कमतिसेणकानिइंदीयेवक्कम-
तिपचेंदियेवक्कमतिइतिवचनात इद्रियपचकअनतपचककपायचतुष्टयम-
नोयोगवाग्योगरहितएक कायपोगस्तथापचविंशति क्रियायादृष्टि-
कीक्रियानभवति, यद्यपिपचेंद्रियस्यविग्रहगतिकस्यचक्षुरिंद्रियास्रवस-
द्भावेऽपितर्णादिग्रहणरूपलब्धिमनरेणनदृष्टिकीक्रिया, पाडोधीया सा-
मतोवणीयातु दीर्घकालिकसज्ञायुक्तस्यवचनयोगवत भवतितेनना-
नाहारकस्य नेसत्यीसाहत्थीतुओदारिकादिस्थूलशरीरव्यापारवत भ-
वति, आणवणीआज्ञाप्रायोगिक्यपिवचनयोगयुक्तस्यकायादिव्यापार-
तोभवति, विदारणिक्यपि ओदारिकवैक्रियशरीरपर्याप्तस्य भवति, इत्य-
ष्टक्रियारहिता सप्तदशक्रिया कायिक्यादिका प्राप्यन्तेकाययोग-
स्यसद्भावात् अधिकरणादिकचात्मगुणघातादिपरिणतया विज्ञेयएवते-
नानाहारकमार्गणायात्रयस्त्रिंशत्आस्रवा प्राप्यते ॥१०१॥

टबार्थ —मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान १ अवधिज्ञान अवधिदर्शन १ ते एकताळीस मिथ्यात्विकी क्रिया विना देशविरति मार्गणाये मिथ्यात्विकी क्रिया १ तथा इरियावहीकि क्रिया ए बे विना चाळीस आश्रवना भेद छे, मनोयोग १ इरियावही २ ए बे विना ४० आश्रव भेद असज्ञीने विषे छे, अनाहारक मार्गणाये तेतीस आश्रव छे, दृष्टिकी १ पाडोची २ सामतोवणी १ सव्छीसाहच्छी १ आणवणी १ विदीरणा १ आज्ञाप्रायोगिकी १ ए क्रिया मनोयोग १ वचनयोग १ ए बे योग नथी बाकी तेतीस छे॥१०१॥

वेयगियमिच्छइरिया, उवसमसन्गेतइरीअजुत्ता,
सुहमेयोगतिलोहो, काइयअणभोगपिज्जाय ॥१०२॥

टीका—वेयगियमिच्छा । वेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वे मिथ्यात्विकीक्रियाईर्यापथिकीक्रियारहिताश्चत्वारिंशदास्रवभेदा प्राप्यते, अविरतादिदोषसद्भावात मिथ्यात्वास्रवविगमेसम्यक्त्वदर्शनप्रादुर्भाव तयाउपशमसम्यक्त्वेक्षायिकेसम्यक्त्वेतेचत्वारिंशउईर्यापथिकीक्रियायुक्ता एकचत्वारिंशदास्रवाभवति, मिथ्यात्विकीक्रियायाअभाव । सूक्ष्मसंपरायचारित्रे योगतित्ति, योगामनोवाक्कायरूपास्त्रय लोहोत्ति लोभ सज्वलनलोभ कायिकीक्रिया, अनाभोगिकीक्रिया साचज्ञानावरणकर्मोदयसत्वात् यावत् ज्ञानावरणनावत् किंचित्अज्ञानपदार्थज्ञानमस्त्येवेतितेनअनाभोगिकीक्रियासभव इति पिज्जत्ति रागप्रत्ययिकीक्रियालोभस्परागागत्वात् क्रोधोदयाभावात् नद्वेषिकीक्रियाअनइत्येव सप्त आस्रवा प्राप्यते, केचित् ॥१०२॥

टबार्थ —वेदग कहेता क्षयोपशम समकितने विषे मिथ्यात्विकी तथा इरियावहीक्रिया विना च्यालीस भेद आश्रव ना पामीये, उपशम समकित तथा क्षायिक समकित मार्गणाये इरियावही क्रिया भेळीये एटले ४१ आश्रव छे, सूक्ष्मसपराय चारित्रे योग तीन, लोभ कषाय तथा कायिकी क्रिया अनाभोगिकी क्रिया तथा रागकी क्रिया एटला सात आश्रव पामीये सूक्ष्मसपराय मध्ये ॥१०२॥

अहिगरणदुगयुआ नव, केइभन्नतिसेसेइयुयाला,
इरियावहीविहीणा, चरकूअचरकुम्मिवायाला॥१०३

टीका—अहिगरण इत्यादि ॥ अधिकरणीपाउसीइतिक्रिया-द्वयंवदतितत्रापिप्राद्वेष्यातुनसभवति, तथापिप्रज्ञापनाटीकायाचतु-र्णामपिकषायाणारागद्वेषोभयरूपत्वात् प्राद्वेषिकीक्रियाभवति १ इ-त्याशयभेदात्नवआस्रवभेदालभ्यते (इति) केइनवभनति, सेस-त्तिशेषमार्गणायामनुष्यविनागतित्रिकवेदत्रिककषायचतुष्टयअज्ञान-त्रिकलेश्यापचक अभव्यत्वमिथ्यात्वसास्वादनमिश्र अविरतिश्चेति-त्रयोविंशतिमार्गणासु "इरियावहीविहिणत्ति" ईर्यापथिकीक्रियारहित एकचत्वारिंशत्आस्रवा प्राप्यते, एताश्चमार्गणानियमात्सकषायाएव भवति, तेनसापरायिकीक्रिया प्राप्यतेनेर्यापथिकी, चक्षुर्दर्शनेअचक्षु-र्दर्शनेद्विचत्वारिंशदास्रवा लभ्यतेइत्युक्ता आस्रवामार्गणास्थाने-पुसाम्प्रतमार्गणासुसवरभेदान्दर्शयन्नाह ॥ तेच

समिइगुत्तिपरीसह, जइधम्मोभावणाचरित्ताणि,
पणतिगदुवीसदसबार, पचमेएहि नायवा ॥१॥

तेचगुणस्थानशतकटीकायाव्यारयाताएवज्ञानन्या ॥१०३॥

टबार्थ—केइक आचार्यो नव भेदे अधिकरणी क्रिया तथा पाउसी क्रिया बे सयुक्त करी नव आश्रव भेद माने छे सू-क्ष्मसपराय मध्ये शेष थाकती रही जे २५ मार्गणा मनुष्य विना तीनगति वेद ३ कषाय ४ अज्ञान ३ लेश्या ५ अ-भव्य १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ ए सर्वे मार्गणाये इरियावही विना ४१ आश्रव भेद पामीये, एटले बासठी मा-र्गणाये आश्रवना भेद कह्या ॥१०४॥

नरतसपणिदिजोए, नाणचउगेतिदंससुक्कासु,
भवेउवसमिखायग, सन्निआहारेसुसवेवि ॥१०४॥

टीका—नरतस इत्यादि नरत्तिमनुष्यगतौत्रसकाये पञ्चेन्द्रियेमनोवाक्कायरूपेयोगत्रयेमतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणेज्ञानचतुष्के तिदंसत्ति चक्षुरचक्षुरवधिलक्षणेदर्शनत्रिकेसुक्काइति शुक्लेश्यायामभवत्ति भव्वे भव्येउवसमेत्ति उपशमक्षायिकलक्षणेसम्यक्त्वद्वयेसन्निमार्गणायाआहारकमार्गणायाएवएकोनविंशतिमार्गणासुसर्वेसप्तपञ्चाशत्संवर भेदा प्राप्यते चारित्रभेदानासर्वेषासत्त्वात् त सत्त्वेचसंवरभेदा सर्वेऽपिप्राप्यते इति ॥१०४॥

टबार्थ—हवे बासठि मार्गणाने विषे संवरतत्वना भेद कहे छे, मनुष्य गति १ त्रसकाय १ पचेंद्रीय १ योग ३ ज्ञान ४ ए च्यार दर्शन तीन चक्षु १ अचक्षु २ अवधिदर्शन ३ शुक्ललेश्याने विषे भव्य मार्गणाने विषे उपशम समकित सज्ञा मार्गणाये आहारक मार्गणाये १९ मार्गणा तेने विषे सर्व भेद संवरना सत्तावन पामीये ॥१०४॥

वेयतिकसायलेसा, वेअगिहरकायसुहमजईहीणा,
लोभेतेउससुहमा, चउचरणविणायचरणंमि॥१०५॥

टीका—वेयतिकसायलेसा इत्यादि ॥ तिइतिडमरुकमणिन्यायेनोभयथासंबध वेदत्रिके, तिकसायत्ति कषायत्रिकेक्रोधमानमायालक्षणे लेसाइति कृष्णादिलेश्यापंचके वेयगि, वेदत्रिकेक्षयोपशमे सम्यक्त्वेयथाख्यातचारित्र सूक्ष्मसंपरायचारित्रलक्षणभेदद्वयाभावात् पचपचाशत्संवरभेदा प्राप्यते, सम्यग्दर्शनत सर्वचारित्रपर्यतएतेषु

परस्थापनीयादिचारित्रचतुष्टयाभावात् त्रिपञ्चाशत्संवरभेदा प्राप्यते, छेदोपस्थापनीयेऽपित्रिपञ्चाशत् सामायिकादिपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसंपरायययाख्यातचारित्ररहिता परिहारेशेषचारित्ररहितास्त्रिपञ्चाशत् सूक्ष्मेऽपित्रिपञ्चाशत्,यथाख्यातेऽपिअन्यचारित्ररहितास्त्रिपञ्चाशत्संवरभेदा प्राप्यते, अत्रसूक्ष्मसंपराययथाख्यातयोर्भाजनाद्द्वादश नमाप्यते, ध्यानारूढत्वात् तेनएकचत्वारिंशत्भेदाभवति, सूक्ष्मसंपराये-यथाख्यातेऽपिएकचत्वारिंशत्भेदाअनमोहोदयप्रायोग्या परीषहान-भवति, ततस्तत्सहनरूपा परिषहा क्षुनोभवति तत्रोच्यतेपरी-षहजय संवरत्वेनपरिषहजयरूपस्यात्मपरिणामस्यसद्भावात् एते-भेदा प्राप्यते,उक्त"तत्त्वार्थभाष्ये"परीषहजय संवर परिषहास्तु-वेदनीयादिकर्मप्रभवास्तेचभगवत्यादर्शिताएव । गाथायांतुभावना-अपहारोनोक्त सतुचकारान्ग्राह्य केचित्तुप्रशमरत्यादौतुभावना-सत्त्वमपिवदंति भावनापूर्वकज्ञानमेवध्यानेपरिणमति तेनभावना-सत्त्वमपिज्ञेयम् ॥ १०५ ॥

टबार्थ —वेद ३ तीनमध्ये स्त्रीनपुंसकमे कषाय ३ तीन-मध्ये क्रोधमानमायामाहे लेश्या पाच शुक्ल विना क्षयोपशमसम-कितने विषे यथाख्यातचारित्र तथा सूक्ष्मसंपरायचारित्र ए भेद विना ५५ संवरभेद पामीये, लोभकषाय मार्गणाये सूक्ष्मसंप-रायचारित्र संयुक्त ५६ संवरभेद छे चारित्र पाच मार्गणाने विषे जे चारित्र गवेषीये तेहथी बीजा चारित्र ४ विना ५३ भेद संवरना पामीये ॥ १०५ ॥

केवलदुगेअणहारे, चउसयमभावणाविणातिगई ।
अविरईदेसेभावण, सेसासुअसंवरोनत्थि ॥१०६॥

टीका—केवलदुगेअणहारे इत्यादि ॥ केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणे मार्गणाद्वयेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसपरायचारित्ररहिताद्वादशभावनारहिताएकचत्वारिंशत्सवरभेदा - प्राप्यते, समितिगुप्तिस्थितवर्मपरीपहजयादिपरिणामानाक्षायिकत्वावस्थाप्राप्ताइतिगम्यसर्वेषामपिसाधनवर्माणासपूर्णत्वेनभवनात् ॥ तथा अनाहारकमार्गणाया सामायिकादिचारित्रचतुष्काभाव द्वादशभावनाअपिनभवतिपन अन्तरालगतौक्षयोपशमचारित्राणाभावनानाचनसभव केवलिसमुद्घातावस्थायातुएतेषापोडशभेदानामसभवएव समित्यादीनातुकेवलिसमुद्घातकालेक्षायिकत्वेनसगृहीतत्वात् ॥ तथा नरकतिर्यग्देवगतौअविरतिमार्गणाया देशविरतौद्वादशभावनाएवसभवतिनशेषा सर्वविरत्यभावात्, ननुदेशविरतस्यपोषधादिकालेसमितिगुप्त्यादयोभवति ता कथनगृहीता तत्रोच्यते देशविरतस्यसमित्यादयोऽभ्यासरूपा नक्षयोपशमरूपा अनवस्थायित्वेनप्रवृत्तिरूपत्वात्नानुमोदना दोषस्यसर्वतोनिवृत्तेन समित्यादयोगुणा श्रावकस्य इति ॥ सेसासु शेषासुजातिचतुष्कस्थावरपचकाज्ञानत्रिकाऽभव्यमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रासज्ञिलक्षणासुसप्तदशमार्गणासुसवरस्याभावएवसम्यक्दर्शनगुणप्राग्भावमतरेणनसवरभाव तेनसवरोनास्ति इतिदर्शितसवरतत्वस्वरूप मार्गणासु साप्रतनिर्जरानत्वविभजन्नाह ॥ १०६ ॥

टवार्थ—केवलज्ञान केवलदर्शन अनाहारक मार्गणानेविषे च्यार चारित्रभावना बार ए सोल विना ४१ सवरना भेद पामीये छे तीन गतिनरक १ तिर्यच २ देवगति ३ अविरति १ देशविरति मार्गणाये १२ भावनाना बार भेद छे शेषमार्गणाये सवरनो भेद नथी बासठि मार्गणाये सवरना भेद कह्या. ॥ १०६ ॥

सम्मदिट्ठीमग्गणासु, सकामइयरायमिच्छमग्गणाए।
नरतिरयदेवतिरिया, थोवादुसंखणत्तगुणा ॥१०७॥

टीका—सम्मदिट्ठीमग्गणासु इत्यादि ॥ मूलभेदत निर्जरा-पूर्वोपचितकर्मपरिपहलक्षणा अथवा देशत कर्मक्षयलक्षणाद्विधाए-कासकामाऽपराअकामा, तत्राकामाप्रदेशविपाकतोभुज्यमानकर्मद-लिकक्षरणरूपाअस्यनिर्जरानोत्पन्नाहुल्प उक्तचावश्यकनिर्यु-क्तौप लेमहेमहल्ले छुभपक्खिवइ सोहइनालिइयमिच्छत्तीजीवोचयई-बहुअ खवइअप्प ॥ १ ॥ इयसम्यग्दर्शनादिगुणरहितस्यमिथ्यादि गुणस्थानविके एवंभवति ॥ सकामातुप्रदेशविपाकतोभुज्यमान-कर्माणुभवे अरक्तद्विष्टतयामाध्यस्थ्यवृत्त्याभुज्यमानस्यतद्विपाकश्च-स्वरूपतोभिन्न इति मन्यमानस्य नाहं क्रोधादिमान् नाहं शरीरी, नाहं आहारी, नाहं ससारी अहंतु शुद्धचिद्रूपानन्तस्वस्वभावानंदभोगी इति स्वरूपालम्बनदृष्टिवरस्य भुज्यमानकर्मेत रसशोषणेनअसर येयगुणा-निर्जराभवतितेनसकामाअस्यच नारपनानिर्जरामहत्ता उक्तचावश्यक-निर्युक्तौ पलेमहेमहल्ले छुभरोहेइपक्खिवइनालिं, इयसम्मत्तिजीवोच-यइ। अप्पखवइबहुअ ॥ १ ॥ सासकामा सम्यग्दर्शनगुणयुक्तासु मार्ग-णासु मतिज्ञानादि ज्ञानपचकेनैकसम्यग्दर्शनादि मार्गणासु सामा-यिकादि चारित्रमार्गणासु सकामानिर्जराभवति, इतराअज्ञानादि सम्यक्त्वगुणवियुक्तासु मग्गणाएमिथ्यात्वमार्गणासु एकातेनामि-थ्यात्वएवतासु अकामनिर्जरा चशब्दात्‌पासुगत्यादिमार्गणासुयेषा-जीवानासम्यक्त्ववतेषा सकामायेषा मिथ्यात्ववतेषा अकामासकाम-निर्जराभेदाद्द्वादशतपोलक्षणास्तेचविनयवैयावृत्तिस्वाध्यायरूपा अवि-रतसम्यग्गुणेदृश्यते परवेचकेचित् आचार्या सवररूपा म यत्वेय-तिधर्मभेदेषुतपस सवरा तर्गतत्वात्‌भगवतीटीकायादेवानाविनयादि

तपोगुणेनिर्जरालक्षणेऽपिगृहीतमिति याख्यातानिर्जरा, साम्प्रतमार्गणासुअल्पबहुत्वदर्शयन्नाह ॥ नरनिरयेत्यादि । इहयथासरयेनयोजना-कर्त्तव्या साचैवनिरयदेवतिर्यग्योनिकेभ्य सकाशान्नरामनुष्या स्तोका यत द्विविधानरा सम्मूर्छजा गर्भजाश्चनतसम्मूर्च्छजा कदाचिन्नभवतियत एषाविरहोजघन्यत समयमुत्कृष्टत चतुर्विंशतिमुहूर्त्ता वेनोत्पन्नानाजघन्यत उत्कृष्टतश्चान्तमुहूर्त्तस्थितिकत्वेन परत सर्वेषानिर्लेपात्यदातुभवन्तिनदाजघन्यत एकोद्वौनयोत्कृष्टनस्तुसरयाता असरयाताइतरेतुसर्वदेवसरयेयाभवति । तत्रसरयेयकस्यसरयानभेदत्वान्नज्ञायतेकियदपिसरयेयक तदुच्यते-इहपष्ठ वर्ग पचमवर्गेणपदागुणितोभवति तदागर्भजमनुष्यसरयाभवतिनतद्वयोस्तुवर्गश्चत्वारोभवतिएषप्रथम वर्ग (४) चतुर्णा वर्ग षोडशइतिद्वितीयोवर्ग (१६) षोडशानावर्गोद्विशतेषट्पञ्चाशदधिके (२५६) अस्यराशेर्वर्ग पचषष्टिसहस्राणिपचशतानिषट्त्रिंशदधिकानिचतुर्थोवर्ग (६५५३६) अस्यराशेर्वर्ग सार्वगाथयाप्रोच्यते । "चत्तारियकोडिसयाउणतिसचहुतिकोडीओअउणावन्नलक्खासत्तट्ठिंचेवयसहस्सा ॥१॥ दोसयछन्नुयापचमवग्गोइमोविणिद्दिट्ठो ॥ अकस्थापना ॥ ४२९४९६७२९६ अस्यापिराशेर्वर्गोगाथात्रयेणप्रतिपाद्यते । लक्खकोडाकोडीचउरासीइहभवेसहस्साइ, चत्तारिपसत्तट्ठाहुतिसयाकोडीकोडीण ॥१॥ चोयाणलक्खाइकोडीणसत्तचेवयसहस्सीतिन्निंयसयायसयरी कोडीणहुतिमायव्वा ॥२॥ पचाणउइलक्खाएगावन्नभवेसहस्साइछसोलसुत्तरसयाएसोछट्ठोहवइवग्गो ॥३॥ १८४४६७४४०७३७०९५५१६१६ तदयषष्ठोवर्ग पूर्वोक्तेनपचमवर्गेणगुण्यतेतस्याचसतियासरयाभवतितनरसयाजघन्यपदिनोगर्भजमनुष्यावर्त्ततेसाचेय ७९२२८१६२५१४२६-४३३७५९३५४३९५३३६ अयचराशिनिश्चयार्थगाथाद्वय छग-

तिन्निातिन्निसुन्नपचेवयनवयातिन्निचत्तारिपचेवयातिन्निनवपघपचसगनि-न्नेवतितेव ॥१॥ चउच्छदोचउइक्कोपणदोछक्किक्कगोयअट्ठेवदोदोन-वसत्तेवय अकठाणापराहुति । तदेवमेतेषुअकस्थानेषुगर्भजमनुष्या भवति । उत्कृष्टपदेमनुष्याअसख्येयोत्सर्प्पिण्यवसर्प्पिणीसि भवति इत्यादि अनुयोगद्वारतोज्ञेयनरेभ्य नैरयिकाअसख्येयगुणाउक्तचानु-योगद्वारे नेरइयाणभतेकेवइयावेउवियशरीरापनत्तागोयमा, दुविहाबद्धल्ल-यामुक्केल्लयातत्थणजेतेबद्धिल्लियातेण असखिज्जा। असखिज्जाहिंओ-सप्पिणीहिंअनसप्पिणीहिंअनहीरति खेत्तओअसखेज्जाओसेढीओ-पयरस्सअसखेज्जोभागोतासिणसेढीणविरकभसूईअगुलपढमवग्गमूल-बीजवग्गमूलपडिपुन्नइत्यादिप्रमाणा नारका नरेभ्य असख्यातगु-णानारका तेभ्य देवा असख्यातगुणाअनसकलभुवनपत्यादिसमुदा-यापेक्षयाचिंत्यमानादेवानारकेभ्योऽसख्यातगुणाएव। तेभ्योऽपिचदे-वेभ्यस्तिर्यंचोऽनतगुणा तत्रानतसख्योपेतस्यवनस्पतिकायस्यसद्भा-वात्उक्तचएएसिणभतेनेरईयाणतिरिरकजोणियाणमणुस्साणदेवाणसि-द्धाणयकयरेकयरे हिंतो अप्पावाबहुआवातुल्लावाविसेसाहियावागो० सबथोवामणुस्सानेरइयाअसखेज्जगुणादेवाअसखिज्जगुणगुणासिद्धा-अणतगुणातिरिरकजोणियाअणतगुणा । साप्रतमिंद्रियद्वारेकायद्वा-रेतदभिधित्सुराह ॥१०७॥

टबार्थ —निर्जरा ते कर्मनु परिशाटन अथवा कर्मक्षरण ते निर्जराना मूल २ भेद छे, एक सकाम निर्जरा तथा बीजी अकाम निर्जरा छे, तिहा जेटली समकित सहित मार्गणा मति ज्ञानादिक तिणमाहे सकाम निर्जरा अने अभव्यादिक तेहने इतरक० अकाम निर्जरा छे, जे मार्गणा मध्ये समकित तथा मिथ्यात्व बे भेद छे ते मार्गणा मध्ये अकाम सकाम बे निर्जरा-

छे निर्जराना १२ भेद तपना छे ते बार भेद तो जे जीव देशविरति तथा सर्वविरति परिणम्या हवे तेहने चारित्र विना तपनी आगममध्ये ना कही छे तिणे देशविरति तथा सर्वविरतिने छे तथा भगवतीसूत्रे प्रायश्चित्त १ विनय २ वैयावच्च ३ तथा सज्झाय ए च्यार तप, समकितीने कह्या छे देवता समकितीने अधिकारे इम आगमथी जाणवो हवे अल्पबहुत्व कहे छे, मनुष्य थोडा छे, सख्याता छे, उत्कृष्टे २९ आकताइ छे मनुष्यथी नारकी असख्यात गुणा छे नारकीथी देवता असख्यात गुणा छे देवताथी तिर्यंच अनत गुणा छे, जे सूक्ष्मबादर एकेन्द्रिय सर्वमाहि गणवा तेवारे थाय ॥ १०७ ॥

पणचउतिदुएगिदि, थोवातिन्निहीअअणंतगुणा । तसथोवअसखग्गी, भूजलनिलअहीअवणणता॥१०८

टीका—पणचउतिदुएगिंदि ॥ इत्यादि ॥ इन्द्रियमार्गणायां सर्वस्तोका पचेन्द्रियास्तेभ्यश्चतुरिन्द्रियाविशेषाधिका तेभ्यस्त्रीन्द्रियाविशेषाधिका तेभ्योद्वीन्द्रियाविशेषाधिका यद्यपिघनीकृतस्यलोकस्यउर्द्धायआयतनाएकप्रादेशिक्य श्रेणयोऽसख्याता असख्यातयोजनकोटाकोटीप्रमाणाकाशप्रदेशसूचिगतप्रदेशराशिप्रमाणास्तासायावान्प्रदेशराशि तावत्प्रमाणाद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रिया पंचेन्द्रिया अविशेषे गसूत्रेनिर्दिष्टा तेभ्य एकेन्द्रिया॰ अनतगुणाद्वनस्पतिकायजीवराशेरनतगुणा एएसिणभते एगिंदिय बेंदिय तेंदिय चउरिंदिय पंचेंदियाणय कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहियावा गोयमा सवत्थोवापचेंदिया चउरिंदिया विसेसाहिया तेंदिया विसेसाहिया बेंदिया विसेसाहिया एगिंदिया अणतगुणा इत्यादि कायमार्ग-

णाऽल्पबहुत्वैस्तोकास्त्रसा द्वीन्द्रियाद्य पूर्वनिर्दिष्टास्तेभ्यस्त्रसेभ्य ऽसङ्ख्यातगुणा अग्निरिति अग्निकायिका सूक्ष्मबादरभेदभिन्ना असङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणत्वात्, तेभ्योऽप्यति पृथिवीकायिकाविशेषाधिकास्तेभ्योजलत्ति अप्कायिकाविशेषाधिकास्तेभ्योऽनिलविवायुकायिकाविशेषाधिका तेभ्य अकायिका सिद्धाअनन्तगुणास्तेभ्योपिवनस्पतिकायिकाअनन्तगुणा । यद्यपिचएतेषामपिपृथिवीकायिकादीनामसङ्ख्येयलोकाकाशप्रदेशराशिप्रमाणतयाऽविशेषेणनिर्देश कृत तथापिलोकानामसङ्ख्यानस्वस्थाने कमेदभिन्नत्वात् इहविशेषाधिकत्व अन्यथ्रचतुर्णांस्थावराणा सूक्ष्माणा सर्वलोकव्याप्यत्वात् अवगाहनाया सूक्ष्मत्वेजीवानाविशेषाधिकत्व अग्निकायेतुबादरराशेरल्पतमत्वात् स्तोकत्वमितिशेष एवेषा चतुर्णां असङ्ख्येयत्वात्, अकायिकानातुअतीतकालसमयेभ्य सङ्ख्येयगुणत्वात् तेभ्य वनस्पतिकायिकाअनन्तगुणा यत एकस्मिन्निगोदशरीरे अतीतानागतकालसिद्धेभ्योऽनन्तगुणत्वात् तादृशनिगोदानामसङ्ख्येयत्वात् उक्त श्रीप्रज्ञापनाया, एएसिणभते तसकाइयाण पुढविकाइयाण आउकाइयाण तेउकाइयाण वाउकाइयाण वणस्सइकाइयाण अपकाइयाण कयरे२हिंतो अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विसेसाहियावागोयमास त्थोवातसकाइया तेउकाइया असखिज्जगुणा पुढविकाइयाइयाविसेसाहिया अपकाइयाविसेसाहिया वाउकाउकाइयाविसेसाहीया अकाइयाअणतगुणा वणस्सइकाइया अणतगुणा ॥ १०८ ॥

टबार्थ —सर्वथी पचेन्द्री थोडा, पचेन्द्रीथी चौरन्द्री अधिका, तेहथी तेरिन्द्री अधिका, तेहथी बेन्द्री अधिका, बेन्द्रीथी एकेन्द्री अनन्तगुणा छे एम पचेन्द्री जाणवा त्रसकाय थोडा

छे तिणसु अग्निकाय असख्यातगुणा, अग्निकायथी पृथिवीकायना जीव अधिका, पृथिवीकायसु अप्कायना जीव अधिका, अप्कायसु वाउकाय अधिका, वाउकायसु वनस्पतिकाय अधिका ॥ १०८ ॥

मणवयणकाययोगा, थोवाअसखगुणअणतगुणा ।
पुरिसाथोवाइत्थी, सखगुणाणतगुणकीवा ॥ १०९ ॥

टीका—मणवयण इत्यादि ॥ मनोयोगिन स्तोका सज्ञिपचेंद्रियाणामेवमनोयोगित्वात्तेभ्य वाग्योगिनोऽसख्येयगुणा द्वींद्रियादीनामक्षेपात्, तेभ्योऽपिकाययोगिनोऽनतगुणा स्थावरणा तत्रक्षेपात् । आहचप्रज्ञापनाया एएसिणभंतेजीवाण मणयोगीण वागयोगीण काययोगीण अयोगीणयकयरे२हिंतो अप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहियावा गो० सवत्थोवामणयोगीवयजोगीअसखिज्जगुणा, अयोगीअणतगुणा, काययोगीअणनगुणा, सयोगीविसेसाहिया इत्यादि वेदमार्गणाया अल्पबहुत्वेसर्वत पुरिसापुरुपवेदा स्तोका तेभ्य स्त्रिय सख्यातगुणा ॥ उक्तच ॥ तिगुणातिरूव अहियातिरीयाण इत्थियामुणेयव्वा सत्तावीसगुणा पुणमत्तावीसहीआनराणच ॥ १ ॥ बत्तीसगुणाबत्तीसरूव अहिआउतहयदेवाणदेवीओपनत्ता जिणेहिंजिअरागदोसेहिं ॥ २ ॥ स्त्रीभ्य क्लीबा नपुसकाअनतगुणा अनतगुणनाच वनस्पत्यपे[illegible] ॥ उक्तच प्रज्ञापनाया एएसिण भतेजीवाण सवेयगाण [illegible] पुरुसवेयगाण नपुसकवेयगाण अवेयगाणकयरेकयरेहिंतो अप्पावाबहुआवातुल्लावाविसेसाहिया ॥ गो० ॥ सव्वत्थोवाजीवापुरिसवेयगा इत्थीवेयगासखिज्जगुणा अवेयगाअणतगुणा नपुसकवेयगाअणतगुणा सवेयगाविसेसाहीया ॥ १०९ ॥

टबार्थ —मनयोगी थोडा छे, सज्ञी जीव ग्रह्मा छे वचनयोगी असख्यातगुणा छे बेन्द्रियादिक सर्व जीव ग्रह्मा छे वचनयोगीथी काययोगी अनतगुणा छे एकेन्द्रिय सर्वेवणा वेमाटे पुरुषवेदी थोडा छे पुरुषवेदीथी स्त्रीवेदी सख्यातगुणा छे तिर्यचमे तिगुणा छे तीने वलि अधिका मनुष्यमे २७ गुणा छे २७ वली अधिका छे देवतामे ३२ गुणा ३२ अधिका छे, स्त्रीवेदियी नपुसकवेदी अनतगुणा छे एकेन्द्रियादिक सर्व लीधा ॥ १०९ ॥

माणीकोहीमाई, लोभीअहियमणनाणिणोथोवा।
ओहिअसखामइसुअ, अहीअसमअसखविभगा११०॥

टीका–माणीकोही इत्यादि कपायमार्गणायासर्वस्तोकामानिन., मानपरिणामकालस्यक्रोधादिपरिणामकालापेक्षया सर्वस्तोकत्वात्, तेभ्य क्रोधिनोविशेपाधिका क्रोधपरिणामस्यमानपरिणामकालापेक्षयाविशेषाधिकत्वात्, तेभ्योऽपिमायिनोविशेषाधिका तद्भूयस्त्वेनजतूनामभूतकालचमायावहुलत्वात्, ततोऽपिलोभिन विशेषाधिका सर्वजीवानालोभनाहुल्यत्वेनवत्तनात् अथवा क्रोधानाचताहृगकारणेनभवनात् लोभस्यअकारणेकारणेऽपिवर्तमानत्वात् ॥उक्तच॥ एएसिणभतेजीवाण सकसाईण कोहकसाईण माणकसाईण मायाकसाईण लोभकसाईण अकसाइगयकयरेकयरे अप्पावा बहुआवा तुल्लावाविसेसाहीआ ॥गो० सव्वत्थोवाजीवा अकसाइमाणकसाइ अणतगुणा कोहकसाईविसेसाहीया मायाकसाईविसेसाहीया लोभकसाइविसेसाहीया सकसाइविसेसाहीया इत्यादि ज्ञानमार्गणायामणनाणिणोमन पर्यवज्ञानिन सर्वस्तोका तद्धिगर्भजमनुष्याणातनाऽपिसय-

तानाविविधामपैपत्यादिल धियुक्तानाउपजायते ॥ उक्तच ॥ तस्स-जयरससम्प्पमापरहीयस्स विविहरिद्धिमइअजस्स इत्यादि तेचस्तोकाएवसरव्यातत्वात्, तेभ्योऽसख्येयगुणाअवधिज्ञानिन सम्यग्दृष्टि-देवादीनामप्यवधिज्ञानभावातेभ्योऽसख्येयगुणत्वात्, ततोऽवधिज्ञानिभ्योमतिज्ञानश्रुतज्ञानिनोविशेषाऽधिकाअवधिज्ञानरहितसम्यग्दृष्टिनरतिर्यक्प्रक्षेपात्, एनाचमतिज्ञानिश्रुतज्ञानिनौस्वस्थानेचिंत्यमानौद्वावपिसमौतुल्यौमतिज्ञानश्रुतज्ञानयोरनतरायकत्वात् यदाह्नंद्यादेवर्द्धिवाचका, जत्थमईनाणतत्थसुअनाणजत्थसुअनाणतत्थमईनाणदोविएयाइ अन्नुन्नमणुगयाइति । तेभ्योमतिश्रुतज्ञानिभ्योविभगज्ञानिनोअसख्यातगुणा मिथ्यादृष्टिसुरादीनाविभगज्ञानवतातेभ्योऽसख्येयगुणत्वात् ॥ ११०

भावार्थ—कषायमे मान कषाई थोडा छे, मान कषायथी क्रोधी अधिका छे, क्रोधी थीमायाकपटी अधिका छे, माया कपटी थी लोभी अधिका छे, मन पर्यवज्ञानी थोडा छे, जे मन पर्यवज्ञान मानुष्य साधुमेज होवे, मन पर्यवज्ञानीथी अवधिज्ञानी असख्यात गुणा जे च्यार गतिमे समकिती जीव कर्वा छे अवधिज्ञानी थी मतिज्ञानी श्रुतज्ञानी अधिका छे, जे च्यारे गतिना समकिती सर्व लेगा अने मतिश्रुति बेइ बराबर छे, तिणथी विभग ज्ञानी असख्यात गुणा छे, मिथ्यात्व द्रैवना थीवा पिण तिणे थकी ॥११०॥

केवलिणोणतगुणा, मइसुअअन्नाणणतगुणतुल्ला।
सुहमाथोवापरिहार, सखअ रकायसखगुणा॥१११॥

टीका—केवलिणोणतगुणा इत्यादि तेभ्योविभगेभ्य केवलिन, अनतगुणत्वात् सिद्धानातेभ्योऽनतगुणत्वात् तेषाचकेव-

लज्ञानयुक्तत्वात् तेभ्योऽपिचकेनलज्ञानिभ्योमत्यज्ञानश्रुताज्ञानिन' अनतगुणा सिद्धेभ्योऽपिवनस्पतिकायिकानाअनतगुणत्वात् तेषा-चमिथ्यादृष्टित्वयामत्यज्ञान श्रुताज्ञानयुक्तत्वात्, एवेचोभयेऽपिमत्य-ज्ञानिन श्रुताज्ञानिन स्वस्थानेचिंत्यमानास्तुल्या मत्यज्ञानश्रुता-ज्ञानयो परस्परमविनाभावित्वात ॥ उक्तच ॥ एएसिणभवेजी-वाण आभिणी बोहीअनाणीण सुअनाणीण ओहिनाणीण मणप-ज्जवनाणीण केवलनाणीग मइअनाणीण सुअअन्नाणीग विभगना-णीणयकयरकयरे हिंतोअप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहीवा गोय-मा सव्वत्थोवामणपज्जवनाणी ओहिनाणी असखिज्जगुणाआभिणि-बोहीअनाणीसुअनाणीदोवितुल्लाविसेसाहीआविभगनाणी असखि-ज्जगुणाकेवलनाणी अणतगुणाइअन्नाणी सुअन्नाणीयदोवितुल्ला-अणतगुणा इत्यादि । सयममार्गणायासुहमायोवा सूक्ष्मसपरायसय-मिन सर्वस्तोका शतपृथक्त्वमानसभवात्, तेभ्य परिहारविशु-द्धिका सख्यातगुणा उत्कर्षेन सहस्रपृथक्त्वसभवात्, तेभ्योऽपि यथाख्यातचारित्रिण सख्यातगुणा कोटिपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात् इति ॥१११॥

टबार्थ —केवलि अनत गुणा छे, जे सिद्ध भगवत माहि गण्या तेवारे तिणथी मति अज्ञानी श्रुत अज्ञानी अनत गुणा छे, एकेंद्रीय आदिक सव लेवा माहोमाहि बराबरी छे, सूक्ष्म-सपराय चारित्रीया थोडा-णा उत्कृष्टा एकसो बासठी छे, परि-हार विशुद्धि सख्य गुणा छे, उत्कृष्टा नवसो छे, यथा ख्यात चारित्रीया सख्यात गुणा उत्कृष्टा नवकोडि छे ते माटे ।१११।

छेअसमईयसखा, देसअसखगुणअणतगुणअजया ।
थोवाअसखदुअणता, ओहिनयणकेवलिअचक्खू११२॥

टीका—छेअसमईसखा इत्यादि तेभ्योयथार यातचारित्रिभ्य छेदोपस्थापनीयचारिनिण सख्येयगुणा कोटिशतपृथक्त्वेनलभ्यमानत्वात, तेभ्योऽपिसामायिकसयमिन सख्येयगुणा कोटिसहस्रपृथक्त्वेनप्राप्यमाणत्वात् इतितेभ्योऽपिदेशविरता असख्यातगुणाअसख्यातानातिरश्चादेशविरतसभवात्, तेभ्योअयताअविरताअनतगुणासयमहीनाद्यगुणस्थानकचतुष्टयवर्त्तिन इत्यर्थ मिथ्यादृशामनतानतत्वात् दर्शनमार्गणायायथाक्रमपदयोजना स्तोकाअवधिदर्शनिनचक्षुर्दर्शनिन असख्यातगुणा चतुरिंद्रियपचेंद्रियाणाततसभवात्, तेभ्य केवलदर्शनिन अनतगुणा सिद्धानामनतत्वात्, तेभ्य अचक्षुर्दर्शनिन अनतगुणा सर्वससारिजीवानासिद्धेभ्योअनतगुणत्वात् तेषाचनियमादचक्षुर्दर्शनोपेतत्वात् यदाहु परममुनय, एएसिण भतेजीवाण चक्खुदसणीण अचक्खुदसणीण ओहिदसणीण केवलदसणी ग कयरेकयरेहिंतो अप्पवा बहुआवा । गोयमासव्वत्थोवाओहि तिगाच ३ रुणी असखिज्जगुणाकेवलदसणी अणतगुणा अचक्खुदस णी अणत गुणा ति ॥११२॥

टबार्थ —तिगरा छेदोपस्थापनीय सख्यातगुणा उत्कृष्टा नव कोडीसो छे, सामायिक सख्यातगुणा छे, नवसहस्र कोडी छे देशविरति असख्यगुणा तिर्यंचगतिना मेलिये अविरति अनतगुणा छे, दर्शन च्यारनो अल्पबहुत्व कहे छे अवधिदर्शनी थोडा छे, तिणथु चक्षुदर्शनी असख्यातगुणा छे, केवलदर्शनी अनतगुणा छे अचक्षुदर्शनी अनतगुणा छे एकेन्द्रिय सर्व लेवा तेवारे अनतगुणा थाइ ॥ ११२ ॥

पच्छाणुपुविलेसा, थोवादोसखणतदोअहीया ।
अभविअरथोवणता, सासणिथोवोवसमसखा ॥११३॥

टीका—पच्छाणुपुव्वि लेसा इत्यादि ॥ लेश्याद्वारे पश्चानुपूर्व्या लेश्यावाच्या तद्यथा शुक्ललेश्यावंत सर्वस्तोका निर्मलपरिणामत्वात् मुरयत्वेनवैमानिकलांतकादिष्वनुत्तरसुरपर्यंतसानेपुकेपुचिदेवकर्मभूमिजेषु मनुष्यस्त्रीपुंसेषु तिर्यग्स्त्रीपुंसेषु । केपुचित्संख्यातवर्षायुष्केषु शुक्ललेश्यासंभवात् । तत संख्यातगुणा पद्मलेश्यावंत सनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकेषु देवेषु पूर्वोक्तेषु मनुष्यतिर्यक्षुपद्मलेश्यासंभवात् सनत्कुमारादिदेवानांलांतकादिदेवेभ्य संख्येयगुणत्वात्, तेभ्योऽपितेजोलेश्यावंत संख्येयगुणत्वात् सौधर्मेशानादिदेवेषुकेषुचित्तिर्यग्मनुष्येषु तेजोलेश्यासद्भावात् तेषांचसकलपद्मलेश्यासहितमाणिगणापेक्षयासंख्येयत्वात्, तत कापोतलेश्यावंत अनंतगुणाअनंतकायिकेष्वपि कापोतलेश्यासद्भावात्ततोऽपिविशेषाधिकानीललेश्यावंतो नारकादीनांतल्लेश्यावतोऽत्रप्रक्षेपात्, तत कृष्णलेश्यावंतोविशेषाधिका भूयसांतरलेश्यासद्भावात्, यदभ्यधायि परमगुरुणा, एएसिणं भंतेजीवाणं सलेसाणं किह्नलेसाणं नीललेसाणं काउलेसाणं पउमलेसाणं सुक्कलेसाणं अलेसाणयकयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुआवातुल्लावाविसेसाहियावा गोयमा सव्वत्थोवाजीवासुक्कलेसा पउमलेसा संखिज्जगुणातेजोलेसासंखिज्जगुणा अलेसाअणंतगुणा काउलेसाअणंतगुणा नीललेसाविसेसाहीया किह्नलेसाविसेसाहीया सलेसाविसेसाहीआ भव्यद्वारे अभव्यास्तोका स्तेषांवक्ष्यमाणस्वरूपजघन्ययुक्ताऽनंततुल्यत्वात् तेभ्योभव्या सिद्धिगमनार्हाअनंतगुणा आहय एएसिणं भंतेजीवाणं भवसिद्धीआणं अभवसिद्धीयाणं नोभवनोअभवसिद्धीयाणं कयरेकयरेहिंतो अप्पावा बहुआवा गोयमासव्वत्थोवाअभवसिद्धिआनोभवानोअभवाअणंतगुणाभवसिद्धिआअणंतगुणा सम्यक्त्वमार्गणायासास्वादनसम्यग्दृष्टय स्तोकाऔपशमिकसम्यक्त्वात्केपांचिदेवप्रच्यवमानानांसास्वादनत्वात्तेभ्य, औपशमिकसम्यग्दृष्टय संख्यातगुणा ॥११३॥

टनाय —लेश्यानो अल्प बहुत्व पश्चानपूर्वी कहीये, शुक्ललेशी थोडा छे तेथी पद्मलेश्यामे असख्य गुणा छे, तेजोलेशी असख्य गुणा छे, तेथी कापोत लेश्या असख्यगुणा, नीललेशी अधिका, तेथी कृष्णलेशी अधिका, अभव्य थोडा, भव्य अनन्तगुणा छे, सास्वादन सम्यक्त्वी थोडा तिणथकी उपशम समकिती सख्यातगुणा छे, तिणसु मिश्र असख्यातगुणा छे ॥११३॥

मीसासखावेअग, असखगुणखइअमिच्छदुणता ।
सन्नियरथोवणता, अणहारेथोनिअरअसखा ॥११४॥

टीका—मीसासखावेअग इत्यादि ॥ औपशमिकसम्यग्दृष्टिभ्य मिश्रा सख्यातगुणास्तेभ्य क्षायोपशमिकसम्यग्दृष्टय असख्यातगुणास्तेभ्य क्षायिकसम्यग्दृष्टय अनन्तगुणा , क्षायिकसम्यक्त्ववतासिद्धानामानन्त्यात्तेभ्योऽपिमिथ्यादृष्टयोऽनन्तगुणा सिद्धेभ्योऽपिवनस्पतिजीवानामनन्तगुणत्वात्, सज्ञिमार्गणायासज्ञिनोजीवा स्तोका , देवनारकसमनस्कपचेंद्रियतिर्यग्मनुष्याणामेवसज्ञित्वात्, तेभ्यइतरेअसज्ञिनोऽनन्तगुणा एकेंद्रियाद्यसज्ञिपचेंद्रियान्तर्जीवानामानन्त्यात् । यदागमेन्यगादि । एएसिणभते जीवाण सन्नीण असन्नीण नोसन्नीण नोअसन्नीण य कयरेकयरे हिंतो अप्पावाबहुआवातुल्लावाविसेसाहीया गोयमा सवत्थोवाजीवासन्नीनो असन्नीनो असन्नी अनतगुणा तथाआहारकमार्गणायाअनाहारका स्तोका विग्रहगत्यापन्नसमुद्घातेकेवलिसमुद्घातनावस्थाया अयोगिकेवलिनासिद्धानाअनाहारकत्वात्, तेभ्य इतरेआहारकाअसख्यातगुणा, ननुसिद्धेभ्योअनन्तगुणा ससारिजीवास्तेचप्राय आहारकास्तत कथअसख्यातगुणा अनाहारकेभ्य आहारकाइतिनैवदोष यत प्र-

तिसमयएकैकस्यनिगोदस्यअसख्येयतमभागस्यसर्वदापिविग्रहगत्या-समापन्नत्त्वेनप्राप्यमाणत्वात्, अत अनाहारकेभ्य आहारकाअ-सख्येयगुणा इतिचिंतितगत्यादिष्वल्पबहुत्वइदानींमार्गणासुमूलभा-वान्विभजन्नाह ॥११४॥

टबार्थ —तिणसु क्षयोपशम समकिती असख्यात गुणा छे, तिणसु क्षायिकसमकिती अनतगुणा छे, तिणसु मिथ्यात्वी अनतगुणा छे, सज्ञी थोडा, असज्ञी अनतगुणा छे, अना-हारक थोडा छे आहारक असख्यातगुणा मार्गणाये अल्पबहुत्व कह्यो निगोदनो असख्यातमो भाग सदा विग्रहगतिमे छे तिणे ॥ ११४ ॥

गइपचिदितसमि, जोएवेएकसायचउनाणे ।
सयमतिदसलेसा, भवखायगसन्निहारदुगे ॥११५॥

टीका—गइपचिंदि इत्यादि ॥ गतिचतुष्केपचेन्द्रियजातौत्रस-काये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्के मतिश्रुतावधिमन पर्यवलक्षणे ज्ञानचतुष्टये सयमसप्तके चक्षुरचक्षुरवधिदर्शनेलेश्यापट्के भव्येक्षा-यिकसम्यक्त्वे सज्ञिपचेन्द्रिये आहारके अनाहारके एवएकचत्वा-रिंशन्मार्गणाया पणभावाइतिमूलभावाउपशमक्षायिकक्षयोपशमऔ-दयिकपारिणामिकलक्षणा पचभावा प्राप्यन्ते ओघतइतिज्ञेय ॥ ११५ ॥

टबार्थ —गति ४ पचेन्द्रिपणो १ त्रसकाय १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ ज्ञान ४ सयम ७ दर्शन ३ लेश्या ६ भव्य १ क्षायिकसमकित १ सज्ञी १ आहारक १ अनाहारक २ एव मार्गणा ६२ ॥ ११५ ॥

पणभावाउवसमगे, खयगविणासेसआसुसमहीणा।
केवलदुगिउदय, खयपरिणामभावाय ॥ ११६ ॥

टीका—पणभावा इति उपशमसम्यक्त्वेक्षायिकभावमतरेण-चत्वारोभावा प्राप्यते, उपशांतदर्शनस्यक्षायिकभावभेदोनभवति, शेषकासुजातिचतुष्के स्थावरपचके, अज्ञानत्रिके, अभव्यमार्गणाया क्षयोपशमसम्यक्त्वेमिथ्यात्वेसास्वादनेमिश्रेअसंज्ञिलक्षणासुअष्टादश-मार्गणासुक्षायिकउपशमरूपभावद्वयरहिता क्षयोपशमौदयिकपारि-णामिकलक्षणास्त्रय भावाभवति, केवलज्ञानकेवलदर्शनलक्षणासु-मार्गणासु औदयिकपारिणामिकक्षायिकलक्षणास्त्रयोभावाभवति । इत्येवद्विषष्टिमार्गणासु मूलभावाउक्ता ॥ ११६ ॥ साम्प्रतमार्गणा-सुउत्तरभावान्दर्शयन्नाह ।

टबार्थ—पीसनालीस मार्गणाये पाच भाव छे, उपशम-समकिते क्षायिकभाव विना ४ भाव छे, शेषमार्गणाइन्द्रि ४ थावर ५ तीन अज्ञान ३ अभव्य १ क्षयोपशमसमकित १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ असज्ञी ए १८ मार्गणाये क्षायिक १ उपशम १ ए बे विना त्रण भाव छे, केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ए बे मार्गणाये औदयिक १ क्षायिक १ पारिणामिक १ ए तीन भाव छे इटले बासठि मार्गणाये मूल भाव कह्या ॥ ११६ ॥

उत्तरभावापणतस, जोएसन्नीतहेनआहारं।
सवेअभवहीणा, भवेमणुएतिगईहीणा ॥ ११७॥

टीका—उत्तरभावापणनस इत्यादि ॥ पंचेन्द्रियत्रसे

नसकायमार्गणाया, योगत्रिकमार्गणाया, संज्ञिमार्गणाया, आहारक-मार्गणाया, सर्वेऽपि पंचाशन्भेदाभावानाभवति । चतुर्गतिषु सर्वभावानामाप्यमाणत्वात् पंचेन्द्रियादिभावाना सर्वगतिषुसद्भावात्, तथा अभव्यमार्गणाया अभव्यत्वहीनादिपंचाशत्भेदा प्राप्यते, तथाम-णुर्णति, मनुष्यगतौ, निगदहीणात्ति, निम्न गतय नारकामरति-र्यग्लक्षणानप्राप्यते, शेषा पचाशन्भेदाभावानामाप्यते, औद-यिकस्यअष्टादश शेषा सर्वेऽपिअत्रमदेशोदयसक्रान्तोदयत्वनापेक्षि-तमुरपत्वेनमनुष्यत्वमेवार्पिनमिति ॥ ११७ ॥

टवार्थ —हवे चारादिमार्गणाये उत्तरभाव कहे छे । पचं-द्रिनेनसकायने योग ३ ने सज्ञीमार्गणाये तिमहीज आहारक मार्गणाए सर्वभाव ५३ छे, अभव्य विना ५२ भाव छे, भव्य-मार्गणा विषे मनुष्यगतिमार्गणाये तीन अन्यगति विना ५० भाव छे ॥ ११७ ॥

उवसममीसचरण, मणपज्जवदेसचक्खुदिट्ठिअ ।
अहहारेएहिविणा, खायगसगहीणचक्खुदुगे ॥११८॥

टीका—उवसममीसइत्यादि ॥ अनाहारकमार्गणाया सप्तचत्वारिंशन्भेदा प्राप्यते, उपशमसम्यक्त्वेआयुर्बंधाभावात्नमरणमपि, मरणाभावेविग्रहगतित्वमपिनइतिहरिभद्राशयस्तन्मतेसप्तचत्वारिंशत्, कार्मग्रंथिकास्तुउपशमसम्यक्त्वेन सज्ञिद्वयलक्षणजीवभेदागीकारे-कश्चित्पूर्वबद्धायु प्रान्ते उपशमदर्शनकृत्वातत्रस्थ एवायु क्षये-मृत देवादिषूत्पद्यमानस्तस्यउत्पद्यमानस्यसज्ञिअपर्याप्तलक्षणोजीव-भेदोलभ्यते, तदपेक्षयाविग्रहगतौउपशमसम्यग्दर्शनभवति, तेना-ष्टचत्वारिंशन्भेदाभवन्ति, उपशमचारित्रतुपर्याप्तकस्य, मीस नामक्ष-

योपशमचारित्रमपिपर्याप्तकस्यमन पर्यवज्ञानस्यापिपर्याप्ता[illegible]
मेवदेशविरतस्यापिपर्याप्ताऽवस्थायाचक्षुर्दर्शनमपिमु [illegible]
स्यैव तेनएभिभावैर्विनाअष्टचत्वारिंशत्भेदाभवति । [illegible]
केवलिसमुद्घातावस्थायाअनाहारकत्वेप्राप्यते । क्षयोप[illegible]
ज्ञानत्रिकदर्शनद्विकअज्ञानत्रिकलब्धिपंचकक्षयोपशम[illegible]
ग्रहणनोप्राप्यमाणत्वात् । औदयिकपारिणामिकानामनि[illegible]
प्राप्यमाणत्वात्प्राप्यतेअनाहारकेएतेभावाभवति । [illegible]
श्रचचरणच उपशममिश्रचरणइतिसमास अथवा [illegible]
उपशममिश्रतदेवचरणइत्यनेनउपशमचरणमिश्रक्षयोपशम[illegible]
व्याख्यामेदेनोभयमनदर्शनक्तमितिज्ञेय । [illegible]
खायगसगहीणत्ति, क्षायिकभावस्यलब्धिपंचकनेत्र[illegible]
लक्षणभेदसप्तकमन्तरेणषट्चत्वारिंशत्भेदाभावानाप्रा[illegible]
गुणस्थानयावत् चक्षुरचक्षुर्दर्शनद्वयभवति, क्षीण[illegible]
क्त्वचारित्रेभवत, शेषा क्षायिकस्यसप्तभेदा [illegible]
गिगुणस्थानादिष्वेवभवति। अतश्चक्षुरचक्षु[illegible]
सति ॥ ११८ ॥

टबार्थ —उपशमसमकितमिश्र चारि[illegible]
मन पर्यवज्ञान विना देशविरति विना [illegible]
रकमार्गणाए ४८ भाव छे, क्षायिकना [illegible]
ज्ञान १ केवलदर्शन १ ए सात विना [illegible]
१ ए बेने ४६ भाव छे ॥ ११८ ॥

वेअकसायेतिउदय, अडग्गायगइ[illegible]गुरहिदसं
विणुखायसगअन्नाण, मि[illegible]अन्नाणा

टीका—येयत्त्सायद्दत्यादि येदत्रिकेऔदयिकभावस्यतिइतित्रि-कमेदा क्षायिकस्यलब्धिपचक केवलज्ञानकेवलदर्शनक्षायिकयथा-ख्यातचारित्ररहिताद्विचत्वारिंशत्भावमेदा प्राप्यते । तत्रपुरुषवेदे-स्त्रीवेदनपुंसकवेदनरकगतिलक्षणऔदयिकत्रिकरहिता पूर्वोक्तक्षा-यिकाष्टकरहिताद्विचत्वारिंशत्मेदा, स्त्रीवेदेपुरुषवेदनपुंसकवेदनरक-गतिरहिता द्विचत्वारिंशत्, नपुंसकवेदेपुरुषवेदस्त्रीवेददेवगतिरहिता-द्विचत्वारिंशत्, क्रोधेक्रोधकषायलक्षणायामार्गणायामानमायालोभ-रहिता अष्टादशऔदयिका शेषा पूर्वोक्ताद्विचत्वारिंशत्, एवमाने-क्रोधमायालोभरहिता मायायाक्रोधमानलोभरहिता लोभेक्रोधमान-मायारहिता द्विचत्वारिंशत्मेदाभावानामप्रत्येक वाच्या क्रोधानाचतु-र्णामध्ये अन्यतमस्यएकस्यैवोदयात् नान्येयामिति, नाणत्तिज्ञानत्रिक-यमार्गणायाअवधिदर्शनमार्गणाया क्षायिकस्यसप्तमेदा सयोगिकेवलि प्रत्ययानभवति । एतासाक्षीणमोहयावदेवसत्त्वात्, अज्ञानत्रिक-मिथ्यात्वमभव्यत्वअज्ञानऔदयिकभावस्यप्रथममेदरूवएवत्रयोदश-भावरहिता शेषाउपशमस्यद्वेक्षायिकदर्शनक्षायिकचारित्रचेतिद्वौ-क्षयोपशमिका पचदश, औदयिका एकोनविंशति, पारिणामिकौद्वौ-भेदौ एवचत्वारिंशत्मेदाभवति । अनरवायगसगतिसमारोविणइति-पदसयोज्यएतेनत्रयोदशमिर्विनाइत्यर्थ ॥ ११९ ॥

टबार्थ—वेद तीनने विषे कषाय ४ मे ४२ भाव छे, तीन औदयिकना ८ क्षायिकना तेहना भावना जे पुरुषवेद-मध्ये स्त्रीवेद नपुंसकवेद नरकगति ए तीन नथी । स्त्रीवेदमध्ये, पुरुषवेद नपुंसकवेद नरकगति नथी । नपुंसकवेदमध्ये, पुरुषवेद स्त्रीवेददेवगति नथी । कषाय ४ मध्ये क्रोधमध्ये मानादि ३ नथी, मानमध्ये, क्रोधादि ३ नथी । मायामध्ये, बीजा तीन कषाय

नथी । लोभमध्ये, अन्य तीन कषाय नथी । तथा क्षायिक-सम्यक्त्व छे, शेष अन्य नथी ए अगीयार विना ४२ भाव छे । क्षायिकना सात भेद, पाचलब्धि केवल २ अज्ञान १ मिथ्यात्व १ अभव्यपणो अज्ञान ३ एटले १२ भाव विना ४० भाव छे ॥ ११९ ॥

साभवातेअजएतेमिच्छ, तिगिदेसिसुहमेगुणप्पभवा।
अडखायगपणलेसा, समचरणनिणातिलेसासु १२०॥

टीका—साभवातेअजए इत्यादि॥ अजएअविरतिमार्गणाया उपशमस्यएक क्षायिकस्यएक देशसर्वविरतिमन पर्यवविना पच-दशक्षायोपशमिका औदयिका सर्वेपारिणामिकस्यत्रयइति, साभवा-अभव्यत्वलक्षणेनपारिणामिकभेदेनयुक्ताएकचत्वारिंशत् भेदा भा-वानामविरतिमार्गणायाप्राप्यते इति, मिच्छतिगि मिथ्यात्वत्रिकेमि-थ्यात्वसास्वादनमिश्रलक्षणेगुणस्थानत्रयेदेशविरतिमार्गणाया सुहु-म्मि सूक्ष्मसपरायलक्षणेपचमार्गणास्थानेगुणप्रभवास्तन्नामगुणस्थान-कम्याभावा भवति। इत्यनेनमिथ्यात्वेचतुस्त्रिंशत्, सास्वादनेद्वात्रिं-शत्, मिश्रेद्वात्रिंशत्, देशविरतौचतुस्त्रिंशत्, सूक्ष्मसपरायेद्वाविंशति, एवज्ञात य तथातिलेसासु इतिलेश्यात्रये कृष्णनीलकापोतलक्षणे-अष्टौक्षायिकभेदा क्षायिकसम्यग्वर्जिता स्वनामलेश्यातोअन्या पचलेश्यास्तथासमशब्देनउपशमचारित्र एवचतुर्दशभेदान्मुक्त्वा-शेषाएकोनचत्वारिंशत्भेदा भावानाकृष्णादिप्रथमलेश्यात्रयेभवनि। ॥ १२० ॥

टबार्थ —अविरतिमार्गणाये अभव्य भेळीये तेवारे ४१ भाव पामीये, मिथ्यात्वे ३४ सास्वादने ३२ मिश्रे ३२ देशविरते

विंशतिभावा भवंति, देवानाएतेष्वनागमनात्, तंत्रचचक्षुर्दर्शनयुक्त चतुरिन्द्रियमार्गणाया पचविंशतिभावाभवंति । नाणदुगज्ञानद्विक सास्वादनकालेविकलानामूएथुतेभगवत्यादौसमाख्यात यदाह सुध-र्मास्वामी-बेन्द्रीयाणभंते किंनाणी किंअनाणीगोयमानाणीविअना-णीविजेसिणनाणीते आभिणिबोही अनाणीसुअनाणीजेअनाणीतेमई-अनाणीसुअअनाणी सूत्रवाक्यप्रामाण्यात् अत्राम्नाय सूक्ष्मन्तर्मु-हूर्तस्यसमयमात्रस्यग्राहकत्वात् वर्त्तमानकालेसास्वादनस्यस्यमिथ्या-त्वस्यअनुदयात् उपशान्ताद्भागताचलिकायावर्त्तमानत्वात् ज्ञानद्वय-मोक्तकार्मग्रंथिकैस्तुकडेमाणेकडेइति भगवद्वाक्यानुगमनेनामिथ्या-त्वोदयसद्भुखीभूतपरिणामत्वात् नियतमज्ञानत्वेनभवनात् अज्ञान-मेवेतिअंगीकृतम् ॥ १२३ ॥

टबार्थ —तेमध्ये तेजोलेश्या गतित्रसक० तेउकाय १ वाउ-काय १ बेन्द्रि १ तेन्द्रि १ एहने विषे २४ भाव छे चो-रिंद्रिमार्गणामध्ये चक्षुदर्शन भेळीये एटले भाव २५ पामीये, तथा भगवतीसूत्रे विकलेंद्रिने २ ज्ञान मान्या छे, बेंदीयाणभं-तेनाणीअनाणी गो० नाणीविअनाणीविइतिवचनात् ए सूत्रवचन पण प्रमाण छे ॥ १२३ ॥

सम्मदरसव्वविरई, अवहिदसणनाणचउहीणा ।
अन्नाणेचउतीस, भावातिगभावपच्चईया ॥ १२४ ॥

टीका—सम्मदरइत्यादि ॥ सम्मेतिक्षयोपशमसम्यग्दर्शन दरतिईषत्वाचकोऽव्यय ईषत्विरति देशविरति सर्वविरति क्षयोपशमचारित्र अवधिदर्शन १ ज्ञानचतुष्टयहीना शेषादशक्षयो-पशमभेदा, औदयिकाएकविंशति, पारिणामिका त्रय, एतैचतु-

क्षिशनुभावाअन्नाणेअज्ञानत्रिकमार्गणायामाप्यते । भावामूलापेक्ष-यात्रिकभावप्रत्ययिकाज्ञेया , उपशमक्षायिकभावानामत्रासभवात् ते-षासम्यक्त्वमूलत्वात् ॥ १२४ ॥

टबार्थ —समकित १ देशविरति १ सर्वविरति १ अवधि-दर्शन १ ज्ञान ४ विना शेषक्षयोपशमना १० उदयना २१ पारिणामिकना ३ ए चौतीसभाव छे, अज्ञान ३ मध्ये मूल तीन भाव माहियी जे भेद सभवे ते कहिवा ॥ १२४ ॥

दोउवसमखयसम्म, मीसेअन्नाणदेसविणुउदए । तिगईअन्नाणअजई, मिच्छविणुदोन्नीपरिणामी१२५॥

टीका—दोउवसमइत्यादि ॥

टबार्थ —उपशमना भेद २ क्षायिकसमकितनामिश्रना १४ भेद विना अज्ञान ३ देशविरति विना उदयना १९ तीन गति-मिथ्यात्ववितिअनाण १ असयम १ ना शेष १९ पारिणामिक २ जीवत्व १ भव्यत्व ॥ १२५ ॥

सामाइदुगेपरिहारगेअ, सम्मचरणइथिवेयविणा । हक्खाएउवसमखय, मीसेलद्धीसुउवओगा ॥१२६॥

टीका—सामाइदुगेइत्यादि गाथाद्वयस्यसबन्ध तत्रसामायिक-द्विकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयलक्षणेचारित्रद्विकेदोउवसमत्तिद्वौभे-दावुपशमभावस्य, क्षायिकभावस्यएकक्षायिकसम्यक्त्वनयामिश्रेना-मक्षयोपशमेभावस्यज्ञानत्रिकदेशविरतिविणुत्तिरहिता शेषा चतुर्दश-उदयेऔदयिकेभावेनरकामरतिर्यग्गतिलक्षणेत्रिके अज्ञानविरतिमि-

थ्याख्यरूपभेदपञ्चविनासेया पचदश द्वौभ य नजीवत्वलक्षणौद्वौ-पारिणामिकौदृत्यनेनद्वौउपशमौएक क्षायिक चतुर्दशक्षयोपशमभेदा पचदशऔदयिकाद्वौपारिणामिकौ एवचतुस्त्रिशत्भावभेदा सामायिकेछेदोपस्थापनीयेचारित्रेप्राप्यते ॥ परिहारविशुद्धिचारित्रेउपशमचारित्रनभवति । अनिवृत्तिबादरगुणस्थानकाभावात् । तथास्त्रीवेदस्याप्यभाव यतोनवनवासीनिग्गथाण इत्यादरपकर्षांगवाक्यात् ज्ञातायामपिनिषिद्धत्वात । परिहारसमयश्चनवासिनाभेवोक्तत्वात । अत सामायिकोक्तचतुस्त्रिशत्भावानाम ध्येउपशमचारित्रस्त्रीवेदरहिताद्वात्रिंशत्भेदाभवति हस्त्याणइतियथार यातचारित्रेउपशमस्यद्वौभेदौवयत्ति क्षायिकस्यनवमीसेत्ति क्षयोपशमेरद्वौत्तिलब्धिपचकसुइतिसुन्दुशोभनाउपयोगा क्षायोपशमिकाज्ञानचतुष्टयदर्शनात्रिकरूपाद्वादशइति ॥ १२६ ॥

टबार्थ —एटले उपशम २ क्षायिक १ क्षयोपशम १४ औदयिकना १५ पारिणामिकना २ ए ३४ भाव छे । सामायिक १ छेदोपस्थापनीय ए बेन परिहारविशुद्धिमध्ये उपशमचारित्र स्त्रीवेद विना ३२ भाव छे, कोइक आदि तीन लेश्या च्यार गुणठाणा पर्यंत माने तेहने मते २९ भाव छे, यथाख्यातचारित्रमध्ये २८ भाव छे, उपशमना २ क्षायिकना ९ क्षयोपशमना १२ लब्धि ५ सुउवओगाकहेता सम्यग्ज्ञान एटले च्यार ज्ञान त्रण दर्शन एव १२ ॥ १२६ ॥

उदएअसिद्धनरगई, सुक्काभवत्तजीयचपरिणामा ।
अडवीसमभवेसु, मीसादसदुन्निपरिणामा ॥१२७॥

टीका—उदएअसिद्धइत्यादि॥ औदयिकस्यअसिद्धत्वनरगति

शुक्लेदपाइतिनयोभेदाभ यत्र जीवत्वचपारिणामिक एवअष्टाविंशतिभावभेदायथाख्यानचारित्रेअणविंशतिभावभेदा माप्यते । अभव्येसुअभ यमार्गणायामीसाक्षयोपशमस्यदश इतिद्वौपारिणामिकौअभ यत्वजीवस्वरूपौ ॥ १२७ ॥

टबार्थ —औदयिकना ३ असिद्धपणे मनुष्यगति १ शुक्लेश्या १ भ यपणो जीवपणो ए २ पारिणामिक सर्व मि या २८ भाव छे, यथाख्यातचारित्रे अभ यमार्गणाए क्षयोपशमना १० पारिणामिकना २ अभ यपणो जीवपणो ॥ १२७ ॥

उदयाउवसमसम्मे, खयअन्नाणचमीससम्मविणा । उदयेअमिच्छावोहा, भवजीयत्तेणसगतीस ॥१२८॥

टीका—उदयाउवसमसम्मेइत्यादि उदयाऔदयिका सर्वेभेदा इतिनयत्रिंशत्भावभेदाअभ यमार्गणायाभवति । उपशमसम्यक्त्वेखयविणत्तिक्षायिकभावभेदानभवति । अन्नाणचमीससम्मविणाइति अज्ञानत्रिक क्षयोपशमसम्यक्त्वविनाचतुर्दशउदयेऔदयिकेअमिच्छावोहा मिथ्यात्वअज्ञानरहिताएकोनविंशतिभेदा भ यत्वचजीवत्वचएवसप्तत्रिंशतभावभेदा उपशमसम्यक्त्वेमाप्यते । उपशमश्रेणीतुउपशमचारित्रेक्षायिकदर्शनभवतितोपशमदर्शनेक्षायिकदर्शनादिकनभवति ॥ १२८ ॥

टबार्थ —औदयिकना २१ एटले तेत्रीस भाव छे भ यने विषे उपशमसमकित मार्गणाने विषे क्षायिकनो भेद कोई नथी क्षयोपशमना अज्ञान ३ क्षयोपशमसमकित विना १४।९ लब्धिज्ञान ४ दर्शन २ देशविरति सर्वविरति औदयिकना मिथ्यात्व

१ अज्ञान विना १९ पारिणामिकमध्ये म पपणो जीवत्वपणो ए सर्व मीत्यासा भाँत भाव छे ॥ १२८ ॥

खवगेसायगजुत्ता, समदिट्ठीनिणायमिसगेसम्मे।
उवसमखयविणुमीसग, सम्मजुआइतिच्छत्तीस१२९॥

टीका—खवगेसायगजुत्ता ॥ खवगेत्ति–क्षायिकेसम्यग्दर्शन-मार्गणाया क्षायिकयुक्तास्तेपूर्वोक्ता सप्तत्रिंशन्नवक्षायिकभेदा सयुक्तास्तेचशम उपशमदृष्टि दर्शनमन्तरेणविनापञ्चचत्वारिंशत्भावा-स्तत्रोपशमचारित्रक्षायिकभावस्यनवक्षयोपशमस्यचतुर्दशऔदयिक-स्यैकोनविंशति पारिणामिकस्यद्वौएवपंचचत्वारिंशत्भावानामेदा भवन्ति, मीसगेसम्मेक्षयोपशमेसम्यग्दर्शनेउपशमभावविना क्षायि-कभावविना इत्यनेनपूर्वोक्तपचचत्वारिंशत उपशमचारित्रक्षायिक-नवापगमेपंचत्रिंशत, मीसगसम्मजुआइतिमिश्र क्षयोपशमसम्यग्-दर्शनतेनयुता सयुक्ता षट्त्रिंशत्भवति, इत्यनेनक्षयोपशमस्य-पंचदशऔदयिकस्यैकोनविंशति पारिणामिकस्यद्वौएवषट्त्रिंशत्भावा क्षयोपशमदर्शनेप्राप्यते, क्षयोपशमेक्षायिकोपशमदर्शनाऽभाव एव ॥ १२९ ॥

टबार्थ —क्षायिकसमकित मार्गणामध्ये क्षायिकना नव उप-शमसमकित विना एटले उपशमचारित्र १ क्षायिकना ९ क्षयो-पशमना १४ औदयिकना १९ पारिणामिकना २ ए ४५ भाव छे, क्षयोपशमसमकित तेहना उपशमनो भेद नथी क्षायिकनो भेद नथी. क्षयोपशमना १४ भेद छे, क्षयोपशमना १४ भेद छे, तेमध्ये क्षयोपशमसमकित मेळीये एटले १५ क्षयोपशमना १९ औदयिकना २ पारिणामिकना ए ३६ भेद पामीये ॥१२९

उवसमखवगेएग, मीसेमणनाणदेससव्वविणा ।
उदएतिगइतिलेसा, दुवेयविणुवेसयानिरए॥१३०॥

टीका—उवसमखवगेएग इत्यादि ॥ निरये नरकगतिमध्ये उपशमदर्शनलक्षण एकमुपशमस्यक्षायिकसम्यक्त्वरूपएकक्षायिक-स्यमीसे क्षयोपशमे मन पर्यवज्ञान देशविरतिसर्वविरतिलक्षणभेद-त्रिकविनापंचदश, औदयिकभावेतुमनुष्यतिर्यगनरगतित्रिक विना-तेज पद्मशुक्लेश्यालक्षणलेश्यात्रिक विनावेदद्विक स्त्रीनपुंसकलक्षण विनात्रयोदशपारिणामिकास्त्रय एवंत्रयस्त्रिंशत्भावानामेदा नरक-गतौनारकाणाप्राप्यते ॥ १३० ॥

टवार्थ—नरकगतिमध्ये उपशमसमकित १ क्षायिकसमकित ए २ मिश्रभावना १८ भेद छे, तेमध्ये मन पर्यवज्ञान १ देश-विरति १ सर्वविरति विना शेष १५ औदयिकना २१ मध्ये तीन गति तीन लेश्या पुरुषवेद १ नपुंसकवेद इटला विना ३३ भाव छे नरकगतिमध्ये ॥ १३० ॥

देवेतिलेसथीपुस, सयुआसटसन्निनाईआ ।
गइगुणठाणप्पभवा, मग्गणठाणेसु नेयव्वा ॥१३१॥

टीका—देवेतिलेसथी इत्यादि ॥ देवगतौपूर्वोक्तासुनयस्त्रिं-शत्सुतेज पद्मशुक्लेश्यात्रय स्त्रीवेद पुम्पवेदसयुक्ता असद्भनपुंसक-वेदरहिता सप्तत्रिंशत्भावानामेदा भवन्ति, भावनाचस्वगोगम्याद्युक्तामार्गणासुउत्तरभावा सामतसान्निपातिकभगानदर्शयति, सन्निवा-ईयागतिप्रभवागुणस्थानप्रभवास्तेएवमार्गणास्थानेषुज्ञातव्या उप-योगत विभज्यवाच्या तत्रयासान्निपातिकाभगा षड्विंशति-नरपरसभविजीवेप्राप्यमाणालभ्यते, देवगतिमेदेनपचदशभवति ।

नरकगतौदेवगतौनिर्यग्गतौमत्येकर्ताशिर्नाणि-क्षयोपशमपारणामिकौ-दयिकलक्षण प्रथम एपएवउपशमयुक्त चतुष्कसयोग द्वितीय एएवक्षायिकदर्शनयुक्त इतितृतीय मनुष्यगतौसिद्धप्रत्ययक्षायि-कपारिणामिकलक्षणभगकरहिता पचभगा प्राप्यते एकेन्द्रिय द्वीन्द्रियत्रीन्द्रियचतुरिन्द्रियस्थावरपचकमार्गणायाक्षयोपशमपारिणा-मिकौदयिकलक्षण एकभग पचेन्द्रियत्रसकाययोगत्रिकेभव्ये-सज्ञ्याहारकलक्षणाशुचतुर्दशभगा सिद्धप्रत्ययिकभगासत्त्वात् कषाय-चतुष्टये मत्यादिज्ञानचतुष्ये दर्शनत्रिके केवलिप्रत्यय सिद्धप्रत्य-यभगद्वयाभावात् शेषाभगा केवलद्विकेक्षायिकौदयिकपारिणामिक-स्तथाक्षायिकपारिणामिकलक्षण एतौद्वौभगौअज्ञानत्रयेमूलत्र त्रिक-सयोगिक एकभग स्त्र एवगतिचतुष्येनचत्वारोभगा सामायिक-च्छेदोस्थापनीयचारित्रद्वयेक्षयोपशमपारिणामिकौदयरूप एक क्षयो-पशमदर्शनचारित्रवता क्षयोपशमपारिणामिकौदयिकोपशमलक्षण उपशमदर्शनोपशमचारित्रवता अथवोपशमदर्शनक्षयोपशमचारित्रवता-मपिभवति। इतिद्वितीय क्षयोपशमक्षायिकपारणामिकौदयिकलक्षण दर्शनक्षायिकक्षयोपशमोपशमचारित्रवताभवति, पचभावसयोगप्र-त्यये पचम क्षायिकदर्शनोपशमचारित्रवतस्य एव चत्वारोभगाभवति, परिहारेत्रयोभगा एक क्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण एप-एवोपशमयुक्त द्वितीय एपएवक्षायिकयुक्तस्तृतीय मूलत्रय उत्तरतइतिसूक्ष्मसपरायेत्रयोभगा चतुष्कसयोगाद्वेपचसयोगलक्षण एक यथाख्यातेक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षणवर्जिता पच-भगास्तत्रद्वौउपशमश्रेणिसभवौ, एक क्षपकश्रेणिप्रायोग्य, एक केवलिभवस्थप्रायोग्य, एक सिद्धप्रायोग्य, देशविरतौषट्भगा, गतिद्वयेएवप्राप्यमाणत्वात् । अविरतौद्वादशभगाश्चतुर्गतिकालभ्यते, लेश्यापचकेद्वादश,शुक्लेदश, अभव्येक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्ष-

णचतुर्गतिकत्वेनचत्वारोभगा क्षयोपशमदर्शनेक्षयोपशम पारिणामिकौदयिकलक्षणएकएवउपशमदर्शनेक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकोपशमलक्षणएक क्षायिकेच बारोभगा क्षयोपशमपारिणामिकऔदयिकक्षायिकलक्षण प्रथम पचकसयोग द्वितीय केवलिसयोगिप्रत्यय तृतीय, सिद्धप्रत्ययश्चतुर्थ मिथ्यात्वसास्वादनमिश्रमार्गणासुक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षण, चतुर्गतिकाश्चत्वार, असंज्ञिषुक्षयोपशमपारिणामिकौदयिकलक्षणएक नरतिर्यग्गतिद्वयनोर्द्वौभगौ अनाहारकेपचकसयोगलक्षणैकभगवर्जनान्मूलत पच उत्तराश्चतुर्दशभगा भवति, तनद्वादशविग्रहगत्यपेक्षयाएक केवलसमुद्घाताऽवस्थ एक सिद्धाऽपेक्षयाएवसर्वेमार्गणासुभावनाकार्या ॥१३१॥

टबार्थ —देवगतिमध्ये उपली तीन लेश्या स्त्रीवेद ए च्यार मेळीये तेवारे सडर्तीसभावना भेद छे, सनिपातिकभावना भागा २६ छे, गतिना गुणठाणे पूर्व कह्या छे ते अनुसारे मार्गणाये पण जाणवा तेमध्ये सनिपातिकभावना सभवी भागा ६ छे ते माहिला लेज्यो, नरकगतिदेवगतिमध्येतिरियचगतिमध्ये ३ भागा औदयिक १ पारिणामिक १ ए एक तथा ए मध्ये उपशम मेळीये ए बीजो अथवा क्षायिक मेळीये ए त्रीजो मनुष्यगतिमध्ये ६ सभवामाहियी एक सिद्धनो क्षायिक पारिणामिक ए भागो नथी बीजा सर्व ५ छे, च्यार इद्री पाच थावर मध्ये १ त्रिकसयोगीभग छे, पचेंद्री १ त्रसकाय १ योग ३ तीन शुक्लश्या १ भव्य १ सज्ञी १ आहारी १ अनाहारी १ एटली मार्गणाये १४ भागा ए सिद्धप्रत्ययी भागो नथी ॥ १३१ ॥

पणसयतेसट्ठिया, जीअभेआउत्तरागुणठाणे ।
जहतहमग्गणठाणे, लोगतियणुत्तरीसम्मे ॥१३२॥

टीका—अथमार्गणासुउत्तरजीवभेदान्दर्शयन्नाह ॥ पणसयते-सट्ठीया इत्यादि ॥ तत्रजीवभेदा पचशतानित्रिषष्टिप्रमितागुणस्था-नशतकेदर्शिताएव उत्तराजयिगुणस्थानेउक्तास्तथामार्गणास्थानेज्ञा-तव्यास्तत्रलोकान्तिकभेदाअनुत्तरभेदा सम्मेत्तिसम्यक्त्वेप्राप्यते तत्र-लोकातिकाना अधिपत्य एवमाद्याअनुत्तरास्तुसर्वेपिसम्यग्दृष्टयएव तथा नरकगतौचतुर्दश तिर्यग्गतौअष्टचत्वारिंशत्, मनुष्यगतौ त्रीणि-शतानि अधिकानि देवगतौअष्टनवत्यधिकशत एकेन्द्रियेद्वाविंशति द्वित्रिचतुरिंद्रियाणाद्वौद्वौजीवभेदौस्वनामकौ पचेन्द्रियाणापचशतपच-त्रिंशदधिक, पृथिव्यादिषु चतुर्षुचत्वारोभेदा, वनस्पतिकायेषड्भेदा त्रसेपचशतएकचत्वारिंशदधिक, मनोयोगेसज्ञिमार्गणाया पर्याप्ताऽपे-क्षयाद्वादशाधिकद्विशत, अपर्याप्तगणनेचतुर्विंशत्यधिकानिचत्वारिश-तानिभवति, वचनयोगेपर्याप्ताऽपेक्षयात्रिंशत्यधिक द्विशत,अपर्याप्ताऽ-पेक्षयाएकचत्वारिंशदधिक चतु शत काययोगेसर्वेपि, पुरुषवेदेनार-केन्द्रियविकलाऽसज्ञितिर्यग्मनुष्यवर्जिता शेषा ४१०, स्त्रीवेदेवेए-वसनत्कुमारादिदेवभेदवर्जिता ३४०, नपुसकेयुगलमनुष्यदेवभेदव-र्जिता १९३, कषायचतुष्टयेसर्वेमत्यादिज्ञानत्रयेसम्यक्त्वगुणस्थान-प्रत्यया २३, अवधिद्विकेतिर्यगपर्याप्तानानिषेधएवमन पर्यायकेव-लज्ञानकेवलदर्शनेपचदशकर्मभूमिजा १५। अज्ञानत्रिकेलोकाति-काऽनुत्तरसुरभेदरहिता ५३५, छेदोपस्थापनीयपरिहारयोर्भरतैरावत-पर्याप्तकादश, सामायिकसूक्ष्मसपराय यथाख्यातानापचदशकर्मभू-मिजाऽपर्याप्तका देशविरतौविंशति, सज्ञितिर्यककर्मभूमिनरपर्या-प्तका अविरतौसर्वे, चक्षुर्दर्शनेएकेंद्रियद्वीद्रियत्रींद्रियवर्जा ५३७, असज्ञिमनुष्याणापचेंद्रियगत्वात्अचक्षुर्दर्शनेसर्वेअवधिदर्शनमतिज्ञा-नवत्केवलदर्शनकेवलज्ञानवत् कृष्णादिलेश्यात्रयेनारका षट् निर्यग्-मत्यया अष्टचत्वारिंशत्मानुष्या सर्वेदेवभेदा तिर्यग्जृंभकपर्यताश्च-

विकशतनेजोलेश्यायाबादरपृथि पश्वनस्पतिबादराख्रय संज्ञितिर्यग्-मत्यया १० मानुप्यमायोग्याद्यविकद्विशतदेवमेदाईशानयावत् अष्टाविंशत्यधिकशत, पद्मलेश्यायामाज्ञितिर्यगपचेंद्रियादश, मानुष्या-मेदा देवमेदसनत्कुमारमाहेंद्रब्रह्मलोकान्तिकत्रिसागरायु किल्विषि-का पर्याप्ताऽपर्याप्तकमेदातपड्विंशति , शुक्ललेश्यायानिर्यग्मनुष्या पद्मलेश्यावत् देवमेदात्तलोरतसर्वार्थसिद्धपर्यन्तत्रयोदशसागरायु किल्विषिका पर्याप्ताऽपर्याप्तमेदानचतुश्चत्वारिंशत, भयेसर्वे अभव्येलो-कातिकानुत्तरमेदरहिता पचशतपचविंशत्रूपाअनपराधर्मिका कर्म-भूमिनराणाअम पत्वप्रतिपेत्र ढुनचित्दृष्टोपिभगवत्यादीनत्त्वागद-र्शनात्नागीकृतहृतिउपशमेसंज्ञिमेदेपुनारकतिर्यग्मनुप्यमेदा सर्व-सम्पक्त्वस्या देवमेदेपुल्लोकातिकाऽनुत्तरमेदरहिताभवति । एवेषुपूर्व-ग्रथिमेदात्नात्रोपशमसम्यग्दर्शनाभाव , क्षायिकेतुनारका पद्तिर्य-ग्मन्ययादशपंचद्वाऽपेक्षयाकेचित्तुतिर्यक्षुक्षायिकनेच्छतिमनुप्यमेदे-षुमवति । तथ्ययुगलिकानातुपूर्वकर्मभूमौबद्धयुगलायु पश्चात्युग-लेषुआगच्छतितत्र देवेपूत्पद्यनन्त मनुप्यत्वमापन्न सिध्यतिउक्त-चकर्मग्रथटीकाया, तसियनईयचउत्थेभवमिसिज्जतिखइयसम्मत्ते, सु-रनारपयुगलसुगइपतुजिणकालियनराण इतिवचनात्त एनद्गाथा-प्रमाणतिर्यग्गतौनसमव युगलसुगइएइतिवचनान्यन अन्तर्द्वीप-का क्षायिकानभवतितेनमानुप्यामेदास्त्रिशत्कर्मभूमिजा पश्चिकर्म-भूमिजा एवनवतिर्मानुप्याभेदा पर्दनैरयिका किल्विषवर्जितावैमा-निका सप्तति एववाच्य ॥ क्षयोपशमेतुचतुर्थगुणस्थानप्रत्यया केचित्तुमर्वार्थसिद्धौक्षायिकसम्यक्त्वमेवइच्छन्तितनयाप्येतनूमायिक-मिवभासवेद्वतिज्ञेय॥ मिश्रे १९८ सास्वादने ४०० मिथ्यात्वे ५३५ गुणस्थानोक्तामेदा वाच्या संज्ञिमार्गणायामनोयोगवत् असंज्ञि-षुअष्टत्रिंशत् तिर्यग्प्रत्ययाएकाधिकशत (मनुष्याणा) प्राप्यते ।

आहारकस्यसर्वेअनाहारकस्यते नैरयिका सप्ताऽपर्याप्तकारितिर्यग्योनिजाश्चतुर्विंशतिरपर्याप्तकादेवभेदा नवनवतिरपर्याप्तका मनुष्यभेदा असज्ञिमत्ययाएकाधिकशतमपर्याप्तसज्ञिमनुष्या एकाधिकशतपर्याप्तका केवलिसमुद्‌घातेचपचदशकर्म्मभूमिजाअप्यनाहारकालम्यते अत त्रीणिशतानिसप्तचत्वारिंशान्अधिकानिभाव्यते ॥ इत्युक्ताविस्तारत जीवभेदामार्गणासु ॥ १३२ ॥ साम्प्रतमार्गणासुसमुद्‌घातभेदान्दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —पाचसे तेसठ जीवभेद छे । उत्तर गुणठाणे जिम छे ते मार्गणाये जाणवो, तेमध्ये लोकातिकना भेद अनुत्तर देवताना भेद ए समकितीनेज होय नरकगति १४, तिर्यंचगति ४८, मनुष्यने ३०३, देवतागति १९८, पचेंद्रीयने २२, विकलने पोताना २ ना पचेंद्रीने ५३५, पृथिवीकायने ४, अप्‌कायने ४, तेउकायने ४, वाउकायने ४, वनस्पतिने ६, त्रसने ५४१, मनोयोगे २१२, अपर्याप्ता गिणता ४२४, वचनयोगे ४४१, काययोगे ५६३ इत्यादिक सर्वयत्रथी जाणवो एकलोकातिक तथा अनुत्तर विमानना भेद सर्वसमकितीने होय, ए रीते जाणवो ॥ ॥ १३२ ॥

मणुएसगसमुग्घाया, देवेतिरएअपचचउनिरए ।
सेसासुमग्गणासु, गुणठाणविहीओनेयव्वा ॥१३३॥

टीका—मणुएसगसमुग्घाया इत्यादि ॥ मनुष्यगतौसप्तसमुद्‌घाता प्राप्यतेवेदनादय देवगतौनिर्यग्गतौ वेदना १ कषायमरण १ वैक्रियतैजस १ लक्षणा पचसमुद्‌घाता चउनिरयेनारकगतौवेदनाकषायमरणवैक्रियलक्षणाश्चत्वार समुद्‌घाता शेषा-

सुमार्गणासु गुणस्थानविधिरनुज्ञातव्या । त्रसकायेयोगत्रयेशुक्ल-लेश्यायाम यच्वेक्षापिकसम्यग्दर्शनेसंज्ञयाहारकपंचेंद्रियलक्षणासुदश-मार्गणासुसप्तसमुद्घाताभवन्ति, पुरुषनपुंसकवेदे कषायचतुष्टये-ज्ञानचतुष्टयेदर्शनत्रिकेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयचारित्रद्वयेलेश्याप-चकेक्षयोपशमसम्यक्त्वलक्षणेएकविंशतिमार्गणासुकेवलिसमुद्घाता-ऽभावात्षट्समुद्घाताभवति, स्त्रीवेदअज्ञानत्रयअविरतिदेशविरति-अभ योपशमसास्वादनमिथ्यात्वलक्षणासुदशमार्गणासु आहारक-केवलिवर्जा पचसमुद्घाता भवति । एकेंद्रियवायुकायअसंज्ञि-अनाहारकमार्गणासुवेदनाकषायमरणवैक्रियलक्षणाश्चत्वार समुद्घा-ता, विकलत्रिकस्थावरचतुष्कमार्गणासुवेदनाकषायमरणलक्षणास्त्रय समुद्घाता, परिहारविशुद्धिमिश्रमार्गणासुवेदनाकषायरूपौद्वौसमु-द्घातौ, सूक्ष्मसंपराये नसमुद्घात, मरणेऽपिसमुद्घातमन्तरेणैवके-वलिद्विकेयथाख्यातचारित्रेचैककेवलिसमुद्घातलक्षणभवति इत्यु-क्तामार्गणासुसमुद्घाता ॥ १३३ ॥ अथमार्गणासुध्याना याह ॥

टबार्थ—हवे समुद्घात कहे छे, मार्गणाये मनुष्यगति मार्गणाये सात समुद्घात हवे, देवगति तिर्यंचगने पाच समु-द्घात छे । वेदना कषाय मरण वैक्रीय तैजस ए पाच समुद्घात छे । नारकीने ४ समुद्घात छे । वेदना कषाय मरण वैक्रिय ए ४ शेषमार्गणाये समुद्घात गुणठाणाने अनुक्रमे मार्गणाये पिण जाणवो ॥ १३३ ॥

इगविगलथावरेसु, असन्नीएसुनझाणममणत्ता ।
नरतसपणिंदिखवगे, सव्वेजोएअसुकाए ॥ १३४ ॥

टीका—इगविगलथावरेसु इत्यादि ॥ एकेन्द्रियविकलेन्द्रिय-

स्थावरपचकमार्गणासु असज्ञिलक्षणासुनध्यान अमनस्कत्वात्मनो-रहितत्वात्, अतोमुहुत्तमित्तचित्तावत्थाणएगवत्थुम्मि छउमत्थाण-झाण इतिवचनात्अत मनोरहितत्वात् नध्यानसद्भाव नरतिमनु-ष्यगतौत्रसकायेपचेन्द्रियमार्गणाया क्षायिकेसम्यग्दर्शनेसर्वेआर्त्तरौद्र-धर्मशुक्लक्षणानिचत्वारिध्यानानितेषाषोडशापिपादालभ्यते सर्वेगु-णस्थानकसभवात्, गुणस्थानकाऽपेक्षयाध्यानभेदावक्तव्या योग-त्रिकेशुक्लेश्याया ॥ १३४ ॥

टबार्थ —एकेन्द्रियमार्गणाये विकलेन्द्रियमार्गणाये थावरमा-र्गणाये असञ्ज्ञीमार्गणाये ध्यान नथी एयेमाटे जे एटली मार्ग-णाये मन नथी मनविना ध्यान थाय नही ध्यान ४ प्रकारना छे, आर्त्तध्यान १ रौद्रध्यान २ धर्मध्यान ३ शुक्लध्यान ४ ए ४ ध्यान छे तेमध्ये आर्त्तध्यानना पाया ४ इष्टवियोग १ अ-निष्टसयोग १ रोगचिंता १ निदान १ ए ४ रौद्रध्यानना पाया छे ४ हास्यानद १ मृषानद २ चोर्यानद ३ परिग्रहरक्षणानद ४ धर्मध्यानना पाया ४ आज्ञाविचय १ अपायविचय २ विपाक-विचय ३ सस्थानविचय ४ शुक्लध्यानना पाया ४ पृथक्त्ववित-र्कसप्रवीचार १ एकत्त्ववितर्कअप्रविचार २ सूक्ष्मक्रिया प्रति-पाति ३ पृछन्नक्रिया निवृत्ति ४ सर्व १६ भेद थया, मनुष्यगति १ त्रसकाय १ पचेन्द्री १ क्षायिकसमकित ४ ए चार मार्गणाये ध्यानना १६ भेद छे योग ३ शुक्लेश्या तथा ॥ १३४ ॥

आहारेचरमस्स, सुक्कस्सविणाकसायवेएसु ।
उवसमितिसुक्कहीणा, तिनाणदसेसमणभव्वे॥१३५॥

टीका—आहारकमार्गणाया चरमशुक्लव्युपरतक्रियलक्षण वि-

नापचदशाध्यानभेदा प्राप्यते । अस्यायोगिकालेप्राप्यमाणत्वात् अयोगित्वतुआसु मार्गणासुनास्ति तथा कषायमार्गणासु चनसृषु- वेदत्रिकमार्गणासु उपशमसम्यग्मार्गणासु, तिसुक्कक्षीणा, इतिनय शुक्लाएकत्वविनर्काऽप्रविचार १ सूक्ष्माक्रियाप्युपरत २ उच्छिन्न- क्रियाऽनुवृत्ति ३ क्रियालक्षणाना क्षीणमोहादिषुप्राप्यमाणत्वात् तेनैनासुनभवति, निनाणदसेसमणभन्वे मत्यादिज्ञानत्रिके चक्षुरादि- दर्शनत्रिकेसमणत्ति समनस्काना सज्ञिनाभव्येभ यमार्गणाया अग्रे- तनगाथागनाध्यानभेदा वाच्या ॥ १३५ ॥

टबार्थ —आहारकमार्गणाये शुक्लध्याननो चरम छेहलो पायो नथी ते शुक्लनो चोथो पायो अयोगी गुणठाणे छे तेमाटे नथी कषायमार्गणाये उपशमसमकितमार्गणाये वेद तीन ३ मार्गणाये आर्त्तना ४ रुद्रना ४ धमना ४ शुक्लनो १ एव १३ भेद छे तीन शुक्ल ते क्षीणमोह गुणठाणे पछी थाये तेमाटे नथी तीन ज्ञान ३ तीन दशनमज्ञी एव ७ भव्य मार्गणाने विषे छे ॥ १३७ ॥

चरमदुसुक्कविहीणा, अणहारदुकेवलेसुदोचरिमा । पणलेसवेयगेसु, असुक्कपरिणामभेएण ॥ १३६ ॥

टीका—एतासुमार्गणासुक्षीणमोहपर्यंत गुणस्थानकप्राप्तौचतु- र्दशध्यानभेदा भवति चरमौद्वौशुक्लौसूक्ष्मक्रियाप्युपरतक्रियौताभ्या- हीनाभवति । अनाहारकमार्गणाया विग्रहगतौसिद्धानाध्यानाभा- वात्, अयोगिस्यानाहारकस्यतुचरमौद्वौशुक्लौप्राप्येते, तथाकेवलद्वि- केऽपिचरमौद्वौशुक्लभेदौप्राप्येते तथा पचसुअन्त्याद्युलेश्यासु तथा क्षयोपशमेसम्यग्दर्शनेअशुक्ल, शुक्लध्यानरहिताद्वादशभेदाभवति । अप्रमत्तपर्यंतगुणस्थानकानासद्भावात् । शुक्लस्यअपूर्वकारणादौ-

प्राप्यमाणत्वात् नात्रसर्वत्रध्यानभेदा येउक्ता तेसर्वेपरिणामभेदेन-भवति । अत्यतविशुद्धोविशुद्धा अत्यतसक्लेशेसक्लिष्टा सर्वजी-वानामायोध्यानकालश्चाल्प स्मृतिचिंताभावनाकालस्तुबहुतरइति ॥ ॥ १३६ ॥

टबार्थ —छेहला शुक्लध्यानना २ पायाविना चउदे पाया छे ए अत्ये २ पाया ते अयोगी गुणठाणे छे तेमाटे ओछा गण्या छे अनाहारकमार्गणाये केवल २ ने विषे शुक्लध्यानना छेहला २ पाया छे पाच लेश्याने क्षयोपशमसमकितने विषे शुक्लध्यान विना ३ ध्यानना १२ पाया छे जे कारणे परि-णामने भेदे आठमा गुणठाणा पछी शुक्लध्यान होवे ए मार्गणा ७ गुणठाणा सीम छे ॥ १३६ ॥

सुहुमेपढमसुक, हरकाएसुकचउरपरिहारे ।
अट्टतिगधम्मचउग, इगसुक्कदुअदुसामईए ॥१३७॥

टीका—सुहुमेपढमसुक्क इत्यादि ॥ सूक्ष्मसपरायेचारित्रेप्र-थमआद्य शुक्लपृथक्त्ववितर्कसमवीचारलक्षणएकशुक्लध्यानलभ्यते हरकायेयथाख्यातचारित्रेसुक्कचउरशुक्लध्यानस्यचत्वारोभेदा भवति तत्र उपशातमोहेपृथक्त्व क्षीणमोहेएकत्वसयोगेसूक्ष्मक्रियालक्षण अयोगिकेवलिगुणस्थानेव्युपरतक्रियालक्षण परिहारविशुद्धौआर्त्त-निक निदानार्त्तरहितमुनीनाभवति । आचार्यादिइष्टवियोगादौरोग-चिंतादिकारणेचआर्त्तत्रयसभवात्, स्वाध्यायादौतुधर्मध्यानचतुष्टयस्य-सद्भावात् प्रमत्ताप्रमत्तगुणस्थानप्रायोग्यत्वात् । दुसामईएत्ति, सा-मायिकछेदोपस्थापनीयलक्षणेचारित्रद्वयेएकप्रथमशुक्लध्यानपृथक्त्व-वितर्कलक्षणतेनयुक्तइत्यनेनप्रमत्तेआर्त्तत्रिकधर्मचतुष्टयस्यसद्भावात् ।

प्रमत्तेधर्मध्यानचतुष्टयसद्भावात् । अपूर्वोऽनिवृत्तौसयमशुक्लचारित्र-द्वयेप्रमत्तादिअनिवृत्तिपर्यंतगुणस्थानसद्भावात् ॥ १३७ ॥

टवार्थ —सूक्ष्मसपरायचारित्रे पहिलो शुक्लध्यानना पायो छे यथाख्यातचारित्रमध्ये शुक्लध्यानना ४ पाया छे परिहार विशुद्धिमध्ये आर्त्तध्यानना तीन भेद धर्मध्यानना ४ भेद छे सामायिक छेदोपस्थापनीय विषे आर्त्तध्यानना तीन भेद धर्मना ४ भेद शुक्लनो १ भेद पहिलो ए भेद छे ॥ १३७ ॥

सुदुसुक्कमणनाणे, सेसेसुअट्टरुद्दझाणाइ ।
दडगनेरसदेवे, नवतिरियेइगेगनगनिरए ॥ १३८ ॥

टीका—सुदुसुक्कमणनाणे इत्यादि ॥ मन पर्यवज्ञानेप्रमत्तन क्षीणमोहयावत्गुणस्थानसत्त्वे आर्त्तत्रिकधर्मचतुष्कशुक्लद्वयसद्भा वात् मन पर्यवज्ञाने नवध्यानभेदा भवति शेषासुगतित्रिकअज्ञान-त्रिक अविरतिदेशविरति अभव्यमिथ्यात्व सास्वादनमिश्रलक्षणा-सुद्वादशमार्गणासुआर्त्तरौद्र झाणाइ ध्यानभेदानपुमकत्वप्राकृतत्वात् अष्टौभवति । इत्युक्ताध्यानभेदा मार्गणासु, साप्रतचतुर्विंशति-दडकानमार्गणासुदर्शयन्नाह देवेदेवगतौत्रयोदशदडकाभुवनपतिदश-व्यतरज्योतिष्क वैमानिकरूपणा प्राप्यते, नवत्ति, दडका स्थावर-पचकविकलत्रिकतिर्यग्पचेंद्रियलक्षणानवदडकास्तिर्यग्गतिमार्गणा-याएकोनरगतिलक्षण नरगतौएकोनैरयिकगतिलक्षण नरकगतौ-भवति ॥ १३८ ॥

टवार्थ —मन पर्यवज्ञानमध्ये आर्त्तना ३ भेद धर्मना ४ शुक्लना २ एटला भेद छे । शेषमार्गणाये आर्त्तध्यानना रूद्रना

४ भेद पामीए, ए मार्गणाए ध्यानना भेद कह्या, हवे २४ दटक बासठ मार्गणाये कहे छे । तेर दटक देवतानी गतिमव्ये छे, तिर्यंच गतिमव्ये नव दडक छे । नारकीने एक दडक छे, मनुष्यने दडके एक दडक छे ॥ १३८ ॥

पणएगिंदियविगले, थावरपणगेनियचमणयोगे ।
पचेंदिसुतिगनाणे, विभगेओहिदसेय ॥ १३९ ॥

टीका—पणएगिंदियविगले इत्यादि॥एकेन्द्रियमार्गणायापणत्ति पच पृथिव्यप्तेजोवायुवनस्पतिलक्षणा पचदडका भवति, विकलेस्वका स्वनामकादडकाभवति । पृथि-यादिपुपचसुस्वनामका एवदडका, तथामनोयोगेपचेंद्रियमार्गणायाज्ञानत्रिकेमत्यादिकेविभगेअवधिदर्शनेचशब्द समुच्चयार्थ ॥ १३९ ॥

ट्बार्थ —एकेंद्रियमार्गणाये पाच दटक छे । पृथिवीअप्तेउवाउवनस्पति एव ५ विकल्नेविषे पोताना दडक बेंद्रीने बेंद्री, तेंद्रीने तेंद्री चौरिंद्रीयने चौरिंद्रीनो दटक छे, थावर पाचमव्ये थावरना दडक पोताना जाणवा । पृथिवीकायमव्ये पृथिवीनो दटक, अप्कायमव्ये अपकायनो दडक, तेउकायमव्ये तेउनो दडक, वाउकायमे वाउनो दटक, वनस्पतिकायमे वनस्पतिनो दटक छे । मनोयोग वचनयोग १ पाचेंद्रिय मार्गणाये १ मतिज्ञान १ श्रुतज्ञान २ अवधिज्ञान ३ तथा विभगज्ञान तथा अवधिदर्शनने विषे ॥ १३९ ॥

सम्मतिगेमीससमि, सन्निसुसालसयमेपणगे ।
मणनाणकेवलदुगे, एगनरदडगहोइ ॥ १४० ॥

टीका—सम्यक्त्वत्रिके उपशमक्षयोपशमक्षायिके मिश्रेसंज्ञि-मार्गणायांसप्तोलत्ति षोटशदंडकानार्क्कदेवसत्यग्राह्यपंचेंद्रियनिर्यग्मनु-ष्या एतेभवंति संयमपंचकेमन पर्यवज्ञानेकेवलज्ञानेकेवलदर्शने एकमनुष्यगतिलक्षणदंडकंभवति, वचनयोगेविकलत्रिकसहितषोडश-युक्ताएकोनविंशतिदंडकाभवति ॥ १४० ॥

टवार्थ—उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायिक १ मिश्रदृष्टि ते संज्ञीमार्गणाए सोल दंडक छे, देवनाना १३ नारकीनो १ तिर्यचपचेंद्रीय १ ए सोल छे, पाच संयममन पर्यवज्ञान १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ एटली मार्गणाए एक मनुष्यनो दंडक होवे, ए मनुष्य विना न पामीये ॥ १४० ॥

इगुणिसतसेपुरिसे, थीनेएपनरससढिइकारा ।
देसेतिरिमणुअदुग, चरकुसुइगिविति विणासत्तर १४१॥

टीका—इगुणिसनमेत्यादि तेएवएकोनविंशतिदंडका त्रस-कायेपुरिसेपुम्पनेदेतथास्त्रीवेदेनारकवजा पंचदशसंज्ञिदंडका स-ढिनपुसकवेदेनारकस्थावरविकलतिर्यग्मनुष्यलक्षणाएकादशदंडकाभ-वंति । देशविरतिमार्गणायातिर्यग्गतिमनुष्यगतिलक्षणौद्वौदंडकौच क्षुर्दर्शनेएकेंद्रिया पंच त्रिनि द्वींद्रिया त्रीन्द्रियादंडकत्रयकविनासप्त-दशदंडका भवति ॥ १४१ ॥

टवार्थ—त्रसकायमार्गणायेविकल ३ देवना १३ नारकी १ तिरियचपचेंद्रीय १ मनुष्यपचेंद्रीय १९ दंडक छे, पुरुषवेदे स्त्रीवेदे देवनाना १३ तिर्यचपचेंद्रीय १ मनुष्यपचेंद्रीय १ ए १५ दंडक छे । नपुंसकवेदमध्ये नारकी १ थावर ५ विकल ३ तिर्यचप

चेंद्रीय मनुष्यपचेंद्रीय ए ११ दडक छे । देशविरतिमध्ये तिर्यंच १ मनुष्य १ ए बे दंडक छे । चक्षुदर्शनमध्ये एकेंद्रीना ५ दंडक छे, बेंद्रीनो १ तेंद्रीनो १ ए सात विना शेष १७ दंडक पामीये छीए ॥ १४१ ॥

वावीसकिण्हतिगे, अट्ठारस तेउएअ पउमदुगे ।
तिगदसगचअसन्नी, सासाणेदुतिवावीस ॥ १४२ ॥

टीका—वावीसकिण्हतिगे इत्यादि कृष्णनीलकापोतलक्षणासुलेश्यासुज्योतिष्कवैमानिकवर्जा द्वाविंशतिदंडका तेजोलेश्यायानारकतेजस्कायवायुकायविकलनिकवर्जाअष्टादशदंडकाभवंति॥ पउमदुगेपद्मशुक्लेश्याद्वयेतिर्यगपचेंद्रियमनुष्यपचेंद्रियगर्भजवैमानिकानयोदंडकाभवंति । दसगच असन्ना, असंज्ञिमार्गणायास्थावरविकलतिर्यग्मनुष्यलक्षणा दशदंडका भवन्ति, तथासास्वादनमार्गणाया तेजोवायुकायरहिताद्वाविंशतिदंडका लभ्यते ॥ १४२ ॥

टबार्थ—कृष्णलेश्या १ नीललेश्या २ कापोतलेश्या ३ ए त्रीनने विषे ज्योतिषी १ वैमानिकविना बावीस दंडक छे तेजोलेश्याने विषे नारकी १ विकल ३ तेउकाय वायुकाय विना १८ दंडक पामीये छे पद्म तथा शुक्ललेश्याने विषे ३ दंडक छे एक वैमानिकनो १ एक तिर्यंचनो १ एक पचेन्द्रि मनुष्यनो १ एव ३ छे, तथा असंज्ञिमार्गणाये १० दंडक छे थावर ५ विकल ३ तिर्यंचऽसज्ञी १ मनुष्यअसज्ञी १ एव १० दंडक लाभे सास्वादनमा २२ दंडक छे, तेउकाय वाउकाय नथी ॥ १४२ ॥

सेसासुमग्गणासु, चउनिसदंडगानिरयविगले ।
थावरिइगिनपुसो, देवाथीपुरिसवेआय ॥१४३॥

टीका—सेसासुमग्गणासु इत्यादि ॥ शेषासुमार्गणासु काययोगकषायचतुष्कअज्ञानद्रयाविरति अचक्षुर्दर्शनभव्याऽभव्यमिथ्यात्वाहारकानाऽहारकलक्षणासु चतुर्विंशतिदंडका भवति । निरयविगलेत्ति, नरकगतिविकलत्रिकस्थावरपंचकएकेन्द्रियलक्षणासुएक नपुसकवेदलक्षणोवेद भवति । देवगतौस्त्रीवेदपुरुषवेदौप्राप्येते ॥ ॥ १४३ ॥

टवार्थ—शेषमार्गणाये काययोगे कषाय ४ अज्ञान ३ अविरति चक्षुदर्शन १ भव्य १ अभव्य १ मिथ्यात्व १ आहारी १ अनाहारी १ एटली मार्गणाये २४ दंडक छे हवे बासठ मार्गणाये कहे छे वेद तीन वखाणे छे, नारकीनी मार्गणाये विकल ३ थावर ५ एकेन्द्रिय १ एटलाने नपुसक वेद छे तथा देवगतिमध्ये स्त्रीवेद पुरुषवेद ए बे वेद पामीये छे ॥१४३॥

सुहमअहरकायदुकेवलि, वेअरहीआनपुसगाअमणा।
परिहारगादुवेया, सेस तिवेया मुणेयवा ॥ १४४ ॥

टीका—सुहमअह इत्यादि ॥ सुहमत्तिसूक्ष्मसंपरायचारित्रेयथाख्यातचारित्रे केवलद्विकेएता मार्गणावेदरहिताज्ञातव्या ॥ अमणाअसज्ञिन नपुसकवेदाभवति । परिहारविशुद्धिका पुरुषवेदनपुसकवेदाभवति । जवनपुंगवा प्रतिमाएतद्राग्या भगवत्यापचविंशतितमशतकान्नेय। सेसाशेषा सर्वमार्गणास्त्रिवेदका भवति ।

इत्युक्तमार्गणासुवेदद्वार ॥ १४४ ॥ साम्प्रतमार्गणासुध्रुवबंधिद्वार-दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसंपराय १ यथाख्यातचारित्र १ केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ एटली मार्गणाये कोई वेद नथी कर्मग्रंथ-मध्ये केवलज्ञानोपयोगे वेद ३ ने कह्यो छे, ते आकाररुपवेद गवेष्या छे, परविकाररुप नथी गवेष्यो, असज्ञीने एक नपुंसकवेद छे परिहारविशुद्धिने पुरुप तथा नपुंसकवेद छे शेष जे मार्गणा रही ते सर्वने तीन वेद लाभे छे ॥ १४४ ॥

वन्नचउतेअकम्मा, गुरुलहुनिमिणोवघायभयकुच्छा।
मिच्छकसायावरणा, विग्घाधुववधिसगचत्ता ॥१४५॥

टीका—वन्नचउतेअकम्मा इत्यादि ।। गाथा प्राग्व्याख्याता वर्णादीनाध्रुवबंधित्वस्वस्वजातिषु एकस्यावश्यबंधात् । ननुचैवस्वजात्यन्यतमबंधेध्रुवबंधित्वतर्हिसातासातयोरन्यतमस्यावश्यबंधात्ध्रुवबंधित्वमाप्नोति, तत्राह सातासातयोर्हेतुभेदोवर्णादीनातुसएवहेतु तेनध्रुवबंधित्वमितिएवगत्यादिष्वपिहेतुभेदसंभवात् अध्रुवताज्ञेया ॥ १४५ ॥

टबार्थ —हवेध्रुवबंधी कहे छे वर्ण ४ तैजस १ कार्मण १ अगुरुलघु १ निर्माण नामकर्म १ उपघात १ भय १ दुगछा १ मिथ्यात्व १ कषाय १६ आवरण १४ ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ९ एव १४ आवरणअतराय ५ ए ध्रुवबंधीनी सडताळीस प्रकृति जाणवी ॥ १४५ ॥

अणमिच्छथीणतिग, विणुनाणतिगओहिदससम्मतिगे
मीसेदेसविरए, अवीअकसायायधुववधी ॥ १४६ ॥

टीका—तत्रमार्गणासुअनंतानुबंधिचतुष्टयमिथ्यात्वमोहनीय-स्त्यानर्द्धित्रिकलक्षणाष्टकप्रकृतिवर्जा शेषाएकोनचत्वारिंशत्ध्रुवबंधि-न्य मत्यादिज्ञानत्रिकावधिदर्शनउपशमक्षयोपशमक्षायिकलक्षणस-म्यक्त्वत्रिकेमिश्रेबन्नति ॥ ताएवपूर्वोक्ताद्वितीयकषायरहिता पंच-त्रिंशत्देशविरतौवधयान्ति ॥ १४६ ॥

टबार्थ—अनंतानुबंधि ४ मिथ्यात्व १ थीणद्धी ३ ए आठ विना ज्ञान ३ अवधिदर्शन १ समकित तीनने विषे एटली मार्गणाये इगुणचालीस ध्रुवबंधी मिश्रदृष्टिनेविषे ३९ चालीस ध्रुवबंधी छे, देशविरतिनेविषे ए ३९ चालीसम ये कषाय बीजानी चोकडी काढीये तेवारे पांत्रीस ध्रुवबंधी छे ॥१४६॥

तीअकसायविणाते, मणपज्जवनाणचरणतिगसुहुमे।
चउदससासाणेते, मिच्छविणाछचत्तधुवबंधी॥१४७॥

टीका—तीअकसाय इत्यादि॥ ताएवपूर्वोक्तास्तृतीयकषाय-चतुष्टयरहिताएकत्रिंशत्, मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीय-परिहारविशुद्धिलक्षणेचारित्रत्रिकेबध्नाति । हेतुभावनाचपूर्ववत् । तथासुहमे सूक्ष्मसंपरायचारित्रेज्ञानावरणीयपंचकदर्शनावरणीय चतु-ष्टय अंतरायपंचक एव चतुर्दशध्रुवबंधि य बंधेभवति । तथा सा-स्वादने, तेइति, ताध्रुवबंधि य मिथ्यात्वविनाषट्चत्वारिंशत्ध्रुव-बंधेप्राप्यते मिथ्यात्वस्यमिथ्यात्वेएवबंधात् ॥ १४७ ॥

टबार्थ—ते पांत्रीस माहियी तीजी चोकडी विना इक-त्रीस ध्रुवबंधी बांधे । मन पर्यवज्ञानी सामायिक, छेदोपस्थापनीय १ परिहारविशुद्धिने विषे ३१ ध्रुवबंधी प्रकृति छे । सूक्ष्मसंप-

राप गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ४ अन्तराय ५ एवं १४ ध्रुवबंधी जाणे । मिथ्यात्व विना छेताळीस ध्रुवबंधी बाधे छे ॥ १४७ ॥

केवलदुगिहरकाण, अनधम्मेरासुसवधुवबधो ।
धुवबधहीणचऊोह, सग्गाअधुवबधीण ॥ १९८ ॥

टीका—केवलदुगिहरखाण इत्यादि ॥ तथाकेवलज्ञानकेवल-दर्शनपयारपानल तणासुनिसृप्रमनधिप तीनासर्वासाअनर नध-घोभवनिशेषासुगतिइंद्रियकायपयोगवेदकपायाऽज्ञाननयाऽविरतिचक्षु रचक्षुर्दर्शनलेश्यापटकभ याऽभव्यामिथ्यात्वमजपसंज्ञि आहारकाऽनाहारकलक्षणासुचतुश्चत्वारिंशन्मार्गणासुसमचत्वारिंशत्ध्रुवबधिन्य अनेभवनि ध्रुवबधिहीना। शेषामार्गणाम ध्वाभिलोक्ता महनय अन-वनधिन्य प्रतिमार्गणासुवक्त यान्ताश्चेमानरकगतौचतु पचाशत् अ-ध्रुवबधिन्य , तिर्यग्गतौसप्तति , मनुष्येनिसप्तति , देवे ५७ सप्त-पचाशत्, एकेंद्रियेनि त्रैंद्रियेद्विपष्टि , पचेंद्रियेनिसप्तति , पृथि पद्व-नस्पतिपुद्विपष्टि , तेजोवायकाये अष्टपचाशत् । त्रसेयोगत्रयेवेदत्रपे-कपायचतुष्टयेनिसप्तति । मत्यादिज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेचत्वारिंशत्-केवलज्ञाने केवलदर्शनेएका मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनी-यपरिहारविशुद्धौचतुस्त्रिंशत् । अज्ञानत्रयेमिथ्यात्वेसप्तति । सूक्ष्म-संपरायेतिस्र , यथाख्यातेएकादशनिर्गतौद्वात्रिंशत् । अविरतौएकसप्त-ति । चक्षुरचक्षुर्दर्शननिसप्तति कृष्णनीलकापोतेएकसप्तति तेजो-लेश्यायाचतु पष्टि , पद्मलेश्यायाएकपष्टि , शुक्ललेश्यायासप्तपचाशत् भव्येनिसप्तति । अभव्येसप्तति , उपशमेअष्टात्रिंशत् । क्षायिक-क्षयोपशमेचत्वारिंशत, मिश्रेपचत्रिंशत । सास्वादने पचपचाशत,

मिथ्यात्वेसप्तति, संज्ञिमार्गणायानिसप्तति । असंज्ञिमार्गणायास-प्तति । आहारकेनिसप्तति अनाहारके ६५ पचपष्टि, अधुवब-धिय भवति ॥ १४८ ॥

टबार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ ने विषे यथाख्यात-चारित्रने विषे ध्रुवबंधी प्रकृतिबंधीय नहीं शेष जे मार्गणा चौवालीसते ध्रुवबंधी सर्व ४७ सुडतालीस बांधे ध्रुवबंधी काढीये शेष रहे ते अध्रुवबंधी प्रकृतिनो बंध छे। नारकीने ५४ ति-र्यंचने ७० मनुष्यने ७३ देवगतिने ५७ एकेंद्रीविकलेंद्रीने ६२ पचेंद्रीने ७३ पृथवीअप्तेउवनस्पतिने ६२ तेउवाऊने ५८ अस-योग ३ वेद ३ कषाय ४ ने ७३ ज्ञान ३ ने ४० मन पर्य-वज्ञानने ३४ केवलज्ञानने १ लेश्या ३ ने ७१ तेजो ६४ पद्म ६१ शुक्ल ५७ भव्य ७३ अभव्य ७० उपशम ३८ क्षायिक ४० क्षयोपशमे ४० मिश्रे ३५ सास्वादने ५५ मिथ्यात्वे ७० सज्ञी ७३ असज्ञी ७० आहारीने ७३ अनाहारीने ६५ अध्रुव-बंधीनो बंध छे ॥ १४८ ॥

निमिणथिरअथिरअगुरुअ, सुहअसुहतेअकम्मचउवन्ना।
नाणंतरायदसण, मिच्छधुवउदयसगवीसा ॥१४९॥

टीका—निमिणथिरअथिर इत्यादि गाथा मार्गणाधार पाताअध-ध्रुवोदयिनी प्रकृती मार्गणासुविभजयनाह ॥ १४९ ॥

टबार्थ—ध्रुवोदयी २७ छे, निर्माण १ थिर १ अथिर १ अगुरुलघु १ शुभ १ अशुभ १ तैजस १ कार्मण १ वर्णा-दिक ४ ए १२ नामकर्मनी ज्ञानावरणी ५ अंतराय ५ दर्शना-

वरणी ४ मिथ्यात्व १ ए सत्तावीस ध्रुवउदयी जाणनी प्रकृति स्वरूप ए रीते छे ॥ १४९ ॥

नामधुनोदयकेवलि, सम्मत्तपरासुमग्गणासुच।
मिच्छविणासेसासु, सगवीसहुतिधुवउदया ॥१५०॥

टीका—नामध्रुवोदयकेवलि इत्यादि। केवलित्ति भीमोभीमसेनइतिन्यायात् केवलज्ञान केवलदर्शनमार्गणाद्वयेनामकर्मप्रत्यया-ध्रुवोदयिन्योद्वादशप्रकृतय प्राप्यते, तथा सम्मत्तपरासु सम्यक्त्वसहितासु मार्गणासुमत्यादिज्ञानचतुष्टयेअवधिदर्शनेसयमपद्के उपशमादिसम्यक्त्वत्रयेचशब्दात्सास्वादने मिश्रेमिथ्यात्वोदयविनाषड्विंशतिध्रुवोदया भवन्ति, शेषासुमार्गणासुसप्तविंशति ध्रुवोदया प्राप्यते, भावनागुणस्थानाधिकारवत्ज्ञेया ॥ १५० ॥ अध्रुवोदयिप्रकृतिदर्शनार्थमाह ॥

ब्यार्थ—केवलज्ञान १ केवलदर्शनमध्ये नामकर्मनी १२ ध्रुवोदयी उदय छे समकितसहित जे मार्गणाज्ञान ४ अवधिदर्शनसमकित तीन इत्यादिक मार्गणाये मिथ्यात्व विना २६ ध्रुवउदयी उदय छे, शेषमार्गणाये सत्तावीस ध्रुवोदयी छे ॥१५०

धुवउदयहीणउदओह, सेसा(सखा)अधुवोदयाणनेयव्वा
धुवसताकेवलदुगि, चउसत्तरिसेससव्वाओ ॥१५१॥

टीका—ध्रुवउदयहीणउदओ इत्यादि। उदयेमार्गणासुउदयस्ययओघ सध्रुवोदयहीन शेषाउदयोवसख्यासाअध्रुवोदयसख्याज्ञातव्या, नरकगतौ एकोनाशीति उदयसख्या तत्रसप्तविंशतिध्रुवोदया शेषा-

द्विपंचाशत्अध्रुवोदयाज्ञातव्या एवंसर्वत्रभाव्य, विचारसारपचनके-स्वोपज्ञतन ज्ञातव्या इति ॥ अथध्रुवसत्तानिंशदधिकशतमानासा-चसप्त (अष्ट) ? पचाशदधिकशतप्रकृत्यपेक्षयागृहीतातदपेक्षयाकेवल-ज्ञान केवलदर्शनमार्गणायाचतुस्सप्तति ध्रुवसत्तालभ्यतेशेषासुषष्टि-मार्गणासुसर्वाअपिध्रुवसत्ता लभ्यतेभावनाचस्वत ज्ञेया ॥ १५१ ॥ अध्रुवसत्तादर्शयन्नाह ॥

टवार्थ —ध्रुवउदयथी हीन करता उदयनो जे ओघ छे ते मध्ये ध्रुवोदयी काढता रही जे प्रकृति ते अध्रुवोदयी जाणवी, नरगनी ७९ प्रकृति उदय छे, तेमध्ये २७ ध्रुवोदयी ५२ अ-ध्रुवोदयी इमज सर्व यत्रकथी जाणज्यो, हवे ध्रुव सत्ता कहे छे केवलज्ञान केवलदर्शनने विषे चिहुत्तरि ध्रुव सत्ता छे, शेष साठ मार्गणाये सर्व एकसोतीसनी ध्रुव सत्ता छे ॥ १५१ ॥

अध्रुवेतिरियाअजिणा, देवनिरयाइगाउविणुविगला।
थावरइगअजिणाओ, दुगअतिगाऊतेउदुगे॥१५२॥

टीका—अध्रुवेतिरियाअजिणा इत्यादि॥ अध्रुवेअध्रुवसत्ताया तिर्यग्योनिकानाअजिनाजिननामरहिता सप्तविंशति अध्रुवसत्ताका लभ्यते, देवगनावपिनरकायूरहिता सप्तविंशतिरध्रुवसत्ता नरक-गतौदेवायूरहिता अध्रुवसत्ता प्राप्यते, विकलेन्द्रियत्रिके स्थावरत्रिके पृथिव्यप्वनस्पतिलक्षणे इगत्तिएकेन्द्रियमार्गणाया जिननामदेवायु नरकायु इतिप्रकृतित्रयरहिता पचविंशति अध्रुवसत्ताभवति । अतिगाउत्तिनरकदेवमनुष्यायूरहिताश्चतुर्विंशति अध्रुवसत्तालभ्यते, एताश्चमनुष्यत आगत्यतेजस्कायवायुकायतात्कालिकानाभवति ।

तेजस्कायिकोदयेआवलिकानतरमनुष्यगतिमनुष्यानुपूर्वी देवगतिदे-वानुपूर्वी नरकगतिनरकाउपूर्वी वैक्रियसप्तकाहारकसप्तलक्षणसत्ताया उद्वलतिजिननामसत्तातुनास्त्येवेतिएवमदनाहसूत्रकार ॥१५२॥

टवार्थ —अध्रुवसत्तामध्ये तिर्यंचगतिमध्ये जिननामनी सत्ता नथी शेष २७ नी सत्ता छे देवगतिमध्ये नरकनो आऊखो सत्तामध्ये नथी नरकगतिमध्ये देवायु नथी, विकल ३ थावर ३ एकेन्द्रियमार्गणाये जिननाम तथा देवतानारकीनो आऊखो काढीये तेवारे २५ अध्रुवसत्ता छे अने तेउकाय १ वाउकाय १ ने मनुष्यना आऊखा विना २४ सत्ता छे ॥ १५२ ॥

नरअणुपुव्वि (वेउवि) विणावा, केवलदुगिमीससम्म-निरयदुग।
तिगआउहीणसता, सासणमीसेअअजिणाय ॥१५३॥

टीका—नरआणुपुवि (नरवेउवि) विणावा इत्यादि ॥ अथनरोमनुष्य वैक्रियाहारकदेवनरकप्रायोग्यप्रकृतिविनातेजस्काय-वायुकाय लक्षणमार्गणायाभवति वाइतिपदेनसर्वकर्मप्रकृत्यादिनोक्तेय शास्त्रसंक्षेपार्थनोक्त । केवलद्विकमिश्रसम्यक्त्वमोहनरकद्विकआयु-त्रिकदेवायु नरकायु तिर्यगायु इतिप्रकृतिसप्तकविनाएकविंशति अध्रुवसत्ताकालभ्यते ॥ सास्वादनेमिश्रेजिननामरहिता सप्तविंशति अध्रुवसताका लभ्यते, विजिणप्रायनइयइत्यादिवचनात्। एतद्दुभा-वपामि जिननामसत्तारहितानाअथरोद्वलितजिनसत्तावनाभवति ॥ १५३ ॥

टवार्थ —केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ ने विषे मिश्रमो-हनीय १ समकितमोहनीय नरकनीनआऊपादेवायु १ नरकायु-

विना २१ अध्रुवसत्ता छे । किहा एक नरानुपूर्विविना २० नी सत्ता छे । सास्वादन तथा मिश्र ए बे मध्ये जिननाम सत्ता नथी शेष २७ अध्रुवसत्ता छे, शेषमार्गणाए २८ अध्रुवसत्ता छे ॥ १५३ ॥

सेसासुसव्वसता, चरणापणमणुअमग्गणाठाणे । *
पचविदितिनरेसु, देसोअजओअसव्वत्थ ॥ १५४ ॥

टीका—सेसासुसवसनाइत्यादि ॥ शेषासुमार्गणासुअध्रुवसत्ता सर्वा प्राप्यन्तेइतिभाव ॥ इत्युक्त अध्रुवसत्ताद्वार साम्प्रतचारित्रद्वार-मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥ नरतसइत्यादिगाथा प्रथमदर्शिनास्तितथापि-प्रक्षेपत्वेनन्यस्ता यार यावतेनरगतो त्रसेयोगत्रिकेमत्यादिज्ञानचतुष्टये दर्शननिके शुक्ललेश्यायाभव्येउपशमेक्षायिकेसज्ञिषु आहारक-लक्षणासुमार्गणासुसप्तचरणाश्चारित्रा पचचारित्रदेशविरत्यविरतिल-क्षणा प्राप्यते ॥ १५४ ॥

टबार्थ —मनुष्यनी मार्गणाय ५ चारित्र छे, सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहारविशुद्धि ३ सूक्ष्मसपराय ४ यथाख्यात-चारित्र ए पाच चारित्र मनुष्यमार्गणामध्ये पामीये । पचेंद्रीति-र्यंच तथा मनुष्यमध्ये देशविरति पामीये । अविरतिसयमसर्वमे पामीये । इहा मार्गणाये सयमपनकथी जोईलेज्यो एहनो यत्र पिण ग्रथकर्त्तानो कृत छे ॥ १५४ ॥

* (पाठान्तरे)
सेसासुसव्वसता, नरतसजोगनाणदसेसु ।
सुक्कभविसत्तखायग, सन्नीहारेसुसगचरणा ॥

लोभेअहक्खायविणा, तेसुहुमविणाकसायवेएसु ।
लेसपणवेयगम्मि, केवलदुगिसुद्धचरणच ॥१५५॥

टीका——लोभेअहइत्यादि ॥ लोभमार्गणायायथारयानचारित्र विनापद्भेदा तेएवपन्सूक्ष्मसपगयविनाकषायत्रिके । वेदत्रिके-लेश्यापचकेक्षयोपशमसामायिकादिसमभेदेपुनिजकचारित्रसामायिके-सामायिकछेदेछेदपरिहारेपरिहार इत्यादिज्ञेय देवादिअविरताविर-हिता मार्गणासुसम्यक्त्वेपचभेदा भवति । तथाकेवलद्विकेएकशुद्ध-यथारयातलक्षणचारित्रमाप्यते ॥ १५५ ॥

चरणेसुनायचरण, देवाइअजयमग्गणेअजय ।
तिरएसदेसविरइ, साहक्खायअणाहारे ॥ १५६ ॥

टीका——एकेंद्रियेविकलद्रियेदेवगतौनरकगतौस्थावरपचकेमि-थ्यात्वमास्वादनमिश्रलक्षणेत्रिके अविरतिमार्गणायाअज्ञानत्रिके-अभव्यमार्गणायाएकअविरतिलक्षणमाप्यते । तिर्यग्गतौसदेसत्ति-देशविरतिथुक्तौद्वौभेदौमाप्येते । अविरतिदेशविरतचेतिसाहक्खा-यतियथारयानसहित इत्यनेनअविरति यथाख्यातचएवचारित्र-भेदद्वय अनाहारकमार्गणायाभवति । तत्राऽविरतिविग्रहगतौयथा-रयात केवलसमुद्घाताऽयोगिकेवलिगुणाऽवस्थायाभवति । इत्युक्तचारित्रद्वारमार्गणासु, सामतसर्वघातिद्वारदर्शयन्नाह ॥१५६॥

सम्मत्तमग्गणासु, मीसेअणथीणमिच्छविणुघाई।
सजईयमग्गणाए, सव्वघाईअचउपयडी ॥ १५७ ॥

टीका——सम्मत्तमग्गणासु इत्यादि॥ सम्यक्त्वशुद्धयथार्थश्रद्धा-

तयासहिता या मार्गणा मत्यादिज्ञानेतितपदेशविरतिअवधिदर्शन उपशमक्षयोपशमक्षायिकलक्षणासुमार्गणासु तथा मिश्रमार्गणासु । अणत्तिअनन्तानुबंधिचतुष्टयस्त्यानर्द्धित्रिकमिथ्यात्वविनाद्वादशसर्वघातिय बंधेभवति । सजइयत्ति सयतिसयमसहिता या मार्गणा मन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रिकमार्गणासुसर्वघातिन्य केवलज्ञानावरणीय केवलदर्शनावरणीयनिद्राद्विकरूपाश्चतस्त्र प्रकृतयोबंधेप्राप्यतेसूक्ष्मसपरायेच केवलज्ञानाऽऽवरणीय केवलदर्शनावरणीय बंधेप्राप्येते ॥ १५७ ॥

टवार्थ —हवे सर्वघाती प्रकृतिने बधमार्गणाये कहे छे । समकित सहित मार्गणा मतिज्ञानादिक तेमध्ये अनन्तानुबधि ४ थीणद्धी तीन ३ मिथ्यात्वमोहनीय ए आठ विना १२ सर्वघातिनो बध छे, सयममार्गणा मन पर्यायादिक तेहने विषे सर्वघाति च्यार प्रकृतिनो बध छे । केवलज्ञानावरणी १ केवलदर्शनावरणी १ निद्रानिद्रा १ ए चार छे ॥ १५७ ॥

सेसासुसव्वघाईय, वीसकेवलदुगेनदेसेवि ।
सम्मत्तमग्गणासु, मीसेअदुवेयसासाणे ॥ १५९ ॥

टीका—सेसासुसवघाईय इत्यादि ॥ शेषासुमार्गणासु सर्वघातिय विंशतिप्रकृतय बंधेभवति । चशब्दात सास्वादनस्यमिथ्यात्वविनाएकोनविंशति सर्वघाति पोबंधेभवति इत्युक्ता सर्वघातिन्य । साप्रतदेशघातिनी दर्शयन्नाह ॥ नदेसेवित्यादि अनडमुक्कमणि यायेनकेवलद्विकेदेशघातिय पचविंशतिप्रकृतय नइतिवर्वे तथा उदयेसत्तायानभवति । सम्मत्तमग्गणासुसम्यक्त्वशुद्धतत्वप्रतीतिलक्षणतद्युक्तासुमार्गणासुप्रप्रोक्तासु तथा मिश्रमार्ग-

टबार्थ --मनुष्यगति १ पचेन्द्रि १ त्रसकाय १ योग ३ वेद ३ कषाय ४ चक्षुर्दर्शन १ अचक्षुदर्शन १ तेजोलेश्या १ भव्यमार्गणामे सज्ञीमार्गणाये आहारकमार्गणाये पुन्यना सर्व ४२ छे ॥ १६० ॥

तिरिआउविणापउमे, हारदुगहीणकिण्हतिगअजये।
अजिणाहारातिरिए, अन्नाणतिगअभवमिच्छेसु॥१६१

टीका—तिरियाउविणा इत्यादि । पद्मलेश्यायातिर्यगायुर्विना-एकचत्वारिंशत्प्रवेभवति । तथा कृष्णनीलकापोतेअविरतिमार्ग-णाया आहारकद्विकविनाचत्वारिंशत् ४० पुण्यभेदा बवेभवति। एतासायप्रसामित्वेएवत्रनाऽभावात् तद्भावनानत्तोक्ता।। तिरीएइति-तिर्यग्गतौअज्ञानत्रिकेअभव्यमार्गणायामिच्छेइतिमिथ्यात्वेअजिणा-हारा, जिननामकर्मआहारकद्विकविनाएकोनचत्वारिंशतपुण्यप्रकृ-तिर्बंधेभवति ॥ १६१ ॥

टबार्थ --पद्मलेश्याने विपे तिर्यंचायु विना ४२ पुण्यप्रकृति छे आहारक बे विना ४० पुण्यप्रकृतिनो बंध छे, कृष्णनील कापोतलेश्याये अविरतिमार्गणाने विपे ४० पुण्यना भेद छे, तिर्यंचगते जिननाम १ आहारक २ एव तीन विना ३० प्रकृति पुन्यनो बध छे अज्ञान ३ अभव्यने मिथ्यात्वने विपे ३९ गुणचालीस प्रकृति पुण्यनी बाधे ॥ १६१ ॥

असन्निएविएच, नाणतिगेओहिदससुकाए ।
खायगमीसेसम्मे, तिरिआओयोगदुगहीणा ॥१६२॥

टीका—असज्ञिमार्गणायामपिएवमेवएकोनचत्वारिंशत्पुण्यभेदा-

भवति, तथा ज्ञानत्रिकेमतिश्रुतावधिलक्षणे तथा अवधिदर्शनेशुक्ल-लेश्यायाक्षायिकसम्यग्दर्शनेमीसेसम्मेइतिमिश्रशब्देनक्षायोपशमस-म्यग्दर्शनत्रतिर्यगायु योगदुगइतिउद्योतद्विकेनहीनाएकोनचत्वा-रिंशत्पु यभेदा बंधेलभ्यते, एतेषामेगनाआद्यगुणस्थानत्रयेतद्ब-धात् ॥ १६२ ॥

टबार्थ —असज्ञी तेपण ३९ गुण चालीस पुण्यप्रकृति बांधे छे। ज्ञान तिनने विषे अवधिदर्शनशुक्ललेश्याने विषे क्षायिक-समकित कहेता क्षायोपशम समकित ए तीनने विषे तिर्यंचनो आऊखो तथा उद्योत १ आतप १ ए तीन विना ३९ गुण-च्यालीसनो बंध छे ॥ १६२ ॥

जाइचउथावरतिगे, सुरतिगवेउविहारदुअजिणा । जिणजुअआयावविणा, निरएदेवेसआयावा ॥१६३॥

टीका—जाइचउथावरतिगे इत्यादि ॥ एकेंद्रियद्वींद्रियत्रींद्रिय-चतुरिंद्रियलक्षणेस्थावरत्रिकेपृथिव्यप्वनस्पतिलक्षणेमार्गणासप्तकेदेव-गतिदेवानुपूर्वीदेवायुरूपदेवत्रिक वेउविदुग वैक्रियशरीर वैक्रियोपाग-रूपआहारकद्विकआहारकशरीराऽऽहारकांगोपांगलक्षणजिननामवि-नाइत्यनेनप्रकृत्यष्टकविनाचतुस्त्रिंशत्पुण्यप्रकृतीनां बंधोभवति। नरके-नरकगतौ अपिदेवत्रिकवैक्रियद्विकाऽऽहारकद्विकविनाजिननामयुक्ता आतपचविनाचतुस्त्रिंशत्प्रकृतय बंधेभवति। देवगतौआतपनामस-योगात्पचत्रिंशत्पुन्यभेदा बंधेभवति। देवानापृथ्वीकायत्वेनभव-नात् ॥ १६३ ॥

टबार्थ —जाति ४ एकेंद्री १ बेंद्री २ तेंद्री ३ चौरेंद्री ४

तथा थावर तीन प्रथवी १ अप २ वनस्पति ३ एटली मार्गणाये देवत्रिक देवगति १ देवानुपूर्वी १ देवायु ३ वैक्रिय २ आहारक २ जिननाम विना ८ चोवीस पुण्यप्रकृतिनो बंध छे। तथा नरकगति मार्गणाने विषे जिननाम मेलीये अने आतप नाम काढीइ एटले ए पिण ३४ पुण्यप्रकृति बाधे, नारकी देवगते आतप मेळीये ३५ प्रकृति पुण्यनी बाधे छे, जे कारण देवता मरी प्रथविकायमध्ये जाय ते मारे आतपनो बंध छे ॥१६३॥

सुरनरतिगहारदुग, विउविदुगउच्चजिणविणातीस ।
गइतसेसुहुमेदेसे, मिच्छलिगेनीयगुणपयडी॰ ॥१६४॥

टीका—सुरनरतिगहारदुगइत्यादि ॥ गइतसे, गतिनसेतेजोवायुलक्षणेमार्गणाद्वयेदेवत्रिकनरत्रिकाऽहारकद्विकोच्चैर्गोत्र जिननामविनात्रिंशत्पुण्यप्रकृतीनाबंधोभवति । तथासूक्ष्मसपरायचारित्रेतथादेशविरतिमार्गणायासास्वादनेमिश्रमार्गणायानिजगुणा स्वस्वगुणस्थानेतत्रसूक्ष्मसपरायेतिस्र प्रकृतय देशविरतौएकत्रिंशतसास्वादनेअष्टत्रिंशतमिश्रेचतुस्त्रिंशत्इतिस्वस्वगुणस्थानप्रत्यया प्रकृतय बंधेभवन्ति ॥ १६४ ॥

बालार्थ —देवत्रिक, मनुष्यत्रिक, आहारक २ वैक्रिय २ उचगोत्र १ जिननाम ए १२ विना ३० प्रकृति पुण्यनी बाधे गतित्रस कहेता तेउकाय १ तथा वाउकाय मार्गणाये सूक्ष्मसपराय १ देशविरति १ मिथ्यात्व १ सास्वादन १ मिश्र १ एटली मार्गणामध्ये ते गुणठाणानी प्रकृति बाधे देशविरति ३१ बाधे मिथ्यात्वे ३९ सास्वादने ३८ मिश्रे ३४ पुण्यनी प्रकृति बाधे छे ॥ १६४ ॥

॰ सासणमीसेसुनियगुणाइतिपाठान्तरम्

आउतिगहारहीणा, अणहारगिजोयदुगतिआउविणा
सगतीसवधति, उवसमिमणनाणतिगचरणे ॥१६५॥

टीका—आउतिगहारहीणा इत्यादि॥ तत्रदेवायु मनुष्यायु तिर्यगायु आहारकद्विकहीना सप्तत्रिंशत् पुण्यप्रकृतय अनाहारकमार्गणायेबध्नंति, तथा उपसमिइतिउपशमेसम्यक्त्वे सगती सबधति । सप्तत्रिंशत्भेदा बध्नंति, द्विचत्वारिंशत्पुण्यप्रकृतीनामध्ये उद्योतातपदेवायु नरायु तिर्यगायुर्विनासप्तत्रिंशत्बध्नंति, ततोमन पर्यवज्ञानेचारित्रत्रिके सामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धौअग्रे तत्रगाथोक्ता प्रकृतय अपहीयतेतत्र्शेषाभवति इत्यनेनसप्तत्रिंशत्-पुण्यभेदा लभ्यते ॥ १६५ ॥

टबार्थ—आउखा ३ देवनानो १ मनुष्यायु २ तिर्यंचायु ३ ए ३ विना पुण्यमे तीनज छे तेमाटे आहारक २ ए पाच प्रकृति विना अनाहारक मार्गणाये शेष पुण्यप्रकृति ३७ बाधे तथा उद्योत १ आतप १ तीन शुभायु ३ ए पाच विना ३७ बाधे छे पुण्यनी उपशमसमकितीने तथा मन पर्यायज्ञानने विषे चारित्र तीनने विषे ॥ १६५ ॥

नरउरलयोयदुगवयर, आउदुगहीणसुद्धचरणमि ।
केवलदुगिसायेग, सेसावधोहपावस्स ॥ १६६ ॥

टीका—नरउरलसयोयदुगवयर इत्यादि ॥ तत्र पूर्वगाथोक्तासुमार्गणासुमन पर्यवज्ञानसामायिकादिचारित्रत्रिकलक्षणासुनरद्वुगति नरगतिनरानुपूर्वीलक्षणनरद्विक औदारिकशरीरौदारिकांगोपागलक्षण औदारिकद्विक तथा उद्योतातपलक्षण उद्योतद्विक वज्र-

ऋषभनाराचसंहननआयुर्द्विकमनुष्यायुः तिर्यगायुरूपप्रकृतिनिबंध-त्यज्यते तदात्रयस्त्रिंशत्शेषाभेदा बंधेभवंति। शुद्धचरणमिहनिगुह्य अकषायचरणचारित्र शुद्धचारित्र यथाख्यातलक्षण तथा केवलद्विक केवलज्ञानदर्शने पुण्यप्रकृतिसंबंधिनीएकासातावेदनीयबंधेभवति । इ-त्युक्तपुण्यप्रकृतिद्वारसेसाग्गोइतिशेषाचगोवेमार्गणासुबंधस्वामित्वे । पुण्यप्रकृतिनिः शेषाउद्धरितसरयासापापस्यसरयाज्ञेया, नरकगतौपुण्य-स्य चतुस्त्रिंशतपापस्यएकममनि उभयमीलनेजातपचोत्तरशत अ-थनरकस्यबंध एकोत्तरशत नतिकमित्याह अन्नणादिचतुष्क पुन्यपापयोर्मध्येउभयग्रहणात् जीवभेदेचनवप्रसस्वात्पचोत्तरशत-भवति । एवंसर्वत्रज्ञेय तिर्यग्गतौ मनुष्यगतौ पंचेन्द्रिये त्रसकाये योगत्रये वेदत्रये कषायचतुष्टये मत्यादज्ञानत्रये अविरतौचक्षुर-चक्षुर्दर्शनेकृष्णादिलेश्यात्रये भव्ये अभव्ये मिथ्यात्वेसज्ञि असज्ञि-आहारकलक्षणासु मार्गणासुद्व्यशीति पापस्य, देवगतौतेजोले-श्यायांत्रिसप्तति, जातिचतुष्टये स्थावरपंचकेएकोनाशीति, मत्या-दिज्ञानत्रये अवधिदर्शनेउपशमादिसम्यक्त्वत्रिके मिश्रेचतुश्चत्वारिं-शत्, मनःपर्यवज्ञाने सामायिकादिचारित्रत्रये षड्विंशत्, सूक्ष्म-संपरायेचतुर्दश, केवलज्ञान केवलदर्शनयथाख्यातेन, देशविरतौ-चत्वारिंशत, पद्मलेश्यायाएकोनसप्तति, शुक्ललेश्यायाएकोनसप्तति, सास्वादनेसप्तषष्टि, अनाहारकेएकोनाशीति, इतिवाच्यइत्युक्त-पापप्रकृतिद्वारम् ॥ १६६ ॥

टबार्थ —मनुष्य २ औदारिक २ उद्योत २ वज्रऋषभ-नाराचसंघयण १ मनुष्य तथा तिर्यंचनो आऊखो एटला विना ३३ नो बंध छे शुद्धचारित्रयथाख्यात तथा केवलद्विकने विषे एक सातानो बंध छे शेष पुण्यप्रकृति जे मार्गणा कही तेहथी

शेप रही जे मार्गणाना बधनी प्रकृति ते पापप्रकृति मार्गणाये जाणवी ते सर्वे यत्रकथी जोज्यो ॥ १६६ ॥

अपरियत्तापयडी, सुहमेचउदसतहाअहरकाए। केवलदुगेअभावो, सासणमीसेअजिणमिच्छा॥१६७॥

अपरियत्तापयडी इत्यादि ॥ ज्ञानावरणीयपचकातरायपच-कदर्शनावरणीयचतुष्टयरूपा सूक्ष्मसपरायेचतुर्दश, तथा यथाख्याते केवलद्विके अपगवर्त्तनबध्यते । तथा सास्वादनेमिश्रेअजिणमि-च्छाजिननाममिथ्यात्वविनासप्तविंशति अपरावर्त्ताबधेभवति॥१६७

टबार्थ --हवे परावर्त्तमानप्रकृति कहे छे परावर्त्तमानप्र-कृति १४ छे, सूक्ष्मसपराय गुणठाणे ज्ञानावरणी ५ दर्शनावरणी ५ अतराय ५ तथा यथाख्यातचारित्रे केवलज्ञाने केवलदर्शने परावर्त्तप्रकृतिनो बध नथी सास्वादन गुणठाणे मिश्र गुणठाणे जिननाम तथा मिथ्यात्व विना २७ परावर्त्तमाननो बध छे ॥ १६७ ॥

तिरिजाइचउसुयावरि अन्नाणअभवेअसन्निमिच्छेसु। जिणविणुनाणचउक्के, ओहिदसेतिसम्मम्मि ॥१६८॥

टीका—तिरिजाइचउसुयावरि इत्यादि ॥ तिर्यग्गतौजाति-चतुष्के स्थावरपचके अज्ञानत्रिके अभव्येअसज्ञिमार्गणाया मिथ्या-त्वेजीणविणु, जिननामविनाअष्टाविंशति बधेभवति । नाणचउक्के ज्ञानचतुष्के मत्यादिके अवधिदर्शनेउपशमादिसम्यक्त्वत्रिके॥१६८

टबार्थ —तिर्यचगति १ जाति ४ एकेंद्रिय १ बेंद्री २ तेंद्री

३ चौरिंद्री ४ थावर ते मार्गणाये अज्ञान ३ मार्गणाये अभव्य मार्गणाये असन्नीमार्गणाये मिथ्यात्वमार्गणाये जिननाम विना २८ अपरावर्त्तमाननो बंध छे, ज्ञान ४ मार्गणाये अवधिदर्शन मार्गणाये उपशम १ क्षयोपशम २ क्षायिक ३ ए तीन समकित मार्गणाये चारित्र ३ सामायिकादि ॥ १६८ ॥

चरणतिगदेसविरए, मिच्छविणासेसएसुगुणतीस ।
अपरियत्तसेसयाओ, परावत्ताओवधंति ॥ १६९ ॥

टीका—चरणतिग इत्यादि ॥ चारित्रत्रिके सामायिकादिलक्षणेदेशविरतौ मिथ्यात्वविनाऽष्टाविंशति अपरावर्त्तमाना बंधेभवंति । सेसयासुइतिशेषकासु अनुक्तमार्गणासु एकोनत्रिंशत्अपरावर्त्तमाना बंधेभवंति अपरिपतिसेसाओइतिअपरावर्त्तमानत शेषा परावर्त्तमाना बंधेभवंति इतिज्ञेयं ॥ अथविपाकचतुष्टयेज्ञानादिलक्षण पूर्वव्याख्यातस्वरूपंतदेवमार्गणासुविभजन्नाह ॥ तत्रप्रथमक्षेत्रविपाकिनीरानुपूर्वीबंधनस्थानंदर्शयति ॥ १६९ ॥

टबार्थ—देशविरति १ एटली मार्गणाये मिथ्यात्व विना २८ परावर्त्तमानप्रकृति बांधे छे शेषमार्गणाये २९ परावर्त्तमानप्रकृति बांधे ए परावर्त्तमान कही छे, तेहथी शेष रही जे बंधनी प्रकृति ते परावर्त्तमान जाणवी ते यंत्रकथी जोई लेज्यो ते यंत्रकमे सर्व लाभे छे ॥ १६९ ॥

मणवयणकेवलदुगे, मणनाणेचरणछक्किचरकुम्मि ।
मीसाहारिपुवि, उदओनोदुन्निअमणेसु ॥ १७० ॥

टीका—मणवयणकेवलदुगे इत्यादि ॥ मनोयोगमार्गणाया

वचनयोगमार्गणाया केवलज्ञाने केवलदर्शने तथा मन पर्यवज्ञाने सामायिकादिदेशविरतिपर्यतेचारित्रषट्के चक्षुर्दर्शनेमिश्रेआहारकमार्गणाया पूर्वीउदयोनोऽस्तिनास्तिएत मार्गणासु पर्याप्ताऽवस्थायाप्राप्यमाणत्वात्, अमणेसु असज्ञिमार्गणाया द्वन्द्वेतिर्यगमनुष्यरूपेआनुपूर्व्योउदयेप्राप्येते गतिद्वयेएवामनस्कत्वात् ॥ १७० ॥

भावार्थ —हवे कर्मना विपाक ४ क्षेत्रविपाक २ च्यार आनुपूर्वि तेहना उदय ६२ मार्गणाये कहे छे मनयोग १ तथा वचनयोग २ तथा केवलद्विक १ केवलदर्शन २ मन-पर्यवज्ञान १ चारित्रषट्क ६ सामायिक १ छेदोपस्थापनीय २ परिहार ३ सूक्ष्मसपराय ४ यथाख्यात ५ देशविरति ६ चक्षु-दर्शन १ मिश्रदृष्टि १ आहारक १ मार्गणाये एटली मार्गणाये आनुपूर्वीनो उदय नथी, जे कारणे आनपूर्वीनो उदय अन-रालगति वहता ते होवे, ते अन्तरालगतिमे ए मार्गणा न होवे, असज्ञीमार्गणाये बे आनुपूर्वीनो तिर्यचानुपूर्वी १ तथा मनु-ष्यानुपूर्वीनो उदय छे ॥ १७० ॥

वेएतेउतिगम्मि, सासणिपुविवितिगचचउजाई । गईथावरेसुएगा, सेसासुपुविचउउदओ ॥ १७१ ॥

टीका—वेएतेउ इत्यादि ॥ वेदत्रये आनुपूर्वीत्रिकउदयेभवति । तत्रपुरुषवेदे स्त्रीवेदे नरकानुपूर्व्या अनुदयेशेषास्तिस्र, नपुसकवेदेदेवानुपूर्व्यनुदयेशेषास्तिस्र आनुपूर्व्ये उदयेभवति तेउतिगइतितेज पद्मशुक्ललक्षणासुतिसृषुलेश्यासु तथा सास्वादनेचनरकानुपूर्व्या अभावे आनुपूर्वीत्रिकउदयेप्राप्यते चशब्द पूर्वपरामर्शार्थे एकेन्द्रियादिजातिचतुष्टये स्थावरपचकेएकाआनुपूर्वी-

उदयेभवति । तत्रजातिचतुष्के स्थावरपचके एकातिर्यगानुपूर्व्वी-प्राप्यते । गतिचतुष्टयेतुनरकेनरकानुपूर्व्वी देवेदेवानुपूर्व्वी मनुष्ये-मनुष्यानुपूर्व्वी तिरश्चितिर्यगानुपूर्व्वी उदयेभवति, शेषासु मार्गणासु पुनिचउउदओपूर्व्य श्चतस्त्र अपिउदयेप्राप्यते ।। इत्युक्तक्षेत्रवि-पाकिद्वार ।। १७१ ।। अथभवविपाकिआयुश्चतुष्टयमार्गणासुदर्श-यनाह ॥

टवार्थ —तीन वेदमध्ये तीन आनुपूर्व्विनो उदय छे, तिहा पुरुषवेदे स्त्रीवेदे नरकानुपूर्व्विनो उदय नथी, नपुसकवेदे देवानु-पूर्व्विनो उदय नथी तेजोलेश्या १ पद्मलेश्याने विषे शुक्लले-श्याने विषे नरकानुपूर्व्वि विना तीन आनुपूर्व्विनो उदय छे सास्वादनमध्ये पण नरकानुपूर्व्वि विना तीन आनुपूर्व्विनो उदय छे जाति ४ एकेन्द्रियादी ४ तथा गति ४ मध्ये थावर पाच मध्ये एक आनुपूर्व्विनो उदय छे च्यार गतिमध्ये पोतानी गति नेटामनो आनुपूर्व्विनो उदय जाणवो बीजा सर्वने तिर्यचानु-पूर्व्विनो उदय छे शेष मार्गणाने विषे आनुपूर्व्वि ४ नो उदय छे ॥ १७१ ॥

मणवयणेचउआउ, मणपज्जवकेवलेयपुणचरणे ।
मणुआउदेसिससतिरि, सेसापुव्विवआउआ ॥१७२॥

टीका—मणवयणे इत्यादि ॥ मनोयोगे वचनयोगे आयु-श्चतुष्टयउदयेभवति, चतुर्गतिषुमनोवाग्योगस्यसद्भावात् । तथामन पर्ययज्ञाने केवलद्विके चारित्रपचके मणुआउइति एकमनुष्यायु उदयेभवति । देसीनामदेशविरतौसतिरित्तिदेवमनुजायु तिर्यगायु-र्युक्त आयुर्द्वयउदयेप्राप्यते, शेषासुमार्गणासुएकपचाशत्लक्षणासु-

पुर्विन, आनुपूर्वीवन्आयुर्वन्उदयेवक्त य इत्युक्तभवविपाकिद्वार ॥ ॥ १८२ ॥

टबार्थ —मनोयोग तथा वचनयोगमध्ये च्यार आऊखानो उदय छे मन पर्यवज्ञानमध्ये केवलज्ञान १ केवलदर्शन २ चारित्र पाचने विषे एक मनुष्यायुनो उदय छे देशविरतिमध्ये मनुष्यायु १ तथा तिर्यचायुनो उदय छे शेष मार्गणाये जिम आनुपूर्विनो उदय छे, तिमहीज आऊखानो उदय जाणवो॥१७१

जिअपुग्गलाविवागा, पयडीओउदयसभवानेया । भगाणचपमाण, नेयवसभवपप्प ॥ १७३ ॥

टीका—जिअपुग्गलाविवागा इत्यादि ॥ जीवविपाका अष्टसप्ततिपुद्गलविपाका पर्विशत्प्रकृतय उदयसभवाउदयस्वामित्वसभवाज्ञेया साचसुखावबोधार्थलिरयते तत्रजीवविपाकेनारकेएकोनपष्टिस्तिरश्चित्रिसप्तति इत्यादि पुद्गलविपाके अष्टादश तिरश्चिनिसप्तति, देवगताअष्टादश मनुष्येएकत्रिंशत् इत्यादि योज्य, उदयस्वामित्वमोघत ज्ञेयअथमार्गणासुकर्माष्टकभगान्दर्शयन्नाह॥ भगाणचभगकानाप्रमाणज्ञान यसभवप्राप्ययत्रमार्गणायायेभगका सभवति तेयथायोगवाच्या ॥ १७३ ॥

टबार्थ —जीवविपाकि तथा पुद्गलविपाकी प्रकृति सर्वे उदयीथी सभव घटे तिम जाणवो जीवविपाकी ७८ छे, नारकीने ५२ तिर्यचमध्ये ७३ मनुष्यमध्ये ६९ देवतामध्ये इम सर्वत्र जोडी लेज्यो, १ पुद्गलविपाकी नारकीने १८ तिर्यचने ३० मनुष्यने ३१ देवताने १८ इत्यादि यथासभव जोई लेवो हवे

बासठीमार्गणाये भगानो प्रमाण जिहा जिम संभवे तिहा ते कहेवा सवेधादिक ग्रथथी विस्तारे जोई कहेवा ॥ १७३ ॥

नाणतरायदोदोभगा, इकारदसणावरणे । गोएसगवेयणीए, अडआउम्मिअअडवीसा ॥१७४॥

टीका—नाणतरायदोदोभगा इत्यादि ॥ ज्ञानावरणीयेद्वौभगौपचानाबन्ध पचानाउदय पचानामेवसत्ताइतिप्रथम, सूक्ष्मसपराययावत् पचानाउदय पचानासत्ताइतिद्वितीय उपशातमोहक्षीणमोहयावत्प्राप्यतेएवमतरायस्यापिद्वौभगौ प्रथमभगोअभव्यानाअनाद्यनन्त भव्याना अनादिसातउपशातमोहात् पतिनानासादिसान जघन्यन अतमुहूर्तउत्कर्षत देशोनपुद्गलपरावर्तं-द्वितीयभग सादिसान्तोजघन्यतएकसमये उपशातवेगतस्य समयातरे आयु क्षयात् पचविधबधकत्वेनभवनात्उत्कर्षत अतर्मुहूर्तइतिदर्शनावरणीयस्यनवभगा तदर्गयन्नाहसप्ततिभाष्यकार नवसयसतसयपनइठाणाणितिन्नितुल्लाणि उदयठाणाणिदुवेचउपणगदसनावरणे ॥ १ ॥ व्याख्यापिश्रीमलयगिरिवाक्यात् दर्शनावरणीयाख्ये द्वितीयकर्मणिबन्धसत्ताया परस्परतुल्यानित्रीणिप्रकृतिस्थानानि तद्यथानवषट्चतस्र तत्रसर्वप्रकृतिसमुदायोनवस्त्यानर्द्धित्रिकहीना षट्एताश्चपनिद्राप्रचलाहीनाश्चतस्र तत्रनवप्रकृत्यात्मकबन्धस्थानमिथ्यात्वेसास्वादनेतत्रमिथ्यात्वेअभव्यानाअनाद्यपर्यवसान कदाचिदपि यवच्छेदाभावात्, भव्यानधिकृत्यानादिसपर्यवसान कालान्तरे व्यवछेदसभवात् सम्यक्त्वात् प्रतिपत्यमिथ्यात्वगतानासादिसपर्यवसानतच्चजघन्यतोअतर्मुहूर्तकालयावत्उत्कर्षत अपार्द्धपुद्गलपरावर्त्तषट्प्रकृत्यात्मक बधस्थानसम्यग्मिथ्यादृग्गुणस्थानकादार-

म्यापूर्वकरणसप्रथमभागयावत् तद्यजघ यतोअंतर्मुहूर्तंकालउत्कर्षतो-
द्वेषट्षष्टिसागराणासम्यक्त्वस्यापातरालेसम्यगमिथ्यात्वातरितस्यैना-
वन्तकालतथास्थानसभवात्ततत ऊर्ध्वंतुकश्चित्क्षपकश्रेणिंप्रतिपद्यते-
कश्चित्पुनर्मिथ्यात्वमिथ्यात्वेचप्रतिपन्नेसतिअवश्यनवविधोबंध यत्तु
प्रकृत्यात्मकतुबंधस्थानमपूर्वकरणाद्वितीयभागादारभ्यसूक्ष्मसंपरायया-
वत्जघन्येनैकसमयउत्कर्षत अंतर्मुहूर्तंएकसमययावत्कथप्राप्यते-
इतिचेत्उच्यते । उपशमश्रेण्यामपूर्वकरणस्याद्वितीयभाग प्रथम-
समयेचतुर्विधबंधमारभतेअनतरसमयेकश्चित्कालकरोतिकालचकृत्वा-
दिवगत सन्अविरतोभवति, अविरतत्वेचषड्विधोबंधइत्येकसाम-
यिकीचतुर्विधस्याऽवस्थिति अंतर्मुहूर्ततुगुणस्थानक्रमेणज्ञेय ।
तथानवप्रकृत्यात्मक सत्तास्थानदर्शनावरणस्यकालमधिकृत्यद्विधा-
अनाद्यपर्यवसित अभव्याना । अनादिसपर्यवसित भव्याना,
सादिपर्यवसानतुनभवति, नवप्रकृत्यात्मकसत्तास्थानव्यवच्छेदोहि-
क्षपकश्रेण्याभवति, नचक्षपकश्रेणित प्रतिपातोभवति, एतद्यस-
त्तास्थानमुपशमश्रेणिमधिकृत्योपशातमोहगुणस्थानकयावद्वाप्यते,
क्षपकश्रेणिमधिकृत्यपुनरनिवृत्तिबादरसंपरायगुणस्थानकस्य प्रथम-
भागतयाषट्प्रकृत्यात्मकसत्तास्थान जघन्येनोत्कर्षेणचातर्मुहूर्तप्रमा-
णतथानिवृत्तिबादरसंपरायगुणस्थानकस्यद्वितीयभागादारभ्यक्षीणमो-
हगुणस्थानकस्याद्विचरमसमययावत् अवसेय, चतु प्रकृत्यात्मकत्वे-
कसामायिकक्षीणकषायचरमसमयभावित्वादितिउदयस्थानेपुनर्द्वेभव-
त । तद्यथाचतस्र पचचनचतस्रश्चक्षुर्दर्शनावरणाचक्षुर्दर्शनाव-
रणावधिदर्शनावरणकेवलदर्शनावरणरूपा एतासाचउदयोध्रुवोदय
इतिएकप्रकृतिस्थानएतासुचपचनसुप्तमध्येनिद्रादीना पचानाप्रकृती-
नामन्यतद यनमस्याप्रकृतौप्रक्षिप्तायापचविध उदय नहिनिद्राद्वि-
निरूपसमकालउदयेभवति एकसमयएकजीवस्यएकाएवनिद्राउदये-

भवति ॥ तदेनमुक्तानिदर्शनावरणीयस्यबन्धोदयसत्तास्थानानि । भगाइक्कारदसणावरणे, दर्शनावरणीयेकर्मणिएकादशभगाभवतितत्प्रतिपादिकागाथामाह ॥ बीयावरणेनवबन्धएसुचउपचउदयनवसता, चउबन्धे चैवचउबन्धुदयेचलसाय ॥ १ ॥ उवरयबन्धचउपणनवसचउरुदयछच्चउसता ॥ द्वितीयावरणेदर्शनावरणेनवबन्धकेषुमिथ्यादृष्टिसास्वादनेषुचउपचउदयत्तिउदयश्चतुर्विध पचविधोवातनचतुर्विधश्चक्षुर्दर्शनावरणावधिदर्शनावरणकेवलदर्शनावरणरूप सएवनिद्रापचसत्कान्यतमप्रकृतिप्रक्षेपात्पचविध सत्तामधिकृत्यपुन प्रकृतिस्थाननवनवप्रकृत्यात्मकनदेवनवविधबन्धकेषुद्वौविकल्पौदर्शितौतद्यथानवविधोबन्ध चतुर्विध उदय नवविधसत्ताएवविकल्पोनिद्रोदयाभावेनिद्रोदयेतुनवविधोबन्ध पचविध उदय नवविधासत्ताछचउबन्धेचेवति, षड्विधबन्धेचचतुर्विधबन्धेचएवपूर्वोक्तप्रकारेणउदयसत्तास्थानानिवेदित यानिइदमुक्तभवतियेषड्विधबन्धका सम्यग्मिथ्यादृष्ट्यविरतिसम्यग्दृष्टिदेशविरतिप्रमत्ताप्रमत्ता कियत्कालमपूर्वकरणाश्चतेषाचतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताएतेनद्वौविकल्पौदर्शितौतद्यथाषड्विध बन्धश्चतुर्विध उदयोनवविधासत्ताअथवाषड्विधोबन्ध पचविधोदय नवविधासत्ता एतौचद्वौविकल्पौक्षपकमुक्त्वा ऽन्यत्रसर्वत्रापिप्राप्यतेक्षपकेत्वेकएवविकल्पस्तद्यथाषड्विधोबन्ध चतुर्विध उदय नवविधासत्ताक्षपकस्यहिअत्यतविशुद्धत्वेननिद्राप्रचलयोर्नोदय सभवति तदुक्तजिनवल्लभसूरिसत्ककर्मग्रथे, निद्दादुगस्सउदउखीणमखवगेपरिवज्ज तयाचतुर्विधबन्धकेतुकियत्कालमपूर्वकरणमनिवृत्तिबादरसूक्ष्मसपरायेषुचोपशमश्रेणिमतीत्यचतुर्विधबन्ध चतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताक्षपकश्रेणिमधिकृत्यपुनरुदयश्चतुर्विध एवकारणमत्रप्रागेवोक्तकेचित्पुन क्षपकक्षीणमोहेष्वपिनिद्राप्रचलयोरुदयमिच्छन्तितत्कर्म-

प्रकृत्यादिग्रंथे सह निरुद्धयतेइत्युपेक्षते, यावच्चक्षपकश्रेण्यामपिस्त्या-
नर्द्धित्रिकनक्षीयते तावत्सत्तानवविधा स्त्यानर्द्धित्रिकेतुक्षीणेषड्विधा-
तथाचाहचउत्तुदयेछस्सायत्ति, चतुर्विधेबंधेचतुर्विध उदय अनिवृ-
त्तिबादरसंख्येयैर्भागैर्गतैःपरत स्त्यानर्द्धित्रिकेक्षीणेषड्विधासत्ताएपच-
विकल्पस्तावत्प्राप्यतेयावत्सूक्ष्मसंपरायाद्धायाश्चरमसमयपरतस्तुनप्रा-
प्यतेबंधाऽभावात्तदेवचतुर्विधबंधकस्यत्रयोविकल्पास्तद्यथाचतुर्विधो-
बंध चतुर्विध उदय नवविधासत्ताएषउपशमश्रेण्या क्षपकश्रेण्या
वायावत्स्त्यानर्द्धित्रिकनक्षीयतेचतुर्विधोबंध पचविध उदय नव-
विधासत्ताएषउपशमश्रेण्या क्षपकश्रेण्यातुपचविधोदयस्यासभवात्
तथाचतुर्विध बंध चतुर्विध उदय षड्विधासत्ताएषविकल्प
क्षपकश्रेण्यास्त्यानर्द्धित्रिकक्षयानन्तरमवसेय उपरतबंधेइत्यादिउपरते-
व्यवच्छिन्नेबंधेचतुर्विध पचविधोवाउदय नवविधासत्ताएतौद्वौ-
विकल्पौउपशांतमोहगुणस्थानकेप्राप्यते उपशमश्रेण्याहिनिद्राप्रच-
लयोरुदय संभवतिस्त्यानर्द्धित्रिकचनक्षयमुपगच्छति, ततश्चतुर्विध
पचविधउदयोनवविधासत्ताप्राप्यतेतथाचतुर्विध उदय षड्विधा-
सत्ताएषविकल्प क्षीणकषायद्विचरमसमयादर्वागेवप्राप्यते। तथा-
चतुर्विध उदय चतुर्विधासत्ताएष विकल्प क्षीणकषायस्यचरम-
समयेभवतिनिद्राद्विकस्यसत्तायाक्षपकत्वात् तदेवदर्शनावरणेसर्वस-
ख्ययाएकादशविकल्पा, यदिपुन क्षपकक्षीणकषायेष्वपिनिद्राप्र-
चलयोरुदयइष्यते तर्हिचतुर्विधोबंध पचविध उदय षड्विधा-
सत्ताबंधाभावेपचविध उदय षड्विधासत्ताइत्येतौद्वाविकल्पौअधि-
कौप्राप्येते इतित्रयोदशज्ञातव्या सांप्रतवेदनायुर्गोत्रेषु सवेधविक-
ल्पोपदर्शनार्थमाहगोएसगवेयणीये । तथागोत्रेसामान्येनएकंबंध-
स्थानतथाउच्चैर्गोत्रनीचैर्गोत्रवापरस्परविरुद्धत्वेनयुगपद्बंधाऽभावात् उ-
दयस्थानमप्येकतदपिद्वयोरप्यनयोरपरस्परविरुद्धत्वेनयुगपद्द्वयोरुदयाऽ-

ﺮ

भावात्द्वेसत्तास्थाने, द्वेएकचउच्चैर्नीचैर्गोत्रेसमुदितेद्वेतेजस्कायिकवायुकायिकयधायाउच्चैर्गोनसत्तायाउद्वलितेएकअथवाअयोगिद्विचरमसमयेनीचैर्गोत्रसत्तायाक्षीणायाएकउच्चैर्गोन, सम्रतिसवेधउच्यतेनीचैर्गोत्रस्यबध नीचैर्गोत्रस्योदय नीचर्गोनेसत्ताएषविकल्प तेजस्कायिकवायुकायिकेषुलभ्यते, तद्भवाद्दृवृतेषुवाशेषजीवेष्वेकद्वित्रिचतुरिन्द्रियतिर्यक्पचेंद्रियेषुकियत्कालनीचैर्गोत्रस्यबध नीचैर्गोत्रस्योदय उच्चैर्नीचगोत्रेसत्ताअथवानीचैर्गोत्रस्यबध उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचैर्गोनेसत्ताएतौद्वौविकल्पौ मिथ्यादृष्टिषुसास्वादनेषुवानसम्यग्मिथ्यादृष्ट्यादिषुतेषानीचैर्गोत्रबधाभावात् ऽनयाउच्चैर्गोत्रस्यबध नीचैर्गोत्रस्योदय उभयस्मिन्सत्ताएषविकल्प मिथ्यादृष्टिगुणस्थानकादारभ्यदेशविरतिगुणस्थानकयावत्प्राप्यतेनपरत । परतोनीचैर्गोत्रस्योदयाऽभावात् तथा उच्चैर्गोत्रस्यबध उच्चनीचगोत्रेसत्ताएष विकल्पोमिथ्यात्वादारभ्यसूक्ष्मसपरायगुणस्थानयावत् नपरत परतोबधाऽभावात्बधाभावेतुउच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चनीचगोत्रेसत्ताएषविकल्प उपशातमोहगुणस्थानकादारभ्यायोगिकेवलिद्विचरमसमययावद्वसेय उच्चैर्गोत्रस्योदय उच्चैर्गोत्रेसत्ताएषविकल्प अयोगिकेवलिचरमसमयेभवतितदेवमेवगोत्रस्यसर्वसख्ययासप्तभगा ॥ अथवेदनीयस्याष्टौभगा तत्रवेदनीयस्यसामान्येनैकबधस्थानतद्यथासातमसातवाद्वयो परस्परविरुद्धत्वेनयुगपत्बधाऽभावात् उदयस्थानमप्येकतद्यथासातमसातवाद्वयोर्युगपदुदयाऽभावात् । सत्तास्थानेद्वेतद्यथाद्वेएकचयावत् अयोगिद्विचरमसमयादर्वाक् द्वेएवसत्तेतत चरमसमयेएकस्या अन्यतरस्याक्षीणायाएकइति सम्प्रतिसवेध उच्यतेअसातस्यबध असातस्यउदय सातेऽसातेसत्ताअथवाअसातस्यबध सातस्योदय सातासातेसतीएतौद्वौविकल्पौमिथ्यादृष्टिगुणस्थानकाप्रमत्तिमप्रमत्तगुणस्थानकयावत्प्राप्यतेनपरत परत असातस्यब-

घाऽभावात् तथा सातस्यनव असातस्योदय सातासातेसती अथवा सातस्यनव सातस्योदय सातासातेसतीएतौद्वौविकल्पौमिथ्यात्वादारभ्यसयोगिकेवलिचरमसमययावत्प्राप्येतेनपग्त एवैतप्रभगा, अबधभगा, असातस्योदय सातासातेसतीसातस्योदय साताऽसातेसतीएतौद्वौविकल्पौअयोगिद्विचरमसमययावत् । तथाअसातस्यउदय असातस्यसत्तागनसुकुमालादीनामिनअयोगिचरमसमयेभवति । अथवा सातस्योदय सातस्यसत्ताण्यविकल्प तीर्थंकरादीनाअयोगिचरमसमये एतौद्वौविकल्पौअयोगिचरमसमये एकमेवसमयभवति, सर्वेसरयावेदनीयस्याष्टौभगास्तथाआयुषिसामान्येनएकत्रप्रस्थानउदयस्थानमप्येक सत्तास्थानेद्वेतद्यथाद्वे एकचनरकत्रतुर्णाम यनमन्यावदन्यनरपरभवायुर्नबध्यते परभवाशुपिचनद्वेयावदन्यत्र परभवेनोपद्यतेतावद्द्वेसतीसप्रतिसयेन उच्यते तत्रायुषस्तित्र अवस्थास्तद्यथापरभवायुर्बंधकालात् पूर्वावस्थापरभवायुर्बंधकालावस्थापरभवायुर्बंधोत्तरकालावस्थाघनरनेरयिकस्यपरभवायुर्बंधकालात् पूर्वनरकायुष उदयोनरकायुष सत्ताएषविकल्पआद्येषुचतुर्षुगुणस्थानकेषुशेषगुणस्थानकस्य नरकेष्वसभवात् परभवायुर्बंधकालेतिर्यगायुषोबधोनरकायुषउदयोनारकतिर्यगायुष सत्ताण्यविकल्पोमिथ्यादृष्टिसास्वादनयोर्द्वयोरेवाद्ययोर्गुणस्थानकयोर्भवति । अन्येत्रतिर्यगायुषोबधसभवात् । अथवा मनुष्यायुषोबंधोनारकायुष उदय नारकमनुष्यायुष सत्ताएषविकल्प मिथ्यात्वसास्वादनाऽविरतिसम्यग्दृष्टिषुबधोत्तरकालेनरकायुष उदय नारकतिर्यगायुष सत्ताण्यविकल्प आद्येषुचतुर्ष्वपिगुणस्थानकेषुतिर्यगायुर्बधानतरकस्यापिसम्यक्त्वे सम्यगमिथ्यात्वेगागमनात् । अथवा नारकायुष उदय मनुष्यनारकायुष सत्ताइहदेवानारकायुर्भवप्रत्ययादेवनबध्नंति तत्रोत्पत्त्यभवात् ॥ यदुक्त ॥ देवानेरईयादेनेसुनारकेसुविभउववज्जति । अनस्तत्प्रत्ययविकल्पाभा-

वात् सर्वसरयथापचैत्रविकल्पाभवति । एवदेवानामपिपचविकल्पा तद्यथादेवायुपउदय देवायुप सत्ता इत्यादि ॥ तिर्यगायुप उदय तिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प आद्येषुपचसुगुणस्थानकेषुशेषगुणस्थानकरय निर्यक्षुअसभवात्एपविकल्प परभवायुर्वधकालेतुनारकायुप बध तिर्यगायुप उदय नारकतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टेरेवतिर्यगायुप बध तिर्यगायुप उदय तिर्यग्तिर्यग्आयुप सत्ता ॥ एप विकल्प मिथ्यात्वसास्वादनस्य अथवा मनुष्यायुप बध तिर्यगायुपउदय मनुष्यतिर्यगायुप सत्ताएषविकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यवासम्यग्दृष्टेर्देशविरतस्यातिरश्च देवायुपएवबधात्, अथवा देवायुप बधस्तिर्यगायुप उदय देवतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्पोमिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यअविरतसम्यग्दृष्टे देशविरतस्यवानसम्यग्मिथ्यादृष्टे तस्यायुर्वधाभावात् ॥ वधानतरतिर्यगायुप उदय नारकतिर्यग्सत्ता इति प्रथम । तिर्यगायुप उदयस्तिर्यग्तिर्यग्सत्ता इतिद्वितीय । तिर्यगायुप उदय मनुष्यतिर्यगायुप सत्ता अथवा तिर्यगायुप उदय देवतिर्यगायुप सत्ताएपविकल्प प्रथममिथ्यात्वादिषु आयुर्वधकत्वानत परगुणस्थानकारोहवना पचमगुणस्थानकयावत्भवति, सर्वसरयथातिरश्चानवविकल्पाश्चनसूपुगतिपु तिरश्चामुत्पादसभवात । तथा मनुष्यायुपउदय मनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प अयोगिकेवलिनयावत् तथा नरकायुपोवध मनुष्यायुप उदय नारकमनुष्यायु सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टेर्भवति । तथा तिर्यगायुपोवध मनुष्यायुप उदय स्तिर्यग्मनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्य वा तथा मनुष्यायुप वधोमनुष्यायुप उदय मनुष्यमनुष्यायुप सत्ताएप विकल्प मिथ्यादृष्टे सास्वादनस्यवादेवायुप वध मनुष्यायुप उदय देवमनुष्यायुप सत्ताएपविकल्प अप्रमत्तगुणस्थानकयावत् एतेचत्वारोविकल्पा

परभवायुर्बंधकाळे नवेतु पर्वच्छिन्नमनुष्यायुषउदयोनारकमनुष्यसत्ता-मनुष्यायुष उदय निर्यग्मनुष्यसत्तामनुष्यायुष उदय मनुष्य-मनुष्यायुष सत्ताएतेत्रयोविकल्पा अप्रमत्तगुणस्थानयावत् । आ-युर्बंधानन्तरगुणस्थानारोहात मनुष्यायुष उदय देवमनुष्यायुष सत्ताएषविकल्प उपशातमोहयावत्प्राप्यते, देवायुषिबद्धेप्युपशम-श्रेण्यारोहसभवात सर्वसरव्ययामनुष्याणा नवभगास्तदेवआयुष सर्वसरव्ययाअष्टाविंशतिभगा ॥ इत्येवगाथायासुभगका सप्तनिकातो-ऽवसेया ॥ १७४ ॥

टबार्थ —ज्ञानावरणीना बे भागा छे अतरायना बे भागा छे दर्शनावरणीना ११ भागा छे गोत्रना ७ भागा छे वे दनीकर्मना ८ भागा छे आऊखा कर्मना २८ भागा छे हवे सर्व कर्मना भागा मार्गणाये कहे छे ॥ १७४ ॥

नाणतरायतिगयोग, भगोसवासुमग्गणासुव (सेढि-यासुदुग) ।
केवलदुगेअभावो, वेयणसताअहरकाए ॥१७५॥

टीका—अथज्ञानावरणीयातरायभगान्मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥ नाणतरायतिगयोगइत्यादि । ज्ञानावरणीयस्यतयाअतरायस्यत्रिक-त्रयोगज भग पचविधबन्ध पचविधउदय पचसत्तालक्षण सर्वा-सुमार्गणासुप्राप्यते, तथासेढिया श्रेणि उपशमक्षपकलक्षणानत्पर्यन्त उपशांतमोहक्षीणमोहगुणस्थानकपर्यन्तयामार्गणामनुष्यगति १ प-चेंद्रियजाति १ त्रसकाय १ योगात्रिक ३ भयादि ज्ञानचतुष्टय-चक्षुरादिदर्शनत्रिकशुक्लच्छेदपाभव्यउपशमसम्यक्त्वक्षायिकसम्यक्त्व-सज्ञिआहारकलक्षणाएकोनविंशतिमार्गणासु द्विगतिज्ञानावरणातराय-

स्यद्वौभगौप्राप्येते । तथाकेवलद्विके केवलज्ञान केवलदर्शने ज्ञानावरणातरायस्यभगानभवति, यथारव्यातेवेदनउदय सतासत्ता इत्यनेनपचविधउदय पचविधसत्तालक्षण एकएवभग प्राप्यते, भगभावनागुणस्थानक्रमतोज्ञेया ॥ १७५ ॥ अथदर्शनावरणीयकर्मण भगानूमार्गणासुदर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —ज्ञानावरणीय तथा अतरायकर्मनो पाचनो बध, पाचनो उदयनी सत्ता एत्रिकसयोगी एकभगो सर्वमार्गणाने विपे, केवलज्ञान १ केवलदर्शनने विपे ज्ञानावरणीय अतरायनो भग नथी, यथारव्यातचारित्रमध्ये ज्ञानावरणीय तथा अतराय ए बे कर्मनो पाचनो उदय पाचनी सत्तानो एक भागो छे ॥१७५॥

नाणचउओहिदसे, खायगसम्मेयदसणावरणा ।
नवभगपढमदुविणा, वेयकसाएसुसगभगा ॥१७६॥

टीका—नाणचउइत्यादि ॥ ज्ञानचतुष्येमत्यादिलक्षणेअवधिदर्शनेक्षायिकेसम्यक्त्वेदर्शनावरणीयस्यनवभगा प्राप्यते, प्रथमेद्वेनवविधबधप्रत्ययेतेमिथ्यात्वसास्वादनगुणस्थानकेसभवात् । एतासुमार्गणासुतदसभवात्नभवति । षड्विधबधत उपरिसर्वेभवति । तथावेदत्रिकेकषायचतुष्येसप्तवभगा बन्धोपरताभगा चत्वारोनभवतितेचउपशातमोहेक्षीणमोहेभवतितयोश्चतत्राभावात्॥१७६॥

टबार्थ —ज्ञान च्यार मति, श्रुत, अवधि, मन पर्याय, अवधिदर्शने क्षायिकसमकिते ए मार्गणाये दर्शनावरणियकर्मना नव भगा पामीये । पहेला नव बध पाच उदय नव सत्ता १ तथा नव बध च्यार उदय नव सत्ता ए बे भागा विना नव भगा पामीये, वेद ३ कषाय ४ ए सात मार्गणाये सात भागा छे, अबधना च्यार भगा नथी ॥ १७६ ॥

सामाइयछेएपण, परिहारेदुन्निकेवलेनत्थि ।
उवसमिछगहरूखाए, चउसुहमेतिन्निदुगदेसे॥१७७॥

टीका—सामाइयछेएपण इत्यादि । सामायिकचारित्रेच्छेदोपस्थापनीयचारित्रेपञ्चविधोबन्ध प्रत्ययोद्वौचतुर्विंशतिव प्रत्ययात्त्रय एवपचभगा प्राप्यते । तथापरिहारविशुद्धौपञ्चविधवन्धसभवोद्वौकेवलद्विकेनस्त दर्शनावरणीयभगा उवसमिछग इतिउपशमसम्यग्दर्शनेपद्भगास्तनद्वौपञ्चविधबन्धसभवौद्वौचतुर्विंशतिबन्धसभवोद्वौअन्धमत्ययौउपशातमोहगुणस्थानसभवौएवषट्भगा यथाख्यातेचत्वारोभगा अबन्धसभवा , सूक्ष्मसपरायेचतुर्विधबन्धप्रत्ययान्त्रय दुगदेसे देशविरतौपद्विधबन्धसभवौद्वौ ॥ १७७ ॥

टबार्थ —सामायिक १ छेदोपस्थापनीयने विषे पाच भागा छे । छविधबधना २ च्यारविधबधना २ च्यारविधबध च्यारनो उदय छनी सत्ताए एक एव पाच भगा छे, परिहारविशुद्धि ने दर्शनावरणीयना २ भगा छे, छनो बध पाचनो उदय नवनी सत्ता तथा छनो बध च्यारनो उदय छनी सत्ता ए २ भगा छे, केवल २ ने विषे दर्शनावरणीयनो भागो नथी, उपशमसमकितमध्ये ६ भगा छे, छबधना च्यारबधना २ इग्यारमा अबधना २ एव यथाख्यातचारित्रे अबधना च्यार भग छे। सूक्ष्मसपरायना तीन भगा छे २ उपशमना १ क्षायिकनो देशविरतिमध्ये छविध बधना २ भागा छे ॥ १७७ ॥

वेयगेमीसेएव, कायपणजाइचउअसन्निसु ।
मिच्छेसासाणेपुण, अभविनवधगादुन्नि ॥१७८॥

टीका—वेयगेमीसेएवइत्यादि ॥ अनडमरुकमणिन्यायेनद्वि-कपदअनुवर्त्तनीयवेदकसम्यक्त्वेमिश्रेदर्शएवदेशविरतिनिवपदविग्रचच-सभवौद्वौभगो कायपणत्ति पृथि यादिकायपचके एकेंद्रियादिजाति-चतुष्ये असज्ञिमार्गणायामिथ्यात्वेसास्वादनेअभव्येनवविनवसभ-वौद्वौभगौशेषगुणस्थानकानातनाऽसभवात् ॥ १७८ ॥

टवार्थ —वेदकसमकितमिश्रने एव छ वगना २ भागा छे। अज्ञान ३ लेश्या ५ ने विषे अनाहारकमार्गणाये देवनीगति १ नरकगति, तिर्यचगति, अविरतिमार्गणाये च्यार भगा छे, नव वगना २ छे, शेषमार्गणाये सर्व कहेना अगीयार भागा छे, दर्शनावरणीयना ॥ १७८ ॥

नवछवधाभगा, तिन्निअन्नाणपचलेसासु ।
अणहारतिगइअजये, चउरोसेसासुसव्वेवि ॥ १७९ ॥

टीका—नवछनवाभगाइत्यादि ॥ तिन्निअन्नाणत्तिअज्ञानत्रये-लेश्यापचकेकृष्णादिकेअनाहारकेनरकतिर्यगूदेवगतौ अविरतिमार्गे-णाया नवविधबधसभवौद्वौ षड्विधबधसभवौद्वौ एवचत्वारोभगा. शेषानतत्प्रत्ययगुणस्थानाऽभावात् । सेसासुइतिशेषासुमनुष्यगति पचेंद्रियसकायपयोगनिकचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाभ ये सज्ञिमार्ग-णायाआहारकेदर्शनावरणीयस्यसर्वेऽपिभगाएकादशअपिभगा प्राप्यते ॥ इत्युक्तादर्शनावरणीयभगा ॥ १७८ ॥ अथवेदनीयभगान् मार्गणासुदर्शयन्नाह ॥

वेयणीएनरपणतस, खायगअणहारगेसुअडभंगा ।
केवलदुगिहरकाए, छसुहसेदुसेसिचउभगा ॥१७९॥

टीका—वेयणीएनरपणनस इत्यादि ॥ वेदनीयस्यभगा मनुष्यगतौपचेन्द्रिये त्रसकाये क्षायिकसम्यग्दर्शनेअनाहारकेअष्टौ-भगा प्राप्यते। केवलद्विकेयथाख्यानचारित्रेपट भगास्तनद्वौभगौ-सातात्रसभवौचत्वारोभगा अवधप्रत्यया एवयम्सूक्ष्मेसूक्ष्मसप-रायेसातात्रसभवौद्वाभगौ सेसित्तिशेपासुगतिनिक्इद्रियचतुष्टयकाय-पचकयोगत्रिकवेदत्रिकमत्यादिज्ञानचतुष्टय अज्ञानत्रिकसयमपच-कदर्शनत्रिकलेश्यापट्कभव्यअभव्यक्षायिकवर्जसम्यक्त्वपचकसज्ञ्यस-ज्ञिद्विकाहारकलक्षणासुत्रिपचाशत्मार्गणासुचत्वारोभगा, तनद्वौ-असातात्रसभवौद्वौसातात्रसभवौएवचत्वारोभगाभवति, सर्वत्रद्विव-चनेबहुवचनप्राकृतत्वात, शेपमार्गणासुभगसभवाभावनागुणस्थान-शन्क्नोनेया ॥ १७९ ॥ उक्तावेदनीयभगा साम्प्रतमायुर्भगान्-दर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —वेदनीकर्मना ८ भागा छे, तेमध्ये मनुष्यगति १ पचेन्द्रियजाति १ त्रसकाय १ क्षायिकसम्यक्त्व १ अनाहारक मार्गणाये बदन [illegible] गा छे केवलज्ञान १ केवलदर्शन १ यथाख्यातचारित्रने विषे ७ भागा छे सातानाबधना २ अने च्यार अबधना एव ६ सूक्ष्मसपरायमध्ये बे भागा साताना बधना छे, शेप रही जे ५३ मार्गणा तेहने विषे ४ भागा छे असातानाबधना २ सातानाबधना २ एव ४ ॥ १७९ ॥

निरतिरिदेवेमणुएसु, पणनवपणनवगजाइचउगेसु।
तिगथावरेपणभगा, सुरनारयभग(विणतिरिया)व-
ज्झाय ॥ १८० ॥

टीका—निरतिरि इत्यादि ॥ नरकादिगतौपचादिभगास्तत्र-नरकगतौपचभगास्तिर्यग्गतौनवभगादेवगतौपचभगामनुष्यगतौनव

भगा पूर्वोक्ताज्ञानया, एकेन्द्रियादिजातिचतुष्के पृथिव्यादिस्थावरत्रयेतिर्यगायुरुदयरूपा पचभगा । सुरनारयत्ति देवायुर्बंधसभवो ह्येनरकायु सभवोह्येएतेचत्वारोवर्जनीया शेषा पचतिर्यगप्रत्ययाभवन्ति ॥ १८० ॥

टबार्थ—आऊखाना २८ भागा छे, तेमध्ये नरकगतिमध्ये नरकायुना ५ भगा छे तिर्यंचगतिमध्ये तिर्यंचना ९ भगा छे, देवगतिमध्ये देवायुना ५ भागा छे, मनुष्यगतिमध्ये मनुष्यायुना ९ भगा छे, तथा जाति ४ थावर ३ पृथिवी अप् वनस्पतिमध्ये पच भगा छे, तिर्यंचायु उदय तिरियचायु सत्तानो १ तिर्यंचायुबंध तिरियचायु उदयेतिरि २ आयुसत्तानो मनुष्यायुबधतिरि आयु उदयतिरियमनुष्यसत्ता ३ तिरिउदय तिरितिरिसत्तातिरि उदय मनुष्यतिरिसत्ता इहा देवताना २ नारकीना २ एव ४ भगावर्जित करवा ॥ १८० ॥

अनरातेउवाउ, केवलदुगिएगदेसविरयम्मि ।
वारसमणसामाईयतिगमि, छगरगईप्पभवा ॥१८१॥

टीका—अनरातेउवाउइत्यादि ॥ तेषुपचसुमध्येनरायु प्रत्ययौद्वौतौवर्ज्यौ शेषास्त्रयोभगास्तेजस्कायवायुकायमार्गणायातिर्यग्प्रत्यया स्त्रयोभगा केवलद्विकेएकोनरायुरुदय नरायु सत्तारूपोभवति देशविरयम्मिदेशविरताद्वारसइतिद्वादशभगा भवतितेचषट्तिर्यग्गतिप्रत्यया, षट्मनुष्यायु प्रत्यया, नरकतिर्यग्मनुष्यायुर्बध्यमानास्त्रयस्त्रयोनप्राप्यंते। देशविरतौदेवाएरेवाप्यते। मन पर्यवज्ञानेसामायिकच्छेदोपस्थापनीयपरिहारविशुद्धे। छगत्ति षट्भगामनुष्यायुरुदयरूपानारकतिर्यग्मनुष्यायुर्बधवर्जा नरायुरुदय नरायु सत्ता-

देवायुर्बंध नरायुरुदय देवनरायु सत्ताबवानतराश्चत्वारोऽपिएव-षद्भवति ॥ १८१ ॥

टबार्थ —तेऊवाऊकायने मनुष्यने जातो नथी तेमाटे तीन भगा छे । तिरिउदय तिरिसत्तातिरिबंधतिरिउदयतिरि २ सत्ता २ तिरिउदयतिरितिरिसत्ताए ३ छे, केवलदुगने नरायुउदयनरायु सत्ता ए एक भगो छे देशविरतिमध्ये १२ भगा छे मनुष्यना ८ तिर्यंचना ६ भगा छे बंधमध्ये देवायुबंधे सामायिक १ छेदोपस्थापनीय परिहार विशुद्धिमध्ये आऊखाना ६ भगा छे मनुष्यायुना देवायुबंध छे तेमाटे मनुष्यायुउदय मनुष्यायु-सत्ता २ देवायुबंध मनुष्यदेवायुसत्ता २ मनुष्यायुउदयनरक मनुष्यायुसत्ता ३ मनुष्यायुउदय मनुष्यमनुष्यायुसत्ता ४ मनुष्यायु-उदय मनुष्यमनुष्यायुसत्ता ५ मनुष्यायुउदय देवमनुष्यायुसत्ताए छ भगा छे ॥ १८१ ॥

सुहमाहक्खाएदो, अणहारेचउअबंधपच्चइया ।
मीसेवसमेसोलस, चउदसअसन्नीएसुच ॥१८२॥

टीका—सुहमाहक्खाएदो इत्यादि ॥ सूक्ष्मसंपराये तथा यथाख्यातचारित्रे द्वौभगौनरायुरुदय नरायु सत्ताऽपौक्षपकस्य-नरायुरुदय नरायु सत्तातथापूर्वबद्धदेवायु यउपशमश्रेणीआरोह-तितदानरायुरुदय देवनरायु सत्ताएतौद्वौउपशमश्रेणिगतसूक्ष्म-संपराययथाख्यातानामभवत शेषगतिनिकंबद्धायु नोपशमश्रेणिमा-रोहति अणहारेत्तिअनाहारकमार्गणाया चतुर्गतिप्रत्ययाश्चत्वारो-अबद्धायूरूपाश्चत्वारोभगालभ्यतेयन विग्रहगतौएतेचत्वारोभगाएव-स्वस्वगतिसभवाभवति, केवलिसमुद्घातेऽपिनरायुरुदय नरायु

सत्तारूप एवभग सचप्रथमएवतत्रातर्गतत्वान्नाधिक्र तथा मिश्रे तथा उपशमसम्यग्दर्शनेषोडशभगा भवति, तत्रचतुर्गतिषुअष्टाविंशतिभगा येषुवद्धयमानायूरूपाद्वादश द्वोनारकोद्वौदेवायु प्रत्ययौचत्वारोमनुष्यायु सभवा चत्वारस्तिर्यगायु सभवा एवद्वादशनभवति, शेषाश्चत्वारोअवद्धायुष द्वादशवध्यमानतरसभवाएवषोडशप्राप्यते ॥ असज्ञिमार्गणायाचतुर्दशभगास्तत्रनवतिर्यगायु सभवा यत असज्ञितिरश्च चतुर्गतिषुगमनात् पचनरायु सभवास्तत्रनरायुरुदयो नरायु सत्ता तथा तिर्यगायुर्बध नरायुरुदय तिर्यग्नरायुष सत्तानरायुर्बध नरायुरुदय नरनरायु सत्ता नरायुरुदय तिर्यग्नरायु सत्ता अथवा नरायुरुदय नरनरायुष सत्ताएव पचमनुष्यायु सभवाएवचतुर्दश असज्ञिमनुष्याणानरकदेवेष्वगमनात् ॥ १८२ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपराये तथा यथाख्यातमव्ये २ भगा, नरायुउदय नरायुसत्ता १ नरायुउदय देवनरायुसत्ता २, अनाहारकमार्गणाए च्यार भगा च्यारे गतिना अवधना पामीये मिश्रमव्ये तथा उपशममव्ये १६ भगा, इहा पिण नवा आउखानो वध नथी तेमाटे वधना भगा १२ नथी असज्ञीमार्गणामव्ये १४ भगा छे तिहा तिर्यचना तो नव छे, मनुष्यना ५ छे मनुष्यअसज्ञी मरी देवना नारकी थाय नही तेमाटे वध्यमान तथा वधी रह्या पछीना च्यार नथी ॥ १८२ ॥

सासाणेछवीस, नाण तिगवेयगेअवहिवसे ।
चीसपुणसेसाण, अडवीसआउभगाण* ॥१८३॥

* पाठा तरम्
(वीसतेउतिवेए, तिगोसअडवीससेसासु)

टीका—सासाणेछवीस इत्यादि॥ सास्वादनेषड्विंशतिभगा, नरकायुर्बंधरूपौभगौद्वौनप्राप्येते, सास्वादनेनरकायुष बधाभावात्। तथा ज्ञानत्रिके मतिश्रुतावधिलक्षणेवेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वेअवधिदर्शनेक्षायिकसम्यक्त्वेवीसविंशतिभगा, नरकगतौतिर्यगायुर्बंधरूपा देवेषुतिर्यगायुर्बंधरूप तिर्यक्षुनारकतिर्यगायुर्बंधरूपौमनुष्ये पुनारकतिर्यगायुर्बंधरूपौद्वौद्वौएवभगाष्टकरहिताविंशतिभगाभवति। तेउतिइइति तेज पद्मशुक्ललक्षणासुतिसृपुलेश्यासु तिवेए वेदत्रिके तनमशस्तलेश्यानये पुरुषवेद स्त्रीवेदलक्षणेवेदद्वयेपचनरकायु सभवान्भगान् वर्जयित्वाशेषातिर्यग्नरदेवसभवा त्रयोविंशतिभगाभवति। नपुसकवेदेदेवायु सभवभगपचकविनात्रयोविंशतिभगाभवति। शेषासुपचेन्द्रियत्रसकाययोगत्रयकषायचतुष्टय अज्ञानत्रिक अविरतिचक्षुरचक्षुर्दर्शनद्विकप्रशस्तलेश्यात्रये भव्यअभव्यमिथ्यात्वासज्ञि आहारकलक्षणासुत्रयोविंशतिमार्गणासु आयु कर्मण अष्टाविंशतिभगा भवति। एतासामार्गणानाचतुर्गतिषुप्राप्यमाणत्वात्। ॥ इत्युक्ताआयु कर्म भगका मार्गणासु ॥ १८३ ॥

टबार्थ—सास्वादनने छवीस भागा छे तिर्यंच तथा मनुष्यना नरकायु बधना २ भग नथी ज्ञान ३ क्षयोपशमसमकित अवधिदर्शनमध्ये समकित गुणठाणावाला वीस भगा छे शेष मार्गणा जे रही तिहा आऊखाना २८ भागा छे. ए आयुभग मार्गणामे कह्या ॥ १८३ ॥

गोएसगनरपणतस, योगभविसमणहाररहीएसु।
चक्खुरचक्खुसुका, हारगिछगकेवलेदुन्नि ॥१८४॥

टीका—गोएसगनरपणइत्यादि ॥ गोत्रकर्मण सप्तभगा नर-

गतौपचेंद्रियेत्रसकायेमनोवाक्कायलक्षणेयोगत्रयेच पमार्गणायासमग-सिसज्ञिमार्गणायाआहारकरहिता युक्ति, अनाहारकमार्गणायासप्त-भगा तथाचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाआहारकमार्गणायागोत्रस्य-षड्भगा उच्चैर्गोत्रउदय उच्चैर्गोत्रसत्तालक्षण सचअयोगिचरमस-मयेतस्यात्रासभवात् केवलज्ञानेकेवलदर्शनेगोत्रस्यद्वौभगौअत्रनम-त्ययौ ॥ १८४ ॥

नाणतिगओहिदसे, उवसमितिगदेवसासाणे । चउदुवेयगिमीसे, देसेसुहमिगसेसासुपणभगा १८५॥

टीका—नाणतिगओहिदसेइत्यादि । मत्यादिज्ञानत्रयेअव-धिदर्शनेउपशमसम्यक्त्वेउच्चैर्गोत्रबध उच्चैर्गोत्रोदय उच्चैर्नीचै सत्ता-लक्षण एक द्वौअबधजौ एवत्रयोभगाभवति देवगतौ सास्वादने-नीचैर्गोत्रबधनीचैर्गोत्रउदयनीचेर्गोत्रसत्तालक्षणभगवर्जयित्वानीचैर्गो-त्रबधसभवौद्वौउच्चैर्गोत्रबधसभवौद्वौ एवचत्वारोभगा भवति, वेदके-मिश्रेदेशेउच्चैर्गोत्रबधसभवौद्वौभगौभवत , सूक्ष्मसपरायेएकएवउच्चै-र्बध उच्चैरुदय उच्चनीचसत्तालक्षण प्राप्यते । शेषासुवेदनिककषाय-चतुष्टय अज्ञानत्रयकृष्णादिलेश्यापचकअभव्यमिथ्यात्वअ(जय?)प-तलक्षणासुअष्टादशमार्गणासुबधप्रत्यया पचभगा भवतिइत्युक्ता-गोत्रकर्मण भगामार्गणासु, अथमोहनीयकर्मभगानुदर्शयन्नाह ॥ तत्रप्रथममोहनीयस्यबधभगाद्वाविंशतिबधेषड्त्रतषोडशकषाया भय-जुगुप्सामिथ्यात्वएवएकोनविंशतौत्रयाणावेदानामध्येएकवेद हास्य-रतियुगलअथवाअरतिशोकयुगलएव प्रकृतित्रयेक्षिप्तेद्वाविंशतिस्तत्र त्रयाणावेदानात्रयोभगा तेचान्यतरयुगलगुणिता षट्एवएकविंशति बधेमिथ्यात्वरहितेचत्वारोभगा नपुसकवेदस्याबधात् अनतानुबधि-

बन्धरहितेसप्तदशानन्धरहितेपुरुषवेदबन्धसमन्वोद्वौभगौएवअप्रत्याख्यान-बन्धरहितेनयोदशानवेद्वैप्रत्याख्यानबन्धरहितनवविधबन्धेद्वौनन भय-जुगुप्साअरतिशोकवर्जितेपचविधबन्धेपुरुषवेदरहितेचतुर्विधबन्धेसंज्वल-नक्रोधरहितेत्रिविधेबन्धेसंज्वलनमानरहिते द्विविधबन्धेसंज्वलनमायार-हिते एकविधबन्धेएकैकएवभग, एवएकवधभगाएकविंशति वेच-नरकगतोदेवगतौद्वादशमिश्रगुणस्थानभगद्वयस्यमिनगणनात् चतु-र्दशतिर्यग्गतौचतुर्दशषोडशग्रामनुष्यगतौसर्वेएकेंद्रियेविकलेंद्रियेस्था-वरपचकेदश, मत्यादिज्ञानेसम्यक्त्वादिषुनव, मन पर्यवचारित्रादि-मार्गणासुसप्त, सूक्ष्मसपरायेएक केवलद्विकेयथाख्यातेनभवति । यथाभावात्मनुष्यपचेंद्रियत्रसयोगादिषुसर्वे, वेदत्रयेकषायत्रयेविं-शति, लोभेएकविंशति इत्यादिगुणस्थानकमनोज्ञेय उदयचतु-विंशतिकागुणस्थानशतके सविस्तरालिखितास्ताएवमार्गणासुविभज-यन्नाह ॥ १८५ ॥

उवसामगखवगेपुण, वीसचोवीससत्तरभगाय ।
वेयगिसोलसकेवल, दुगेअहक्खायगेनत्थि ॥१८६॥

टीका—उवसामगखवगेपुणइत्यादि ॥ अनउपशमेक्षायिके-सम्यग्दर्शनेवीसति विंशतिश्चतुर्विंशनय सम्यक्त्वमोहनीयउदयरहि-ताअविरतिसम्यक्त्वेचतस्रोदेशविरतौचनस्र प्रमत्तेचतस्र अप्रम-त्तेचनस्र अपूर्वकरणेचतस्र एवविंशति सप्तदशभगाद्विकैकोदय-सभगा प्राप्यते । सप्तकाउदयेएवउपशमक्षायिकदर्शनलाभ इति वेदकेक्षयोपशमेसम्यक्त्वेषोडशचतुर्विंशनय सम्यक्त्वमोहनीयो-दमयुक्ता तुर्यगुणेचनस्र पचमेचतस्र प्रमत्तेचनस्र अप्रमत्तेच-तस्र एवषोडशभवति । तथाकेवलद्विकेयथाख्यातेमोहनीयोदया-

भागात् भगानभवति । यथाख्यातेउपशातापेक्षया अष्टाविंशति चतुर्विंशनय एकविंशतिरूपासत्ताभवतिनक्षपकस्येतिस्वयमूह्यम्१८६

टबार्थ —हवे मोहनीकर्मना भागा कहे छे । उपशमसमकित तथा क्षायिकसमकिते वीस चोवीस सत्तर भागा छे २०। २४।१७। तिहा समकितगुणठाणेउदये १ चोवीसीसात उदय २ चोवीसी आठमे उदये एक चोवीसी इम पाचमे गुणठाणे पांचने उदये एक चोवीसी ने २ चोवीसी ७ ने उदये एक चोवीसी छ गुणठाणे च्यार उदये एक चोवीसी ५ उदये २ चोवीसी ६ उदये एक चोवीसी सातने पण च्यार चोवीसी आठमे ४ चोवीची इम चोवीसी थई ॥ क्षयोपशमसमकिते सोल चोवीसी समकितमोहनीना उदयसहितनी लेवी केवलद्रुग यथाख्यातचारित्रते मोहनीनो भगो नथी ॥ १८६ ॥

सुहमेगसेसेसुअ, मग्गणठाणेसुगुणभवाभंगा ।
चउवीसगायभगा, पयसखाउदयपचईया ॥१८७॥

टीका—सुहमेगसेसेसुअइत्यादि॥ सूक्ष्मसपरायेएकलोभोदयरूपभगक सेसेसुइतिशेषेषुमार्गणास्थानेषु,गुणभवापस्यामार्गणायायावत्य चतुर्विंशतय तस्यातावत्य चतुर्विंशतयोज्ञेया तथा यस्यामार्गणायायावन्त्य चतुर्विंशनयस्ताश्चतुर्विंशतिगुणिताभगसख्याभगानासख्याभवति, भगसख्याचउदयस्थानसख्यागणितापदसख्याभवति । तत्रनरकगतौमिथ्यात्वेअष्टौअष्टकायत नारकस्यनपुसकवेदोदयात्नपुसकवेदप्रत्ययाअष्टौभगाभवति । तेननरकगतौअष्टकापूवतत्रसप्तोदयेएक अष्टोदयेत्रय नवोदयेत्रय दशोदयेएक एवअष्टौअष्टकास्तस्यभगाश्चतु षष्टि सास्वादनेसप्तोदये एक अष्टो-

नवोदयेएकश्चत्वारोअष्टका तस्यभगाद्वात्रिंशत्, मिश्रेसप्तोदये- अष्टोदयेद्वौनवोदयेएक एवचत्वारोअष्टकास्तस्यभगाद्वात्रिंशत् त्तसम्यक्त्वेषड्दयेएक सप्तोदयेत्रय, अष्टोदयेत्रय नवोदये- त्रअष्टोअष्टका तस्यभगाश्चतु षष्टि सर्वसरययाभगा एकशन- त्र्यधिक भगानाएवेचभगत्राउदयस्थानगुणिना पदवृदसरया- ते तनपड्दयेअष्टभगा षड्गुणिताअष्टोचत्वारिंशत् पदवृदा दयेअष्टौचत्वारिंशत्भगा तेचसप्तगुणिता षड्त्रिंशदधिकत्रिश- ोदयेअशीतिभगा तेचाष्टगुणिता चत्वारिंशदधिकपदृशत- ये अष्टचत्वारिंशत्भगास्तेचनवगुणिताश्चतु शतद्वात्रिंशदधिक शतानाभवति । दशोदयेअष्टौभगा तेचदशगुणिताअशीति श भवति, एवचसर्वसरयापचदशशतानिषट्त्रिंशदधिकानि- शानिभवति ॥ एवसर्वत्रभावनाकार्या ॥ १८७ ॥

टबार्थ —सूक्ष्मसपरायमध्ये लोभनो उदयनो एक भगो छे ो मार्गणा जे रही ते मार्गणाये गुणठाण प्रत्ययी चोवीसी ती जे मार्गणाये जेटली चोवीसी होवे तेहने चोवीस करीये तेवारे भागानी सरया आवे, अने जे भगा जे स्यानकना होवे ते भागा ते स्थानक गुणा करीये तेवारे सरया आवे एटले दसने उदये चोवीसी १ तेहना भागा तेहने दस गुणा करीये तेवारे २४० पद सख्या छे इम जोडी लेज्यो ॥ १८७ ॥

तिउदयचउवीस, दुगिसोलसएगिअट्ठभंगाय ।
ाइंसुछगसखा, भगागुणट्ठाणसखसमा ॥१८८॥
इतिमोहोदयभगा,

टीका—येपनिउदय इत्यादि ॥ यत्रमार्गणायावेदनिकम्पउदपस्तत्रचतुर्विंशतिभगायत्रमार्गणायादुगिइनिवेदद्विकोदय तत्रपोडशका भवनियत्रमार्गणायाएकवेदोदयस्तत्र अष्टकाभवति । तत्रकपायचतुष्टयेचत्वारोभगास्तेहास्ययुगलेनचत्वारोऽरतिशोकेनचत्वार । एवअष्टेतेचपुरुषवेदेनएवस्त्रीवेदेनअष्टौ एव नपुसकवेदेनअष्टौएव चतुर्विंशतिर्भवति । कोहाइसु इत्यादि नोधादिषु क्रोधमानमायालोभेप्रत्येकपट्पड्भगा भवनियत क्रोधोदयेवेदत्रयान्यतरवेदोदये तत्रयेभगास्तेचयुगलद्वयान्यतरोदयेगुणिता पट्एवक्रोधोदयेद्विपचाशत्पट्का भवति । तस्यभगास्त्रिशतद्वादशाधिकभवति । तस्यपदवृंदाएकविंशतिशतद्वादशाधिकद्विकोदये पचत्रयेद्वादशभगास्तस्यपदवृंदाश्चतुर्विंशति चतुर्बंधेएकोभगस्तत्पदमपिएकएवसर्वसंख्याएकविंशति शतत्रिंदशदधिकपदवृंदानाभवति । एवमानादिष्वपिज्ञेय । सर्वास्वपिमार्गणासु मोहोदयभगागुणस्थानभगसख्यासमासुख्याभवति ॥ भावनाचनरकगतौचतुर्विंशति अष्टकास्तेषाभगाद्विनवत्यधिक एकशत पदवृंदाश्च पचदशशतपट्त्रिंशदधिका भवंति, तिर्यग्गतौमोहोदयचतुर्विंशतिकागुणस्थानकपचकस्यद्वात्रिंशत्तस्यभगका सप्तशतानिअष्टपष्ट्यधिकानिपदवृंदचतुर्विंशतिका २४४ द्विशतचतुश्चत्वारिंशदधिकतेचचतुर्विंशतिगुणिता पचसहस्राणिअष्टौशतानिपट्पचाशदधिकानिपदवृंदगणितभवति ॥ एवमनुष्यगतौपचेंद्रियेत्रसकायेयोगत्रयेचक्षुरचक्षुर्दर्शनेशुक्ललेश्यायाभव्येसंज्ञिआहारकलक्षणासुमोहोदयचतुर्विंशतिकाद्विपचाशत्सप्तदशभगका ॥ सर्वभंगाद्वादशशतानिपचपष्टिअधिकानिपदवृन्दचतुर्पंगतिकानीणिशतानिद्विपचाशदधिकानिचतुर्विंशतिगुणितचतुरशीतिशतान्यष्टचत्वारिंशत्तेचएकोनत्रिंशत्मिलिताश्चतुरशीतिशतसप्तसप्तति पदवृंदकाभवतिपुरुपादिवेदत्रयेद्विपचाशत्अष्टकाश्चत्वारोभगा एकेंद्रियद्वींद्रियत्रींद्रियचतुरि-

द्रियपृथ्वीकायअप्कायवनस्पतिकाय असज्ञिमार्गणासुद्वादशाऽष्टका पण्णवतिभगाअष्टशतानिपदवृदत्राभवति। तेजोवायुकायलक्षणासुमार्गणासुअष्टौअष्टकाण्पुनपुंसकवेदएवोदयात् कषायचतुष्टयेद्विपचाशत्-पट्का पट्टूर्निशतिरष्टविंशतिरेकोनत्रिंशत्भगाल्भ्यते । मत्यादिज्ञानत्रयेअवधिदर्शनेपश्चिंशत् चतुर्विंशतिका सप्तदशभगाभवति। मन पर्यवज्ञानेसामायिकेच्छेदोपस्थापनीयेविंशतिचतुर्विंशतिका सप्तदशभगकास्तत्रप्रमत्तेअष्टौ अप्रमत्तेअष्टौ अपूर्वेचत्वार एवविंशति चतुर्विंशतिका नवमेदशमेसप्तदशभगाभवति ॥ अज्ञानत्रयेमिथ्यात्वसास्वादनमिश्रसभवा षोडशचतुर्विंशतय परिहारविशुद्धौप्रमत्ताप्रमत्तभवा षोडशचतुर्विंशतयोमिथ्यात्वेसास्वादनेमिश्रेदेशविरतौअष्टौचनत्रश्चनत्र अणेस्वस्वगुणस्थानसभवाश्चतुर्विंशतय अविरतिमार्गणायामिथ्यात्वादिअविरतसम्यग्दर्शनगुणास्थानसभवाश्चतुर्विंशतिचतुर्विंशतय कृष्णादिलेश्यात्रयेचत्वारिंशत्चतुर्विंशतिका तत्रमिथ्यात्वेअष्टौसास्वादनेचत्वारोमिश्रेचत्वार अविरतेअष्टौदेशविरतेअष्टौ प्रमत्तेअष्टौ एवचत्वारिंशत्, तेज पद्मलेश्याद्वयेचत्वारिंशत्पूर्वोक्ताअप्रमत्तसभवाअष्टौएवअष्टचत्वारिंशत्चतुर्विंशतय अभव्येचनत्र चतु० तत्रअनतानुबधिउदयरहितामिथ्यात्वसभवाअभव्यस्यनभवतितेनअष्टोदयाएकानवोदयाद्विदशोदयाएकाप्राप्यते । अनाहारकमार्गणायाविंशतिश्चतुर्विंशतय तत्रमिथ्यात्वेअष्टौसास्वादनेचनत्र अविरतेअष्टौएवभवति सर्वासुमार्गणासुभगा पदवृदसख्या स्वत करणानुसारेणऊह्या इत्युक्तामोहोदयभगामार्गणासु ॥ १८८ ॥ साम्प्रतनामकर्मबधभगकानदर्शयन्नाह ॥

टबार्थ —वेद तीन जिहा उदय होवे ते मार्गणाये चोवीस भगा होवे, जिहा २ वेद उदय होवे तिहा सोल भगा होवे

जिहा एक वेद उदय होवे तिहा ८ भगा होवे, जिहा एक कषाय उदय होवे तिहा ७ भगा होवे, च्यार कषाय होवे तिहा २४ भगा होवे तथा नरकगति पाच थावरे असज्ञी एटली मार्गणाये नपुसकवेद १ उदय छे तेमाटे भगाना अष्टक कहेवा, क्रोधकषाये वेद तीनना ३ भगा ते हास्यरतियी वली ३ भगा अरती शोकथी इम जाणना इम सर्वत्र सभाली लेवा ॥१८८॥

तेवीसपन्नवीसा, छवीसाअठ्ठवीसगुणतीसा ।
तीसेगतीसमेग, वधठाणाणिनामस्स ॥ १८९ ॥

टीका—तेवीसपन्नवीसा इत्यादि ॥ नाम्न अष्टौबन्धस्थानानि ॥ तद्यथा ॥ त्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एकत्रिंशत् एकचेत्यष्टौ, अमूनिच गतिप्रायोग्यतया अनेकप्रकाराणिततस्तन्नेनोपदर्श्यतेतत्रतिर्यग्गतिप्रायोग्यबध्नत सामान्येनपचस्थानानि ॥ तद्यथा ॥ त्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत । तत्राऽप्येकेन्द्रियप्रायोग्यबध्नत त्रीणिबधस्थानानित्रयोविंशति पचविंशति षड्विंशति तत्रत्रयोविंशति तिरियतिर्यग्द्विकएकेन्द्रियजाति औदारिकतैजसकार्मणानिहुडकसस्थानवर्णगधरसस्पर्शचतुष्टय अगुरुलघु उपघातनामस्थावरनामसूक्ष्मबादरयोरेकतरत् अपर्याप्तनामप्रत्येकसाधारणयोरेकतरद् अस्थिरअशुभदुर्भगअनादेयअयश कीर्त्तिनामनिर्माणनामएतासात्रयोविंशतिप्रकृतीनासमुदायएकबधस्थानएतच्चापर्याप्तप्रायोग्यबध्नत मिथ्यादृष्टेरत्रसेयअत्रभगाश्चत्वार तथाहिबादरनाम्निबध्यमानेप्रत्येकेनसहएक तथाबादरसाधारणेनसहएक सूक्ष्मप्रत्येकेनसहएक सूक्ष्मसाधारणेनसहएक सर्वेसख्ययाचतस्र

एवैतत्रयोविंशति पराघातोच्छ्वाससहितापंचविंशति तत्रप्रकृति-
नामतिर्यग्द्विकएकेंद्रियजाति औदारिकतैजसकार्मणानिहुंडकसं-
स्थानवर्णादिचतुष्टय अगुरुलघुनाम उपघातनाम पराघातनाम
उच्छ्वासनाम स्थावरनाम पर्याप्तक बादरसूक्ष्मयोरेकतरद् प्रत्येकसा-
धारणयोरेकतरत् स्थिरास्थिरयोरेकतरत् शुभाशुभयोरेकतरत् यश कीर्ति-
रयश कीर्त्योरेकतरत् दुर्भगनाम अनादेयनाम निर्माणनाम इतिनासा-
पंचविंशतिप्रकृतीनांसमुदाय एकत्वस्थानंबपर्याप्तकैकेन्द्रियप्रा-
योग्यबध्नतोमिथ्यादृष्टेरेतस्य पंचभंगाविंशति तत्रबादरपर्याप्त-
प्रत्येकेषुस्थिरास्थिरशुभाशुभयश कीर्त्ययश कीर्तिपदैरष्टौभंगास्त-
थाबादरसाधारणेन सूक्ष्मप्रत्येकेन सूक्ष्मसाधारणेन चत्वारश्चत्वा-
रोभंगा यत अयश कीर्तिनाम्न सबाभावात्चत्वारएवभंगा
एवंविंशति पर्योक्तत्रयोविंशति तत्रस्थानेस्थावरनामएकेंद्रिय-
जातिरितिप्रकृतिद्वयविनात्रसनामसंवार्तसंहननऔदारिकांगोपांगद्वी-
द्रियादिषुएकाजाति इतिचतुष्टयेक्षिप्तेपंचविंशति साचद्वीन्द्रिया-
दिजातिचतुष्का यतरेणचत्वारोभंगा एवतिर्यग्गतिप्रायोग्याचतु-
र्विंशति तत्रबादरप्रत्येकप्रायोग्याष्टकभंगरूपापंचविंशति देवनि-
र्यग्मनुष्या ध्वेकुर्वतिदोषाभंगा षोडशतिर्यग्नराएवबध्नति देवाना
तत्रागमनात्तिर्यग्पंचेंद्रियप्रायोग्यपंचविंशतौतिर्यग्द्विकनिष्कास्यते
मनुष्यद्विकक्षिप्यतेइत्येषापंचविंशति मनुष्यापर्याप्तप्रायोग्यातिर्यग्
मनुष्यास्तेजोवायुकायवर्जाबध्नंति । इत्येवपंचविंशति त्रयेपंचविंश-
तिभंगा बादरप्रत्येकपंचविंशतिमध्ये आतपयुक्तापड्विंशति बध्नंति।
अथवा उद्योतयुक्तापड्विंशति एकेन्द्रियप्रायोग्यात्रिगतिकामिथ्या-
दृष्टय बध्नतिषोडशभंगा तथा युक्तबधितत्रक त्रसबादरपर्याप्तप्रत्ये-
करूपचतुष्टयपंचेंद्रियजाति पराघातउच्छ्वासनामवैक्रियद्विक देव-
द्विकशुभविहायोगति १ समचतुरस्रसंस्थानस्थिरास्थिरयोरन्यतरत्

शुभाशुभयोरेकतरयशःकीर्त्ययशःकीर्त्योरन्यतरत्सुभगसुस्वरादेय-
त्रिक एवमष्टाविंशति देवगतिप्रायोग्यान्यष्टभंगा स्थिरास्थिर-
शुभाशुभयश अयश मन्यया अष्टौ भंगा मिथ्यात्वगुणस्थानस्त
अपूर्वकरणपर्यंत द्विगतिकास्तथनिर्देशोद्देशविगतिपार मनुष्याअपू-
र्वकरणपालनत्वति। तथा सुरनरक पंचेंद्रियजातिवरानुपूर्वग-
घातउच्छ्वासवैक्रियद्विकतयकृतिर अशुभविहायोगतिर्वेयान अ-
स्थिरषट्कइत्यष्टाविंशति । नरकगतिप्रायोग्यातिर्यंचपंचेंद्रियाणाम-
ष्टिन मनुष्यपंचेंद्रियाणाश्रिन बध्नाति । तिर्यग्पंचेंद्रियप्रायोग्यपरा-
विंशतिकुत्सगति पर्याप्तपराघातोच्छ्वाससुस्वरमध्येअपर्याप्तनाम-
प्रहारे एकोनत्रिंशतिर्यंचपंचेंद्रियामनुष्या बध्नाति तिरुत्प्रायोग्या-
मिथ्यादृष्टयस्तत्रद्वींद्रियादिप्रत्ये कमष्टौभंगा पृथगष्टअष्टविकलाण-
द्विपत्रगतिपगणि । तिर्यग्गतिपंचेंद्रियप्रायोग्यबध्नन्ति त्रीणि बन्धस्था-
नानि । तद्यथा । पंचविंशति एकोनत्रिंशत्रिंशत्तत्रपंचविंशति
पंचेंद्रियजातिमुक्तानेकभंग एकोनत्रिंशत्पुनरियतिर्यग्पंचेंद्रिय-
जाति औदारिकद्विकतैजसकार्मणेषण्णासंस्थानानामेकतरत्षण्णा-
संहननानामेकतमत्संहननवर्णादिचतुष्टय अगुरुलघूपघातपराघात
उच्छ्वासनामप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगत्योरेकतरत्त्रसनामबादरनामप-
र्याप्तनामप्रत्येकस्थिरास्थिरयोरेकतरत्शुभाशुभयोरेकतरत्सुभगदुर्भ-
गयोरेकतरत् सुस्वरदुःस्वरयोरेकतरत् आदेयानादेययोरेकतरत्यश
कीर्त्ययशःकीर्त्योरेकतरत्निर्माणमित्येकोनत्रिंशत्प्रकृतीनामेकबन्ध-
स्थानमेतच्चमिथ्यादृष्टयस्तिर्यग्पंचेंद्रियप्रायोग्यबध्नन् वेदितव्य-
यदिपुन सास्वादनेबंधकोभवतितर्हिपंचानासंस्थानानापंचानासंह-
ननाना अन्यतमत्संहननसंस्थानमितिवक्तव्य । अस्याचैकोनत्रिं-
शत्यासामान्येनषड्भि संस्थानै षट्तेचसंहननैर्गुणितापट्त्रिंशत्
तेचविहायोगतिद्वयेनगुणिताद्वासप्तति तेचस्थिरादिकगुणिताश्चत्वारिं-

शच्छतवेचशुभाशुभद्विकगुणिताद्विशती अष्टाशीत्यधिकाभवतिवेच-
सुभगदुर्भगद्विकगुणिता पचशतीपर्सप्ततिर्भवति तेचसुस्वरदु स्वर-
गुणिता एकादशशतद्विपचाशत्भगा भवति तेचआदेयानादेया-
भ्यागुणिता त्रयोर्विंशतिशतानिचतुरधिकानि भवन्तिवेचयश
अयशोभ्यागुणिताभगा अष्टाधिकषट्चत्वारिंशच्छतसख्यावेदित या
एपैत्रएकोनत्रिंशदुद्योतसहितात्रिंशद्भवति अत्रापिमिथ्यादृष्टिन्सा-
स्वादनानधिकृत्यनथैवावगन यो अत्रापिअष्टाधिकषट्चत्वारिंशच्छ-
तसरयाभगानाभवति ॥ उक्तच ॥ गुणतासनोसेवियभगाअट्ठा-
हीयाउपालसयापचेंदितिरियतिरिजोगापणवीसनवेभणिक्को ॥ १ ॥
सर्वसरयपाद्विनवतिशतानिसप्तदशाधिकानि सर्वस्यातिर्यग्गतौसर्वस-
रयपाभगा त्रिनवतिशतानिअष्टाधिकानि॥ मनुष्यगतिप्रायोग्यपच-
विंशतिसत्कभगएकपूर्वोक्ततिर्यग्गतिप्रायोग्यैकोनत्रिंशतितिर्यग्द्विका-
पसारेनरद्विकक्षेपेअष्टाधिकषट्चत्वारिंशच्छतसरयाभगा भवति ॥
एतामिथ्यादृष्टि सास्वादनमिश्राविरतसम्यग्दृष्टिर्वाबध्नाति । तत्रस-
म्यग्दृष्टिप्रत्ययाएकोनत्रिंशत् जिननामसहितात्रिंशत् अत्रचस्थि-
रास्थिरशुभाशुभयश अयशोभ्याअष्टौभगा अत्रजिननामत्रय स-
हननाद्यशुभानामनबक एवसर्वसरयपामनुष्यगतिप्रायोग्यत्रवस्था-
नेषुभगा षट्चत्वारिंशच्छतानिसप्तदशाधिकानि । उक्तचपणवीसय-
सिइक्को ॥ उयालसयाट्ठोत्तगइगुणनीसे, मणुतीसेअट्ठउसवेउपाल-
सयाउससरस ॥ १ ॥ तथादेवगतिप्रायोग्य अष्टाविंशतिस्थानके-
अष्टौभगापूर्वउक्ता तत्रैवाष्टाविंशतौजिननामप्रक्षेपेदेवगतिप्रायोग्या
एकोनत्रिंशतसम्यग्दृष्टि मनुष्य अविरतसम्यग्दर्शनत अपूर्वकर-
णयावन्नबध्नातिअष्टौभगा देवगतिप्रायोग्याष्टाविंशतौआहारकद्विक-
क्षेपेत्रिंशत् । अत्रसर्वप्रशस्तप्रकृतिबधात् एकएवभगकस्तथाआहा-
रकयुक्तात्रिंशतजिननामयुक्ताएकत्रिंशत्अत्रापिएकएवभगक एषा-

बंधक सम्यग्दृष्टि मनुष्योबंधकोभवति ॥ तथाचोक्त ॥ अट्ठए-
केक्कभंगा अट्ठारदेवजोग्गासु । तथानरकगतौअशुभाष्टाविंशतिमत्य-
यएक एवभंगकःमिथ्यादृष्टिरेवबध्नाति । नरकद्विकबंधस्तुमिथ्यात्वे-
एवएकत्तुनवस्थानेयश कीर्त्तिलक्षणतद्देवगतिप्रायोग्यबंधेन्यवच्छि-
न्नेअपूर्वकरणादीनांत्रयाणांअन्तर्गतं च ॥ सप्ततिकस्मिन्बंधस्थानके-
कतिभंगकास्तन्निरूपणार्थंगाथामाह ॥ १८९ ॥

चउपणवीसासोलस, नववाणुईसयायवायाला ।
एयालुत्तछायाल, सयाइक्किकबंधविही ॥ १९० ॥

टीका—चउपणवीसादृत्यादि ॥ त्रयोविंशत्यादिषुयथाक्रमबं-
धप्रकारावेदितव्या तत्रत्रयोविंशतिबंधस्थानेषुचत्वारोभंगास्तेचैकें-
द्रियप्रायोग्यामेवबध्नतोविज्ञेया नान्यत्रपंचविंशतिस्थानेपंचविंशति-
भंगाअनेकेंद्रियप्रायोग्याःपंचविंशतिबध्नत विंशति अपर्याप्तद्वि-
त्रिचतुरिंद्रियतिर्यक्पचेंद्रियमनुष्यप्रायोग्या बध्नतामेकैकइतिसर्वस-
ख्ययापंचविंशति षट्विंशतिबंधस्थानेषोडश तेचैकेंद्रियप्रायोग्यामे-
वबध्नत अवसेया नान्यत्रअष्टाविंशतिबंधस्थानेभंगानवतत्रदेवगति-
प्रायोग्याअष्टौनरकगतोप्रायोग्य एकःएकोननिंशत्बंधस्थानेभंगाअ-
ष्टचत्वारिंशदधिकानिद्विनवतिशतानितत्राष्टौद्वींद्रियाणाअष्टौत्रींद्रियाणा
अष्टौचतुरिंद्रियाणापट्चत्वारिंशच्छत अष्टाधिकतिर्यक्पंचेंद्रियप्रायोग्य
तथा षट्चत्वारिंशच्छत अष्टाधिकशत मनुष्यप्रायोग्यअष्टौदेवग-
तिप्रायोग्य तथा त्रिंशद्बंधस्थानेएकचत्वारिंशदधिक षट्चत्वारिं-
शच्छतभंगानातत्रचतुर्विंशति विकलानापट्चत्वारिंशच्छत अष्टा-
धिकतिर्यक्पंचेंद्रियप्रायोग्य अष्टौमनुष्यप्रायोग्या एकदेवगतिप्रायोग्य।
तथाएकत्रिंशत बंधेदेवगतिप्रायोग्यएकएकविधबंधेचएक सर्वसख्य-

यासर्वत्रत्रस्थानेषुभगा त्रयोदशसहस्राणिनवशतानिपचचत्वारिंशद-धिकानिभवति, इत्युक्तानामकर्मण बधभगा, साप्रतनामकर्मण उदयभगसख्याप्रतिपादनार्थमाह ॥ १९० ॥

वीसिगवीसागचउवीसाय, एगाहीयाअइगतीसा ।
उदयठाणाणिभवे, नवअट्ठयहुतिनामस्स ॥ १९१ ॥

टीका—उदयस्थानानिद्वादश, तद्यथाविंशतिरेकविंशति चतु-र्विंशति पचविंशति षड्विंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति ए-कोनत्रिंशत्त्रिंशत तथा नवअष्टोचएतानिचैकेंद्रियाद्यपेक्षयानाना-प्रकाराणि,इतितानाश्रित्यसाप्रतमुपदर्श्यतेइतितत्रएकेंद्रियाणामुदय-स्थानानिपचतत्रयाएकविंशति चतुर्विंशति पचविंशति षड्विंश-ति सप्तविंशति तत्रतेजसकार्मणेअगुरुलघुस्थिरास्थिरेशुभाशुभेवर्ण-रसगधस्पर्शनिर्माणमितिद्वादशध्रुवोदया प्रकृतय । तिर्यग्गतितिर्यगा-नुपूर्वीस्थावरनामएकेन्द्रियजातिबादरसूक्ष्मयोरेकतरत्पर्याप्तापर्याप्तयो-रेकतरद्दुर्भग अनादेययश कीर्त्त्ययश कीर्त्त्योरेकतरदित्येतत्रवप्रकृ-तिसहिताएकविंशति अत्रभगा पचबादरसूक्ष्माभ्यापर्याप्ताऽपर्याप्ताभ्या अयश इतितेनसहचत्वार बादरपर्याप्तस्ययशसासहपचम सूक्ष्म-पर्याप्ताभ्यासहयश कीर्त्ते रुदयोनभवति । तेननदाश्रिताविकल्पान-भवति । एषाचैकविंशतिरेकेन्द्रियस्यापातरालगतौवर्त्तमानस्यवेदि-तव्यातत शरीरस्थस्य औदारिकशरीरहुडकसस्थानउपघातप्रत्येक-साधारणयोरेकतरदितिचतस्त्र प्रक्षिप्यते । तिर्यगानुपूर्वीचापनीयते तनश्चतुर्विंशतिर्भवति । अत्रचभगादश ॥ तद्यथा ॥ बादरपर्याप्तस्य प्रत्येकसाधारणयश कीर्त्त्ययश कीर्तिपदैश्चत्वार अपर्याप्तबादरस्यप्र-त्येकसाधारणाभ्याअयश कीर्त्त्यासहद्वौ । सूक्ष्मपर्याप्त अपर्याप्तप्रत्ये-

कसाधारणयोरयश कीर्त्यासहचत्वार इतिदश बादर वायुकायिकस्यवैक्रियकुर्वत औदारिकस्थानेवैक्रियवक्तव्यनतश्चतस्यापिचतुर्विंशतिरुदयेप्राप्यते । केवलमिहबादरपर्याप्तप्रत्येकअयश कीर्तिपदैरेकएवभग तेजस्कायिकवायुकायिकयो साधारणयश कीर्त्युदयोनभवति तदाश्रितविकल्पानप्राप्यते । सर्वसरयथाचतुर्विंश-

	बवमा	२३	२५	२६	२८	२९	३०	३१	१
४०	एकेन्द्रिय	४	२०	१६					
१७	द्वीन्द्रिय		१			८	८		
१७	त्रीन्द्रिय		१			८	८		
१७	चतुरिन्द्रिय		१			८	८		
९२१७	तिर्यक्पचेंद्रिय		१			४६० ८	४६० ८		
४६१८	मनुष्यपचेंद्रिय		१			४६० ८	८		१
१८	देवता				८	८	१	१	
१	नारक				१				
	सर्व	४	२५	१६	९	९२४८	४८४१	१	१

त्युदयेएकादशभगारतन शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातेक्षिप्तेपचवि-शनि अत्रभगा षट् तद्यथाबादरप्रत्येकमाधारणयश कीर्तिअयश कीर्तिपदैश्चत्वार सूक्ष्मस्यप्रत्येकमाधारणाभ्याअयश कीर्त्यासहद्वौ तथा बादरवायुकायिकस्यवैक्रियकुर्वत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य परा-घातेक्षिप्तेपचविंशतिर्भवति अत्रघप्राग्वदेवैकएवभग सर्वसख्ययाप-चविंशतौसप्तभगा प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेषड्विं-शति अत्रापिभगा षट् तद्यथाबादरस्योद्योतेनसहितस्यप्रत्येकसाधा-रणयश कीर्तिपदैश्चत्वारआनपसहितस्यचप्रत्येकयश अयशोभ्याद्वौ-बादरवायुकायिकस्यवैक्रियकुर्वत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वा-सेक्षिप्तेप्राग्युक्तापचविंशति षड्विंशतिर्भवति तत्रापिप्राग्वदेकएवभग तेजस्कायिकवायुकायिकयोरातपोद्योतयश कीर्तीनाउदयाभावात् । तदाश्रितविकल्पानप्राप्यते सर्वसख्ययाषड्विंशतौत्रयोदशभगा । तथाप्राणापानपर्याप्तापर्याप्त्यस्यउच्छ्वाससहितायाषड्विंशतौआत-पोद्योतान्यतरसहितायाषट्त्रय आनपसभवास्त्रय उद्योतसभवा, सप्तविंशत्युदयेषट्सर्वसख्ययाचेकेन्द्रियाणाभगाद्विचत्वारिंशत् ॥ उ-क्तच ॥ एगेन्दियउदयेसु पचइक्कारसतवेरसयठक । कमसोभगावा-यालाहोंतिसवेवि ॥ १ ॥ द्वीन्द्रियाणामुदयस्थानानिषट्तद्यथाए-कविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत् एक-त्रिंशत् तत्रध्रुवोदयाद्वादशतिर्यग्द्विकद्वीन्द्रियजाति त्रसनामबादर-नामदुर्भगअनादेयपर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरद्यश कीर्त्ययश कीर्त्योरेक-तरदितिनवप्रकृत्यासहएकविंशति एषाचापातरालगतौवर्त्तमानस्य-द्वीन्द्रियस्यावाप्यते अत्रभगास्त्रय, तद्यथाअपर्याप्तकनामोदयेवर्त्त-मानस्यअयश कीर्त्यासहएक पर्याप्तनामोदयेवर्त्तमानस्ययश कीर्त्त्ययश कीर्तिभ्याद्वाविति तस्यैवचशरीरस्थस्यऔदारिकशरीरऔ-दारिकागोपागहुडकसस्थानसेवार्त्तसहननउपघातप्रत्येक इतिषट्

प्रकृतय प्रक्षिप्यतेनिर्यगात्वपूर्वीचापनीयते जातापद्वविंशति अत्रा-
पिभगात्रय तेचप्रागिवत्दृष्टया तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य अप्र-
शस्तविहायोगतिपराघातयो प्रक्षिप्तयोरष्टाविंशति अत्रयश
कीर्त्त्ययश कीर्त्तिभ्याद्वौभगौअपर्याप्तरूपशस्तविहायोगत्योरनोदया-
भावात । तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेएकोन-
त्रिंशत, अत्रापितावेवद्वौभगौ अथवा शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्व-
ासेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनात्रिंशतअत्रापिप्रागिवद्वौभगौ
सर्वेप्येकोनत्रिंशतिद्वीन्द्रियस्यचत्वारोभगा ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्त-
स्यउच्छ्वासहितायामेकोनत्रिंशति, सुस्वरदुःस्वरयोरेकतरस्मिन्प्र-
क्षिप्तेत्रिंशत्भवति । अत्रसुस्वरदुःस्वरयश कीर्त्त्ययश कीर्त्तिपदैश्च-
त्वारोभगा एवसर्वसख्यया द्वीन्द्रियाणाद्वाविंशतिभगा एव त्री-
न्द्रियाणाद्वाविंशतिस्त्रीन्द्रियजाति प्रक्षेप्या एव चतुरिन्द्रियाणाम-
पिद्वाविंशतिभगाश्चतुरिन्द्रियजात्याख्या इतिसर्वसख्ययाविकले-
न्द्रियाणाषट्षष्टि भगा तदुक्त तिगातिगदुचउछचउविगलाणउसट्ठि-
होइतिण्हपि प्राकृततिर्यक्पचेन्द्रियाणा उदयस्थानानिषट्तद्यथाएक-
विंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिं-
शत्, ततितिर्यग्गतिस्तिर्यगानुपूर्वीपचेन्द्रियजाति त्रसनामबादरनाम-
पर्याप्तापर्याप्तयोरेकतरत् सुभगदुर्भगयोरेकतरत् अनादेयआदेययोरे-
कतरद्यश कीर्त्त्ययश कीर्त्योरेकतरदित्येतानवप्रकृतयोद्वादशस-
ख्याभिर्ध्रुवोदयाभि सहएकविंशति एषाचापातरालगतौवर्त्तमान-
स्यतिर्यक्पचेन्द्रियस्यवेदितव्या, अत्रभगानव, पर्याप्तकनामोदये-
वर्त्तमानस्य सुभगदुर्भगाभ्याआदेयानादेयाभ्यायश कीर्त्तिअयश
कीर्त्तिभ्याचाष्टौभगा अपर्याप्तकनामोदयेवर्त्तमानस्यदुर्भगाद्यप्रश-
स्तप्रकृत्यासहएकएव, अन्येपुन सुभगादेययुगपदुर्भगानादेय-
युगपदउदेतितदायश अयशोभ्याचत्वारोभगाएक अपर्याप्तस्य-

इत्येवपचमगाभवन्ति । तद्भावनीयनन शरीरस्थस्यआनुपूर्व्यामप-
नीयऔदारिकऔदारिकागोपागपर्णगा संस्थान।नाएकतमत्संस्थान-
पर्णगासहननननामेकसहननउपघातप्रत्येकमितिषट्कमाक्षिप्यते ततो-
जातिषट्कप्रक्षिप्यतेततोजानापड्विंशति अत्रभगानाद्विशतेएवो-
ननवति अधिकेतत्रपर्याप्तस्यपड्भि संस्थाने पद्भतेचपड्भि सह-
ननैर्गुणिता पद्त्रिंशत्तेच सुभगदुर्भगाभ्याद्वासप्तति आदेयाना-
देयाभ्याचतुश्चत्वारिंशच्छततदेवयश अयशोभ्याद्विशतेअष्टाशीत्य-
धिकेभवत ,   अपर्याप्तकस्यद्वट्कमभ्यानसेशार्त्तदुर्भगानादेयायश-
कीर्तिपदैरेक   इतिअस्यामेतषड्विंशतौशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपरा-
घातप्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिमध्ये अ यतरगतौप्रक्षिप्तायाअष्टाविं-
शति तत्रयेप्राक्पर्याप्तानाद्विशते अष्टाशीत्यधिकेउक्तेतेअत्रवि-
हायोगत्योरन्यतरगत्याइतिद्विगुणितेअत्रभगानापचशतानिषट्सप्तत्य-
धिकानिभवति । तत्र प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षि-
प्तेएकोनत्रिंशत्   अत्रापिभगा   प्रागिवपचशतानिषट्सप्तत्यधि-
कानि अथवाशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य उच्छ्वासेअनुदितेउद्योतना-
म्निउदितेएकोनत्रिंशद्भवतिअत्रापिभगा   पचशतानिषट्सप्तत्यधि-
कानिसर्वसरयाभगानामेकोनत्रिंशद्विपचाशदधिकानि   एकादश-
शतानि । ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरदु स्वरयोर यतरस्मिन्
प्रक्षिप्तेत्रिंशद्भवति, अत्रयेप्रागुच्छ्वासेनपचशतानिषट्सप्तत्यधिकानि
उक्तानितानियेनस्वरद्विकेनगुण्यतेततोजातानिद्विपचाशदधिकानिए-
कादशशतानि, अथवाप्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यस्वरेअनुदिते उद्यो-
तनाम्निउदितेत्रिंशद्भवति । अत्रापिभगाप्रागिवपचशतानिषट्-
सप्तत्यधिकानिसर्वसरयात्रिंशतिभगानांसप्तदशशतानिअष्टाविंशत्य-
धिकानि, तत्र स्वरसहितायात्रिंशतिउद्योतनाम्निप्रक्षिप्तेएकत्रिंश-
द्भवति । अत्रयेप्राक्स्वरसहितायात्रिंशतिभगाद्विपचाशदधिकएका-

दशशतसरव्याउक्तास्तएवात्रापिद्रष्टव्या सर्वसरव्ययाप्राकृततिर्यक्पचेंद्रियाणाउदयभगाएकोनपचाशच्छतानिपडधिकानि, इदानींवैक्रियतिरश्चाउदयस्थानानि पचतद्यथापचविंशति सप्तविंशति अष्टविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत्, तत्रवैक्रियागोपागसमचतुरस्रउपघातप्रत्येकमितिपचप्रकृतय प्रागुक्तायातिर्यग्पचेंद्रिययोग्यायामेकविंशतौप्रक्षिप्यते तिर्यगानुपूर्वीचापनीयतेतत पचविंशतिर्भवति। अत्रसुभगदुर्भगाभ्यामादेयानादेयाभ्यायश अयशोभ्याचाष्टभगा, तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातप्रशस्तविहायोगतीचप्रक्षिप्ताया सप्तविंशति तत्रापिप्रागिवाष्टभगा तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासनाम्निप्रक्षिप्तेअष्टाविंशतिर्भवतिअत्रापिप्रागिवाष्टौभगा अथवा उच्छ्वासेअनुदितेउद्योतेउदितेप्रागिवाष्टौभगा इतिषोडशतत भाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वाससहिताया अष्टाविंशतौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशत् अत्रापिप्रागिवाष्टौभगा तस्याउच्छ्वाससहिताया अष्टाविंशतौस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशत् सर्वसख्ययाएकोनत्रिंशतिषोडशतत समुच्चयेस्वरसहितायाएकोनत्रिंशतिउद्योतेक्षिप्तेत्रिंशत् अत्रापिप्रागिवाष्टौभगा सर्वसरव्ययावैक्रियतिरश्चापचपचाशत्भगा सर्वेपातिर्यक्पचेंद्रियाणासर्वसख्यया एकोनपचाशच्छतानिद्विषष्ट्यधिकानिभगानामवसेयानि, सामान्येनमनुष्याणामुदयस्थानानिपचतद्यथाएकविंशति षड्विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् त्रिंशत्, एतानिसर्वाण्यपियथाप्राक्तिर्यक्पचेंद्रियाणा उक्तानितथैवात्रापिवक्तव्यानिनवरतिर्यग्गतितिर्यगानुपूर्वीस्थाने मनुष्यगतिमनुष्यानुपूर्व्योर्वेदित येएकोनत्रिंशत्त्रिंशच्चउद्योतसहितावक्तव्याभवेनिआहारकसयतान्मुक्त्वाशेषमनुष्याणाउद्योतोदयाभावात्तत्र एकोनत्रिंशतिभगानापचशतानिपद्सप्तत्यधिकानित्रिंशत्येकादशशतानिद्विपचाशदधिकान्येवावगतव्यानिसर्वसख्ययाप्राकृतमनुष्याणाषड्विंश-

निशतानिद्विकाधिकानिभगानाभवनि, वक्रियमनुष्याणामुदयस्था-
मानिपचनवथापचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिं-
शतत्रिंशत,तनमनुष्यगनिपचेंद्रियजानिवैक्रियवक्रियागोपागसमचतु-
रस्र उपघानतगनामपर्याप्तनामप्रत्येकनामसुभगदुर्भगयोरेकतरदादे-
यानादेययोरेकतरद्यश कीर्त्ययश कीर्त्योरेकतर दितित्रयोदश्म-
कृतयोद्वादशसरपामिध्रुवोदयामि सहपचविंशति अत्रसुभगदुर्भ-
गानादेयानादेययश कीर्त्ययश कीर्तिपदरष्टौभगा देशविरताना-
सयतानाचवैक्रियमकुर्वतासर्वप्रशस्ताएवभगावेदितव्यास्तन उत्तर-
वैक्रियशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपराघातेप्रशस्तविहायोगतौचप्रक्षिप्तायां
सप्तविंशति अत्रापितएवाष्टभगा तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्या-
प्तस्यउच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशति अत्रापिमागिवाष्टौभगा अथवा
सयतानामुत्तरवैक्रियकुर्वताशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तानाउच्छ्वासेअनुदिते-
उद्योतनाम्निउदितेऽष्टाविंशति अत्रएकएवभग सयतानादुर्भगा-
नादेयायश कीर्त्युदयाऽभावात्, सर्वसख्यया अष्टाविंशतावैक्रियवता-
नैवभगा ततोभाषापर्याप्तापर्याप्त्यस्यउच्छ्वाससहितायाअष्टाविंश-
तौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशद्भवति। अत्रापिमागिवाष्टौभगा अथवा
सयतानास्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशत्भवति अत्रापि
मागिवैकएवभग सर्वसरयावैक्रियएकोनत्रिंशति भगानवसुस्वर-
सहितायाएकोनत्रिंशतिसयतानाउद्योतनाम्निउदितेत्रिंशद्भवति, अ-
त्रापिमागिवैकएवभग सर्वसरयावैक्रियमनुष्याणाभगा पचत्रिं-
शत्, आहारकसयतानाउदयस्थानानिचत्वारिभवति। तद्यथा-
पचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्तत्रआहारक-
आहारकागोपागसमचतुरस्रसस्थानउपघातप्रत्येकमितिपचमकृतय
माग्रुक्तायामनुष्यगतिप्रायोग्यायाएकविंशतौप्रक्षिप्यतेमनुष्यानुपूर्वी-
चापनीयते ततोजाताःपचविंशति केवलमिहपदानिसर्वाण्यपिप्रश-

रत्नायेत्रभवति, आहारकस्यापनानाद्दुर्भगाऽनादेयाऽयशःकीर्त्त्युदया- भावात् अत एकएवात्रभगस्तन शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यप्रशस्तविहायोगतौचप्रक्षिप्तायासप्तविंशति अत्राप्येकएवभग तत प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्योच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशतिर्भवति अत्राप्येकएवभग अथवाशरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वासेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेअष्टाविंशतिर्भवति । अत्राप्येकएवभग सर्वसख्यया- अष्टाविंशतौद्वौभगौ ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यउच्छ्वाससहितायाअष्टाविंशतौसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशद्भवति। अत्राप्येकएवभग अथवा प्राणापानपर्याप्तस्यसुस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोनत्रिंशत्अ- त्राप्येकएवभग सर्वसख्ययाएकोनत्रिंशतिद्वौभगौ। ततोभाषापर्या- प्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरसहिताया एकोनत्रिंशतिउद्योतेक्षिप्तेत्रिंशद्भवति। अत्राप्येकएवभग सर्वसख्ययाआहारकशरीरिणासप्तभगा। केवलि- नामुदयस्थानानिदश, तद्यथाविंशति एकविंशति षड्विंशति सप्त- विंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशत्नवअष्टौवात्र- मनुष्यगतिपचेंद्रियजातित्रसनामबादरनामपर्याप्तनामसुभगमादेययशः कीर्त्तिरित्यष्टौध्रुवोदयाभि द्वादशसख्याभि सप्तविंशति अत्रैकोभग एषाचातीर्थंकरकेवलिन समुद्घातावस्थायाकार्मणकाययोगेवर्त्तमा- नस्यवेदितव्यासैवविंशतिस्तीर्थंकरनामसहिताएकविंशति अत्रैकभग एषाचातीर्थंकरकेवलिन समुद्घातगतस्यकार्मणकाययोगेवर्त्तमान- स्यवेदितव्यातथातस्यामेवविंशतौ। औदारिकशरीरषण्णासस्थानाना- एकतमत्संस्थानऔदारिकांगोपागवज्रऋषभनाराचसहननउपघात प्रत्येकमितिषट्प्रकृतय प्रक्षिप्यतेतत षड्विंशतिर्भवति इतिए- षाचतीर्थंकरकेवलिन औदारिकमिश्रकाययोगेवर्त्तमानस्यवेदित- व्याअत्रषट्सु सस्थाने षड्भगा भवति, परसामान्यमनुष्येषुगृ- हीतत्वात अत्रनगृहीताइत्येकएवगृहीत एषैवषड्विंशतिस्तीर्थंकर-

सहितासप्तविंशतिर्भवति एषातिर्थंकरकेवलिन औदारिकमिश्रकाय-योगेवर्त्तमानस्यावसेया ॥ अत्रसंस्थानसमचतुरस्त्रमेवावसेय । तत एकएवात्रभग संप्तषड्विंशति पराघातोच्छ्वासप्रशस्ताऽप्रशस्ताविहायोगत्य तरविहायोगतिसुस्वरदु स्वरान्यतरस्वरसहितात्रिंशत एषातीर्थंकरकेवलिन औदारिक काययोगेवर्त्तमानस्यावगन्तव्या अत्रभगाश्चतुर्विंशति जीवभेदेनसम्भवन्ति । तथापिनपृथग्गृहीता-मनुष्योदयेगृहीतत्वात् एषैवत्रिंशत्तीर्थंकरनामसहिताएकत्रिंशत्भवति साचसयोगिकेवलिनस्तीर्थंकरस्यौदारिकयोगेवर्त्तमानस्यावसेया, एषैवैकत्रिंशद्वाग्योगेनिरुद्धेत्रिंशद्भवति उच्छ्वासेऽपिचनिरुद्धेएकोनत्रिंशत्अतीर्थंकरस्य केवलिन प्रागुक्तात्रिंशत्वागयोगेनिरुद्धेसये-कोनत्रिंशत्भवति । अत्रापिस्वरविहायोग त्याद्वादशभगाभवन्ति, तथानगण्यते कमप्रकृत्यान्तगृहीतत्वात् । तथाउच्छ्वास-निरुद्धेअष्टाविंशति अत्रापिभगा पूर्ववत् । तथामनुष्यगतिपचेन्द्रियजातित्रसबादरपर्याप्तसुभगमादेययश कीर्तिस्तीर्थंकरमितिनवोदय एषचतीर्थंकृतोऽयोगिकेवलिन चरमसमयेवर्त्तमानस्यप्राप्यते-सएववतीर्थंकरनामरहित अष्टोदय इहकेवलिन उदयस्थानसप्तविंशत्येकविंशतिसप्तविंशत्येकोनत्रिंशत्त्रिंशत् एकत्रिंशत्नवाष्टरूपेषु उदयस्थानेषुप्रत्येक एकैकोविशेषभग इत्यष्टौभगा तत्रविंशषट्कर्योर्भगानतीर्थंकरकृतौशेषेषुपदसूदयस्थानेषुतीर्थंकृत षड्भगा । सवसरयथामनुष्याणा उदयस्थानेषुषड्विंशतित्रिशतानिद्विपचाशद-धिकानिदेवाना उदयस्थानानिपञ्चत्रयाणएकविंशति पचविंशति सप्तविंशति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत्त्रिंशत् तत्रदेवगतिदेवानुपूर्वीपचेन्द्रियजातित्रसबादरपर्याप्तसुभगदुर्भगयोरेकतर दादेयाऽनादेययोरेकतरयश अयशसोरेकतर दितिनवप्रकृतयोद्वादशसप्तामिध्रुवोदयामि सहएकविंशति अत्रसुभगदुर्भगादेयानादेययश अयश

पदैरष्टौभगादुर्भगअनादेयापयशसाशुदय पिशाचादीनामग्रगन प
तस्यशरीरस्थस्यवैक्रियवैक्रियागोपाग उपघातप्रत्येक समचतुरस्र
सस्थानमितिपचप्रकृत्य प्रक्षिप्यते देवानुपूर्वीचापनीयते ततोजा-
तापचविंशति अत्रापितेएवाष्टौभगा तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्य-
परावातेप्रशस्तविहायोगतेचाक्षिप्तायासप्तविंशति अत्रापितेएवाष्टौ-
भगा देवानामप्रशस्तखगतेरुदयाभावान्तदाश्रिताविकल्पानभवन्ति
तत प्राणापानपर्याप्त्योच्छ्वासेक्षिप्तेअष्टाविंशति तत्रापितएवा-
ष्टौभगा अथवा शरीरपर्याप्तापर्याप्तस्यउच्छ्वासेअनुदितेउद्यो-
तनाम्निउदितेअष्टाविंशति अत्रापितएवाष्टौभगा सर्वसख्यया-
अष्टाविंशतौषोडश,ततोभाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिं-
शद्भवति । अत्राप्यष्टौभगा दु स्वरोदयोदेवानानभवति । अथवा
प्राणापानपर्याप्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरेअनुदितेउद्योतनाम्निउदितेएकोन-
त्रिंशद्भवति । उत्तरवैक्रियहिकुर्वत देवस्योद्योतोदयोलभ्यतेअत्रापित-
एवाष्टौभगा सर्वसख्ययाएकोनत्रिंशतिषोडशभगा ततोभाषापर्या-
प्त्यापर्याप्तस्यसुस्वरसहितायां एकोनत्रिंशति उद्योतेक्षिप्तेत्रिंशद्भवति,
अत्रापितएवाष्टौभगा सर्वसख्ययादेवानाचतु षष्टिभगा तथानैरयि-
काणाउदयस्थानानिपच, तद्यथाएकविंशति पचविंशति सप्तविं-
शति अष्टाविंशति एकोनत्रिंशत् । तत्रनारकगतिनारकानुपूर्वी
पचेंद्रियजातित्रसबादरपर्याप्तनामदुर्भगअनादेयअयश इत्येता
नवद्वादशध्रुवोदयाभि सहएकविंशति एषभग कार्मणशरीरस्थ-
स्यतत्रसर्वपदाऽप्रशस्तत्वेनएकएवभग तत शरीरपर्याप्त्यापर्या-
प्तस्य वैक्रियवैक्रियागोपागहुडसस्थानउपघातप्रत्येकमितिपचप्रकृत्य
प्रक्षिप्यतेनरकानुपूर्वीचापनीयतेतत पचविंशतिर्भवतिअत्राप्येकए-
वभग तत शरीरपर्याप्त्यापर्याप्तस्यपरावाताप्रशस्तविहायोगतौक्षि-
प्तायोसप्तविंशति अत्राप्येकएवभग नैरयिकाणापरावात, प्रदेशो-

दयरूप पूर्वाचार्यगृहीत तत प्राणापानपर्याप्तस्यउच्छ्वासेक्षिमे- अष्टविंशतिस्ततः भाषापर्याप्त्यापर्याप्तस्यद्दु स्वरेक्षिप्तेएकोनत्रिंशत्। अत्रापिएकएवभग सर्वसंख्ययानैरयिकाणापचभगा । सत्र गे- दयस्थानभगा पुन सप्तसप्ततिशतानिएकनवत्यधिकानि । सम्प्र- तिकस्मिन्उदयस्थानेकतिभगा प्राप्यते इतिचिंतायानिरूपणार्थ- माह ॥ १९१ ॥

एगवयालिक्कारस, तित्तीसा छसया णितित्तीसा ।
वारससत्तरससयाणि, हिगाणिबिपंचसीइहि॥१९२॥
अउणत्तीसिक्कारस, सयाणिहियसत्तरपचसट्ठीहिं ।
एकेकगचनीसा, दट्ठुदयतेसुउदयविही ॥१९३॥

टीका---एगवयालिक्कारस इत्यादि ॥ त्रिंशत्यादिअष्टपर्यंतेषु- द्वादशसुउदयस्थानेषु यथासंख्यएकादिसंख्याउन्यवि उयउदयप्रकारा, उदयभगाइत्यर्थ तत्रविंशतौएकोभग सचातीर्थंकरकेवलिन एक- विंशतौद्वाचत्वारिंशत्तत्रएकेन्द्रियानधिकृत्यपच, विकलेन्द्रियानधि- कृत्यनव, पचेन्द्रियतिरश्चोऽधिकृत्यनव, मनुष्यानधिकृत्यनव, तीर्थ- करमधिकृत्यैक सुरानधिकृत्याष्टौ, नैरयिकानधिकृत्यएक इतिद्वा- चत्वारिंशत्चतुर्विंशतावेकादशशतेचएकेन्द्रियानधिकृत्यप्राप्यते, पच- विंशतोत्रयस्त्रिंशत्भगा ,तत्रैकेन्द्रियानधिकृत्यसप्त वैक्रियतिरश्चाअष्टौ, वैक्रियमनुष्यानधिकृत्याष्टौ, आहारकसयतानाश्रित्यएक , देवान- धिकृत्याष्टौ, नैरयिकानधिकृत्यैक इतित्रयस्त्रिंशत्, षड्विंशतौषट्शता- नि । तत्रएकेन्द्रियानाश्रित्यत्रयोदशविकलानानवप्राकृतत्तिर्यग्- द्विशतेएकोननवत्यधिके, प्राकृतमनुष्याणाद्विशतेएकोननवत्यधिके इतिषट्शतानि, सप्तविंशतौत्रयस्त्रिंशत् तत्रैकेन्द्रियाणाषट्वैक्रिय-

तिरश्चाअष्टौ वैक्रियमनुष्याणाअष्टौ आहारकमुनीनामेकं केवलिनामेकं देवानाअष्टौ नरयिकाणाएक इतिनवपरिंशत् । अष्टविंशतौद्व्यधिकानिद्वादशशतानि, तत्रविकलेन्द्रियानधिकृत्य पपदमाकृतानि-रश्चापचशतानि पदसप्तत्यधिकानि, वैक्रियतिरश्चापोडश, प्राकृत-मनुष्याणापचशतानि पञ्चसप्तत्यधिकानि, वैक्रियमनुष्याणानव, आहारकसयतानाद्वेदेवानधिकृत्य पोडश,नारकानधिकृत्यएक इति-एकोनत्रिंशतिपचाशीत्यधिकानि सप्तदशशतानि । तत्रविकलाना-द्वादश, प्राकृततिर्यगूपचेन्द्रियाणाद्विपचाशदधिकानिएकादशशतानि, वैक्रियतिर्यग्पचेद्रियाणापोडश, प्राकृतमनुष्याणापचशतानि पञ्च-सप्तत्यधिकानि, वैक्रियमनुष्याणानवआहारकमुनीनाद्वौतीर्थंकराणा एक देवानापोडश नैरयिकाणाएक इतिविंशतिएकोनत्रिंशच्छता-निसप्तदशाधिकानि, तत्रविकलानाअष्टादश, प्राकृततिरश्चासप्त-दशशतानि अष्टाविंशत्यधिकानि । वैक्रियतिरश्चाअष्टौ, प्राकृतम-नुष्याणा एकादशशतानिद्विपचाशदधिकानि, वैक्रियमनुष्याणा, एक, आहारकाणाएक, केवलिनाएकोदेवानाअष्टौ इतिएक-त्रिंशतिएकादशशतानि पचषष्ट्यधिकानि, तत्रविकलानाद्वादश, प्राकृततिरश्चाद्विपचाशदधिकानिएकादशशतानि, तीर्थंकरमधिकृत्यैक, एकोनत्रोदये,एक अष्टोदये,सर्वोदयस्थानेषुभगसरयासप्ततिशतानि एकनवत्यधिकानिइत्युक्तानिनामकर्मण उदयस्थानानि॥

॥ अथमार्गणासुबधसख्यानायनायगाथाह ॥ १९३ ॥

इगविगलथावरेसु, अजिणनेउव्वाअन्नाणतिरीएसु ।
मिच्छिअसन्निअभवे, अजिणाहारासजिणअजये ॥१९४

टीका—इगविगल इत्यादि ॥ एकेन्द्रिय विकलेन्द्रिय पृथिव्यादिस्थावरपचकलक्षणासु नवमार्गणासु अजिणत्तिजिननामयुक्ता-

प्रायोग्योदय	२०	२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	९	८	
एकेंद्रि		५	११	७	१३	६		०					४२
बेंद्री		३			३		२	४	६	४			२२
तेंद्री		३			३		२	४	६	४			२२
चउरेंद्री		३			४		२	४	६	४			२२
प्रा ति		९			२८९		५७६	११५२	१७२८	११५२			४९०६
वैति				८		०	१६	१६	८				५६
प्रा मनु		९			२८९		५७६	५७६	११५२				२६०२
वै मनु				८		८	९	९	१				३५
अहा				१		१	२	२	१				७
केवली	१	१				१		१	१	१	१	१	८
देवता		८		८		८	१६	१६	८				६४
नारकी		१		१		१	१	१					५
सर्व संख्या	१	४२	११	३३	६००	३३	१२०२	१७८५	२१६५		१	१	७५९१

येव नभगा वैक्रियोपलक्षिताइत्यनेनदेवनारकप्रायोग्यायेभगास्तेन-माप्यतेअन मनुष्यप्रायोग्याजिननामयुक्ता नव, देवप्रायोग्याअ-ष्टादश, नैरयिकप्रायोग्यएक एव अष्टाविंशतिर्नभवति शेषा १३९१७ प्राप्यते, तथा अज्ञानत्रयतिर्यग्गतिमिथ्यात्वअसंज्ञिमा-र्गणासु अभव्यलक्षणमार्गणासु जिननामाहारकरहिता इत्यनेन-मनुष्यप्रायोग्यानवदेवप्रायोग्याएकोनत्रिंशत् प्रत्ययाअष्टात्रिंशत्प्र-त्ययएक एकत्रिंशत्प्रत्ययप्रायोग्यएक एवएकोनत्रिंशतिसंख्या शेषा १३९२६ भगाभवति । अजये इत्यादि अविरतमार्गणायासजिना-जिननामयुक्ता १३९३४ भगाभवति शेषादशनभवति ॥१९४॥

टबार्थ—हवे नामकर्मना भागा कहे छे । एकेंद्रिमार्गणाये विकल ३ मार्गणाये जिननामना तथा वैक्रियना भागा नथी बीजा सर्व छे ॥ १३९२७ भागा छे ३ अज्ञानमार्गणाये तिर्यचगति मिथ्यात्वे १ असंज्ञी १ अभव्ये जिननाम आहा-रकना भागा नथी १३९२६ भागा छे ॥ १९४ ॥

अविगल(इगतिरि)विउविर्तिरिया, समुच्छासम्म-नाणुवहिदसे।
चरणतिदेसेसुरजा, अहक्खायदुकेवलेणवा ॥१९५॥

टीका—अविगलविउवियतिरियाइत्यादि ॥ विकल्पप्रत्यया-एकपचाशतउपलक्षणत एकेंद्रियप्रायोग्याश्चत्वारिंशत् नैरयिकएक तिर्यग्प्रायोग्याद्विनवतिशनसप्तदशाधिकान्भगान् वर्जयित्वाशेषाम-नुष्यप्रायोग्यादेवप्रायोग्या पट्चत्वारिंशच्छतपचविंशदधिकभगाना-पदसमुच्छत्तिसम्यग्दर्शनत्रणे गुणस्थानेयेउक्तिष्ठन्तितेसम्यक्त्वत्रिके-ज्ञानत्रिकेअवधिदर्शनेप्राप्यते । चारित्रत्रयेदेशविरतौदेवप्रायोग्या-स्तत्रदेशविरतौअष्टाविंशतिप्रत्ययाअष्टौएकोनत्रिंशत्प्रत्ययाअष्टौएव-

षोटशभगाभवति । परिहारविशुद्धौअष्टाविंशतिषुवेअष्टौएकोनत्रिंशद्वयेअष्टौ, त्रिंशद्वयेएक, एकत्रिंशद्वन्धएक एवअष्टादशसामायिकछेदोपस्थापनीयेतेषुपर्योक्ताअष्टादश, -एकविधबन्धसमवएक एवएकोनविंशति भगाप्राप्यते । यथाख्यातचारित्रेकेवलद्विके नामकर्मबन्धाऽभावात्तननामवन्धभगाभवति ॥ १९५ ॥

टवार्थ —विकलप्रत्ययीभगा वैक्रियना भगा तिर्यचना भगा टालीये समकितना उगन्या भगा ३५ पामीये, समकित ३ ज्ञान ३ अवधिदर्शनने विषे पामीये, चारित्र तीन देशविरतीने विषे देवनाप्रायोग्य १९ पामीये । यथाख्यातचारित्रे केवल २ ने विषे नथी नामकर्मना बन्धना अभावथी ॥ १९५ ॥

देवेपरित्तबायर, तिरिअनरासेसयासुठाणभवा ।
भगामग्गणठाणे, नामबंधस्सणेयवा ॥ १९६ ॥

टीका—देवेपरित्तबायरइत्यादि ॥ देवगतौबादरमत्यैक एकेंद्रियप्रायोग्याश्चतुर्विंशतिद्विनवतिशतषोटशतिर्यग्प्रत्यया पञ्चत्वारिंशत्सप्तदशाधिकभगा प्राप्यतेत्रयोदशसहस्राष्टशतपञ्चपञ्चाशत् प्राप्यते । शेषासुमार्गणासुटाणभवा गुणस्थानभवाइत्यनेनगुणस्थानानियस्यामार्गणायायावन्तिनस्यामार्गणाया तावन्तएवभगाज्ञाप्या ॥ नरकगतौएकेंद्रियप्रायोग्याश्चत्वारिंशत्विकलप्रायोग्या एकपंचाशत् तिर्यग्मनुष्यापर्याप्तप्रायोग्यौपचविंशतिनवराशयौद्वीदेवप्रायोग्याअष्टादश, नैरयिकएव एकविधबन्धसभव एक इतिएकशतत्रयोदशभगानवर्जयित्वाशेषा १३८३२ भगानभवन्ति, मनुष्यगतिपचेंद्रियजातित्रसकाययोगत्रयवेदत्रयकषायचतुष्टयचक्षुर्दर्शनशुक्लेश्याभव्यसंज्ञि,आहारकलक्षणासुसर्वेनामबन्धभगा प्राप्यतेकृष्णादिलेश्यात्रये

एकवि यवसभवौद्वैभगौनभवत तेज पद्मलेश्यायाएकवि यवसभवोभग एक नप्राप्यतेशेषा प्राप्यते ॥ १९६ ॥

टबार्थ —देवगतिने विषे प्रत्येक बादरएकेंद्रिय प्रायोग्य भगा तथा तिर्यंच प्रायोग्य मनुष्य प्रायोग्य १३८५४ भागा पामीये । शेष मार्गणाये गुणठाणे जिणे भगा होवे जिणे मार्गणाये जेटला गुणठाणा होवे तेटला भागा जाणवा ॥१९६॥

अणहारेनिरयभवा, आहारगतणुभवायनोभगा।
मणनाणेसामईया, भगाअहनामउदयस्स ॥१९७॥

टीका—अणाहारेनिरयभवाइत्यादि ॥ अनाहारकमार्गणाया नरकभव एक आहारकनवसभवौद्वौएकविधयवसभव एकइतिभगचतुष्टयवर्जयित्वाशेषा १३९४१ भगा प्राप्यते ॥ नारकप्रायोग्याआहारकद्विकप्रायोग्याभगानभवति, मन पर्यवज्ञानेसामायिकचारित्रसभवाएकोनविंशतिभगा इत्युक्तामार्गणासुनामत्रयभगा अथनामकर्मण उदयभगामार्गणासु ॥ १९७ ॥

टबार्थ —अनाहारकमार्गणाए नारकी प्रायोग्य अहारकशरीर प्रायोग्य भगा नथी, बीजा १३९४१ भगा छे । मन पर्यायज्ञानमध्ये सामायिकचारित्रमध्ये जे भागा छे । हवे नामकर्मना उदयना भगा कहे छे ॥ १९७ ॥

गुणठ्ठाणगउदयाओ, उदयसामित्तओयनेयव्वा।
गोएविमग्गणाए, भगागुणठाणपच्चईया * ॥१९८॥

* पाठान्तरम्

कम्मसवेहगथाओ, भगागुणठाणमग्गणेनेया।

टीका—गुणट्ठाणगउदयाओइत्यादि ॥ गुणस्थानकेषुउदया-इतिउदयस्थानानि तथा उदयस्वामित्वेयाप्रकृति यस्यामार्गणाया-उदयेप्राप्यते तत्प्रकृतिसम्बाभगा तस्यामार्गणायाज्ञानं यास्ते-चअस्मत्कृतकर्मग्रन्थेग्रथत गुणस्थानकेषुमार्गणास्थानकेषुज्ञेया तत्रोक्तत्वादइहनोक्ता तथापि विचारसारयत्रकनोनेया अस्य-यत्रकस्वोपज्ञमेवास्ति । विचारसारग्रन्थगाथा तथा मदावनोधशिष्य-जनोपकारायटबार्थ तथा यन्त्रस्सर्वद्वारसूचक तच्चावृत्तिरितिसर्वा-ण्यास स्वोपज्ञएवज्ञानं यइति ॥ १९८ ॥

टबार्थ—गुणठाणाना उदयथी तथा स्वामित्वथी उदयना ५ भागा मार्गणाये जाणवा । गोत्रकर्मना ७ भागा छे, तेपण मार्गणाए गुणठाणानी रीते जाणवा ए भगमत्र ए वर्णीकृत स-वेध प्रकरणथी जाणज्यो ॥ १९८ ॥

बारसपणसट्ठिसया, भगामोहस्सतहयपयवन्ना ।
चुलसीसयसत्तुत्तरि, भेयापरिणामभेएण ॥ १९९ ॥

टीका—बारसपणसट्ठियाइत्यादि ॥

टबार्थ—बारसे पासठ मोहनीना भागा छे ५२ चोवीसी तेने चोवीसगुणा करता थया १२४८ तेमध्ये सत्तर भागा मेळीये तेवारे बारसेने पासठ थाय । तिमज पदवर्ण चोरासीसो सत्योत्तहरि थाये, दसने उदये चोवीसी १ भगा २४ तेहने दसगुणा करता २४० पदवर्ण थाये । नवने उदये चोवीसी ६ तेहना भगा १४४ तेहने नवगुणा करता १२९६ पदवर्ण थाये ए रीते सर्वत्र लेज्यो ए भगा एटला जे कह्या ते स्यामाटे

जे परिणामने भेदे जे परिणामनो नरतमयोगव्र नोपिण तर तमवव तोपण तरतमना थाये ॥ १९९ ॥

तेरसहस्सानवसय, पणयालानामवधभगाय ।
सत्तसहस्सासगसय, इगनवईउदयभगाय ॥२००॥

टीका—तेरसहस्सानवसयइत्यादि गाथाद्वयसुगमप्रभंगाधिकार यार याया यार यातस्वात् इहन यारयानम् ॥ अयग्रथोपसहारार्थं भन्यजीवानायथार्थागमप्रतीतिग्रहुमानार्थचाह ॥२००॥

टबार्थ—नामकर्मनी तेरहजार नवमे पीरातालीस नामकर्मनाबवना भगा थाय छे २३ ने बवे ४ भगा २५ बवे २५ भगा २६ ने बवे सोल भगा २८ ने बवे नव भगा २९ ने बवे ग्राणसो अडतीस भगा छे ३० बवे ४६ सो इकतालीस भागा छे ३१ बवे एक भगो छे, एकने बवे एक भगो छे, ते मिल्या तेरहजार नवसोपेंताळीस भगा छे, रवना नामकर्मना उदयना भगा २०॥२० ने उदये एक भगो छे, २१ ने उदये ४२ भगा छे, २४ ने उदये इग्यार भागा छे, २५ ने उदये तेत्रीस भगा छे, छवीसने उदये ६०० भागा छे, २७ ने उदये ३३ भागा छे, २८ ने उदये १२०२ भागा छे २९ ने उदये १८८५ भागा छे, ३० ने उदये २९१७ भागा छे, ३१ ने उदये ११६५ भगा छे, नवमे उदये १ भागो छे आठने उदये १ भागो छे, सर्व मिल्या सातहजार सातसोनेउ भागा उदयना छे ॥ २०० ॥

एवसुअउदहीओ, नेयहसवत्थुविन्नाण ।
जनाऊणसुविहिआ, सच्चधम्मपयासति ॥२०१॥

टीका—एवंसुअउदहीओइत्यादि ॥ एवममुनाप्रकारेणयथागमरीत्याकेवलिज्ञानावबोधवेदितसर्वतत्त्वानावचनप्रमाणेन श्रुत आचारांगादिगणिपिटकलोकालोकगतसर्वभावयथार्थोपदेशकपरमतत्त्वमार्गदर्शनप्रदीपसूत्रनिर्युक्तिभाष्यचूर्णिटीकापरंपराऽनुभवागमबोधगम्य नयनिक्षेपभंगगमभागाउउदधिरिवउदधि श्रुतमेवोदधि तस्मात्श्रुतोदधित अनोपमाअवाचानिकानययथायज्ञानजलसंचयसंपूर्णद्रव्यास्तिकपर्यास्तिकोभयतट अनेकोत्सर्गापवादमार्गप्रवृत्तक्रियाज्ञानव्यानसद्वीप स्याद्वादानंतगुणपर्यायद्रव्यानुयोगचरणकरणानुयोगगणितानुयोगधर्मकथानुयोगमहाकलश अनेकमत्यादिज्ञानश्रुतज्ञाननयगमपरिपाटीसापेक्षनदीसमूहविवर्द्धमानसलिलौघ अनेकालापकगाथोक्तियुक्तिहेतुउर्मिसहस्ररम्य अभिनवानवत्रविशुद्धाध्यवसायोत्कर्षप्रवृत्कल्लोल जीवाजीवादिनवपदार्थगुणस्थानवस्तुनोमस्वरूपावभासनाऽसरयेयज्ञानाध्यवसायरूपनिविधरत्नराशिस्थानमत श्रुतसमुद्रस्तस्मान्ज्ञात यसर्ववस्तु धर्मधर्माकाशपुद्गलजीवाग्निकायादिकन्स्यविज्ञानविशिष्टनिर्मलसूनयनयाभासादिदोषरहितज्ञानज्ञात यद्वतिसवत्र, यत्स्वरूपनित्यानित्यैकानेकाग्निनाग्निभेदाऽभेद यत्क यत्पकारणकार्यकर्त्रादिकारकसाधनसाध्यसाधकबाधकादिक ज्ञात्वासुविहिता शुद्धकार्यसाधनोद्यतासत्यधर्मशुद्धात्मस्वभावसर्वजीवसत्तास्थितसम्यग्दष्टिदेशविरतप्राणिगणश्रद्धागृहीतसाधुसाध्व्याचार्योपाध्यायैर्गीयमानअर्हद्भिरास्वादितसिद्धे सपूर्ण मार्गमतधर्मप्रकाशयति ॥ २०१ ॥

टबार्थ—एवंसुकहिता ए रीते श्रुतसमुद्रथी जाणवो, सर्व वस्तुनो विज्ञान विशिष्टज्ञान ते विज्ञान, जे जाणीने सुविहित उत्तम बहुश्रुतसत्यपयाय धर्मे जे वस्तुनो सभाव ते प्रकाशे उपदेश करे ॥ २०१ ॥

कत्थविववहारनओ, कत्थविनिच्छियनओपहाणयरो।
कत्थविसतीसंता, कत्थवियोगत्तणमुरक ॥ २०२ ॥

टीका—कत्थविवहारनओइत्यादि ॥ श्रीमदर्हत्प्रवचनस्ये-पापरपगकुत्रचित् व्यवहारनय प्रधान कुत्रचिन्निश्चयनय प्रधान-तर कत्थचित्सतीसतीइतिकुत्रचित्सती विद्यमानासत्ताजीवस्वरूपा, क्वापिकुत्रचित्योग्यत्वसत्ताश्रय यापुद्गलस्य परस्परवर्गादीना योग्य स्वरूपा-सत्तातथाजीवस्याऽननससारित्वरूपायोग्य त्वसत्ताइत्यादिपरिपाट्या-वस्तुस्वरूपप्रकाशनीयइति ॥ २०२ ॥

भावार्थ —जिनमार्गनी एह रीति छे जे किहाक व्यवहार-नय मुख्य कहे छे । किहाक निश्चयनय मुख्य कहे छे, जिहा कारण तथा प्रवृत्ति तिहा व्यवहारनी मुख्यता छे । किहाक छतीसत्ता तेहज गवेषे, किहाइक योग्यता सत्ता गवेषे जिम आउखा ४ नी सत्ता एक जीवने होयेनही परयोग्यता गवेषी छे ॥ २०२ ॥

तसव्वपिपमाण, सुअनिवुहेहिचजसुएभणीय ।
जेहिंपरपरनाण, तेसिनाणप्पहाणयर ॥ २०३ ॥

टीका—तसव्वपिपमाण इत्यादि ॥ तत्सर्वमपिवीतरागवा-क्यानुसारिपद्वचनतत्प्रमाणत्वेनाऽनाख्यात् । सर्वभावानाएकसम-येनज्ञानात्, यस्य समयान्तरज्ञान तस्यतत्समयेकिंचित्अज्ञानभवति। तस्यवाक्ययथार्थनभवति । श्रीमद्वीतरागकेवलज्ञानवतासर्वमपि-प्रमाणएकसमयेनैवप्रत्यक्षावबोधात्यस्यवाक्ययथार्थं तद्वाक्यानुया-यिसर्वमपिप्रमाणश्रुतविबुधैर्बहुश्रुतैयंत्श्रुतेपचागलक्षणेभणित कथित तत्रापिपरपपरपराश्रुतज्ञान श्रीमत्सुधर्मगणधरपरपराविच्छिन्नज्ञान

तत्त्ज्ञान प्रधानतरयत आगमस्यत्रेविव्यपचमागे अत्तागमे अणतरागमे परपरागमे अत्थओअरिहताण अनागमे नाणहराण अणनरागमे गणहरासासाण परपरागमे सुत्तओगणहराण अत्तागमे गणहरसासाण अणतरागमे तस्ससीसाण परपरागमे 'तओसन्वे सिंपरपरागमे एव परपरा आचार्यपरपरयाआगत ज्ञानप्रमाण इतिज्ञेयम् ॥ २०३ ॥

टवार्थ—इत्यादिक कयु जे सव प्रमाण छे आम्नायवतने आ भासनमध्ये छे, श्रुतने विवुध जे दक्ष तिणे जे श्रुत पचागीमध्ये कयु ते जे पचागी विना आगमना अर्थ कहे ते अजाण छे, भगवती तथा नदीसूत्रे कयु छे अने आगमना ३ भेद छे आत्मागम, अनतरागम, परपरागमतेमध्ये जम्बूस्वामी ते पछे सूत्रे परपरागम कह्यो छे ते माटे जे परपराये ज्ञानवत थया तेहनो ज्ञान प्रधानतर जाणवो, बीजा सर्वना ज्ञान ते अज्ञान छे ॥ २०३ ॥

नाणकिरियाहिमुक्खो, तत्थविनाणपहाणतरगच ।
तम्हानाणभ्भासो, कायव्वोमुक्खअथ्थीहि ॥२०४॥

टीका—नाणकिरियाहिंमुक्खो इत्यादि ॥ ज्ञानक्रियाभ्यामोक्ष इत्यागमवचन प्रामाण्यात्ज्ञान एकातेननमोक्षसाधक यद्ज्ञान तदेवास्य यदाश्रयत्यागोयत तथा चावश्यकनिर्युक्तौजहाखरोचदणभार धाही, भारस्सभागीनहुसुग्गईए, एव खुनाणीचरणेणहीणो, नाणस्सभागीनहुसुग्गईए(१) इत्यादि क्रियामुख्यतास्य तथापि श्रीदशविकालिकसूत्रे पढमनाणतओदयाएव चिट्ठइस व्वसजये अनाणिकिकाही किंवा नाहीउच्छेयपावगा ॥ १ ॥ जीवोविवियाणइ

अजीवोविवियाणइ, जीवाजीवेवियाणेइ सोयनाहीउसयम ॥ २ ॥ अनापिज्ञान मुख्य, श्रीभगवत्यासीत्सयशुअसेय इतिचतुर्भंगीव्यारयानेश्रुतसपन्न विशेपतोमोक्षसाधक श्रीसूयगडागेअहगडाइमुज्जति, अणमण्णसकम्मुणा, उवलित्तेवियाणिज्जा, अणुवलित्तेविवाणुणो ॥१॥ एवेहिंदोर्हिठाणेहिं ववहारोनविज्जति एवेहिं दोर्हिटाणेहिं अणायारतुजाणइ ॥ २ ॥ इत्यादि आगमवचनात्ज्ञान क्रियारुचियुक्त सत्यतत्रापिज्ञानप्रधानतर यत नाणाहिओ वरतरहीणोविह्रुपवयणपभावत्तो, णयदुक्करकरतो, सुदठुविअप्पागमोपुरिसो इत्युपदेशमालाख्यान् तथा उपदेशपदप्रकरणेक्रियाकृत कर्मक्षय मडूकचूर्णकल्प पुनरपिकारणात्प्रादुर्भवति ज्ञानभावनयाप्राप्तध्यानानुभवबलात् कृतकर्मक्षय मडूकचूर्णभस्मतुल्य सर्वथाअभावरूप भवति । तेनज्ञानप्राधानतर अत्यतमुख्यतत्त आत्मन स्वरूपेज्ञानप्रधान तेनसाध्येपिज्ञानप्रधान तम्हानाणम्भासोतस्मात्ज्ञानाभ्यास कर्तव्योमोक्षार्थिभि यथासूत्रोपयोगीसम्प्राप्तभवेमुच्यतएव ॥ अस्यविचाररत्नसारप्रकरणस्यकरणेकारणमाह ॥ २०४ ॥

टबार्थ ——तथा मोक्षमार्ग ज्ञानक्रियाये छे, तेमध्ये ज्ञान प्रधान छे दश विकालिके कह्यु छे जे पढमनाणतओदयाएवचिठ्ठइसव्व सजए, अन्नाणीकिकाही किंवाहिओछेयपावग ? तथा उत्तराध्ययने नादसणस्सनाणनाणेणविणानहुति चरणगुणा, अगुणस्सनत्थिमुक्खो नत्यिअमुक्कस्सनि व्वाण ॥ १ ॥ तेमाटे आत्मार्थी जीने ज्ञानाभ्यास करवो, सर्व प्रकारे ते कारणे ज्ञान विना मोक्ष न निपजे, तथा आत्मानो मुख्य गुण ज्ञान छे ॥२०४॥

रावणपुरवत्थव्वो, सड्ढोनामेणसंतिदासोत्ति ।
तेणगुणमग्गणासु, सव्वेभावायसंगहिया ॥ २०५ ॥

टीका—रावणपुरवरम्मत्रो इत्यादि ॥ राधनपुर वास्तव्य श्राद्ध श्रद्धायुक्त नाम्नाशांतिदासइतिनाद्विजप्त्या गुणस्थानेषु तथा मार्गणास्थानेषु सर्वेभावा मूलोत्तरबधादिरूपाद्वारशतसख्या-का प्रथमसगृहीता सम्यक्प्रकारेणगृहीतागृहीयद्वाइति ॥२०५॥

टबार्थ —ए विचारसारप्रकरण तेहना अधिकार बे छे, तिहां पहिलो अधिकार गुणठाणानो छे बीजो अधिकार मार्गणानो छे ए ग्रथ राधनपुरवासी श्रद्धावत शातिदास नामे गृहस्थ तिणे ए द्वार सर्व गुणठाणे तथा मार्गणाइ ए भाव सगृह्या ॥ २०५ ॥

तस्साणुग्गहकज्जे, गाहारइआवियारसारस्स ।
आगमगमेणसुद्धा, सापन्नाणासुगुरुवाणी ॥२०६॥

टीका—तस्साणुग्गहकज्जे इत्यादि ॥ तस्यानुग्रहकार्ये तद-नुग्रहार्थमित्यर्थ गाथारचिता विचारसारस्यआगमगमेणइति आ-गमगणधरपूर्वधरविरचितस्यगमज्ञान तेनशुद्धानिर्दोषायावाणीवाक्य-पद्धति सासद्गुरुवाणीइतिज्ञेय आधुनिकजीवोपकारार्थं बधादि-द्वारशतप्रमाण तथाशतकमितिसज्ञागुणस्थानशतकमार्गणास्थानश-तक इत्यधिकारद्वयरूप विचारसारस्यप्रकरणनिर्मापित पंडित-देवचद्रगणिनाइति/अथग्रथकार स्वकीयपरपरादर्शयन्नाह ॥ पर-शुद्धपरंपरागतस्यवचनप्रमाण तदर्थंपरपरोद्देश तत्रश्रीमन्वर्द्धमान-शासनाधार श्रीगणधर सुधर्मास्वामीतत्पट्टानुक्रमेण अविच्छिन्न-परपरायातएकोनचत्वारिंशत्तमोमहापुरुष श्रीमदुद्योतनसूरि तत्प-ट्टप्रभावकश्रीवर्द्धमानसूरि येनअ पत्तीमूलसूरिमत्रसशोधनासजिन-पदावदात तत्प्रदत्तसूरिमत्रप्रत्यक्षीकृते द्वादिदेवगण सर्वेबरगशा-

लादिशतशास्त्ररचनाप्रवण श्रीजिनेश्वरसूरि प्राप्तखरतरविरुद, तत्पट्टानुक्रमायात श्रीजिनचंद्रसूरि, तत्पट्टे नवांगीवृत्तिउपपातिकोपांग पचाशकादिवृत्तिकरणप्राप्तप्रभास्फरागदत्त, तत् तत्पट्टाधनेककर्मग्रंथभाष्यादिरचनारचितयथार्थक्रियामार्ग श्रीमज्जिनवल्लभसूरिस्तत्पट्टपूर्वाचलभानुस्वरूप गणधरसार्द्धशतकादि धर्मरहस्यादिग्रंथविरचनारचितयथार्थमार्ग श्रीमद्जिनदत्तसूरि तत्पट्टे मणिधर श्रीजिनचंद्रसूरि तत्पट्टे साठिसोप्रकरणकारक श्रीनेमिचंद्रभंडारिकसुत श्रीवीतरागमार्गयथार्थपरीक्षाकोपलोपमान षट्त्रिंशत् वादस्थलकारकश्रीजिनपतिसूरि तत्पट्टेश्रीजिनेश्वरसूरिस्तत्पट्टेश्रीजिनप्रबोधसूरि तत्पट्टेश्रीजिनचंद्रसूरि तत्पट्टेश्रीसिद्धाचलखरतरवसहिनेमिप्रासादप्रतिष्ठापकश्रीजिनकुशलसूरि तत्पट्टेजिनपद्मसूरि तत्पट्टेजिनलब्धिसूरि तत्पट्टेश्रीजिनचंद्रसूरि तत्पट्टेजिनोदयसूरि तत्पट्टेजिनराजसूरि तत्पट्टेजिनभद्रसूरि तत्पट्टेजिनचंद्रसूरि तत्पट्टेजिनसमुद्रसूरि तत्पट्टेजिनहंससूरि तत्पट्टेजिनमाणिक्यसूरि तत्पट्टेइत्यादिदर्शयति ॥ २०६ ॥

टबार्थ —विचारि चोखा कर्या तेना अनुग्रहने अरथे गाथा रची विचारसारनी आगमनी रीते जे शुद्ध ते गुरुनी वाणी प्रमाण छे ॥ २०६ ॥

सुविहियखरयरगच्छे, युगवरजिणचंदसूरिसाहाए ।
जिणनयणसारपवणा, उवज्झायाराजसारक्का ॥१०७॥

टीका—सुविहितखरतरगच्छे इत्यादि ॥ श्रीमत्वज्रस्वामिपरंपरानुगतत्वात्सुविहित श्रीमच्चंद्रकुलेवज्रस्वामिशाखायाकोटिगणान्वयेयथार्थमार्गप्रकाशनचैत्यवासनिवारणात् समाप्तखरतरविरुद-

द्यनेकतीर्थचैत्यप्रतिष्ठाप्राप्तयुगप्रधानाभिधान तस्यशाखायाश्रीमद्पुण्योपाध्यायशिष्यश्रीसुमतिसागरोपाध्यायशिष्यत्ताचकोत्तमसाधुरंग-वाचकशिष्य जिनवचनमारेप्रवणाइनप्रवणाउपाध्यायाजानृदयकोद्धारादिसद् ग्रथकरणअनेकचैत्यप्रतिष्ठास्थापितानेकजिनबिंबालया श्रीराजसारारया ॥ २०७ ॥

टबार्थ —सुविहितयथाय जिनआणाअनुमारी सामाचारी जेहनी एहवो खरतरगछ छे, तिहा युगप्रधान श्रीसद्गुरु श्री जिनचद्रसूरि थया, तेहना शीष्य परपरामध्ये श्रीजिनचद्रसूरिना शिष्य महोपाध्याय पुण्यप्रधानजी, तेहना शिष्य श्रीसुमतिसारजी तेहना शिष्य वाचकमुख्य श्रीसाधुरगजी तेहना शिष्य मुख्य श्रीजिनवचननो जे सारतत्त्व तेहमे प्रवीण उपाध्याय श्रीराजसारजी एहव नामे थया ॥ १०७ ॥

तस्सीसन: ... ...रासिरिनाण धम्मनामेण ।
तेसिसीसा धीर, दीपचदउवज्झाया ॥ २०८ ॥

टीका—तस्सीस इत्यादि ॥ ततशिष्याज्ञानधर्माख्यबोधधर्मचारित्रधर्मधोराधारमना श्रीमत्ज्ञानधर्मोपाध्याया तेषाशिष्या श्रीशत्रुजयेसमवसरणमैत्र्यमुख्यानेकचैत्यश्रीराजनगरेसहस्रफणादिअनेकसत्तायप्रतिष्ठाकृतात्मसाफल्या श्रीदीपचद्रोपाध्याया तेषाशिष्येणट्ट विरचितमितिसबध ॥ १०८ ॥

टबार्थ —तेहना शिष्यज्ञानधर्म जे चारित्र तेहना धरणहार श्रीउपाध्यायज्ञानधर्म एहने नामे थया, तेहना शिष्य धीर उपाध्याय श्रीदीपचद्रना ,एहने नामे शीष्य थया ॥ १०८ ॥

तेसिंसीसोअज्जत्थ, तत्तरम्मगयगोजिणाणरुई ।
गणिदेवचदनामा, तेणनिहीयइमसुत्त ॥ १०९ ॥

टीका—तेसिंसीसोअज्जत्थ इत्यादि ॥ तेषांशिष्य अध्यात्मतत्त्वरसास्वादनरसिकजिनागमान्याससमासजिनाजारुचि गणिदेवचद्रइतिनाम्नातेनविहितइदसूत्रम् ॥ २०९ ॥

टबार्थ —अध्यातमतत्वनो रसिक जिनागम प्रमाणतत्व स्वरूपनो कथक आगमसार १ ज्ञानसारतत्त्वबोध प्रमुखनो ग्रथनो रचवो आत्माने हित करतो जिनाज्ञारुचि देवचद्रगणि एहवे नामे तिणे ए मूत्र रच्यो गाथा नवभव्यनी बने उपकार काजे ॥ २०९ ॥

रसनिहिसजमवरिसे, सिरिगोयमकेवलस्सवरदिवसे।
आयरथउद्धरीयो, समयसमुद्दाओरुद्दाओ ॥ २१० ॥

टीका—रसनिहिसजमवरिसे इत्यादि गाथासुगमा ॥ अथात्रग्रथे मतिव्यामोहात्छद्मस्थदोषेणार्किचित् नावगत तन्गुणज्ञा स्वपरशोध्यकथयतु इतिप्रार्थना ।।नदर्शनार्थगाथारचयति॥२१०

टबार्थ —रस ६ निधि ९ सयम १७ इटले १७९६ सत्तरसेछनुये वरसे श्रीगौतमकेवलज्ञान पाम्या ते दिवसे एटले कार्तिकसुदि एकम जुहारसटारीपर्व दिवसे आत्मानो बोध करवाने उद्धर्यो, समय कहेता सिद्धात जे समुद्र तेहथी सिद्धात समुद्रनो पार पामवा दुर्लभपर ए अम्यामेज कल्याण छे ॥ २१० ॥

जिणसासणसमयन्नू, भत्रतिगुणगाहिणोयसव्वेसिं।
तेअपढतिसुणतिअ, लभ्भतिनाणलद्धीओ ॥२११॥

टीका—जिणसासनसमयन्नू इत्यादि ॥ जिनशासनसमय-आगमतत्त्वज्ञा वेदितजैनागमरहस्यास्तेगुणग्राहिण एव नदोषग्रहणरसिका इत्यनेनयत्किंचित्मद्बालचापल्यनत्ते न प्रेक्षते इतितेच-जैनागमतत्त्वरसिका पठतिइतिस्वयपठतिपरपाठयति शृण्वतिचते लभन्तेज्ञानलब्धी इति तेनज्ञानार्थिन विचारसारारयप्रकरणअत्या-दरेणअभ्यस्यतुइतिप्रार्थनाएव ॥ अथनमयेदस्वमनीषयाविलसित-किंतुपूर्वाचार्यपरपराग्रयाऽऽज्ञयाननउद्धृत्यआधुनिकजीवानाहिताय-सगृहीत इति दर्शयन्नाह ॥ २११ ॥

टबार्थ—जे जिनशासनना समय आगम तेहना जे जाण छे तेह जीवसमुद्दो जीवना गुण गवेषे, परछिद्रग्राही न होवे, गुणग्राहीपणो ते आमाने हित, ते जीव जे मउरी न हुवे ज्ञान रसिया होस्ये, ए ग्रंथ भणस्ये तथा सुणस्ये ते ज्ञानलब्धि निरमल पामशे ॥ २११ ॥

कम्मपयडीअसगह, सिवसम्मयसुजिणवल्लहोसूरी ।
देविंदसूरिपमुहाण, वयणदट्ठूणइयभणिय ॥२१२॥

टीका—कम्मपयडीअसगह इत्यादि ॥ तत्राग्रायणीयपूर्वात् उद्धृत श्रीमत्भद्रबाहुस्वामिनाकम्मपयडीग्रन्थ तच्चूर्णिश्चकृताश्रीदेव-र्द्धिगणिक्षमाश्रमणैस्तट्टीकाचकृताश्रीम मलयगिरिसूरिणा इतिसूक्ष्म-भावप्रकाशनपटुश्री कम्मपयडीग्रन्थ तथाचपुन सगहत्तिपचस-ग्रहाख्यप्रकरण श्रीचंद्रमहत्तराचार्यकृत तथा श्रीशिवशर्मसूरिकृ-ताश्चबृहत्कर्मस्तवादयोजीर्णकर्मग्रथा तथा श्रीजिनवल्लभसूरिकृत-कर्मग्रथा तथा श्रीदेवेन्द्रसूरिकृतकर्मविपाकप्रमुखा कर्मग्रथा इत्यादि तन्मुनीनावाक्यवचनदृष्ट्वाइयइतिइद विचारसाराख्यभ-

णितकथितनस्वमत्याथीमत् भगवतीप्रज्ञापनादिसदागमपरिपाट्या-निवेदितसर्वेनाप्यागमवाक्यप्रमाण, आगमानुसारिमतय आराधका शेषाणास्वमतिकल्पितकल्पनाप्रवृत्तिमतानास्यागवक्तृत्वम् ॥ अत वीतरागागमरहस्यज्ञानतत्त्वभावनाभ्यासतत्परा भवन्तु ॥ साम्प्रत-जिनागमस्यचिरकालाऽवस्थायित्व भवतुइत्याशीर्वाक्यपूर्वकउपदि-शन्नाह ॥ २१२ ॥

टबार्थ —कम्मपयडी, अग्राहणीय पूर्वनो उद्धार छे तथा पचसग्रह श्रीचदमहत्तरसूरिनो कीधो महाग्रथ छे तथा शिव सूरिकृतभाष्य छे तथा श्रीजिनवल्लभसूरिकृत कर्मग्रथ छे, तेहनी टीका मलयगिरिसूरिकृत छे तथा देवेन्द्रसूरिकृतकर्मग्रथ छे, तेहनी टीका पण श्रीदेवेन्द्रसूरिकृत छे इत्यादि पूर्वसूरिना जे वचन ते सर्व जोइने तेहने अनुसारे ए विचारसारग्रथ रच्यो छे ॥ २१२ ॥

जाजिणवाणीविजयइ, तावथिरचिट्टउइमवयण।
नूतणपुरम्मिरईय, देवचदेणनाणट्ठ ॥ २१३ ॥

इतिश्रीविचारसारप्रकरणसमाप्तम्

टीका—जाजिणवाणीविजयइ इत्यादि ॥ यावत्जिनस्य वीतरागस्यवाणीवचनपद्धति विजयतितावन्इदवचनस्थिरत्वेनाति-ष्ठतु श्रीहल्लारदेशेनूतनपुरेनवनगरेरचित ज्ञानप्रकाशकरणायवा-चनापृच्छनापरिवर्त्तनाधर्मकथानुप्रेक्षादिस्वाध्यायकरणेचसवरनिर्ज-रासद्भूतस्वाध्यायानुपरिणामनैर्मल्यपरिणामनैर्मल्यातृयथार्थाऽनुभव यथार्थानुभवात्स्वरूपविश्रान्ति स्वरूपविश्रांत्याध्यानैकत्व, तेनच-

अभिनवकर्माऽग्रहणनापूर्वकृकर्मक्षय ताभ्याचपरमसिद्धि अ यात्रा-घसुखप्राप्ति इति ॥ सवणेनाणेविन्नाणेपच्चक्खाणेसयमे ॥ अण-ण्हवेतवेचेव । वोदाणेअकिरीयासिद्धा ॥ १ ॥ इतिभगवतीसूत्र-प्रमाणनयाश्रुताभ्यास करणीय सर्वभ यै, देवचद्रेणज्ञानार्थ-स्वपरावभासनार्थपचमकालायकारसुग्जनप्रबोधनभानुश्रीदीपचद्र-सद्गुरुचरणचचरीकेणरचिनगाथानवेनयनकन्यासादिनाअक्षरवि या-सीकृत, इतिश्रीदेवचद्रगणिविरचितास्वोपज्ञविचारसारटीकासमाप्ता ॥ २१३ ॥

टबार्थ —जासीमजिनवाणीजयवर्तीवरते, ता सीम थीरहो, ए ग्रथना वचननी रचना, ए ग्रथनी पूरणता नवनपुर नवानगर-मध्ये पडीत देवचद्रगणि पोताने तथा परने पण ज्ञान विशेष-वृद्धिने अरथे करी ॥ २१३ ॥

जयतात्सच्चिदानद–महोदयसमाश्रित ।
वर्द्धमानजिनाधीशो, भ येप्सितमहामणि ॥ १ ॥

क्षुदोज्ज्वलयश कीर्त्ति–मोज्वलीकृतविष्टप' ।
लब्धिसिंधुर्जगद्बधु' पातुगौतमसद्गुरु ॥ २ ॥

श्रीमत्सुधर्म्मस्वामी, जम्बूप्रभवादयोमुनिवरिष्ठा ।
वाचकवशप्रभवा, भ्यानाश्रेयसेसतु ॥ ३ ॥

क्रमात्खरतरेगच्छे, कुलेचान्द्रेगुणाकरा ।
श्रीजिनचद्रसूरीशा अमूवन्मुनिनायका ॥ ४ ॥

तदन्वयाब्धिसद्रत्ना , राजसाराह्ववाचका ।

दगाज्ञानिनशोभाना, तेषामौगपट्टिगुणः ।
विपा गमनापन, दैवमह्ना सुनाटपा ॥ ८ ॥
रत्नापयोरपाराय, देवर्द्धिगर्भापना ।
विधारत्नार्थश्रेय, गुणोपशान्तिनिर्मिने ॥ ७ ॥
मतिसुनराजलाभाषा, श्रुताम्पाठनरायणा ।
ज्ञाना सुनसाङ्गाज, प्रमोदविपावयोधाय ॥ ८ ॥
पञ्चदिनभन्पमतिना, सिद्धानविरुद्धमिहकिंमविसाक्रम ।
विद्वद्भिरत्स्वर्श, प्रसादमादाप तस्तोध्यम ॥ ९ ॥
यनूनमवृतिरचना, कृत्वेमामपार्जितसुकृतम् ।
तेनर्थीनिनधर्मं, ददपितां सतुभम्पजना ॥ १० ॥
अर्हन्तोमंगलसिद्धा, साधवोधर्ममार्हनम् ।
रपाद्गातासारव्यान, अपाणगुरुपभगवम् ॥ ११ ॥

॥ इतिश्रीविचारसारप्रकरणटीकासमाप्ता ॥

अयं—इतिश्रीविचारसार मूल टीका टबा सावे सपूर्ण थयो. ॥ मुकाम पेथापुरमध्ये आचार्य माहाराज ॥ श्री ५ ॥ बुद्धिसागरजी माहाराजना हस्तक दफ्तरमा रहीने लख्यो छे की० लहीया जेटालाल धुनिलाल सवत् १९७३ प्रथम भाद्रव मास कृष्णपक्ष ९ दीने चद्रवासरे सपूर्ण लिख्यो छे ॥ श्लोक सख्या ॥ ४५०० ॥

श्रीमद् देवचद्र द्वितीय भाग अशुध्दि शुद्धि पत्रक.

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१	३	वतुदय	नतुदयु
,,	४	जिप	जीय
,,	१९	१६	®
२	११	तिष्टत्य	तिष्टन्त्य
,,	१४	शुद्धयक्षं	शुद्धयपक्षं
३	६	निश्रे	नि श्रे
,,	८	सहस्रा	सहआस्रा
,,	१२	वर्त्तत	सहवर्त्तत
,,	१५	स्थानन	स्थान
,,	,,	सम्यग	सम्यग्
४	११	गठि	गठि
,,	१९	दवाल्न	दवानल
,,	२२	देश	देस
,,	,,	मिठरस	मिन्ठरस
५	२	मुहूर्त्तक्या	मुहूर्तिक्या
,,	३	विमिपे	विमीप
,,	१८	समस्ती	समस्ति
६	२	इठ्तो	इच्छतो
,,	४	दिठी	दिट्ठी
,,	११	सन्ठपति	सयच्छति
,,	१५	इत्यअ	इत्य

पृ.	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१९	विशुद्ध	विशुद्धय
७	४	पुनवि	पुनर्वि
,,	६	तारिस्य	तारितस्य
,,	२३	पतणा	पत्तणा
८	१	,,	,,
,,	६	एतानिएतानि	एतानि
,,	१२	नि,श्वत्ति	निश्वत्ति
९	२३	युगप	युगपद्
,,	२४	माया	माया
,,	,,	युगप	युगपद्
१०	२४	दसतन	दत
११	२०	त्तिस्र	त्तिस्र
१२	९	सकासा	सकाशा
,,	१६	ध्यान	ध्यानं
,,	२३	ध्याययत्	ध्यायन्
१३	१	शैलेश	शीलेश
,,	८	गच्छद्	गच्छन्
,,	११	चूर्णा	चूर्णो
१४	११	हेतुद्रा	हेतुद्वार
१५	१०	तन	तम
,,	,,	चतुपष्टि	चतु पष्टि
१६	१६	अपमत्तत्तासत्तठ	अपमत्तता सत्तट्ठ
,,	१८	चरेत्ति	चेवेति
,,	,,	मेदा	भेद

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१६	१८	मेदा	भेद
,,	१९	,,	,,
,,	२२	अमि	आमि
१७	२	निरेभ्यते	निरेद्यन्ते
,,	,,	कर्मण	कर्मणाम्
,,	३	जीत्र	जीव
,,	८	प्रमनाना	प्रमत्ता ता
,,	१२	मति	मत्ति
१८	१३	राम्यस्त्न	राम्यस्त्व
,,	१६	नद्माति	व्यपते
१९	५	सख्या	सरया
२०	२	द्यसा	द्यसा
,,	३	दिठी	दिट्ठी
,,	३	इति	इति
,,	४	नरायुदे	नरायुर्दे
,,	१९	तिर्यच	तिर्यच
,,	२३	सगद्दिठ	सगसट्ठि
,,	,,	तेवट्टि	तेसट्ठि
,,	२४	वन्ना	वन्ना
२१	७	नरायुलक्षण	नरायुर्लक्षण
,,	१६	पुनानतेव	एतावनैव
२२	१	तेवठि	तेसट्ठि
,,	८	देवायुबचन्	देवायुर्बन्ध
,,	२३	तेजस	तैजस
२३	१४	मचला	निद्रानिद्रा

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२३	१७	तेजस	तैजस
२४	१	भवति	भवति
२५	१५	उचैगोत्र	उच्चैर्गोत्र
२६	९	सम्पराय	सपराय
२७	८	नीच्चै	नीचै
२८	१८	तिग	तिगे
,,	२३	आयुकर्म	आयु कर्म
३१	१९	ज्झा	जा
,,	२०	१६	१४
३२	१२	बन्यते	बन्यन्ते
३३	१	अटण्ह	अट्ठण
,,	६	सभाप्यते	सभायन्ते
३४	१३	द्विक	द्विकम्
,	१५	उदयोभवति	भवति
,,	२३	पद्यन्ते	पद्यते
३५	२१	पद्यते	पद्यन्ते
३६	७	ब'धा	बद्धा
,,	,,	चतुर्षु	चतसृषु
,,	१०	मनुजापूर्वी	मनुजाऽनुपूर्वी
,,	१२	दृष्ययातात्	दृष्टयन्तात्
३७	१	तस्तु	तास्तु
,,	२	इग	सग
,,	१९	सठि	सट्ठि
,,	,,	सठी	सट्ठी

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३८	३	नीपते	नीपन्ते
,,	७	तिर्यगति	तिर्यग्गति
,,	२१	प्रमादायत्वात्	प्रमादायत्तत्त्वात्
३९	६	भवति	वति
,,	१५	सज्वल	सज्वलन
४०	१९	,,	,,
४१	२२	पचशीति	पचाशीति
४२	१५	नवप	नव
४३	५	स्त्यानद्वयुदये	स्त्यानद्वर्युदये
,,	२१	अटार	अट्टार
४४	२२	सहाय्यात्	साहाय्यात्
,,	२३	साहायात्	,,
४५	३	नव च न	न वचन
,,	२१	वेयणीससय	वेयणीयस्स
४६	१	चतुर्ष्वपि	चतसृष्वपि
,,	१७	सठी	सट्ठी
,,	,,	,,	,,
,,	१९	,,	,,
४८	८	देसि	देस
,,	१६	नामोदयो	नामुदयो
,,	२१	नीचे	नीचे
,,	२२	,,	,,
,,	२३	एव	एव
,,	२४	टीकाइय	टीकाया

पृ.	प	अशुद्धि	शुद्धि.
४९	१९	दीयते	दीर्यते
५०	१०	वेदनी	वेदनीय
५१	१९	ओघत	ओघतो
,,	२१	थीणद्धी	थीणद्धी
५२	१०	उपशात	उपशान्त
,,	,,	अतुरया	अनुरया
,,	११	कयावत्	यावत्
,,	१५	चरिमद्विके	चरमद्विके
,,	१६	सु नाम	सुर्नाम
५३	१	शमनात	शमनात्
,,	१४	पुण	गुण
,,	१९	सत्ता आठ कर्मनी छे	⊘
५५	१	इगचत्तससय	इगचत्तसय
,,	७	चत्वारिंशशत	चत्वारिंशच्छत
,,	१३	,,	,,
,,	१५	बन्नायु	अद्धायु
,,	१६	चत्वारिंशशन	चत्वारिंशच्छन
,,	१७	कुल	क्ल
,,	,,	माउ	मान
,,	२१	क्षयोपसमकित	क्षयोपशमसमकिती
५६	३	वज्या	वर्ज्या
५७	८	पट्रक	पट्क
,,	१२	क्षयणा	क्षपणा
,,	१५	पचासीति	पचाशीति

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
५७	१६	पचासीति	पञ्चाशीति
,,	१७	सप्तति	सप्तर्नि
५९	६	नवापि	नवानामपि
,,	१७	मैव	मेव
६०	८	उपसम	उपशम
६१	१	टा णाणि	ठाणाणि
,,	२	सुहुमञ्ज	सुहुमजा
,,	१२	सज्वलनोमा	सज्वलनोमानखपोवेवेवारे
६२	६	युनव	युरेव
,,	७	माम्मिति	नामम्मित्ति
,,	११	सता	सत्ता
६३	७	केद्रिय	केन्द्रिय
,,	१६	सार	सारस
,,	१७	द्विधा	द्विधा
६४	२	पर्याति	पर्याप्ति
,,	३	येच	याच
,,	,,	पुद्गल	पुद्गलान्
,,	७	परिणामय्य	परिणमय्य
,,	१०	पट	पद्
,,	१५	सर्वानि	सर्वाणि
,,	१६	भवनि	भवति
,,	,,	बादरे	बादरै
,,	२५	लब्धयय	लब्ध्यप
६६	३	विशेतर	विशेषतर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
६६	५	अप्प	अप्प
,,	१०	निजरा	निर्जरा
६७	३	दुगि	दुग
,,	५	मिच्छ	मिच्छि
,,	१८	समुग्वात	समुद्घात
,,	२१	वीर्यो	⊘
,,	२२	त्रिविध	त्रिविध
६८	१	द्वीर्यं	द्वीर्यं
,,	२	स्तथा	तथा
,,	५	व्यवहारोतथा	व्यवहारस्तथा
,,	६	चर्यते	चर्यते
,,	१७	कर्मणोर्नपेक्ष	कर्मणाऽनपेक्ष
,,	२२	तिष्टति	तिष्टति
६९	३	पुसामपि	पुसामपि
,,	१०	निवृ	निवृत्त
,,	१२	चतुर्विधो	श्चतुर्विधो
७०	१२	योगा	योगा
७१	८	वचनान्	वचनरा
,,	१६	विभग	विभगाऽ
७२	३	चक्षुअचक्षुअवधि	चक्षुरचक्षुरवधि
,,	५	दृष्ट्या	दृष्ट्या
,,	८	सम्य	सम्यग्
,,	१०	प्रम	प्रमत्ताऽ
,,	१३	केवली	केवलि

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
७२	,,	केवली	केवलि
,,	१६	मत्त्यादीना	मत्यादीना
७३	२१	मारभते	मारभ्यते
,,	,,	वोचत्वार	चश्चार
,,	२३	गृहेण	ग्रहेण
७४	३	मात्यस्था	मात्यस्थ्य
,,	४	गोष्टा	गोष्टा
,,	११	पनान	पादान
,,	१४	कप	कपस्य
७४	२०	हेतुन्	हेतून्
,,	२२	चतुसि	चतुर्भि
७६	७	हेतु	हेतू
,,	८	लक्षण	लक्षण
,,	९	द्वादश	द्वादशकम
७७	११	मिशनिर्वे	गिशनिर्वे
,,	,,	असत्या	असत्य
,,	,,	,,	,,
,,	१९	दशमे	दशे
७९	१	मिच्छना	मिच्छत्ता
,,	८	स्नाव	स्नावन्
,,	९	पावद्याग	पावद्योग
,,	१९	अविरति	अविरानि
,,	२१	कपाया	कपायान्
८०	१४	लोभाख्य	लोभारय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
८१	७	दष्टव्य	द्रष्टव्य
,,	१९	निपदि	निर्यट्टि
,,	२०	किलाटा	किलट्टा
८२	१२	व्रजति	नजन्ति
८४	१०	समुल्लिङ्गा	समुल्लिङ्गा
८५	१६	कषाय	कसाय
,,	१८	सगृहीत	सग्रहीत
,,	२०	युपि	यृपि
,,	,,	त्हास्यादि	ह्लास्यादि
,,	२३	पर्याप्तिनाम	पर्याप्तिनाम
८६	१	सगृहीत	सग्रहीत
,,	२	लेश्या	लेसा
,,	४	गृहणेन	ग्रहणेन
८८	१०	सगठ	सगट्ठ
,,	१५	चक्षुदर्शन	चक्षुर्दर्शन
८९	२२	भा	भाव
९४	२३	सम्यग	सम्यग्
९७	५	द्रदशम	द्वादश
९८	१०	ऊजय	अजय
,,	१२	उपशातमोह	उपशान्तमोहक्षीणमोह
९९	१६	अयते	अयते
,,	,,	सम्यग्	सम्यग्
१००	१०	तिग	तिगतिग
,,	११	इग	इगइग

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१००	१३	प॒	पद,
१०१	१५	सभवि	सभविसमवि
,,	१६	तीसही	तीसहीया
,,	१९	नव	नव,
१०२	१	रयणरय	रयणुक्ख
,,	२०	निशन	निशन्
१०३	४	मुहत्तं	मुहूर्त्त
,,	४	कि नसिया	किन्विसिया
,,	७	अपज्झत्ता	अपज्जत्ता
,,	२२	तदेन	तदेव
१०४	२	पर्याप्ताअ	पर्याप्ताऽ
,,	,,	निथ्यात्वे	मिथ्यात्वे
,,	,,	पृन्त्रि	पृन्त्रि
१०५	१	वशान्	वशान्
,,	४	वस्थनो	वस्थातो
,,	७	अजयत्त	अपज्जत्त
,,	,,	भवन्ति	भवति
१०६	११	दुविहा	दुविहो
,,	२२	तिरिस्का	निरिक्खा
१०७	३	ना	नो
१०८	१३	गामि	गमि
,,	२०	दशमे	दशे
१०९	१३	अट	अद
,,	१७	द्वार	द्वार,

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
११०	३	अतमुह	अन्तर्मुह
,,	७	शुक्ल	सुक्क
,,	८	मट्ट	मद्द
,,	२२	अट्टम्मि	अद्दम्मि
१११	१	,,	,,
,,	११	शासो	सासो
,,	१८	वेरग्ग	वैरग्ग
११२	३	दोष	दोस
११३	२०	देश	देस
,,	२२	चउज्झेओ	चउत्थेओ
११४	२१	व्युछिन	व्युच्छिन्न
११५	१२	चतुर्विंशरपि	चतुर्विंशतिरपि
११६	१२	सामायेन	समायेन
,,	१६	श्रद्यत	श्रद्दधत
,,	,,	छेदा	छेदो
११७	१२	मोकृष्ट	मोत्कृष्ट
११८	२		
११९	६	ख्यातो	ख्यात
,,	१५	दडक	दटक
१२१	८	दीना	दीना
,,	१४	चतुशीति	चतुरशीति
,,	१५	तेजो	तेज
१२२	१	पचेदि	पचेंदि
,,	२	नराणा	नराण

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१२३	९	कुठा	कुच्छ
,,	१२	शन	शत्
,,	१३	,,	,,
१२४	४	सुहुम्म	सुहुम
,,	२१	पशाशन्	पश्चाशत्
१२६	९	ऊन्वीस	ऊन्वीस
,,	१८	गृहि	गृही
१२७	१७	भावत्	भावात्
१२८	७	हीयसय	ह्रियसय
,,	१८	ध्रुवत्ताविशेषेति	ध्रुवत्ताविसेसेति
,,	२१	दुजुअल	दुजुअल
१२९	४	नीधे	नीचे
,,	,,	शन	शत
,,	१९	रूपो	रूप
१३०	११	नामकर्मनी	नामकर्मनी ८२
,,	१२	४	१
,,	,,	१	७
१३१	७	ज्ञान	ज्ञाना
१३३	४	इति	इत्ति
१३४	७	दश	दस
१३५	६	घ्रुत घ्रुवो	घ्रुवो
,,	१९	ग्रह	ग्रह
,,	,,	क्रम	त्तम
१३६	१	देवायु	देवायू

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१३६	२४	त्तिग	तिग
१३७	१	विषये	र्विषये
"	२१	अनि त्ति,	अनिवृत्ति
१४३	१४	रुत्कृष्टा	रुत्कृष्टा
१४४	१५	गृहणेन	ग्रहणेन
"	२०	योर्ध्रुवो	योर्ध्रुवो
१४७	१५	स्वगति	खगति
"	१९	गृह	ग्रह
१४९	२	मोऽहेपि	मोहेऽपि
"	१८	विशृण	विशृण्व
१५१	२०	अनैका	अनैका
१५२	१५	युगपत्म	युगपत्म
१५३	२२	द्व्येक	द्व्येक
१५४	२	भगकाम्	भगकानाम्
"		भवति,	भवति, तेषुसप्तदशामीलनेपञ्चष-ष्ट्यधिका द्वादशशतीभवति, मि-थ्यात्वेद्विनवत्यधिक शतम्
"	१८	षड्विंशति	षण्णवति
"	"	"	"
"	२०	२४८	१२४८
१५७	२०	१	छनोव्रत
"	"	नवनवनी	नवती
१५९	२१	उचै	उच्चै
१६०	७	उच्चैनीचै	उच्चनीचै

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
१६०	१०	गोन	गोत्र
,,	,,	अय	र्अय
,,	१२	सना	सत्ता
१६२	२४	प्राप्यते	प्राप्यन्ते
१६३	२५	नवार्य	ट्वार्थे
१६७	३	द्वादश	द्वादश
१६९	२१	द्विकृत्यधि	धिकृत्यद्वि
१७०	१३	मनात्	✗
१७१	१६	तद्विपयो	तद्विपय
,,	२०	अर्यासेपु	अपर्यासेपु
१७२	११	मुहूर्त्ते	र्मुहूर्त्ते
,,	२१	द्वादशानि	द्वादशाधिकानि
,,	१२	प्राप्यन	प्राप्येते
१७३	२१	तिम	तिग
१७४	२५	तनो	तत
१७५	८	सम्य	सम्यग्
१७६	६	पश्चतु	पश्च तु
१७७	१४	बन्ध ने	बन्धस्थाने
,,	१६	विंशन्	निंशन्
,,	१७	वन्यि	वैक्रिय
१७९	११	मप्टा	मष्टा
१८३	१४	मृषा	मृषावा
,,	१७	घलायु	घलायू
१८४	१	गुणपर्यायण्य	गुणपर्याय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	५	धन्य	धन
,,	१२	गृह	ग्रह
,,	१४	परायत्त	परायत्त
,,	१६	चतुरविंशति	चतुर्विंशति
,,	१८	इर्या	ईर्या
,,	१९	निरत्ता	निर्वृत्ता
,,	२०	द्रव्यतो	द्र यत
,,	,,	कारग	करण
१८६	२०	सकल्इयो	सकत्पो
१८७	६	इर्या	ईर्या
,,	,,	उम	उप
,,	२९	इर्या	ईर्या
१८८	७	सकलायी	सकपायी
,,	१३	अपच	अपद्म
,,	१६	प्रयोगिकी	प्रायोगिकी
१९०	६	श्रव	स्रव
,,	१९	,,	,,
,,	२०	समाससादित	समासादित
,,	२३	आसूपते	आस्रूयते
१९१	४	मेदे	मे दे
,,	१४	विहारा	विहार
१९२	१६	विकत्य	विकल्प
१९३	१७	भावद्वा	भावाऽव
१९४	५	म्यान्तर	म्यन्तर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१४	चर्व	चर्म
,,	२९	अन	अन
१९९	१	जनादयो	जनादय
,,	४	एव	एन
,,	५	मशरण	मशरण
,,	८	चवरणा	वरणा
१९६	३	रूप	रूप
,,	४	ग्रयादयोन	ग्रन्यादयस्त्न]
,,	९	वसनर	सवर
,,	२०	स्यानेषु	स्यानेषुनान्
१९७	१८	गेपा	गेपा
१९८	१०	गुणु	गुण
,,	२०	पशान्	पशान्
१९९	१	मणाना	पणाना
,,	१५	उत्क्तच	उत्क्तच
,,	१७	हाति	हुत्ति
२००	१	बव छे,	नर छे, मकृति नर
,,	८	१००	१०७
,,	११	श्रीमत्स	श्रीमत्सु
,,	१६	मधाना	मधानास्त
,,	१९	मतिष्टा	मतिष्ठा
,,	२१	सहन्र	सहस्र
,,	,,	मतिष्टा	प्रतिष्ठा
,,	२२	द्वीप	दीप

पृ	पं	अशुद्धि	शुद्धि
२००	२३	शिष्येन	शिष्येण
,,	२४	विरचित	विरचिन
२०१	६	श्रीमतिर्वीर	श्रीमनीचिर
,,	७	नाचकोत्तम्म	वाचकोत्तम
,,	९	साराहक	साराह्व
,,	१०	ज्ज्वाला	ज्ज्वला
,,	१३	तद	तद्
,,	१४	विचार	विचारसार
२०३	५	गुरुन्	गुरून्
,,	७	इहा	ईहा
,,	१०	जिनेद्र	जिनेन्द्र
,,	१३	सहम्र	सहस्र
,,	१४	त्यापि	त्यादि
,,	,,	सहस्रा	सहस्रा
,,	१५	वार वैरि	वैरि
,,	१६	परमा	परमा
,,	१७	कदनक	कदम्बक
२०४	१	कथयामित्यर्थ	कथयामीत्यर्थ
,,	२	पराय	परा
,,	,,	रसिका	रसिका
,,	१४	सचिवै	सचिवै
,,	१६	इद्रनादींद्र	इन्दनादिन्द्र
,,	१६	मार्गणा	मार्गणा
,,	,,	द्वीन्दिय	द्वीन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	२२	क्षप्यतेर्हिंस्यते	क्षप्यन्तेर्हिंस्यन्ते
२०५	२	त्रिशेष	विशेष
,,	१०	शुशोभना	सुशोभना
,,	१३	विरति	विरति
,,	१५	सामा य नको	सामान्यात्मको
,,	१६	इत्यर्थ	मि यर्थ
,,	२२	लेश्यानु	लेश्यातु
,,	२३	वारिणोन्तत्द	वारिणस्तत्द
,,	,,	णामिति	ण मिति
,,	२५	योगे	योग्यो
,,	२५	सिद्ध	सिद्धि
२०६	१	अविरुद्धायो	अविरुद्धार्थ
,,	९	विपाक्नो	विपाकन
,,	१०	सम्यक्त्वास्यईनय	सम्यक्त्वस्योदीयमानस्य
,,	१६	युक्ता	युक्ता
,,	१८	अयोगी	अयोगि
२०७	१०	स्थानका	स्थानका
,,	१६	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व
,,	१९	नस	नसा
२०८	११	क्दश	दशक
,,	१२	अभय	अजय
,,	१८	चक्षुदर्शन	चक्षुर्दर्शने
,,	,,	,,	,,
,,	१९	पद्	पद

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	२१	अचक्षुचक्षुदर्शने	अचक्षुश्चक्षुर्दर्शने
२०९	२	अयोगी	अयोगि
,,	१७	सगति	सगत्ति
२१०	१	दशम	दश
२११	३	समि	सम्मि
,,	१३	स्थानि	स्थानानि
२१२	११	आराव्या	आरा॒य
,,	१४	तेजो	तेज
,,	१६	,,	,,
,,	१७	कमित्याह	कथमित्याह
२१३	६	५।	५। ६।
,	७	अविग्तिक०	अविरति
,,	१२	दस	दस
,,	१३	दारे	आहारे
,,	१६	दर्श	दर्शन
,,	१७	सज्ञा	सज्ञी
२१४	९	निणि	त्रीणि
२१५	९	एक	एकाऽ
,,	२४	नीचं	नीचे
,,	,,	दुभग	दुर्भग
२१६	१	तासप्तति	तासप्तर्ति
,,	२५	रुपभ	ऋपभ
२१७	५	एत	एतद्
,,	७	चतुरा	चतुर

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१२	त्ताप	ऽऽनप
,,	१३	विंशनी	विंशति
२१९	४	ए कोन	एकोना
,,	११	तया	स्तया
२२०	४	पष्ी	पष्ठी
२२१	१	नोघ	नोव
,,	,,	ऋजयति	अजयत्ति
,,	४	प्रमते	प्रमत्ते
,,	११	द्यन	द्योत
,,	१३	द्रिक	द्विक
,,	१५	विगमे	विगमे
,,	२०	लेश्या	लेश्यापे नरक
,,	,,	२	३
२२२	७	च तुदर्शन	चक्षुर्दर्शन
,,	९	वक्त य	वक्त य
,,	२१	त्यादि	इत्यादि
२२३	१	लक्षणा	लक्षणा
,,	३	गा	गा
,,	,,	कर्त्तार	कर्त्र्य
२२४	४	नीचै	नीचे
,,	५	सम्यग	सम्यग्
,,	१६	गोत्रनीच	गोत्रनीचे
,,	,,	मोह	मोहे
,,	२३	नपुसक	नपुसक

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२२५	९	ह्रखाए	ह्रस्खाए
,,	११	,,	,,
२२६	६	समवाओ	सभवाओ
,,	७	देनगते	देवगतौ
,,	१९	देनारूपा	देवरूपा
,,	२०	प्रकृति	प्रकृर्ति
२२७	१७	सठी	सट्ठी
,,	१८	चतुर्षु	त्चतसृषु
२२७	२४	ब-पते	बध्यन्ते
,,	,,	एके	रेके
२२८	१४	२१	२२
२२८	१५	मगाणा	मग्गणा
,,	२०	बधन्ति	बद्धयते
,,	,,	मिच्छतगियासु	मिच्छत्तठियासु
२२९	५	स्थाननीय	स्थापनीय
,,	८	आहारकर	आहारक २
,,	११	ह्रखाय	ह्रस्खाय
,,	१३	प्राप्यने	प्राप्यन्ते
,,	१६	केवलद्विक	केवलद्विक
,,	,,	प्रकृति	प्रकृर्ति
,,	१७	अजयति	अर्जयति
,,	,,	तवति	बध्नाति
२३०	७	सज्ञी	संज्ञि
२३१	१६	पचेन्द्रिय	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
,,	१८	चउ	घउ
,,	२०	चतु	चतू
२३३	३	नाम्र	नाम्न
,,	८	प्रेक्षया	ऽपेक्षया
,,	१२	मोहनीउ	मोहनीयो
,,	१४	सप्तति	सप्तति
,,	२१	चतुस्र	चतुरस्र
,,	२७	इन्छन्नि	मिच्छन्ति
२३४	४	ग्रर्थीके	ग्रयिके
,,	,,	पञ्चना	पञ्जना
,,	,,	,,	,,
,,	,,	रति	इति
,	२१	पदक्दुम्वर	पदक्दु स्वर
,,	२३	ग्रर्थीकेंगृ	ग्रयिकेंगृ
,,	२४	दुर्द्दर	दुर्द्दर
,,	,,	द्वाशीति	द्व्यशीति
,,	२५	प्यन्ये	प्यन्यें
२३५	९	मोह	मोह
,,	१०	द्व्याधिक	द्व्यधिक
,,	१७	शपो	शय
,,	१८	राधिक	रधिक
२३६	४	यश	यशो
,,	६	नीम्ने	नीचे
,,	१३	दुसइ	दुसाई

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२३६	१५	ईत्यादि	इत्यादि
„	१६	द्वाशीति	द्व्यशीति
„	२२	सयम्रि	सयमि
२३७	६	दश	दस
„	१९	पद्क्त	पद्क
„	„	दुस्वर	दु स्वर
„	२०	गीरस्तु	गीकारस्तु
„	२१	एकाना	एकोना
२३८	४	मेच	मेच
„	„	अप	अप्
„	७	दुस्वरनिक	दु स्वरनिक
„	९	चतु	चतु
„	„	लक्षणा	लक्षण
„	„	सप्तति	सप्तति
„	१३	पष्ट	पट्
„	„	लक्षणा	लक्षण
„	२०	चख्र्	चस्ख्
२३९	११	नथि	नार्थि
„	१३	योगति	योगत्ति
„	१९	नेद्यो	नादेयाऽ
„	२२	सप्तति	सप्तति
२४०	१	प्येय	ऽप्येव
„	२	तेचक्षुद	स्तेचक्षुर्द
„	४	चक्षुद	चक्षुर्द

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
२४०	५	बवी	जन्वि
,,	१३	,,	,,
२४३	९	पच	पञ्चक
,,	,,	पडधिक	पटधिक
,,	१४	नीश्चे	नीचे
,,	१९	पूँया	पूर्वी
२४३	२०	एव	एव
२४८	९३	आहार	∅
,,	१४	मार्गणामे	मार्गणामे चार आनु-पूर्वीना ११८ नो उदय छे
२५०	१	सेपासु	शेपासु
,,	१२	नीश्चे	नीचे
,,	१७	,,	,,
२५१	४	दय	दय प्राप्यते
,,	५	प्राप्यते	∅
,,	२२	तेजो	तजो लेश्या
२५४	२२	सम्प	सम्य
२५५	१६	रगति	इगत्ति
२५६	८	अढार	अट्ठार
,,	९	देस	देश
,,	१४	६५	४५
२५८	१४	३८	३९
२६१		सड	सग
२७४	३	लक्षणासु	लक्षणेषु

पृ	पं	अशुद्धि	शुद्धि
२७५	२९	ल्म्यते	लभ्यते
२७६	१२	सम्क्त्व	सम्यक्त्व
,,	२५	कर्प	कर्म
२७७	१२	अपज्जअ	अपज्जत्तुअ
२७८	६	पर्याप्ता	पर्याप्त
,,	९	यदाहु	यदाह
२७९	१३	मवि	भव्वि
२८०	१६	चक्षुद	चक्षुर्द
२८२	२०	मोस	मोंस
२८४	६	मृत्वा	मृत्वा
२८६	३	आहरो	आहारो
२८८	१	एव्	एव
२८९	१८	पर्याप्ता क्षक्ष्मा	पर्याप्त सूक्ष्म
,,	२३	भवोचरम	भवश्चरम
२९०	२३	मना	मनो
२९२	११	क्ष्विति	प्विति
२९२	२२	जिअलख	जिअलक्ख
२९३	४	ल्यक	लक्ख
२९४	१५	लेश्यायु	लेश्यासु
२९६	१	अदखोए	अहक्खाए
२९७	४	चखु	चक्खु
,,	६	नाण	नाण
२९९	१	अहक्खार	अहक्खा
,,	६	करण	करण

पृ	प.	अशुद्धि	शुद्धि
२९९	१८	१	गति,
,,	१९	गतिनेंद्री	पचेंद्रि जाति
,,	२०	२	१ अनाहारक १
,,	२०	भय	भय १ अभव्य १
३००	१	हेतजोमूलोत्तरा	हेतू मूलोत्तर
,,	३	कषया	कषाय
३०५	११	मिश्र	मिश्र
,,	१३	ओदारिक	मोदारिक
,,	१७	२	१
,,	१८	छवीस	ए छवीस
,,	१९	विषे	विषे, ए छवीस माहेथी
,,	,,	स्त्रीवेद	स्त्रीवेद, १ वैक्रिय, २ विना
,,	,,	२३	२१
,,	२०	छे	छे परिहारविशुद्धि चारित्रमें
३०६	१२	छे	छे मन पर्यवज्ञानमध्ये छठा गुणठाणावाला इहा वचन विरोध टाले छे.
,,	१६	३	१३
,,	२०	योगा	योग
३०७	२२	सपरा	सापरा
३०८	१९	मार्यणा	मार्गणा
३१०	९	हीना	हीना
३१२	११	व्यापारतो	व्यापारवतो
,,	,,	सच्छी	नेसत्थी १

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३१२	११	साहच्व्री	साहत्यी
"	"	विदीरणा	विदारणा
३१३	९	ज्ञान	ज्ञाना
३१४	१६	पाउग्मी	पाउग्मी
३१५	३	भवति	ञ
३१६	१०	उक्त''च	उक्तच''
३१७	४	परीपह	परिसह
"	१८	तत्र	तत्त्व
"	१९	मित्र	मित्र
"	२३	वेच	ताँश्र
"	,	रूपा	रूपान्
३२०	१८	दमि	दमि
३२१	५	कथ्या	कथ्या
३२२	२०	वाउक्ता	वा
३२५	१	मपा	मपा
"	६	तिर्यक	तिर्यंक्र
"	२४	केवलिन	केवलिनोऽनन्तगुणास्तेषां
३२७	१	समई	समईय
३२८	१२	वन्तोऽन	वतामन
"	४	पुसेसु	पुसेपु
३३०	२३	६२	४१
३३२	८	मेवा	मेवा
३३३	३	एमिभावे	एमिर्भावे
३३४	१४	रून	रूप

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३३७	१२	२ अचतु	१ अचतु
,,	१३	पुरुषवेद २	पुरुषवेद
,,	१७	जूआ	जुआ
३३८	१२	ते मध्ये	ते २९ मध्ये
,,	,,	लेश्या	लेश्या विना
,,	१५	तथा	तथा ज्ञान बे विकल्पने सूत्रे कह्या छे सास्वादनने सम्यक्त्व माने छे ते माटे
,,	१७	छे,	छे, इहा आम्ना ए जे मिथ्यात्वनो उदय नहि ते माटे ज्ञान माने छे अने कर्मग्रंथ करता माड्यो ते थयो ए नये अज्ञान माने छे
३४१	४	जीव	जीवत्व
,,	१९	भव्यने	अभव्यने
३४२	७	उपशम	उपशम
३४३	१	मासे	मीसे
,,	१८	शत्तु	शति
,,	२३	तुन	तन
३४४	१९	एपोपशम	उपशम
३४६	३	जयि	जह, यया
३५०	२३	क्रिय	क्रिया
३५१	२४	कारणा	कर्णी
३५२	२३	प्रमते	प्रमत्ते

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३५३	८	अट्ट	अह
३५५	२	कैक	कैको
"	८	पचेंद्रीय १	पचेंद्रिय २
३५८	५	रुप	रूप
"	६	"	"
३६१	९	अस	नस
३६३	९	नरगतौ १९	नरकगतो ७९
"	१६	विशति	विंशति
"	२२	भवति	भवन्ति
३६४	१५	भवन्ति	भवति
"	२३	नरक	नरक, १
"	"	नरकायु	नरकायु, तिर्यगायु
३६५	१	नरानु	नरकानु
३६७	२३	तत्व	तत्त्व
३७१	४	तद्र	तद्ध
३७३	५	उप	उव
"	१९	उरलस	उरल
३७४	१३	द्व्यशीति	द्व्यशीति
३७८	१७	पुण	पण
३८०	१०	अतमु	अन्तर्मु
३८१	१	"	"
३८४	९	ऽतथा	तथा
३८६	१७	सर्व	सर्वं
३९०	१७	पचेंद्रि	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३९०	२१	मगा	भगा
३९४	१	मिश्रे	मिश्रे
३९७	८	सम्यक्त्रा	सम्यक्त्वा
,,	१६	उम	उव
३९८	१०	चोवीवी	चोवीसी
४००	१०	देये	दये
४०१	१२	गुणास्थान	गुणस्थान
४०३	८	वत्तनो	वत्तो
,,	२१	विंशर्ति	विंशर्ति
४०५	६	भवन्ति	भवति
,,	७	गतयो	गन्तव्यो
,,	१७	एव	एव
,,	२१	भगा	भङ्गा
४०६	९	क्रम	नम
४०९	१३	पर्यात्प्यस्य	पर्याप्तस्य
,,	१६	सन	स
,,	१९	तिर्यग	तिर्यग्
४११	३	सहननना	सहननाना
,,	४	पङ्क	पद्रू
,,	१७	निंश	निंशङ्
४१२	१२	पयाप्तस्त्र	पर्याप्तस्य
४१३	७	दुर्भगाना	दुर्भगाऽऽ
४१४	४	उच्छ्वासे	च्छ्वासे
,,	७	भगा	भङ्गो

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३५३	८	अट्ट	अट्ठ
३५५	२	कैक	कैको
,,	८	पचेंद्रीय १	पचेंद्रिय २
३५८	५	रुप	रूप
,,	६	,,	,,
३६१	९	अस	घरा
३६२	९	नरगनौ १९	नरकगनौ ७९
,,	१६	विशति	विंशति
,,	२२	भवति	भवन्ति
३६४	१५	भवन्ति	भवति
,,	२३	नरक	नरक, १
,,	,,	नरकायु	नरकायु, तिर्यगायु
३६५	१	नरानु	नरकानु
३६७	२३	तत्व	तत्त्व
३७१	४	तद्र	तद्र
३७३	५	उप	उव
,,	१९	उरलस	उरल
३७४	१३	द्व्यशीति	द्वयशीति
३७८	१७	पुण	पण
३८०	१०	अतमु	अन्तर्मु
३८१	१	,,	,,
३८४	९	ऽतथा	तथा
३८६	१७	सत्रं	सर्वं
३९०	१७	पचेंद्रि	पञ्चेन्द्रिय

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
३९०	२१	मगा	भंगा
३९४	१	मिश्रे	मिश्रे
३९७	८	सम्प्त्वा	सम्यक्त्वा
,,	१६	उम	उत्र
३९८	१०	चोवीवी	चोवीसी
४००	१०	देये	दये
४०१	१२	गुणारस्थान	गुणस्थान
४०३	८	बन्नतो	नन्नतो
,,	२१	विंशतिं	निंशतिं
४०५	६	भवन्ति	भवति
,,	७	गन्तयो	गतव्यो
,,	१७	एत्र	एत्र
,,	२१	भगा	भङ्गा
४०६	९	क्रम	नम
४०९	१३	पर्यात्प्यस्य	पर्याप्तस्य
,,	१६	सन	स
,,	१९	तिर्यग	तिर्यग्
४११	३	सहननना	सहननाना
,,	४	पङ्क	पट्क
,,	१७	निंश	निंशद्
४१२	१२	पयाप्तस्त्र	पर्याप्तस्य
४१३	७	दुर्मगाना	दुर्भगाऽऽ
४१४	४	छन्दामे	षड्भासे
,,	५	भगा	भङ्गो

पृ	प	अशुद्धि	शुद्धि
४१५	१६	अष्टै	अष्टो
४१६	८	पर्याप्त	पर्याप्त्य
४१८	२०	सख्यानायनायागा	सख्यानायगाया
४२०	४	१७	२७
"	२०	प्रायोग्या	प्रायोग्यान्
४२१	४	भगा	भङ्गा
"	९	१९	२९
४२२	१५	अहारक	आहारक
४२३	१५	सट्ठि	सट्ठिसया
४२४	११	अडतीस	अट्टालीस
"	१८	१८८५	१७८५
"	२०	नेउ	एकाणु
४२५	११	अमि	अमि
"	१३	मू	मूत
"	१४	धर्म	धर्माऽ
"	२२	सु	सुअ
"	१६	व्यस्त	वक्त
४२७	९	पचागी	पचागी
"	२१	मागी	भागी
४२८	१८	चिटइ	चिट्ठइ
"	२०	आत्मार्या	आत्मार्थी
४३०	७	नें	ने
"	२१	हीय	हिय
४३१	२३	देव	दीप